

20

मुंबई पायथोनी पास शान्ति मुपाकर मेसमें
चीमनलाल सांकळचंद मारफतीयाने
मुद्रित कीया.

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX

रत्नसमुच्चय मंगलाचरणं ॥

॥ अथ श्रीजिनायनमः ॥ अथ रत्नसमुच्चय ग्रंथ प्रारंभ ॥

तत्रादौ मंगलाचरणं ॥ आदिनार्थजिनं नत्वा, धर्मशीलं च तद्गुरुं ॥
गीर्वाणीं हृदये धृत्वा, लिखामि रत्नसंचयं ॥ १ ॥ श्रेयार्थं जन्मजोवा
नां, तत्त्वामृतादिमेलनं, आवश्यकादिकृत्यं ॥ तपस्याविधिनिर्णयं
॥ २ ॥ द्वादशमासपर्वाणि, पौषधेदेववन्दनं ॥ स्तोत्राणि स्तवनं रम्यं,
स्वाध्यायं गुरुवन्दनं ॥ ३ ॥ इत्यादिव दुरत्नेन, धर्मरत्नसमुच्चयं ॥
जातोपकल्पकल्याणं, नित्यानन्दभूतसंपदं ॥ ४ ॥

अथ ग्रंथ संग्रहकृत्संक्षेपं गुरु प्रशस्ति ॥

७६
संस्कृत

श्रीमद्गोरजिनेऽतीर्थतिलकः सद्गुरुतसंपन्निधिः, संजज्ञे सुगुरुः
सुधर्मगणनृत्तस्यान्वये सर्वतः ॥ पुण्ये चांद्रकुलेऽनवत्सुविहिते पक्षे
राचारवान्, सेव्यशोभनधीमतां सुमतिमानुद्योतनः सूरिराट् ॥ ५ ॥
प्रासीत्तत्पदपंकजैकमधुकृत् श्रीवर्द्धमानाजिधः, सूरिस्तस्य जिनेश्वर
व्यगणनृज्जातो विनेयोत्तमः ॥ यः प्रापत्तनजसिद्धिपंक्ति सरदि ।
१०८० । श्रीपत्तनेवादिनो, जित्वा सद्गुरुदं कृती खरतरे त्पाख्यं
वृषादेर्मुखात् ॥ ६ ॥ तत्पट्टानुक्रमे श्रीमत्, सूरिः श्रीकुशलाजि
धः ॥ दादा विरुद विख्यातः, पूज्यपादगुरुर्वरः ॥ ७ ॥ हेमकीर्तिउप
पायः, जातो सौप्तिकलाग्रणीः ॥ शाखाविस्तारितायेन, हेमवाटी
चरंजयी ॥ ८ ॥ सुसाधुपदविज्ञातः, धर्मशीलबुधाग्रणीः ॥ पाठ
ननेकज्ञव्यानां, ज्ञानक्रियाप्रपादकाः ॥ ९ ॥ तत्वरणसमालोढा, नि
जानकुशलाजिधः ॥ धर्ममग्नसमाधिस्था, स्तुवंति बहुमानवाः ॥ १० ॥
पाध्यायसदाचारा, वादीनां मानजंजका ॥ शास्त्रार्थविजयं प्राप, सं
दंयुक्तिवारिधिः ॥ ११ ॥ पाठकरुक्षितरेण, कृतोयं ग्रंथसंग्रहः ॥
वपरोपकृतैस्तम्यगु, प्रतिदं प्रापितं मया ॥ १२ ॥ सुशिष्यहेमचंद्रेण,
मामरसत्रां ववैः ॥ श्रीसंपदस्तहायेन, मुवर्ष्यां शोसकाक्षरैः ॥ १३ ॥

यंत्रेमुद्रापितंसम्यग्, यंत्राध्यक्षेणशोधितं ॥ पठकःपाठकेभ्योवै, नि
 स्यंश्रेयश्चमंगलं ॥ १४ ॥ श्रीविक्रमपुरेसम्ये, वृद्धत्वरतरेगणे ॥ वृद्ध
 पोपाश्रेयेस्थाने, पुस्तकेदंमिलिष्यति ॥ १५ ॥

इस पुस्तकोंका सर्व रकम खरच तथा इसका लाज शुज
 हमारे पोषपुत्र शिष्य पं । श्रीक्षेमचंड चि । पेमचंड चि ।
 मरचंडका दे, हमने हमारा सर्व स्वयंपासरा पुस्तक धनमालका
 लक इन तीनोंकों किया दे, दूसरा किसीका दावा उजर नहीं ॥
 पुनं ॥

दसकत । ३० । श्रीरामलालगणिःका खुद ॥



॥ रत्नसमुच्चय-रामविलास ॥

॥ स्वकुलप्रकाशक आचार्यपट्टावली ॥

शासननायक श्रीमहावीरस्वामी, तत्पट्टे २ श्रीसुधर्मास्वामी, तत्पट्टे श्रीजंबुस्वामी ३, तत्पट्टे ४ श्रीप्रजवस्वामी, तत्पट्टे ५ श्रीशय्यंजवसूरिः, तत्पट्टे ६ श्रीयशोज्ञसूरिः, तत्पट्टे ७ श्रीसंज्ञतविजयस्वामी, तत्पट्टे ८ श्रीज्ञज्ञाहुस्वामी, तत्पट्टे ९ श्रीधूलंजज्ञस्वामी, तत्पट्टे १० श्रीआर्यमहागिरी, तत्पट्टे ११ लघुभ्राता आर्यसुहस्तिस्वरजी जये सो वीरजगवानसें ३३५ वरसे संप्रतिराजा तथा एवंतीसुकमालकं प्रतिबोधके धर्मका बहोत उद्योत किया ११, तत्पट्टे १२ श्रीसुस्थितसूरी १ क्रोन सूरिमंत्रका जाप कीया तबसे कोटिकगञ्ज प्रसिद्ध जया, इस तरे पट्टानुपट्ट १६ में श्रीवज्रस्वामी दश पूर्वधर बने प्रजावीक विद्यासिद्ध जये इनोसे वज्रशाखा प्रसिद्ध जई, तेसें १८ पट्टपर श्रीजिनचंडसूरी हुये इनोसे चंडकुल प्रसिद्ध जया, इस तरे पट्टानुपाट जगवानसें ३८ में श्रीउद्योतनसूरिः जये सो एक तो निजशिष्य उर इसरा साधुजके ८३ अपने विद्यार्थी शिष्योंको आचार्यपद दिया तबसे ८४ गञ्ज जया, यह ८४ गञ्जोंके आचार्य बने प्रजावीक धर्मोद्योतक जए, इन उद्योतनसूरजीके निजपाटधारी आवूजीतीर्थ प्रगटकर्ता विमलमंत्री प्रतिबोधक ३९ पट्टे श्रीवर्द्धमानसूरिः जये, ४० पट्टे श्रीजिनेश्वरसूरिः जये सो अणहलपुरपट्टणमें डुर्जनराजाकी सज्जामें चैत्यवासियोंको शास्त्रार्थमें जीतकर सं ॥ विक्रमके १०८० के वर्षमें पाटणके राजाने खरतर विरुद्ध दिया, अतिशयपणे खर-सूर्यकी तरे ज्ञानकरके ऊलजलायमान । अथवा क्रियाकरके अतिशयपणे कर ज्ञानसंयुक्त जिसमें खर कहीये बने कगोर इस वास्ते खरतर विरुद्ध पाया,

टिकगञ्ज वज्रशाखा चंद्रकुल खरतर विरुद ऐसेः ४ जेद नवदी
 त शिष्यकुं कहणा सरू जया, इनोके ४१ में पट्ट दिल्लीके बाद
 १ प्रतिबोधक जीवहिंसा वृन्दाणेवाले श्रीमालमदतिपाण गोत्र
 बोधक श्रीजिनचंडसूरिजी जये, फेर इनोके पट्ट ४२ में इनोके
 प्राता श्रीस्थंजणातीर्थ नर नवांगवृत्ति प्रगटकर्ता श्रीअन्नभदेव
 : जये, तत्पट्टे ४३ में अठारे इज्जार वागमीभावक प्रतिबोधक
 जनवद्धजसूरिः युगप्रधान जये, तत्पट्टे ४४ में महा प्रज्ञावीक
 धान श्रीजिनदत्तसूरिः जये जिनोंने चितोम नर उज्जयणी
 जसे साढीतीन बोटी विद्यासायकी पुस्तक निकालके साथ
 वनवार चोसठ योगणी एक लाख तीस इज्जार घर राजन्य
 को तथा ब्राह्मणोंको प्रतिबोध देकर उत्तवाल वषांया, उत्त
 तीनसे गोत्र स्थापन करा, पारख कोठारी लूणिया राखेचा
 पुखा ठाजेम इत्यादिक, वह गोत्र नामके फेरफारसें इत वखत
 करीव होगये दे, वह गुरुका गुण जिय नहीं सकते, वह
 क बने दादाजीके नामसें सर्व जगे प्रसिद्ध दे, तत्पट्टे ४५
 धारी दिल्लीके बादसाहकुं प्रतिबोधक अनेक चमत्कार दि-
 जैनधर्मका उद्योत करणेवाले श्रीजिनचंडसूरिः जये जिनो
 के नरवजारमें दाग जया बना चमत्कार देख बादसाहा-
 क मानने पूजणे लगे, यह दूसरे दादाजी जये, अनुक्रमे
 ट्टपर महाप्रज्ञावीक कुशलसूरिःजी जये, सो आचार्यपद
 वनवार चोसठयोगणीकुं वसकर संघमें बने उपगार
 रमल बोधरेकी जिहाज व्याख्यान वांचते जुये, पंखीरूप
 दरियावमें तिराई ऐसे परमोपकारी अंतमें फागुण
 : स्वर्गवाश जये, फागुण सुदि १५ सोमवारको प्र-
 दरशण दिया, तिसपीठे जकलोकोंका उपगार

जगेश करणे लगे इस वास्ते श्रीसंघनें अपने आचार्यको इष्टदेव
 समझके सर्व नगर गाममें चरणमूर्ति स्थापन कर दादा
 जीके नामसे वंदन पूजन करणे लगे, सर्व जगे दादागुरुका जश
 प्रख्यात जया, प्रत्यक्ष परचा देणेवाले यह तीसरा दादाजी जये,
 इनोके पाटानुपाठ ६१ में श्रीजिनचंडसूरि जये, जिनोने अकबर
 बादशहकुं अनेक चमत्कार काजीकी टोपी तीन बकरीका ब्रताणा
 इत्यादि दिखाकर अमारि उद्घोषणा फिरवाई, सर्व वेपथारियोंकी
 हिंदुस्थानमें रक्षा करवाई, क्रियाउद्धार कर पतितोंको गंडा गडकी
 व्यवस्था करमचंद बगवतकी बीनतीसें सर्व समयानुसार बांधी,
 इनोके पट्ट ६२ में श्रीजिनसिंहसूरि, इनोके पट्ट ६३ में श्रीजिन
 राजसूरि इनोके समयमें आचार्य गड सागरचंडसूरिसें जया, इ
 नोके पट्ट ६४ में श्रीजिनरत्नसूरि इनोके समय रंगविजयसूरिसें
 रंगविजय गड जया, इनोके पट्ट ६५ में श्रीजिनचंडसूरि, इनोके
 पट्ट ६६ में श्रीजिनसुखसूरि, तत्पट्टे ६७ में श्रीजिनभक्तिसूरजी
 जये, इनोके पट्ट ६८ में श्रीजिनलालसूरजी जये, इनोके पट्ट ६९
 में श्रीजिनचंद्रसूरिजी जये, इनोके पट्ट ७० में श्रीजिनदर्पसूरिजी
 जये, इनोके पट्ट ७१ में श्रीजिनसौभाग्यसूरिजी जये, इनोके स
 मयमें महेंद्रसूरिजीसें मनोवरागड जया, इनोके ७२ में पट्ट श्री
 जिनहंससूरिजी जये, इनोके पट्ट ७३ में श्रीजिनचंद्रसूरि जये,
 इनोके पट्ट ७४ में श्रीजिनकीर्तिसूरिजी वर्तमान विजयराज्ये ॥

॥ ग्रंथ संग्रहकर्ता कुल प्रकाशक पूज्यश्रेणी ॥

॥ दादासाहिव श्रीजिनकुशलसूरि महाराजके शिष्य म.
 होपाध्याय श्रीकैमकीर्तिगणिजीने जे । यु । प्र । ज । श्रीजि
 नपद्मसूरिजीके बखतमें साधूलोक आचार्यमहाराजके पासमें ब-
 होत श्रीमे रहे उर बनेर ज्ञानवंत क्रियावंतोंको उर जगे चतु-

मांस-करणे, जेजेगये, थोमे बहोत रदेथे सो जी गोचरी थंमिल्ल
 जूमी चलेगयेथे उस वखत श्रीजीके पास फकत श्रीउपाध्यायजी
 ही बैठेथे, श्रीजीका थंमिल्लजूमीका हाथ धुलाणेकूं उठै, अपने वि-
 द्यापाठकजीका ऐसा स्वरूप देख श्रीजीने कहा, पाठकजी आप
 विराजो समयका बना अपरबलीपणा दे सो गछमें साधू बहोत
 कम होगये सो आप मेरे हाथ धुलाणे उठे, दादासाहिबके वखत
 कैसे२ ज्ञानवंत क्रियावंत जगतजीव हितकारी कैसे२ पंक्ति वि-
 द्यमान थे, अब यह गछ किसदशाकूं पोइचा हे, थोमा समुदाय,
 जिसमें सुपात्र तो बहोतही थोमे हैं, तब उपाध्यायजीने कहा म-
 हाराज यह वृहज्ज खरतरमें किसी बातकी कमी नही रहेगी
 अजी गुरुदेवकी कृपासें यती२ होजायंगे, ऐसा कह दादासाहि
 बका ध्यान करते उपाश्रयसें विहार कर वस्तीके बाहिर जा बैठे,
 गुरुके ध्यानमें लीन जये, इतनेमें किसी राजाकी वरात व्याह क-
 रणेकूं जारहीथी, साधूमनिराजकूं बैठे देख पाशमें आके वंदन
 नमस्कार कर गुरुके सन्मुख बैठ गये, श्रीउपाध्यायजीने शांतरश
 का जरा बैराग्यमई उपदेश दिया सो उन पांचसें राजपूतोंने वि-
 वाहकी यांठा ठोम दीक्षा ली, दादासाहिबने देवशक्तीसें सबोंको
 धर्मोपगरण वेप दीया, इन सबोंको लेकर श्रीआचार्य पास आये,
 सूरिश्वरने कहा, केमाजी, धामकीधाम लेआये, उपाध्यायजीने
 कहा तथास्तु, मेरे शंतानी केमधाम नामहीसे प्रसिद्ध रहे,
 उस दिनसें वृद्धसाखा केमधाम विस्तारजावकूं प्राप्त जई.
 यह साखाकी उत्पत्ती संवत् विक्रम तेरेसेमें सीवाणची
 देशमें जई, जो अब जोधपुरराज्यके आधीनमें प्रसिद्ध
 हे, इस साखामें वनेश विद्वान होते चलेआये जिनोके बनाये
 अनेक प्रकरण काव्य न्याय टीका वगैरह विद्यमान हे, उस शाखा

में उपाध्याय श्रीनेममूर्तिजीकृतिः तत् शिष्यं ॥ श्रीक्षेममालि-
कजीकृतिः तत् शिष्यः । पंक्ति प्रवर श्रीविनयज्ञद्रजिकृतिः तत्
शिष्यः श्रीपं । प्र । लब्धिहर्षजिकृतिः तत् शिष्यः पं । प्र । श्रीधर्म
शीलजिकृतिः (श्रीसाधूजी) तच्छिष्यः पं । प्र । श्रीकुशलनिधानजि-
कृतिः तच्छिष्योपाध्याय श्रीयुक्तिवारिधिः श्रीरुदितारगणित्स्वंगृहीत
रत्नसमुच्चय ग्रंथ तथा रामविलास तच्छिष्यः पं । कृमासौज्ञाग्यमुनिः
चि । पेमचंद चि । अमरचंदकी तरफसे यह ग्रंथ सब जीवोंके उ-
पगारार्थ पढ़नेकूं उपाया । श्रीबीकानेरमें सं । १९५९ की ज्येष्ठ
वदि पंचमी को जैन संस्कृत पाठशाला जैन बालकोंके पठनार्थ
स्थापन करी हे इसमें मदत देनेवाले धर्मज्ञ पुरुषोंके नाम बीका-
नेरमें दिया ॥

४१ रु । श्रीनमस्तेजजी चांदमलजी ददा,

११ रु । श्रीमगनमलजी मंगलचंदजी जावक,

११ रु । श्रीसदारामजी गोलठा,

११ रु । मानमलजी केसरीचंदजी सांन,

११ रु । श्रीचूनीलालजी गोलठा,

१० रु । श्रीराजरूपजी देवचंदजी नादटा,

७ रु । श्रीआसकरणजी बरदिया,

११ रु । श्रीवाचरमलजी जसकरणजी रामपुरिया,

११ रु । श्रीसिरवारमलजी तातेन,

२५ रु । श्रीबालचंद कनीराम आजम मुमईवाला,

३ रु । श्रीवराजजी नादटा,

आगे जो विवेकी आचक इस पाठशालाकूं मदत देंगे तो
ज्ञानका अक्षयनिधान पावेंगे, जतीलोकोंके केडयक शिष्य जैनपं-
क्ति तत्वज्ञानी बण जायेंगे, जैनउपदेशक बनें, हर जो नदी प-

दते हैं उनोंको हरतरे श्रावकलोक शिक्षा देकर पढ़ाणेकुं उद्यमवंत
 करणा यद् काम श्रावक मातपिता उर गुरुलोकोंका हे, इस नदी
 पढ़ाणेके सबब जैनके जेपधारी उर जेपधारणीयां अनेक कुसर्मोंके
 वश नरकके पात्र उर धर्मकुं लजाते हे, क्यों को दशवर्ष-
 कालक सूत्रमें लिखा हे (॥ सूत्रं पढमं नाणं तत्त दया ॥) पढ़-
 ली सम्यग्ज्ञान होय तो फिर पीठै दया पाल सकता हे ॥ ज्ञा-
 नीका जन्म सुघरता हे अज्ञानीका सर्वथा नही, वाजै गृहस्थ ऐसा
 कहते हैं हमारे जावे विग्रह तो क्या उर सुधरे तो क्या, हम नतो
 इनोंको गुरुकरके मानेंगे न अन्नवस्त्र देंगे, देंगेतो मानरहित कंग-
 लोकी तरे ॥ हम पढ़ाणेकी क्यों कोसीत करें ॥ उत्तर ॥ यह स-
 मजसे तो जैनधर्म अभावश चंद्रताकुं प्राप्त होता हे, इस बुद्धिसें
 जैनधर्ममें पूनमचंद्रता कैसें उद्योत करें, आद्विधी विवेकविलाशादि
 श्रावकाचार ग्रंथोंमें ऐसा लिखा हे धर्माचार्यके उचिताचरणमें ध-
 र्मसें जृष्टजने धर्माचार्यकुं फेर जिनधर्ममें धिर करे तो बदला ऊनरे,
 दस बीस आदमी एकठे होकर निंदा करणसें विगामका सुधार नही
 होता, धर्ममें धिर करणेकी असली जन्म विद्यावृद्धि हे, स्वभाव कोई
 किसीका नही मिटा सकता यद् तो निश्चै हे, तथापि कारणसें
 कार्य होता हे, कारण तो विद्या पढ़ा हे कार्य सो अही किया चोथा
 पांचमा उठा सातमा गुणगणा चढणेरूप हे ॥ ग्यानी सासोसात
 करम करे सो नास ॥ इत्यादि वचन तीर्थंकरोंका हे सो विचारणा,
 प्रश्न । हम जतियोंको धर्माचार्य नही मानते ? ॥ उत्तर ॥ कोई
 कृतघ्नी अपने पितासे पिताभाव न रखे तो उसका क्या कोई कर
 सकता हे लेकिन संसारमें बह लायकबंदतो नही गिणाजाता, ए-
 सेइ श्रीश्रीमाल श्रीमाल उसवाल पोरवालादि जैनवर्गके धर्माचार्य
 तो जेतीही हे, जतियोंसें पढ़ते हैं, धर्म सुणते हे, सामायक पोसा

पद्मिकमणा करते हैं, मंदिरोंमें गायन पूजा खोपी आदि वाचते हे
यह तो चलता उपगार है, उर जतियोंके वनेरोंनें तुम्हारे वने-
रोंको धितामणी रत्न जेसा जैनधर्म दीया है, यह उपगार सबमें
बसा है. ॥ प्रश्न ॥ एसोंको तो हम मानते है लेकिन सुणारे
पढाणेवाले तो कम उर धर्म खजाणेवाले बहोत जिनोको केसे
माने ? ॥ उत्तर ॥ सब है, इस बातका निर्णय हमने आगे लिखा
है सो बांचो, एक आवकका ॥ प्रश्न ॥ जतीलोक चेला क्यों
करते है इनोसें यथार्थ धर्म पलतानही ? ॥ उत्तर ॥ यथार्थ
धर्म तो यथाख्यात चारित्रकुं कहा है सो तो वज्ररूपजनाराय सं-
द्वान विच्छेद होतेइ गया, सामायक ठेदोपस्थापनी यह दोष रहा,
जिसमें जी उत्तर्ग उर अपवाद, सो उत्तर्ग तो लुप्त, अपवादकी
प्रवृत्ती, सरागसंजमी रहे, चीतरागसंजमी लुप्त, इत्यादिक कठिन मार्ग
सूत्रोंमें बांचणें योग्य ठहरगया, आपसमें कपायकी चोकनीका व-
रतावा देखके मध्यस्थ हो के रहै, आरंभत्यागकी इमेतां बुद्धि रखे
पंचमकालमें वोही साधू है, जतियोंके चेला बणाखेमें इतना फायदा
है-मिश्रपात्वकुलसें जैनकुलमें लाणा, खेती आदि गृहस्थाश्रम-
का पाप ज्ञानपढे बाद आपसेंही ठेरुदेणा, केशवक इनोमें चौथा
पांचमा ठठा सातमादि गुणठाणे चढणा, आवगवर्गका इस जव
परजव संबंधी अनेक कार्योंका सधाणा, इत्यादि लाज परजीवकुं
सब धर्मकी श्रद्धा कराणेवाला तीर्थकर गोत्रकर्म बांधता है, ओमेमें
विचारणा ॥ प्रश्न-जिनोकुं पढाया नही उर गुरुमरे बाद गुरुके क-
माये धनसें पापारंज करे तो बढ पाप चेलेका गुरुकुं जरूर लगे
या नही ? उत्तर-जिस मातापितानें मरणके वखत सर्व परिग्रह
वोस्तिराप दिया उनोको पाप नही, उस परिग्रहसे करे जो पापारंज
सो करणेवालेकुं लगेगा, मातापिताकुं नही, यह जैनधर्मका

मर्म है, मातापिता गुरु शुभ अनुष्ठान सिखलाते दे संतान वेश
करे तो जरूर शुभफल मिलै, जूआ चोरी आदि कुबिसन गुरु सि
खलाते मदी इस वास्ते करै करावै अनुमोदे उसकूं पाप लगे ॥

घांकांनेर षडे उपासरे पास जैनविद्याशालामें उ० । श्रीराम
लालजीगणिः पं । क्षेमचंदजी मुनि पास इतनी पुस्तकें मिलेगी,

	रु.	आ.
संस्तुत्य	५	०
सोलेषाणक्य स्वरोदय ज्ञापा	१	०
करुणावतीत। दादासाहिव्रूजा	२	४
मूर्तिमंणका अद्विजुत घंघ्र सिद्धमूर्ति०	०	७
सर्वपूजामहोदयी खरतरगद्य तपगद्यकी	४	०
ध्यायकव्यवधारालंकार	१	७

(१२)

विज्ञापन.

॥ अथ वर्तमान आचार्योंके करणे योग्य कर्त्तव्य ॥

॥ प्रथम तो आचार्य जातिवन्त रूपवन्त नर विद्यावन्त सुशी-
लही होणा चाहिये, चाहे आचार्यका शिष्य होय चाहे उक्त लक्ष-
णवाला दुसरा कोई होवे, यह सर्व संघकी सम्मतीसँही होणा,
फेर हमेंसा शास्त्राज्यासी होणा, बहोत प्रमादवन्त नहीं होणा, देश
क्षेत्र काल ज्ञाय मुजब सदा गच्छकी सारसंजालसँ जैनधर्मके दीप-
क होणा, बेजा चलणसँ यतीयोंकों दटकणा, उनोंके मन मुजब
नहीं चलणे देणा, लांठित पुरुषकी संगत नहीं करणी, उन्नय
काल प्रतिक्रमणा करणा, अज्ञरुके त्यागी होणा, सूरिमंत्रका नित्य
जाप करणा, देवदर्शन नर थापनाचार्यादि पन्थिलेखण करणा, जती
जतणीकूँ शुद्ध परंपरागम वेप नर संघ तारीफ करे एते मार्गमें
प्रवर्त्तणा, इस उपरांत जो आज्ञा न माने उसकूँ गणादही करणा,
स्वार्थके वश कसूरदारका पक्षपात न करणा, अथै सुशील पंथितो
की सोदबत करणी, कमावन्त जी होणा, समय जी सोचणा, उ-
पदेश करणमें हुतियार होणा, उपाध्याय वाचकादिपद योग्य नर
पंथितकूँ देणा, स्वार्थके वश मुख नर अयोज्ञ नर बुद्धिहीन अव-
स्थावृद्ध कलहकारकूँ न देणा, अपणे २ गच्छके अधिष्टायक क्षेत्रपा-
ल मानजत्रादिकके साहायसँ धर्मके उद्योत वास्ते मंत्र पंत्र तंत्रा-
दिक विद्या लब्धिवलसँ संघमें परोपकारी अष्ट माहा प्रज्ञावीक
होणा ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्याय कर्त्तव्य ॥

॥ सूत्र अर्थ अनेक शास्त्रोंके पढ़ने नर पढाणेवाले होणा,
अर्धमानविद्याका नित्य जाप करणा, रात्रीचोविदार नवकारसी

आदि तपके कर्त्ता, शिष्यादि वर्गकूं सुविहित मार्गमें चलाणा, गद्य के घोरी आधारभूत साक्षात् आचार्य तुल्य शुद्ध अनुष्ठानके कर्त्ता होणा ॥ इति ॥

॥ वर्तमान त्यागीसाधुओंके कर्त्तव्य ॥

॥ गुजरातादि एकही देशमें सुखार्थी होके रहणा नही, जहां पुस्तकोके जंमार नहीं है उहां पुस्तक लिखवाके जंमार करवाणा, अपनी निश्रयें हजारों रुपयेके पुस्तक लिखवाके आवकों पास लेणा यह साधुजंका धर्म नही, फकत अपनेसें उठे उर नित्यं पढिखेहण होय इतने मात्र पुस्तक रखणा, बांधनेकुं चहीये तो ज्ञानजंमारसें लेकर पीठा देणा, जहां चोमासा करे अथवा शेषाकालमें रहणा उस क्षेत्रमें जिसमें वस्तुकी आवश्यकता होय सो उहां उपदेश दे के करवाकर उसही क्षेत्रके संघके सुप्रसन्न करवावेणा, अथवा दूसरे क्षेत्रोंके समर्थ आवकोंसें करवाके जेजावेणा, गृहस्थोंसें बैयाचन कराणी नही, उती योगवाइ इसकालमें इकेला विचरणा नही; जंघाचल घट जाय तो एक जगे रहणा, जती पंक्तियोंहीसें तो पहली ज्ञान पढे उर फेर कृतघ्नी होकर उनही की पीठी हीलणा उर निंदा करणा यह योग्य नही, धर्मके आदि रक्षक उर बीजभूत जतीही है क्योंकि जतियोंकेही प्रतिबोधक उसवाल पोरवाल उर श्रीमालादि आवक हैं, फेर इन जतियोंमेंसेंही हजारों त्यागी वैरागी इस पन्ते समयमें जती होतेआए है, तथा सत्यविजयजी जिनके संतानमें बंटे-रायजी उर आत्मारामजी वगैरे जये है, खरतर अमृतधर्मजी उपाध्यायजी कृष्णकल्याणजी इयते पूर्वपुरुष इनके संतान धर्मानंदजी राजसागरजी सुखसागरजी वगैरे जये हैं उर विद्यमान समयमें मुनिराज शिवजीरामजी मोहणलालजी किरपाचंदजी ज्ञानचंदजी

बगेरे अनेक विचरते हैं सो तुम हम देखते हैं, इस वास्ते ज्ञान-दर्शन चारित्र इन तीनोंकी जन्म इन पुरुषोंके जतीही हे इस वास्ते जतीयोका घराणा रत्नोकी खाण हे, खाणमें रत्न कालपाके निकलते हैं, जतीजी प्रमादी ठे गुणस्थानकमें केश्यक वर्तते हे उर आजकलके साधूजी केश्यक प्रमादी गुणस्थानवर्ती हे इस वास्ते केश्यक तो ठाने दोष लगाते हे केश्यक प्रगट, केश्यक तो जतीयोमें जाव करके पंचम गुणघाणी हे केश्यक चतुर्थ गुणघाणी, इसी तरे साधुओंके मुजबर्दी शुज जावसंयुक्त जतियोंके जाव आश्री गुणघाणा समझणा, निश्चयसम्यक्त तो साधू एक आश्री तथा जती आश्री केवलीजगवान कह सकते हे तथापि जैनधर्ममें व्यवहार शुज बलवान हे, लोचादि कायकेस तपके फल मनुष्य देव आश्री सुखकी अधिकताईके हे, देखो गुणस्थानकक्रमारोहप्रकर्ण रत्नशेखरसूरि कृत ॥ कषायकी बहुलता आजकल साधूजमें ज्यादा देखलेमें आता हे, गणेशवालोंने आपसमें द्वेष रखते हे, खरतर तथा तपोके जी देखलेमें आता हे, जब कषाय विद्यमान हे तो सिद्धिपद कैसे सभेगा बलीहारी उनहींकी हे जिनोंने कषायकी चो-करी त्यागी हे. किंहुना ॥ इति ॥

॥ अब जतीलोकोका संक्षेप कर्तव्य ॥

॥ जाति ब्राह्मन वणिक राजपूत जाट बगेरे उत्तम जाती का चेला तीन ब्यार वर्षकी अवस्थावाला होय सो लेणा यावत् भारे वर्ष तकका उपरांत ऊमरवाला पढता नही उर बहोत मोटा लेणेसे धाय रखणी दोती हे उसकी पालगेट करणकुं तब बहोतसे कमजात अपणी एक्कुं ठिपाणेकुं निंदा करतेहुये कलंक लगाते हे लेकिन न्यायवंत तो पूर्वापर विचारे विगर मूंसं वात नही निकालते मूर्खोंके कहणेसे सोना पीतल नही बणता, उष्टोंका स्वप्ना

वही होता है सौ गुणमें उगुण निकालते है, जर्तृहर लिखता है-
 सूरवीरकुं निर्दश कहते है गमखाशेयालेकूं मरोकम केते है ब्रह्म-
 चारीकूं नामर्द इत्यादि अनेक दृष्टांत है, खैर ऐसे चेलेकूं मुखपाठ
 जैनधर्मका अवश्य कर्त्तव्य गुणाना निच फेर अक्षर वांचने सि-
 खाणा अक्षर जमाणे चोलखा पाटी लिखाणी फेर कोश व्या-
 करण काव्य न्याय ज्योतिष वैद्यक बुध्यानुसार सीखाकर जी-
 वविचारादि पट्ट प्रकरण सूत्र सिद्धांतोकी व्याख्या सिखाणी, चोल-
 पट्टा मुंहपत्ती उघा मांसा घेहर पांगरणी स्वेत हमेसां रखणा, म-
 स्तकके बाल केचीसैं कतराणे या उत्तरेसैं मुंभाणा, पादस्त्राण स्वे-
 त वस्त्र ऊपर दियेहुये शीत उष्ण कांटा बगेरे के उपसर्ग मरुधर
 देश आश्री पहरणें दक्षिण पूर्वमें प्रायें नही उहां एसा उपसर्ग
 नही देश विरुधके कारण त्याज्य है, प्रवचनसारोब्धार ग्रंथमें का-
 रणविशेष साधूनुंको पादस्त्राण पहरणेकी आज्ञा है, पुस्तक लि-
 खणा पातरे पाटी बगेरे रंगणा गूथणा तिरपणीके मोरे बणाणे
 माला बणाणी ठोकरे पढाणा मंत्रविद्यामें कुशलाता रखणी सो जी
 जिनधर्मके अन्यके नहीं, रातकूं चोविहार नवकारसी पोरसी प्रमुख
 यथाशक्ति तप करणा, दोनुं वखत पम्किमणा करणा, उची शके
 सञ्चित त्यागणा, राजदमे लोकजमे ऐसे रस्ते नही चलणा, कुलम-
 र्यादि लोपणा नही, चिलमचुट्टा बगेरे जैनधर्मके कायदेके बरखि
 लापनसा पीणेवालेकी संगत नही बेटणा, कुवित्तनीयोके संगतसे
 बन लगता है, आवक जो द्रव्य देवें सो सुकृतार्थ लगाणा तीर्थ-
 चेला लेणा उनोकूं खिलाणा पिलाणा पंक्तोको रुजगार देके
 पढाणा, पुस्तक लिखाणा अंत सनय जीवराशी स्वमाय
 गही सुकृतकी अनुमोदना कर सब बोसराके परजव सा-
 देणा ॥ इति ॥

॥ अथ श्रावकोंका कर्तव्य ॥

॥ सुलज्जबोधी श्रावकोंके इक्कीस गुण सिद्धान्तोंमें लिखे
उक्त गुणोंकें धारणा चाहिये. गणसंगसूत्रमें साधुओंकी प्रतिपाद-
रणोंसे श्रावकोंकें मातापिता तुल्य जगवन्तोंमें कहा है, बालक
जो भी करे तो ज्ञाता मातापिता अपने शान्तानपर अंतरंगसे कर्त्तव्य
नहीं करते हैं, इसी तरे श्रावकोंकें साधुओंकोसे वत्सला चा-
नेपचारीसाधुओंमें कोई तरेकी एवं दीखपने तो एकांतमें हित
देके बुझाणा चाहिये, नहीं माने तो बालकहूँ धमकावे जैसे
काणा चाहिये, इस उपरांत सुधरते नहीं दीखेतो कर्मोंकी वि-
ता समझके एतोंकी संगत न करे, जैनधर्मकें लजावै, एसा
कोई नहीं होय और शरीरके परवशता अथवा देश क्षेत्र काल
के कारणसे अपवादमार्गमें चलते होय और गुणवान होयतो
गुणकी कदरदानो नारायणकृष्णकी तरे जलूर करणी, और जि-
र्मकें लजावै एसा होयतो उहांसे रुकसत करादेणा, जिन
और उपासतरेकी आबंद स्वरचकी सारसंज्ञाल जलूर करे, विनास
किये बहोतसे मंदिर उपासतोंकी तजवीजें बिगन रही है,
लोक स्वागमे है, उती शक्ते इस बातका खयाल हरतरेसे को-
पणा लनका लनकीयोकें संसारविद्या और धर्मकी मजबूती
ऐकें पन्निक्मणा चैत्यवंदनादि श्रावकाचार और जैनन्या-
स्त्री अक्षर वचपणसे सिखलाणा चाहिये देव गुरु और वने
लवन्तोंकी संगत करवाणी चाहिये, विरादरीमें सनातन कुल
दसे जो विपरीत आचारणा करे उसकी देखदेख आप न क-
वसे जहांतक उणोंको ज्ञाता रोकणा, विद्यमान अंग्रेजी इहम ल-
कें सिखलावे तो पहली जैन न्यायसे हुसियार कर पीवै सिख-
व्योंकी इस अंग्रेजी इहमकी ज्वादा किताबोंके पढणेंसे पीवै

सत्य सनातन दयाधर्मका उपदेश लगणा मुसकिल होता है, जैनधर्मकी उन्नती पर कमर बांधणा उर अंग्रेजीमें चौधे दरजे तक होकर हाल मुकाम जेपुरमें ढढ़ा गुलाबचंदजीकों हम धन्यवाद देतें हैं इस वजें बेलासक पढ़े उर पढ़ावै, जैनधर्मके कायदेकी जवूती उर तारीफ जिसने समजा है वोही जाणता है उर लसकूं मुसककी खसबो कब लग सकती है, जिनोंको संसारमें अजीब होत जवध्रमण करणा बाकी रहा है उनोंको जैनधर्म किती तरे चता नही. कोइ संका करेगा जैनधर्ममें पंथ न्यारे? हे मानेजी कोन सच्चा उर कोण ऊँचा ? (उत्तर) हे जय्य हमने पेस्त-ही लिखा है न्याय जो जैनका सात जंगरूप है उसकूं समजा र वस्तुउ पर घटातेही यथार्थ मार्ग मिल सकता है. (प्रश्न) इ-नी बुद्धि उर परिश्रम तो करणेवाले थोमे हैं सो एसा न्याय प-क निश्चयकरे सहजमें निश्चय केसे होय ? (उत्तर) जो इतना ही समजो तो जो रूपजदेवजीसे लेकर आज दिनतक जो स-नातन जैनधर्म चलता आया है वोही जैनधर्म सच्चा है बीच-अद्वयज्ञोने अहंकारके बस मनोकल्पित फंदसे एक नय पकरके पने मत खमे किये है, पटशास्त्री चौदेपूर्वधारी दशपूर्वधारी र्युक्तोकार जगवान जइयाहुस्यानी उमास्वाती ज्ञाप्यकार जिन-द्रगणी क्रमाश्रमण इत्यादि पंचांगीकार जो समुद्र तरीये बुद्धी-धणी उनोंने जिस बातका निश्चय किया वोही सच्चा जैनधर्म मऊला, आवगधर्मवालों पर बुरा उपगार स्तनप्रज्ञसूरि उर दादा जिनदत्तसूरि प्रमुख आचार्योंने किया है सो केइयक पापारंज वातें तो इस जातीके कायदेसेही बंध होगई है, जैसे मयका ला उर मांसादि अन्नरु खाणा लेकिन आजकल कर्मके बस रेश एते उत्तम दुखमें निरबुद्धीयेने अधोगतीकी समक बां-

धणो पर मुस्तेद हुये सुणनेमें आते दे, चिंतामणीरत्न समान जैन
 धर्म पाय के निरज्जायकी तरे क्यों हाथसे फेंकते हो पीठे पठ-
 तावा होगा थोभे दिनको जिंशगानी दे, मदिरा पीणेमें वाचन
 उगुण दे ऐसैं मांतमें देखो जैनतत्वादर्श ज्ञायाग्रंथ, यही चीज
 अठ्ठी होती तो तुमारे वगैरे लाखों राजपूत इस चीजोंको
 क्यों ठोमते उर मुसलमीनोको जौ धर्मकायदेसें इस बातकी
 सकत मनाई हे इत्यादि, किंवहुना ॥ जैनपाठशालाउ स्थापन
 करणी पढ़नेवालोंको अन्न वस्त्रादिसें सत्कार करणा चाहियै,
 जैनकोममे संय नही दे इसका मूल कारण विद्यारहितपणा है, पं-
 नित तो दुस्मन जौ अठ्ठा होता है मूर्ख हितकारी जौ कामका
 नही, विद्यायान सब काम विचारकेही करता है मूर्खके] विनाका-
 रण द्वैप उर अहंकारीपणा होता है बाकी तो कवियोंने कहा दे-
 डहा ॥ सज्जन जाके सो नही, दुस्मन नही पचास ॥ जशनी जशके
 क्या किया, जार मरी नव मास ॥ १ ॥ आवक जितनी चीज
 अपने उपजोगमें छेता है सो सब उत्तम चीजका दान करता है
 एक स्त्री वर्जके उस करके जन्मांतरमें लक्ष्मीकी एश्वर्यता जाग
 कर संसारका पार पुन्यानुबंधी पुन्यसें पाता है सुक्तिपंथ जाते हुये
 जीवकुं पुन्यबोलाउरूप है, अन्न वस्त्र उपशी सज्या पात्रादिक साधुजनों
 देवे, देवके निमत्त अष्टद्वय गहणे वस्त्र अनेक प्रकारकी पूजाजंतें
 दान करे, ग्यानके वास्ते पुस्तक पूठा वगैरे कुजमणें दान करे, सा-
 धर्मी तथा जैनपंथितोंकुं नगदद्रव्य वस्त्र जोजनादिक यथायोग्य
 दान करै, तीर्थकर जगवान जौ संवत्सरी दान देते हैं, दानधर्म
 मुख्य है जगवतीजीमें ग्रहस्थका अजंगद्वार कहा है, जगवतीसू-
 त्रमें तीन गुरु कहे हैं सिद्धगुरु १ जो कारोगरी सिखलावे सो, क-
 लागुरु २ जो लिखला पढ़णादि ३२ कला सिखलावे सो, धर्मगुरु

३ सामान्यक पश्चिममण्डल नवतत्त्वादिक धर्मका उपदेश दे के मुक्ति-
पथ बतलावे सो, इन तीनोंकी आवश्यक यथायोग्य ज्ञाती करे ॥ अत्र
चतुर्जगती लिखते हैं ॥ सम्यग्ज्ञानवन्त देसेविराधक । १ । कटरूप
क्रिया करणेवाला देशेआराधक । २ । ज्ञान नर क्रियारहित सर्व-
विराधक । ३ । ज्ञान नर सत्क्रियावन्त सर्वेआराधक । ४ । ॥ इति
पात्रगुरु निर्णयः ॥ विशेष आचकोके करणे योग्य कर्त्तव्य देखणा
होय तो हमारा उपाया आवग व्यवहाराखंकार देखो ॥

॥ अथ मंदिरके पूजारीयोके कर्त्तव्य ॥

भारवाममें प्राये जैनमंदिर जोगगद्दी पूजते हैं उनमें इस
वखत प्राये मिथ्यात्वी बहोत सम्यक्की बहोतही कम हे, गुजरातमें
जो जोगक जैनमंदिर पूजते हैं सो सब जैन हैं जिनोका अन्य
देशमें गंधर्व कहते हैं. (प्रश्न) पूर्वोक्त जोगकोते जैनधर्म कयसे
बोधा हे ? (उत्तर) पहले श्रीरूपनदेवजीने जोगवंश स्थाप-
नकर अपने कुलके प्रोहित बनाये, पीछे भरतजीने ब्राह्मणवंश
स्थापन करा, राजा सूर्यवर्षने जोगवंशीयोको पूज्य जाण जिनमं-
दिरोंकी सारसंज्ञाल सोंपी लेकिन जिनमंदिरका चढापा मंदिरके
कूटपर धरायाजाताया जैनधर्मा होणसे बलिदान जोगवंशी नही
खतिथे वो सब पखी जानवर खायाकरते, इनोका अनेक तरेसे पर्व
मिहोछव पर इव्य वस्त्र जोगनादिकसे राजा नर प्रजा सब संस्कार
करतेथे वो सब नवमें वृक्षमें जगवानके अंतरमें मिथ्याधर्मा होणये
प्रादिकजी कोइ जैन कजी मिथ्यात्वी ऐसे होते चले आये, जब २४
से वर्ष पहिले उसीयामें जैनधर्म फैला तब राजाके पुरोहित राज-
पुतोके संग जोगवंशी फेर जैनधर्मा होणये तब राजा उपलदेव प-
भार वगेरोने जकी नर बहुमानता के संग जिनमंदिरका पूजारी-
पक्षा साधेमा ब्राह्मण जाण सुप्रत कोयागया, जिसके बाद विक्रम

संवत् बारहत्तम रामानुज मार्धवाचारी वगैरोंने विष्णु संप्रदाय नि-
 काली, उसही जमानेमें अनेक राजन्ध्रवंशीयोंको दादा दत्तसूरजी
 ने लाखों हुतवाले फेर वणाये, तब राजवीथीमें गुरुसे अरज की
 इस दयाधर्मके प्रजावर्तने निर्दोषीपणा हम लोकोंमें होगा नहीं राज्य
 तो सदा थिर रहेगा नही आगे हम लोकोंका अहवाल क्या होगा,
 गुरुने कहा जो जिनमंदिरोंकी जमीनी और जतीगुरुकी सेवा अन्नक
 त्यागादिक हमारा धरायाहुवा जैनधर्ममें जहांतक चलोगे तहां
 तक पाँटेका मालक राजा और सर्व पाँटेका मालक तुमलोक रहोगे
 तथास्तु वरदान ऐसाइ जया; राजाउने अपणें जाई स्वजनवर्गी
 हुतवालोंकू प्रधान द्वाकम सेनापती आदि सर्वस्व अधिकार यथा-
 योग्य सुप्रत किया, तबसे २२ सौ रजवालोंमें हुतवालोंका राज्या-
 धिकार वणा तबसे हुतवालोंने महरवानी रखके विष्णुमंदिर शि-
 वालयादिकोंका पूजारीपणा जौ जोजकोंको सौंपा वह जोगवंशी
 फिर पीठे धारेश मिथ्यास्त्री वणवेठे, विद्याहीनता दोषोंसे सब तरे
 की हीणता होगई आखिरकों लोक ब्रह्मण जोजकोंको कर्म कर
 करके मानणें लगे पूज्यजाव हुतगंगा, जो कज्जो जोजकलोक एता
 समज्जेंतें होंगें की हम तो अंखलतैही शैव वैष्णव थे (उत्तर)
 यह समज्जकी जूल दे हम पदली लिखदिया दे जैनधर्मकी बहु-
 लायतमें प्रजा जैन रही, बोधोक अमल बोध, शास्त्रादिकोंके अ-
 मलमें सांख्य, इत्यादि बातें तंबारीकोसें जौ पाईजाती है लेकिन
 जैनधर्म और मिथ्याधर्म दोनों अनादि कालोंका है इतना जोज-
 कोंको जरूर समज्जणा चाहिये जो तुमलोक सदा मिथ्याधर्मो हो-
 ते तो राजा उपलदेव पंभारादिकें परमजैन तुमारा लागा और बहु-
 मान हुतवंश पर कज्जो नही लगते, मिथ्याधर्मियोंका जोर हुत-
 वाले जैनोपर कब लग सकताथा इतनेमेंही समज्जणा, पीठेतें

विष्णुमंदिरोकी पूजा और राजा वगैरोंकी देखेदेख संग दोष लगा, उसवालोंने तिथि नहीं करी बध गया, इस तरेही बड़े-तसें उसवंशी जी खुतामदीसे उसरा धर्म धारलिया तुमको क्या कह सकतेये, खैर इस बातोंसे हमारे कुछ मतलब नहीं मती जैसी गती हे लेकिन अब हम आगे लिखते हैं उस पर अमल करणा तुमारा फरज हे, लोकोक कहणावट जी हे “ जिसकी खावे बाजरी जिसकी जरणी हाजरी ” उसमें हरज करणसें निमकहराम कहलाता हे ॥ अंतरंगजकीसें जिनमंदिरमे जानू देणा, वरतन मलणा, अंगलूहणा धोके साफ रखणा, वस्त्रोंकी शुद्धी अंगकी शुद्धी विगर जिनमूर्त्तिका स्पर्श नही करणा, पूजा ऐसी साफ करणी सो आतपास मैल जरा जी नही रहणे देणा, दीपक जलाणोंमें ठकला वगैरे देकर जीवरक्षा करणी, जल शुद्ध घाणणे आदि पुष्पके जीवजंतु देखणे आदि पूजाकी सामग्री ब-होतही विवेकसें रखणा, देवद्रव्यकी चोरी नही करणी, इकमें हरकत मालणा नही, देव और गुरुकी सेवा करणसें तुम्हें सेवगपद मिला हे, जो जावसें करोगे तो जन्म सुधरेगा अगर कर्मोंके बश जी श्रद्धा नही आवै तो जिसकी ब दोलत रोटी आदि सइकनों रुपे पाते हो मरणे परणे मंदिर श्रीपूज्य उपासरे के जरीये तुम्हें सइकनों रुपे आवक देते हैं वो सब देवगुरुका प्रताप समझ इन दोनोंकी सेवा तने मनसें बजाया करो ॥ अलंबिस्तरेण ॥

ऊपर व उपदेश मैंने लिखे हे कोइ कठोर लबज लिखा होय तो माफी मांगताहूं सरलजावसें लिखा हे देयसें नही ॥

इस ग्रंथके ठापणेमे काना मात्रा ज्यादा या कम जो रह गया होय तो सुधारके बांचे या गुरुसें शुद्ध करावेवें में मनशु-द्धिसें सर्व संयसें कृपा मांगताहूं सक्कन तो सदा गुणयाहीही देते-

हैं, उनोका मैं सदा आज़ार मानताहूँ ॥ यतः ॥ तथापि क्रियेत
 ग्रंथ, संतिपद्यपि पुर्जना ॥ न द्विदस्युजयाल्लोको, दैन्यवानिह वर्तते ॥
 ॥ १ ॥ अर्थ—ग्रंथ संग्रह तो ज़ी करताहूँ यद्यपि डुरजेन बहोत हे
 चोरोके मरसे लोक कैगाल नही बण वेवते तेसे ? मेने अपने
 हाथसे लिख रकर मुबेश जेजकर शिष्यवर्गोके कहणेसे इसमें सं-
 ग्रह मेने अनेक ग्रंथोसे किया हे, बहोत चीजें पं । प्र । श्रीश्रीवी-
 रचंडजीमुनिसे लीहे, पुस्तक यह बहोतही रत्नरूप संचय हे.
 रूपनदेवजीको आदिअकर । २ । महावीरस्वामीका । म । इन दोनोसे
 बणा जो । राम । उनोके मध्यवर्ती सब जगवंतोके गुणोका विलास
 इतवास्ते इस ग्रंथका रत्नसमुच्चय तथा रामविलास यथार्थ नाम हे ॥
 ॥ परम मंगल श्रीदादाजीके काव्य सर्वईया ॥

दाशानुदाशाश्च सर्वदेवाः, यदीयपादाब्जतलेषु वृति ॥ मरु-
 स्थलीकडपतरुः सजीया, ज्जुगप्रधानोजिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥ चिंताम-
 णिः कडपतरुर्वराको, कुर्वन्ति ज्ञव्याः किमु कामगव्या ॥ प्रसीदतः श्री
 जिनदत्तसूरिः, सर्वपदाहस्तिपदेप्रविष्टाः ॥ २ ॥ नोयोगीनवयोगिनी,
 नचधराधीशस्य नोशाकिनी ॥ नोवेत्ताल पिशाचराक्तगणाः, नोरो-
 गशोगोभयं नोमारीनचविग्रहः, प्रभृतयः प्रीत्याप्रणत्पुच्छैः ॥ य-
 स्ते श्रीजिनदत्तसूरि, गुरवो नामाक्षरंध्यायति ॥ ३ ॥ ॥ अथ स-
 र्वईया ॥ बावन वीर किये अपने वश, चौसठ योगण पाय ल-
 गाई ॥ भाइण साइण व्यंतर खेचर, भूतरूपेत पिशाच पुलाई ॥
 बीज तरुक्क करुक्क भटक्क, अटक्क रहै जु खटक्क न फाई ॥ कहे भ-
 मसीह लंघै कुण लीह, दीयै जिनदत्तकी एक डुलाई ॥ १ ॥ इति ॥
 राजै शुंज गौरगौर, एसो देव नही और ॥ दादौ दादौ नामसें, ज-
 गत्र जश गायो हे ॥ आपणेंही जाव आय, पूजै लस्क लोक पाय ॥
 प्यासनकुं रांनमांजि, पाणी आन पायो हे ॥

हाठ पुर प्राटणमें ॥ देह गेह नेहसें, कुशल वरतायो हे ॥ धर्मसी-
 ह ध्यान धरे, सेवकां कुशल करै, साचों श्रीजिनकुशलसूरि, नाम तुं
 कदायो दे ॥ १ ॥ कुशल अंग नवरंग, कुशल वणिजै व्यापारै, कु-
 शल देव देहरे, कुशल धन राजद्वारे ॥ पुन्य प्रसाये कुशल कुशल
 श्रीसंघ जणीजै, वादण आवै कुशल कुशल घर २ गाईजे ॥ जिन-
 चंद्र सूरि पुढे पदधर नाम मंत्र आरति टलै, श्रीजिनकुशल सूरि
 पाय पूजतां नव निधान लक्ष्मी मिले ॥ १ ॥ कुशल बनों संतार
 कुशल सज्जन घर चाहै, कुशले सङ्गल माल लखि घर कुशले
 आवै ॥ कुशलै धन वरसंत कुशल धन धनरुक्मिनी, कुशलै धोनां
 अह कुशल पहरीय सुवन्नो ॥ एरसो नाम सदगुरुतणो कुशलै जग
 रलियांमणो, नटारक श्रीजिनकुशल सूरि नाम ग्रहणे करी घर ३
 होय वधामणो ॥ १ ॥

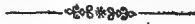
रत्नसमुच्चयग्रंथस्यानुक्रमणिका.



ग्रंथोका नाम.	पृष्ठांक.
१ छँकारं विंदुसंयुक्तादि मंगलाचरण ...	१
२ स्वरवर्ण	२
३ वर्णव्यंजनमाला	३
४ शिक्षावाक्य	३
५ संधिसूत्र	४
६ द्वितोपदेश	५
७ विष्णुं जिन नाम सोले सती नाम ...	७
॥ प्रतिक्रमण सूत्र प्रारंभ ॥	
८ नवकारमंत्र	१०
९ ध्यापनाचार्यजीकी तेरेपन्निदेण ...	१०
१० खमासमण	१०
११ सुगुरुने शाता सुखपुडा	११
१२ सुहृपत्ती पन्निदेणके पच्चीस धोल ...	११
१३ अंगकी पच्चीस पन्निदेण	११
१४ सामापफकां पञ्चखाण	१२
१५ इरियावहि	१३
१६ तस्तज्जरी	१३
१७ अन्नदूसतिएण	१३
१८ लोगस्त	१४
१९ वेतणोसंदिस्ताजं	१४

हाठ पुर प्राटणमें ॥ देह गेह नेहसें, कुशल वरतायो हे ॥ धर्मसी-
 ह ध्यान धरे, सेवकां कुशल करे, साचों श्रीजिनकुशलसूरि, नाम तुं
 कदायो हे ॥ १ ॥ कुशल अंग अवंग, कुशल वणिजै व्यापारि, कु-
 शल देव देहरे, कुशल घन राजद्वारे ॥ पुन्य प्रसाधे कुशल कुशल
 श्रीसंघ जणीजै, वादण आवै कुशल कुशल घर २ गाईजे ॥ जिन-
 चंद्र सूरि पुद् पद्मधर नाम मंत्र आरति टलै, श्रीजिनकुशल सूरि
 पाय पूजतां नव निधान लक्ष्मी मिले ॥ १ ॥ कुशल वनो संतार
 कुशल सज्जन घर चाहै, कुशले सङ्गल माल लङ्घि घर कुशले
 आवै ॥ कुशलै घन वरसंत कुशल घन धनरुक्मिनी, कुशलै घोमां
 अट्ट कुशल पहरीय सुवन्नो ॥ एरसो नाम सदगुरुतणो कुशलै जग
 रलियांमणो, जट्टारक श्रीजिनकुशल सूरि नाम ग्रहणे करी घर ३
 होय वधामणो ॥ १ ॥

रत्नसमुच्चयग्रंथस्यानुक्रमणिका.



ग्रंथोका नाम.	पृष्ठांक.
१ उँकारं विंदुसंयुक्तादि मंगलाचरण ...	१
२ स्वरवर्ण	२
३ वर्णव्यंजनमाळा	३
४ शिक्षावाक्य	३
५ संधिसूत्र	४
६ द्वितोपदेश	५
७ त्रिंशुं जिन नाम तोले सती नाम ...	७
॥ प्रतिक्रमण सूत्र प्रारंभ ॥	
८ नवकारमंत्र	१०
९ ध्यापनाचार्यजीकी तेरेपन्निदेहण ...	१०
१० खमासमण	१०
११ सुगुरुने ज्ञाता सुखपुत्रा	११
१२ मुदपत्ती पन्निदेहणके पञ्चीस बोले ...	११
१३ अंगकी पञ्चीस पन्निदेहण	११
१४ सामायककां पञ्चखाण	१२
१५ इरियावदि	१३
१६ तस्तउत्तरी	१३
१७ अन्नचूससिएणं	१३
१८ लोगस्त	१४
१९ वेतणोसंदिस्ताउं	१४

३८	दवालय आलाय	३१
३९	रात्रि संबंधी अतिचार आलोयण ...	३१
४०	अठारे पापस्थानक आलोयण...	३२
४१	आवकवंदित्तसूत्र	३३
४२	वंदित्तसूत्र पीठेकी विधि	३६
४३	अष्टुत्तिमि	३६
४४	आयरिय नवज्ञाए	३६

४५	श्रावस्थककीमुहपत्ती	२७
४६	सकल तीर्थ नमस्कार	२७
४७	परसमय तिमरतरणि	२८
४८	संसारदावाकी स्तुति...	२९
४९	कान्तसगमै स्तुतिका पृथग् पाठ	२९
५०	अढाङ्कोसु दीवसमुद्दे	३०
५१	जय२ त्रिजुवन० सीमंधर चैत्यवन्दन	३१
५२	सीमंधर स्तवन ॥ श्रीसीमंधर साहिबा...	३१
५३	सीमंधर स्तुतिकी एक गाथा महीमंनषां	३२
५४	सिद्धाचलजीका चैत्यवन्दन जय२ नाजिनरिवन्द	३२
५५	सिद्धाचल स्तवन ॥ सिद्धाचलगिरि जेव्या रे	३२
५६	सिद्धाचलयुग् शेत्रुंजगिरिनमीये रूपनदेवपुंनरोक	३३
५७	पन्निदण विधि	३३
५८	सामायक पारनेकी विधि	३४
५९	जयवं दसणजहो	३४
६०	संध्याकालसामायक विधि	३५
६१	देवसी पन्निमण विधि	३६
६२	जयतिदुअण	३६
६३	जयमहापश	४०
६४	महावीर स्तुति॥मूरति मनमोदन कंनष को०	४०
६५	स्तुति कहां पोठेकी विधि	४१
६६	श्रुतदेवताकी स्तुति...	४३
६७	क्षेत्रदेवताकी स्तुति...	४३
६८	वरकनक	४३
६९	नमोस्तु वर्द्धमानाय...	४४

९५	परकीसूत्र	७६
९६	अठपहरी पोतेकी विधि ...	९०
९७	पोसद का पञ्चस्काण ...	९१
९८	चोवीस ग्रंथिला करणेका पाठ ...	९२
९९	ग्रंथिलाकहाकरणा ...	९३
१००	पांचे शक्रस्तवे देववन्दण विधि...	९४
१०१	पञ्चस्काण पारणेकी विधि ...	९५
१०२	राइ संशारा विधि ...	९६
१०३	पोसद पारणेकी विधि ...	९७
१०४	दिन उग्यां पीठै पोसद लेणेकी विधि ...	१००
१०५	रात्री चोपुहरी पोतेकी विधि...	१०२
१०६	ठाणेकमणें चंकमणे...	१०३

॥ देववांदणेमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके

प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

१०७	दूजकी शुद्ध ॥ मदी मंरणां ...	१०३
१०८	पांचमीकी शुद्ध ॥ पंचानंतक०...	१०४
१०९	आठमकी शुद्ध ॥ चोवीसे जिनवर...	१०४
११०	मैानएकादशी स्तुति ॥ अस्य प्र० ...	१०५
१११	पार्श्वजिन स्तुति ॥ ईर्देकि चतुर्दशीकी...	१०५
११२	निरुपम सुखदायक ॥ नवपद स्तुति ...	१०६
११३	वलिर हूं ध्याऊं ॥ पञ्जपण स्तुति ...	१०६
११४	सुर असुर वंदिय ॥ नेमजिन स्तुति ...	१०७
११५	पापायांपुर चारुः॥ दीपमालिका स्तुति...	१०८

॥ शुद्ध संग्रह ॥

११६ पंचविदेद विपै, विहरंता॥वीसविहरमान स्तुति:१०८

११३	सममोत्तम वस्तुमहापणं ॥ पार्थिवस्तुतिः	१०९
११४	वरमुत्तिपहार ॥ रुक्मस्तुति ...	१०९
११५	प्रणमुं परमपुरुष ॥ रुक्मस्तुति ...	१०९
१२०	विश्वनाथक लायक ॥ अजितजिन धुइ...	११०
१२१	यदंद्दिनमनादेव० वर्द्धमानस्तुति	११०
१२२	वीरदेनं० वीरजिन धुइ ...	१११
१२३	सुरति मनमोहन० वीर धुई ...	१११
१२४	चक्रवीर जिन पंचकलपाणक स्तुति ...	१११
१२५	श्रीशैत्रुंजमंरुण आदिदेव ॥ सेत्रुंज धुई...	११२
१२६	गिरनार शिखरपर० नेमजिनस्तुति ...	११२
१२७	सुख समकितदायक० शीतलजिनधुई...	११३
१२८	मिल चोविह सुरवर० समवसरणस्तुति...	११३
१२९	सेत्रुंजगिर नमिथै ॥ चैत्रीपूजमस्तुति ...	११४
१३०	समरुं सुखदायक० नवपदस्तुति...	११४
१३१	शिवसुख दाता ॥ वीसस्थानकस्तुति ...	११५
१३२	अरिहंत सिद्ध पवयण० वीसस्थानक धुई	११५
१३३	अनुपमगुण आगर० नवपद स्तुति ...	११६
१३४	विमलाचल मंरुण जिनवर ॥ शैत्रुंजय स्तुति	११६
१३५	शांतिजिनेसर जगअलवेसर ॥ शांतिनाथ धुइ	११७
१३६	मन सुख वंदो ज्ञावे जवियण ॥ सीमंघर स्तुति	११८
१३७	पंच अनंत महंत गुणाकर० पंचमी स्तुति	११८
	अरुनाथ जिनेश्वर दीक्षा ॥ अग्यारस स्तुति	११९
	जयकारी जिनवर वासुपूज्य ॥ रोहणी स्तुति	११९
	प्रथम तीर्थंकर आदिजिनेश्वर ॥ पस्की चौदश स्तुति	१२०

॥ अथ स्तोत्र संग्रह आदौ सप्त स्मरणानि ॥

१४१	अजित शान्त स्तव प्रथम	१२०
१४२	नृत्नासिक्कम ॥ द्वितीय स्तव लघुअजित शान्ति	१२५
१४३	नमिऊण ॥ तृतीय स्तव	१२६
१४४	तंजयन ॥ गणधर स्तुति चतुर्थ स्तव ...	१२८
१४५	मयरदियं ॥ गुरुपारतंज्य ॥ पंचम स्तव	१३०
१४६	सिग्घमवहरिउ० पष्ठ स्मरणं... ..	१३१
१४७	उवसग्गहरं स्तोत्र ॥ सप्तम स्मरणं ...	१३२
१४८	जक्कामर स्तोत्र	१३३
१४९	वन्नी शान्ति ॥ जोज्जोन्नया	१३७
१५०	जिनपंजर स्तोत्र	१४१
१५१	किंकप्पत्तरु० वन्ना नवकार	१४२
१५२	तिजयपद्दुत्त ॥ शसतिजिन स्तोत्र ...	१४५
१५३	वोसावहारवस्को ॥ नवग्रहण पा० ...	१४६
१५४	जगद्गुरु नमस्कृत्य ॥ शान्ति स्तोत्र ...	१४६
१५५	कळ्याणमंदिर स्तोत्र	१४८
१५६	इपिमंरुत्त स्तोत्र	१५१
१५७	लघुजिनसदस्सनाम	१५५
१५८	महिस्स स्तोत्र	१५८

॥ अथ वुटकर चैत्यवंदन ॥

१५९	सिद्धो त्रिक्लाय चक्की ॥ सेत्रुंज चैत्यवंदन	१६२
१६०	श्रीसेटीतट मेरु धाम ॥ पंजणापार्श्व चैत्यवंद०	१६२
१६१	वंदू जिनवर वीहरमान ॥ सीमंधरजिन चै०	१६३
१६२	पूरव देते दीपतो ॥ शिखरगिरी चैत्यवंदन	१६३
१६३	प्रथम महेस्स-पद्मनाज्ज ॥ पद्मनाज्जजिन स्तुति	१६३

१६४	अवामावामार्धे ॥ पार्थ्व स्तुति ॥	...	१६३
१६५	अविरलशब्दघनोघा ॥ सरस्वती स्तुति...		१६३
१६६	दर्शनं देवदेवस्य ॥ सर्वजिन वंदन स्तुति		१६४
१६७	ज्ञापामई दोहा ॥ वंदनस्तुतिरूप॥हरयाजेहसुल.		१६४
१६८	श्रीअरिहंत उदार कांति ॥ नवपद चैत्यवंदन		१६५
॥ अथ वक्रा स्तवन संग्रह ॥			

१६९	सुगण सनेही साजण श्रीसीमंघर स्वामि		१६५
१७०	सफल संसार ॥ दूजका वक्रा स्तवन	...	१६६
१७१	प्रणमुं श्रीगुरु पाय ॥ पंचमीका वक्रा स्तवन		१६८
१७२	पंचमी तप तुमे करो रे प्राणी ॥ पंचमी लघु स्त.		१७०
१७३	अमल कमल० अष्टमी लघु स्तवनं	...	१७१
१७४	विमलजिन म्दारे तुमसुं प्रीत ॥ विमलजिन स्त.		१७२
१७५	समवसरण वैरा जगवंत ॥ मूनइग्यारस स्त०		१७२
१७६	सारदमात नमूं शिरनामी ॥ शांतिनाथ स्तवन		१७३
१७७	चौरासी आसातनाका स्तवन...	...	१७५
१७८	चोवीसजिन देहमान स्तवन	...	१७६
१७९	चोवीसजिन आयुप्रमाण स्तवन	...	१७७
१८०	त्रैलोक्य जलाकापुरुष स्तवन	...	१७८
१८१	श्रीविमलाचल शिरतिलो ॥ संजुज स्तवन		१८०
१८२	सिद्धाचल मंरुणस्वांमो रे ॥ सिद्धाचल स्त०		१८१
१८३	रूपजजिनेसर दिनकर साहिब ॥ स्तवनं		१८२
१८४	वीर सुणोमोरी वीनती ॥ अमावसका म. स्त.		१८३
१८५	चोवीस दंरुक स्तवन	...	१८५
१८६	इरियावही मिठामिडुकु म संख्या स्तवन		१८८
१८७	पंच समवाय स्तवन...	...	१९०

१८८	चौदे गुणगणा स्तवन	१९५
१८९	नव तत्व ज्ञापागर्भित स्तवन... ..	१९९
१९०	दंभक ज्ञापागर्भित स्तवन	२०३
१९१	जीवविचार ज्ञापागर्भित स्तवन	२०६
१९२	समवशरण विचारगर्भित स्तवन	२१०
१९३	सुण२ सेत्रुंजगिरिस्वामी ॥ रूपजदेव स्त०	२१२
१९४	पासजिनेसर जगतिलो ॥ दशमीका पार्श्वस्त०	२१३
१९५	मंगल कमला कंद ए ॥ अजित शांति स्त०	२१५
१९६	मुंदपत्ती पम्पिलेइण स्तवनं	२१८
१९७	आलोयण दंभ स्तवनं	२१९
१९८	नंदीश्वर धावन जिनालय स्तवनं	२२२
१९९	अढाईद्वीप बीत विहरमान स्तवनं	२२३
२००	जात्रीनाज्ञाइ आवूजीनी जात्रा करज्यो	२२७
२०१	सकल शाश्वता चैत्य नमस्कार स्तवन...	२२८
२०२	जविजन पूजो रे शीतल जिनपती ॥ स्तवन	२३०
२०३	म्हारे धरमजिनंदसुं लागी पूरण प्रीत जो ॥ धर्म जिन स्तवन	२३१
२०४	राणपुरो रलियामणो ॥ राणपुरा स्तवन...	२३२
२०५	समकित द्वार गुंजारे पेसतां ॥ दर्शन. आ. स्त.	२३३
२०६	आदिजिनेसर अरज सुलीजै ॥ स्तवनं	२३३
२०७	देवचंदजी कृत अजितजिन स्त० ज्ञानादिक गुण	२३४
२०८	बे कर जोमी वीनवूंजी ॥ आलोयण स्तवन	२३५
	॥ आनंदघनजी कृत स्तवनं ॥	
२०९	रूपज जिनेसर प्रीतम माहरो...	२३७
२१०	पंथियो निदालूं रे बीजा जिनतयो रे...	२३८

२११	शंभुवदेव ते धुर सेवो सवे रे...	...	२३९
२१२	अञ्जनंदन जिन दरशन तरसियै	...	२३९
२१३	सुमति चरण कज आतम अरपणा	...	२४०
२१४	शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी	...	२४०
२१५	मनमो किमही न वाजे हो कुंश्रु जिन...		२४१

॥ पार्थनायजीके गेटे स्तवन प्रतिक्रमणके ॥

२१६	श्रीशंखेसर पास जिनेस जेटिये	...	२४२
२१७	मनमोहन माहाराज	...	२४२
२१८	जयकारी जिनराज	२४३
२१९	वालेसर मुऊ वीनती गोमीचा	...	२४३
२२०	अरज सुणीजै अंतरजामी	...	२४४
२२१	प्यारी पासकी देखो मूरति०	...	२४४
२२२	श्रीचिंतामण पासजी	...	२४४
२२३	जीवन म्हारा तेवीसमा जिनरायरे	...	२४५
२२४	सुगण सनेही प्रजुजी अरज सुणीज्यो...		२४६
२२५	मोरा पास जिनराज	...	२४६
२२६	जिनजी मंदिर करीने राज	...	२४७
२२७	तूं मेरे मनमें प्रजु तूं मेरे दिलमें	...	२४७
२२८	मार्ग देशक मोक्षनो ॥ दीवाली निर्वाण स्त०		२४८
२२९	सैत्रुंज रुपन समोसरया ॥ तीर्थमाला स्त०		२४८
२३०	आज आपे चालो सदिया ॥ सिद्धाचल स्त०		२४९
२३१	महावीरस्वामीका पारणा	...	२५०
२३२	पद्मावती जीवरास स्वभाषा ॥ दिवराणीपद्या०		२५२
२३३	वाणी ब्रह्मा वांदनी ॥ गोमीजीका वृष्यस्तवन		२५४
२३४	धम्मो मंगल मुक्तिं ॥ मंगलीक	...	२५९

२३५	आत्मरक्षा स्तोत्र	२५९
२३६	सुखकारण ज्विषण ॥ नवकार उंद ...	२६०
२३७	सेवो पास संखेसरो मन सुधै... ..	२६१
२३८	बोर जिनेसर केरो सीत	२६१
२३९	शोल सती उंद ॥ आदिनाथ आदिदेई... ..	२६२
२४०	गौतम स्तवन ॥ जय२ मंगल निधान ...	२६३
२४१	मुनिज्ञेय वर्णन स्तवन	२६४
२४२	जवसे श्रद्धा शुद्ध जई ॥ अरिहंत स्तवन	२६४
२४३	आवककी करणी ॥ आवक तुं उठे० ...	२६४
२४४	गौतमस्वामीका रास... ..	२६६
२४५	सेत्रुंज रास ॥ श्रीरिसहेसर पाय नमी	२७२
२४६	शिखरजीका रास	२८०
२४७	मुनिमालका	२९१
२४८	विभ्रूजिन स्तवन	२९५

॥ अथ सिंहायसंग्रह माला ॥

२४९	उपदेशमाला पोसह सिंहाय ॥ जगन्मुक्तामणीचूठ २९७	
२५०	राइ संथारा पोसह सिंहाय ॥ निस्तिही०	३००
२५१	निंदावारक सिंहाय	३०१
२५२	शीतासती सिंहाय ॥ जलजलती मीलती०	३०२
२५३	अनाथोरुपि सिंहाय ॥ श्रेणिक रयवामी०	३०३
२५४	प्रतिक्रमण सिंहाय ॥ कर पक्रिमणो जावसुं	३०३
२५५	मांगलिक सरणा चार	३०४
२५६	ढंढणरुपि सिंहाय	३०५
२५७	श्रीजिन वाणी रे धन्ना ॥ धन्ना रुपीसिंहाय	३०६
२५८	देव दाणव तीर्थकर ॥ कर्मसिंहाय ...	३०७

२५९	सात व्यसन सिझाय	३०८
२६०	चेलणा सती सिझाय	३०९
२६१	वैराग्य सिझाय ॥ जूखो मन जमरा कांइ जमे	३१०
२६२	बाहूवल सिझाय ॥ राजतणा अति लोनीया	३११
२६३	अरणक मुनि सिझाय	३११
२६४	इलापूत्र सिझाय	३१२
२६५	मेघकुमार सिझाय	३१३
२६६	असिझाई निर्णय सिझाय	३१४
२६७	बावीसअजक सिझाय	३१५
२६८	गजसुकमाल सिझाय	३१६
२६९	प्रणचंड सिझाय	३१७
२७०	उतपति सिझाय	३१८
२७१	आत्मनिद्या	३२२
२७२	मंदिर जाणेकी जर दर्शन करणेकी विधि	३२४
२७३	चवदे नियम श्रावकके चितारणेकी विधि	३३१
२७४	श्रावकके बारे व्रत उच्चरावण विधि	३३४
२७५	वीसस्थानक लघु स्तवन देववंदनमें कहणेका	३३८
२७६	चलोदेखोरी मधुवनको राव ॥ पार्श्वजिन स्त०	३३९
२७७	मेरो मन बस कर लीनो ॥ पार्श्वजिन स्तवन	३३९
२७८	सुणो सुजाण नेमजी ॥ स्तवन	३४०
२७९	नेमजिनंदजीसें आंखरुली ॥ स्तवन	३४०
२८०	आज प्रभु तोरे चरण लागि	३४०
२८१	रात गई अब प्रात होन जयो	३४०
२८२	तुम विन दीनानाथ दयानिध	३४१
२८३	जाव धर धन्य दिन० सिझाचल स्तवन	३४१

२८४	श्रीसीमंवर साहिब ॥ स्तवन	...	३४१
२८५	मनमो अष्टापद मोहो माहरो	...	३४२
२८६	सुण अरदासा सुगुण० पार्श्वजिन स्तवन	...	३४२
२८७	अंतरजामी सुण अलवेसर ॥ पार्श्वजिन स्त०	...	३४२
२८८	प्राण पियारा जीदो पासजी	...	३४३
२८९	मदाराज वघाई वाजे वै ॥ सुमतिजिन स्त०	...	३४३
२९०	आज महोछव रंग रलीरी	...	३४४

॥ पूजा प्रारंभ ॥

२९१	देवचंडजी कृत स्नात्रपूजा	...	३४४
२९२	अष्टप्रकारी पूजाके आठ श्लोक	...	३५०
२९३	सतरहजेदी पूजाकी विधि	...	३५२
२९४	सतरहजेदी पूजा	...	३५२
२९५	आरतिविध तथा आरती ॥ जै जै आरति शां०	...	३६२
२९६	नवपदजीकी पूजामें चहिये सो चीजोंकीविधि	...	३६३
२९७	नवपदजीकी बनी पूजा	...	३६३
२९८	नवपदपूजामें कलसढालण त. वासुकेपूजा वि.	...	३७३
२९९	दादाजीकी अष्ट प्रकारी पूजा आठ श्लोक	...	३७४
३००	दादाजीकी आरती	...	३७५
३०१	सूतकविचार	...	३७५
३०२	असिझाई विचार	...	३७७
३०३	जकाजक विचार	...	३७९
३०४	नव अद् दश दिग्पालकी आहुान विशर्जनविधि	...	३८०
३०५	नवपद मंरुल पूजा विधि	...	३८६
३०६	नवपद मंरुल प्रतिष्ठा विधि नजमले तक	...	३८९

॥ अथ

३०७	सत्तरसयको गुणनो...	३९९
३०८	सत्तरसय तप स्तवन...	४०३
३०९	कम्मपयनी तप गुणनो	४०५
३१०	कम्मपयनी स्तवन	४०७
३११	नवकार तप स्तवन	४०९
३१३	नवकार तप विधि	४११
३१३	पंच कट्याणक तप स्तवन	४१२
३१४	रूपिमंजुल सुणणेकी पूजणकी विधि	४१५
३१५	जगवंतके नव अंगपूजन डहा...	४१५
३१६	शिक्षाका डहा ५	४१६
३१७	नवपदोका नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा धुई.	४१७
३१८	शंस्कृतवद्ध चतुर्विंशति जिन स्तुति	४२५
३१९	नवपद वृद्ध स्तवन ॥ सुरमणी शम सहुमंत्र०	४२८
३२०	नवपद स्तवन ॥ तीरथनायक जिनवरू रे	४२९
३२१	नवपद ध्यान धरो रे नविका ॥ स्तवन	४३०
३२२	जीया चतुरसुजाण नव० स्तवन	४३०
३२३	जिन नित नमो नित नमो नमो ॥ स्तवन	४३०
३२४	नितप्रति प्रणमुं ॥ नवपद धुई	४३०
३२५	अथ जैती संयुक्त नवपद उंजी करण विधि	४३१
३२६	अथ तपस्या ग्रहणकरणकुं गुरु पाशजाणेकी वि.	४४८
३२७	उंजीकी संक्षेप कजमणा विधि	४४९

॥ अथ द्वादशमास पर्वाधिकार स्वरूप ॥

८ प्रथम चैत्रमास पर्वाधिकार प्रथम १ उंजीतप ४५०

९ अष्टपद उंजी करण विधि: मंजुलविधि स. द्वि. २. ४५१

३३०	महावीरस्वामी जन्मकल्याणक पर्व तीसरा	४५६
३३१	चैत्रीपूनम पर्वाधिकार पर्व ४ देववन्दन वि०स०	४५६
३३२	चैत्रीपूनम स्तवन	४५६
३३३	नंदोत्तर तपस्या करण विधि	४५६
३३४	वैशाखमास पर्वाधिकार आखातीज	४५६
३३५	ज्येष्ठ कृष्ण १२ श्रीशान्ति पर्वाधिकार	४५६
३३६	आषाढमास १४ पर्वाधिकार	४५६
३३७	आवणमासमें छुटकर तपस्याधिकार	४५६
३३८	जाइवमासमें पर्युषण पर्वाधिकार	४५६
३३९	आश्विनमासमें छत्ती पर्वाधिकार	४५६
३४०	कार्तिकमासमें ४ पर्वाधिकार... ..	४५६
३४१	दीपमाला गुणनो करण विधि... ..	४५६
३४२	ग्यानपंचमी पर्वाधिकार	४५६
३४३	ग्यानपंचमी देववन्दन विधि	४५६
३४४	ग्यानका वरदा चैत्यवन्दन छुई	४५६
३४५	श्रीआचारांगसूत्र सिद्धाय	४७१
३४६	श्रीसुपगढांगसूत्र सिद्धाय	४७१
३४७	श्रीगणांगसूत्र सिद्धाय	४७१
३४८	श्रीतमवापांगसूत्र सिद्धाय	४७१
३४९	श्रीजगवतीसूत्र सिद्धाय	४७१
३५०	श्रीज्ञातासूत्र सि०	४७१
३५१	श्रीउपाशरुदशासूत्र सि०	४७१
३५२	श्रीअंतगरुदशासूत्र सि०	४७१
३५३	श्रीअणुत्तरोववाइ मूत्र सि०	४७१
३५४	श्रीअश्वत्थार्कसूत्र सि०	४७१

३५५	श्रीविपाकसूत्र सि० ...	४३८
३५६	इग्यारे अंग वर्णन सि० ...	४३९
३५७	मेर रे मन मानी ज्ञान जरी ॥ ज्ञानका स्त०	४७९
३५८	श्रुत अतहि जलो ॥ जिनागमस्तवनं ...	४८०
३५९	कार्तिक चतुर्मास पर्वाधिकार...	४८०
३६०	कार्तिक १५ पर्वाधिकार ...	४८०
३६१	सिद्धगिरि स्त० ते दिन क्यारे आवस्यै...	४८२
३६२	नमो रे नमो सेजुंजगिरी ॥ स्तवनं ॥ ...	४८२
३६३	अंग ऊमाहो मोने अतिघणो ॥ सिद्धगिरि स्त०	४८३
३६४	जात्रा निनाणूं करियै ॥ सिद्धगिरि स्त०	४८४
३६५	जाव धर धन्य दिन० सिद्धगिरि स्त० ...	४८५
३६६	मार्गशिरमास पर्वाधिकार मौनएकादशी	४८५
३६७	मौन ११ देहसे कल्याणक गुणनो ...	४८६
३६८	पौषमासो चदि १० पर्वाधिकार ...	४९०
३६९	माघमासो मेरुत्रयोदशी पर्वाधिकार ...	४९१
३७०	फाल्गुनमासो पर्वाधिकार ...	४९२
३७१	द्रव्यहोली जावहोली अधिकार ...	४९२

॥ होली स्तवन संग्रह ४७ ॥

३७२	होरी खेलिये नर बहुरन० ...	४९५
३७३	जय बोलो पाश जिनेशरकी ...	४९६
३७४	मधुवनमें जाय मची होरी ...	४९६
३७५	यादव मन मेरो हर लियो रे ...	४९६
३७६	इक सुणले नाथ अरज मोरी ...	४९६
३७७	सांवरो सुखदाई जाकी त्रिव ...	४९७
७८	नेना हरखाई आज तेरी सू० ...	४९७

३७९	ऐसे फागुण मंस्त महीने चलोरी	४९७
३८०	नेम स्यामसे कहियो मोरी ...	४९७
३८१	होरी खेलो रे जविक मन थिर करके ...	४९८
३८२	होरीके खेलइया तू तो प्रजु०...	४९८
३८३	वाके ममताने धूम मचाई ...	४९
३८४	समकित विन जीव जगत जटक्यो ...	४९
३८५	वितरे मत नाम प्रजुजीको ...	४९
३८६	नेम निरंजन ध्यावो रे ...	४९
३८७	गढ गिरनारकी तलहटी ...	४९९
३८८	धन राजुल तेरो जागरी ...	५००
३८९	एसी होरी तो हो रही चंपानगरमें ...	५००
३९०	बलिहारी हुं विमलाचल गिरकी ...	५००
३९१	ऐसे प्रजु नेमनाथ मेरे दिल वसियां ...	५०१
३९२	संजव जिने सुखकारी हो लाखा ...	५०१
३९३	सारी सोख देश दिखावो रसियां ...	५०२
३९४	जिनराज जुहारो, क्यां बैठे जव हारो रे ...	५०२
३९५	मनमोहन गजगतकी कामनी... ...	५०३
३९६	रंग लग्यो गुरु ज्ञान... ...	५०३
३९७	चिदानंद खेल फाग... ...	५०३
३९८	होरी खेलो नेमसें धायं२ ...	५०४
३९९	मेरी घटकी गोंगरिया रंगसें जरी ...	५०४
४००	वावो रुपज बैठे अलखसर ...	५०४
४०१	गिराजकुं हमारी वंदना रे ...	५०४
४०२	दरशन कियो आज सिखर गिरको ...	५०५
४०३	सिद्धगिरीजीको दर्शन करले ...	५०५

(४२)

४०४	मोहेअपणे रंगमें रंगदे	...	५०५
४०५	मे पारस प्रजुजीके रंगमंरुपमें	...	५०५
४०६	न मच्यो जिनद्वार चालो खेलिये होरी	...	५०६
४०७	नेमजीसे कहियो मोरी	...	५०६
४०	मादाराजा तोरे मंदिरमें वरसे रंग	...	५०६
५५	तोरी अंगिया वणी हे सुरंग	...	५०६
१०	वितामणि चित्त ध्यावो रे	...	५०६
४११	मत भारो पिचकारी रे	...	५०६
४१२	नेम मिले तो वातां कीजिये	...	५०७
४१३	आतमतत्व विचारो ज्ञानसे	...	५०८
४१४	लाल तेरे नयनोकी गति न्यारी	...	५०८
४१५	दर्शन विन जीव संसार जन्म्यो	...	५०८
४१६	मत बोमो माने गुंदी रे कोइ चूक बतावो	...	५०९
४१७	अटक्यो चित्त हमारो री जिनच०	...	५०९
४१८	मंगल राजै गिरनार...	...	५०९
४१९	मंगलकलश	...	५१०

॥ तपस्याविधि स्तवन संयद ॥

कड्याणक टीप	...	५१०
कड्याणक विधि	...	५१३
ते स्तवन...	...	५१४
तप विधि...	...	५१६
पञ्चस्काण स्तवन	...	५१६
पञ्चस्काण तप विधि	...	५१९

४२८	वीश स्थानक गुणना उत्तर काजसग्न प्रमारा	५२२
४२९	वीश स्थानक मंगल पूजन विधि	५२४
४३०	रोहणी तप स्तवन...	५२९
४३१	रोहणी तप विधि ...	५३२
४३२	उम्मासी तप स्तवन...	५३३
४३३	उम्मासी तप विधि...	५३४
४३४	घारे मासी तप स्तवन	५३४
४३५	घारे मासी तप विधि	५३५
४३६	अठईस लब्धि स्तवन	५३६
४३७	अठईस लब्धि तप विधि	५३८
४३८	चौदे पूर्व स्तवन ...	५३८
४३९	चौदे पूर्व तप विधि...	५४०
४४०	तिलक तप स्तवन ...	५४१
४४१	तिलक तप विधि ...	५४२
४४२	शोलिये तपका स्तवन	५४३
४४३	शोलिये तपकी विधि	५४३
४४४	पैतालीश आगम तप विधि तथा गुणना	५४४
४४५	पैतालीश आगम स्तवन	५४५
४४६	इग्यारै गणधर तप विधि	५४८
४४७	११ गणधर नाम गुणना	५४८
४४८	सर्व तपस्या गुरु पास ग्रहण करण विधि	५४९
४४९	सर्व तपस्या पारण विधि	५५१
४५०	उपधान तप स्तवन...	५५१
४५१	संघ मालारोपण विधि:	५५३
४५२	संघमालाकी देववन्दन विधी	५५४

२५३	उपधान तप नित्यकर्तव्यता ...	५५१
२५४	उपधान तप विधि ...	५५१
२५५	उपधान तप प्रवेश विधि ...	५५१
२५६	उपधान तप उत्क्षेप विधि ...	५५२
२५७	वाचना विधि: ...	५५३
२५८	तप संपूर्ण क्रिया निक्षेप विधि ...	५५३
२५९	परिपुत्रा विगय तप पारण विधि: ...	५५३
२६०	कृमाश्रमणादि प्रज्ञात संध्या परिलेहण विधि: ५५४	५५४
२६१	उपधान तप विवरण गाथा ...	५५६
२६२	रूपिमंरुल मंरुलपूजा विधि ...	५५६
२६३	शांतिकं पूजा विधि: ...	५५७
२६४	पंचतीर्थी आरती ...	५७०
२६५	चक्रेश्वरी आरती ...	५७१
२६६	चोपरु खेलण सिझाय ...	५७१
२६७	सेत्रुंज खेलण सिझाय ...	५७२
॥ राग रागणी सरस स्तवन संग्रह १०१ ॥		
२६८	दुक निजर महरदी क० ...	५७२
२६९	लोक चवदके पार किनारे ...	५७३
२७०	सखी सव धनवन ...	५७३
२७१	दो जिन तेरे दरशपर० ...	५७३
२७२	म्हारा रूपन जिनंदने ग० ...	५७३
२७३	मन सीनो हमारो जिन चरणारे ...	५७४
२७४	अजित२ जिन ध्यान ...	५७४
५	यद थरजी मोरी सदीयां ...	५७४
	मुजरो मानी सीने दो गो० ...	५७४

४७३	तुं मैंना प्रजु इण दिख वसणावे	...	५७४
४७४	हम जाणत हे तुम तारोगे	...	५७५
४७५	पंथीना पंथ चलेगो	...	५७५
४७६	तेवीशमा जिनराज जोमे थारे कोण जुमेगो	...	५७६
४७७	केसें काज सरे मादाराजविन केसें०	...	५७६
४७८	राजरी बधाई बाजैबै	...	५७६
४७९	मोतनकीमाला जिनगल सोहे...	...	५७६
४८०	रहे तुम आज क्यूं जीवन डुराय	...	५७६
४८१	हे माय बांझनी करमगति जाय न कही	...	५७६
४८२	झांने प्यारो लागेबे जी थारो उपदेश	...	५७६
४८३	मेरो पिया परसंग रमत हे	...	५७७
४८४	वरपित वचन ऊरी०	...	५७७
४८५	या घरीमें रंग०	...	५७७
४८६	बिहुं नर बदरिया वरसे	...	५७७
४८७	मोरवा पपझ्या बोले	...	५७८
४८८	समऊ नर जीवण थोरो	...	५७८
४८९	मत कर मान गुमान	...	५७८
४९०	निश दिन जोछं थारी वाटमी०	...	५७८
४९१	आज तो हमारे जाग्य वीरप्रजु आए हे	...	५७९
४९२	बावरो रे आज मनवो मेरो	...	५७९
४९३	रुपज विहारी थारीतो ठवि न्यारी हो	...	५७९
४९४	सुग मन होनहार न टरे रे	...	५७९
४९५	सहियोरी मिल चालो प्रजु पूजन काज	...	५८०
४९६	मनवा जिनंद गुण गाय रे	...	५८०
५०१	चलो देखोरी मधुवनको राव...	...	५८०

५०२	राखूं रे हमारा घटमें	५००
५०३	तेरे दरशको चाह लग्यो	५००
५०४	धारे मुखमारी हो वारी राज...	५०१
५०५	एसी विध तेने पाई रे	५०१
५०६	मोहि अपणो कर जाणो प्र०	५०१
५०७	वीर प्रजु तेरी दोस्तीमें	५०१
५०८	जोर जयो अब जाग बावरे	५०२
५०९	जाग रे सब रैण विहाणी०	५०२
५१०	सांवरो सलूनो सखी...	५०२
५११	आज रूपन घर आवै	५०३
५१२	अंगण कलप फळ्योरी	५०३
५१३	कठेने मोरा आतमराम	५०३
५१४	जज मन नाजिनंदन देव	५०३
५१५	आवो नेम रह जावो सदन	५०४
५१६	कीरतीबाग मन प्रेम लाग	५०४
५१७	अधम जग काम जये अंगीवान	५०४
५१८	प्रजु तेरी सूरतिया लागे जली...	५०५
५१९	आयो सही अब जाउं कहा	५०५
५२०	घमो२ पल२ दिन२ निशदिन...	५०५
५२१	सुमताने क्या कर मारा रे	५०६
५२२	तुम तो जले विराजो जी ॥ शिखर गिरि स्त०	५०६
५२३	शिखर गिरि जुहारो ॥	५०६
५२४	सांवरिया में दीगो दरश तिहारो	५०७
५२५	त्रिजुवन नायक वीरजी ॥ पावापुरी स्तवन	५०७
२६	निरख हीया हरख जरे ॥ चंपापुरी स्तवन	५०८

५३७	में मुँह देखयो गोमीपासको...	...	५८३
५३८	किरपा करो रे गोमीपात्रा जिनेसर	...	५८९
५३९	मुजरा साहिब मुजरा साहिब...	...	५८९
५३०	घंट वाजै घननननन...	...	५९०
५३१	निरंजन सांझ्यां रे	५९०
५३२	एसे सदर बिच कोनसा दिवान दे	...	५९०
५३३	आय रहो दिलबागमें	...	५९०
५३४	रहोर रे यादव दो धनिया	...	५९०
५३५	विराजो बंगलामें	५९१
५३६	किश देखा हमारा स्वामी	...	५९१
५३७	अबधू सो जोगी गुरु मेरा	...	५९१
५३८	अबधू एसो ज्ञान विचारी	...	५९१
५३९	हंता तूं मानसरोवर वासी	...	५९२
५४०	बेरश नही आवै अवसर०	...	५९२
५४१	ये जिनजीके पाये लाग रे	...	५९३
५४२	चित्तमें धरो रे प्यारे चित्तमें धरो	...	५९३
५४३	अबधू निरगद विरला कोई	...	५९३
५४४	चलशा जरु जाकुं ताकुं केसा सोचशा	...	५९३
५४५	समऊ परी मोहे समऊ परी...	...	५९४
५४६	जलांजी मेरो नेम चढ्यो गिरनार	...	५९४
५४७	रतना सफल जई मेंतो गुण०	...	५९४
५४८	राजुत्र पुकारे नेम पिवा	...	५९४
५४९	कोन किसीको भित	...	५९५
५५०	आदीसर जिनराज	...	५९५
५५१	गोमी गार्ह्ये मन रंग	...	५९५

५५२	हारे हूं तो मोहो रे लाल ...	५९५
५५३	प्रजुजी सैं लोंगो मारो नेह ...	५९६
५५४	खतरा दूर करणा ...	५९६
५५५	रे जीव जिनधर्म कीजीये ...	५९६
५५६	सोइर सारी रैन गमाई ...	५९७
५५७	चंदा प्रजुजीसैं ध्यान रे ...	५९७
५५८	ते शिवपुर गये रहे रे ...	५९७
५५९	म्हारे जले रे कंगो वै दामो आजनो रे ...	५९७
५६०	धन२ ते दिवाली मारे आजनी रे ...	५९८
५६१	धन३ आजूनो दिन रंखियामेणो रे ...	५९८
५६२	म्हारे आज आनंद वंधामेणा रे ...	५९८
५६३	सवालाख टकानी जाँये एक धनी ...	५९८
५६४	आवो२ने प्यारा नेम अम घर ...	५९९
५६५	मनमोहन पास प्यारारे ...	५९९
५६६	मेरे मन जावनकी ठबिनीकीजी ...	६००
५६७	साहिब सुगुण सुपारसैं ...	६००
५६८	सांवरिया पासजी सुख दीजे ...	६००
५६९	तुम जजो रुपन प्रजु प्यारा जग० ...	६०१
॥ अथ लावण्या संग्रह ३४ धन १० ॥		
५७०	अगरुदू२ वजै चौधमैं ...	६०१
५७१	आखातीजकी लावणी ...	६०१
५७२	दीवालीकी लावणी ...	६०१
५७३	सीमंधरजिन लावणी ...	६०१
५७४	अजीमगंजमें सांवरियाजीकी लावणी ...	६०१
५७५	नेमनाथ मेरी अरज सुणीजै ...	६०२

५७६	तुम जपो मंत्र नवकार ॥ जिनदाशादि कृतघन	६०९
५७७	चल चेतन अत्र ठहर०	६१०
५७८	तुम जजो जिनेसर देव	६११
५७९	तुं कुमति कलेसण नार लगी क्युं केमे...	६१२
५८०	तुम तजो जगतका खयाल	६१२
५८१	दे गया वगा दिलदार ॥ नेमजीकी लावणी	६१३
५८२	मुलक बीच मगसो पारसका...	६१४
५८३	सुकुतकी बात तेरे हाथ रती ना रही रे...	६१५
५८४	तुम तज कर राजुल नार	६१५
५८५	आप समझका घर नहीं पाया	६१६
५८६	नमुं२ में गुरु नियंत्रकूं	६१७
५८७	करूं३ में ऐसे सद्गुरु	६१७
५८८	तजूं४ में उन कुगुरुकूं	६१८
५८९	यो जिनदाश जूगो रे जूगो	६१८
५९०	जब तन दोस्ती दे इद मस्ती	६१८
५९१	अरज हमारी सुणो दीनपति...	६१९
५९२	मुक्ति जाणेकी निगरी	६१९
५९३	अनुजव पद निगरी...	६२०
५९४	नेमकी जान वणी ज्ञारी	६२१
५९५	नेमनाथजीका चोमासा ॥ ठाई घटा म०	६२२
५९६	सुमति कुमतिका विवादरूप लावणी	६२३
५९७	राज शोले सिएगार दुई दुसियार	६२४
५९८	चंदावदनी मुखसें कदती गिरनारीकुं०	६२५
५९९	कोइ देख्या रे हो सांवलिया साद्विब	६२६
६००	सुणजो वातां राव सदाशिव...	६२७

६०१	कैशरीयानाथजीकी मांहातमकी लावणी	६२६
६०२	पार्श्वप्रभु आरती लावणी	६३४
६०३	आदि जिनेस कीयो पारणो	६३५
६०४	अजितनाथजीकी लावणी	६३५
६०५	पिया मेरा गिरनार सिर्धाएँ ॥ ने० ला० ...	६३६
६०६	दीवाली स्तवन ॥ धन२ मंगल एह सकलदिन	६३७
६०७	मारे दीवाली यई आज प्रभु मुखे जोवने	६३७
६०८	पोढो१ जी रूपन विहारी	६३८
६०९	कीजे मंगल च्यार आज घर०	६३८
६१०	सिद्धाचल गिर जेटो रे जविजन	६३८
६११	जगतमें नवपद जयकारी ॥ लावणी ...	६३९
६१२	ध्यान धरो नवपदका चेतन	६४०
६१३	चलो सखी जिन मंदिरमें जग नवपद...	६४०
६१४	सांवरो लागे प्यारो प्रभु मनमोहनगारो ॥ होरी	६४१
६१५	आज सुरंग घन वरसत होरी... ..	६४२

॥ अथ-वारे मांसा ॥

६१६	मरुदेवाजी सोच करत हे मनमें	६४२
६१७	नेमनाथजीका वारेमांसा	६४४

॥ स्तोत्र छुटकर संस्कृतबंध ८ ॥

६१८	सकल मंगल केलि० शीतल० स्तोत्र	६४६
६१९	विशद गुण विचित्रं० पार्श्व० स्तोत्र	६४६
६२०	यस्य ज्ञान दया० शंखेश्वरपार्श्व स्तोत्र--	६४७
२१	लक्ष्मी निदानं० पार्श्व० स्तोत्र	६४७
२२	गोमीग्रामे० शंखेश्वरपार्श्व स्तोत्र	६४८
२३	विशदसद्गुण० पार्श्व स्तोत्र	६४८

६२४	श्रीमंतोर्ध्वजिनेश्व० पार्श्व स्तोत्र	...	६४९
६२५	आद्य श्रीरूपंज० चतुर्विंश० स्तोत्र	...	६४९
६२६	मंगलाष्टक स्तोत्र	६५०
६२७	परमात्मा स्तोत्र	६५१
६२८	नमस्कार स्तोत्र	६५१

॥ अथ तपगह्य सामाचारी ॥

६२९	पुण्य प्रकाश आलोचन स्तवन	...	६५२
६३०	जरहेसरनी सिद्धाय...	६५९
६३१	मन्दजिणाणं सिद्धाय	६६०
६३२	सकल तीर्थ वंदनां	६६०
६३३	सकलार्हस्तोत्र	६६१
६३४	शांतिकर स्तोत्र	६६३
६३५	सीमंधर चैत्यवंदन ॥ सीमंधर परमात्मा		६६४
६३६	श्रीसीमंधर जग घणी	६६५
६३७	सिद्धगिरी चैत्यवंदन ॥ विमल केवल०	...	६६६
६३८	श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्र	६६६
६३९	परमात्मा चैत्यवंदन० परमेश्वर परमात्मा		६६६
६४०	सुणो चंदाजी सीमं० सीमंधर स्तवन	...	६६६
६४१	आंखर्माधि में आज० सेत्रुंजा स्तवन	...	६६७
६४२	विमलाचल नित वंदिये ॥ स्तवन	...	६६७
६४३	पंचतीर्थ संस्मृतवद् स्तवन	६६८
६४४	नेम राजुल सिद्धाय ॥ पिंजजीर नाम	...	६६८
६४५	आकृत्यो तूटाने सांधो० सिद्धाय	...	६६९
६४६	आदि देव अरिहंत नमूं ॥ पंचती० चैत्यवं०		६७०
६४७	उविध धर्म जिन न० दूज चैत्यवंदन	...	६७०

६४८	त्रिगुणे वैष्णवीर जिन ॥ ग्यानपंचमी चैत्यवंदन	६७३
६४९	महा सुदि आठमने० अष्टमी चैत्यवंदन	६७४
६५०	शाशन नायक वीरजी० इग्यारश चैत्यवंदन	६७५
६५१	सीमंधर जिनवर स्तुति०	६७६
६५२	श्रीसीमंधर देव सुदंकर ॥ थोय ...	६७७
६५३	दिन सकल मनोहर ॥ बीजनी थोय ...	६७८
६५४	आवण सुदि दिन पंचमी ए ॥ पांचमनी थोय	६७९
६५५	मंगल आठ करी० आठमनी थोय ...	६८०
६५६	एकादशी अति रूवनी ॥ इग्यारश थोय	६८१
६५७	स्नातस्या प्रति० चवदशनी थोय ...	६८२
६५८	कढ्याणकंदनी थोय... ..	६८३
६५९	श्रीशत्रुंजय गिरि तीरथ० थोय ...	६८४
६६०	महाविदेह क्षेत्रे सीमंधर स्वामी ॥ थोय	६८५
६६१	पंचेंदिय संवरणो	६८६
६६२	सामाश्यवयजुत्तो ॥ सामायक पारवागाथा	६८७
६६३	सागरचंदो ॥ पोसह पारवा गाथा ...	६८८
६६४	जगचिंतामणि चैत्यवंदन	६८९
६६५	अतीचारनी ८ गाथा... ..	६९०
६६६	विशाललोचन स्तुति	६९१
६६७	सुयदेवया जगवर्ष ॥ स्तुति	६९२
६६८	जीसे खिचे साहू ॥ क्षेत्रदे० स्तुति ...	६९३
६६९	सामायक लेवा विधि	६९४
६७०	सामायक पारवा विधि	६९५
६७१	दैवशिक प्रतिक्रमण विधि	६९६
६७२	राई प्रतिक्रमण विधि	६९७

६७३	पस्की प्रतिक्रमण विधि	६८५
६७४	चन्द्रमाशी प्रतिक्रमण विधि	६८७
६७५	संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि	६८७
६७६	पमिलेक्षण करवानी विधि	६८७
६७७	पञ्चक्राण पारवानी विधि	६८८
६७८	पुस्तकलय विजये जयो ॥ श्रीमंधर स्तवन	६८८
६७९	धीज तिथीनो स्तवन वनो ॥ प्रणमी शार०	६८९
६८०	पंचमी वृद्ध स्तवन ॥ सुत सिद्धारथ० ...	६९०
६८१	आठमनु वृद्ध स्तवन ॥ मारे ठाम ध० ...	६९६
६८२	एकादशी वृद्ध स्तवन ॥ जगपतिनायक०	६९८
६८३	महावीरस्वामीनुं हालरियुं	७०१
६८४	निंदा म करज्यो कोईनी० सिंहाय ...	७०३
६८५	देववांदवानो विधि	७०४
६८६	ज्ञानविमलजी रुत चठमाशी देववंदन...	७०४
	आदिनाथ चै० शोय स्तवन	७०४
	अजितनाथ चैत्यवंदन, शोय	७०५
	संजवनाथ, अजिनंदन चैत्यवंदन शोय...	७०६
	सुनतिनाथ, पद्मप्रज्ञ, सुपार्श्वनाथ चै० शोय७०७	७०७
	चंद्रप्रभु, सुविधिनाथ, सितलनाथ चै० शो० ७०८	७०८
	श्रीश्रेयांस, वासुपूज्य, विमलनाथ चै० शो० ७०९	७०९
	धर्मनाथ, शांतिनाथ चै० शोय स्तवन...	७१०
	कुंभनाथ, अरनाथ, मल्लिनाथ चै० शोय	७१२
	मुनिसुव्रत, नमिनाथ, नेमिनाथ चै० शोय	७१३
	पार्श्वनाथ चैत्यवंदन शोय स्तवन ...	७१४
	महावीरस्वामी चैत्यवंदन शोय-स्तवन	७१६

शाश्वता अशाश्वताजिन चैत्यवन्दन श्रौष ७१७

नीलमती रायण तरु तले ॥ सिध्वाचल स्तवन ७१०

नेम निरंजन देव के ॥ गिरनार स्तवन... ७१०

आवो आवोने राज अर्बुदगिरी स्तवन... ७२२

अष्टापदगिरी जात्रा करणकुं ॥ अष्टा० स्तवन ७२२

समेतशिखरगिरी जेटीये रे ॥ शि० गि० स्त० ७२३

६८४ सत्तरजेदी जिन पू० पर्यूपण श्रौष ... ७२४

६८८ नेमनाथजी वारेमाशो ॥ शीयाले खाटू० ७२४

६८९ अपठरा करती आरती जिन आगे ... ७२६

६९० पहली तो समरुं हो० नेम राजेमती सिद्धाय ७२६

६९१ गोतमस्वामी पूठा करी ॥ मुक्ति वर्णन सिद्धाय ७२८

६९२ नेमनाथजीरो सिलोको ... ७२९

॥ अथ चोढालीया संग्रह ॥

६९३ विजयसेठ विजयासेठाणी चोढा० ... ७३१

६९४ इखुकार राजा नृगु प्रोदितरो चो० ... ७३३

६९५ दान शील तप नाव चोढालीयो ... ७३६

॥ अथ वंद संग्रह ॥

६९६ सेवो वीरने चित्तमां नित्य धारो० ... ७४३

६९७ नंवकार वंद ॥ वंजित पूरे विविधपर० ... ७४५

६९८ घंघरनीसाणी ॥ सुख संपत्ति० ... ७४७

॥ दादा गुरुदेव स्तवन संग्रह ॥

६९९ विलसै रुद्धि समृद्धि० ... ७५१

७०० वर लाठ विलाश० श्रीजिनदत्त० ... ७५२

७०१ रिसह जिनेसर० कुंशलसूरि० ... ७५३

७०२ आयो सद्गु श्रीसंघ ... ७५४

७०३	सदगुरुजी थे सांजलो	७५५
७०४	दादा चिरंजीवो	७५६
७०५	गाँव जिनकुशल गमाले	७५६
७०६	सदा मेरे श्रीजिनकुशल गुरु	७५७
७०७	आयोश जी समरंता दादो०	७५७
७०८	जाया जकिसूं पूर रहो रे	७५८
७०९	पूजो जवि हितसुं कुशल सूरिंद	७५८
७१०	आज करो रे उगाह श्रीजिनकुशल	७५८
७११	मैं निरूप्या गुरु महाराज	७५९
७१२	चरणकी चरणकी घारीजा०	७५९
७१३	अब मोहि दरशाण दीजै कु०...	७६०
७१४	कुशल गुरु कुशल करो जरपूर	७६०
७१५	सदगुरु पूजना जावस्यां	७६०
७१६	श्रीसदगुरुजीसैं वीनती रे	७६१
७१७	सदगुरु दीनदयाल...	७६१
७१८	सुगुरु मेरी बेनिया पार०	७६२
७१९	देखा मैं दशा तिहारा	७६३
७२०	सदा सदाई कुशल सूरिंद०	७६३
७२१	जिनकुशल सूरिंद गुरु सदा नमो	७६४
७२२	उत्रपती आरे पाय नमैं जी	७६४
७२३	सदगुरुजी सुणो मोरी अरजी...	७६४
७२४	सदगुरुके चरण चित लाय२	७६५
७२५	दोरी खेलो जविक सदगुरुके संग	७६५
७२६	गुरु पूज रहो रे मुझानी	७६५
७२७	सदगुरुजीके द्वार मची दोरी...	७६६

७२८	केसैश् अवसरमें गुरु रस्की लाज०	...	७६६
७२९	श्रीजिनकुशल सूरीसर साहिब...	...	७६६
७३०	श्रीगणधर गुरु कुशल सूरिबके	...	७६६
७३१	कुशल गुरु देखके दरशाण	...	७६७
७३२	कुशल गुरु दरशन दीजे दो	...	७६७
७३३	पूजो जजो रे जार्ड...	...	७६७
७३४	हुंतो अरज करुं करजोमनै	...	७६७
७३५	सांगानेर विराजै	...	७६८
७३६	सदगुरुजी म्हारा० लावणी	...	७६८
७३७	मोरी सखी सदेख्यां० लावणी	...	७६९
७३८	कामित कामगवी ॥ श्रीजिनचंद० स्तवनं		७७०
७३९	श्रीसौजाग्य सूरी स्तवनं	...	७७०

॥ देशना वधावा संग्रह ॥

७४०	वीरजी दिये ठे देशना रे	...	७७१
७४१	गुणनिधि श्रीजिनचंद मुणिदा	...	७७१
७४२	श्रीजिनचंद सूरीसरु	...	७७२
७४३	एदवा सदगुरु वांदिये	...	७७३
७४४	मुखकर स्वामी श्रीतीर्थकर रे	...	७७३
७४५	मोतोपने मेद वरसीयो	...	७७५
७४६	जिनशासन जयकारी ॥ गुंदली	...	७७५
७४७	मुणिये सदगुरु देशना ए सदियां ॥ गुंदली		७७६
७४८	सुगुरु म्हारा ज्पाजनी पर तारो	...	७७७
७४९	वृद्ध खरतर गछ सुद्ध सिद्धांत सामाचारी		७७८

॥ श्रीजिनाय नमः ॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥

॥ रत्नसमुच्चय ॥

॥ मंगलाचरण ॥

ॐकारं बिंदुसंयुक्तं । नित्यं ध्यायंति योगिनः ॥
कामदं मोक्षदं चैव । ॐकाराय नमोनमः ॥ १ ॥

॥ कवित ॥

ॐकार उदार अगम्म अपार । संसारमें सार पदारथनामी ॥
सिद्धि समृद्धि सरूप अनूप । भयो सबही सिर नूप सुधामी ॥
मंत्रमें यंत्रमें ग्रंथके पंथमें । जाकुं कियो धुर अंतरजांमी ॥
पंचही इष्ट वसे परमेष्ट । सदा भ्रमसी करै ताहि सलामी ॥ १ ॥
नमो निसदिस नमायके सोस । जपो जगदीश सही सुखदाता ॥
जाकी जगतमें कीरति जागत । भागतहे सब ईत असाता ॥
इंद नरिंद दिणिंद फुणिंद । नमाएहें वृंद आनंद विधाता ॥
धोरी धरम्मको धीर धराधर । ध्यान धरे भ्रमसी गुण ध्याता ॥२॥

॥ अथ गुरुमहिमा नमस्कार ॥

महिमा जिणकी महिमें १ । जिनदीनो महा इक ग्यान नगीनो ॥
दूर भग्यो भ्रम सो तम देखत । पूर जग्यो परकास नगीनो ॥
देतहि देतहि दूनो वधै । अरु खायोहि खूटत नांहि खजीनो ॥
एसो पसाय कियो गुरुराय । तिणें भ्रमसो पदपंकज लीनो ॥३॥

अज्ञानतिमिरान्धानां । ज्ञानाञ्जनशलाकया ॥

नेत्रमुन्मीलितं येन । तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥ १ ॥

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीसारदायै नमः ॥

सरस्वती महाभागे । वर दे कामरूपिणी ॥
विश्वरूपी विसालाक्षी । दे विद्या परमेश्वरी ॥ १ ॥
सरस्वतो भया दृष्टा । वीणा पुस्तक धारिणी ॥
हंस वाहन संयुक्ता । विद्या दान वरप्रदा ॥ २ ॥

॥ दीर्घाक्षरे सरस्वती नमस्कार ॥

सिद्धारूपी साची देवा सारे जीको नीकी सेवा ।
रागे आए लागे पाए जागे मोटी माईहे ॥
चंगी रंगी वीणा वागे रागे सारे रागे गावे ।
हावे भावे सोभा पावे ग्याता जाकुं गाईहे ॥
हंसी केसी चाली चाले पूजी बंदी पीडा टाले ।
लीलासेती लाले पाले सुद्धी बुद्धी दाईहे ॥
सोहे वानी नीकी वानी जाकुं ग्यानी प्राणी जाणी ।
एसी माता शाता दानी धर्मसीहें ध्याईहे ॥ १ ॥

॥ स्वर वर्ण ॥

अ आ इ इ उ ऊ ऋ ॠ ए ऐ ऌ औ अं अः

॥ व्यंजन वर्ण ॥

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण । त थ द
ध न । प फ ब भ म । य र ल व । श ष स ह । ऋ । इ ॥ क
का कि की कु कू के कै को कौ कं कः ॥ ऋ गृ तृ दृ ष्टृ नृ दृ मृ गृ
सृ हृ ॥ क्य ख्य ग्य घ्य च्य व्य ज्य ट्य ड्य ष्य एय त्य द्य ध्य
न्य प्य च्य म्य स्य ल्य व्य प्य स्य ह्य द्य ॥ क य व्र ज्ञ त द्र प्र ब्र
अ व्र श्र स्त्र ह्र ॥ क ग्व एव त्व द्व न्व म्व स्त्व श्व प्व स्व ॥ क्र भ्र घ्र
प्र म्र श्र ण्र क्ष्र ॥ कम गम धम चम एम दम नम शम पम स्म
हम । कं खं गं घं ॥ क र क ग ग ङ । च छ ज झ ञ

ट ढ ड ढ ण त त्थ उ इ ऋ ऌ ॥ प्प प्फ व्व ज्य म्म य्य र र्त्त
 घ दश प्य स्स ॥ ज्य त्स्य पू ॥ १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ ।
 ७ । ८ । ९ । १० । १ । १००००० ॥ १०००० ॥ १०००००
 ॥ १०००००० ॥

स्वस्तिश्रो कृष्णवृक्षस्था । षिंद्राहुस्युश्च स्वस्करा ॥
 पृथ्वीभृद्वल्गुश्रेष्ठात्म । त्रम्यास्तेहृद्यज्ञसिदा ॥

॥ अथ शिक्षावाक्य ॥

गुरुशुश्रूषया विद्या । पुष्कलेन धनेन वा ॥
 श्रथवा विद्यया विद्या । चतुर्थं नैव कारणं ॥ १ ॥
 विद्वत्वं च नृपत्वं च । नैव तुल्यं कदाचन ॥
 स्वदेशे पूज्यते राजा । विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ २ ॥
 पंक्तिच गुणा सर्वे । मूर्खे दोषा हि केवलं ॥
 तस्मात्मूर्खं सहस्रेषु । प्राज्ञ एको विशिष्यते ॥ ३ ॥
 नक्षत्रजूपणं चंद्रो । नारीणां जूपणं पतिः ॥
 पृथिव्या जूपणं राजा । विद्या सर्वस्य जूपणं ॥ ४ ॥
 माता शत्रुः पिता वैरी । बालो येन न पाठितः ॥
 न शोचते सज्जामध्ये । हंसमध्ये बको यथा ॥ ५ ॥
 लालयेत्पंचवर्षाणि । दशवर्षाणि ताम्रयेत् ॥
 प्राप्ते तु पौनशे वर्षे । पुत्रं मित्रवदाचरेत् ॥ ६ ॥
 वरमेको गुणी पुत्रो । न च मूर्खशतान्यपि ॥
 एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति । न च तारागणोपि च ॥ ७ ॥
 श्रविद्यं जीवितं शून्यं । दिशःशून्यास्त्वबांधवा ॥
 पुत्रहीनं गृहं शून्यं । सर्वशून्या दरिद्रता ॥ ८ ॥
 न च विद्या समोबंधु । न च व्याधिसमो रिपुः ॥
 न चापत्यसमः स्नेहो ॥ न च दैवात्परंवलं ॥ ९ ॥
 किं तथा क्रियते घेन्वा । यानसूतेनदुग्धदा ॥

कोऽर्थः पुत्रेण जातेन । यो न विद्वान्न ज्ञेयमान् ॥ १० ॥
 उपदेशो हि मर्त्याणां । प्रकोपाय न शान्तये ॥
 पयःपानञ्जङ्गानां । केवलं विपवर्द्धनं ॥ ११ ॥
 मातृवत्परदाराश्च । परद्रव्याणि लोष्टवत् ॥
 आत्मवत्सर्वज्ञूतानि । विहन्ते धर्मबुद्धयः ॥ १२ ॥

॥ अथ सन्धिसूत्र ॥

॥ सिद्धोवर्णः समाम्नायः तत्र चतुर्दशादौस्वराः दशसमाना
 तेषां द्वाद्वान्योऽन्यस्य सवर्णो पूर्वो ह्रस्वः परो दीर्घः स्वरो वर्णः वज्र
 नामी एकारादीनि सन्ध्यकराणि कादीनि व्यञ्जनानि ते वर्गा पञ्चप
 वर्गाणां प्रथमद्वितियौ शपसश्च घोषाः घोषवन्तोऽन्ये अनुनासिकाः उ
 त्रणनमाः अनतस्थाः यस्त्ववाः उपमाणाः शपसहाः अः इति वित्तज
 नीयः कः इति जिह्वामूलीयः पः इत्युपमानीयः अं इत्यनुस्वारः पूर्व
 परयो रर्थापलब्धौ पदम् अस्वरं व्यञ्जनं परं वर्णनयेत् अनतिक्रमयन्
 विश्लेषयेत् लोकोपचारात्प्रदणसिद्धिः इति संधौ सूत्रतः प्रथमश्चरण
 समाप्तः ॥

॥ हितोपदेशः ॥

अहो भगवंत इन्द्रमहिताः । सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता ॥
 आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः । पूज्या उपाध्यायकाः ॥
 श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा । स्तनत्रयाराधकाः ॥
 पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं । कुर्वतु वो मंगलं ॥ १ ॥

अर्थः—(एते पंचपरमेष्ठिनः प्रतिदिनं वः पुष्पाकं मंगलं कुर्वतु)
 जो पंचपरमेष्ठिपदे सो हमेसां तुम जव्यजीवोंक मंगलकरो. के-
 दे पंचपरमेष्ठि (अहो भगवंत इन्द्रमहिता) प्रथम परमेष्ठि श्री
 इन्द्रदेव आठकर्मरूप अंतरंगवैरियोंको दणो सो अरिहंत कहीजै.
 श्री अरिहंत कैसेदे, केवलज्ञान केवलदर्शन संयुक्तदे. फेर अरि-
 ॥६॥ कैसेकहे जगवंतदे जगद्वदके अनेकार्थ कोपमें चौदे

अर्थदे ॥ सूर्य १ ज्ञान २ महात्म ३ यश ४ वैराग्य ५ मुक्ति ६
 रूप ७ वीर्य ८ प्रयत्न ९ इच्छा १० श्री लक्ष्मी ११ धर्म १२ ऐश्वर्य
 १३ योनि १४ इन चवदे अर्थमेंसें दो अर्थकूं वर्जकर बाकी १२
 अर्थ अरिहंत जगवंतमेंदे एकतौ सूर्य १ दुसरी योनि २ यह दो
 टालकै फेर श्री अरिहंत जगवंत कैसेकहें (इंद्रमहिता) चोसठ इं-
 द्रोंसें पूजनीक बारेगुणोंसें बिराजमानहै सो बारे गुण ऐसेहैं प्रथ-
 मतौ अरिहंतमें अद्भुत रूप होतादे रोग नर पसीना नर मैलर-
 हित बना खसबोदार सरीर होतादे १ तासोश्वासमें कमलके
 फूल जैसी खसबो होतीदे २ छोड़ी नर मांस गन्धके दुध जैसा
 स्वेत होताहे ३ आहार नीहारकी विधि अदृश्य होतीहे अर्थात् चर्म
 चक्रुवालेकों दिखाई नहीं देता ४ यह चार अतिशयगुण जन्मसेंही
 होतादे नर बाकीके आठगुण केवलज्ञान उत्पन्न जये वाद होताहे अशो-
 कवृक्ष १ जगवानके सरीरसें बारेगुणा ऊंचा होताहे जिसकी छाया
 बैठनेसें रोगसोकादिक दूर होताहे १ सुरपुष्पवृष्टिः देवतोके स-
 मूह गोमे पर्यंत पंचरंगेफूलोंकी बरसात करे आकाससे गिरते सीधे
 गिरे । बीट नीचा रहे पांखनी ऊपर रहे २ । (दिव्यध्वनि) एक
 योजन तक देवता मनुष्य तिर्यच सब जीव अपनी १ जापामें
 यथावस्थित समझे ऐसा ननोंकों मालम देवेके जगवान हमारी
 बोलीमेंही उपदेश दे रहेहैं सोही बात सिद्धांतोंमें कदाजीहे ॥
 गाथा ॥ एगाङ्गिराणो गे । संदेहेदेहिषांसमञ्जिचा ॥ त्रिदुश्शमणुं-
 सासंता । अरिहंताहुंतिमेसरणं १ । ३ ॥ आमर ४ जगवानके
 दोनों तरफ इंद्र चम्बर ढोलता रहै ४ ॥ आसन ५ जगवंतके बैठ-
 णेकूं इंद्रादिक देव रचित फटिकरत्नका सिंहासन रहै ५ ॥ जामंरुलं
 ६ जगवानके पिठानी भामंरुल रहे जिसें जव्यजीव जगवानके
 तरफ देखसके जगवंतके चारमुख चारुंदिसामें दीखाइदेवे भग-
 वान पूर्वदिशामें मुख करके बैठे नर तीन दिसामें जगवंतकी प्र-

कोऽर्थःपुत्रेण जातेन । यो न विद्वान्न ज्ञेयमान ॥
 उपदेशो हि मर्त्याणां । प्रकोपाय न ज्ञातये ॥
 पयःपानञ्जुंगानां । केवलं विपवर्द्धनं ॥ ११ ॥
 मातृवत्परदाराश्च । परद्रव्याणि लोष्टवत् ॥
 आत्मवत्सर्वज्जुतानि । विहंते धर्मबुद्धयः ॥ १२ ॥
 ॥ अथ सन्धिसूत्र ॥

॥ सिद्धोवर्णः समाम्नायः तत्र चतुर्दशादौस्वराः ६
 तेपांद्वाद्वाचन्योऽन्यस्यसवर्णो पूर्वोह्रस्वः परोदीर्घः स्वरोव
 नामी एकारादीनिसंध्यकराणि कादीनिव्यंजनानि ते
 वर्गाणांप्रथमद्वितियौ शपसश्चयोपाः घोषवंतोऽन्ये अनुन
 त्रणनमाः अनतस्थाः यरलवाः उष्माणः शपसदाः अः
 नीयः कःइतिजिह्वामूलीयः पःइत्युपमानीयः अं इत्यनु
 परयोर्घोपलच्चौपदम् अस्वरंव्यंजनं परंवर्णनयेत् अ
 विश्लेषयेत् लोकोपचारात्प्रहणसिद्धिः इतिसंधौसूत्रतः
 समाप्तः ॥

एकार नयनिकेपागमापर्यायसंयुक्त सिद्धांतकेपढाणेवाले २५ गुणोंसे विराजमान ऐसे श्रीउपाध्याय महाराज श्रीसंधर्मे सदा मंगल करो ४ ॥ (मुनिवराःरत्नत्रयाराधकाः) पंचम परमेष्ठिपदमें सरव साधूमुनिराजजी केसेकहें श्रीसाधूमुनिराज ज्ञान ? दर्शन ? चारित्र ? इन तीन रत्नोंके आराधक पांच सुमतेसमता तीने गुप्ते-गुप्ता ब्रह्मायके पीहर कुरकीसंवत्त चारित्रपात्र मोक्षमार्गके साधक ऐसे सब साधूमुनिराज सचाईस गुणोंसे सोजित श्रीसंधर्मे सदा मंगल करो ५ ॥ इति हितोपदेश दोनोके कल्याणार्थ ॥

॥ अथविंशतिनाम ॥

॥ अतीतचोवीसी ॥

- | | |
|--------------------|------------------------|
| १ श्रीकेवलज्ञानीजी | २ श्रीनिर्व्वाणीजी ॥ |
| ३ श्रीसागरजी | ४ श्रीमहायसजी |
| ५ श्रीविमलदेवजी | ६ श्रीसर्वानुभूतिजी |
| ७ श्रीश्रीधरजी | ८ श्रीदत्तस्वामीजी |
| ९ श्रीदामोदरजी | १० श्रीसुतेजनाथजी |
| ११ श्रीस्वामीजी | १२ श्रीमुनिसुव्रतजी |
| १३ श्रीसुमतिनाथजी | १४ श्रीशिवगतिजी |
| १५ श्रीअस्तागजी | १६ श्रीनमिश्वरजी |
| १७ श्रीअनिलनाथजी | १८ श्रीयशोधरजी |
| १९ श्रीतत्तार्थजी | २० श्रीजितेश्वरजी |
| २१ श्रीशुद्धमतोजी | २२ श्रीशिवकरजी |
| २३ श्रीस्यन्दनजी | २४ श्रीसंप्रतिस्वामीजी |

॥ वर्त्तमानचोवीसी ॥

- | | |
|-------------------|-------------------|
| १ श्रीऋषभदेवजी | २ श्रीअजितनाथजी |
| ३ श्रीसंज्ञवनाथजी | ४ श्रीअजिनंदनजी |
| ५ श्रीसुमतिनाथजी | ६ श्रीपद्मप्रभूजी |

तमा व्यतर देवता स्थापन करै लेकिन भगवानके अतिशय
 च्यारोंहीदिसामें बारैपरखदाकूं अपने सामने उपदेश देतेजये दि
 खाइदेवे ६ ॥ उंडुजी ॥ आकाशमें देव ते देवउंडुजीवाजित्र वजावे
 ७ ॥ रातपत्रं ७ जगवंतके विहारकी वखत मस्तकपर तीन वत्र
 रहै ७ ॥ यह आठगुण देवतोंके किये होतेहे ऐसे अरिहंत देवाधिदेव
 चोतीस अतिशय विराजमान पैतीस वचनगुण सोजित एकहज्जार
 आठ लक्षणांलंकृत अगरे दूषणरहित शांत दांत रुपासागर त्रैलो-
 क्यनाथ तीन जगत्के गुरु वर्त्तमान कालमें महाविदेह क्षेत्रमें के-
 वलज्ञान केवलदर्शनसैं लोकालोकका जाव देखतेजये पृथ्वीमंजल-
 पर जव्यजीवोंके मनोरथ पूरणके विचरतेहैं ऐसे अनंत गुणसैं
 विराजमान अरिहंत देवाधिदेव श्री संघमें सदा मंगल करो १ ॥
 (सिद्धाश्चसिद्धिस्थिता) दूसरे पदमें श्री सिद्धमहाराजकूं नमस्कार
 हुउ केसेकहैं श्री सिद्धमहाराज अष्ट कर्मरूपकाष्टकों गुह्यध्यानरूप
 अग्निसें जस्मकर सिद्धगतिकों प्राप्तजये अनंतज्ञान अनंतदर्शन अ-
 नंतचारित्र अनंततप अनंतवीर्य संयुक्त जन्म जरा मरणरोग सोक
 जयादिकसैं रहित चवदे राजलोकमें सब जीवोंके मनोगतभाव एकस-
 मयमें जाणते उर देखतेथके लेकिन आत्मगुणोंमे मग्न रहेजये ऐसे
 श्रीसिद्धमहाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ २ ॥ (आचार्या-
 जिनशासनोन्नतिकरा) तीसरे पदमें श्रीआचार्यमहाराजकूं नम-
 स्कार हुउ केसेकहे श्रीआचार्यमहाराज उचीसगुणोंसैं विराजमान
 मुक्तिमार्गके साधक कर्मशत्रुके विराधक पंचाचारपालक अत्रुषजीव-
 प्रतिबोधक दमागुणजंमार समदृष्टी तरण तारण धर्मकेधोरी जिन-
 शासनके उन्नतिके करणवाले ऐसे परमउपगारी श्रीआचार्यमहा-
 राज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ३ ॥ (पूज्याठपाध्यायका श्री
 दांतसुपाठका) चौथे परमेश्वरपदमें श्रीउपाध्यायमहाराज
 स्कार हुउ केसेकहे श्रीउपाध्यायमहाराज दादशांभी

३ श्रीऋषभाननजी	८ श्रीअनन्तवीर्यजी
९ श्रीसूरप्रज्ञजी	१० श्रीविमलजी
११ श्रीवज्रधरजी	१२ श्रीचंद्राननजी
१३ श्रीचंद्रबाहजी	१४ श्रीजुजंगजी
१५ श्रीनेमप्रज्ञजी	१६ श्रीईश्वरजी
१७ श्रीचयरसेनजी	१८ श्रीमहोज्ञद्रजी
१९ श्रीदेवयशजी	२० श्रीअजितवीर्यजी

॥ चारसाश्वतातीर्थकरनाम ॥

१ श्रीऋषभाननजी	२ श्रीचंद्राननजी
३ श्रीवारिपेणजी	४ श्रीवर्धमानजी

एते चत्वारनाम्ना जिना साश्वतैव ज्वन्ति ॥

॥ अथ सोले सतोनाम ॥

१ श्रीब्राह्मीजी	२ चंदनबाबाजी
३ श्रीराजीमतीजी	४ श्रीद्रोपदीजी
५ श्रीकौशल्याजी	६ श्रीसृगावतीजी
७ श्रीसुलसाजी	८ श्रीशीताजी
९ श्रीसुजद्राजी	१० श्रीशिवाजी
११ श्रीकुंतीजी	१२ श्रीशीलवतीजी
१३ श्रीदवदंतीजी	१४ श्रीपुष्पचूलाजी
१५ श्रीप्रज्ञावतीजी	१६ श्रीपद्मावतीजी

इत्यादि बडी १ सतियोंको त्रिकाल २ वंदना ॥

(१७)
॥ उपरमोष्ठेने नमः ॥

॥ अथवा ॥

॥ श्रीश्रावकस्य विधिसंयुक्त देवसिराह ॥

॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम् ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राभातिक सामायिक विधिप्रारंभः ॥



॥ अथ नवकारमंत्रः ॥

॥ एमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ एमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ एमो
आयरियाणं ॥ ३ ॥ एमो उवद्धायाणं ॥ ४ ॥ एमो लोए सव्वसा
हूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच एमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पशासणो ॥
॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं इवइ मंगलं ॥ ९ ॥
इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन बेर गुण कें थापनाजीकी थापना
करे, तब तेरे घोल चितवे, सो कहते हैं ॥

॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पहिलेहणा ॥

॥ शुद्ध स्वरूप धारुं ॥ १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥
चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सदहणा शुद्धि ॥ ४ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥
॥ ५ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ६ ॥ सहित पांच आचार पालुं ॥ १ ॥ प
लावुं ॥ २ ॥ अनुमोडुं ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचन गुप्ति ॥
॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ आदरुं ॥ ३ ॥ एवं तेरे घोल श्रीधर्मरत्नप्रकर-
णसूत्रवृत्तिमें कहे हैं ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पीठें गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्यजीके सामने
खमा हो कें तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ खमासमण ॥

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए नित्तीहिआए म
नएण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृष्ठा ॥

॥ इन्द्रकार जगवन् सुहराज्ञ, सुहदेवसी, सुख तप शरीर निरा
बाध सुखसंगम यात्रा निर्वहोउजी ? स्वामी शाता ठेजी ? इति ॥

॥ ४ ॥ एम गुरुने कही नमस्कार करे, तेवारे गुरु कहे दे-
वगुरु प्रसाद ॥

॥ पीठें नीचें बैठकें जिमणा हाथ नीचा करकें अघुष्टि
उमि कहे पीठें खमासमण देकें इच्छाकोरेण संदिस्तह जगवन्
सामायिक लेवा मुहपत्ती पन्हिलेहुं ? गुरु कहे, पन्हिलेह. पीठें इच्छे
कही दूजी खमासमण देई मुहपत्ती पन्हिलेहे ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहणके पच्चीस बोल लिखते हैं ॥

सूत्र, अर्थ साचो सर्दहुं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व मोहनी ॥ २ ॥
मिथ्यात्व मोहनी ॥ ३ ॥ मिश्र मोहनी ॥ ४ ॥ परिहरुं. यह चार बोल
मुहपत्ती खोलती बिरीयां कहणां ॥

॥ कामराग ॥ १ ॥ स्नेहराग ॥ २ ॥ द्वष्टिराग ॥ ३ ॥ परि-
हरुं ॥ यह सात बोल प्रथम कहीजें ॥

॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म ॥ ३ ॥ आदरुं ॥
॥ कुगुरु ॥ १ ॥ कुदेव ॥ २ ॥ कुधर्म ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ ज्ञान
॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ यह नव पन्हिले-
हण नावे हाथे करीयें ॥

॥ ज्ञानविराधना ॥ १ ॥ दर्शनविराधना ॥ २ ॥ चारित्र-
विराधना ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥
कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंरुं ॥ १ ॥ वचनदंरुं ॥ २ ॥ काय-
दंरुं ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह नव पन्हिलेहण जिमणे हाथसें करणी
॥ यह पच्चीस बोल मुहपत्तीके जानने ॥

॥ अब अंगकी पच्चीस पडिलेहण लिखते हैं ॥

॥ कृष्णलेश्या ॥ १ ॥ नीललेश्या ॥ २ ॥ कापोतलेश्या
॥ ३ ॥ ए तीनुं नीलामे मस्तकें परिहरुं ॥

॥ रुद्धिगारव ॥ १ ॥ रसगारव ॥ २ ॥ शांता गारव ॥ ३ ॥
ए तीनुं मुखें परिहरुं ॥

॥ मायाशब्द ॥ १ ॥ नियाणाशब्द ॥ २ ॥ मिद्यादंतण-
शब्द ॥ ३ ॥ ए तीन हीये परिहरुं ॥

॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ ए दोय जिमणे खंजे परिहरुं ॥

॥ माया ॥ १ ॥ लोभ ॥ २ ॥ ए दोय नावे खंजे परिहरुं ॥

॥ हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ ए तीन नावे
हाये परिहरुं ॥

॥ जय ॥ १ ॥ शोक ॥ २ ॥ दुगंछा ॥ ३ ॥ ए तीन
जिमणे हाये परिहरुं ॥

पृथ्वीकाय ॥ १ ॥ अग्निकाय ॥ २ ॥ तेजकाय ॥ ३ ॥ ए
तीन नावे पगे परिहरुं ॥

॥ वायुकाय ॥ १ ॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ अस्त्रकाय ॥ ३ ॥
ए तीन जिमणे पगे परिहरुं ॥ इति मुद्रपत्ति पन्निखेदणा संपूर्णा ॥ ५ ॥

॥ पीठें खरा होय कें इच्छामि स्वमात्मणका पाठ कहे कें
इच्छाकारेण संदिस्तह जगवन् ॥ सामायिक संदिस्तावुं ? गुरु कहे
संदिस्तावेह ॥ पीठें इच्छं कहे कें फेर स्वमात्मण दे कें इच्छा ॥
ज ० ॥ सामायिक वाचं ? गुरु कहे वाणह ॥

॥ पीठें इच्छं कही स्वमात्मण देइ थोमो जुकी तीन नव-
कार गणी इच्छाकारेण संदिस्तह जगवन् पसाज करी सामायिक
ईनक उच्चरावोजी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंतें
सामाईयं इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकवृत्तं पञ्चस्वखाण ॥

॥ करेमि जंतें सामाईयं, सावळें जोगं पञ्चस्वखामि ॥ जाव
पळुवातामि ॥ दुविहं ति विदेणं मणेणं धायाए काएणं;

न करेमि, न कारवेमि, तस्स जंते पन्निक्कमामि निंदामि गरिहामि
अप्पाणं वोत्तिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीठेण खमात्तमण दे केण इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन्
इरियावहियं पन्निक्कमामि ॥ गुरु कहे पन्निक्कमह. पीठेण इच्छं कही ॥
इच्छामि पन्निक्कमिअं इरियावहियाएइत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अय इरियावहियं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ इरियावहियं पन्निक्कमा
मि ॥ इच्छं इच्छामि पन्निक्कमिअं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराइणाए
॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे वीयक्कमणे हरियक्कमणे
॥ उता उत्तिंग पणग दग मट्ठी मक्करु संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे
मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एणिंदिया वेइंदिया तेइंदिया चउरिंदि
या पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अज्झिया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्ठि
या परियाविया ॥ कित्तामिया उद्विया गणान्न णाणं संकामिया
जीवियान्न ववरोविया ॥ तस्समिच्छामि डुक्कनं ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अय तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायच्चित्त करणेणं ॥ विसोहीकरणेणं
॥ विसल्लोकरणेणं ॥ पावाणं कम्माणं ॥ णिग्घायण्णए ॥ गामि
काउस्सग्गं ॥ ८ ॥

॥ अय अन्नत्थ उत्तसिएणं ॥

॥ अन्नत्थ उत्तसिएणं नीत्तसिएणं स्वासिएणं ठीएणं जंजाइएणं
उम्भुएणं वायनिसग्गेणं जमविए पित्तमुच्चाए ॥ १ ॥ सुदुमेहिं अंगत्तंचा
क्षेहिं ॥ सुदुमेहिं खेत्तत्तंचालेहिं ॥ सुदुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एव
माइएहिं आगारेहिं ॥ अज्जग्गो अविराहिअ ॥ दुक्ख मे काउस्सग्गो
॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं जगवन्ताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥
तावकायं ठाणेणं मोणेणं जाणेणं अप्पाणं वोत्तिरामि ॥ ५ ॥ इ
ति ॥ ६ ॥ इहां चार नवकार अथवा एक लोगस्सको काउस्सग्ग

करे. पीठें एमो अरिहंताणं कहे कें काजस्तग पारकें मुखसैं प्रगट
लोगस्त कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ लोगस्त ॥

॥ लोगस्त उज्जोअगरे ॥ धम्म तिअयेरे जिणे ॥ अरिहंते
कित्तस्सं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उत्तज्ज मज्झिअं च वंदे ॥
संजव मज्झिणं दणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च
चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सीअल सिज्झंस वासु
पुज्झं च ॥ विमल मणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥
कुण्ठं अरं च मज्झिं ॥ वंदे मुणिसुवयं नमि जिणं च ॥ वंदामि रिठ
नेमिं ॥ पासं तह वरुमाणं च ॥ ४ ॥ एव मए अज्झियुआ ॥ वि
हुय रय मला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तिअय
रामे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिअ वंदिय महिया ॥ जे ए लोगस्त उ
त्तमा सिद्धा ॥ आरुग बोहिलानं ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलपरा ॥ आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सागरवरगंजीरा
॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ सबलोए ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पीठें खमासमण देइ इच्छा ॥ जगवन् बैसणो संदि
स्तावुं ? गुरु कहे संदिस्तावेह ॥ पीठें इच्छं कहे कें वली खमा-
समण दे कर ॥ इच्छा ॥ जगवन् बैसणो ठानं ? गुरु कहे
ठाण्ह ॥ फेर इच्छं कहे कें खमासमण दे कर इच्छा ॥
जण ॥ सिद्धाय संदिस्तावुं ? गुरु कहे संदिस्तावेह ॥ पीठें
इच्छं कहे के वली खमासमण दे कर इच्छा ॥ जण ॥ सिद्धाय
करुं ? गुरु कहे करेह ॥ फेर खमासमण दे कें इच्छा स्वमे हो कर
थाठ नवकार कह कर सद्धाय करे. तथा जो शीतकालादि होवे
तो खमासमण दे कें इच्छा ॥ जण ॥ पांगरणो संदिस्तावुं ? गुरु
कहे संदिस्तावेह ॥ पीठें इच्छं कह कर खमासमण दे कर इच्छा ॥
॥ पांगरणो पणिग्घाणं ? गुरु कहे पणिग्घाण्ह ॥ पीठें इच्छं क

ही वस्त्र ग्रहण करे तथा सामायिकवंत अथवा पोतासहित श्रावक वांदे तो “वंदामो” ऐसो कहे. और जो कोई दूसरो वांदे तो, सि ध्याय करेह, ऐसै कहे ॥ इति प्राज्ञातिक सामायिक ॥

॥ अथ राइ प्रतिक्रमणविधि प्रारंभः ॥

॥ प्रथम एक खमासमण दे के इच्छा ॥ ज ॥ ॥ चैत्यवंदन कहे ? गुरु कहे करेह ॥ पीठें इछं कही जयउ सामि जियेंउ सामि इत्यादि कहे, सोही लिखते हैं ॥

॥ अथ सकलतीर्थकरनमस्कारो लिख्यते ॥

॥ जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सेतुंजि उज्जंति ॥
॥ पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चरिमंण ॥ १ ॥ जरुअबेह मुणिसुव्वय, महुरिपास डह डरिय खंण ॥ अयरविदेहिज तिठ-
यर, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि ॥ तीआणागय संपयं, वंडु जिण सवेवि ॥ २ ॥

॥ कम्मजूमिहिं कम्मजूभिहिं पढम संधयणि ॥ उक्कोसउ सत्त-
रिसउ, जिणवराण विहरंत लगई ॥ नवकोमीहिं केवलिण, कोमि सहस्त नव साहु संपइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, विहुं कोमीहिं वरनाण ॥ समणह कोमी सहस्त डई, युणिऊइ निच्च विहाणं ॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्ता, लग्खा वप्पन्न अठ कोमीउ ॥ चउ-
सय वायासीया, तिहुक्के चेइए वंदे ॥ २ ॥ वंदे नव कोमि सयं, पणवीसं कोमि लख तेवन्ना ॥ अठवीस सहस्ता, चउसय अठ-
सिया पमिमा ॥ ३ ॥ ११ ॥

॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जं किंचि नाम तिउं ॥ सग्गे पायाले माणुसे लोए ॥ जाइं जिणविंवाइं ॥ ताइं सबाइं वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ नमुत्थुणं वा शकस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं अरिहंताणं, जगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, ति-

ऋगराणं, सयं संवृक्षाणं ॥ १ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिस्तीक्ष्णं, पुरि-
 सवरपुंररीश्राणं, पुरिस्वरगंधहृदीणं ॥ २ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगः
 नाहाणं, लोगहिश्राणं, लोगपईवाणं, लोगपञ्जोश्रगराणं ॥ ४ ॥ अन्नः
 यदयाणं, चरुयुदयाणं ॥ मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं
 ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं ॥ धम्मनायगाणं, धम्मसा-
 रहीणं, धम्मवरचात्तरंतचक्कवट्ठीणं ॥ ६ ॥ अप्पमिहय वरणाण
 दंसण धराणं, विअट्ठ उज्जमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं
 तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं
 सव्वदरिणिणं, सिव भयल मरुअ मणंत मरुखय मद्वावाह मपुणरा-
 वित्ति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं,
 जिअ जयाणं ॥ ९ ॥ जेअ अईया सिद्धा ॥ जेअ जविस्संति
 णागए काले ॥ संपइअवट्ठमाणा ॥ सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १३ ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उट्ठेअ अहेअ तिरिअ लोएअ ॥ सव्वाइं
 ताइं वंदे ॥ इहसंतो तच्च संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केवि साहु ॥

॥ जगवन् जावंत केवि साहु ॥ जरहेरवय महाविदेहे अ ॥
 सव्वेसिं तेसिं पणत्त ॥ तिविहेण तिदंन विरयाणं ॥ १ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हत्तिस्सिद्धाचार्योपाध्याय सव्वे साधुज्यः ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवनं ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥ विसह-
 रविसनिन्नासं ॥ मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुल्लिगमंतं
 ॥ कंठे धारेइ जो सया मणुत्त ॥ तस्स गहरोगमारो ॥ डुव जरा
 जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिउत्त दूरे मंतो ॥ तुच्च पणामो वि बहु-
 होइ ॥ नरतिरिएसुवि जीवा ॥ पावंति न डुख दोहगं ॥

॥३॥ तुहः सन्मत्ते लब्धे ॥ चिंतामणि कप्पपायवप्पहिए ॥ पावंति
अविग्घेणं ॥ जीवा अवरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संशुत्तं महायसं
॥ जत्तिप्परनिप्परेण हिअएण ॥ ता देव दिक्ख बोहिं ॥ जवे जवे
पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अंय जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ हाउ ममं तुह पत्तावत्तं जयवं ॥
जयनिब्बेत्तं मग्गा, एुंसारिआ इठ फलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविशुद्धि
त्तं ॥ गुरुजणपूआ परत्तकरणं च ॥ सुहगुरुजोगोतव्वय, ए सेवणा
आज्जव मखंरु ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ इत्यादि जयवीअराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥ पीठें
खमासमण दे कें इच्छा ॥ ज० ॥ कुसुमिण दुसुमिण राई पाय
छित्त वितोहणत्तं काउस्तग्न करे ? गुरु कहे करेह पीठें इत्तं कह
कर कुसुमिण दुसुमिण राई पायछित्त वितोहणत्तं करेमि काउ
स्तग्न ॥ अन्नत्त उत्तसिएणं ॥ इत्यादि पाठ कहे कें सोले नव
कार अथवा चार लोगस्तका चंदेसु निम्मखयरा पर्यंत चित्तन
कर कें काउस्तग्न करे ॥ पीठें एमो अरिहंताणं कह कर काउ
स्तग्न पारीकें मुखसैं एक लोगस्तका पाठ प्रगट कहे, जो रात्रिमें
गुण संबंधि मोटको दूषण लागो होवे तो काउस्तग्नमांहे ॥ सागर
वरगंजीरा ॥ पर्यंत चितवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ पक्कमणां ठायवेका अवस्तर हुवा ॥ जब खमासम
ण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र कहि कें वांदिथें ॥ १ ॥ खमासमण
देइ श्रीउपाध्यायजी मिश्र कहिके वांदिथे ॥ २ ॥ खमासमण देइ
जंगम युगप्रधान वर्त्तमान जट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम ले कें वां
दीथें ॥ ३ ॥ खमासमण देइ कें सर्व साधुजीकुं वांदिथें ॥ ४ ॥ इस
तरे चार खमासमणसैं पक्कमणां ठायी गोमालीथें घेठ कें मस्त
क नमाय कर दोनुं हाथे मुहपत्ती मुहने दे कर ॥ सबस्तविराइय

उग्राणां, सयं संयुक्ताणां ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणां, पुरिससीद्धानां, पुरि-
 सवरपुंररीश्राणां, पुरिसवरगंधहृत्तीर्णं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणां, लोगः
 नाहाणां, लोगहिश्राणां, लोगपईवाणां, लोगपडोअग्राणां ॥ ४ ॥ अज-
 यदयाणां, चत्सुदयाणां ॥ मग्गदयाणां, सरणदयाणां, बोहिदयाणां
 ॥ ५ ॥ धम्मदयाणां, धम्मदेसियाणां ॥ धम्मनायगाणां, धम्मसा-
 रहीणां, धम्मवरचान्तरंतचक्रवट्टीणां ॥ ६ ॥ अप्पन्निहय वरणाण
 दंसण धराणां, विअट्ट उज्जमाणां ॥ ७ ॥ जिणाणां जावयाणां, तिन्नाणां
 तारयाणां, बुद्धाणां बोहयाणां, मुत्ताणां मोअगणां ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणां
 सव्वदरिसिणां, सिव मयल मरुअ मणंत मरुवय मद्यावाह मपुणरा-
 विति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाणां संपत्ताणां, नमो जिणाणां,
 जिअ जयाणां ॥ ९ ॥ जेअ अईआ सिद्धा ॥ जेअ जविस्संतंति
 णागए काले ॥ संपइअवट्टमाणा ॥ सवे तिविहेण वंदामि ॥ १३ ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उट्ठेअ अहेअ तिरिअ जोएअ ॥ सव्वाइं
 ताइं वंदे ॥ इहसंतो तउ संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ जगवन् जावंत केवि साहू ॥ जरहेरवय महाविदेहे अ ॥
 सवेसिं तेसिं पणउ ॥ तिविहेण तिदंरु विरयाणां ॥ १ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सवं साधुज्यः ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवनं ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥ विसह-
 रविसनिन्नासं ॥ मंगलकट्ठाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुल्लिगमंतं
 ॥ कंठे थारेइ जो सया मणुठ ॥ तस्स गहरोगमारी ॥ डड जरा
 जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिउठ दूरे मंतो ॥ तुव पणामो वि बहु-
 फलो होइ ॥ नरतिरिएसुवि जीवा ॥ पावंति न डइल दोहगं ॥

॥३॥ तुहः सस्मत्ते लडे ॥ चिंतामणि कप्पपायवप्रहिए ॥ पावंति
अविग्घेणं ॥ जीवा अवरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संयुत्तं महायस
॥ जत्तिप्ररनिप्ररेण हिअएण ॥ ता देव दिक्ख बोहिं ॥ जवे जवे
पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अंय जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ हाउ ममं तुह पज्जावत्त जयवं ॥
जवनिव्वेत्त मग्गा, एुसारिआ इठ फलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविशुद्धि
त्त ॥ गुरुजणपूआ परत्तकरणं च ॥ सुहगुरुजोगोतव्वय, ए सेवणा
आज्जव मखंका ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ इत्यादि जयवीअराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥ पीठें
खमासमण दे केँ इच्छा ॥ ज० ॥ कुसुमिण दुसुमिण राई पाय
छित्त विसोहणत्तं काउस्तग कइं ? गुरु कहे करेह पीठें इत्तं कह
कर कुसुमिण दुसुमिण राई पायछित्त विसोहणत्तं करेमि काउ
स्तग ॥ अन्नत्त उत्तसिएणं ॥ इत्यादि पाठ कहे केँ सोले नव
कार अथवा चार लोगस्तका चंदेसु निम्मखयरा पर्यंत चित्तन
कर केँ काउस्तग करे ॥ पीठें एमो अरिहंताणं कह कर काउ
स्तग पारोकेँ मुखसेँ एक लोगस्तका पाठ प्रगट कहे, जो रात्रिमें
गुण संबंधि मोटको दूषण लागो होवे तो काउस्तगमांहे ॥ सागर
वरगंज्जीरा ॥ पर्यंत चितवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ पम्पिकमणां ठायवेका अवसर हुवा ॥ जय खमासम
ण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र कहि केँ वांदिथे ॥ १ ॥ खमासमण
देइ श्रीउपाध्यायजी मिश्र कहिके वांदिथे ॥ २ ॥ खमासमण देइ
जंगम युगप्रधान वर्तमान जट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम ले केँ वां
दीथे ॥ ३ ॥ खमासमण देइ केँ सर्व साधुजीकुं वांदिथे ॥ ४ ॥ इत
तरे चार खमासमणसेँ पम्पिकमणां ठायी गोमाळीयें बैठ केँ मस्त
क नमाय कर दोनु हाथे मुहपत्ती मुहमे दे कर ॥ सबस्तविराइय

॥ इत्यादि पाठ कहे, परंतु इच्छाकारेणसंदिस्तह इच्छं इस माफ
न कहे ॥

॥ अथ सधस्सवि ॥

॥ सधस्सवि देवसिअ डुच्चिंतिअ डुप्पासिय दुच्चिणिय इ
कारेण संदिस्तह जगवन् इच्छं ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कमं ॥ इति ॥
॥ १८ ॥ सवेरका देवसिके ठिकाने राश्यं ऐसा पाठ कहे ॥

॥ पीठें नमुत्तुणं कह केँ खमा होय केँ ॥ करेमि जंते र
माश्यं सावच्चं जोगं पच्चस्सामि ॥ इत्यादिक पाठ कहे ॥ पीठें
छामि काउस्सगं जो मे राइत्तं ॥ यह पाठ कहे ॥ सो लिखतें हैं

॥ अथ इच्छामिठामि ॥

॥ इच्छामि ठामि काउस्सगं ॥ जो मे देवसित्त अइआरो
त्तं ॥ काइत्तं वाइत्तं माणसित्तं ॥ उस्सुत्तो उम्मगो अकप्पो ॥ अ
रणिज्जो ॥ डुच्चात्तं ॥ दुच्चिंतित्तं अणायारो ॥ अणिच्चिअवो ॥ अ
सावगपात्तगो ॥ नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए
तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्हं कत्तायाणं ॥ पंचन्हमणुवयाणं ॥ तिन्हं
एवयाणं ॥ चउन्हं सिस्कावयाणं ॥ वारसवियस्स सावगधम्मस्स
जं खंमिअं जं विराहिअं ॥ तस्स मिच्छा मि दुक्कमं ॥ इति ॥
हां देवसियंके ठिकाने राश्यं कहेनां ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पीठें तस्सउत्तरी ॥ अन्नञ्ज उस्सिएणं कह कर चारित्रगु
हि निमित्त चारं नवकार अथवा एक लोगस्सका काउस्सग कर
पारि केँ दर्शन गुहि निमित्ते प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत
चेइआणं ॥ करेमि काउस्सगं वंदण वत्तिआए ॥ इत्यादि कहना
सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वंदणवत्तिआए ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, स
म्माण वत्तिआए ॥ बोहिलान्न वत्तिआए ॥ निरुवस्सग वत्तिआए

॥ १ ॥ सदाए मेहाए पीईए ॥ धारणाए अणुपेदाए ॥ बद्धमाणी
ए ठामि काउस्तगं ॥ २ ॥ इति ॥ २० ॥

पीठें अन्नवृण कही चार नवकार अथवा एक लोगस्तका
काउस्तग करके पारके ज्ञानाचार शुद्धि निमित्त पुष्करवरदी ॥
सुपस्त जगवत्त करेमि काउस्तगं ॥ इत्यादि पाठ कहे, सो
लिखते हैं ॥

॥ अथ पुष्करवरदी ॥

॥ पुष्करवरदीवक्ते, धायइसंमे अ जंवुदीवेश ॥ जरदे रवपः
विदेहे, धम्माइगरे नमंतामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपन्नविई, तणस्त
सुरगणनरिंदमहिअस्त ॥ सीमाधरस्त वंदे, पप्फोनिअ मोहजाज
स्त ॥ २ ॥ जाई जरामरण सोगपणातणस्त, कद्धाण पुरुखलविः
सालसुदावहस्त ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्त, धम्मस्त तार
मुवल्लअ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेजो पयत्त णमो जिणमए, नंदी
सया संजमे ॥ देवं नाग सुवन्न किन्नर गण; स्तप्पूअ जावच्चिए ॥
लोगो जत्त पइठिउ जगमिणं, तेलुक्कमच्चा सुरं ॥ धम्मो वद्धत्त ता
सत्त विजयत्त, धम्मुत्तरं वद्धत्त ॥ ४ ॥ इति ॥ २१ ॥ सुअस्त ज
गवत्त करेमि काउस्तगं वंदणवत्तिआए ॥ ए पाठ पूर्ण कह कर
अन्नवृत्तसिण्णं कह, के आठ नवकार अथवा दो लोगस्तका काउ
स्तग करे, काउस्तगके मांहे आजुणा चार प्रहर चिंतवे, सो आ
गे लिखेंगे, पीठें सिद्धाणं बुद्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग मु
वगयाणं, नमो सया सच्चसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं
देवा पंजली नमं संति ॥ तं देव देव महिअं, तिरस्ता वंदे मदावी
रं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्करो, जिणवरवत्तहस्त बद्धमाणास्त ॥ सं
सारताणरात्त, तारेइ नरं व नारि वा ॥ ३ ॥ उज्झिन सेल तिहरे,

दिक्का नाणं निसीद्व्या जस्त ॥ तं धम्मचक्रवट्ठिं, थरिठ नेमिं न
मंतामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, यवंदिया जिणवरा चउधीसं
॥ परमठ निविअवा, सिद्धा सिद्धिं मम विसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्महिठि समाहिगराणं ॥
इति ॥ करेमि काउस्सगं ॥ अन्नउण ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ पीठें संभासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरे आवस्तग सूत्र
वावणां निमित्तें मुहपत्ती पन्निसेहुं ? गुरु कहे पन्निसेह ॥ मुहपत्ती
पन्निसेह, पीठें वावणां दे, तिनका विधि कहते हैं ॥

॥ अवग्रहके बाहिर उजा हुआ आधा नीचा नम कर
इधामि खमासमणो वंदितं जावणिळाए निसीद्व्याए अणुजा-
णह मे मिउगहं, इतना पाठ कहे कर जूमि प्रमार्जन करता
हुआ निसीदि कहे कें कठुक अवग्रहमें प्रवेश कर कें संभासा
प्रमार्जन कर कें उक्कर बैठ के नावे दाथमें मुहपत्ती ले कें नावे
कानसें ले, कें जिमणा कान पर्यंत निखाम पूंजी, मुहपत्ती आगे
रख कें तिसके मध्य जागमें गुरुचरणकी कटपना कर कें ॥ अदो
कायं इत्यादि आर्चन कर कें कठुक नीचा नम कर मस्तकें अंजलि
कर कें गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापन कर कें ॥ खमणिळो जे किलामों
॥ इत्यादि पाठ कहे, पीठें फेर ॥ जता जे ॥ इत्यादि आर्चन कर
कें खमा दोकें पीठें पगमें जूमि पूंजता हुआ अवग्रहसें बाहिर
निकलकें स्वस्थान पर आवे, उहां आवस्तिपाए ॥ इत्यादि पाठ
सर्व कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सुयुग्गादणां ॥

॥ इधामि खमासमणो वंदितं, जावणिळाए निसीद्व्याए
। अणुजाणह मे मिउगहं निसीदि ॥ अदो कायं काय संकासं,
दमणिळो जे किलामो ॥ अणुकिंताणं वहु सुत्तेण जे, दिवतो

वश्कंतो जता जे जवणिऊं च जे, खामेमि खमासमणो ॥ देव-
 सिअं वश्कम्मं आवसिआए, पन्निक्कमामि खमासमणारणं ॥ देव-
 सिआए, आसायणाए ॥ तितीसन्नयराए जं किंचि मिआए, मण-
 डुक्कणाए, वयडुक्कणाए कायडुक्कणाए कोहाए, माणाए, मायाए, लो-
 ज्ञाए, सब्बकालिआए, सब्ब मिओवयाराए, सब्बधम्मशक्कसणाए ॥
 आसायणाए जो मे अइआरो कन्, तस्स खमासमणो पन्निक्कमामि ॥
 निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोत्तिरामि ॥ १ ॥ दूजी वारके वांदणें
 आवसिआए ए पद न कहेना, अने राश्यें राइन् वश्कंतो, तथा
 चउमासीयें चउमासीन् वश्कंतो, पस्कीयें पस्को वश्कंतो, संवच्च-
 रीयेसंवच्चरीन् वश्कंतो ॥ एसीतरेंपाठकहेनां ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सइ जगवन् देवसियं आलोउं इअं ॥ आ-
 लोएमि, जो मेण ॥ इति ॥ १५ ॥ देवसियंके ठिकाने राश्यं कहेनां ॥

॥ पीठें रात्रि संबंधि अतिचार गुरु समक आलोवे, सो क-
 हेते हैं ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय
 ॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख
 तेजकाय ॥ सात लाख वातकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पति-
 काय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ दोय लाख वेइं-
 द्रिय ॥ दोय लाख तेन्द्रिय ॥ दोय लाख चौरेंद्रिय ॥ चार लाख
 देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्थच पंचेंद्रिय ॥ चउदे
 लाख मनुष्य ॥ एवं चार गतिके चौराशी लाख जीवापोनिमें,
 मादारे जीवें जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाय्यो होय, हणतां
 प्रत्ये जलो जाण्यो होय, ते सबेहुं मन वचन कायार्थे करी मिआ
 मि डुक्कं ॥ इति ॥ १६ ॥

विष्का नाणं निसीद्धिआ जस्त ॥ तं धम्मचक्रवटिं, अरिदने
मंतामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, यवंदिया जिणवरा च
॥ परमठ निठिअठा, सिद्धा सिद्धिं मम विसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मदिठि समादिगराण
इति ॥ करेमि काउस्तग्गं ॥ अन्नउण ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ पीठें संभासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीतरे आवस्तग सु
वादणां निमित्तें मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेह ॥ मुहपत्ती
पमिलेहे. पीठें वादणां दे. तिनका विधि कहते हैं ॥

॥ अवग्रहके बाहिर उजा हुआ आधा नीचा नम कर
इछामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीद्धिआए अणुजा-
णह मे मिउग्गहं. इतना पाठ कह कर जूमि प्रमार्जन करता
हुआ निसीद्धि कह कें कठुक अवग्रहमें प्रवेश कर कें संभासा
प्रमार्जन कर कें उक्कन वेठ के नावे दाथमें मुहपत्ती ले कें नावे
कानसें ले. कें जिमणा कान पर्यंत निह्खाम पूंजी, मुहपत्ती आणें
रख कें तिसके मध्य जागमें गुरुचरणकी कटपना कर कें ॥ अदो
कायं इत्यादि आवर्त्त कर कें कठुक नीचा नम कर मस्तकें अंजलि
कर. कें गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापन कर कें ॥ खमणिज्जो जे किलामों
॥ इत्यादि पाठ कहे. पीठें फेर ॥ जत्ता जे ॥ इत्यादि आवर्त्तन कर
कें खमा होके पीठें पगसें जूमि पूंजता हुआ अवग्रहसें बाहिर
निकलके स्वस्थान पर आवे. उहां आवस्तिआए ॥ इत्यादि पाठ
सर्व कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सुयुरुवांदणां ॥

॥ इछामि खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जाए
॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीद्धि ॥ अदो का
खमणिज्जो जे किलामो ॥ अप्पकिअंताणं बहु

वशकृतो जता जे जवणिऊं च जे, खामेमि खमासमणो ॥ देव-
 सिअं वशकम्मं आवसिआए, पम्किमामि खमासमणार्ण ॥ देव-
 सिआए, आसायणाए ॥ तिचीसन्नपराए जं किंचि मिछाए, मण-
 डुक्काए, वयडुक्काए कायडुक्काए कोहाए, माणाए, मायाए, खो-
 जाए, सबकालिआए, सब मिछोवयाराए, सबधम्माइक्कमणाए ॥
 आसायणाए जो मे अइआरो कउ, तस्त खमासमणो पम्किमामि ॥
 निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ दूजी वारके वांदणें
 आवसिआए ए पद न कहेना, अने राइयें राइउ वशकृतो, तथा
 चउमासीयें चउमासीउ वशकृतो, पस्कीयें पस्को वशकृतो, संवछ-
 रीयेसंवछरीउ वशकृतो ॥ एसीतरेंपाठकहेनां ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सइ जगवन् देवसियं आलोउं इच्छं ॥ आ-
 लोएमि, जो मे० ॥ इति ॥ १५ ॥ देवसियंके ठिकाने राइयं कहेनां ॥

॥ पीठें रात्रि संबंधि अतिचार गुठ समझ आलोवे, सो क-
 हेते हैं ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय
 ॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अस्पकाय ॥ सात लाख
 तेजकाय ॥ सात लाख वायुकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पति-
 काय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ दोय लाख वेइं-
 द्रिय ॥ दोय लाख तेंद्रिय ॥ दोय लाख चौरेंद्रिय ॥ चार लाख
 देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय ॥ चउदे
 लाख मनुष्य ॥ एवं चार गतिके चौराशी लाख जीवायोनिमें,
 मादारे जीवें जे कोइ जीव दण्यो होय, दण्णाव्यो होय, दणतां
 प्रत्ये जलो जाण्यो होय, ते सबेहुं मनु वचन कायार्थे करी मिछा
 मि डुक्कं ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ अदारे पापस्थानक आलोचनं ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥ ३ ॥
मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया
॥ ८ ॥ लोभ ॥ ९ ॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२
॥ अज्ञापर्याप्त ॥ १३ ॥ पैगुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ अरति ॥ १५ ॥
परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृषावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशब्द
॥ १८ ॥ ए अदारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय,
सेवता प्रत्ये जलां जाण्यां होय, ते सबेहुं मनं, वचनं, कायार्थं
करी तस्त मिच्छा मि डक्कनं ॥

॥ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ववणी, कवली, नव
करवाली, देव गुरु धर्मकी आशातना करी होय ॥ पन्नरे कर्मादा
नोकी आसेवना करी होय ॥ राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, जक्त
कथा करी होय. और जो कोई पाप पर निंदा कीधुं होय, कराव्युं
होय, करतां अनुमोद्युं होय सो सर्व मन वचन, कायार्थं करके, दि
वस अतिचार आलोचने कर के पन्निक्कमणामे आलोचनं ॥ तस्त
मिच्छा मि डक्कनं ॥ इति आलोचनं ॥ इहां प्रजातके पन्निक्कमणामे
दिवसके विकाने रात्रिका पाठ कहेनां ॥ इति ॥ २८ ॥

॥ पीठें सबस्तवि राक्षसं ॥ इत्यादि पाठ कहे. तिदां
इच्छाका ॥ ज० ए पद कहनेसें आलोच्य दुआ अतिचारका प्रा
पन्न मागे ॥ गुरु कहे पन्निक्कमद ॥ पीठें इच्छं तस्त मिच्छामि
डक्कनं कह के संभासा प्रमाज्जन कर के आसन पर बैठे के जि
मणा गोमा उंवा रख के मावा गोमा नीचे कर के ऐसे कहे कि
वन! सूत्र जणुं? तव गुरु कहे जणेह ॥ पीठें इच्छं कहि के तीन
अरु तीन बार करेमि जंते ॥ जण के इच्छामि पन्निक्क
जो मे एइव इत्यादि कह कर ॥ तं निदे तंच गरिदामि

पर्यंत वंदिता सूत्र कहे. सो लिखते हैं ॥ पीठें स्वप्ना हो कें अमुदि
नमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रावक वंदितासूत्र ॥

॥ वंदितु सद्य सिद्धे, धम्मायरिए अ सद्यसाहू अ ॥ इच्छामि
पन्निकमिन्नं, सावगयम्माइआरस्त ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो,
नाणे तह दंसणे चरिसे अ ॥ सुहुमो अ वायरो वा, तं निंदे
त्तं च गरिहामि ॥ २ ॥ डुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे
अ आरंजे ॥ कारावणे अ करणे, पन्निकमे देवसियं सवं ॥ ३ ॥
जं वद्धमिंदिएहिं, चउहिं कत्ताएहिं अप्पसत्तेहिं ॥ रागेण व दोसेण
व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चं
कमणे अणाज्जेणे ॥ अज्जिउणे अ निउणे, पन्निकमे ॥ ५ ॥ संका
कंख विगिंछा, पसंस तह संथवोकुलिंगीसु ॥ सम्मत्तस्त इआरे,
पन्निकमे ॥ ६ ॥ उक्काय समारंजे, पयणे अ पयावणे अ जे दोस्ता
॥ अत्तवाप परा, उज्जवा चैव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचपहमणुव-
याणं, गुणवयाणं च तिसह मइयारे ॥ सिस्काणं च चउएहं, पन्नि-
क्कमे ॥ ८ ॥ पढमे अणुवयंमि, धूलग पाणाइवाय विरईत्त ॥
आयरिअ मप्पसत्ते, इउ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंध उविट्टेए,
अइ जारे जत्त पाण चुट्टेए ॥ पढमं वयस्त इआरे, पन्निकमे ॥
१० ॥ वीए अणुवयंमि, परिशुलगअलिअ वयण विरईत्त ॥ आया-
रिअमप्पसत्ते, इउ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्त दारे,
मोसुवएसे अ कून्लेहे अ ॥ वीयं वयस्त इआरे, पन्निकमे ॥
१२ ॥ तइए अणुवयंमि, धूलग परदव्वहरण विरईत्त ॥ आयरिअ
मप्पसत्ते, इउ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहरप्पउणे, तप्पन्निरुवे
विरुद गमणे अ ॥ कून्तुल कून्माणे, पन्निकमे ॥ १४ ॥ चउत्ते
अणुवयंमि, निच्चं परदारगमण विरईत्त ॥ आयरिअ मप्पसत्ते, इउ
पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अशंग वीवाह तिच्चं

अगुरागे ॥ चञ्च वयसंत इआरे, पन्किमे ॥ १६ ॥ इतो अणु
 पं, चमंमि आयरिअ मप्पसञ्चंमि ॥ परिमाण परिच्छेए, इअ पमाय
 गेणं ॥ १७ ॥ धण वन्न खित्त वडू, रूप सुवन्ने अ कुविअ प
 माणे ॥ उपए चञ्चपयंमि, पन्किमे ॥ १८ ॥ गमणस्स य प
 माणे, दिसासु उट्टं अहेअ तिरिअं च ॥ बुद्धिसअंतरद्दा, पढमं
 गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्झंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले
 गंधमल्ले अ ॥ उवज्जोग परिज्जोगे, बोयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सज्जि
 पन्निवदे ॥ अपोल उप्पोलिअं च आहारे ॥ तुञ्जेसहि ज्ञकण
 पन्किमे ॥ २१ ॥ इंगाली वणसामी, ज्ञामो फोमी सुवड
 कम्मं ॥ वाणिज्जं चेव दं, त लख रस केस वित्तवित्तयं ॥ २२
 एवं खु जंतपिच्छणं, कम्मं निच्छंणं च दवदाणं ॥ सरवद तल
 सोसं, असई पोसंच वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सज्जिगि मत्तल जंतग, त
 कठे मंत मूल जेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविएवा, पन्किमे ॥ २४
 न्हाणू वट्ठण वन्नग, विलेवणे सद्धव रसगंधे ॥ वज्जासण आन्नरणे
 पन्किमे ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुकुइए, मोहरि अहिगरण जोग अ
 रिचे ॥ दंरुंमि अणवाए, तइयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिथि
 उप्पणिहाणे, अणवणणे तहा सइ विदुणे, ॥ सामाअ वित्तहकए
 पढमे तिस्कावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्धे रूढे अ
 पुगलखेवे ॥ देसावगा सियंमि, धीए तिस्कावए निंदे ॥ २८ ॥
 संपा रुच्चारविही, पमाय तह चेव ज्ञोवणाज्जोए ॥ पोसह विदि
 विवरीए, तइए तिस्कावए निंदे ॥ २९ ॥ सज्जिते निस्किवणे, पि
 द्विणे चवणस मज्जरे चेव ॥ काखाइकुम दाणे, चञ्चे तिस्कावए
 ॥ सुहिए सअ उहिए सुअ, जामे असंजएस अणुकंपा
 सणव, तंनिंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ सादूसु
 कठं तव चरण करण जुत्तेसु ॥ संते फासु अ दाणे,

तं निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ
 आसंस पत्तगे ॥ पंचविहो अइआरो, मा मय दुक्क मरणंते ॥३३॥
 काएण काइअस्स, पम्भिकमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसि-
 अस्स, सबस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिरकागा,
 रवेसु सत्ता कत्ताय दंमेषु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो
 अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मदिहं जीवो, जइ विहुपावं समायेरे
 किंचि ॥ अप्पोसि होइ बंयो, जेण न निदंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥
 तं पिहुत्तपम्भिकमणं, सप्परिआवं सत्तत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवत्तामेइ,
 वाहिअ सुत्तिस्सिक्खं विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुण्णयं, मंत मूल
 विसारया ॥ विज्जा हणंति मंतदिं, तो तं इवइ निधिसं ॥ ३८ ॥
 एवं अटविहं कम्मं, राग दोस समज्झिअं ॥ आलोयंतो अ निंदंतो,
 खिप्पं हणइ सुत्तावत्त ॥ ३९ ॥ कय पावोवि मणुस्तो, आलोइअ
 निंदिय गुरुत्तगासे ॥ होइ अइरेग लहुत्तं, उहरिअ जरुव जारवहो
 ॥ ४० ॥ आवस्स एण एएण, तावत्त जइवि वदुरत्त होइ ॥
 उक्काण मंत किरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलो-
 अणा वदुविहा, नयसंजरिआ पम्भिकमणकाले ॥ मूल गुण उत्तर-
 गुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवल
 रत्तस्स ॥ अप्पुट्ठमि आरा, हणाए विरत्तमि विराहणाए ॥
 तिविहेण पम्भिकंतो, वंदामि जिणे चत्तवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति
 वेइआइं ॥ ४४ ॥ जावंत केवि सादू ॥ ४५ ॥ चिर संचिय
 राव पणासणीइ, जवत्तयत्तहस्स मदणाए ॥ चत्तवीस जिण वि-
 णोग्गय कदाइं, वोत्तंतु मे दिअदा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता,
 सेद्धा सादु सुअं च धम्मो अ ॥ सम्मदिहो देवा, दिंतु समाहिं च
 तोहिं च ॥ ४७ ॥ पम्भिसिद्धाणं करणे, किच्चाण मकरणे पम्भिक-
 रणे ॥ अत्तइदणे अ तदा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥ स्वा-
 मि सब जीवे, सबे जीवा खमंतु मे ॥ मित्तीमे सब जूएसु, वेरं

मञ्जु न केशः ॥ ४९ ॥ एव महं आलोक्ष्य, निविश्य गरदिभ्य हुं-
विभं सम्मं ॥ त्रिविदेश पन्तिकंतो, वंदामि जिणे चञ्चलीसं ॥ ५०
॥ इति ॥ ५१ ॥ इहां प्रजातके पन्तिकमणमें देवसिके ठीकाने राश्यं
कदना ॥

॥ पीठें दो वावणां देकर अवमदमादिथकोज कदे ॥ इच्छा-
का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ अप्रुच्छिमि अग्रिंतर ॥ राश्यं खामेमि ?
गुरु कदे खामेद ॥ संभासा प्रमार्जन पूर्वक गोमाली घेठ के, बे
बाद पडिलेदि ॥ मुदपती धामदायसूं मुखें देई, दक्षिण दाथ
गुरु सामो करी ॥ नीपो नम्यो धको जंकिंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि
संपूर्ण कदे ॥

॥ अथ अप्रुच्छि ॥

॥ इच्छाकारेण संविस्सद जगयन् अप्रुच्छिमि अग्रिंतर देव-
सिद्ध खामेदं ॥ इष्टं खामेमि देवसियं जंकिंचि अप्पत्तियं जने
पाणे विणए येभाषये आलावे संलाये उयासपो ॥ रामासपो अंतर
जाराए छवरिजासाए ॥ जं किंचि ॥ मच्छविषाय परिदीणं सुलु-
भेवा धापरं वा ॥ मुघं जाणद अदं न जाणामि ॥ तस्स मिशामि
इच्छं ॥ इति ॥

॥ इहां गुरु पण मिशामि इच्छं कदे. पीठें दो गादणां देई
जूमि प्रमार्जन करता दुआ पगसों अवमद बादिर आय के आय-
सिध छवजाए इत्यादि तीन गाथा कदे, सो तिसते दे ॥

॥ अथ आपत्तिय उपजाय ॥

आपत्ति छवजाए, सीसे सादमीए कुलगणे अ ॥ ने
कसाया, सोड त्रिविदेश खामेमि ॥ १ ॥ सवस्स समण
उत्तं अंजलि करिअ सीसे ॥ सव्वं समावड्ढा, खामामि
॥ २ ॥ सवस्स जीवरासिस्स, जावत्तं धम्मो निदिम
॥ ३ ॥ समावड्ढा, खामामि सवस्स अदपंनि ॥ ३ ॥

पीठें करेमि जंतें इष्टामि ठामि काउस्तग्न तस्तुत्तरी० ॥
 श्रीमहावीर स्वामी ठमासि तप चिंतवणा निमित्तं करेमि काउ-
 स्तग्नं अन्नदू० ॥ कदि कें काउस्तग्न करे, काउस्तग्नमें श्रीवीर-
 क्त ठम्मासी तप चिंतवन करे ॥ चोवीश नवकार अथवा ठ
 झोगस्तका काउस्तग्न करे, काउस्तग्न पारिकें प्रगट लोगस्त कहे ॥

॥ ठगे आवश्यककी मुद्दपत्ती पम्हिलेहुं ? गुरु कहे पम्हिलेह
 ॥ मुद्दपत्ती पम्हिलेही वे वांढणां देई सकल तीर्थनाम लख नम-
 स्कार करे, सो लिखे हैं.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्रग्धरा वृत्तम् ॥

॥ सङ्कत्तया देवलोके रविशशिजवने, अंतराणां निकाये,
 नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने ॥ पाताले पन्न-
 गेंद्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थकराणां प्रतिदि-
 वसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे
 कुंभले इस्तिवृंते, वस्कारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवृंते ॥
 शैले चैत्रे विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ २ ॥
 श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मेते तारके
 वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सह्याद्रौ वैजयंते विमल-
 गिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षि-
 तितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च धाटे विटपिघनतटे हेमकूटे
 विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च ज्योटे ॥ श्री०
 ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयपिनि निपथे मेखले पिष्ठले वा,
 नेपाले नादले वा कुवलयतिलके सिंदूले केरले वा ॥ माहाले
 कोशले वा विगलितसलिले जंगले वा दमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥
 अंगे वंगे कर्लिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौमे चौमे मुरंमे
 वरतरद्रविमे उद्रिषाणे च पौंमे ॥ आर्द्रे माद्रे पुलिंद्रे द्रविष्कवलये

कान्यकुब्जेसुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंदायां चंद्रमुख्या गजपुरमधु-
 रापत्तने चोळ्ळयिन्यां, कौशंभ्यां कोशलाया कनकपुरवरे देवगिर्या
 च काश्यां ॥ रासक्ये राजगेहे दशपुरनगरे जदिले ताम्रलिप्तां ॥
 श्री० ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽतरिक्षे गिरिशिखरहृदे स्वर्णदीनीरतीरे,
 शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलने जूरुहाणां निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये
 वने वा स्थलजलविपमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ “श्री-
 मन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाळमलौ जंबुवृक्षे, चौळन्ये चैत्यनंदे
 रतिकररुचके कौमले मानुषांके ॥ इक्षूकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ
 व्यंतरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके ज्वंति त्रिजुवनवलये यानि चैत्या-
 लयानि” ॥ ९ ॥ इत्थं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठन्ति प्रवीणाः,
 प्रोद्यत्कल्याणहेतुं कलिमलहरणं जक्तिजाजस्त्रिसंध्यम् ॥ तेषां श्री-
 तीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिश्चैः
 प्रमुदितमनसां चित्तमानंदकारि ॥ १० ॥ इति चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥
 इति ॥ ३२ ॥

पीठे गुरुमुखे पञ्चस्काण करि कै ॥ इच्छामोनि तद्वियं कहि
 कै गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे.

॥ पीठेणमो खमासमणाणं एमोईस्तिद्धाण ॥ कह कर.
 परसमय तिमिरतरणिं ए तीन गाथा कदीजें सो लिखते हैं ॥

॥ अथ परसमय तिमिरतरणिं ॥

॥ परसमय तिमिरतरणिं, जवसागर वारि तरण वरतरणिं
 ॥ रागपराग समीरं, वंदे देवं मदावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्ध संसार
 विदारकारि, डुरन्तजावारिणा निकामं ॥ निरन्तरं केवलिसत्तमां
 नो, जवावदं मोदजरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारिकुनयागमरुदगूढ,
 संमोदपंकहरणामलवारिपूरम् ॥ संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वी-
 रागमं परमसिद्धिरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमलजरसोज्जालीढलोला-
 लमाळा, वरकमलनिवासे दारनीशरदासे ॥ अविखलविकारागार

विघ्नितिकारं, कुरु कमलकरं मे मङ्गलं देवितारम् ॥ ४ ॥ इति ॥
३३ ॥ अथवा संसारदावानी तीन गाथा कहेवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ संसारदावा स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरम् ॥
माया रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरितारधीरम् ॥ १ ॥ ज्ञा-
वावनाम सुरदानवमानवेन, चूलाविलोककमलावलिमालितानि ॥
संपूरितान्निनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि
तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपद पदवी नीरपूरान्जिरामं, जीवाहित-
विरलखदरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरु गममणी संकुलं दूरपारं,
सारं वीरागमजलनिधिं सादरं ताधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूला लोलधूली बहुल
परिमला लीढलोलालिमाला, जंकारा रावसारा मलदलकमलागार-
भूमीनिवासे ॥ गयासंज्ञारसारे वरकमलकरे तारद्वाराजिरामे, वा-
णीसंदोददेहे जवविरहवरं देहि मे देवि तारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ इत्यादि तीन गाथा जणी, शक्रस्तव कहे. पीठें खना दो
कर अरिदंत चेईयाणं करेमि कान्तस्तगं ॥ वंदणवत्तिआएण अन्नबू ॥
॥ इत्यादि पाठ कहि कें ॥

॥ कान्तस्तगमाहे एक नवकार चिंतवी ॥ एक आवक
प्रथम कान्तस्तग पारी नमोऽर्हतिज्ञाण कही ॥ एक गाथा स्तुति
कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नंद ॥ नव कर तनु निरुपम,
नील वरण सुखकंद ॥ अहि लंठण सेवित, पञ्चमावड धरणिंद ॥
प्रद उठ्ठी प्रणमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा एक
जण कहे ॥ दूसरे सब कान्तस्तगमाहे रह्या हुआ सुणे ॥ पीठें
णमो अरिदंताणं कहि कें कान्तस्तग पारे ॥ इस तरे आगे पण
जाणणां ॥ पीठें लोगस्त कहे ॥ सखलोए अरिदंत चेईयाणं वंदण-

वत्ति० ॥ अन्नदू० ॥ इत्यादि कहि कैं ॥ एक नवकारका काउस्तग
करी पारि कैं दूजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरिवेयद्वइ, कणयाचल अन्निराम ॥ मानुपोत्तर
नंदी, रुचक कुंमल सुखगम ॥ भुवणेशुर व्यंतर, जोइस्त विमाणी
नाम ॥ वत्तैं ते जिणवर, पुरो मुऊ मन काम ॥ २ ॥

॥ पीवैं पुस्करवदीवद्धे कहि कैं सुयस्त जगवत्त० वंदण०
अन्नदू० कही ॥ एक नवकारका काउस्तग पारि कैं ॥ त्रीजी
स्तुति कहे, सो लिखते,

॥ जिहां अंग इग्यारे, वार उपंग ठ ठेद ॥ दस पयन्ना
दाख्या, मूल सूत्र चउजेद ॥ जिन आगम पद्मव्य, सत पवारथ
जुत ॥ सांजलि सर्वदतां, त्रूटे करम तुरत ॥ ३ ॥

॥ पीवैं सिद्धाणं बुद्धाणं ॥ कह कैं वेयावच्चराणं ॥
अन्नदू० कही ॥ एक नवकारका काउस्तग करी पारि कैं एमो-
उद्दिष्टिद्धा० कह कैं चोथी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ पञ्चमावई देवी, पार्श्व यक्ष परतक्ष ॥ सहु संघनां संकट,
दूर करेवा दक्ष ॥ समरो जिनजति, सूरि कहे इक वित्त ॥ सुख
सुजस समापो, पुत कलत्र बहु वित्त ॥ ४ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ पीवैं नीचा बैठ कैं एमोदूणं० कहि कैं ॥ तीन खमा-
समणें पूर्वोक्त रीतें ॥ आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु वंदे ॥

॥ अथवा केई ठिकाने जिमणो हाथ नीचो करि, मुखें
मुहपत्ती देई अट्टाइजेसु कहे हैं, सो लिखते हैं ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ अट्टाइजेसु ॥

॥ अट्टाइजेसु ॥ दीव समुद्देसु ॥ पन्नरससु कम्मजूमीसु ॥
जावंत केवि साहू ॥ रयहरण गुच्छपणिग्गदधारा पंचमद्वयधारा ॥
अट्टारसहस्त सोलंगधारा ॥ अस्कयायारचरिचा ॥ ते सबे सिरसा
मणसा मञ्जएण वंदामि ॥ इति ॥

॥ इतना विधि किया पीठें स्थिरता हुवे तो स्वमासमण
तीन बखत देई ॥ इच्छाकारेण संविस्तह जगवन् ॥ चैत्यवंदन करूं
जी, यह पाठ कह कर चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जय लय त्रिभुवन आदिनाथ, पंचमगति गामी ॥ जय
लय करुणा शान्त दांत, जविजनहितकामी ॥ जय जय इंद नरिंद
चंद्र, सेवित तिरनामी ॥ जय जय अतिशयानंतवंत, अंतर्गत-
जामी ॥ १ ॥ पूरव विवेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वाम ॥
त्रिकरणशुद्ध त्रिहुं कालमें, नितप्रति करूं प्रणाम ॥ २ ॥ जं किं-
चिनाम तिष्ठं ॥ नमोऽनूपां जावंति चेष्टा जावंत केवि सादृं
॥ नर णमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ॥ तक कहि कै
सीमंधरजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३७ ॥

॥ अथ सीमंधरजिनस्तवनम् ॥

॥ जगजीवन जग बालहो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसीमंधर साहिबा, बीनतनी अवधार लाल रे ॥
परम पुरुष परमेस्वर, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥
केवल ज्ञान दिवाकर, जागे सावि अनंत लाल रे ॥ ज्ञासक लो-
कालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ इंद्र चंद्र
चक्रीस्वर, सुर नर रहे कर जोर लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा,
अणदूता इक कोर लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ चरण कमलमिंजर
वसे, मुज मन दंस नित मेव लाल रे ॥ चरण शरण मोहि आ-
शरो, जब जब देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अधम उच्चारण
ओ तुम्हें, दूर हरो जब दुःख लाल रे ॥ कहे जिनदर्प मया करी,
देजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ इति ॥ ३८ ॥

॥ पीठें जयवीधराय० वंदनवत्तियाए० ॥ अन्नदू० कहि

कैं ॥ एक नवकारका काजस्तग्न करे ॥ पारि कैं नमोऽर्हस्तिदा०
कदी ॥ एक शुईनी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ महीमंरुणं पुससेवन देहं, जषाणंदणं केवलनाणगेहं ॥
महाणवलछी बहुबुद्धिरायं, सुसेवाम सीमंहरं तिन्नरायं ॥ १ ॥ इम
होज थिरता हुवे तो, श्रीसिद्धाचलजीका चैत्यवंदन करे, सो
लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीतुं चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय नाजि नरिंद, नंद सिद्धाचल मंरुण ॥ जय जय
प्रथम जिणंद चंद, जव दुःख विहंरुण ॥ जय जय साधु सुरिंद विंद,
वंदिय परमेसर ॥ जय जय जगदानंद कंद, श्रीरिपज जिणेसर ॥
अमृततम जिन धर्मनो ए, दायक जगमें जाण ॥ तुज पद पंकज
प्रीति धर, निशिदिन नमत कढ्याण ॥ १ ॥ जं किंचि नामतिष्ठं
॥ शमोबुणं ॥ जावंति चेऽआइं० ॥ जावंत केवि साहू० ॥ शमो-
ऽर्हस्तिदाचार्योपाध्याय सर्व साधुन्यः तक कहि कैं श्री सिद्धाचल-
जीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३ए ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ सिद्धाचल गिरि ज्ञेयां रे ॥ धन्य ज्ञाग्य हमारां ॥ विम-
लाचलगिरि० ॥ एह गिरिवरनो महिमा महोदो, कहेतां न आवे
पारा ॥ रायण रूख समोसर्पा स्वामी, पूर्व नवाणूं वारा रे ॥ घ०
॥ १ ॥ मूलनायक श्रीआदिजिनेश्वर, चोमुख प्रतिमा चार ॥ अष्ट
द्रव्यसैं पूजो जावैं, समकित मूल आधारारे ॥ घ० ॥ २ ॥ दूर
देशांथी हुं इहां आयो, अवण सुनी गुण तोरा ॥ पतित उद्धारण
विरुद तुमारा, एह तीरथ जग सारा रे ॥ घ० ॥ ३ ॥ जाव
जक्तिसैं प्रज्जु गुण गावे, अपना जन्म सुधारा ॥ जात्रा करि
जविजन शुज जावैं, नरक तिर्यंच गति वारा रे ॥ घ० ॥ ४ ॥
संवत अढारे ज्ञ्यासी मास आपाढे, वदि आवम जेमवारा ॥

प्रभुके चरण परतापसिंदमें, कमारतन प्रभु प्यारा रे ॥ ध० ॥ ५॥

॥ पीठें जयवीराराय० ॥ वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नबू० ॥ कहिकें
एक नवकारकाकाजस्तग करी ॥ पारिकें नमोर्द्धस्ति० ॥ कहिकें ॥

॥ शेत्रुंजगिरि नमिये, रुपन्नदेव पुंररीक ॥ शुज तपनो
महिमा, सुणि गुरु मुख निरवीक ॥ शुद्ध मन उपवासें, विधिगुं
चैत्यवंदनांक ॥ करिये जिन आगल, टाली वचन अलीक ॥ १ ॥
इति ॥ ४१ ॥ पीठें फुरसद होवे तो पन्निखेहण करे, सो सिखते हैं ॥

॥ अथ पहिलेहण ॥

॥ खमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्तह जगवन् ॥ पन्नि-
खेहण संदिस्ताउं ? गुरु कहे, संदिस्ताएह ॥ बीजे खमासमणें ॥
॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पन्निखेहण करुं ? गुरु कहे, करेह ॥
पीठें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पन्निखेहे ॥ इमहीज दोइ खमासमणे
अंग पन्निखेहण संदिस्ताउं ॥ अंगपन्निखेहण करुं, कहीके धोतिपुं
कणदोरो पन्निखेहि कें ॥ खमासमण देई इच्छाकार जगवन् पताउ
करी पन्निखेहण पन्निखेहावो जी. एम कही ॥ थापनाचार्य
पन्निखेह रखे, अने जो गुर्वादिक थापनाचार्य पन्निखेहे, तो
पण खमासमण देई आग्या मागे, पीठें खमासमण देई
॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती पन्निखेहुं ? गुरु कहे पन्निखेहेह
॥ पीठें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पन्निखेहि ॥ दोय खमासमणें ॥ इ-
च्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उहि पन्निखेहण संदिस्ताउं ॥ उही पन्नि-
खेहण करुं ॥ एम कही कंवल वस्त्रादि पन्निखेहे ॥ पीठें पोपध-
शाला प्रमार्जी काजों, विधिगुं परठवी खमासमण देई इरियावही
पन्निक्खे ॥ ए मूलविधिं जाणवो ॥ इतनी स्थिरता न होवे, तोजी
दृष्टिपन्निखेहण तो अवश्य करणी ॥ अवजी प्राये एही करते दि-
खते हैं ॥

॥ अब सामायिक पारणेका विधि कहे हैं ॥

॥ पीठें सामायिक पारे ॥ एक खमासमण देई ॥ मुहपत्ती
पन्निसेहे ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक
पारुं ॥ गुरु कहे पुणोवि कायधो, पीठें यथाशक्ति कही बली खमा-
समण देई कहे. इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पारेमि ॥
गुरु कहे आचारो न मोत्तवो ॥ पीठें तहत्ति कही, अर्द्ध नमि ऊजो
थको, तीन नवकार गुणी नीचो गोमालीयें बेसी मस्तक नमावी
॥ जयवं दससज्जहो ॥ इत्यादिगाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ भयवं दससज्जहो ॥

॥ जयवं दससज्जहो, सुदंसणो थूलिज्जद वयरोय ॥ सफली
कयगिहचाया, साहू एहं विहा हुंती ॥ १ ॥ साहूण वंदणेशं, ना-
संइ पावं असंकिंया जावा ॥ फासु अदाणे निज्जर, अज्जिगहो
नाण माईणं ॥ २ ॥ उज्जमज्जो मूदमणो, कित्ति य मित्तं पि संजरइ
जीवो ॥ जं च न संजरामि अहं, मिच्छामि उक्कं तस्स ॥ ३ ॥
जं जं मणेण चित्ति य, मसुहं वायाइ जासियं किंचि ॥ असुहं काएण
कयं, मिच्छामि उक्कं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहतं, वियस्स
जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बोधवो, सेसो संसारफलहेऊ
॥ ५ ॥ सामायिक विधे लीधुं विधे कीधुं, विधि करतां अविधि आशा-
तना लगी होय, दश मनका, दश वचनका, बारह कायाका, बत्तीस
दूषणमांहि जो कोइ दूषणलगा होय, सो सहु मन कर, वचन
कर, कायार्ये करी मिच्छामि उक्कं ॥ इति सामायिक पोसह
पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिलां सामायिक पारी कें, पीठें पन्निसेहण करे.
इहां यथायोग्य अवसरें गुरुकूं मुहराइ पूठै ॥

दूसरा खमासमण देवे, श्रीजिनपति सूरिजीकी सामाचारीमें
ऐसे कह्यो हे ॥ इति सामायिक पारणविधि ॥

॥ અથ સંધ્યાકાલ સામાયિક વિધિર્લિખ્યતે ॥

॥ પિઠલે પહોરે ધર્મશાસ્ત્ર પ્રમાર્જી વસ્ત્રાદિક પન્નિલેહે, જો
 અવેરો આયો હુવે, તો દૃષ્ટિપન્નિલેહણ કરે ॥ પીઠેં ગુરુ આર્ગે અથવા
 થાપનાચાર્યજી આર્ગે આવી જૂમિ પ્રમાર્જી આસણ વામ પાસ મૂકી
 સ્વમાસમણ દેઈ કહે ॥ ઇચ્છાકાં ॥ સં૦ ॥ જ૦ ॥ સામાયિક
 મુહપત્તી પન્નિલેહું ? ગુરુ કહે પન્નિલેહેહ, ઇચ્છં કહી ॥ ફિર સ્વમાસ-
 મણ દેઈ મુહપત્તી પન્નિલેહે, ॥ પીઠેં સ્વમાસમણ દેઈ ॥ ઇચ્છાકાં ॥
 સં૦ ॥ જ૦ ॥ સામાયિક સંદિસ્તાનં ? ગુરુ કહે સંદિસ્તાવેહ ॥
 ફિર સ્વમાસમણ દેઈ ઇચ્છાકાં ॥ સં૦ ॥ જ૦ ॥ સામાયિક ઘાઠં ?
 ગુરુ કહે, ઘાણહ ॥ ઇચ્છં કહી ફિર સ્વમાસમણ દેઈ ॥ અર્ધાવનત
 થઈ ત્રીન નવકાર ગુણી કહે, ઇચ્છકાર જગવન્ ! પસાન
 કરી સામાયિક દંરુક ઝચરાવો જી ॥ ગુરુ કહે ઝચરાવેમો ॥
 પીઠેં કરેમિ જંતે સામાય્યં ॥ ઇત્યાદિ સામાયિક સૂત્ર ગુરુ વચન
 અનુજાપણ કરતો થકો ત્રીન વાર ઝચરી સ્વમાસમણ દેઈ ॥
 ઇચ્છાકાં ॥ સં૦ ॥ જ૦ ॥ ઇરિયાવહિયં પન્નિક્કમામિ ? ગુરુ કહે
 પન્નિક્કમેહ ॥ પીઠેં ઇચ્છં કહી ॥ ઇચ્છામિ પન્નિક્કમિત્તં ॥ ઇરિયાવ-
 હિયાણ ઇત્યાદિ પાઠતેં ઇરિયાવહિયં પન્નિક્કમી ॥ એક લોગસ્તકા
 કાનસ્તગ્ગ કરી, પામો અરિહંતાણં કહી, કાનસ્તગ્ગ પારી મલેં
 પ્રગટ લોગસ્ત કહી, નીચેં વેઠ કેં મુહપત્તી પન્નિલેહિ વાંદણાં દેઈ
 કહે, ઇચ્છાકાર જગવન્ ! પસાન કરી પચ્ચસ્કાણ કરાવોજી, પીઠેં
 ગુરુ, દિવસ ચરિમ પચ્ચસ્કાણ કરાવે ॥ ગુરુ અજારેં થાપનાચાર્ય
 સમક્કેં અથવા સ્વમુલેં, અથવા વેદેરા સાધર્મીં મુલેં પચ્ચસ્કે ॥ અને
 જો તિવિહાર ઉપવાસ કીધો હુવે, તો મુહપત્તી પન્નિલેહિ પચ્ચસ્કાણ
 કરે ॥ વાંદણાં ન દેવે, અને જો ચત્તવિહાર ઉપવાસ હુવે, તો પચ્ચ-
 સ્કાણ કરવું ઠે નહી ॥ તે માટેં મુહપત્તી નાઈ પન્નિલેહે ॥ એ
 વિસ્તાર વિધિ હૈ ॥ પીઠેં એક સ્વમાસમણ દેઈ ઇચ્છાકાં ॥ સં૦ ॥

ज० ॥ सिद्धाय संदिस्तानं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह. पीठें इंच कही
 वली खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिद्धाय करुं ?
 गुरु कहे करेह ॥ पीठें इंच कही ॥ खमासमण देई ॥ उन्नो थको
 मधुर स्वरें आठ नवकारनी सिद्धाय करे ॥ पीठें खमासमण देई
 ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बेसणुं संदिस्तानं ? गुरु० संदिस्तावेह
 ॥ फिर खमासमण देई इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बेसणुं गांठ ?
 गुरु कहे, गाएह ॥ पीठें इंच कही जो शीत काळादि हुवे तो
 खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पांगरणुं संदिस्तानं ?
 गुरु कहे, संदिस्तावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥
 ज० ॥ पांगरणुं पन्निघातं ? गुरु कहे पन्निघाएह ॥ पीठें इंच
 कही शुभ ध्यान करे ॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

॥ अथ देवसि पन्निक्कमण विधिर्लिख्यते ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥
 चैत्यवंदन करुं ? गुरु कहे करेह, पीठें इंच कही ॥ जय तिहुअण कहे
 ॥ जिसमें परकी तथा चत्रमासी तथा संवच्चरीके रोज तीस गाथा
 कहेनी ॥ और दिनोमें तो पांच गाथा पढ़ेलेकी, और दोय गाथा
 पिढानीकी, एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति देखणेमें आवे हैं.
 अब जयतिहुअण लिखते हैं ॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्क जय जिण धनं तरि, जय
 तिहुअण कल्लाणकोस डुरिअकरि केसरि ॥ तिहुअण जण अविशं-
 घियाण जुवणत्तय सामिअ, कुणसुसुदाइं जिणेस पास थंजणय
 पुरिअ ॥ १ ॥ तइं समरंत लदंति ऊत्तिवर पुत्त कलत्तहिं, धण सुवन्न
 हिरण पुण जणजुंजहिरळ्ळहि ॥ पिस्सहि मुक्क असंखसुक्क तुइ
 पासपसाइण, इय तिहुअण वरकप्परुक्क सुक्कहि कुण मदजिण ॥
 २ ॥ जरजळार परिजुण वणणहुठ सुकुळिण, चक्कुस्कीणखणखुण

निरसद्विभ्रसूत्रिण ॥ तद् निण सरणरसायणेण बहु दुंति पुणसक,
 जय धसंतरि पास मदवि सुहुं रोगदरो जव ॥ ३ ॥ विज्ञाजोइसं
 मंततंतसिद्धि अयत्तिण, जुवणभुअ अविद सिद्धि सिद्धि तुह
 नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तज्जवि जण होइ पवित्तन, तं ति-
 दुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तन ॥ ४ ॥ खुद पवत्तइ मंत
 तंत जंताइं विसुत्तइ, चरधिरगरलगहुग्गखग्गरिन्नवग्गविगंजइ ॥
 दुव्विपसन्न अणत्त घत्त निघारइ दय करि, डुरिअई हरत्त सुपासदेव
 डुरिअकरिकेसरि ॥ ५ ॥ तुह आणाअंजेइ जीमदप्पुहर सुरवर,
 रक्कस जरक्क फण्हिंद विंद चोरानलजलहर ॥ जलथलचारिरत्तइखुह
 पसुनोइणि जोइअ, इयत्तिदुअणअविलंघिआण जय पास सुसामिअ
 ॥ ६ ॥ पव्विअ अत्त अणत्तहिन्नत्तिप्रर निप्रर, रोमंवं चिअचारु-
 काय किल्लरनरसुरवर ॥ जसुत्तेवहिं कमकमलजुअल पक्कातिअ
 कलिमलु, सो जुवणत्तयसामि पास मदमदत्त रिन्नवलु ॥ ७ ॥ जय
 जोइअमणकमलजसलजय पंजरकुंजर, तिहुअणजण आणंदचंद
 जुवणत्तयदिणयर ॥ जय मइमेइणि वारिवाइ जयजंतुपिआमइ,
 थंजणयविअ पासनाइ नाइत्तणकुणमइ ॥ ८ ॥ बहु विहवणुअवणु
 सुणु वसिन्न वपसहि, मुक्कधम्मुकामत्तकाम नर नियनियसत्तहि ॥
 जं ज्ञायइ बहु दरिसणत्त बहु नाम पत्तिइत्त, सो जोइ अमण
 कमलजसलसुइ पास पवइत्त ॥ ९ ॥ जयविम्वल रणअणिरदसण
 थरहरिअ तरीरय, तरत्तिअ नयणविसणुसुणुगगिरगिरकरुणय ॥
 तइंसदसत्तिसरंति दुंति नरनासिअ गुरुदर, मदविज्ञाविसज्जसइ पास
 जय पंजरकुंजर ॥ १० ॥ यइंयासविविअसंतनिचयत्तंतपवित्तिअ,
 वाइपवाइपवूढरूढ उददाइसुपुलइय ॥ मण्णूहिंमण्णसत्तण पुणअ-
 प्पाणंसुरनर, इय तिहुअण आणंदचद जय पास जिणेसर ॥ ११ ॥
 तुह कल्लाणमहेसुपुंठंकारवपिद्धिअ, वल्लरमल्लमदल्लजत्तिसुरवरगं-
 जुद्धिअ ॥ इल्लुप्फलिअ पवत्तयंति जवणेहिमहूसव, इय तिहुअण

आर्षंदचंद जयः पाससुहुप्रव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनिय-
 रविदुरिअ तमपदयर, दंसिअ सबसपयवंचिठरिअ पदान्नर ॥ क-
 लिकलुसिअ जण धूअलोपलोपणदअगोयर, तिमिरइं निरुहर
 पासनाइ नुवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिससित्त
 माणव मइ मेइणि, अवरावरसुहुमन्नवोइ कंदलदलइरेणि ॥ जायइ-
 फलन्नरन्नरिय हरिय उहदाइ अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाइ
 दिसिपास मइं मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणवल्लीउल्लूरि-
 यउहवणुं, दाविअसगपवग्गमग्ग डग्गइग्ग वारणुं ॥ जय जंतुइ-
 जणएणतुल्लजंजणियहियावहु, रम्म धम्म सो जयन्न पास जय
 जंतु पिआमइ ॥ १५ ॥ नूवणारणनिवास दरिअपरदरिअणदेवय,
 जोइणिपूअणखित्तवाल खुदासुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ
 अविंसंठलचिण्हिं, इय तिहुअण वणसिंद पास पावाइ पणासहिं
 ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयण कर रंजिअ नदयल, फलिणी
 कंदलदलतमाल निळुप्पलसामल ॥ कमगासुर नवसग्गवग्ग संत-
 ग्गअगंजिअ, जय पच्चत्तजिणेस पास थंजणय पुरिअ ॥ १७ ॥
 मइमणतरलपमाणेय वायाविविसंठलु, नियतणुरवि अविणयसहाव
 आलसविहिलंघलु ॥ तुहमाइप्पमाणदेव कारुणपयत्तठ, इयम-
 इमाअवदीरपासपालहिविलयंतठ ॥ १८ ॥ किंकिंकिप्पिअणेषकलु-
 णकिंकिंयनलंपिअ, किं यनचिळिअकिंवेवदीणयमविलंघिअ ॥ फा-
 सुनकियनिप्पल्लल्लुअहोहिंउदत्तइं, तद्विन पत्तठताण किंपि पइं
 पदु परिचत्तइं ॥ १९ ॥ तुहुं सामिइ तुहुं माय चप्प तुहुं
 मित्तपियंकुरु, तुहुं गइ तुहुं मइ तुंहिअ ताण तुहुं गुरु त्वेमंकुरु
 ॥ इउं उदन्नरन्नारेअवराउ राउलनिअग्गउ, लीणउ तुह कमक-
 मल सरणजिणपासहि चंगठ ॥ २० ॥ पइंकिविक्कयनीरोप-
 लोपकिविपावियसुदसय, किविमइंमंतमदंतकेवि किविसादियसि-
 वप्प ॥ किवि नंजिअरिअवग्गकेविजसयवल्लिअ नूअल, मइं अयदी-

रदिकेणपास सरणागयवञ्चल ॥ २१ ॥ पञ्चवयारनिरीहनाहनिप्पस
 पयोअण, तुहुं जिण पासपरोवयार करुणिकपरायण ॥ सत्तुमित्त सम
 चित्तवित्तिनयनिंदअसममण, मा अवहीरिअजुग्गत्तविमइं पासनिरं-
 जण ॥ २२ ॥ इत्तं बहुविहउदत्तत्तत्तुहुं उदनासणपरु, इत्तं
 सुयणदकरुणिककाण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ इत्तंजिण पासअतामि-
 सालु तुहुं तिहुअणसामिअ, जं अवहीरहि मइं ऊखंतइय पासन
 सोदिअ ॥ २३ ॥ जुग्गाजुग्ग विजागनादनहुजोअणतुहसम, जव-
 णवयारसु दावजाव करुणारसत्तम ॥ समवित्तमह किंयण नएइ
 नुविदाहुसमंतत्त, इय उद्वंभव पासनाह मइं पास शुणंतत्त ॥
 २४ ॥ नयदीणददीणयमुएवि अणविकिविजुग्गय, जं जोइयत्तव-
 याकरइत्तवयारसमुक्काय ॥ दीणद दीणनिहीणजेणतुहनाहिण-
 चत्तत्त, तो जुग्गत्तअदमेव पासपालहिमइं चंगत्त ॥ २५ ॥ अदअ-
 णविजुग्गयवित्तेत्तकिविमसहि दीणद, जं पासवित्तवयाकरइ
 तुहनाह समगह ॥ सुच्चिअकिल कट्ठाणुजेण जिण तुम्ह पत्तीयद,
 किं अणुण तंचेव देव मामइंअवहीरद ॥ २६ ॥ तुह पत्तण नहु
 दोइ विदल जिणजाणत्त किं पुण, इत्तं उस्सित्त निरुत्तत्तत्तत्तुहु
 उत्तुपमण ॥ तं मसत्त निमित्तेण एण एत्तविक्का लप्पइ, सच्चं जं
 नुत्तिकयवत्तेण किं तंवरु पच्चइ ॥ २७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह
 मइं अप्पपयासित्त, किक्कात्त जं नियरुवत्तरिसुत्तमुणुंवहुं जंपित्त ॥
 अणणु ण जिणजगत्तुहसमोविदस्सिणदयात्तत्त, जइअवगिहासि
 तुंहिजअददकिंहोइसदयात्तत्त ॥ २८ ॥ जइ तुहरुविणकिणविपेअ-
 पाइणवेत्तंवित्त, तत्तजाणुंजिणपास तुम्ह इत्तंअंगीकरिअत्त ॥ इयम-
 हइअ जं न दोइ सातुदत्तदावण, रत्तंतद नियकित्तिणे य जु-
 क्कइअवहीरणा ॥ २९ ॥ एवमहारिदजत्तदेवइयन्दवणामहूत्तत्त, जं
 अणविय गुणगदण तुम्ह मुणिजणअणिसिक्कत्त ॥ इय मइं पत्ति-
 यसुपासनादर्थंजणयपुरिअ, इय मुणिवरत्तिरि अजयदेव विस्सवह

आणिंदिश्र ॥ १० ॥ इति श्रीस्तंजनकतीर्थराजश्रीपार्श्वनाथस्त-
वनम् ॥

पीठे जय महायस कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभः ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महाज्ञाग जय चितिय
रुद्र फलय ॥ जय समञ्च परमञ्जजाणय, जय जय गुरु गिरिम
गुरु ॥ जय दुद्ध सत्ताण ताणय, थंजणयविय पात्तजिण ॥ ज-
वियद जीम जवजु, जय अवणं ताणं तं गुण ॥ तुज्जति संज
नमोजु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीठे शकस्तय कह के खना दो कर अरिहंत घेइयाणं०
॥ करेमि काठस्तगं थंदणयत्तिआए० ॥ अन्नशू० ॥ इयादि पाठ
कह के काठस्तगमादे एक नवकार चितवी एक आयाठ काठ-
स्तग पारी नमोऽर्द्धस्तुतिदा० ॥ कही एक गाथा स्तुति कहे, सो
लिखते हैं

॥ अथ महावीरजिनस्तुति प्रारंभः ॥

॥ मूरति मन मोहन, कंथन कोमल काय ॥ तिहारथ
नंदन, प्रियालादेवी समाप ॥ मृगनायक संगन, सात हाथ तनु
मान ॥ दिनदिन सुख दायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥

॥ ए स्तुति एक आवक कहे. अरु दूसरे आवक सय काठ-
स्तगमें रहे यहे गुने, पीठे पामो अरिहंताणं कह के काठस्तग
पारे, इतीतरे आगे पण स्तुतिकी पारो गाथामें जान लेना.

॥ पीठे सोगम कह कर सबजोए अरिहंत घेइयाणं थंद-
यति० ॥ अन्नशू० ॥ कही के एह नवकारका काठस्तग कां,
रि के उक्त स्तुतिकी दूसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ मुर नर विह्व, वेदित यह अरविंद ॥ कानित नर
अतिनव सुनक कंद ॥ जवियजने तारे, अवदण राम नि;

शिदीस ॥ चोवीशे जिनवर, प्रणमं विशवा वीस ॥ यह ॥ दूसरी
गाथा कहि कैं कानुस्सग पारे. पीठें पुस्करवरदी० वंदणवत्तिआए०
अन्नजू० कहि कैं, एक नवकारका कानुस्सग कर कैं, पारि कैं उक्त
स्तुतिकी तीसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अरथें करि आगम, ज्ञाख्या श्रीजगवंत ॥ गणधरने
गूढपा, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पण महिमां, कहि न
शके एकंत ॥ समरुं सुखसायर, मन शुद्ध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥
यह गाथा कहि कैं सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ वेयावच्चगराणं अन्नजू० ॥
कही कानुस्सग पारी उक्त स्तुतिकी चौथी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सिद्धाधिकादेवी, चारे विघन विशेष ॥ सहु संकट घूरे,
पूरे आश अशेष ॥ अहोनिश कर जोनी, सेवे सुर नर इंद ॥ जंपे
गुण गण इम, श्रीजिनलज्ज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति महावीरजिन
स्तुतिः ॥ यह चौथी स्तुति कहिके बैठ कैं नमोज्ञाणं कहे, पीठें एक
खमासमण देई कैं श्रीआचार्य मिश्र दूसरा खमासमण बिये. प ठैं
श्रीउपाध्यायजी मिश्र तीसरा खमासमणदे कर श्रीवर्तमान आ-
चार्यजीका नाम ले कैं मिश्र चौथे खमासमणमें सर्व साधुजीमिश्र
इसी तरे कह कर गोमालीयें बैठ कैं मस्तक नमावी सधस्तवि
देवसिय० इत्यादि कह कर तस्त मिश्रामि बुद्धं कहे, परंतु 'इ-
च्छाकारेण संदिस्सह इच्छं' ए पद न कहे ॥

॥ पीठें खमे हो कर करेमि जंते सामाइयं० ॥ इच्छामि ठामि
कानुस्सगं जो मे देवसिन्न० ॥ तस्सुत्तरि० ॥ अन्नजू० ॥ इत्यादि
कहि कैं, आठ नवकारका कानुस्सग करे. कानुस्सगमाहे आज्ञा
चउ प्रहरमें ॥ इत्यादि पाठ मनमें चितवी, एमो अरिहंताणं कही
कानुस्सग पारि कैं प्रगट लोगस्त कहे ॥

॥ पीठें संमाता प्रमार्जित पूर्वक बैठ कें तीसरे आवश्यक
 सूत्र वांदणां मुहपत्ती पन्निहें ? गुरु कहे पन्निहेंदेह. पीठें मुह-
 पत्ती पन्निहें कें वांदणां देवे. पीठें अवग्रहमादिज ज्ञो यको
 इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ देवसियं आलोचं, एता कहे. तब गुरु
 कहे आलोएह. पीठें इच्छं आलोएमि० ॥ यह पाठ कहे कें अति-
 चार आलोवे. पीठें सद्यस्तवि देवसियं इत्यादिथी मांनाने इच्छा-
 कारेण संदिस्तह पर्यंत कहे, तब गुरु पन्निहमह. यह पाठ कहे ॥

॥ पीठें इच्छं तस्त मिच्छामि उक्कमं कहि कें संमाता प्रमार्जित
 प्रमार्जित जूमियें आसन पर बैठ कें जगवन् ! सूत्र जणुं एता
 कहे. तब गुरु कहे जणोह. पीठें इच्छं कही तीन नवकार गणी,
 तीन करेमि जंतें जणोने इच्छामि पन्निहमिजं जो मे देवसित
 इत्यादि कही एक आवश्यक वंदित्तु कहे. दूसरा सब सुने. पीठें खना
 दो कर अमुवित्तमि आरादणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो
 वांदणां देवे, अरु अवग्रहमादिज खना हुवा इच्छा० ॥ सं० ॥ ज०
 ॥ अमुवित्तमि अग्रितर देवसियं खामेजं ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीठें इच्छं खामेमि देवसियं कहि कें गोमालीयें बैठ कें
 याम हाथे मुहपत्ती मुखें धर कें दक्षिण हाथ गुरु सन्मुख कर कें
 सर्व पाठ कहे. पीठें विपिसेंती दो वांदणां दे कर आपरिय तव-
 थाप इत्यादि अण गाथा कहिकें करेमि जंतें सामादयं इच्छामि
 जामि काउस्तगं इत्यादि कही आरित्र शुद्धि निमित्तें करेमि काउ-
 स्तगं अग्रशृ० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोमस्तका
 काउस्तग करी पारि कें पीठें दर्शनशुद्धि निमित्तें अग्र लोमस्त
 कही सद्यलोए अरिहंत चेइयाणं० ॥ वंदणावनि० अग्रशृ० ॥ कहि
 कें एक लोमस्तका काउस्तग करी पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तें
 कहे कहि कें सुयस्म जगवत्० ॥ वंदणावनि० ॥ अग्रशृ०

॥ कहि कैं एक सोःस्तका कान्तस्तग करे. पीवैं पारि कैं सिद्धाणं
 बुद्धाणं० कहि कैं वेयावच्चगराणं न कहे. पीवैं सुयदेवयाए
 करेमि कान्तस्तगं अन्नदू० ॥ कही एक नवकारनो कान्तस्तग करे.
 पीवैं गुरुका योग न होवै तो एक श्रावक कान्तस्तग पारिकैं एमों
 अर्हस्तिद्धा० कहि कैं श्रुत देवताकी स्तुति कहे. गुरु हुवे तो गुरु
 कहे. और दूजा सर्व स्तुति सुण कैं कान्तस्तग पारे. अब श्रुतदे
 वताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णाशालिनी दयाद्, द्वादशांगो जिनोन्नवा ॥ श्रुतदेवी
 सदा मध्य, मशेषश्रुतसंपदम् ॥ १ ॥ पीवैं स्तुतदेवयाए, करेमि
 कान्तस्तगं० ॥ अन्नदू० ॥ कहि कैं, एक नवकार चिंतवी पूर्वजी
 परें क्षेत्रदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते है.

॥ अथ क्षेत्रदेवताको स्तुति ॥

॥ यासां क्षेत्रगताः संति, साधवः श्रावकादयः ॥ जिनाह्वा
 साधयंतस्ता, रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीवैं खना हुवा एक नवकार कही, संताता प्रमार्जि
 सकनूवै कैं बडे श्रावककी मुहपत्ता पमिलेहुं? गुरु कहे पमिलेदेह.

॥ पीवैं मुहपत्ती पमिलेही विधिगुं दो वादणां देइ हैं वर-
 कनक कहे, सो लिखते है.

॥ अथ वरकनक प्रारंभः ॥

॥ हैं वरकलय संख विद्रुम, मरगय घण सन्निहं विगय
 मोहं ॥ सितरि सयं जिणाणं, सवामर पूइयं वंदे ॥ स्वाहा ॥ १ ॥
 हैं जवणवय वाण मंतर, जोइसबासविमाण वासीय ॥ जे केवि
 छुवैवा, ते सबे जवसमंतु मे स्वाहा ॥ २ ॥ पञ्चस्काण नहिं लिया
 होय तो करे ॥ सामायिक जोइसओ पम्किमणां, वादणां, काष्ठ-

स्सग, पञ्चकाण, उ आवश्यक साधतां कानो, मात्रा, उंगे अ
धिको अकर उंचो नीचो कह्यो होय, ते सर्वे मन, वचन, कायार्थ
करी मिच्छामि लुक्कं ॥ इच्छामो अणुसद्धिं ॥ कही वैठे. पं. ठे गुरु
एक-स्तुति कह्या पीठे श्रावक समस्त, मस्तकें अंजलि करिकें एमो
खमासमणाणं ॥ एमोऽर्हत्सिद्धा ॥ कही ॥ एमोऽस्तु वर्द्धमानाय ॥
इत्यादि तीन स्तुति कहे. श्राविका एमो खमासमणाणं, कही सं-
सारदावाकी स्तुति कहे.

॥ अथ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥ तज्जयावा.
समोकाय, परोकाय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या;
ज्जायुः क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं
संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कपायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, कं-
रोतियो जैनमुखांबुदोजतः ॥ स शुक्रमासोन्नववृष्टि सन्निजो, ददातु
तुष्टिं मयि विस्तरोगिराम् ॥ ३ ॥ श्वसितसुरज्जिगंधा लोढनृङ्गो कुरङ्गं,
मुखश शिनमजत्वं विव्रती या विज्जर्ति ॥ विकच कमलमूषैः साऽ
स्त्वधित्यप्रज्ञावा, सकलसुखविधात्री प्राणजाजां श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥ इति ॥
॥ यह तीन गाथा कहि कें पीठे एमोवूणं० कहं कें. एक
श्रावक खमासमण देई कहे:-इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ स्तवन
जणुं ? दूसरा खमासमण देई कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ स्त-
वनजणुं स्तवन सांजलुं ? गुरु कहे, जणोह सांजलेह. पीठे आसन
पर वैठ कें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहि कें वमो स्तवन कहे, सो लि-
खते हैं ॥

॥ अथ श्री चित्तामणि पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ जविका श्रीजिनविंव जुद्धारो, आतम परम आधारो रे

॥ श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिन सारखी जाणो, न करो शंका

काई ॥ आगम वाणीने अनुसारें, राखो प्रीति सवाई रे ॥ ज०
 श्री० ॥ १ ॥ जे जिनविंव स्वरूप न जाणे, ते कहिये किम जाणे
 ॥ झूला तेह अज्ञाने जरिया, नहिं तिहां तत्त्व पिठाणे रे ॥ ज०
 ॥ श्री० ॥ २ ॥ अंबक आवक श्रेणिक राजा, रावणप्रमुख अनेक
 ॥ विविधपरें जिन जगति करंता, पाम्या धर्म विवेक रे ॥ ज० ॥
 श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु जगतें जोतां, होय निश्चय उप-
 गार ॥ परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आर्द्र कुमार रे ॥ ज०
 ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारें जलचर, ठे बहु जलधि
 मजार ॥ ते देखी बहुला मत्स्यादिक, पाम्या विरतिप्रकार रे ॥
 ज० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ पांचमा अंगें जिनप्रतिमानो, प्रगटपणें
 अधिकार ॥ सूरियाज सुर जिनवर पूज्या, राय पसेणी मजार
 रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ दशमें अंगें अहिंसा दाखी, जिन पूज्या
 जिनराज ॥ एहवा आगम अरथ मरोही, करिये केम अकाज रे
 ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ समकित्तपारी सतीय द्रौपदी, जिन
 पूज्या मन रंगें ॥ जो जो एहनो अरथ विचारी, ठे ज्ञाता अंगें रे
 ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ विजयसुरें जिम जिनवर पूजा, कीधी
 चित्त थिर राखी ॥ द्रव्य जाव विहुं जेदें कीनी, जीवाजिगम ते
 साखी रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें,
 कोइ शंका मति करजो ॥ जिनप्रतिमा देखी नित नवली, प्रेम
 घणो चित्त धरजो रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रभु
 पास पसायें, सरधा होजो सवाई ॥ श्रीजिनलज सुगुरु उपदेशें,
 श्रीजिनचंद्र सवाई रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति श्रीचिंता-
 मणि पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ पीठें तीन खमासमणें आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु वादी,
 अष्टाशक्तेसु कदनां, फेर खमासमणे ॥ इच्छाका ॥ सं० ॥ ज० ॥

देवसि पाय छित्त विगुहि निमित्तं काउस्तगं करुं? गुरु कहे, करेइ.
पीठें इछं कदि कें देवसि पाय छित्त विगुहि निमित्तं करेमि काउ-
स्तगं अन्नबू० ॥ कदि शोले नवकार अथवा चार लोगस्तका काउ-
स्तगं करे, पारी कें लोगस्त कहे.

॥ ॥ पीठें खमासमण दे कर इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ खु-
होवइव उमावणठं करेमि काउस्तगं ॥ अन्नबू० ॥ इत्यादि कही.
शोले नवकार अथवा चार लोगस्तका काउस्तगं करे, पारी कें
प्रगट लोगस्त कहे. पीठें खमासमण देई ॥ सज्जाय संदिस्ताउं फेर
खमासमण देई सज्जाय करुं? तीन नवकार गुणीजें. पीठें खमा-
समण देई कें ॥ इछा० ॥ सं० ॥ जगवन् चैत्यवंदन करुं जी ॥
ऐसा कह कर अंजणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हे ॥

॥ अथ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥ ॥

॥ श्रीसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंजने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्या-
जयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपितः ॥ संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिव
फलं स्फूर्जत्फणापह्नवः, पार्श्वः कल्पतरुः समे प्रथयतां नित्यं मनो-
वांछितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीराबल्लोशिरोमणिः ॥
पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रिये ॥ इति ॥

॥ पीठें नमोवृणसैं लेकें जयवीरराय सुधी कहे ॥ प
खमासमणपूर्वक मस्तक नमावी 'तिरि अंजणयद्वि पास सामिणो
इत्यादि दोय गाथा कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ श्रीथंभणयद्विपाससामिणो ॥

॥ श्री अंजणयद्विपाससामिणो सेस तिष्ठसामीणो ॥ ति
समुन्नय कार ॥ पं, सुरासुराणं च सबेसैं ॥ १ ॥ एस. महं सरण
काउस्तगं करे ॥ विक्कि सत्तीए ॥ जतीए गुण सुद्विस्त, संघस्त समुद
॥ २ ॥

॥ श्रीधनंजया पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि काञ्च-
स्तगं ॥ पीठें खेमे हो के वंदणव० ॥ अन्न० ॥ कही चार लोग-
स्तका काञ्चस्तग करि के पीठें पारी प्रगट लोगस्त कहो के ॥
श्रीखरतरगछ सिणगारहारजंगम युगप्रधान जट्टारक दादाजी श्री
जिनवत्त सूरिजी चारित्र चूनामणीजी आराधवा निमित्तं करेमि
काञ्चस्तगं ॥ अन्नवू० कहि के, एक लोगस्तका काञ्चस्तग करे,
पीठें प्रगट लोगस्त कह के

॥ श्रीखरतरगछ सिणगारहारजंगमयुग प्रधान जट्टारक दा-
दाजी श्रीजिन कुशल सूरिजी चारित्र चूनामणिजी आराधवा निमित्तं
करेमि काञ्चस्तगं ॥ अन्नवू० कहि के एक लोगस्तका काञ्चस्तग
करे, पीठें प्रगट लोगस्त कहि बैठ के भावो गोमो उंचो करि के
खमासंमण देई के, इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं जी.
ऐसे कहि के चैत्यवंदन करे.

॥ अथ चउकसाय ॥

॥ चउकसाय पन्निन्नून्नूण, डुऊय मयया बाण मुसुमूणा
॥ सरस्त पियंगु वन्नु गय गामिड, जयड पात जुवणत्तय सामिड
॥ १ ॥ जसु तणु कंति करुणपसिणिद्ध, सोहइ फणमणि किरणा
लिद्ध ॥ ननव जलहर तन्निन्नय लंठिय, सो जिणु पासु पयछय
वंठिय ॥ २ ॥

॥ अर्हन्ते। जगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आ-
चार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायकाः ॥ श्रीसिद्धांतसु-
पाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पंचैते परमेश्विनः प्रतिदिनं
कुर्वंतु वो मंगलम् ॥ १ ॥

॥ पीठें नमुनूणसैं ले के जयवीररायपर्यंत कहि के परकी,
चउन्मासी अरु संवछरीके रे

दिनोमें बड़ी शांति सुणे, सो लिखते हैं.

॥ अथ लघुशांतिस्तवः ॥

॥ शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः
शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ उमिति निश्चितव-
चते, नमो नमो जगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांति जिनाय जयवते,
यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेपकमहा, संपत्ति-
समन्विताय शस्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनमः शांतिदेवाय
॥ ३ ॥ सर्वामरसुतमूह, स्वामिकसंपूजिताय निजिताय ॥ ज्वन-
जनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघना-
शन, कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्ट ग्रह भूतपिशाच, शाकि-
नीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयोग-
कृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शांतिम्
॥ ६ ॥ जवतु नमस्ते जगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥
अपराजिते जगत्यां, जयतीति जयावहे जवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि
च संघस्य, जद्र कळ्याण भंगलप्रवदे ॥ साधूनां च सदा शिव, सुतु-
ष्टिपुष्टिप्रदे जीयां ॥ ८ ॥ जव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृति निर्वाणजननि !
सत्त्वानाम् ॥ अजय प्रदाननिरते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥
९ ॥ जक्तानां जन्तूनां, शुजावहे नित्यमुद्यते देवि ! ॥ सम्यग्दृ-
ष्टीनां दृति, रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां,
शांतिनतानां च जगति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कोर्त्ति यशो, वर्द्धिनि !
जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल विपविषधर, दुष्ट ग्रह राज
रोगरणजपतः ॥ राक्षस रिपुगण मारी, चोरेतिश्वापदादिघ्नाः ॥ १२ ॥
अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, करु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं
कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥ जग-
वति गुणवति शिवशांति, तुष्टि पुष्टिस्वस्तिह कुरु कुरु जनानाम् ॥

उमिति नमो नमो ह्रीं, ह्रीं हूं हः यः कः ह्रीं फट् फट् स्वाहा ॥ १४ ॥

एवं यन्नामाकर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां,
नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि दर्शित, मंत्रपद-
विदर्शितः स्तवः शांतेः ॥ सलिलादिजय विनाशी, शांत्यादिकरश्च
जक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति ज्ञावयति वा
यथायोग्यम् ॥ स हि शांतिपदं यायात्, सूरिः श्रीमान् देवश्च ॥ १७ ॥
उपसर्गाः कथं यांति, विद्यंते विघ्नबल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति,
पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण
कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १९ ॥ इति ॥

॥ पीठें चीराकका श्रग्रवा बीजलीका चांदणा पद्मा होय तो
इरियावहि० तस्सुत्तरी० अन्नहू० कहि कें, एक लोगस्तका कान्त-
स्तग करे, पं ठैं प्रगट लोगस्त कह्यो पूर्वलो परें सामायिक पारे,
पीठें एक स्तवन दादाजोको कहे ॥ इति देवसी पम्किमण
विधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्जसमगौरी ॥
कमले स्थिता जगवता, वदतु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥ १ ॥ ज्ञाना-
दिगुणयुतानां, स्वाध्यायध्यानसंयमरतानाम् ॥ विदधातु न्यूनदेवी,
शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः
साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, नूयान्नः सुखदायिनी ॥
३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुतिः ॥

॥ कल्याणकमला गेह, नीलेदेहं महासहं ॥ नवखेमाजिघं
पार्श्वे, सदा ध्यायामि मानसे ॥

॥ अथ छुटक चेत्यवन्दनस्तुतिलिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

॥ तकलकुशलवह्नी, पुष्करावर्त्तमेधो, डुरिततिमिरज्जानुः,
कल्पवृक्षोपमानः ॥ जवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, त जवतु
सततं वः, श्रेयसे श्रीपार्श्वदेवः ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन० ॥

॥ अथ जिनस्तुतिः ॥

॥ दर्शनादुरितध्वंसी, वंदनादिष्ठितप्रदः ॥ पूजानात्पूरकः
श्रीणां, जिन साक्षात्सुरद्रुमः ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुतिः ॥

॥ सुवर्णवर्णं गजराजगामिनं, प्रलंबबाहुं सुविशाललोचनम्
॥ नरामोदकैः स्तुतपादपंकजं, नमामि ज्ञप्त्या रूपज्ञं जिनोत्तमम् ॥
३ ॥ इति आदिजिनस्तुतिः

॥ अथ शांतिजिन स्तुतिः ॥

॥ सोलम जिनवर शांतिनाथ, सेवो शिर नामी ॥ कंचन
वरण शरीर कांपि, अतिशय अजिरामी ॥ अचिरा अंगज विश्व-
सेन, नरेपति कुलचंद ॥ मृगलंठन धर पद कमल, सेवे सुरनरवृंद
॥ जुगमां अमृत जेहवी ए, जास अखंभित आण ॥ एक मनं
आराधतां, लदिये कोमि कळ्याण ॥ ४ ॥ श्रीशांतिनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुतिः ॥

॥ प्रह सम प्रणमुं नेमिनाथ, जिनवर जयवंत ॥ यादव-
कुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्रविजय शिवा देवी
ज्ञास, मति सहित उदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति, सेहे
सुखकार ॥ गढ गिरनारें जिण लह्युं ए, अमृत पद अजिराम ॥
जास कमा कळ्याण मुनि, निशिदिन नमत कळ्याण ॥ ५ ॥ इति
श्रीनेमिनाथ०

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाद, नमियें मन रंग ॥ नील वरण
अश्वसेन नंद, निरमल निःशंक ॥ कामित पूरण कलप साख, वामा-
सुत सार ॥ श्रीगोमो पुर स्वामि नाम, जपियें निरधार ॥ त्रिजु-
वनपति त्रेवीशमो ए, अमृत सम जसु वाण ॥ ध्यान धरंतां
एहनुं, प्रगटे परम कढ्याण ॥ ६ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंदूं जगदाधार, शिव संपत्ति कारण ॥ जन्म जरा
मरणादि रूप, जव ताप निवारण ॥ श्रीसिद्धास्य तात मात,
त्रिशला तनुजात ॥ सोवन वरण शरीर वीर, त्रिजुवन विख्यात
॥ अमृतरूपे राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥ कृमाप्रमुख कढ्याण
मुणि, आपो करि सुपसाय ॥ ७ ॥ इति श्री महावीर ॥

॥ अथ पाक्षिकादि पंडिकमणविधिर्लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम वंदितु सृत्र पर्यंत दैवसिक पन्धिकमी ॥ १ ॥

खमासमण देई देवसी आलोश्यं पन्धिकंता ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥
ज० ॥ पक्षिय मुहपत्ती पन्धिकेहुं ? चउमासीएं चउम्मासियं मुह-
पत्ती, संवछरीये संवछरी मुहपत्ती पन्धिकेहुं ? एम कहे. पीठें गुरु
कहे, पन्धिकेहेह ॥ पीठें इछं कहे, दूजी खमासमण देई, मुहपत्ती
पन्धिकेही, वांदणां देई, तिहां पस्कीमें पस्को वइकंतो ॥ चउमासी
पन्दि० ॥ चउमासीउ वइकंतो संवछरीमें संवछरो वइकंतो. एम
यथायोगें कहे ॥ पीठें गुरु कहे. पुण्यवंतो देवसीने स्थानकें पा-
क्षिक ॥ चउमासिक सांवछरिक जणजो. ठीक जयणा करजो.
मधुर स्वरें पन्धिकमजो, खासे सो विवरा शुद्ध खासजो. मांनलमें
सावचेत रदेजो, पीठें सघलाही तदत्ति कहे ॥ पीठें छठी ॥
इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ संशुद्धा खामणेशं ॥ अघुब्धिनि अघि-

तर पस्त्रियं ॥ ३ ॥ स्वामेकं ? गुरु कहे, स्वामेदं ॥ पीठें मस्तके
 अंजलि करतो थको, इच्छं स्वामेमि पस्त्रियं ॥ ३ ॥ कहो, गोमालीयें
 वेसी मस्तक नमावी दक्षिण हाथ गुरु साहामो करा, मुहपत्ती
 मुखें देई ॥ पस्त्रियें पनरसङ्गं दिवसाणं पनरसङ्गं राईणं जं किंचि-
 अप्पत्तियं ॥ इत्यादि सर्व पाठ कहे. चउमासें चउङ्गं मासाणं अ-
 ण्गं परकाणं वीसोत्तरसो राईदियाणं जं किंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि
 कहे. संवच्चरीयें डुवालसङ्गं मासाणं चउवीसङ्गं परकाणं तिन्निसय-
 सडिराईदियाणं ॥ जं किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥ तेयारें गुरु
 पण मिच्छामि डुक्कहं कहे ॥ तिहां दोय साधु उचरता दुवे तो पा-
 खियें तीन, चउमासीयें पांच, संवच्चरीयें सात साधुने स्वमावे ॥
 ॥ पीठें उगी अवग्रहमांहि रह्यो कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥
 पस्त्रियं आलोवुं ? गुरु कहे आलोएद ॥ पीठें इच्छं आलोएमि, जो
 मे पस्त्रियं ॥ ३ ॥ अइयारोकन, इत्यादि मूत्र जणी ॥ संक्षेपे
 अथवा विस्तारें पाखी चउमासी संवच्चरी, अतिचार आलोवे, सो
 लिखते ह ॥

॥ अथ वृहदतिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिय, चरणंमि तवेय तहय विरियंमि ॥
 आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहाभणिओ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १,
 दर्शनाचार २, चारित्रार ३. तपाचार ४, वीर्याचार ५. एवं पांच
 विधि आचारमांहि जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूदम, वादर,
 जाणतां अणंजाणतां दुओ होई, ते सह मन, वचन, कायाइं करी
 मिच्छामि डुक्कहं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार ॥

॥ काले विणण बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्दवणे ॥ वंजण

अथ तदुभय, अष्टविद्वा नाण मायारो ॥ १ ॥ ज्ञानः—कालवेला-
माहि पढिउं गुणिउं नही, अकालें पढिउं, विनय हीन बहुमान
हीन उपधान होन श्री उपाध्यायकनें नही पढिउं, अथवा अनेरा-
कने पढिउं अनेरो गुरु कह्यो व्यंजन अर्थ तदुभय कूडो पढ्यो, देव
वांदणे पढिक्कमणे सिखाय करतां, पढतां, गुणतां, कूडो अक्षर काने
मात्रे अधिको ओछो आगल पाछल भण्यो, सूत्र अर्थ कूडा भण्यो,
भणीनें वोसायों, तपोधन तणे घर्मे काजो अण ऊवरे दांडो अण-
पढिलेही, वसती अणसोधी, असिखाई अणोझा कालवेलामाहि
दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो, योग वहां पखें भण्यो
ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणो, कवली, नवकरवाली, सांपडा
सांपडो वही दस्तरी ओलीया कागल प्रमुखप्रतें आशातना हई,
पग लागो थूंक लागो ओसासे मूक्यो कनें छतां आहार नांदार
कीधो, ज्ञानद्रव्य भक्षण भक्षण उपेक्षण कीधो, प्रज्ञापराधें विणाश्यो
विणसतो उवेख्यो, छती शकें सार संभाल न कीधी, ज्ञानवंत प्रतें
मछर व्ह्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोई प्रतें भणतां गुणतां
प्रदेष मत्सर अंतराय अपघात कीधो. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि-
ज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान. ए पांच ज्ञानतणी असहहणा
कीधी, कोई तोतडो बोवडो हस्यो, वितक्यों आपणा जाणपणा
तणो गर्व धितव्यो, अष्टविध ज्ञानाचार विषड्ड जिको अतिचार
पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म, बादर, जाणता, अजाणतां, हुवो होय, ते
सहु मन वचन कायाई करी मि० ॥

॥ दर्शनाचारना आठ अतिचार ॥

॥ निस्संकिय निक्कंसिअ, निवितिगिच्छा अमूढदिट्ठो अ ॥

उवचूह पिरीकरणे, वछल पभावणे अह ॥ १ ॥ देव गुरु धर्म तणे
विषे निःशंकपणो न कीधो, तथा एकांत निश्चय धर्यो नही,

भाल न कीधी, लहिणे देणे किणहीप्रतें लंघाव्युं, तेणें भूखे आपण जिम्या, अणगल पाणी वावरयुं, रुडे गल्युं नही, गलाव्युं नही, अणगल पाणी झीलयां लूगडां धोयां, इंधण अणसोव्युं जाल्युं. साप कानखजूरा सुलहला माकड जूआ गोगिंढा साहतां मूआं, दू-खव्यां, रुडे थानक न मूक्या, कोडी मकोडी उदेहो घीवेली कातरा चूडेली पतंगिया डेढकां अलसिया ईली कूति डांस मसा वगतरा माखी प्रमुख जे कोई जीव विणठा चांपिया दूहव्या माला हलावतां पंखी काग चिडकलानां इहां फूटां, अनेरा एकें-द्रियादिक जिके जीव विणठा चांप्या, दूहव्या, हालतां चालतां अनेरुं कांड काम काज करतां विध्वंसपणुं कीधुं. जीव रक्षा रुडे न कीधी, संसारो सूकव्यो, सुल्या धान तावडे दीधां, दलाव्यां, भरडाव्यां, खाटला तावडे झाटक्या, मूक्या, मूकाव्या, जीवाकुल भूमि लीपावी, वाशी गार राखी रखावी, दलणे खांडणे लीपणे रुडी जयणा न कीधी. आठम चउदशना नियम भांग्या, धूर्णी करावी ॥ पहिला प्राणातिपात व्रत विपइओ अनेरो० ॥ १ ॥

॥ वीजुं स्थूल मृपावाद विगणव्रतें पांच अतिचार ॥

॥ सहसा रहस्सदारे, मोसुवएसे य कूड लेहे य ॥ सहसा-त्कारः—किणहिक प्रतें अयुक्तो आल दीधो, किणहिक प्रतें एकांतें वात करतां देखी तुम्हें तो राजविरुद्ध चित्तवो छो. इत्यादिक कल्युं. स्वदार मंत्र भेद कीधो, अनेराई किणहीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो, किणहीनें कूडी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लिख्यो, कूडी सांख भरी, थापण मोसो कीधो. कन्या दोर गाय भूमि संबंधिया लेइणें देयणें व्यवसाय वाद वढावदि करता मोटकुं घूठ वोल्युं, हाथ पग भणी गाल दीधी, करडका मोड्या, अधर्म वचन वोल्यां ॥

मृपावाद व्रत विपइ० ॥

॥ त्रीजे अदत्तादानविरमण व्रतना पाच अतिचार ॥ तेना-
हडप्पजगे, घर बाहिर क्षेत्र खले पराई वस्तु अणमोकलावी लीधी,
दीधी, वावरी, चोरीनी वस्तु मोल लीधी, चोर धाडीत प्रते संखल
दीधुं, संकेत कहुं. विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो, नवा पुराणां सरस
विरस सजीव निर्जीव वस्तु तणा भेल संभेल कीधा, खोटे तोल
माने माप वहेस्यां, दाणचोरी कीधो, साटे लांच लीधी, माता
पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची जूदी गांठ कीधी, किणहीने लेखे
पलेखे भुलव्युं, पढी वस्तु ओलवी लीधी, त्रीजे अदत्तादान व्रत
विपइओ० ॥

॥ चोथे स्वदार संतोष मैथुनव्रते पांच अतिचार ॥ अपरि-
ग्गहिया इत्तर, अणंग वीवाह तिष्ठअणुरागे ॥ अपरिगृहीतागमन,
इत्तरपरिगृहितागमन. विधवा वेश्या स्त्री कुलाङ्गना स्वदार शोक-
तणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो, सराग वचन बोल्यां, आठम
चउदस अनेराई पर्व तिथि तणा नियम भांग्या, घरवरणां कीधां,
कराव्यां, अनुमोदीयां, कुविकल्प चिंतव्या, अनङ्गक्रीडा कीधो,
पराया विवाह जोड्या काम भोगतणेविषे तीव्राभिलाष कीधो,
कुस्वप्न लाधां, नट विट पुरुषां हांसुं कीधुं, चोथे मैथुन व्रत वि०

॥ पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रते पांच अतिचार ॥ धण धन खित्त
वडू ॥ धन धान्य क्षेत्र वस्तु रूप सुवर्ण कुप्प द्विपद चतुष्पद नव
परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्छा लगें संक्षेप न कीधो,
माता पिता पुत्र कलत्रादि तणे लेखें कीधो, परिग्रह परिमाण
लेई पळ्यो नही. पढी वीसारिओ, नियम वीसारिओ ॥ पांचमे
परिमाण व्रतविपइओ० ॥

॥ छठे दिग्विरमणव्रते पांच अतिचार ॥ गमणस्सय परि-
भाणे ॥ उर्द्धदिशे अधोदिशे तिर्थगदिशे जायवा आयवा तणो

कीधा कराव्या, तिलादिक संचीया, फागुण मास उपरांत राख्या,
कूकडा सूडा प्रमुख पोष्या, अनेकं जे कांई बहु सावद्य कठोर
कर्मादिक समाचर्यु ॥ सातमा भोगोपभोग व्रत विषइओ० ॥

॥ आठमा अनर्थ दंड विरमणव्रतना पांच अतिचार ॥ कं-
दप्पे कुकुइए० ॥ कदर्प लगे विटनी पेरें हास्य कुतूहल मुखादि अंग
कुचेष्टा कीधी, मूरखपणा लगे कुणहोने असंबद्ध वाक्य बोल्या,
खांडा कटारो कुसि कुहाडा रथ ऊखल मूसल अगन घरटी आदिक
सज करी मेल्या, माग्यां आप्यां, कणक वस्तु दोर लेवराव्यां, अ-
नेरो कांई पापोपदेश दीधो, अंधोल नाहण, दांतण, पगधोअण
पाणी तेल अधिक आण्यां, हींडोले हींच्या, राजकथा देशकथा
भक्तकथा स्त्रीकथा पराई वात कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां,
कर्कश वचन बोल्या, करडका मोड्या, संभेडा लाया, भेंसा सांड
कूकडा, मिंद श्वानादि जूझतां कलह करतां जोयां, खाधी लगे
अदेखाई चिंतवो माटो मीठुं कण कपासिया काजविण चांप्या,
तेह उपर बयठा, आले वनस्पति खुंदो, छास पाणी विरस तेल
गुल आम्लवेतरस बेरजादिक तणां भाजन उघाडां मूक्यां. ते
मांही कीडो कंथुआ माखी उंदर गिरोलो प्रमुख जोव विणठा, सूडा
प्रमुख जीव क्रीडा हेंतें बांधी राख्या, घणी निद्रा कीधी, राग द्वेष
लगे एकने रुद्धि परिवार वांछी एकने मृत्युहाणि विमासी आठमा
अनर्थ दंडव्रतवि० ॥

॥ नवमा सामायिकव्रतें पांच अतिचार ॥ तिविहे दुष्पणि-
हाणे सामायिक लीधे मन आहट दोहट चिंतव्युं, वचन सावद्य
बोल्यां, काय अण पडिलेहुं हलाव्युं, छती वेलाईं सामायिक न
लीधुं, सामायिक लई उघाडे मुख बोल्या, उंच आवी कीधी, चीज
रीवा तणी उजाही लागी. कण कपासोया माटो मीठुं नील फुल

हरिकायना संघट्ट हुआ, पुरुष तिर्यचना संघट्ट हुआ, तथा स्त्री तिर्यची आभडी, मुहपत्तोयो संघट्टी, सामायिक अण पूरउं पारिउं पारवुं वीसारिउं, नवमे सामायिक व्रतविषइयो० ॥

॥ दशमे देशावकाशिक व्रतें पांच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सदाणुवाइ खुवाणुवाइ वहिया पुग्गल स्केवे ॥ नियमित भूमिकामांहिबाहिर थकी कांइ अणाव्युं, आप कन्हाथी वाहिर मोकल्या, साद करी रूप देखाडी कांकरी नाखी आपणपणुंछतुं जणाव्युं ॥ दशमे देशावकासिग व्रतविषइयो० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोपधोपवास व्रतें पांच अतिचार ॥ संथारुबार विही, पमाय तह चेव भोजणा भोए० ॥ पोसह लीधे संथारा तणी भूमि वाहिरला थंडिलां दिवसें शोध्यां पडिलेह्यां नहीं, मातरुं अण-पडिलेह्युं वावरिउं, अणपुंजी भूमिकाइं परठविउं, परठवतां चिन्तवणा न कीधी, अणुजाणहजस्सुग्गहो न कह्यो. परठव्यां पुठें वार व्रण वोसिरामि वोसिरामि न कहुं. पोसहशालामांहि पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहेवी वीसारी, पृथ्वोकाय, अप्पकाय तेऊकाय वाउकाय वनस्पतिकाय व्रसकाय तणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, संथारा पोरसि तणो विधि भणवो वीसारिओ. पोरसिमांहि उंघ्या, अविधि संथारुं पायर्थुं, काल वेलायें पडिकमणुं न कीयुं, पारणादिक तणी चिंता निपजावी, कालवेला देव वांदवा वीसारिया, पोसह असूरो लीयो, सवारो पारोयो, पव्वं तिथि आवी पोसह लोधो नही ॥ इग्यारमे पोपधोपवास व्रतविषइयो० ॥

॥ चारमे अतिथि संविभागव्रतें पांच अतिचार ॥ सच्चित्ते निग्ववणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठे ऊपरि यके महातमा व्रतें अमृजतुं दीयुं, अदेवा तणीं उदें मृजतुं फेटी असृजतुं कीयुं, देवा

तणी बुद्धें असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं, आपणुं फेडी पराधुं कीधुं, विहरवा वेला टलि गया असुर करी महातमा तेव्या, मञ्जरलें दान दीधुं, गुणवंत आवे भगति न साचवी, छती शक्ति साध-
र्मिक वात्सल्य न कीधुं, अनेराइ धर्म क्षेत्र सीदाता छती शक्तें उद्धर्या नही ॥ वारमे अतिथि संविभाग व्रतविपश्यो० ॥

॥ संलेहणा तणा पांच अतिचार. इहलोए परलोए० ॥
इहलोका संसप्पज्जे परलोगासंसप्पज्जे जीविआसंसप्पज्जे मरणा
संसप्पज्जे कामभोगासंसप्पज्जे इहलोक मनुष्यभव मान महत्त्व
लोक तणी सेवा ठकुराई बलदेव वासुदेव चक्रवर्ति पद वांछयां.
परलोक इंद्र अहर्निद्र देवाधिदेव पदवी वांछी, सुख आव्ये जीव
वा तणी वांछा कीधी, दुःख आव्ये मरवातणी वांछा कीधी,
कामभोग तणी इच्छा कीधी ॥ संलेहणाव्रतवि० ॥

॥ तपाचार वारभेदे ॥ छ अभ्यंतर, छ बाहिर, अणसणमू
णोयरिया, अणसण कहींयें उपवास, ते पर्वतियि छती शक्त कीधुं
नही. ऊणोदरी ते पांच सात कवल ऊणा रह्या नही, द्रव्य संक्षेप
विगय प्रमुख परमाण कीधुं नहीं. आसनादिक काय किलेश न
कीधो, संलीणता अंगोपांग संकोच्यां नहीं, नवकारसी पोरसी
गंठसी मूठसी साठपोरसि पुरिमद्ध एकासणो वेआसणो नीवी
आंवल प्रमुख पच्चत्काण पारवां वीसार्थी. वेसतां नवकार भण्यो
नही, ऊठतां दिवसचरिमं न कीधुं, नीवी आंवल उपवासादिक
तप करी काचुंपाणी पीधुं, वमन थयुं ॥ बाह्य तपवत विपश्यो० ॥

॥ अभ्यंतर तप॥ पायछितं विणओ० गुरुकनं मन सुद्धें
आलोयणा लीधी नही, गुरुदत्त प्रायछित तप लेखा शुद्ध पुह-
चाइयुं नहीं, देव गुरु संघ साहम्भो प्रतें विनय साचव्यो नहो; वा-
चना पृच्छना परावर्त्तना अनुपेक्षा धर्मकथा लक्षण पंचविध सिजाय

कीधी नहीं, धर्मध्यान शुकध्यान ध्यायुं नहीं, कर्म क्षय निमित्त
लोगस्त दस बीसनोकाउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यंतरतप विपश्यो ॥

॥ वीर्याचारना तीन अतिचार ॥ अणगूहिय बलविरोओ,
परिक्कमइ जो जहुंत ठाणेषु ॥ जुंजइअ जहा थामं, नायवो वीरि-
यायारो ॥ १ ॥ पढवे गुणवे विनय वेयावच्च देवपूजा सामायिक
दान शील तप भावना प्रमुख धर्म कृत्यतणे विपे मन वचन
कायतणुं छतुं बल वीर्य गोपव्युं, रुडां पंचाङ्ग समासमण न दीधां,
धेठां पढिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचारव्रत विपश्यो ॥

॥ नाणाइ अह अइ वय, समसंलेहण पण पनर कम्मेषु ॥
वारस तवविरिअ तिगं, चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ पढिसिद्धाणं
करणे ॥

॥ जिनप्रतिषिद्धबावीस अभक्ष्य वत्तीस अनंत काय बहुबीज
भक्षण महाआरंभ महापरिग्रहादिक कोधां, नित्यकृत्य देवपूजा
सामायिकादिक तथा तीर्थ यात्रादिक न कोधां, जीवाजीवादि वि-
चार सहहिया नहीं, आपणी कुमति लगे उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी,
प्राणातिपात १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह
५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११,
कलह १२, अभ्याख्यान १३, परपरिवाद १४, पैशून्य १५, अर-
तिरति १६, मायामृषावाद १७, मिथ्यात्वशल्य १८. ए अटारह
पापस्थानकमांहि जे कांइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवं प्रकारे
श्रावक धर्मे श्रो सम्यक्तत्त्व मूल बारह व्रत चोवीसां सो, अतिचार
मांहि जिको कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म वादर जाणतां
अज्ज न दुवो होय ते सह मन वचन कायायें करो मिठामि दु-
श्रीश्रावकोंके बारह व्रतका अतिचार संपूर्ण ॥

॥ पीठें सबस्सवि पस्सिय ॥ इत्यादि इच्छाकारेण संदिस्सद
 पर्यंत कहे. तेवरें गुरु कहे. चउत्तेण पम्भिमद, चउमासे ठठेण
 पम्भिमद. संवउरीयें अउमेण पम्भिमद. इअं तस्स मिअमि उअमं
 कही. छादशावत्त वांदणां देवे. पीठें इच्छाकारेण संदिस्सद जगवन्;
 देवसियं आलोइयं पम्भिमंता ॥ १ ॥ पत्तेयखामणेणं, अमुअिमि
 अप्पितरपस्सियं ॥ २ ॥ खामेअं? गुरु कहे खाण ॥ पीठें इअं खामेमि
 पस्सियं ॥ ३ ॥ इत्यादि पाठ सर्व पूर्वे कह्यो, तिम कही मिअमि
 उअमं देई खमावे, पीठें बे वांदणां देई. जगवन्! देवसियं आलोइयं
 पम्भिमंता पस्सियं ॥ १ ॥ पम्भिमवद? गुरु कहे सम्मं पम्भिमद. पीठें
 इअं कही करेमि जंते सामाअयं ॥ इअमि ठामि काउस्सगं जो मे पस्सित्त
 ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, तस्सुत्तरीण अन्नदूण ॥ कही ॥ काउस्सग करे, गुरु,
 पाखीसूत्र कहे, ते सांजले, अने गुरुयकी जूदा पम्भिमता हुवे, तो
 एक आवक खमासमण देई कहे. जगवन्! सूत्र जणुं? गुरु कहे,
 जणेइ, एत्तो वचन मनमें धारी ॥ इअं कही, उज्जो यको, दाय जोमो
 मुहपत्ती मुखें देई, तीन नवकार कही, मधुर स्वरें सूत्रार्थ मनमें
 चिंतवतो वंदितु सूत्र गुणे. बीजा आवक करेमि जं ते ० इअमि
 ठामि काउस्सग तस्सुत्तरीण अन्नदूण ॥ कही काउस्सगमें रह्या
 सुणे. सूत्रप्रातेणमो अरिइंताणं कही. काउस्सग पारी, उज्जा
 यका तीन नवकार गुणी वेसे. पीठें ॥ ३ ॥ नवकार ॥ ३ ॥ करेमि
 जं ते कही, इअमि पम्भिममिअं जो मे पस्सित्त ॥ ३ ॥ इत्यादि
 कही, वंदितु सूत्र गुणे, पम्भिममे देवसियं सबं ॥ एइने ठिकारें
 पम्भिममे पस्सियं, चउम्मासियं संवउरियं सबं कहे. पीठें उज्जी, अमु-
 अिमि आराहणाए इत्यादि पूर्ण जणी, खमासमण देई इअमं
 ॥ सं० ॥ ज० ॥ मूलगुण उत्तरगुण अतिचार विअुद्धि निमित्तं,
 काउस्सग करुं? गुरु कहे करेइ. पीठें इअं कही, करेमि जंते

सामा० इच्छामि तामि कान्तस्तगं तस्सु० अन्नहू० इत्यादि कही,
 पाखीयें चार लोगस्त चन्मासियें बीस लोगस्त संवहरीयें चाबोस
 लोगस्तनो कान्तस्तग करे, एक नवकार ऊपर, कान्तस्तग करी.
 पारी लोगस्त कहे. बेसी मुहपत्ती पम्तिहेही, बे बांदणां देई इच्छा०
 ॥ सं० ॥ ज० ॥ समाप्ति खामणेणं ॥ अणुच्छिओमि अग्निंतर पं-
 स्किपं ॥ ३ ॥ खामेजं ? गुरु कहे खामेह. पीठें इच्छं खामेमि पं-
 स्किपं ॥ इत्यादि पाठ पूर्व कह्यो. तिम कहे, पीठें इच्छाका० ॥
 सं०॥ज०॥पाखी॥३॥ खामणां खामू ? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार बेर
 खमासमण देई. तीन तीन नवकार कही, पाखी ॥ ३ ॥ समाप्त
 खामणां खामेह. पीठें श्रावक एक खमासमण देई. मस्तक नीचुं
 नमावी, तीन नवकार गुणे, इम चार वार कहे, पीठें गुरु कहे
 निष्ठारंग पारंगाहोह. पीठें श्रावक कहे. इच्छं इच्छामि अणुस्तर्हि कही,
 गुरु कहे, पुण्यवंतो पाखीने लेले, एक उपवास अथवा दोष आ-
 धिल अथवा तीन नीवी, अथवा चार एकासणां, अथवा ये
 हजार सज्जाय करी, एक उपवासनी पेंठें पूरज्यो, पाखीनें स्यातकें
 दैवसिक जणजो. एम चन्मासे ए सर्व दुगुणो कदणो, संवहरीयें
 त्रिगुणो कदणो. पीठें जिएं तप कीधो हुवे ते पइवियं कहे, न
 कीधो हुवे ते तदत्ति कहे ॥ पीठें बे बांदणां देई, अणुच्छिओमि अ-
 ग्निंतर दैवसिपं खामेमि इत्यादि कहे. पीठें बे बांदणा देई. श्राप
 रिय उवप्राए० तीन गाथा कहे, इम आणें सर्व विधि दैवसिक
 पढिकमणानी करे, पण उत्तरो विशेष दे. श्रुतदेवतानो कान्तस्तग
 करी स्तुति कहे. पीठें जवण देवयाए करेमि कान्तस्तगं. इत्यादि
 विधे जवनदेवताको कान्तस्तग करी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ भुवनदेवता स्तुति ॥

॥ चतुर्वर्णाय मंघाय, देवीं भुवनवासिनी ॥ निहत्य दुः-
 शान्मेषा, करोतु सुखमक्षयम् ॥ १ ॥

॥ क्षेत्रदेवतानो काउस्तग्न करे, तथा तीने पर्वे बडा स्तवन
अजितशांति कहणी, लघु स्तवन उपसर्गद्वर स्तोत्र कहणो, तथा
पन्निक्कमणो पूरो हुवा पीठे एक श्रावक शुर्वाङ्गायें, नमोऽर्हस्ति-
द्धा० कही, चडी शांतिका स्तोत्र कहे, बोजा सर्व सुणे, जिएने
रात्रि पोसह न हुवे, ते पोसह सामायिक पारी सांजले ॥ इति
पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणविधि ॥

॥ अथ दस पञ्चखणविचार लिख्यते ॥

॥ तिहा प्रथम चउदे नियम संजारे, सो इस तरे पञ्चखण
करे ॥ उगए सूर नमुकार सहियं मुंठसहियं पञ्चखणइ चउविहंपि
आहारं अतणं पाणं खाइमं साइमं अण्णजोगेणं सहसागारेणं
महत्तरागारेणं सद्यसमादिवत्तिपागारेणं विगइउ पञ्चस्काइ. अण्णजो-
गेणं सहसागारेणं खेवाखेवणं गिदिउसंसिठेणं उखिउत्तविधेणं
पमुच्चमस्किणं पारिछावणियागारेणं महत्तरागारेणं सद्यसमादिवत्ति-
पागारेणं देसावगासियं जोगपरिजोगं पञ्चस्काइ. अण्णजो-
गेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सद्यसमादिवत्तिपागारेणं वोत्तिरइ ॥
इति नवकारसी पञ्चस्काण ॥ १ ॥

॥ तथा जो श्रावक नियम संजारे नहिं, सो विगइका उर
देसावगासिकका आगार न पञ्चस्के. निक्केवल नवकारसी आदिक
पञ्चस्काण करे. सो लिखेत हैं ॥

॥ उगए सूर नमुकार सहियं पञ्चस्काइ ॥ चउविहंपि आहारं
अतणं पाणं खाइमं साइमं अण्ण० ॥ सह० वोत्तिरामि ॥ इति नव-
कारसी पञ्चस्काण ॥ आगार ॥ २ ॥

॥ पोरसी मुंठसी पञ्चस्कामि, उगए सूर चउविहंपि आहारं
अतणं पाणं खाइमं साइमं अण्ण० ॥ सहसा० ॥ पञ्चस्काणें निम्मा
मोइणं ॥ साहुवपणेणं सब० विगइउ पञ्चस्कां

परें कदणां ॥ इति पोरिस्ती पञ्चस्काण ॥ १ ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ इत्तं भाफक साह पोरस्तीका पञ्चस्काण जाणना, इतना विशेष है, पोरसि पञ्चस्काइके ठिकाने इहां साहपोरसि पञ्चस्काइ कदणां ॥ इति साह पोरसिपञ्चस्काण ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ सूरें उगए पुरिमठं अयठं वा पञ्चस्काइ, चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० ॥ सह० ॥ पछ० ॥ दिसा० मो० ॥ साहु ॥ मह० ॥ सब० ॥ विगइउ पञ्चस्काइ इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति पुरिमठपञ्चस्काण ॥ ३ ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ पोरसि साह पोरसि वा पञ्चस्काइ, उगए सूरें चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० पछ० दिसा० साहु० सब० एकासणं विआसणं वा पञ्चस्काइ, उविहं तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण० सह० सागारिआगारेणं आउहणपत्तारेणं गुरुअप्पुछाणेणं पारि० मह० सब० देसावगासियं० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ४ ॥ इति एकासण विआसण पञ्चस्काण ॥ आ० ॥ ८ ॥

॥ पोरसि साह पोरसि वा पञ्चस्काइ, उगए सूरें चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० पछ० दिसा० साहु० सब० एकासणं एगछाणं पञ्चस्काइ, उविहं तिविहं चउविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण० सह० सागारिआगारेणं गुरुअप्पुछाणेणं पारिछाव० मह० सब० देसाव० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकलछाणा पञ्चस्काण ॥ आगार ॥ ९ ॥

॥ पोरसि साह पोरसि वा पञ्चस्काइ, उगए सूरें चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं सा० अण० सह० पछ० दिसामो० साहु० सब० आयंविहं पञ्चस्काइ, अणउ० सह० लेवालेयेणं गिहंउसंसिठेणं उक्किन्नविवेगेणं पारिछा० मह० सब० एकासणं पञ्चस्काइ, तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण० सह०

सागारिआगारेणं आनट्टणपसारेणं गुरुअप्पुण्णणेणं पारिष्ठा० मह०
सव्व० वोत्तिरइ ॥ ६ ॥ इति आंखिल पच्चस्काण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साह पोरसिं वा पच्चख्वाइ. उग्गए सूरे चउव्विहंपि
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० पच्च० दिसा०
साहु० सव्व० ॥ निव्विगइयं पच्चख्वामि. अण० सह० लेवालेवेणं
गिहउसंसिद्धेणं उख्खित्तविवेगेणं पमुच्चमख्खिएणं पारि० मह० सव्व०
एकासणं पच्चख्वाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण०
सह० सागा० आनट्ट० गुरु० पा० मह० सव्व० देसावगासियं
जोगपरिजोगं पच्चख्वामि. अण० सह० मह० सव्व० वोत्तिरामि
॥ इति नीवी पच्चख्वाण ॥ आगार ॥ ८ ॥

॥ सूरे उग्गए अप्रत्तहं पच्चख्वामि. चउव्विहंपि आहारं असणं
पाणं खाइमं साइमं अण० सह० मह० सव्व० देसावगासियं
जोगपरिजोगं पच्चख्वामि. अण० सह० म० सव्व० वोत्तिरामि ॥
इति चउव्विहार उपवास पच्चख्वाण ॥ ९ ॥

॥ सूरे उग्गए अप्रत्तहं पच्चख्वामि. तिविहंपि आहारं असणं
खाइमं साइमं अ० सह० पाणहार पोरसिं साह पोरसिं पुरिमह
अवहं वा पच्चख्वाइ अण० सह० पच्च० दिसा० साहु० सव्व
देसावगासियं जोगपरिजोगं पच्चख्वामि. अ० स० म० सव्व० वो-
त्तिरामि ॥ इति तिविहार उपवास पच्चख्वाण ॥

॥ पोरसिं साहु पोरसिं पुरिमहं अवहं वा पच्चस्कामि. उग्गए
सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अ० सह०
पच्च० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगघाणं दत्तियं पच्चख्वामि.
तिविहं चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह०
सागा० गुरु० मह० सव्व० विगइत्तं पच्चख्वामि. इत्यादि पूर्ववत्.
देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति दत्तिपच्चख्वाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पञ्चख्वाइ. चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं
खाइमं साइमं अण्णं सहं महं सब्बं वोत्तिरइ ॥ इति दिव-
सचरिम पञ्चख्वाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पञ्चख्वामि डुविहंपि आहारं असणं खाइमं
अण्णं सहं महं सब्बं वोत्तिरामि. देसावगासियं पूर्ववत् ॥ इति
दिवसचरिम डुविहार पञ्चख्वाण ॥ ए ॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पञ्चख्वामि अन्नं सहं महं
सब्बं वोत्तिरामि ॥ इति पाणहार उपवासरो पञ्चख्वाण ॥ ए ॥

॥ जवचरिमं पञ्चख्वाइ ति विहंपि चउव्विहंपि आहारं असणं
पाणं खाइमं साइमं अन्नं सहं महं सब्बं वोत्तिरइ ॥ आगार
॥ ४ ॥ जवचरिम, दो आगारकाजो होय ॥ इति जवचरिम पञ्चख्वाण ॥

॥ तथा इमहिज गंठिसहि मुठिसहि अंगुठसहि प्रमुख अ-
ज्जिग्रह पञ्चख्वाणकेज्जी ए चार आगार. अन्नं सहं महं सब्बं
वोत्तिरइ ॥ पांचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुको होय ॥ इति अ-
ज्जिग्रह पञ्चख्वाण ॥

॥ अहणं जंते तुह्माणं समीवे देसावगासियं पञ्चख्वामि
दंष्ट्रं खित्तं कालं जावत्तं दव्वत्तं देसावगासियं खित्तं उउ
वा अण्णत्तं कालत्तं मुहुत्तधारणाप्रमाणं जावनियमं पञ्चख्वामि
जावत्तं जावगहेणं न गहिज्जामि ठलेणं न ठलिज्जामि अण्णेण-
केवि रायंकेण वा एसो परिणामो न पन्निवज्जइ ता अज्जिग्रह
अण्णत्तं जोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सब्बसमाहिवत्तिपा-
गारेणं वोत्तिरइ ॥ इति देसावगासी पञ्चख्वाण ॥

॥ तथा साधुं पञ्चस्कांण करे. तव देसावगासी नही पञ्चस्के.
अरु ति विहार उपवासमें आंघ्रिजमें नीवीमें एकासण प्रमुखमें
पाणस्सकाठ आगार पञ्चस्के सो दिखावे हैं. पाणस्स लेवानेण वा

अलेखोमेण वा अछेण वा बहुलेण वा ससिञ्जेण वा असिञ्जेण वा
वोसिरइ ॥

॥ अथ पञ्चखाण आगार संख्या ॥

॥ दोचेव नमुकारो आगार उच्च हुंति पोरसिए ॥ सत्तेवत्त
पुरमिद्धे, एगासणंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्ते गढाणस्तत्त, अठेवय आ-
यंखिलंमि आगारा ॥ पंच वयज्जाठे, उप्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥
पंच चत्तरो अज्जिगहे, निवीए अठनवय आगारा ॥ अप्पावरणे पं-
चत्त, इवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्या ॥

॥ अथ पञ्चखाणके आगारोका अर्थ लिख्यते ॥

॥ उगएसूरे नमुकार सदियं पञ्चखाण चत्तविहंपि आहारं ॥
अर्थः—इहां गुरु कहे पञ्चखाण. शिष्य कहे पञ्चखामि. पञ्चखाणका
अर्थ सब जगे अंगीकार बांची जाणना. जेसैं सूरज उदय हुआ
पीठे नवकारसी वत्त अंगीकार करूं. यह पञ्चखाण मुहुर्त्त कहते
दो घन्टी काल उपरांत जहां तक नवकार गुणकर पाकूं नहीं तहां
तक चत्तवि० च्यारोंही आहारका त्यागरूप वत्त अंगीकार करूं. सो
च्यार प्रकारका आहार इस मुजब है. असन कहते अन्न, चावल,
गहूं, मूंग, चणा, ज्वार, वगेरे सब अनाज सात गहूं जबकूं आदि
लेकर सब तरेका आटा सब तरेका साग तरकारी लहू वगेरे सब
तरेका पकवान सूरणादिक सब तरेका कंद दूध दही रोटी राव
घाट सब पतली नर नरम वस्तु हर्गि वेसण सुंक लूण सेंधवादिक
इत्यादिक सब असणमांहि जाणना ॥ १ ॥ पाणं इसका अर्थ आचण
जवोदक तुपोदक तंडुलोदक गरमपाणी शुद्धोदक कहते सब अप्प-
काय ॥ २ ॥ खाइमं कहते खादिम सूखनी नालेर खजूर द्राख सेक्या
अनाज आंबा केला काकनी अखरोट खारक विदाम वगेरह सब
जातका मेवा सब जातका फल खाइमं जाणना ॥ ३ ॥ साइमं कहते

स्वादिम तंबोल सूंगि मिरच पीपर हरमे बदेना आंवडा तुलसी कसेला
 काथा मोलेली तज तमालपत्र इलायची लोंग वायविमंग अजमा
 अजमोद कुल्लिजन कवावचीणी कचूर नागरमोथा कांटासेलिया
 कुंजटिआ पांनसुपारी पोदकरमूल जवासाकीजर वावची वावल-
 गाल धवगालि खेजमेकीगालि खयरसार यह सब स्वादिम वस्तु
 जाणना ॥ ४ ॥ अथ अनाहार चीजे कहेतेहें नीवकीगालि जरु
 पांन सिली गोमूत्र गिलोय चिरायता अतीस कूमेकीगालि चंदन-
 कीराख रोहिणीकीगालि पीपलामूल बच धमासा रींगणी एलिया
 चिरमी कपरधोरकीजरु इत्यादिक अनाहार चीज इच्छा मुजब ठो-
 रुणा यह जो इच्छाविना अनिष्टपणे लेवे तब ता अनाहारहे अगर जो
 इच्छा संयुक्त लेवे तो आहारका दूषण लगे, पञ्चखाणका अर्थ जाणे
 विगर जो पञ्चखाण करे सो अंधा पञ्चखाणहे इत वास्ते संक्षेप
 मात्र आगारोंका अर्थ लिखतेहे, जिस पञ्चखाणमें जितना आगार
 होय सो रखकर हमारे पञ्चखाणहे, अन्नग्रणान्नोगेणं कहिये अना-
 न्नोग टालके किया जो पञ्चखाण, अत्यंत जूल जाणेंसैं कोइनी
 चीज जूलके मुंमे मालली होय लेकिन जाणे बाद तत्काल उत्ती
 बखत पीठा नाख देवे तो पञ्चखाणमें जंग नही, ठर जाणे बाद
 जकल करे तो पञ्चखाण निश्चे जंग होय ॥ १ ॥ पञ्चकालेणं कहते
 कालकी प्रवृत्तता, आकाशमें गर्द कुरुती होय आकाशमें बदल
 जाये होय तेसेइ पहानकीउट आजावे सूरज नही दीखे तब ज-
 रमसुं पञ्चखाणका बखत पूरा हुवा जाणकर नोजन करे तो व्रत
 भंग नही ॥ २ ॥ दिसामोहेणं कहतां दिसा जूलकर पूरवकूं पश्चिम
 जाणकर पञ्चखाणका काल पूरा हुये विगर नोजन करे लेवे तो
 व्रत भंग नही ॥ ३ ॥ सदस्तागारेणं कहतां सदस्तात्कार बढ़ोत उताव
 लके योगसैं अथवा अकस्मात् विलोबते तोलते धी बगेरेका रींदा

स्वादिम तंबोल सूंठि मिर्च पीपर हरने बदेना आंवला तुलसी कसेला
 काथा मोलेठी तज तमालपत्र इलायची लोंग वायविमंग अजमा
 अजमोद कुलिंजन कवावचीणी कचूर नागरमोथा कांटासेलिया
 कुंजटिआ पांनसुपारी पोहकरमूल जवासाकीजरु वावची वांवल-
 ढाल धवठाळि खेजनेकीठाळि खयरसार यह सब स्वादिम वस्तु
 जाणाना ॥ ४ ॥ अब अनाहार चीजे कहतेहैं नींवकीठाळि जरु
 पांन तिल्ली गोमूत्र गिलोय चिरायता अतीत कूनेकीठाळि चंदन-
 कीराख रोहिणीकीठाळि पींपलामूल वच धमासा रींगणी एलिया
 चिरमी कयर घोरकीजरु इत्यादिक अनाहार चीज इच्छा मुजबबो-
 रुणा यह जो इच्छाविना अनिष्टपणे लेवे तब ता अनाहारहे अगर जो
 इच्छा संयुक्त लेवे तो आहारका रूपण लगे, पचखाणका अर्थ जाणे
 विगर जो पचखाण करे सो अंधा पचखाणहे इस वास्ते संक्षेप
 मात्र आगारोंका अर्थ लिखतेहे, जिस पचखाणमें जितना आगार
 होय सो रखकर हमारे पचखाणहे, अन्नछणान्नोगेण कहिये अना-
 न्नोग टालके किया जो पचखाण, अत्यंत जूल जाणें कोइनी
 चीज जूलके मुंमे मालली होय लेकिन जाणे बाद तत्काल उत्ती
 बखत पीठा नाख देवे तो पचखाणमें जंग नदी, उर जाणे बाद
 जकण करे तो पचखाण निश्चे जंग होय ॥१॥ पचन्नकालेण कहते
 कालकी प्रचन्नता, आकाशमें गर्द ऊमती होय आकाशमें घड़ल
 गये होय तेसेइ पहानकीउठ आजाये मूरज नही दीखे तब ज-
 रमसुं पचखाणका बखत पूरा हुवा जाणकर नोजन करे तो घत
 जंग नही ॥२॥ दिसामोहेण कहतां दिसा जूलकर पूरवकूं प
 जाणकर पचखाणका काल पूरा हुये विगर नोजन कर
 घत जंग नही ॥३॥ सदस्तागारेण कहतां तत्काल
 लके योगसैं अथवा थकस्मात् विप्रोवते तोलते धी

पगामसिद्धाए निगामसिद्धाए संधाराजवट्टणाए परियट्टणाए आउंठ-
 णाए पसारणाए उप्पइयासंघट्टणाए कइए कक्कराईए ठीए जंजाइए
 आमोसेससर स्कामोसे आउलमाउलाए सोअणवत्तियाए इट्ठीविप्प-
 रियासिआए दिट्ठीविप्परियासिआए मणविप्परिआसियाए पाए-
 जोयणाविप्परिआसिआए जोमेदेवसित्तं अइयारोकत्तं तस्समिच्चामि-
 ड्डकनं पन्निक्कमामि गोपरचरिआए जिखापरिआए उग्गारुकवारु उ-
 ग्गारुणाए साणावच्चादारा संघट्टणाए मंनोपाडुमिआए वल्लिपाडु-
 मिआए ठवणापाडुमिआए संकिएसइस्तागारे आणेसणाए पाणेस-
 णाए आणजोयणाए पाणजोयणाए बोअजोयणाए हरियजोयणाए
 पंञ्चाक्कम्मियाए पुराक्कम्मिआए अविट्ठनाए दगसंसट्ठनाए रयसंसट्ठ-
 हनाए पारितारुनिआए पारिणवलिआए उद्दासणजिक्काए जंठ-
 गमेणं उप्पायणेसणाए अपरिश्रुद्धं पन्निग्गहिअं परिजुत्तंवा जंनप-
 रिट्ठवलिअं तस्समिच्चामिड्डकनं पन्निक्कमामि चान्ठकालं सिद्धापस्स
 अकरणयाए उज्जत्तकालं जंनोवगरणस्स अप्पनिलेइणाए अप्पमज्झ-
 णाए उप्पमज्झाए अइक्कमे वइक्कमे अइयारे अणायारे जो मेदेव-
 सित्तं अइयारो कत्तं तस्स मिच्चामि ड्डकनं पन्निक्कमामि एंगविहे
 अतंजमे पन्निक्कमामि दोहिं वंधणेहिं रागबंधणेणं दोसबंधणेणं
 पन्निक्कमामि तिहिं दंनेहिं मणदंनेणं वयदंनेणं कायदंनेणं
 पन्निक्कमामि तिहिं गुत्तोहिं मणगुत्तीए वयगुत्तीए कायगुत्तीए
 पन्निक्कमामि तिहिं सल्लेहिं मायासल्लेणं नीयाणासल्लेणं मिच्चादं
 सणसल्लेणं पन्निक्कमामि तिहिं गारवेहिं इट्ठीगारवेणं रसगारवेणं
 सायागारवेणं पन्निक्कमामि तिहिं विराइणाहिं नाणविराइणाए
 दंतणविराइणाए चारित्तविराइणाए पन्निक्कमामि चउहिं क-
 साएहिं कोइकसाएणं माणकसाएणं मायाकसाएणं लोहकसाएणं
 पन्निक्कमामि चउहिं सणाहिं आहारसणाए जससणाए मेहुणंसणाए

एकाग्रतादि व्रतधारी साधू गुरुके आज्ञासें दुसरी वखतजी आहार करे तो व्रत जंग नही ॥ ११ ॥ लेवालेवेणं कहतां जोजन करेका आल प्रमुख जोजन उसके अंदर घृतादिक विगय द्रव्यका अंसलगाजयाहे उसकूं हाथ वेगेरेमें पूठ माला उस परजी किंचित्त्वे मालम सालगारहे उसमें आयंविलादि व्रतवाला जोजन कर लेवे तो व्रत जंग नही ॥ १२ ॥ उस्किचिविवेगेणं कहतां आयंविलादि पञ्चखाणमें नही खाणे योग्यजो विगय द्रव्य प्रमुख उसका फरस खाणें योग्य द्रव्यसें हो गया होय वो चीज खाणेमें आवे तो व्रत जंग नही लेकीन् जो विगय आदि देकर पतला द्रव्य सो हाथसें उठाय सके नही ऐसे द्रव्यसें फरस हुआ होय तो उसके खाणेसें व्रत जंग नही ॥ १३ ॥ गिहत्थसंसिधेणं कहतां जोजन पुरये जिससेती ऐसी कु रुठी आदि देकर जोजन विगय प्रमुख द्रव्यसें वेमालम खरनी होय प्रत्यक्ष निजरसें कदाचित्मालम न होय तब जो उसही वासणसें जोजन पुरसे तोजी व्रत जंग नही ॥ १४ ॥ पडुसुमुखिणं कहतां सर्व आ लूखी रोटी खाखरा प्रमुख द्रव्य किंचित्मात्र घृतादिकसें वेमालम चोपनुणेमें आयादे लेकिन् घृतादिकका स्वाद नही मालम देता दे तो नोवी पञ्चखाणमें उस द्रव्यकूं खाणेमें आवे तो व्रत जंग नही उर जो धारविगय लेवे तो व्रत जंग होय ॥ १५ ॥ इति पनरे पञ्चखाणका आगारार्थ संपूर्ण ॥

॥ अथ साधू प्रतिक्रमणसूत्र लिख्यते ॥

॥ चत्वारिमंगलं अरिहंतामंगलं सिद्धामंगलं साहूमंगलं केवलपणनो धम्मोमंगलं ? चत्वारिलोगुत्तमा अरिहंतालोगुत्तमा सिद्धालो गुत्तमा साहूलोगुत्तमा केवलपणनो धम्मोलोगुत्तमो २ चत्वारिसरणं पवक्कामि अरिहंतेसरणं पवक्कामि सिद्धेसरणं पवक्कामि साहूमरणं पवक्कामि केवलपणनं धम्मं सरणं पवक्कामि ३ इत्थमि पणिकमिउं

(३१)

पगामसिद्धाए निगामसिद्धाए संथाराउवट्टणाए परियट्टणाए आंनैट्ट-
णाए पत्तारणाए उप्पइयासंघट्टणाए कइए कक्कराईए ठोए जंजाइए
आमोसेसत्तर स्कामोसे आउलमाउलाए सोअणावत्तियाए इठोविप्प-
रियासिआए दिठोविप्परियासिआए मणविप्परिआसियाए पाए-
जोयणाविप्परिआसिआए जोमेदेवसिउ अइयारोकत्त तस्समिच्चामि-
डुक्कं पन्निक्कमामि गोवरचरिआए जिखापरिआए उग्घामकवाम उ-
ग्घामणाए ताणावट्टादारा संघट्टणाए मंनोपाहुनिआए वत्तिपाहु-
निआए ठवणापाहुनिआए संकिएसइस्सागारे आणेत्तणाए पाणेत्त-
णाए आणजोयणाए पाणजोयणाए वोअजोयणाए हरियजोयणाए
पंञ्चाक्कम्मियाए पुराक्कम्मिआए अदिठ्ठहन्नाए दगसंसठ्ठहन्नाए रयसंसठ-
हन्नाए पारिस्साम्मिआए पारिठावलिआए उद्दासणजिस्काए जंज-
ग्गमेणं उप्पायणेत्तणाए अपरिश्रुद्धं पन्निग्गहिअं परिजुत्तंवा जंनप-
रिठ्ठवलिअं तस्समिच्चामिडुक्कं पन्निक्कमामि चाउत्तकालं सिद्धायस्स
अकरणयाए उज्जत्तकालं जंनोवगरणस्स अप्पमिलेइयाए अप्पमज्झा-
णाए उप्पमज्झाए अइक्कमे वइक्कमे अइयारे अणायारे जो मेदेव-
सिउ अइआरो कत्त तस्स मिच्चामि डुक्कं पन्निक्कमामि एंगविहे
असंजमे पन्निक्कमामि दोहिं वंपणेहिं रागबंधणेणं दोसबंधणेणं

एकाशनादि व्रतधारी साधू गुरुके आज्ञासें दुसरी वखतजी आहार करे तो व्रत जंग नही ॥११॥ लेवालेवेण कहतां जोजन करेका आल प्रमुख जाजन उसके अंदर घृतादिक विगय द्रव्यका अंसलगाजयाहे उसकूं हाथ वगेरेसें पूछ माला उस परजी किंचित्त्वे मालम सालगारहे उसमें आयंविलादि व्रतवाला जोजन कर लेवे तो व्रत जंग नही ॥१२॥ उस्किन्नविवेगेण कहतां आयंविलादि पञ्चखाणमें नही खाणे योग्यजो विगय द्रव्य प्रमुख उसका फरस खाणे योग्य द्रव्यसें हो गया होय वो चीज खाणेमें आवे तो व्रत जंग नही लेकीन् जो विगय आदि देकर पतला द्रव्य सो हाथसें उठाये सके नही ऐसे द्रव्यसें फरस हुआ होय तो उसके खाणेसें व्रत जंग नही ॥१३॥ गिहत्थसंसिठेण कहतां जोजन पुरये जितसेती एसी रुठी आदि देकर जाजन विगय प्रमुख द्रव्यसें बेमालम खरमी

(३५)

सायशाए साहूरांआ० साहूशीरांआ० सावयाणंआ० सावियाणंआ० दे-
 वाणंआमाय० देवीणंआ० इदलोगस्सआ० परलोगस्सआ० केवलपन्न-
 तस्सधम्मस्सआ० सदेवमणुआसुरस्सलोगस्सआ० सव्वपाणञ्जुअजी-
 वसत्ताणंआ० कालस्सआ० सुअस्सआ० सुयदेवयाएआसा० वायणा
 रिअस्सआ० जंवाइदं वच्चाभेलिअं हीनरकरिअं अच्चस्करिअं पयदीणं
 विणयहीणं जोगहीणं घोसदीणं सुहुदिन्नं, डुहुपनिष्ठियं अकालेक-
 ठत्तज्जात्तं कालेनकत्तसज्जात्तं असज्जाइए सज्जाइयं सज्जाइए नसज्जा-
 इयं तस्स मिच्छामि डुक्कं एमो चत्तवीसाए तित्थपराणं उत्तजाइ-
 माहावीरपज्जवसाणाणं इणमेव निग्गंधं पावयणं सच्चं अणुत्तरं के-
 वलियं पणिपुणं नेआत्तपं संसुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमगं सुत्तिमगं
 निज्जाणमगं निव्वाणमगं अवितहमविसंधि सव्वडुक्कपदीणमगं
 इत्थविआजीवा सिद्धंति बुद्धंति मुच्चंति परिनिवापंति सबडुक्कवाण-
 मंतंकरंति तंधम्मं सदहामि पत्तियामि रोएमि फासेमि पालेमि अ-
 णुपालेमि तंधम्मं सदहंतो पत्तिअंतो रोअंतो फासंतो पालितो अणु-
 पालितो तस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अणुठेत्तमि आराइणाए
 विरत्तमि विराइणाए अंतंजमं परिआणामि संजमं उयसंपज्जामि
 अबंजं परिआणामि वंजंउवसंपज्जामि अकप्पं परिआणामि कप्पं

ए परिग्गहससाए पन्निक्कमामि चउहिं विगहाहिं इत्थिकहाए जत्त-
 कहाए वेसकहाए रायकहाए पन्निक्कमामि चउहिं जाणेहिं अट्ठेणं
 जाणेणं रुद्धेणंजाणेणं धम्मेषणंजाणेणं सुक्खेणंजाणेणं पन्निक्कमामि
 पंचहिं किरियाहिं काइयाए अदिगरणियाए पाठ.सिधाए पारताद-
 णीआए पाणायवायकिरियाए पन्निक्कमामि पंचहिं कामगुणेहिं
 सदेणं रुवेणं रसेणं गंधेणं फासेणं पन्निक्कमामि पंचहिं महघएहिं
 पाणाइवायान्नविरमणं मुत्तावायान्नवेरमणं अविन्नादाणान्नवेरमणं
 मेहुणान्नवेरमणं परिग्गहान्नवेरमणं पन्निक्कमामि पंचहिं समिईहिं
 इरिआत्तमिईए ज्ञात्तात्तमिईए एत्तणात्तमिईए आयाणज्जन्मत्तनि
 खेवणात्तमिईए उच्चारपासवणं खेलजल्लसंधाणपारिठावणियात्तमि-
 ईए पन्निक्कमामि ष्हिं जीवनिकाएहिं पुढविकाएणं आन्नकाएणं
 तेन्नकाएणं वात्तकाएणं वणस्सईकाएणं तस्सकाएणं पन्निक्कमामि
 ष्हिं लेत्ताहिं किन्हेत्ताए नीलत्ताए कान्हेत्ताए तेन्नत्ताए प-
 ष्ठमत्ताए सुक्खत्ताए पन्निक्कमामि सत्तहिं जयणणेहिं अण्हिं म-
 यणणेहिं नवहिं वंज्जचेरगुत्तीहिं दत्तविहे समणधम्मो एगारसहिं
 उवात्तगपन्निमाहिं धारसहिं जिस्कुपन्निमाहिं तेरसहिं किरियाण-
 णेहिं चउहात्तहिं जूयगामेहिं पस्सरसहिं परमादम्मिएहिं सोलसएहिं
 गाहाहिं सत्तरसविहे अत्तंजमे अणारसविहे अवंच्जे इगुणवीसाए ना-
 यव्ययणेहिं वीसाए अत्तमादिछाणेहिं इक्खीसाए सयत्तेहिं धावीसाए
 परीसहेहिं तेवीसाए सुयगरुत्तयणेहिं चउवीसाए अरिहंतेहिं पयवी
 साए ज्ञावणाहिं ठव्वीसाए दत्ताकप्पववहाराणं उद्देसणकालेणं सत्ता
 वीसाए अणगारगुणेहिं अणवीसाए आयारपकप्पेहिं एगुणतीसाए
 पावसुअप्पसंगेहिं तीसाए मोहणीअणणेहिं इगतीसाए सिद्धाङ्गुणेहिं
 यत्तीसाए जोगसंगदेहिं तितीसाए आसायणाए अरिदंताणं आसाय-
 णाए सिद्धाणंआसायणाए आयरिआणंआसायणाए उवद्यायाणंआ-

(३५)

सायशाण साहूशंआ० साहूशीणंआ० सावयाणंआ० सावियाणंआ० दे-
 वाणंआमाय० देवीणंआ० इहलोगस्तआ० परलोगस्तआ० केवलिपन्न-
 तस्तधम्मस्तआ० सदेवमणुआसुरस्तलोगस्तआ० सवपाणजूअजी-
 वसत्ताणंआ० कालस्तआ० सुअस्तआ० सुयदेवयाएआसा० वायणा
 रिअस्तआ० जंवाइइं वच्चाभेलिअं हीनस्करिअं अच्चस्करिअं पयहीणं
 विणयहीणं जोगहीणं घोसहीणं सुहुदिन्नं, डुहुपनिष्ठियं अकालेक-
 उत्तज्जात्त कालेनकत्तज्जात्त अतज्जाइए सज्जाइयं सज्जाइए नसज्जा-
 इयं तस्त मिच्छामि डुक्कनं एमो चत्तवीसाए तित्थयराणं उत्तज्जाइ-
 माहावीरपक्कवसाणाणं इणमेव निग्गंधं पावयणं सच्चं अणुत्तरं के-
 वलियं पणिपुसं नेआत्तयं संसुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमगं मुत्तिमगं
 निज्जाणमगं निच्चाणमगं अवितहमविसंघि सव्वडुक्कपहीणमगं
 इत्यधियाजीवा सिद्धंति बुद्धंति मुच्चंति परिनिवायंति सव्वडुक्कवाण-
 मंतंकरंति तंधम्मं सदहामि पत्तियामि रोएमि फासेमि पालेमि अ-
 णुपालेमि तंधम्मं सदहंतो पत्तिअंतो रोअंतो फासंतो पालितो अणु-
 पालितो तस्त धम्मस्त केवलिपन्नतस्त अणु ण्ठमि आराहणाए
 चिरत्तमि विराहणाए अंतंजमं परिआणामि संजमं उवसंपक्कामि
 अबंजं परिआणामि बंजंउवसंपक्कामि अकप्पं परिआणामि कप्पं

परिग्रहधारा ॥ पंचमहव्यधारा, अष्टार सहस्र सीलंगधारा ॥
 अस्त्रयायार चरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥
 खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतुमे ॥ मित्ति मे सव्व जूएसु,
 वेरं मव्वं नेकेणई ॥ १ ॥ एवमहं आलोइय, नंदिअ गरहिय दुगंछियं
 सम्मं ॥ तिविदेण पम्भित्तो, वंदामि जिणेचउवीसं ॥ २ ॥ इतिश्री
 सामू प्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥

॥ अथ परुखी सूत्र लिख्यते ॥

॥ तिठंकरे अतिठे, अतिठसिद्धेय तिठसिद्धेअ ॥ सिद्धेयजि-
 णेयरिसी, महारिसि नाणं च वंदामि ॥ १ ॥ जेयइमंगुणरयणसायार,
 मविरातिजुणं तिन्निसंसारा ॥ ते मंगलं करित्ता, अहमविआराहणा-
 मिमुहो ॥ २ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुयं च धम्मोय ॥
 खंती गुत्ती मुत्ती, अज्जवया मद्दवं चेव ॥ ३ ॥ लोगंमि संजया जं
 फरंति, परम रिसि देसियमुपारं ॥ अहमवि उवडित्तं, महव्वय उ-
 च्चारणं काठं ॥ ४ ॥ सेकिंतं महव्वय उच्चारणा महव्वय उच्चारणा
 पंचविहा पन्नत्ता राई भोयण वेरमणछठा तंजहा सव्वान् पाणाइ-
 वायाओ वेरमणं सव्वान् मूसावायाउ वेरमणं सव्वान् अदिन्नादाणाउ
 वेरमणं सव्वान् मेहुणाउ वेरमणं सव्वान् परिग्रहाउ वेरमणं सव्वान्
 राइभोयणाउ वेरमणं तत्थ खलु पढमे भंते महव्वय पाणाइवायाउ-
 वेरमणं सव्वं भंते पाणाइवायं पञ्चस्कामि से सुहुमं वा चायरं वा तसं
 वा यावरं वा नेवसयं पाणे अइवाएजा नेवनेहि पाणे अइवायाविजा
 पाणे अइवायंतेवि अन्नेनसमण्जाणामि जावजीवाए तिविहं तिविहेणं
 आण काणं न करेमि न कारवेमि करंतपि अन्नंनसमण्
 तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि
 चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वउ सित्तउ कालउ
 पाणाइवाय. छुजुजीवनिकाणसु सित्तउणं पाणा

इवाप् सयललोप् कालञ्जं पाणाइवाप् दियावा राञ्वा भावञ्जं
 पाणाइवाप् रागेण वा दोसेण वा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवल्लि-
 पन्नत्तस्स अहिंसा लल्लवणस्स सञ्चाहिष्ठियस्स विणयमूलस्स खती-
 पहाणस्स अहिरणसोवणियस्स उवसमप्पभवस्स नव वंभचेर गुत्तस्स
 अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुल्लोसंयल्लस्स निरग्गिसरणस्स
 संपल्लालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निवियारस्स निव्वि-
 त्तोल्लवणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिंसंचयस्स अविसंवाइयस्स
 संसारपारगामियस्स निघाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्वि अन्नान
 याए असवणयाए अवोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रा-
 गदोस पडिवद्धयाए चालयाए मोहयाए मंदयाए किट्ठपाए तिगारय-
 गरुयाए चउक्कसात्तवगएणं पंचेदियवसट्ठेणं पट्ठिपुन्नभारियाए साया-
 सोल्ल मणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु पाणाइ-
 वात्तं कठ्ठवा कारित्ठवा कीरंतोवा पेरेहिं समणुत्तात्तं तं निंदामि ग-
 रिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि प-
 ड्डपन्नं संवरेमि सव्वं पाणाइवायं जावजीवाए अणिस्सिचहिं नेव
 सयंपाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवा-
 यंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसख्खियं सिद्धसख्खियं
 साहुसख्खियं देवसख्खियं अप्पसख्खियं एवं हवइ भिक्खूवा भिक्खू-
 णीवा संजयविरय पडिहय पच्चस्काय पावकम्मे दियावा राञ्वा एगोवा
 परिसागत्तवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस्स खल्लु पाणाइवायस्सवेरमणे
 द्विएसुहे स्वमेनिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सवेसिं पाणाणं
 सव्वेसिं भूयाणं सवेसिं जोवाणं सवेसिं सत्ताणं अदुस्कणयाए अ-
 सोयणयाए अन्नरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-
 णियाए अणुइवणयाए महत्ते महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणु-
 चिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्ते तं दुस्सकयाए कम्मस्सकयाए मोहस्स

याए बोहिलाभाए संसारुसारणाए तिक्कट्टु उवसंपजिंत्ताणं विहरामि
 पदमे भंते महव्वए उवडिर्त्तामि सव्वात्त पाणाइवायाउवेरमणं ॥ १ ॥
 उहावेरदोअंभंते महव्वए मुसावायाउवेरमणं सव्वं भंते मुसावायं
 पच्चस्कामि से कोहावा लोहावा भयावा दारावा नेवसयं मुसंवाइया
 नेवेन्नेहिं मुसंवायाविद्या मुसंवायंतेवि अभेनसमणुजाणमि
 जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न क-
 रेभि न कारवेमि कंरंतपि अन्नंसमणुजाणामि तस्स भंते पडि-
 क्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि से मुसावाए चउ-
 व्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वत्तं खित्तत्तं कालत्तं भावत्तं दव्वत्तणं मुसा-
 वाए सव्वदव्वेसु खित्तत्तणं मुसावाए लोएवा अलोएवा कालत्तणं
 मुसावाए दियावा रात्तवा भावओणं मुसावाए रागेणवा
 दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्क
 णस्स सच्चाहिडियस्स विणय मूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नि
 यस्स उवसमप्पभवस्स नव वंभवेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्का-
 वित्तियस्स कुक्कीसंबलस्स निरगिसरणस्स संपस्कालियस्स चत्तदो-
 सस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तोलक्कणस्स पंचमहव्व-
 यजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स
 निव्वानगमणपज्जवसाणफलस्स पुब्बिअन्नाणयाए असवणयाए अ-
 बोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिचदयाए
 षालयाए मोइयाए मंदयाए किक्कयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसात्तवग
 एणं पंचेदियवसट्ठेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोख्खमणुपालयंतेणं इहं
 वाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासिओवा भासाविओवा
 भासिज्जंतो वा परेहिं समणुत्ताओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिवि-
 हेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडिपन्नं संवरेमि अणागयं
 पच्चस्कामि सव्वं मुसावायं जावज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेवसयंमुसंवइ

नवनेहिं मुसंवायाविद्या मुसंवायंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा
 गरिहंतसखिखयं सिद्धसखिखयं साहससखियं देवससखियं अप्सससखियं
 वं इवइ भिरुखुवा भिरुखुणोवा संजयविरयपडिइय पच्चरुखाय पा-
 कमे दियावा राउवा एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा
 स खलु मुसावायस्सवेस्मणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए
 रगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं स-
 सिं सत्ताणं अदुख्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पण-
 ए अपोडणयाए अपरियावणयाए अणुद्वणयाए महत्ते महायुणे
 हाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्ते तं दुख्खखयाए
 म्मखयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिक्कहु उव-
 जत्ताणं विहरामि दोस्से भंते महव्वए उवडिउमि सव्वान्मुसा-
 याओवेरमणं २ अहावरे तत्ते भंते महव्वए अदिन्नादाणाउवेरमणं
 यं भंते अदिन्नादाणं पच्चरुखामि से गामेवा नगरेवा रत्तेवा अप्पंवा
 या अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं अदिन्नं
 णेहज्जा नेवनेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा अदिन्नं गिण्हंतेवि अन्नंन-
 णुजाणामि जावजीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं
 करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि जावजीवाए
 भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से
 दन्नादाणे चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वओ सित्तओ कालओ भा-
 दव्वओणं अदिन्नादाणे गहणद्वारणिच्चेसु दव्वेसु सित्तओणं
 दन्नादाणे गामेवा नगरेवा रत्तेवा कालओणं अदिन्नादाणे दियावा
 वा भावओणं अदिन्नादाणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इ-
 त्त वम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अहिंसालखणस्स सच्चाहिद्वियस्स वि-
 मूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसुवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स
 भवेरयत्तस्स अप्पयमाणस्स भिरुखावित्तियस्स कुरुस्सीसंवलस्स

निरगिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स नि-
 व्वियारस्स निव्वित्तोलखणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचि-
 यस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाण
 फलस्स पुर्व्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं
 अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिव्वयाए बालयाए मोहयाए
 मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाज्जवगएणं पंचेदियवसट्टेणं
 पडिपुन्नभारियाए सावासुक्कमणुपालयंतेणं इहंवाभवेअग्नेसुवा भवग्ग
 हणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गाहावियंवा घिप्पंतंवा परेहिंसमणुन्ना
 ओ तं निंदामि गरिहामि तिव्विहं तिव्विहेणं मणेणं वायाए काएणं अ
 इयं निंदामि पडुप्पन्नंसंचरेमि अणागयं पच्चस्कामि सबं अदिन्नादा
 णं जावज्जोवाए अणिस्सिओहं नेवसयं अदिन्नं गिण्हिजा नेवन्नेहिं
 अदिन्नं गिन्नाविद्या अदिन्नंगिन्नंतेवि अन्नंसमणुजाणामि तंजहा
 अरिहंतसखिखयं सिद्धसखियं साहूसखियं देवसखियं अप्पसखियं
 एवं हवइ भिखूवा भिखुणीवा संजयविरय पडिहयपच्चस्काय पाव
 कम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमा
 णेवा एस खलु अदिन्नादाणस्सवेरमणे हिण्सुहे खमे निस्सेसिए आ
 णुगामिए पारगाभिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सघेसिं
 जोवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अटुखणयाए असोयणयाय अजूरणयाय
 अतिप्पणयाय अपोडणाय अपरियावणियाय अणुद्वणयाय महग्गे
 महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिय पसग्गे तं
 दुस्सकयाय कम्मस्सकयाय मोहस्सकयाय बोहिलाभाय संसारुत्तारणाय
 तिककट्टु उवसंपजत्ताणं विहरामि तच्चे भंते महव्वए अमुद्धिओमि स-
 व्वाओ अदिन्नादाणाओवेरमणं ॥ ६ ॥ अहावरे चउत्थे भंते मह-
 व्वए मेहुणाओवेरमणं सबं भंते मेहुणं पच्चस्सामि से दिव्वंवा मा-
 गुसंवा तिरिस्सजोणियंवा नेवसयं मेहुणंसेविद्या नेवन्नेहिं मेहुणं-

सेवाविद्या मेदुणंसेवंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावजीवाए तिविहं
 तिविहेणं मण्णं वायाए काणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अ-
 न्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि ।
 अप्पाणं वोसिरामि से मेदुणे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ
 कालओ भावओ दव्वओणं मेदुणे रुवेसुवा रुवसहगएसुवा खित्त-
 ओणं मेदुणे उट्ठलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा कालओणं मे-
 दुणे दियावा राओवा भावओणं मेदुणे रागेणवा दोसेणवा जंपि-
 यमए इमस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अहिंसालखणस्स सच्चा-
 हिद्वियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरत्तसोवन्नियस्स उव-
 समप्पभवस्स नववंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिरुत्ताविन्नियस्स
 कुल्लोसंबलस्स निरगिसरणस्स संपरुत्तालियस्स चत्तदोसस्स गुण-
 गाहियस्स निव्वत्तीलखणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहितंचिय-
 स्स अविस्वाइयस्स संसारपारगामिस्स निव्वाणगमणपद्दावसाण-
 फलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अवोहिए अणभिगमेणं अ-
 भिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिवद्वयाए यालयाए मोहयाए मंद-
 याए किंक्रयाए तिगास्वगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेदियवसट्ठेणं
 पडिपुन्नभारियाए सायासोखमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा
 भवग्गहणेसु मेदुणंसेवियंवा सेवावियंवा सेविच्चंतोवा परेहि समणु-
 न्नाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मण्णं वायाए का-
 णं अइयं निंदामि पडुप्पन्नंसंवरोमि अणागयं पच्चरुत्तामि सव्वंमेदुणं
 जावजीवाए अणिस्सिओहं नेवसयंमेदुणंसेविद्या नेवन्नेहिंमेदुणंसे-
 वाविजा मेदुणंसेवंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसखि-
 यं सिद्धसखियं साहुसखियं देवसखियं अप्पसखियं एवं हव-
 इभिरुत्तुवा भिरुत्तुगीवा संजयविरयपडिहयपच्चस्कायपावकम्मे दि-
 यावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा

एसल्लुमेहुणस्तवेरमणे हिएसुहे समे निस्तेसिए आगुगामिए पार-
 गामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंमूयाणं सव्वेसिंजोवाणं सव्वेसिं-
 सत्ताणं अदुख्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए
 अपोडणयाए अपरियावणियाए अणुद्वणयाए महत्ते महागुणे
 महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिएपसत्ते तंदुख्खसयाए
 कम्मख्खयाए मोहसयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए तिकट्टु उव-
 संपजित्ताणं विहरामि चउत्थे भंते महव्वए उवडिओमि सव्वाओ-
 मेहुणाओवेरमणं ४ अहावरेपंचमे भंते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं
 सव्वं भंते परिग्गहं पच्चख्खामि से अप्पंवा वडंवा अणुंवा थूलंवा चित्त-
 मंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिं परिग्गहं
 परिगिण्हाविद्धा परिग्गहं परिगिन्नंतंवे अन्नेन समणुजाणामि जा-
 वज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरोमि नकार-
 वेमि करंतंपि अन्नंन समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमाभि
 निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से परिग्गहे चउव्विहेपस्सत्ते
 तंजहा दव्वओ खिन्नओ कालओ भावओ दव्वणं परिग्गहे सचि-
 त्ताचित्तमीसेसु दव्वेसु खिन्नओणं परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रन्ने-
 सुवा कालओणं परिग्गहे दियावा राओवा भावओणं परिग्गहे
 अपग्घेवा महग्घेवा रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स
 केवल्लिपन्नत्तस्स अहिंसालख्खणस्स सच्चाहिडियस्स विणयमूलस्स
 खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नववंभचेरगु-
 त्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुख्खोसंवलस्स निरग्गि-
 सरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स
 निव्वित्तीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स अविशंवाइयस्स संसारपा-
 मियस्स निव्वाण गमण पच्चवसाणफलस्स पुर्विअन्नाणयाए अस-
 ॥९॥ अयोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं राग-

दोस पढिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किहयाए तिगारव-
 गरुयाए चउकसाठवगएणं पंचेदियवसट्टेणं पढिपुत्रभारियाए साया-
 सोस्कमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु परिग्गहो ग-
 हिठ्ठा गाहाविठ्ठा विप्पंतोवा परोहिंसमणुत्ताठ तंनिदामिङ्गरि-
 हामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयंनिदामि पड्डप्प-
 अंतंचरेमि अणागयंपच्चत्कामि सबंपरिग्गहं जावज्जीवाए अणिस्सि-
 उहिं नेवसयंपरिगिण्हिजा नेवन्नेहिंपरिग्गहंपरिगिण्हविच्चा परिग्गहं-
 परिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसत्कियं सिद्ध-
 सत्कियं साहुसत्कियं देवसत्कियं अप्पसत्कियं एवंहवइभिस्खूवा भि-
 खूणीवा संजयविरयपडिइय पच्चत्काय पावक्कमे दियावा राठ्ठा
 एगठ्ठा परिसागठ्ठा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसत्तल्लुपरिग्गहस्स-
 वेरमणे हिएसुइ खमे निस्सेसिए आणुंगामिए पारगामिए सबेसिं
 पाणाणं सबेसिंभूयाणं सबेसिंजीवाणं सबेसिंसत्ताणं अदुरुत्तणयाए
 असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-
 णियाए अणुइवणयाए महत्थे महायुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने
 परमरिसिदेसियपसत्ते तंदुस्सत्कयाए कम्मस्कयाए बोदिलाभाए सं-
 सारुत्तारणाए तिकट्टु उवसंपज्जिताणं विहरामि पंचमे भंते महव्वए
 उवडिठ्ठमि सत्ताठपरिग्गहाठ्ठवेरमणं ५ अहावरेठ्ठे भंते महव्वए रा-
 इभोयणाठ्ठवेरमणं सत्तं भंते राइभोयणं पच्चत्कामि सेअसणंवा पाणंवा
 खाइमंवा साइमंवा नेवसयंराइभुंजिजा नेवन्नेहिंराइभुंजाविच्चा राइभुं-
 जंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं
 वायाए काएणं न करेमि न कारव्वेमि करंतंपि अन्नंसमणुजाणामि
 तस्स भंते पढिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवांसिरामि से राइ-
 भोयणे चउविहेपप्पत्ते तंजहा दव्वंत्तं खित्तंत्तं कालंत्तं भावंत्तं दव्वंत्तं
 राइभोयणे असणेवा पाणेवा खाइमेवा साइमेवा खित्तंत्तं राइभोयणे

समयस्त्रित्ते कालओणं राईभोयणे दियावा रत्तिंवा भावओणं राईभो
 यणे तित्तेवा कडुएवा कसाएवा अंबिलेवा महुरेवा लवणेवा रागेणवा
 दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवल्लिपन्नत्तस्स अहिंसालस्क-
 णस्स संचाहिद्वियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसोवन्नि-
 यस्स उवत्तमप्पंभवस्स नव बंभवेरयुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिस्कावि-
 त्तियस्स कुस्कीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपस्कालियस्स चत्तदोसस्स
 गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तोलस्कणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स
 असंनिहिसंचिअस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण-
 गमणपच्चवसाणफलस्स पुब्बिअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अ-
 णंभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिवद्धयाए बालयाए
 मोहयाए मंदयाए किम्भयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं
 पंचेदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोखमणुपालयंतेणं इहंवा
 भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु राईभोयणं भुत्तंवा भुंजावियंवा भुजंतंवा
 पेरेहिंसमणुन्नाओ तंनिदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वा-
 याए काएणं अइयंनिदामि पडुपन्नंसंवेरेमि अणागयं पच्चस्कामि
 संव्वंराइ भोयणं जावज्जोवाए अणित्तिओहं नेवसयं राईभु-
 जिजा नेवन्नेहिंराईभुंजाविजा राईभुंजंतंवे अन्नंसमणुजाणाभि
 तंजहा अरिहंतसत्कियं सिद्धसत्त्विक्कयं साद्धसत्कियं देवसत्कियं
 अप्पसत्कियं एवंहवडंभिस्सूवा भिस्सुणीवा संजयधिरय पडिहय
 पन्नस्कायपावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओया
 सुत्तेवा जागरमाणेवा एमसलुराईभोयणस्सवेरमणे इएसुहेसमे-
 निस्सेत्तिए आणुगाभिए पारगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिं-
 म्याणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अटुस्कणयाए असोयणयाए
 अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणु-
 हवणयाए महग्गेमहायुणे महाणुभावे महापुग्गिण्णुचिन्ने परमरित्ति-

देसिएपसत्ये तंदुरुखरुखयाए कम्मरुखयाए मोहरुखयाए वोहिलाभाए
 संसारुत्तारणाए तिकहु उवसंपजित्ताणं विहरामि छहे भंते महवए
 उवठिओमिसव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥ इवेइयाइं पंच-
 महवयाइं राईभोयणवेरमणछटाइं अत्तहियठाइं उवसंपजित्ताणंविह-
 रामि अप्पसत्थायजेयोगा परिणामायदारुणा पाणाइवायस्सवेरमणे
 एसबुत्ते अइक्कमे ॥ १ ॥ तिव्वरागायजाभासा तिव्वदोसातइवेय
 सुसावायस्सवेरमणे एसबुत्तेअइक्कमे ॥ २ ॥ उग्गाहंअजाइत्ता अव-
 दिन्नेवउग्गइ अदिन्नादाणस्सवेरमणे एसबुत्ते अइक्कमे ॥ ३ ॥ सहा-
 रुवारसागंधा फासाणंचविआरणा मेहुणस्सवेरमणे एसबुत्ते अइ-
 क्कमे ॥ ४ ॥ इच्चापुच्चायगेहीय कंखालोभेअदारुणे परिग्गइस्सवेरमणे
 एसबुत्तेअइक्कमे ॥ ५ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-
 धम्मे पढमंवयमणुरुख्खे विरियामोपाणाइवायाओ ॥ ६ ॥ दंसणना-
 णचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे वोयंवयमणुरुख्खे विरियामो-
 अलियवयणाओ ॥ ७ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-
 धम्मे तइयंवयमणुरुख्खे विरियामोअदिन्नादाणाओ ॥ ८ ॥ दंसण-
 नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरुख्खे विर-
 यामोमेहुणाओ ॥ ९ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसम-
 णधम्मे पंचमंवयमणुरुख्खे विरियामोपरिग्गहाओ ॥ १० ॥ दंसण-
 नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे छट्ठंवयमणुरुख्खे विरियामो-
 राईभोयणाओ ॥ ११ ॥ आलियविहारसमिओ जुत्तोयुत्तोठिओसमण-
 धम्मे पढमंवयमणुरुख्खे विरियामोपाणाइयाओ ॥ १२ ॥ आलियवि-
 हारसमिओ जुत्तोयुत्तोठिओसमणधम्मे वीयंवयमणुरुख्खे विरियामो-
 अलियवयणत्तं ॥ १३ ॥ आलियविहारसमित्तं जुत्तोयुत्तोठिउत्तसमणधम्मे
 तइयंवयमणुरुख्खे विरियामो अदिन्नादाणात्तं ॥ १४ ॥ आलियविहार-
 समित्तं जुत्तोयुत्तोठिउत्तसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरुख्खे विरियामोमेहु-

णात्त ॥ १५ ॥ आलियविहारसमिच्च जुत्तोयुत्तोत्तिष्ठसमणधम्मं पंच-
 मंवयमणुरत्थे विरयामो परिग्गहान् ॥ १६ ॥ आलियविहारस-
 मिच्च जुत्तोयुत्तोत्तिष्ठसमणधम्मं छद्वंयमणुरत्थे विरयामोराईभोयणां
 न् ॥ १७ ॥ आलियविहारसमिच्च जुत्तोयुत्तोत्तिष्ठसमणधम्मं तिविहे-
 णपडिक्कंतो रस्कामिमहव्वएपंच ॥ १८ ॥ सावज्जोगमेगं मिच्चत्तं
 एगमेवअन्नाणं परिवज्जंतोयुत्तो रस्कामिमहव्वएपंच ॥ १९ ॥ अण-
 वच्चजोगमेगं सम्मत्तंएगमेवन्नाणंतु उवसंपन्नोजुत्तो रस्कामिमहव्वए-
 पंच ॥ २० ॥ दोचेवरागदोसे दोन्नियझाणाइअट्टरुद्दाइं परिवच्चंतो-
 युत्तो रस्कामिमहव्वएपंच ॥ २१ ॥ दुविहंचरित्तंधम्मं दोन्नियझाणाइं-
 धम्मसुक्काइं उवसंपन्नोजुत्तो रस्त्वामिमहव्वएपंच ॥ २२ ॥ किण्हा-
 नीलाकाज्ज तिन्नियलेसाज्जअप्पसज्जान् परिवच्चंतोयुत्तो रस्त्वामि-
 महव्वएपंच ॥ २३ ॥ तेउपम्हासुक्का तिन्नियलेसाउप्पसज्जान् उव-
 संपन्नोजुत्तो रस्त्वामिमहव्वएपंच ॥ २४ ॥ मणसामणसच्चविज्ज
 वायासच्चेणकरणसच्चेण तिविहेणविसच्चविज्ज रस्त्वामिमहव्वएपंच
 ॥ २५ ॥ चत्तारियदुहसिज्जा चउरोसन्नातहाकसायाय परिवच्चंतो
 युत्तो रस्त्वामिमहव्वएपंच ॥ २६ ॥ चत्तारियसुहसिज्जा चउव्विहं-
 संवरंसमाहिंच उवसंपन्नोजुत्तो रस्त्वामिमहव्वएपंच ॥ २७ ॥
 पंचेवयकामगुणे पंचेवयअण्हवेमहादोसे परिवच्चंतोयुत्तो रस्कामिम-
 हव्वएपंच ॥ २८ ॥ पंचेदियसंवरणं तद्देवपंचविहमेवसच्चायं उवसंप-
 न्नोजुत्तो रस्कामिमहव्वएपंच ॥ २९ ॥ छज्जीवनिकायघहिं छप्पिय-
 भासान्अप्पसत्थान् परिवज्जंतोयुत्तो रस्त्वामिमहव्वएपंच ॥ ३० ॥
 छविहमभित्तारियं वज्जंपियछविहंतवोकम्मं उवसंपन्नोजुत्तो रस्कामि-
 महव्वएपंच ॥ ३१ ॥ सत्तभयंछाणाइंसत्तविहंचेवन्नाणविभ्रंगा परिव-
 च्तोयुत्तो रस्कामिमहव्वएपंच ॥ ३२ ॥ पिंडेसणपाणेसण उग्गहं-
 सत्तिकयामहव्वयणा उवसंपन्नोजुत्तो रस्त्वामिमहव्वएपंच ॥ ३३ ॥

अष्टमयष्टाणां अव्यक्त्वाहंतेसिंधिच परिवर्धंतो गुत्तो रक्त्वामि
 महव्वएपंच ॥ ३४ ॥ अष्टयपवयणमाया दिष्टा अष्टविहनिष्टि अष्टेहिं उवसं
 पन्नोजुत्तो रक्त्वामिमहव्वएपंच ॥ ३५ ॥ नवपावनियाणां संसार-
 दायनवविहाजीवा परिवर्धंतो गुत्तो रक्त्वामिमहव्वएपंच ॥ ३६ ॥ न
 ववंभचेरगुत्तो दुनवविहंभंभचेरपडिसुदं उवसंपन्नोजुत्तो रक्त्वामिम
 हव्वएपंच ॥ ३७ ॥ उवघायंचदसविहं असंवरंतहयसंकिलेसंच परि
 वज्जंतो गुत्तो रक्त्वामिमहव्वएपंच ॥ ३८ ॥ चित्तसमाहिणणा दस
 चेवदसाउसमणयम्मंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्त्वामिमहव्वएपंच ॥ ३९ ॥
 आसायणंचसव्वं तिगुणं एकारसंविवज्जंतो परिवर्जंतो गुत्तो रक्त्वामि
 महव्वएपंच ॥ ४० ॥ एवंपतिदंडविरट्ति गरणसुद्धोतिसल्लनिसल्लो ति
 विहेण पडिकंतो रक्त्वामिमहव्वएपंच ॥ ४१ ॥ इच्चैयमहव्वयउच्चारणं
 थिरुत्तं सल्लुद्धरणं धिइवलंसान् साहणणेपावनिवारणं निकायणा
 भावविसोही पढागाहरणं निजुहणा राहणा गुणाणं संवरजोगो प
 सव्वखाणो वउत्तया जुत्तया नाणे परमणे उत्तमणे एसल्लुत्तिपं
 कोरेहिं रइरागदोस महणेहिं देसित्थं पवयणस्ससारो छज्जोवनिकाय
 संजमं उवइसित्थं तिप्पुक्क सकयंठाणं अघुवगया नमोत्तुते सिद्धबुद्ध
 मुत्तनीरय निस्संग माणमूरण गुणरयण सायर मणंस मप्पमेय न
 मोत्तुते महय महावीरवद्धमाणस्स नमोत्तुते अरइत्तं नमोत्तुते भग
 वत्तं चिक्कहु इच्चैसा सल्लुमहव्वयउच्चारणाकया इच्चामोसुत्तकित्तणं
 काउं नमोतेसिस्समासमणारणं जेहिंइमंवाइयं छव्विहमावस्सयं भग
 वंतं तंजहा सामाइयं चउवोसव्वत्तं वंदणयं पडिकमणं काउसगो पच्च
 रत्ताणं सव्वेहिं विण्यंमि छव्विहे आवस्सए भगवन्ते ससुत्ते सअउं
 सगंगे सन्नियुत्तो ससंगहणीए जेयुणावा भावावा अरहंतेहिं भ
 गवन्तेहिं पन्ननावा परुवियावा तेभावे सहहामो पत्तियामो रोएमो
 फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सहइत्तेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं

फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपखस्स अंतोचउमासीए अंतो
 संवघस्स जंवाइयं पडियं परियट्ठियं पुच्चियं अणुपेहियं अणुपालियं
 तंदुख्खस्सयाए कम्मस्सयाए मोहस्सयाए बोहिंलाभाए संसारुत्ता
 रणाए तिकट्ठु उवसंपज्जिचाणं विहरामि अंतोपखस्स जंनवाइयं नप
 दियं नपरियट्ठियं नपुच्चियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेवले संतेवी
 रिणं संतेपु रिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरि
 हामो विउट्ठेमो विसोहेमो अकरणयाए अण्णुमो अहारिहं तवोक्कम्मं
 पायच्चित्तं पडिवच्चांमो तस्स मिच्चांमिदुक्कहं नमो ते सिंखमासमणाणं जे
 हिंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्कालियं भगवंतं तंजहा दसवेयालियं
 कप्पियाकप्पियं चुल्लकप्पसुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणीयं
 जीवाभिगमो पन्नवणा महापन्नवणा नंदो अणुयोगदाराइं देविंद
 थुत्तं तंदुलवेयालियं चंदा विच्चयं पमायप्पमायं वीयरगसुयं विहार
 कप्पो चरणविसोही आउरपच्चस्सवाणं महापच्चस्सवाणं सव्वेहिं पिण
 यंमि अंगवाहिरिणं उक्कालिणं भगवंते ससुत्ते सअच्चे सग्गंथे सन्नि
 जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतोहिं भगवंतेहिं प
 न्नत्तावा परुवियावा तेभावे सइहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो
 पालेमो अणुपालेमो तेभावे सइहंतोहिं पत्तियंतोहिं रोयंतोहिं फासंतेहिं
 अणुपालंतेणं अंतोपखस्स जंवाइयं पडियं परिअट्ठियं पुच्चियं अणु
 पेहियं अणुपालियं तंदुख्खस्सयाए कम्मस्सयाए मोहस्सयाए बोहिं
 लाभाए संसारुत्तारणाए तिकट्ठु उवसंपज्जिचाणं विहरामि अंतोप
 खस्स जंनवाइयं नपडियं नपरियट्ठियं नपुच्चियं नाणुपेहियं नाणुपा
 लियं संतेवले संतेवीरिणं संतेपु रिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो प
 डिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्ठेमो विसोहेमो अकरणयाए अण्णु
 मो आहारिहं तवोक्कम्मं पायच्चित्तं पडिवच्चांमो तस्स मिच्चांमिदुक्कहं न
 मो ते सिंखमासमणाणं जे हिंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्कालियं भगवंतं

तंजहा उत्तरश्च यणाइं दसाठकप्पोववहारो इसिभासियाइं महानिसीहं
जंबुद्वीपपन्नत्तो सूरपन्नत्तो चंदपन्नत्तो दीवसागरपन्नत्तो खुड्डियाविमा
णपविभत्तो महलियाविमाणपविभत्तो अंगबूलिया वंगबूलिया वि
वाहबूलिया अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेसमणोववाए
वेलंधरोववाए देविंदोववाए उठ्ठाणसुए समुठ्ठाणसुए नागपरियाव
लियाठ निरयावलियाठ कप्पियाठ कप्पवडिसयाठ पुप्फियाठ पुप्फु
लियाठ वह्नीदसाठ आसीविसभावणाठ दिठ्ठीविसभावणाठ चारणसु
मिणभावणाठ महासुमिणभावणाठ तेअग्गिनिसग्गाणं सव्वेहंपिण्यं
मि अंगवाहिए उकालिए भगवंते ससुत्ते सअत्ते सग्गंये सन्निजुत्तीए
ससंगहणीए जे गुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परुवि
यावा तेभावेसद्वहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो
ते भावे सद्वहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं
अंतोपरुखस्स जंवाइयं पडियं परियट्टियं पुब्बियं अणुपेहियं अणुपा
लियं तंदुरुखखयाए कम्मरुखयाए मोहरुखयाए बोहिलाभाए मां
सारुत्तारणाए त्तिकट्ट उवसंपजित्ताणं विहरामि अंतोपरुखस्स जंन
वाइयं नपडियं नपरियट्टियं नपुब्बियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संते
चले संतेवीरिए संतेपुरिसकारपरिक्खे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो
निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहमो अकरणयाए अणुट्टेमो अहारिहं
तवोकम्मं पायच्चित्तंपडिवज्जामो तस्स मिञ्चामिदुक्कडं नमोतेसिंखमास
मणाणं जेहिंइमंवाइयं दुवालसंगंगणिपिडंगं भगवंतं तंजहा आयारो
सूयगढो ठणो समवाठ विवाहपन्नत्तो नायाधम्मकहाठ उवासगद
साठ अंतगढदसाठ अणुत्तरोववाइअदसाठ पएहावागरणं विवाग
सुयं दिड्ढिवाठ सुदिड्ढिसुहाठ सव्वेहिं पिण्यंमि दुवालसंगे गणिपिडगे
भगवंते ससुत्ते सअत्ये सग्गंये सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जे गुणा
वा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परुवियावा तेभावे स

इहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सव
 इंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो
 पखस्स जंवाइयं पदियं परियट्ठियं पुच्चियं अणुपेहियं अणुपालियं तं
 दुखखक्याएकम्मखक्याए मोहखक्याए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए
 त्तिकट्ठु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अंतोपखस्स जंनवाइयं नपदियं नप
 रियट्ठियं नपुच्चियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेवले संतेवीरिए संतेपुरिस
 क्कारपरिक्रमे तस्सआलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो
 विसोहेमो अकरणयाए अण्णुहेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्चित्तं पडिव
 ज्जामो तस्समिच्चामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं दुवाल
 संगं गणिपिडगं भगवंतं सम्मंकाएण फासंति पालंति पूरंति तीरंति किट्ठं
 ति सम्मंआणाए आराहंति अहंचनाराहेमि तस्समिच्चामिदुक्कडं ॥ सुय
 देवया भगवई, नाणावरणीयकम्मसंघायं ॥ तेसिंखवेज्जसयं, जेसिं
 सुयसागरेभत्ती ? इति पाक्षिकसूत्रं समाप्तं ॥



॥ अथ अण्णुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥

॥ रात्रिनी पावली घनिये निद्रा दूर करीने, पंचपरमेष्ठि स्म-
 रण करी, गृहध्वंता परिहरी, पर्व दिवसथकी प्रथम दिवसें पन्नि-
 लेही राख्यां, जे पोसहनां उपगरण, ते लेई, पोसहशाजोयें थाप-
 नाचार्य समीपें, अथवा गुरुनो संयोग हुवे तो गुरुनी पासें आवी,
 झूमि प्रमार्जी एक खमासमण देई, इरियावहि पडिक्कमि पीठें ख-
 मासमण देई, ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह मुहपत्ती पन्नि-
 लेहुं ? गुरु कहे, पन्निरेहेह. इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती
 पन्निरेहे. पीठें उज्जो थई, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०
 ॥ पोसह संदिस्ताजं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह, पीठें इच्छं कही, ख-
 मासमण देई. इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह गजं ? गुरु कहे

गणह, पीठें इहं कही खमासमण देई उजो धई, आधो शरीर
नमावी मुखें मुहपत्ती देई, मधुरस्वरें तीन नवकार गुणी कहे. इ-
च्छकार जगधन् पसाज करी, पोसह दंरुक उच्चरावो ? गुरु कहे उ-
च्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंतें पोसहं ॥ इहांसिं ले के अप्पाणं वो-
सिरामि ॥ तक कहे. अब पोसहका पञ्चस्वाण लीये, सो लिखते हैं.

॥ अथ पोसहका पञ्चस्वाण प्रारंभः ॥

॥ करेमि जं ते पोसहं, आहार पोसहं, देसजं सवजं वा,
सरीरसक्कार पोसहं, सवजं वंजचेर पोसहं, सवजं अद्यावार पोसहं,
सवजं चउविदे पोसहे, सावज्जं जोगं पञ्चस्वामि, जावदिवसं अहो-
रत्तिं वा पञ्जुवातामि, डुविहं तिविदेणं मणेणं वायाए काएणं, न
करेमि न कारवेमि, तस्स जं ते पन्निक्कमामि निंदामि, गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि.

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुज्ञापण करतो उच्चरे ॥
पीठें एक खमासमणें ॥ इच्छाकाण ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक
मुहपत्ती पन्निजेहुं ? गुरु कहे, पन्निजेदेह. बीजी खमासमण देई
मुहपत्ती पन्निजेह. पीठें दोय खमासमणें सामायिक संदिस्साजं ?
सामायिक ठाजं ? कही, खमासमण देई. अर्धावनतगात्र ऊजो थको
तीन नवकार, गुनी तीन करेमि जंतें उच्चरी दोय खमासमणें बे-
सणो संदिस्साजं ? बेसणो ठाजं ? कही, पीठें दोय खमासमणें सिं-
धाय संदिस्साजं ? सिंधाय करुं ? कही खमासमण देई ऊजो थंको,
आठ नवकारनो सिंधाय करे. शीतादि परिसहे दोय खमासमणें,
पांगरणुं संदिस्साजं ? पांगरणुं पन्निग्घाजं ? कहे. ए सर्व सामायिक-
विधि पूर्व कहीओ ठे. तिमहीज करवो, पण इतनो विशेष ठे. पद्धिलां
इरियावही पन्निक्कमी ठे, तेमाटे इहां सामायिक दंरुक उच्चरयो
पीठें इरियावही नही पन्निक्कमीजें ॥ पीठें चैत्यवंदन, जयवीरराय

सूधी करी कुसुमिण डुस्तमिण काजस्तग करे, पीठें पन्तिकम
वेलासीम सिधाय ध्यान करे. पीठें पूर्वोक्त रीतें पन्तिकमण
पण इतरो विशेष के चारे शुईये देव वांछा पीठें खमासमण
कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बहुवेलें संदिस्ताज ? गुरु कहे,
संदिस्तावेह. पीठें इछं कही खमासमण देई कहे. इच्छाका०
सं० ॥ ज० ॥ बहुवेलें करुं ? गुरु कहे, करेह ॥ पीठें इछं कही
तीन खमासमणें श्री आचार्यजी मिश्र १, श्रीउपाध्यायजी मि
२, श्रीजे सर्वसाधु वांछी, कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं इत्यादि नम
स्कार जणो, जो पन्तिकेहणवेला नाहिं हुवे, तो सीमंधरस्वामी
चैत्यवंदनादि करी, सिधाय करे. हवे पन्तिकेहण वेला पन्तिकेहण
करे, ते विधिपूर्वें आ मंथना ३३ पृष्ठमां लिख्यो वे तो पण संदि
पें फेर लखीये ठैवें. दोय खमासमणें, इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०
॥ पन्तिकेहण करुं ? कही मुहपत्ती पन्तिकेह. पीठें दोय खमा
समणें अंग पन्तिकेहण संदिस्ताज ? अंग पन्तिकेहण करुं
कहे. पीठें गुरुवचनें इछं कही. धोतियो कणदोरो पन्तिकेह
वत्त पहेरी, खमासमण देई, इच्छाकार जगवन् ! पसाज करी, प
न्तिकेहण करावो जी ॥ एम कही, स्थापनाचार्य पन्तिकेही स्थापे
अने जो गुर्वादिक स्थापनाचार्य पन्तिकेहे, तो पण खमासमण देई
उक्त रीतें आग्या भागे, पीठें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं०
॥ ज० ॥ उपधि मुहपत्ती पन्तिकेहुं ? गुरु कहे, पन्तिकेहेह
पीठें इछं कही, मुहपत्ती पन्तिकेही दोय खमासमणे ॥ इच्छाका०
॥ सं० ॥ ज० ॥ उही पन्तिकेहण संदिस्ताज ? गुरु कहे, संदिस्ता
वेह. उही पन्तिकेहण करुं ? गुरु कहे, करेह.

॥ अथ २४ थंडिलां पडिलेहणपाठ लिख्यते ॥

॥ आगाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणदियासे ॥ १ ॥ आ-

गाढे मध्ये उच्चारें पासवणें अणहियासे ॥ १ ॥ आगाढे दूरे उच्चारें
 पासवणें अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणें अणहियासे
 ॥ ४ ॥ आगाढे मध्ये पासवणें अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पा-
 सवणें अणहियासे ॥ ६ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारें पासवणें अहि-
 यासे ॥ ७ ॥ आगाढे मध्ये उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ ८ ॥ आ-
 गाढे दूरे उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्ने पास-
 वणें अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मध्ये पासवणें अहियासे ॥ ११ ॥
 आगाढे दूरे पासवणें अहियासे ॥ १२ ॥ अणागाढे आसन्ने उ-
 च्चारें पासवणें अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मध्ये उच्चारें पास-
 वणें अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारें पासवणें अणहि-
 यासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणें अणहियासे ॥ १६ ॥
 अणागाढे मध्ये पासवणें अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पास-
 वणें अणहियासे ॥ १८ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारें पासवणें अ-
 हियासे ॥ १९ ॥ अणागाढे मध्ये उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ २०
 ॥ अणागाढे दूरे उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे
 आसन्ने पासवणें अहियासे ॥ २२ ॥ अणागाढे मध्ये पासवणें अ-
 हियासे ॥ २३ ॥ अणागाढे दूरे पासवणें अहियासे ॥ २४ ॥ ए
 थंमिलपन्निदेण प्राठ कहा ॥

॥ यह बोवीस थंमिलां कहां कहां करनां ? सो लिखते हैं.

॥ ६ थंमिला शम्प्याके दोनुं तरफ दहिणें पासे १, वाम
 पासे ३, पन्निदेहे ॥ ६ थंमिलां दरवज्जेके ज्जीतर पासें दहिणें ३,
 वामें ३ पन्निदेहे ॥ ६ थंमिलां दरवज्जेके वाहर दोनुं पासें पन्निदेहे
 ॥ ६ थंमिलां जिदां उच्चार प्रस्सवणकी जगा होवे, ते दोनुं तरफ
 पन्निदेहे ॥ इति २४ थंमिलां पन्निदेहणविधिः संपूर्णः ॥

पीठें इच्चं कदी, कंवल वस्त्रादि पन्निदेदी पोसद शाला प्र

मार्जी काजो विधिशुं परवही, एक खमासमण देई इरियावही पन्तिकमे, इहां आचार दिनकरमें कह्यो ठे. दोय खमासमणें इञा का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ वसती संदिस्ताउं ? वसती पन्तिकेहुं ? कही वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे, इत्यादि पण विधिप्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥

॥ इवे एक खमासमणें ॥ इञाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिखाय संदिस्ताउं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह, बीजे खमासमणें ॥ इञाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिखाय करुं ? गुरु कहे करेह, पीठें इञं कही नवकार एक कछन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख सिखाय करी, नवकार एक कही धर्मध्यान करे, जणे, गुणे. वखाण सुणे. इम करतां पूर्ण पदुर दिन चढ्यां. उगधाडा पोरिसी अथवा, बहुपन्निपुन्ना पोरिसी कही, खमासमण देई, इरियावही पन्तिकमी दोय खमासमणें ॥ इञाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पन्तिकेहण करुं ? गुरु वचनें इञं कही, मुहपत्ती पन्तिकेही पान जोजन पात्र पन्तिकेही राखे, पीठें सिखाय ध्यान करे ॥

॥ इवे कालवेलायें आवस्तही पूर्वक देहरे जई पांचे शकस्तये देववांश विधि दो प्रकारसें लिखते हैं ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई. तीन वार नमस्कार करी, जूमि प्रमार्जी, पुरुष हुवे तो प्रजुजीके दक्षिण पासें बेसे, स्त्री हुवे तो वाम पासें बेसे. पीठें ॥ इञाका० सं० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं ? इञं कही, चैत्यवंदन कहे. पीठें नमोभुयं कहे. खमासमण देई इरियावही पन्तिकमे. एक लोगस्तनो काउस्तग्न करे. मुखें लोगस्त कहे. संनास्ता प्रमार्जी बेसे. तीन तथा चार तथा पांच आदि देई नमस्कार कहे. "जं किंचि नाम तिष्ठं" इत्यादि कही पीठें नमोभुयं कहे. उजो अई अरिहंत चेईयाणं करेमि काउस्तग्न वंदणवत्ती०

अन्नबू० कही, एक नवकारनो काजस्तग करे. पारी एक थुईकी गाथा कहे ॥ पीठें लोगस्त० सव्वलोए अरि० वंदणव० अन्नबू कही एक नव० पारी दूरी थुईकी गाथा कहे. पीठें पुस्करवरदी० सुअस्त जग० वंदण० अन्नबू कही एक नवकार० पारी तीसरी थुईकी गा० पीठें सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावज्जगराणं० अन्नबू० इत्यादि कथन पूर्वक चौथी थुईकी गाथा कह कर, बैठकें नमोबूणं कहे. फेर अरिहंतचेई० कहे. इसी तरें चार थुइयें देव वांदी बेसे ॥ नमोबूणं कहे. नमोऽर्हस्तिस्सिद्धाचार्योपाध्याय इत्यादि कही पीठें स्तवन कहे, पीठें जयवीयराय कही. नमोबूणं सव्वे तिविहेण वंदामि पर्यंत कहे ॥ एम पांचे शक्रस्तवें देववंदन विधि जाणवो ॥

॥ ए विधि प्रवचनसारोक्षर प्रमुख ग्रंथमें कह्यो ठे. तथा चैत्यवंदन वृद्धभाष्यमें एम कह्यो ठे ॥ नमस्कार कथन पूर्वक शक्र स्तव कही, इरियावही प्रतिक्रमणादि करें; वली नमस्कार कथनपूर्वक शक्रस्तव कही दोय वार चार थुईसें देव वांदे. फेर शक्रस्तव कही " जावंति चेइयाई " गाथा जणी खमासमण पूर्वक जावंति के० बीजो गाथा कही, स्तवन कहे. वली नमोबूणं कही जयवीयराय कहे ॥ इति देववंदन विधिः ॥

॥ पीठें निस्तही पूर्वक पोसहशाला मांहे आवी, इरियावही पन्निक्मे. पीठें सिद्धाय ध्यान करे, जो तिविहार उपवास कियो हुवे, तो पञ्चस्वणा वेला पूर्ण हुवां जल पीणेकूं पञ्चस्वणा पारे ॥

॥ हवे पञ्चस्वणा पारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पन्निक्मे. फिर एक खमासमण ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पञ्चस्वणा पारवा मुहपत्ती पन्नि लेहुं ? गुरु कहे, पन्निदेहे ॥ पीठें इच्चं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पन्निदेहे. फेर एक खमासमण देई, इच्छाका० ॥ सं० ॥

॥ पाणदार अमुक पञ्चख्वाण पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि का
चव्वो. पीठें यथाशक्ति कदी, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥
॥ पाणदार पारुं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तव्वो. पीठें तदस्ति
कही, अमुक पञ्चख्वाण चत्तविदार कयों, एम एक नवकार गुणी
पञ्चख्वाण फासियं, पालियं, सोदियं, तीरियं, किट्टियं, आरादियं,
जं च न आरादियं, तस्स मिच्छामि डक्कनं, कही ॥ चैत्यवंदन करे.
क्षणमात्र सिद्धाय करी यथासंज्ञवें अतिथिसंविज्ञाग करी पाणीपीवे ॥

॥ तथा उपधानवाही हुवे, तो पोरिसी प्रमुख पञ्चख्वाण
पारी आहार करे. पीठे आसण बैठो थकोहीज दिवस चरिम
पञ्चख्वाणे, पीठें इरियावही पन्निक्कमी चैत्यवंदन करे, ए चैत्यवंदन
आहार संवरण निमित्तें ठे ॥ इति पञ्चख्वाण पारणेका विधि ॥

॥ पीठें जो बहिर्जूमि जावणो हुवे, तो आवस्तही कही
उपयोगी थको, निर्जीव थंनिले जई; अणुजाणह जस्तुग्गहो कही
पूर्व, उत्तर, सूर्य, ग्रामादिकने पूंठि अण देई, मलमूत्र परिवे,
प्राशुकजलें शुद्ध थई तीन वार बोसिरामि, एहयुं कहिये करी मल
मूत्र बोसिरावी, पोसहशालायें निस्तही पूर्वक पेसी इरियावही प
न्निक्कमे. खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ॥ गमणा
गमणं आलोपहं ? गुरु कहे, आलोएह. पीठें इच्छं कही गमणाग
मण आलोवे ॥ ते इम आवस्तही करी, प्राशुक देशें जई, संन
सा पूंजी, थंनिलो पन्निक्कमी, उच्चार प्रथवण बोसिरावी, निस्तही
करी, पोसहशालायें आव्यो ॥ आवंति जंतेंदिं जं खंनियं, जं विरा
दियं, तस्स मिच्छामि डक्कनं, एम कदी वेत्ते. पीठें पन्निक्कमी वेत्ता
सीम सिद्धाय ध्यान करे ॥

॥ हवे पाउले पदुरे इरियावही पन्निक्कमी खमासमण देई
कहे. इच्छाका० ॥ सं० ॥ ॥ पन्निक्कमी करुं ? गुरु कहे करुं.

इष्टं कही दूजे खमासमणें इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसहशाला प्रमार्जु ? गुरु कहे, प्रमार्जह, पीठें इष्टं कही, मुहपत्ती पमिलेही. दोय खमासमणें श्रंग पमिलेहण संदिस्ताजं ? श्रंग पमिलेहण करुं ? कहे, पीठें गुरु वचनें इष्टं कही मुहपत्ती पमिलेही दंमासणो पूंजणी प्रमुखत्ते प्रमार्जी पोसहशाला प्रमार्जे, पीठें काजो गुरु करी, उद्धरी एकात्तें विखरतो परठयो इरियावही पमिकमी, खमासमण पूर्वक कहे ॥ इच्छाकार जगवन् पताउ करी पमिलेहणां पमिलेहावोज ॥ पीठें स्थापनाचार्य पमिलेही स्थापे, गुरुतमीपें अथवा थापनाचार्य तमीपें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे, पमिलेहेह. पीठें इष्टं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पमिलेहे, पीठे दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिधाय संदिस्ताजं ? सिधाय करुं ? उक्त रीतें कणमात्र सिधाय करी तिबिहार उपवास कीधो हुवे तो गुरु साखें पाणिहार पञ्चस्के ॥ उपधानवाही प्रमुख आहार कीधो हुवे, तो वांइणी दोय देई, पञ्चस्काण करे, पीठें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंमिलां पमिलेहण संदिस्ताजं ? बोजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंमिलां पमिलेहुं ? गुरु वचनें इष्टं कही, दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ वेतणो संदिस्ताजं वेतणो ठाजें ? कही वेसे, वस्त्र कंबलादि पमिलेहे, पुंजणी हुवे, तो ते पण मुहपत्तीशुं पमिलेहे, उपवासी तो वे तेमार्ते सर्व पाठो कम्पिटो धोतीयो कणदोरो पमिलेहे, उपधा नवाही प्रमुख जोजन कीधो हुवे तो कम्पिट्टादि पमिलेह्यां, पीठें वस्त्र कंबलादि पमिलेहे, ए विशेष ठे ॥ पीठें कालवेला सीम सिधाय ध्यान करे, पीठें उच्चार प्रश्रवण ३४ थंमिला पमिलेहे, जो चउदश हुवे, तो पांखो चउमासी पमिकमणो करे, संवच्चरीपें

संवन्धरी पन्तिकमणो करे. तिहां देवसी पन्तिकमणो पूर्वे लिख्यो
 ठे, तिमहज करे, पण इतरो विशेष ठे ॥ इच्छा० ॥ देवसियं आलो
 एमि इत्यादि देवसी आलोयां पीठें " ठाणो कमणो चंकमणो " इ
 त्यादि पाठ कहे. खुदोवदव काउस्तग कियां पीठें दोय खमासम
 णें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० सिखाय संदिस्ताउं ? सिखाय करूं ?
 कही वैगो प्रको तीन नवकार प्रमुख सिखाय करै ॥ इति ॥

॥ पाक्षिकादि तीन पन्तिकमणविधि आगे एही पुस्तकमें
 लिख गये हैं. वहांसे जान लेनां.

॥ हवे पन्तिकमणो हुवा पीठें साधुको बेयावञ्च करी पोरसी
 सीम सिखाय ध्यान करे. जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, आसऊ
 कहेतो यको, जूमि प्रमार्जे थंमिल स्थानकें जई, देहशंका निवारे
 प्रश्रवण बोसिरावी, स्वस्थानकें आवे. जगवन् ! बहु पन्तिपुत्रा पो
 रसी एम कही खमासमण देई इरियावही पन्तिकमे, पीठें राई
 संधारा विधि करे ॥

॥ हवे राई संधारा विधि कहे छे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राई संधारा
 मुहपत्ती पन्तिकेहुं ? गुरु कहे, पढिलेहह. पीठें इच्छं कही, खमास
 मण देई मुहपत्ती पन्तिकेदे. एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥
 ज० ॥ राई संधारो संदिस्ताउं ? बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० सं०
 ॥ ज० राई संधारो ठावुं ? पीठें गुरु वचनें इच्छं कही, चउकसाय
 पन्तिमज्जुनूरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक जयधीपराय सुर्वी
 चैत्यवंदन करे. जूमि प्रमार्जी, संधारो उत्तर पट्टो पाथरे, पीठें
 शरीर प्रमार्जी निस्तदी निस्तदी एम कही संधारे घेसी, तीन
 नवकार तीन करेमि जंते ऊचरी ॥ शमो खमासमणणां, गोपमा
 ईसं मंदामुणीसं, 'यणुजाणद जिण्डिआ अणुजाणद परम गुरु'

इत्यादि राइ संघारा गाथा ज्ञानी, वाम हाथ सिराणें देई सोवे. निद्रा नावे जां सोम मुनिवर चरित्र चिंतवे, पतवानो फेर तो शरीर संघारो प्रमाजी फेर, जो देह शंकायें छे, तो पूर्वोक्त विधें देहशंका निवारी, इरियावही पन्निक्कमे ॥ पीठें जघन्यें पण तीन गाथानी सिधाय करी सोवे ॥ इति राइ संघारा विधि कह्यो ॥

॥ हवे रात्रिने पाठिले पदोर छत्री, नवकारावि गुणी, इरियावही पन्निक्कमे. खमासमण देई कुसुमिण डस्तुमिण काउस्तगग करी, पूर्वोक्त विधें सामायिक लेवे, इहां इरियावही न पन्निक्कमे. पीठें दोयखमासमणें सिधाय संदिस्तावी आठ नवकार गुणी, पन्निक्कमण बेला सीम सिधाय करे. पन्निक्कमण बेला हुवां पन्निक्कमणो पूर्वली परें करे, पण इतरो विशेष छे, के राइ आलोयां पीठें संघारा उवळणकी इत्यादि पाठ कहे. एम संपूर्ण पन्निक्कमणो करी पन्निक्कमण बेलायें पूर्वोक्त विधें पन्निक्कमण करी, धर्मशाला पूंजी काजो छहरी इरियावही पन्निक्कमे. दोय खमासमणें सिधाय संदिस्तावी, उपदेशमाला प्रमुख सिधाय करे. पीठें पोसद पारे ॥

॥ अथ पोसदपारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई मुदपत्ती पन्निक्कमे. फेर खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसद पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि कायबो. पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसद पारुं ? गुरु कहे, आपारो न मोत्तवो. पीठें तदति कहे. खमासमण देई अर्थावनत गात्रें उजो यको तीन नवकार गुणी, खमासमण देई, मुदपत्ती पन्निक्कमे, पीठें खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० सामायिक पारुं ? गुरु कहे पुणोवि कायबो. पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पारुं ? गुरु कहे आ-

पारो न मोत्तवो. पीठें तहत्ति कही खमासमण देई. अर्घावनंत गात्रें उजो अको दाथ जोख्यां- मुद्दपत्ती मुखें दियां थकां तीन न वकार गुणी संमासा पमिलेदे. गोमालोथें बेसी मस्तक नमावी, “ जयवं दसन्नजहो ” इत्यादि जावनारूप गाथा कहे. पीठें पोत-हना उपगरण संवरी, देहरे जई देव जुदारे. घरे आवी आहार निष्पन्न हुवो देखी साधु सर्मापिं आवे, अतिथि-संविज्ञागत्रत सा-चवण निमित्तें साधु जणी निमंत्रणा करी, घरे ले जावे, साधु पण शुद्ध आहार लेई, स्वस्थानकें आवे, तिवार पीठें साधुनें जे आहार दीधो, तेहनोहीज शेष आहार आप करे ॥ इति आठ पुहरी पोसह ग्रहण पारण विधिः ॥

॥ हवे दिन ऊग्या पीछें पोसह ले, तेहनो विधि कहे छे ॥

॥ घरअकी निश्चित अई धर्मस्थानकें आवी, सर्व उपगरण पमिलेही, कचरो विधिजुं परठवी इरियावही पमिकमे. खमासमण पूर्वक आग्या मागी, पोसह मुद्दपत्ती पमिलेदे, आगें पोसह ग्रहणका विधि पूर्वे लिखा है. तिमहिज जाणवो. पण दिवस पोसहहीज करणो हुवे, तो पोसह दंमक उच्चरतां जावदिवसं पञ्जु वातामि, एहवो पाठ कहे. अने जो अठपुहरी करवो हुवे, तो जाव अहोरत्तिं पञ्जु वातामि एहवो पाठ कहे. पांठें सामायिक-विधि सर्व करी चैत्यवंदन कुसुमिणउस्समिण काउस्सग्ग करी पमिकमणो करी दोय खमासमणें बहुवेलं संदिस्सावे १, अने जो पूर्व पमिकमणो गुरु सांघे करयो हुवे, तो पमिकमणानें अंतें पमिलेही राख्यां जे वल्ल, ते पहेरी-पोसह सामायिक सर्व विधि करी दोय खमासमणें बहुवेलं संदिस्सावे १, तथा जो गुरुसैं जूदो पमिकमणो करयो हुवे, तो गुरुपासैं आवी पोसह सामायिक सर्व विधि करी, आलोत्तण खामणादि निमित्तें मुद्दपत्ती पमिलेही घे वांदणां

देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राईवं आलोचं ? गुरु कहे, आ-
 लोएह. पीठें राई आलोवे, फेर एक खमासमण देई ॥ इच्छाका०
 ॥ सं० ज० ॥ अमुच्छिन्निमि अग्निंतर, राईवं स्वामेमि ? गुरु कहे
 स्वामेह. पीठें सब पाठ कहे, राई स्वामे, पहिलां पन्तिकमणामें न-
 वकारसी पञ्चख्यो थो तेमाटें पीठें गुरु साखें पञ्चस्काण उपवासनो
 करे. पीठें दोय खमासमणें बहुवेळें संदिस्तावे ॥ ए तीन प्रका-
 रका विकल्प जाणनां. हुवे पन्तिकेदण तो पूर्वे करी वे, तो पण
 आदेश मागवो, ते एम खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०
 ॥ पन्तिकेदण संदिस्तावं ? बीजे खमासमणें पन्तिकेदण करूं ?
 कही मुदपत्ती पन्तिकेहे. पीठें इमहीज दोय खमासमणें अंग पन्ति-
 केदण संदिस्तावी मुदपत्ती पन्तिकेहे. पीठें वली खमासमण देई
 इच्छकार जगवन् ! पसाठ करी पन्तिकेदण पन्तिकेदावो जी. एम
 कहे, पीठें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उ
 पधि मुदपत्ति पन्तिकेदुं ? कही कोई वख अणपन्तिकेदो राख्यो
 हुवे, तो पन्तिकेहे. नही तो वली आसण पन्तिकेदे. दोय खमास
 मणें सिधाय संदिस्तावी उपदेशमाला प्रमुख सिधाय करे. आगें
 सर्व क्रिया पूर्वे अठ पुहरी पोसहमें लिखी है. तिमहीज जाणवी,
 पण इहां अठ पुहरी पोसह तो पावली रातें वली सामायिक न
 लेवे. जिणें दिवस संबंधी चठ पुहरी पोसह लोथो हुवे, ते पाठले
 पुहर् पञ्चस्काण किया, पीठें दोय खमासमणें उही पन्तिकेदण सं-
 दिस्तावं ? उही पन्तिकेदण करूं ? कहे, पण अंगिला पद न कहे.
 अने अंगिला नही पन्तिकेदे. यह निःकेवल दिन संबंधी पोसह म-
 दण करणेंमें विशेष विधिही, सो बताई ॥ इति दिनसंबंधी पोसह
 मदणविधिः ॥

पन्धिलेहण संदिस्तावी, मुदपत्ती पन्धिलेहे. फेर वे खंमासमण देई,
 उही धंमिला पन्धिलेहण संदिस्तावी जो अणपहिलेहो उपगरण
 हुवे तो पन्धिलेहे. जो सर्व उपगरण पन्धिलेह्यां हुवे, तो पण था-
 नक शून्यता टालवा जणी वली आसण पढिलेहो, पढिकमण वे
 ला सीम सिधाय ध्यान करे. पोडें उच्चार प्रभवणना २५ थंडिला
 पढिलेही पढिकमणो करे. तथा पाठलो रातें वलो सामाधिक न
 लेवे. इतनां निकेषल रात्रिसंबंधि पोसह लेवाना विकल्प जाणवा-
 ॥ इति रात्रि पोसहविधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ ठाणेक्रमणे चंकमणे लिख्यते ॥

॥ ठाणेक्रमणे चंकमणे आउते अणाउते ॥ हरिअकायसंधे
 बीयकायसंधे आवरकायसंधे उप्पइयासंधे सघस्तवि देवसिअ,
 उच्चित्तिय दुम्रासिय उच्चिडिय ॥ इच्छाकारेण संदिस्सद, इच्छं तस्स
 मिच्छा मि उक्कमं ॥ १ ॥ संथाराउवटशकी, आउट्टणकी, परिअट्टण
 की, पसारणकी, उप्पइयासंधट्टणकी, अच्चकुवित्तयकायकी, सघस्त
 विराअ, उच्चित्तिय, दुम्रासिय, उच्चिडिय, इच्छाकारेण संदिस्सद,
 इच्छं तस्स मिच्छा मि उक्कमं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ देवांदणमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके
 प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

॥ तत्र प्रथम बीजकी स्तुति ॥

॥ मदीमंरुसं पुत्तसोवन्नदेदं, जणाशंदणं केवलनाणगेइं ॥
 भदानेव लब्धो बहु बुद्धियं, सुसेवामि सीमंधरं तिज्जरायं ॥ १ ॥
 पुरा तारगा जेइ जीवाण जाया, जवस्संति ते सव्व जद्वाण ताया
 ॥ तदा संपयं जे जिणा वट्ठमाणा, सुदं वित्तु ते मे तिलोयप्पहा-
 णा ॥ २ ॥ उरुत्तार संसार कुषार पोयं, कलंका वली पंकपस्काल

तोयं ॥ मणोवन्धियष्टे सुमंदारकप्यं, जिणंदागमं वंदिमो सुमह्यं
॥ ३ ॥ विकोत्ते जिणंदाणणंजोजलीणा, कलारुव लायण सोहमं
पीणा ॥ वहं तस्स चित्तं मे णिअं पि जाणं, सिरी जारई देहि मे
सुद्धनाणं ॥ ४ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति ॥ १ ॥

॥ अथ पंचमी स्तुतिः ॥

॥ पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानकर्म, पंचानुत्तरसीमदिव्य
पदवीवश्याय मन्त्रोत्तमम् ॥ येन प्रोज्ज्वलपंचमीवरतपो व्याहारि
तत्कारिणा, श्रीपंचाननलांघनः स तनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रियम्
॥ १ ॥ ये पंचाश्वरोधसाधनपराः पंचप्रमादीहराः, पंचाणुव्रतपंच
सुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः ॥ कृत्वा पंचरूपीकनिर्जयमघो प्राप्ता
गतिं पंचमीं, तेऽमी संतु सुपंचमीव्रतजृतां तीर्थकराः शंकराः ॥ २ ॥
पंचाचारधुरीणपंचमगणाधेशेन संसूत्रितं, पंचज्ञानविचारसारकृतं
पंचेषुपंचत्वदम् ॥ दीपाजं गुरुपंचमारत्तिमिरेष्वेकादशी रोहिणी;
पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचानां
परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियां, ज्ञक्तानां जविनां गृहेषु ब-
हुशो या पंचदिव्यं व्यधात् ॥ प्रहो पंचजने मनोमतकृतौ स्वारत्न
पञ्चालिका, पंचम्यादितपोवतां जवतु सा सिद्धापिका प्रापिका
॥ ४ ॥ इति श्रीज्ञानपंचमीस्तुतिः ॥

॥ अथ अष्टमीस्तुतिः ॥

॥ चञ्चवीसे जिनवर, प्रणमं हुं नितमेव ॥ आठम दिन करिये,
चंद्रप्रभुनी सेव ॥ मूरति मन मोहे, जाणे पूनिमं चंद ॥ दीगां
दुःख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिलि चोसठ इंद्र, पूजे प्रभु
जीना पाय ॥ इंद्राणी अपघ्नर, कर जोडी गुण गाय ॥ नंदीश्वर
दीपे मिलि सुरवरनी कोड ॥ अठाइ महोत्सव, करतां दोडादोड
॥ २ ॥ शेशुंजां शिखरे, जाणी लाज अपार ॥ चउमासे रदिया,

गणधर मुनि परिवार ॥ जवियणने तारे, देई धरम उपदेश ॥ दूध
साकरथी पण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पडिकमणुं, क
रिये अत पञ्चकाण ॥ आठम तप करतां, आठ करमनी हाण ॥
आठ मंगल थाये, दिन दिन कोडि कळयाण ॥ जिनसूखसूरि कहे,
इम जीवत जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

॥ अथ मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अस्य प्रख्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमसुखं, तथा मध्येर्जन्म
व्रतमपमलं केवलमलं ॥ बलैकादश्यां सदसि लसद्ब्रह्ममहसि,
क्षितौ कळयाणानां क्वपति विपदः पंचकमदः ॥ १ ॥ सुपर्वेद्रथेण्या
गमनगमनैर्भूमिवलयं, सदा स्वर्गत्पेवाहमहमिकया यत्र सलयं ॥
जिनानामप्यायुः क्षणमतिसुखं नारकसदः, क्षितौ ० ॥ २ ॥ जिना
एवं यानि प्रणिजगदुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्तुणामिति च विदि
तं शुद्धसमये ॥ अनिएरिणानां क्षितिरनुजवेयुर्वहुमुदः, क्षि ० ॥ ३ ॥
सुराः सैद्राः सर्वे सकलजिनचंद्रप्रमुदिता, स्तथा च ज्योतिष्कास्त्रि
लज्जवननाथाः समुदिताः ॥ तपो यत्कर्तुणां विदधति सुखं विदिम
तद्दः, क्षितौ ० ॥ ४ ॥ इति मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तुति ॥ हरिगीत च्छंद ॥

॥ ईईकि धपमप, धुधुमि धौधौ, प्रसकिधर, धपधोरवं ॥
वौवौकि धौ धौ, वाग्दिवि वाग्दिविकि, द्रमकि दण रण, द्रेणव ॥
ऊजिऊकि ऊऊऊ, ऊणणरणरण, निजकि निमजन, रंजनं ॥ सुर
शैल शिखरे, जवतु सुखदं, पार्श्वजिनपतिमंज्जनं ॥ १ ॥ कट्टेरंगिनि
घोंगिनि, किटति गिग्गदां धुधुकि घुटनट्ट, पाटवं ॥ गुणगुणण गुणगण,
रणकि रौणें, गुणणगुणगण, गौरवं ॥ ऊजि ऊकि ऊऊऊ, ऊणण र
णरण, निजकि निमजन, सज्जना ॥ कलयंति कमला, कलितक
लमल. मुरुलमीश, मदेजिनाः ॥ २ ॥ ठकि ठूकि ठूठू, ठईठ ठ

ह्रिक, उह्रिपष्टा, ताह्यते ॥ तललौकि लौलौ, त्रैपि त्रैपिनि, मँपिँमँपि
नि, पायते ॥ ॐ ॐ कि ॐ ॐ, थुंगि थुंगिनि, धोंगिधोंगिनि, कल
रवे ॥ जिनमतमनंतं, महिम तनुतां, नमति सुरनर, मुञ्चवे ॥ ३॥
पुंदांकि पुंदां, पुपुद्दि पुंदां पुपुद्दि दोंदों, अंधरे ॥ चाचपट चचपट,
रणकि ऐंऐं रुणण रँरँ, रँवरे ॥ तिदां सरगमपधुनि, निधपमगरस,
सस ससस सुर, सेवता ॥ जिननाट्यरंगे, कुशलमुनि शं, दिशतु
शासन, देवता ॥ ४ ॥ इति श्रीजिनकुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिन० ॥

॥ अथ आंघिलकी स्तुति ॥

॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गोमी
जी, करुणासागर निजगुण आगर गुञ्ज समता रस धामी जी ॥
श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रंगें जी, ते मानव
श्रीपालतणी पेरें पामे सुख सुर संगेंजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज
पाठक, साधु महा गुणवंता जी ॥ दरिसण नाण चरण तप उत्तम,
नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनं ध्यान धरंतां लहियें, अविचल
पद अविनाशी जी, ते सघला जिननायक नमियें, जिएँ ए नीति
प्रकाशी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिम बलि, चैत्रक मास
जगीशैं जी ॥ उजवाली सातमथी करियें, नव आंघिल नव दिवसैं
जी ॥ तेर सहस बलि गुणियें गुणणुं, नवपद केरो सारो जी ।
इण परि निर्मल तप आदरियें, आगम साख उदारो जी ॥ ३ ॥
विमल कमलदललोयण सुंदर, श्रीचक्रेशरि देवी जी ॥ नवपद हें
बकं जिविजन केरां, विघ्न दरो सुर सेवी जी ॥ श्रीखरतर गच्छ न
यक सदगुरु, श्रीजिनजक्ति मुनिंदा जी ॥ तासु पंसायें इणपि
पज्जणें, श्रीजिनघांज सूरिंदा जी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपद ॥

॥ अथ पजूसणकी स्तुति ॥

॥ बलि बलि हुं ध्यावुं गात्रं जिनवर वीर, जिनपर्व पद

सण, दाख्यां धरमनी शीर ॥ आषाढ चौमासें हूँती दिन पंचास,
 पम्किमण संवसरी करिये त्रण उपवास ॥ १ ॥ चठवीशे जिनवर
 पूजा सत्तर प्रकार, करिये जलें जावें जरिये पुण्य जंमार ॥ वलि
 चैत्य प्रवासें फिरतां लाज अनंत, इम परव पजूसण सहुमें मदि
 मावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनायें वंचाय, श्रीकल्प
 सूत्र जिदां सुणतां पाप पुलाय ॥ प्रतिदिन परजावना धूप अगर
 ठरकेव, इम जवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वलि ता
 हम्मीवडल करिये चारंवार, केइ जावना जावे केइ तपसी श्री-
 लभार ॥ अरुदीइ पजूसण एम सेवत आणंद, सुयदेवी सांनिध
 कदे जिनलाज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीपर्यूपणप० ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमस्रअक्रोजितं, धन
 सपनइयाम शरीर सुंदर शंख लंठन शोजितं ॥ शिवादेवि नंदन
 त्रिजग वंदन जविक कमल दिनेश्वरं, गिरनार गिरिवर शिखर
 वंदूं नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ अष्टापदे श्रीआदिजिनवर
 वीर जिन पावापुरे, वासुपूज्य चंपापुरिय सीधा नेम रेवय
 गिरिवरे ॥ समेतशिखरे वीत जिनवर मुगति पडुता मुनिवरू,
 चठवीत जिशवर तेह वंदूं सयल संघे सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यार
 अंग उपांग बारे दश पयन्ना लाणिये, ठ छेद ग्रंथ प्रसन्न अन्ना
 चार मूल वखाणिये ॥ अनुयोग छार उदार नंदीसूत्र जिन
 मत गाइये, एह वृत्ति चूर्णी जाप्य पेंतालीश आगम ध्याइये
 ॥ ३ ॥ डहुं दिसें बालक दोय जेदने सदा जवियण सुखकरू,
 डख हरे अंबा लुंब सुंदर डरिय दोहग अपहरू ॥ गिरनार मंमण
 नेमि जिनवर चरणपंकज सेविये, श्रीसंघ सहुनें सदा मंगल करो
 अंबा देविये ॥ ४ ॥ इति गिरनारमंमण श्रीनेमि० ॥

॥ अथ दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ पापायां पुरि चारुपष्ठतपसां पर्यंकपर्यासनः, द्रुमापालप्र
 मुहस्तपालविपुलश्रीगुह्यशालामनु ॥ गोसे कार्तिकदर्शनागकरणे
 नूर्यरिकीति शुभे, स्वांतौ यः शिवमाप पापरहितं संस्तौमि वीरप्र
 भुम् ॥ १ ॥ यं जगन्निगमनोन्नव व्रतं वरज्ञानाक्षरासिद्धये, संजुयांशु
 सुपर्वसंततिरहो चक्रे महस्तत् केषांत् ॥ श्रीमन्नाजिज्जवादिवीरव
 रमास्ते श्रीजिनाधीश्वराः, संघायानघचेतसे विदधतां श्रेयांस्यने
 नास्ति च ॥ २ ॥ अर्थात्पर्वमिदं जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाजिघ,
 स्तत्पश्चाज्जलनायका विरचबाचकुस्तरां सृजतः ॥ श्रीमन्तीर्थसमर्थनै
 कसमये सम्यग्दृशां जूस्पृशां, जूयांनावुकंकारकप्रवचनं चेतश्चम
 स्कारि यत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थज्ञावनपरां सिद्धयिका देव
 ता, चंचच्चक्रधरा सुरासुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिन
 चङ्गीस्तुमतिनो ज्ञव्यात्मनः प्राणिनो, या चक्रेऽवमकष्टदस्तिनिधने
 शार्दूलविक्रीमितम् ॥ ४ ॥ इति दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ अथ थुइसंग्रह लिख्यते ॥

॥ अथ वीसविहरमानकी स्तुति ॥

पंचविदेहविपे विहरता । वीस जिनेसर जग जयवन्ता ॥ चरण
 कमल तसु नामूं सीस । अर्हनि स समरू ते जगदीस ॥ १ ॥
 च मेरुपासे जलकंता । सोहे वीस महा गजदन्ता ॥ तिण ऊपर
 जिनहर वीस । ते जिनवर प्रणमूं निसदीस ॥ २ ॥ गणहर कहि
 डुवालस अंग । ध्यानक वीस जणया तिहां चंग ॥ तिण ऊपर
 ध्याणे रंग । ते नर पामे सुख अजंग ॥ ३ ॥ जिनसासनदेवी
 छवीस । पूरे मुज मनतणी जगीस ॥ संघतणा जे विधन निवारे
 तिहुअण ज मन वंछिय सारे ॥ ४ ॥

॥ पार्श्वजिन स्तुतिः ॥

समदमोत्तमवस्तुमहापणं । सकलकेवलनिर्मलतद्गुणं ॥ नः
 गरजेसलमेरविभूषणं । जजति पार्श्वजिनं गतदूषणं ॥ १ ॥ सुरनरे
 श्वरनम्रपदांबुजाः । स्मरमहीरुहजंगमतंगजाः ॥ सकलतीर्थकराः सुख
 कारका । इह जयंतु जगज्जनतारकाः ॥ २ ॥ अयति यः सुकृती जि
 नशासनं । विपुलमंगलकेलिविज्ञासनं ॥ प्रबलपुन्यरमोदयधारिका ।
 फलति तस्य मनोरथमालिका ॥ ३ ॥ विकटसंकटकोटिविनाशिनी ।
 जिनमताश्रितसौख्यविकाशिनी ॥ नरनरेश्वरकिन्नरसेविता । जयंतु
 सा जिनसासणदेवता ॥ ४ ॥

॥ अथ ऋषभदेवस्तुति प्रतिपदाकी ॥

॥ वरमुत्तियहारसुतारणं । वरचित्तकलत्तसुपत्तथणं ॥ पंकव
 ष्पयदेवगणं । सिरिअवुय वंदूं आदिजिणं ॥ १ ॥ तियलोयनमंस्ति
 वंषांयजुआ घणमोइमहीरुहमतंगया ॥ परिपालिअनिञ्जलीवदया ।
 मम हुंति जिनागमसुस्तया ॥ २ ॥ पणयंगिमहात्तमरोरहरं । क
 ह्माणपयोरुहवुद्धिकरं ॥ सुहमग्गकुमग्गपयासकरं । पणमामि जि
 नागममन्धिकरं ॥ ३ ॥ सिरइदसमुज्जगायलया । सुहजाणविणम्मि
 यणगलया ॥ अंतुरिंदसुरेदंसुरप्पणया । मम वाणि सुहाणि कुणेसुत्त
 था ॥ ४ ॥ इति ऋषभदेवस्तुतिप्रतिपदाकी ॥

॥ अथ आदिजिन प्रतिपदा स्तुति ॥

॥ प्रणमूं परमं पुरुषवरमेसर, परमात्तमपद धारीजी । प्रथम
 जिनेसर प्रथमं नरेसर, प्रथम परम उपगारी जी ॥ योगीसर जिन
 राज जगतगुरु, सहजानंद स्वरूपोजी । ऋषभजिनेसर लोकदिने
 सर, आत्तमसंपद भूषोजी ॥ १ ॥ पांच नरत्त वलि पांचे एरवत्त,
 पंच विदेह मऊरोजी । काल अतीत अनंता जिनवर, पाम्यासिव
 पद सारोजी ॥ वलिय अनगत काल अनंता, आस्ये इणही प्रका

रोजी । संप्रति काले वीत विदेहे, बंडु बहु सुखकारोजी ॥ १ ॥
 अरथे श्रीजिनराज वखाणपा, गूण्यां श्रोगणधारोजी । अंग दुवालत
 अतिसे उत्तम, अरथ विविध यिस्तारोजी ॥ गुण परजय नय अंग
 प्रमाणे, जिहां पदङ्ग्य विचारोजी । ते आगम मन श्रुद्ध आराध्यां,
 तूटे कर्मविकारोजी ॥ ३ ॥ सुंदर रूप अनूपम सोहे, श्री चक्रेसरिदे
 वीजी । श्रीजिनसासन सानिध करणो यो, वंछित नित सेवीजी
 ॥ कल्याण कारण जेदनी सेवा, संघ सकल सुख कंदानी । श्रीजि
 नचंद सुणिंद पसाये, कहे जिनदर्य सुरिंदाजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितनाथ स्तुति ॥

विश्वनाथक लायक जितशत्रु विजया नंद । पयजुग नित प्र
 णमे देव अने देविंद ॥ जवलहरी गहरी सब मन धरी अमंद ।
 श्रीसूरतसहिरे वंदो अजितजिनंद ॥ १ ॥ आठ प्राप्तीहारज अति
 शय बलि चोतीस । दिलरंजन देसन तेदना गुणपेंतीस ॥ अगणि
 त रुद्धिधारी आचारीमां ईस । एह गुणना धारक बंडु जिन चोवी
 स ॥ २ ॥ सुद्ध अरथ अनोपम जिन ज्ञापित सिद्धांत । स्वाहादन
 यादिक हेतुगुक्ति नवि ज्ञांत ॥ पापकरदमपाणी सदगतिनी सह
 नाणी । सुणिये नित जविका आगमकेरी वाणी ॥ ३ ॥ सासणनी
 साची देवी सानिधकारी । दुःखकष्टनिवारण सेवीजे सुखकारी ॥
 साचे मन समरे ते सुख लाज अपारी । जिनलाज पंचपे होज्यो
 जयशकारी ॥ ४ ॥ इति अजितनाथस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुति अणोज्ञासी ॥

॥ यदंहीनमतादेव । देहिनःसंति सुस्मिताः ॥ तस्मै नमोस्तु
 वीराय ॥ सर्वविघ्नविघातिने ॥ १ ॥ सुरपतिनतचरणयुगान् । नाजे
 जन ॥ पति ॥ नौमि यच्चनपालनपरा । जलांजलिंददतु दुःखे
 ॥ २ ॥ वदंति वृंदारुणाग्रतो जिनाः । सदर्थतो यच्चयंति

सूत्रतः ॥ गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे । तदंगिनामस्तुमतं नृमुक्तये ॥
 ३ ॥ शक्रः सुरासुरवरैस्तददेवताभिः । सर्वज्ञशासनसुखायसमुपता
 भिः ॥ श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान् । ज्ञानान् जनान्नपतु नित्यं
 ममहृत्तेज्यः ॥ ४ ॥ इति महावीरस्तुति अणोजारी ॥

॥ अथ लघ्वी खोछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ वीरं देवं नित्यं वंदे ? जैनाः पादा युष्मान् पांतु १ जैनं
 वाक्यं ज्ञूयाद्भूतये ३ सिद्धा देवी दद्यात्सौख्यं ॥ ४ ॥ इति लघ्वी
 स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री वीरजिन स्तुतिः ॥

॥ मूर्ति मनमोहन कंचन कोमल काय, सिद्धारथ नंदन
 त्रिसलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक लंठन सात हाथ तनु मान, दि
 नश् सुखदायक स्वामि श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वं
 दित पद अराविंद, कामित जरपूरण अजिनव सुरतरुकंद ॥ जवि
 यणने तारे प्रवहणसम निसवीत, चोवीसे जिनवर प्रणमं विसवा
 वीत ॥ २ ॥ अरथे करि आगम ज्ञाख्या श्रीजगवंत, गणधर ते
 गूंछ्या गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पिण महिमा कह न सके
 एकांत, समरुं सुखदायक मन सुथ सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ सिद्धायि
 का देवी वारे विघन विशेष, सहू संकट चूरे पूरे आस अशेष ॥
 अहनिस्ति कर जोरुी सेवे सुरनर ईद, जेपे गुणगण इम श्रीजिन
 लाज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति वीरजिन स्तुति ॥

॥ अथ श्रीचतुर्विंशति जिनानां पंचकल्याणक स्तुतिः ॥

॥ नात्तेयं संजवं तं, अजियसुविदयं, नंदणं सुखयथा ॥ सु
 प्पासं पठमनाहं, सुविघशसिपहुं, सीयलं वासुपूज्यं ॥ श्रेयांसं ध
 र्मेशातिं, विमलअरिजिनं, मल्लिकुंयुं अणंतं, नेमिं पासं च वीरं,
 नमिमविनमिसौ, पंच कल्याण एसु ॥ १ ॥ गम्मे हाणेषु जम्मे,

रोजी । संप्रति काले वीत विवेहे, वंडु बहु सुखकारोजी ॥ २ ॥
 अरथे श्रीजिनराज वखाएपा, गूण्यां श्रीगणधारोजी । अंग दुवाएन
 अतिसे उत्तम, अरथ विविध यिस्तारोजी ॥ गुण परजय नय अंग
 प्रमाणे, जिहां पदङ्ग्य विधारोजी । ते आगम मन श्रुद्ध आराध्या,
 तूटे कर्मविकारोजी ॥ ३ ॥ सुंदर रूप अनूपम सोहे, श्री चक्रेसरि
 वीजी । श्रीजिनसासन सानिध करणो द्यो, वंछित नित सेवीजी
 ॥ कल्याण कारण जेदनी सेवा, संघ सकल सुख कंदानी । श्रीजि
 नचंद मुण्डि पसाये, कहे जिनदर्य सुरिंदाजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितनाथ स्तुति ॥

विश्वनाथक लायक जितशत्रु विजया नंद । पयजुग नित प्र
 णमे देव अने देविंद ॥ जवलहरी गहरी सब मन धरी अमंद
 श्रीसूरतसहिरे वंदो अजितजिनंद ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अति
 शय बलि चोतीस । दिजरंजन देसन तेदना गुणपेंतोस ॥ अगशि
 त रुद्धिधारी आचारीमां ईस । एह गुणना धारक वंडु जिन चोवी
 स ॥ २ ॥ सुद्ध अरथ अनोपम जिन ज्ञापित सिद्धांत । स्पाद्वादन
 यादिक हेतुगुक्ति नवि अंत ॥ पापकरदमपाणी सवगतिनी सह
 नाणी । सुणिये नित जविका आगमकेरी वाणी ॥ ३ ॥ सातपानी
 साची देवी सानिधकारी । दुःखकष्टनिवारण सेवीजे सुखकारी ॥
 साचे मन समरे ते सुख लाज अपारी । जिनलाज पयंपे होज्यो
 जयशकारी ॥ ४ ॥ इति अजितनाथस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुति अणोज्ञासी ॥

॥ यदंद्दिनमतादेव । देहिनः संति सुस्त्रिताः ॥ तस्मै नमोस्तु
 वीराय ॥ सर्वविघ्नविधातिने ॥ १ ॥ सुरपतिनतचरणयुगान् । नाजे
 यजिनादिजिनपति ॥ नौमि यद्वचनपालनपरा । जलांजलिंददतु दुःखे
 न्यः ॥ २ ॥ वदंति वृंदाकृष्णायतो जिनाः । सदर्थतो यद्वचंति

सूत्रतः ॥ गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे । तदंगिनामस्तुमत्तं नृमुक्तये ॥
 ३ ॥ शक्रः सुरासुरवैरैस्सहदेवताभिः । सर्वज्ञशासनसुखायसमुपता
 भिः ॥ श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान् । ज्ञयान् जनान्नपत्तु नित्यं
 ममङ्गलेज्यः ॥ ४ ॥ इति महावीरस्तुति अणोजारी ॥

॥ अथ लघ्वी स्त्रीवन्दसि वीरस्तुतिः ॥

॥ वीरं देवं नित्यं वन्दे । जैनाः पादा युष्मान् पातु १ जैनं
 वाक्यं जूपाभूत्यै ३ सिद्धा देवी दद्यात्सौख्यं ॥ ४ ॥ इति लघ्वी
 स्त्रीवन्दसि वीरस्तुतिः ॥

॥ अथ श्री वीरजिनस्तुतिः ॥

॥ मूर्ति मनमोहन कंचन कोमल काय, सिद्धारथ नंदन
 त्रिसलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक लंठन सात हाथ तनु मान, दि
 नः सुखदायक स्वामि श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वं
 दित पद अरविंद, कामित जरपूरण अजिनव सुरतरुकंद ॥ जवि
 यणने तारे प्रवहणसम निसवीत, चोवीसे जिनवर प्रणमं विसवा
 वीत ॥ २ ॥ अरथे करि आगम ज्ञाख्या श्रीजगवंत, गणधर ते
 गूणया गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पिण महिमा कह न सके
 एकांत, समरुं सुखदायक मन सुय सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ सिद्धायि
 का देवी वारे विपन विशेष, सहू संकट चूरे पूरे आस अशेष ॥
 अहनिस्ति कर जोनी सेवे सुरनर इंद, जंये गुणगण इम श्रीजिन
 लाज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति वीरजिनस्तुति ॥

॥ अथ श्रीचतुर्विंशति जिनानां पंचकल्याणकस्तुतिः ॥

॥ नाज्जेयं संजयं तं, अजियसुविदयं, नंदणं सुवयथा ॥ सु
 प्पासं पठमनाहं, सुविघशसिपहुं, सीयलं वासुपूज्यं ॥ श्रेयांसं ध
 र्मेशातिं, विमलअरिजिनं, मल्लिकुंधुं अणंतं, नेमिं पासं च वीरं,
 नमिमविनमिसी, पंच कल्याण एसु ॥ १ ॥ गप्पे हाणेषु जम्मे,

सर्व गदणखणे, केवले लोयकाले, पछाशिवायणठणे, पगवण समए,
 संयुआ जावसारं ॥ देवेदिं दाणवेदिं, जवणवणसए, वितरे किंन
 रेदिं, । तं मझं दिंतु मोस्कं, सयलजिनवरा, पंच कड्याण एसु ॥२॥ हेऊं
 तित्थंकराणं, जमिदअणुवमं, जावतित्थंकरंतं । सयन्नूणं च पासा
 अहमविनियमा, जायए सबकालं ॥ अन्ननुन्नप्पत्तिएदिं, नियगममदणं
 धीयअंकूररूवं । अद्यावाहं जिणाणं, जयउ पवयणं, पंच कड्याण ए
 ॥३॥ गोरीगंधारकाली, नरवरमहिपी, हंससंगोरिदवा । सबवामाणा
 वा, वरकमलकरा, रोहिणीउत्तअंवा ॥ पन्नत्ती उत्तपन्नमा, धराइसा
 एई, खित्तगेहाइवासा । संतिं संघे कुणंतु, गदगणसईया, पंच क
 ड्याण एसु ॥४॥ इतिश्रीचतुर्विंशतिजिनानांपंचकड्याणकस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुतिः ॥

॥ श्रीसेत्रुंजमंरुण आदिदेव । हूं अहनि स समरूं तासं सेव
 ॥ रायणतल पगलां प्रभूतणा । पूजि सफल फल सोहामणा ॥१॥
 तेवीस तीर्थंकर समवसरया । विमलाचल ऊपर गुण जरया ॥ गिरि
 कन्ये आया नेमनाथ । ते जिनवर मेलो मुगतिसाथ ॥२॥ सोहम
 सांमी उपदिस्था । जंबुगणघरने मन बस्या ॥ पुंरुरगिरि महिमा
 जे मांइ । ते आगम समरूं मनउवाइ ॥ ३ ॥ चक्रेसरि गोमुख ल
 वरुयक्त । मन वंछित पूरण कळपवृक्त ॥ सिद्धक्षेत्रसिद्धरे सहदेव
 ता । जणे नंदिसूरि तुम पाय सेवता ॥३॥ इतिश्रीशत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ नेमजिन स्तुतिः ॥

॥ गिरनार सिखरपर नेमनाथ सुपहाण । दीक्षा वर केवल
 ज्ञान अने निरवाण ॥ जसु तीन कड्याणक सुखकर सुरतरुकंद । तसु
 जवियण प्रणामो पाययुगलअरविंद ॥ १ ॥ अद्यावय चंपा पावापुर
 अज्ज ठाण । आइम बारम जिणं चउवीसम जिणज्जाण ॥ अजिता
 दिक वीसे पुइता सिवपुर वास । समेतशिखरपर प्रणामुं अधिक

उद्धास ॥ २ ॥ जिणवर मुख हूँती सुणि त्रिपदी ततकाल । ग
णधारक गूँछ्या द्वादश अंग विशाल ॥ नयजंग पदारथ सत्त
नव तत्त । जवियणने तारे सायर जिम बोद्धित्थ ॥ ३ ॥ चक्केस
रि अंधा पन्नमादेवि प्रत्यक्ष । श्रीसंघ मनोरथ पूरे वासुखवृक्ष ॥ ध्या
वे सुख पावे श्रीजिनलज्ज सूरिस । जिनवर सुप्रसादे आस फले
सुजगीस ॥ ४ ॥ इति नेमजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीशितलजिन स्तुतिः ॥

॥ सुख समकितदायक कामित्त सुरतरुचंद । दृढरथ नृप रा
णी नंदाकेरो नंद ॥ जदिलपुर स्वामी फेरे जवना फंद । चित्त चो
खे नमिये श्रीशितलजिनचंद ॥ १ ॥ अतीत अनागत दुआ होस्ये अ
नंत । संप्रति काले जे क्षेत्र विदेह विचरंत ॥ त्रिहुं जवणे ठवणा
सासय असासय हुंत । ते सगला त्रिकरण प्रणमुं श्रीअरिहंत ॥ २
॥ कालिक वत्कालिक अंग अनंग पविठ । नयजंग निरेकेपा स्या
द्वाद मितसिठ ॥ जविजन उपगारी ज्ञारी जिन उपदेश । श्रुत
अवणे सुणतां नासे कोरि कलेश ॥ ३ ॥ ब्रह्मजक्ष असोका सा
सन सुरि सुविचार । संप साविधकारी निरमल समकित धार ॥
चिंता डुख चूरे पूरे मनह जगीस । ध्यान तेहनो धरिये कहे जिन
लज्जसूरिस ॥ ४ ॥ इति श्रीशितलजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ समवसरणविचारगर्भित स्तुतिः ॥

॥ मिल चोविह सुरवर विरचे त्रिगुणो सार । अढी गाठ
छंचो पिहुलो जोयण पार ॥ विच कनकसिंहासन पदमासन सुख
कार । श्रीतीर्थनायक वैसै चोमुखधार ॥ १ ॥ तीन वज्र सिरो
वर चामर ढोले इंद । देवउज्जि वाजे ज्ञाजे कुमति फंद ॥ ज्ञा
मंमल पूंठे जलके जाण दिनंद । तिहुअण जन जवि मन मोदे
सयल जिनंद ॥ २ ॥ इय ज्ञाव सुठवणा नाम निरेकेपा अपार ।

जिण गणहर ज्ञाख्या सूत्र सिद्धांत मज्जार ॥ जिनवरनी पन्निमां
जिन सरखी सुखकार । शुभ जावे वंदो पूजो जग जयकार ॥ १ ॥
उख हरणी मंगल करणी जिनवर वाणी । जवछेद रुपाणी मीठी
अमिय समाणी ॥ मन गुदे आणी प्रतिवूजो जवि प्राणी । सुय
देवि पसायें पामे जयति सुनाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचैत्री पुनम स्तुति ॥

॥ सेतुंजगिरि नमिये रूपजदेव पुंरुकीक । शुभ तपनी म
हिमा सुण गुरुमुख निरञ्जीक ॥ शुद्ध मन उपवासे विधिसुं चैत्य
वंदनीक । करिये जिन आगल टालो वचन अलीक ॥ १ ॥ शक
स्तवनादिक प्रथम तिलक वस वीस । अकृत गिणतीसे चढता ति
चालीस ॥ पंचासनी पूजा जापइ इम जगदीस । तेहिज नितः
एमूं स्वामी जिन चोवोस ॥ २ ॥ सुदि पकनो पूनम चेत्र मा
शुभ वार । विधितेती लहिये आगम साख विचार ॥ इन सोले
वरसलग धरिये ज्ञान उदार । करतां नर नारी पामे जवनो पा
॥ ३ ॥ सोवन तन चरणे नयने तिम अरविंद । चक्रेतरीदेवी से
विय नर सुरवंद ॥ कामित सुखदायक पूरय मन आशंद । जंषे
गणनायक श्रीजिनलान्तूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीचैत्रीपूनमस्तुतिः ॥

॥ अथ नवपदस्तुति ॥

॥ समरुं सुखदायक मन सुध वीर जिनंद । जिण नवपद
महिमा जापी ज्ञान दिणंद ॥ आसु मधु उज्जल सातमथी नव
दीस । नव आंखिल करिये मन धरि अधिक जगीस ॥ १ ॥ अरि
हंत बलि सिद्ध आचारज उवझाय । मुनि दरसण तिम बलि नाण
चरण तव थाय ॥ प्रतिपदनो गुणनो गुणिये दोष दह्कार । सहु
जिननी पुजा कीजे अष्ट प्रकार ॥ २ ॥ वारस अरुवत्तीस पण वी
स संग वीस सार । समसठ इकावन सितर पचास प्रकार ॥ इण

संख्या काउसग परदक्षा परिणाम । आगम ज्ञापित विधि इम
कीजे अन्निराम ॥ ३ ॥ चक्रेसरिदेवी तिम विमलेसर जस्क । श्री
पालतणीपर पूरे वंछित सुस्क ॥ इण विधि आराधो सिद्धचक्र जवि
प्राणी । जिनहर्ष वदे नित श्रीजिनचंदनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुतिः ॥

॥ शिवसुख दाता जगत विख्याता पूरण अजिनव कामी
जी । ज्ञानादिक गुण चेतनरूपी चिदानंदघन धामीजी ॥ आनक
बीसे आगम ज्ञापिया बीतराग गुण जुकाजी । जे नर अंतर आ
तम ध्यावे सियरमणी वर युकाजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन
सूरी धिवर पाठक मुनि सारोजी । ज्ञानी दरसन विनय चारित्र
ब्रह्मचारज क्रियधारोजी ॥ तपसी गणधर जिण चारित्री नाण श्रुत
तिष्ठ जूषोजी । ए पद निज जवि जावे सेवे तेहिज ब्रह्म तरुषो
जी ॥ २ ॥ दोय सदस गुणनो प्रत्येकें व्याप सया उपवासोजी ।
इव्यजावसें विधि परकासे तीर्थेकर पद खासोजी ॥ तीजे जव
वर बीस आनकनी सेव करे जव्य प्राणीजी । समकित बीजे जे
निज आतम आरोपे चित्त आणीजी ॥ ३ ॥ सुरतरुसम तप फल
हे मोढो श्रीसुरदेवि सदाईजी । खरतर गह्वर जिन आज्ञाधारी पा
ढोधर वरदाईजी ॥ जिन सौजाग्यसूरिंद पसायें हंस सूरिंद गुण
गावेजी । संघ सकलकृं सानिधकारी मन वंछित फल पावेजी ॥
४ ॥ इति श्रीबीसस्थानक स्तुति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुति ॥

॥ अरिहंत सिद्ध प्रवयण आचारज धिवराण । उवजाय सादू
नाण दंसण विनय पदाण ॥ चारित्र ब्रह्म किरिया तपि गोयम
जिनजाण । संयम नाणी श्रुत संघ सेवो बीसे गण ॥ १ ॥ उ
त्कृष्टे जिनवर एकसो सित्तर धीर । बलि काल जघन्ये जिनवर

वीस गंजीर ॥ जिन थाय अनंत अतीत अनागत काल । ए वीसे
 थानक आराधी गुणमाल ॥ २ ॥ आवश्यक वे वेला जिनवंदन
 त्रिण काल । थानकपद गिणवो सदस दोय सुकमाल ॥ काउसग
 गुण स्तवना पूजा प्रज्ञावना सार । इम शासन वञ्चल करतां ज
 वनो पार ॥ ३ ॥ समरीजे अहनिशि गुणरागी सुर साथ । जस
 जसणी सुरपती वेयावच कर नाथ ॥ थानकतप विधसुं जे सेवे
 मन रंग । देवचंड आणाये सानिध करे तसु चंग ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तुति ॥

॥ अनुपम गुण आगर सुक सागर वंदित सुरनर वृंदाजी ॥
 नवपदमाहे मुख्य वखाण्या रुपजादिक जिनचंदाजी ॥ ज्ञांव धरी
 ने जे ज्ञवि वंदे ठेदे कर्म निकंदाजी । नृप श्रीपालतणीपर ध्यावो
 पावो सुक अमंदाजी ॥ १ ॥ अरिदंत सिद्ध सूरि उवखायां संकल
 मुनि सुखकारीजी । दंसण नाण चरण तप नवपद धारे चित सें
 नारीजी ॥ नवभेंजव ज्ञवि तिवपद पावे प्रवचन वाणी सांखीजी ।
 वीरजिनंदे ज्ञानानंदे गौतम आगे ज्ञाखीजी ॥ २ ॥ छादस आठ ठचीते
 गुण वलि पणवीस सगवीस सारोजी । समसठ इक्कावन वलि जैती
 सितर पञ्चास प्रकारोजी ॥ आसू चैत्रक मास धवल पख सातम
 श्री नव दिहसेंजी । तेरसहस नव पदनो गुणनो नव आंखिल नव
 दिहसेंजी ॥ ३ ॥ विमलयक चक्रेसरीदेवी रिघ सिध वंछित दाता
 जी । ज्ञानी नव विधि युक्ते सेवे ते पामे सुखशांताजी । स्वरतर
 गव जिन आज्ञाकारी पाटोधरपद चुकाजी । जिन सौजाग्यसूरिद
 पंसाये हंससूरिद गुण उकाजी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपदस्तुति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥ विमलाचल मंरुने जिनवर आदिजिणंद । निरमम निरमोही
 कैवलज्ञान दिणंद ॥ जे पूर्व निवाणूं वार धरी आनंद । सेत्रंजगि-

रिसिखरे समवसंस्था सुखकंद ॥ १ ॥ इण चनुवीसीमां कृपज्ञादिक
 जिनराय । वलि काल अर्ताते अनंत चोवीसी थाय ॥ ते सवि इण
 गिरवर आवी फरसी जाय । इम ज्ञावी काले आवस्ये सवि मुनि-
 राय ॥ २ ॥ श्रीकृपज्ञना गणधर पूंरुकीक गुणवंत । द्वादस अंग
 रचना कीधी जेण महंत ॥ सब आगममांहे सेत्रुंज महिम् महंत
 । ज्ञाखी जिन गणधर सेवो करि थिर चित्त ॥ ३ ॥ चक्रेसरि गोमुह
 कंवरु पमुह सुर सार । जसु सेवा कारण थापे इंड उदार ॥ देवचंड-
 गणि ज्ञाखे जिविजनने आधार । सब तीरथमांहे सिद्धाचल सिरदार
 ॥ ४ ॥ इतिसेत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशांतिनाथ स्तुति ॥

॥ शांति जिनेसर जग अलवेसर आंचरा उदर अवतरियाजी
 । विश्वतेन नृप नंदन जगगुरु ह्यष्टापुर सुखं करियाजी ॥ ईत
 उपइव मारि विकारी शांति करी संचरियाजी । जे जिवि मंगल
 कारण घ्यावे ते हुय गुणगण दरियाजी ॥ १ ॥ वर्चमान जिन सब
 सुखकारण अतीत अनागत वंदोजी । वारे चक्री नव नारायण नव
 प्रतिचक्री आनंदोजी ॥ रामादिक जे पुरष सलका वंदत पाप निक-
 दोजी । इव्य निक्षेपे जिनसम जाणो काटे जवजय वंदोजी ॥ २
 ॥ अंग उपांगे जिनवर प्रतिमा श्रीजिन सरखी ज्ञाखीजी । इव्य
 ज्ञाव विहुं जेदे पूजा महानिसीधे साखीजी ॥ विषय निवृत्ती सत्
 आरंजे विनय तपी ते जाणोजी । शुभयोगे नहि आरंजकारी जग
 बड अंग प्रमाणोजी ॥ ३ ॥ थापना सत्ये देवी निर्वाणी श्रीसंयने
 सुखकारीजी । कारणथी सब कारज सीजे जिनवर आज्ञा धारीजी
 ॥ श्रीजिनकीर्ति सूरेश्वर गच्छपति पाठक श्रीकृष्टिसारीजी । सम-
 कित्तधारी देव सदाई सुखसंपत्त दातारीजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीशांति-
 नाथजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन दूज स्तुति ॥

॥ मन सुख वंदो ज्ञावे जवियण श्रीसीमंधर रायाजी । पांचसं
धनुष प्रमाण विराजित कंचनवरणी कायाजी ॥ श्रेयांस नरपति
सत्यकि नंदन वृषजलंगन सुखदायाजी । विजय जलौ पुखलावड
विचरे सेवे सुरनर पायाजी ॥ १ ॥ काल अतीत जे जिनवर हूआ
होस्ये बलिय अनंताजी । संप्रति काले पंच विदेहे वरते बीस वि-
ख्याताजी ॥ अतिशयवंत अनंत जिनेसर जगबंधव जगप्राताजी ।
ध्यापक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिवसुख साताजी ॥ २ ॥
अरथे श्रीअरिहंत प्रकाशी सूत्रे गणधर आणोजी । मोह मिथ्यात
तिमिरजर नासन अजिनव सूर समाणीजी ॥ जवोदधि तरणी
भोक्क निसरणी नय निक्षेप पहाणीजी । ए जिनवाणी अमिय
समाणी आराधो जविप्राणीजी ॥ ३ ॥ शासनदेवी सुरनर सेवी
श्रीपंचागुली माईजी । विघन विमारण संपत्तिकारण सेवकजन
सुखदाईजी ॥ त्रिजुवनमोहनी अंतरजामनी जग जस ज्योति स-
वाईजी । सांनिधकारी संघने होयज्यो श्रीजिनदर्प सदाईजी ॥ ४
॥ इति श्रीसीमंधरजिनदूजस्तुति ॥

॥ अथ श्रीज्ञानपंचमी स्तुति ॥

॥ पंच अनंत महंत गुणाकर पंचम गति दातार । उत्तम
पंचम तपविधि वायक ज्ञायक ज्ञाव अपार ॥ श्रीपंचानन लांगन
लांगित बंगित दान सुदह । श्रीवर्द्धमान जिनंदसु वंदो ध्यावो
जविजन पक्ष ॥ १ ॥ पुरण पंच महाश्रव रोधक बोधक जय उदार
। पंच अनुव्रत पंच महाव्रत विधि विस्तारक सार ॥ जे पंचेंडिय
दम सिव पढुता ते सगला जिनराय । पांचम तप धर जवियण
उपर सुधिर करी सुपसाय ॥ २ ॥ पंचाचार धुरंधर जुगवर पंचम
जाण । पंच ज्ञान विचार विराजित ज्ञाजत मद पंच वाण

पंचम काल तिमरजरमाहे दीपंकसम सेजंत । पांचम तपफल
 फल प्रकासक ध्यावो जिनसिद्धंत ॥ ३ ॥ पंच परम पुरुषोत्तम से-
 णिकारक जे नरनार । निरमल पांचम तपना धारक तेह जणी
 विचार ॥ श्रीसिद्धादिकादेवी अहनिशि आपो सुख अमंद । श्री
 जननाज सुखिंद पसाये कहे जिनचंद मुखिंद ॥ ४ ॥ इतिज्ञान-
 चमीस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमौन एकादशी स्तुति ॥

॥ अरनाथ जिनेश्वर दीक्षा नमिजिन ज्ञान । श्रीमद्वि जनम
 त केवलज्ञान प्रधान ॥ इग्यारस मिंगसर सुदि उत्तम अवधार ।
 पंच कळ्याणक समरीजे जयकार ॥ १ ॥ इग्यारे अनुपम एक
 धिक गुण धार । इग्यारे बारे प्रतिमा देसक धार ॥ इग्यारे डगुणा
 य अधिक जिनराय । मन सूखे सेव्यां सव संकट मिट जाय ॥
 ॥ जिहां वरस इग्यारे कीजे व्रत उपवास । बलि गुणनो गुणिये
 धितेती सुविलास ॥ जिन आगमवाणी जाणी जगत प्रधान ।
 क चित्त आराधो साधो सिद्ध विधान ॥ ३ ॥ सुर असुर जुवण
 स सम्पग् दरसनवंत । जिनचंद सुसेवक वेयावच्च करंत ॥ श्रीसंघ
 कलमें आराधक बहु जाण । जिनशासन देवी देव करो कळ्याण
 ॥ ४ ॥ इतिश्रीमौनएकादशीस्तुति ॥

॥ अथ रोहणी स्तुति ॥

॥ जयकारी जिनवर वासुपूज्य अरिहंत । रोहिण तपनो फल
 रूपा श्रीजगवंत ॥ नरनारी जावे आराधो तप एह । सुख संपत ली-
 लक्ष्मी पामे तेह ॥ १ ॥ कृपणादिक जिनवर रोहणी तप सुविचार ।
 नमुख परकासे घेठी परखदा वार ॥ रोहिण दिन कीजे रोहिणनो
 मवास । मन वंछित लीला सुंदर जोगविलास ॥ २ ॥ आगममें एहनो
 द्यो लाज अनंत । विधसुं परमारथ साथे सुधो संत । इत्यदो

इग तेहनो नासि जाय सब दूर । बलि दिन१ अंगे वाधे अधिको
नूर ॥ ३ ॥ महिमा जग मोटो रोहिण तप फल जाण । सौभाग्य
सदा जे पामे चतुर सुजाण ॥ नित घर१ महोन्नव नित नवला
सिणगार । जिनशासनदेवी लब्धिरुची जयकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पख्खी चौदश स्तुति ॥

॥ प्रथम तीर्थेकर आदि जिनेश्वर जाकी कीजे सेव, गड
चोरासी जेहने थाप्या जाकी करणी एह ॥ तेहने पाखी चौदस
कीजे बीजे अंग कहाय, पाखी सूत्र प्रथम तुम देखो जिम१ संशय
जाय ॥ १ ॥ चउबीसे जिनपूजा कीजे मानो जिनकी आण, क
छपसूत्रनी पाखी चौदस जोवो चतुर सुजाण ॥ इण पर ठाम१
तुम देखो चउदस पक्की होय, जूला कांइ जमो तुम प्राणी साचो
जिनधर्म जोय ॥ २ ॥ चवदसरे दिन पाखी कीजे सूत्राकेरी साख,
जविक जीव इम मन आराधो टीका चूरणी जाल ॥ आवश्यक
सूत्र इण पर बोले चउदसरे दिन पाखी, चउद पुरवधर इणपर
बोले ते निश्चल मन राखी ॥ ३ ॥ श्रुतदेवी इक मन आराधो
मन बंठित फल होय, जे जे आझा सूधी पाले ज्यानो विघन ह
रेय ॥ सेवक इणपर करे बीनती सूधो समकित पाय, खरतरगड
मंरुण कुमति विहरुण माणिक्य सूरि गुरुराय ॥ ४ ॥ इति पक्की
चौदस धुइ संपूर्ण ॥

—ॐॐॐॐॐॐॐॐॐ—

॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यन्ते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्री बृहदजितशान्तिस्मरणं लिख्यते ॥

॥ अजिअं जिअसबजयं, संतिं च पसंतसवगयपायं ॥ जप
संति गुणकरे, दोवि जिणरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गादा ॥

ववगय मंगुल जावे, तेहं विनलतवनिम्मल सदावे ॥ निरुवम महप्प
 जावे, थोसा.मि सुदिह सप्पावे ॥ १ ॥ गाहा ॥ सब डुक्कप्पसंतीणं,
 सब पावप्पसंतीणं ॥ सया अजिय संतीणं, नमो अजिय संतीणं ॥ २ ॥
 सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं
 ॥ तह य धिइ मइ प्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संतिकित्तणं ॥ ४ ॥
 मागहिआ ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म किलेसविमुक्कयरं, अ
 जिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धियं ॥ अजियस्स य संति
 महा मुणिलोवि अ संतिकरं, सययं मम निवुइ कारणं च नमं
 सणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं ॥ पुरिसा जइ डुक्कधारणं, जइअ विम
 ग्गह सुक्ककारणं ॥ अजियं संतिं च जावत्तं, अजयकरे सरणं पय
 ज्जाहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ, मुवरय ज
 रमरणं, सुर असुर गरुल जुयगवई, पयय पणिवइअं ॥ अजिय म
 ह्मविअ, सुनय नय निज्जणमजयकरं, सरणमुवसरिअ जुवि दिवि
 ज, महिअं सयय मुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तम सुत्तम
 नित्तम सत्तधरं, अज्जव मत्तव खंतिविमुत्ति समाहि निहिं ॥ संति
 अरं पणमामि दमुत्तम तिज्जयरं, संति मुणी मम संति समाहिवरं
 दित्तं ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुब्बपत्थिवं च वरहत्थि मज्जय प
 सत्त विज्जिन्न संथिअं शिर सरिअ वत्तं मयगल लोलायमाण वर गंध
 हत्थि पञ्चाण पत्थियं संथवारिहं हत्थिदत्त वाहुं धंतकण्ण रुअग नि
 रुवइय पिंजरं पवर लक्कणो वचिअ सोम्म चारु रूवं सुइ सुहम
 णाजिराम परम रमणिज्ज वरेदेव डुंडुहि निनाय मदुरयर सुहगिरं
 ॥ ९ ॥ वेहत्तं ॥ अजियं जिआरिणं, जिअ सबज्जयं जवो हरित्तं ॥
 पणमामि अहं पयत्तं, पावं पसमेत्त मे जयवं ॥ १० ॥ रात्तालुद्ध
 त्तं ॥ कुरु जणवय हत्थिणात्तर नरीसरो पढमंतत्तं महाचक्कव
 ट्ठिज्जोए महप्पजावो जो वाहत्तरि पुरवर सहस्सवर नगर णिगम

जणवय वई वत्तीसारायवर सहस्साणु आयमगो घनदस वररण
नव मदानिहि चउसठि सदस्त पवर ऊवईण सुंदर वइ
चुलसी हय गय रह सय सदस्त सामी गणवइगाम कोमि
सामी आसिऊो जारहंमि जयवं ॥ ११ ॥ वेहउ ॥ तं
संतिं संतियरं, संतिन्नं सव जया ॥ संतिं थुणामि जिणं, संतिं वि
हेउ मे ॥ १२ ॥ रासाणंदिअयं ॥ इस्कागु विदेह नरीसर, नरव
सहा मुणिवसहा ॥ नव सारयससि सकलाणण, विगय तमा विहु
अरया ॥ अजिउत्तम तेअ गुणेहिं महामुणि, अमिय बलाविकुज
कुजा ॥ पणमामि ते जवजय मूरण, जग सरणा मम सरणं ॥
१३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दाणधिंद चंद सूरवंद हउ तुह जिह परम,
लह रूव घंत रुप पढ तेअ सुद निद धवल ॥ दंतपंति संतिं स
त्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर, दित्त तेअवंदधेअ सवलोअ जावि
अ प्पजावणे अ पइसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायण ॥ विमल स
सिकलाइरेअसोम्मं, वितिमिरसूर कलाइरेअ तेअं ॥ तियसवइगणा
इरेअं रूवं, धरणिधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुमजया ॥ सत्ते
अ सया अजिअं, सारीरे अवले अजिअं ॥ तव संजेमअ अजिअं,
एस अहं थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ जूअगपरिंरिगिअं
॥ सोम्मगुणेहिं पावइ न तं नवसरय ससी, तेअ गुणेहिं पावइ
न तं नवसरय रवी ॥ रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअस गणव
इ, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥
तिउवर पवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजणथुअच्चिअं चुअ कलिकलुसं
॥ संतिसुदप्पवत्तयं तिगरण पयउ, संतिमहं महा मुणिं सरण मु
वणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणउणय सिरिरइ अंजलि, रिति
गण संथुअं धिमिअं ॥ विवुहादिव धणवइ नरवइ, थुअ महिअच्चिअं
बहुसो ॥ अइ रुग्गय सरय दिवायर, समहिअ सप्पजं तवसा ॥

गयणंगण वियरण समुद्र, चारण वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ कितल्य
 माला ॥ असुर गरुल परिवंदिअं, किन्नरोरग एमंसिअं ॥ देव कोमि
 सयसंधुयं, समणसंघ परिवंदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अजयं अणहं अरयं
 अरुयं ॥ अजिअं अजिअं पयउ पणमे ॥ २१ ॥ विळुविलसिअं ॥ आग
 यावर विमाण, दिवकणग रह तुरय पदकर सएहिं हुलिअं ॥ स
 संजमो अरण खुजिअ खुलिअ चल कुंरुलंगय तिरीर सोदंत मळ
 लिमाळा ॥ २२ ॥ वेढउ ॥ जं सुरसंघा सासुर संघा, वेर विउत्ता
 जति सुजुत्ता, आयर जूसिअ संजमपिंनिअ, सुहु सुविह्मिअ तव्व
 लोधा ॥ उत्तम कंचण रयण परूविअ जासुर जूसण जासुरिअंगा,
 गाय समोणय जतिवसागय पंजलिपेसियसोस पणामा ॥ २३ ॥
 रयणमाळा ॥ वंदिऊण थोऊणतो जिणं, तिगुणमेवय पुणोपया
 हिणं ॥ पणमिऊणय जिणं सुरासुरा, पमुइआ सज्जवणाइतो गया
 ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहं पि पंजलि, राग दोस जय
 मोह वळ्ळिअं ॥ देवदाणव नरिंद वंदिअं, संति मुत्तम महात्तवं नमे
 ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंबरंतरविआरणिआहिं, ललिअइंस बहुगामि
 णिआहिं ॥ पीण सोणिअण सालणिआहिं, सकल कमल दललो
 अणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर थणन्नरविणमिय गायल
 याहिं, मणिकंचण पसिदिलभेदल सोदिअ सोणितमाहिं ॥ वरसिं
 खिणि नेउर सतिलय वलय विजूसणिआहिं, रइकर चउर मणो
 हर सुंदर दंसणिआहिं ॥ २७ ॥ चित्तस्करा ॥ देवसुंदरीहिं पाय
 वंदिआहिं वंदिआय जस्त ते सुविक्रमाकमा अप्पणो निमालएहिं
 मंणोमुगप्पगारएहिं केहिं केहिं वीअवंग तिलय पत्तलेइ नामएहिं
 चिल्लएहिं संगयं गयाहिं जति सन्निविठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदि
 आ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायण ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं
 जिअमोहं ॥ धुअसवकिलेसं पयउ पणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥

धुअवंदिअस्तारिसिगण देवगणोहिं, तो देव बहुहिं पयउ पणमिअ
 स्ता ॥ जस्त जगुत्तमसासणयस्ता, जत्तिवसागयपिंमिअआहिं ॥
 देव वरउरसा बहुआहिं, सुरवर रइगुण पंमिअआहिं ॥ ३० ॥
 जासुरयं ॥ वंस तद् तंति ताल मेलिए तिउरकराजिराम सह मी
 सएकए अ, सुइसमाणणेअ सुइ सऊ गीअ पाय जालवंटिअहिं ॥
 वलय मेइला कलावनेउराजिराम सह मीसएकए अ देवनटिआहिं
 ॥ हाव जाव विअमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआय
 जस्तते सुविक्रमाकमा ॥ तयं तिलोअ सव सत्त संतिकारयं पसंत
 सव पाव दोस मेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायण ॥
 वत्त चामर पनागजूअ जव मंमिआ, ऊववर मगर तुरय तिरिवट्ट
 सुलंठणा ॥ दीव समुइ मंदरदिसागयसोइआ, सच्चिअ वसह सी
 इतिरिवट्टसुलंठणा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलढा समप्पइहा,
 अदोस डुहागुणेहिं जिहा ॥ पसायसिहा तवेण पुहा, तिरीहीं इहा
 रिसीहीं जुहा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअतववायया,
 सवलोअहिअ मूल पावया ॥ संशुआ अजिअ संति पायया, हुंतु
 मे तिव सुहाणदावया ॥ ३४ ॥ अपरांतिया ॥ एवं तव वल वि
 उन्नं, अयं मए अजिअ संति जिणजुयलं ॥ ववगय कम्म रयमलं,
 गइं गयं सासयां विमलां ॥ ३५ ॥ गादा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मु
 र्क सुदेण परमेण अवितायं ॥ नासेउं मे वितायं, कुणअ परि
 साविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गादा ॥ तं मोएउ अनेंदिं, पावेउअ नं
 दिसेणमज्जिनेंदिं ॥ परिताडवि मुइनेंदिं, मम य रित्त संजमे
 नेंदिं ॥ ३७ ॥ गादा ॥ पस्किअ चाउम्मासिय, संवहरिए अवरस्त
 जगिअयो ॥ सोअवो संवेहिं, उवसग्ग निवारणो एमो ॥ ३८ ॥
 जो पढज जोअनिसुणइ, उज्जउ कालंवि अजिअ संतिअयं ॥ न दु
 षंति तस्त रोगा, पुवुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इउद परम

पयं, अहवा किरिं सुविचमं जुवणे ॥ ता तेलुक्कुदरणे, जिणव
यणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीवृहदजितशांतिस्त
वनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशांतिस्मरणम् ॥

॥ उल्लासिक मनस्क निगयपहा दंरुचलेणंगिणं, वंदारुण
दिसंत इव पयं निघाणमग्गावलिं ॥ कुंदिउऊव वंतकंति मित्त
नीदंत नाणंकुरु, केरे दोविउ इऊ सोलस जिणे थोतामि खेमंकरे
॥ १ ॥ चरम जलहिनीरं जोमिणिऊं जलोहिं, खय समय समीरं जो
जणिऊा गईए ॥ सहल नहय लंवा लंघए जो पएहिं, अजिअ म
हवं संतिं तो समञ्जे छणेउं ॥ २ ॥ तहविहु बहुमाणु छासज्जति
प्रेरेण, गुणकणमिवकिची हामि चिंतामणि व ॥ अलमहव अचिंता
एंतसामञ्जत्तिं, फलदइ लहु सबं वंठिअं णि छेअं भे ॥ ३ ॥ सय
लजयहिआणं नाममित्तेण जाणं, विहरइ लहु दुवा निवोघट्ठअं
॥ नमिरसुर किरीडू णिठ पायारधिं, समय मजिअ संती ते जि
णिंदे जिंवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकिची वढए देहवित्ती, विजलइ
जुवि मिची जायए सुप्पविती ॥ फुरइ परमात्तत्ती दोइ संसारविती,
जिणजुअ पयज्जत्ती हीअ चिंतोरुत्तत्ती ॥ ५ ॥ जल्लेयपयपयारं जू
रिदिवंगहारं, फुरुगणरसज्जावो दारसिंजारसारं ॥ अणमित्तरमणीज
हंसण्णे अज्जीया, इव पुणमणि वंधा कास न्होवयारं ॥ ६ ॥
धुणइ अजिअसंती ते कया सेस संती, कणयरयपसंगा ठऊए जा
णिमुत्ती ॥ सरज्जस परिरंजा रंजनिघाणलळी, घणयणधुत्ति णिऊ
प्पंकर्पिणीकयव ॥ ७ ॥ बहुविहनयज्जं वड्ढणिच्चं अणिच्चं, सइसद
णज्जिलप्पा लप्पभेगं अणेगं ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेत्ति,
चयण भवय णिऊं ते जिणे संजरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअ लोए
त्ताव मोहंययारं, जमइजय मसणं तावमिच्चत्तणं ॥ फुरइ फुरुप

लंता एतणाणं सुपूरो, पयम् मज्झिमसंती जाण सूरौ न जाव ॥९॥
 अरि करि हरि तिण्हु एहंनु चोरा दिवाही, समर रुमर मारी रुद्ध
 खुद्धो वसग्गा ॥ पलय मज्झिमसंती कित्तेणे ऊत्तिजंती, निविमतरत
 मोद्धा जस्करालुंस्सिअ व ॥ १० ॥ निचिअडुरेअदारु दित्तजाणग्गि
 जाला, परिगय मिव गोरं, चित्तिअं जाण रूवं ॥ कणय निहसरेद्धा
 कंतिचोरं करिज्जा, चिरथिर मिह लब्धिं गाढसंथंजिअव ॥ ११ ॥
 अरुविनिवन्निआणं पण्डित्तुत्तासिआणं, जलहि लहरि हीरं तास
 गुत्ति दियाणं ॥ जलिअ जलण जाला विंगिआणं व जाणं, जणयइ
 लहु संतिं संतिनाद्धा जिआणं ॥ १२ ॥ हरि करि परिकिस्सं पक्क
 पाइक्कपुस्सं, सयलपुद्धवि रज्जं ठम्मिअं आण सज्जं ॥ तण मिव पन्नि
 लग्गं जेजिणामुत्तिमग्गं, चरण मणुपवणा हुंतु ते मे पत्तस्सा ॥ १३ ॥
 वणत्तसिबयणाहिं फुल्लनित्तुप्पलाहिं, अणज्जरनमिरीहिं मुग्गिज्जोद्ध
 रीहिं ॥ ललिअ नुअलयाहिं पीण सोणिअणीहिं, सयसुर रमणीहिं
 वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिस्स किन्नि ज्जकुळ गंठि कात्ताइसार,
 खय जर वण लूआ सारसोसोदराणि ॥ नद्धमुह वत्तण्णी कुब्बिक्क
 स्साइरोगे, मह जिणजुअ पाया सुप्पत्ताया हरंतु ॥ १५ ॥ इय गुरु
 उद्धतासे पक्किए चान्नामासे, जिणवर दुग्गथुत्तं वच्चरे वा पवित्तं ॥
 पढइ सुणइ सिद्धा एह जाएइ चित्ते, कुणइ मुणइ विग्घं जेस धा
 एह सिग्घं ॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तुपुत्त सिरिअजिअ जिणे
 सर, तद्ध अइराविससेण तणइ पंचम चक्कोसर ॥ तिठंकर सोल
 सम संति जिणवत्तद्ध संथुअ, कुरु मंगल मम हर सुद्धरिअमखिलं
 पि थुणंतद्ध ॥ १७ ॥ इति श्रीलघुअजितशांतिस्तवनं द्वितीयं ॥

॥ अथ नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूमामणि किरणरंजिअं मुणि

॥ चलणजुअलं महाजय, पणासणं संथवं बुद्धं ॥ १ ॥ सन्धिप

करं चरणं नहं मुहं, निबुद्धं नासा विवर्त्तनं लावन्ना ॥ कुष्ठं महारो-
 गानलं, फुल्लिगं निदृष्टं सवङ्गा ॥ १ ॥ ते तुहं चलणा राहणं, स
 लिलंजलिसेयं बुद्धियं ज्ञाया ॥ वणं दवदद्धा गिरिपा यव व पत्ता
 पुणो लब्धिं ॥ २ ॥ उवायं खुप्रियं जलनिधिं, उग्रं कल्लोलं जी-
 सणारावे ॥ संजंतं जयं विसंतुलं, निद्वामयं मुक्कवावारे ॥ ४ ॥
 अविदलिअं जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ॥ पातं जिणं
 चलणं जुअलं, निबंदिअं जे नमंतिनरा ॥ ५ ॥ खरं पवणुअं
 वणदव, जालावलिं मिलियं सयलं डुम गहणे ॥ रुद्रंतं मुद्धमियं
 बहु, जीसरणरवं जीसणंमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं,
 निद्धाविअं सयलं तिहुअणाज्जोअं ॥ जे संजंरंति मणुआ, न कुणइ
 जलंणो जयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंतं जोगं जीसणं, फुरिआरुणं न
 यणं तरलं जीदालं ॥ उगगज्जुअं नवजलं य, सव्वदं जीसणायारं
 ॥ ८ ॥ मन्तं कीरुं सरिसं, दूरं परिबुद्धं विसमं विसं वेगा ॥ तुहं
 नामस्करं फुरुसिं द, मंतं गुरुआं नरा लोए ॥ ९ ॥ अरुवीसुं जि-
 खं तक्करं, पुलिंदं सवलं सदजीमासु ॥ जयविहुरं बुद्धकायरं, उल्लु-
 रिअं पद्दिअं सव्वासु ॥ १० ॥ अविबुद्धविहं वसारा, तुहं नाहं प-
 णामं मत्तवावारा ॥ ववगयं विग्घां तिग्घं, पत्तां हियं इच्छियं गणं
 ॥ ११ ॥ पल्लविआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नहं
 कुलिसघायविअलिअं, गइंदकुंजवलाज्जोअं ॥ १२ ॥ पणयं सतंज-
 मं पत्तिव, नहंमणिभाणिकं पन्निअं पन्निमस्स ॥ तुहं वयणं पहरणं
 धरा, सीहं कुंरं पि न गणंति ॥ १३ ॥ सत्तिघवलं वंतमुसलं, दीहं
 करुव्वालं वट्ठिं उव्वाहं ॥ महुपिं नयणजुअलं, ससलिलं नवजलं
 हरारावं ॥ १४ ॥ जीमं महागइंदं, अच्चासन्नं पि ते न वि गणंति
 ॥ जे तुहं चलणं जुअलं, मुणिवं तुंगं समल्लोणा ॥ १५ ॥ स-
 मरम्मितिकं खग्गा, जिग्घायं पविद्धं उरुयं कवंधे ॥ कुंतविणिज्जि

न्न करि फल, ह भुक्तसिद्धार पत्ररंमि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धर
 रिन्न, नरिंद निवद्धा जम्मा जसं धवले ॥ पार्वंति पाव पत्तमिण,
 पासजिण तुद्ध प्पज्जनेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसद्धर,
 चोरारि मइंद गय रण जवाइं ॥ पास जिणनाम संकि, तणेण
 पत्तमंति सवाइं ॥ १८ ॥ एवं मद्धा जयद्धरं, पास जिणिंदस्स संथ
 वमुत्थारं ॥ जयिय जणाणंदयरं, कट्ठाण परंवरनिदाणं ॥ १९ ॥
 राय जय जत्त रत्तम, कुमुमिण दुस्सन्नण रिक्क पीमानु ॥ सं
 जासु दोसु पंथे, उवसग्गे तदय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढ्ढ जो
 अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ॥ पासा पावं पत्तमिन्न,
 सयल जुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं तु
 तीयस्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

॥ अथ गणधर देवस्तुति चतुर्थ स्मरण प्रारंभः ॥

॥ तं जयन्न जय तिष्ठं, जमिष्ठ तिष्ठादि वेण वीरेण ॥

सम्मं पवत्तिअंज, व सत्त संताणसुद्ध जणयं ॥ १ ॥ नात्तिअ सय
 लकिलेसा, निदय कुलेसा पत्तव सुद्धेसा ॥ तिखिद्धमाण तिष्ठ
 स्स मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निद्धक्कम्म वीआ, वीआपरंमि
 ण्णिणो गुणसमिद्ध ॥ सिद्धा तिजय पत्तिद्धा, हणंतु दुष्ठाणि तिष्ठ
 स्त ॥ ३ ॥ आयार मायरंता, पंचपयारं सया पयासंता ॥ आय
 रिआ तद्ध तिष्ठं, निदय कुत्तिष्ठं पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअ वाय
 गावा, यगाय तिअवाय वायगा वाए ॥ पवयण पम्पिणीय कए,
 वणिंतु सबस्स संघस्स ॥ ५ ॥ निद्याणसाहुणिज्जिअ, साहूणं जणिअ
 सब साहज्जा ॥ तिष्ठप्पज्जायगाते, हवंतु परमिण्णिणो जइणो ॥ ६ ॥
 जेणाणुगयं नाणं, निद्याणफलं च चरणनविहवइ ॥ तिष्ठस्स दंसणं
 तं, मंगलमुवणोन्न सिद्धिपरं ॥ ७ ॥ निष्ठन्नमो सुअधम्मो, समग
 जधंगि वग्ग कय सम्मो ॥ गुणमुच्चिअस्स संघस्स, मंगलं सम्ममि

हं दित्त ॥ ८ ॥ रम्भो चरित धम्भो, संपाविश्र जवसत्त सिवस
 म्भो ॥ नीत्तेस किलेसहरो, इवत्त सया सयल संघस्त ॥ ९ ॥
 गुणगण गुरुणो गुरुणो, शिवसुह मइणो कुणंतु तिष्ठस्त ॥
 सिरिवद्धमाण पटुपय, मिश्रस्त कुत्तलं समग्गस्त ॥ १० ॥
 जियपन्निवरकाजस्का, गोमुह मायंग गयमुह पमुस्का ॥ सिरि
 वंज संति सदिआ, कय मयरस्का सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंबा
 पन्निहयमिंवा, सिद्धा सिद्धाअया पवयणस्त ॥ चक्रेसरि वइरुद्धा;
 संति सुरा दित्त सुस्काणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्जा देवी, उदित्तु
 संघस्त मंगलं विज्जलं ॥ अत्रुत्ता सदिआत्त, विस्सुअ सुयदेवयात्त
 समं ॥ १३ ॥ जिण सात्तण कय रस्का, जस्का चत्तवीस सात्तण
 सुरावि ॥ सुहज्जावा संतावं, तिष्ठस्त सया पणासंतु ॥ १४ ॥ जि
 णपवयणंमि निरया, विरहा कुपदान्त सब दासवे ॥ वेयावच्च गरा
 विअ, तिष्ठस्त इवंतु संतिकरा ॥ १५ ॥ जिणसमय सुत्तमग्ग,
 विदिअ जवण जणिअ सादळो ॥ गीयरई गीयजतो, सपरिवारो
 सुहं दित्त ॥ १६ ॥ गिहगुत्त खित्त जलअल, वण पवय वासि
 देव देवीत्त ॥ जिण सात्तण णिआणं, डुहाणि सव्वाणि निहणंतु
 ॥ १७ ॥ दत्तदिसिवालात्तस्कि, चवालय नवग्गहा सनस्कता ॥
 जोइणि राहुग्गदका, लपात्त कुलिअर पहेरेहिं ॥ १८ ॥ सहका
 ल कंटएहिं, सविठ्ठिवेहिं कालवेलाहिं ॥ सबे सबच्च सुहं, दित्तंतु
 सबस्त संघस्त ॥ १९ ॥ जवणवइ वाणमंतर, जोइत्त वमोणिआ
 य जे देवा ॥ घरणिंद सक सदिआ, दलंतु डुरिआइं तिष्ठस्त ॥ २०
 ॥ चकं जस्त जलंतं, गच्छ पुरत्तपणासिअ तमोदं ॥ तंतिष्ठस्त ज
 गवत्त, नमो नमो वरुमाणस्त ॥ २१ ॥ सो जयत्त जिणो वीरो,
 जस्त ऊविसात्तणं जए जयइ ॥ सिद्धिपदत्तात्तणं कुप, इ नात्तणं
 सब जय महणं ॥ २२ ॥ सिरि उत्तज्जसेण पमुहा, इयजय नि

वंदा दिसंतु तिष्ठस्त ॥ सव जिणाणं गणिदा, रिणो णदं वंवेअं
 सबं ॥ १३ ॥ तिरि वद्धमाण तिठा, दिवेण तिठं समप्पिअं जस्त
 ॥ सम्मं सुहम्म सामी, दिसत्त सुहं सयल संघस्त ॥ १४ ॥ पय
 इएज्जिआ जे, जहाण दिसंतु सयल संघस्त ॥ इयरसुरा विहु स
 म्मं, जिणगणहर कहिय कारिस्त ॥ १५ ॥ इय जो पढइ तिसंजं,
 दुस्सव्वं तस्त नञ्चि किंपि जए ॥ जिणदत्ताणाएठिअ, सुनिठिअण
 मुदी होई ॥ १६ ॥ इति श्री गणधरदेवस्तुतिनामकं चतुर्थं स्मरणं
 ॥ अथ गुरुपारतंत्र्यनामक पंचमं स्मरणम् ॥

॥ मयरहिअं गुणगण रयण, सायरं सायरं पणमिऊणं ॥
 सुगुरुजण पारतंतं. उवहिअ धुणामि तं चेव ॥ १ ॥ निम्महिअ
 मोह जोहा, निहय विरोहा पणठ संदेहा ॥ पणयंगि वग्ग दाविअ,
 सुह संवोहा सुगुण गेहा ॥ २ ॥ पत्तसु जइत्त सोहा, समत्त पर
 तिठ जणिय संखोहा ॥ पन्निजग्ग मोह जोहा, वंसिअ सुमइठ
 सव्वोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअ सव्ववाहा, हय उह वाहा सिबंघ तरु
 साहा ॥ संपाविअ सुदलाहा, खीरोदखिणुअ अग्गाहा ॥ ४ ॥ सु
 गुणजण जणिअ पुज्जा, सज्जो निरुवज्ज गहिअ पघज्जा ॥ तिवसुह
 साइण सज्जा, जयगिरि गुरु चूरणे वज्जा ॥ ५ ॥ अज्जसुहम्म प्पमुदा,
 गुणगण निवदा सुरिंद विहिय मदा ॥ ताण तिसंजं नामं, नामं
 न पणासइ जिणाणं ॥ ६ ॥ पन्निवज्जिअ जिणदेवो, देवायस्सि उरंत
 जवहारी ॥ तिरि नेमचंद सूरि, उज्जोयण सूरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥
 तिरि वद्धमाण सूरि, पयमीकय सूरि मंत माइप्पो ॥ पन्निहय कताय
 पत्तरो, सरय ससंकुअ सुदजणत्तं ॥ ८ ॥ सुदसील चोर चप्पर, ण
 पच्चलो निच्चलो जिणमयंमि ॥ जुगपवर तिद्धसिद्धं, तज्जाणत्तं पणय
 सुगुणजणत्तं ॥ ९ ॥ पुरत्तं उल्लह महिअ, छदस्त अणहिअ वारुए
 ॥ १० ॥ मुक्खादि आरिऊणं, सीहेणव दव्वहिअि गया ॥ १० ॥ ६

समंघेरय निसिंवि, प्फुरंतु सछंद सूरिमय तिमिरं ॥ सूरैणव सूरि
 जिणे, सरेण हयमदिअ दोसेण ॥ ११ ॥ सुकश्च पत्त किन्ती, पय
 निअ गुन्ती पसंत सुद्धमुत्ती ॥ पदय परवाइ विन्ती, जिणचंद जई
 सरो मंती ॥ १२ ॥ पयनिअ नवंग सुत्तठ, रयणुक्कोसो पणासिअ
 पत्तसो ॥ जवन्नीअ मविअ जणमण, कयसंतो सो विगय दोसो ॥
 ॥ १३ ॥ जुग पवरागम सार, प्परूवणा करणबंधु रोधणिअं
 ॥ तिरि अंजयदेव सूरि, मुणिपवरो परम पत्तमधरो ॥ १४ ॥ कय
 सावय संतासो, हरि व सारंग जग्ग संदेहो ॥ गय समय वप्प व
 जणो, आसाइअ पवर कधरसो ॥ १५ ॥ जीमज्जव काणशमिअ,
 दंतिअ गुरुवण रयण संदेहो ॥ नीसेत्त सत्त गुरुत्त, सूरी जिणव
 छद्दो जयइ ॥ १६ ॥ ठवरठिअ सच्चरणो, चत्तरणुत्तंग प्पहाण
 सच्चरणो ॥ अत्तममयराय महणो, उद्धमुद्धो तइइ जस्स करो ॥
 ॥ १७ ॥ दंतिअ निम्मल निच्चल, दंतगणो गणिअ सावत्तठ जत्त
 ॥ गुरुगिरि गरुत्त सरदिअ, सूरि जिणवच्छद्दो होछा ॥ १८ ॥ जुग
 पवरागम पीठ, सपाणि पीणय मणाकया ज्जवा ॥ जेण जिणवच्छ
 देणं, गुरुणा तं सव्वदा वंदे ॥ १९ ॥ विप्फुरिअ पवर पवयण, ति
 रोमणी वूढ उव्वइ खमोया ॥ जो सेसाणं सेसु, व सइइ सत्ताणता
 णकरो ॥ २० ॥ सच्चरिआण महोणं, सुगुरूणं पारतंत मुव्वइइ ॥
 जयइ जियइ जिणदत्त सूरि, तिरि निलत्त पणप मुणितिलत्त ॥
 २१ ॥ इति श्रीगुरुपारतंत्यनामक पंचमस्मरणम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीपष्ठस्मरणम् ॥

॥ तिग्गमवहरत्त विग्गं, जिणवीराणाणु गामि संघस्स ॥
 तिरि पात्तजियो अंजण, पुरठिठ निठिआनिठो ॥ १ ॥ गोयम सु
 हम्म पमुदा, गणवणो विदिअ ज्जव सनमुदा ॥ निठि
 जिणति, उ सुव्वयंतं कुणंतु सया ॥ २

वेयावच्च कारिणो संति ॥ अवहरिश्च विग्ध संघा, हवंतु ते संघसंति
 करा ॥ ३ ॥ सिरि शंजणय छिअ पा, सत्तामि पयपन्नम पणय पा
 णीणं ॥ निद्वलिश्च डुरिश्च विंदो, धरणिंदो हरन्तु डुरिआइं ॥ ४ ॥
 गोमुहपमुक्क जस्का, पन्दिहय पन्निवक्क पक्क लस्का ते ॥ कयसुगु
 ण संघ रस्का, हवंतु संपत्त सिवसुस्का ॥ ५ ॥ अप्पन्निचक्का पमुहा,
 जिण सासण देवयान जिण पणिआ ॥ सिद्धाइया समेया, हवंतु
 संघस्त विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काए सासच्चनर, पुराणि वद्धमाण
 जिण ज्ञो ॥ सिरि वंज संति जस्को, रक्कन्त संघं पयत्तेण ॥ ७ ॥
 खित्तगिह गुत्त संता, ण देस देवाहि देवया तात्त ॥ निष्ठुइ पुर प
 हियाणं, ज्जवाण कुणंतु सुस्काणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि चक्कधरा, विदि
 पहरि उच्छिस्स कंधरा धणिणं ॥ सिवसरण लग्ग संघस्त, सव्वा ह
 रन्त विग्घाणि ॥ ९ ॥ तिष्ठवइ वद्धमाणो, जणोसरो संगन्त सुसंघेण
 ॥ जिणचंदो ज्ञयदेवो, रक्कन्त जिणवत्तहा पढुमं ॥ १० ॥ सो
 जयन्त वद्धमाणो, जिणोसरो णेस रुव हयतिमिरो ॥ जिणचंदा ज्ञय
 देवा, पढुणो जिणवत्तहा जेय ॥ ११ ॥ गुरु जिणवत्तहा पाए,
 ज्ञयदेव पढुत्त वायगे वंदे ॥ जिणचंद जिणोसरव, द्दमाण तिष्ठस्त
 बुद्धिकए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मन्नंति कुणंति जेय कारंति ॥
 मणत्ता वयत्ता वन्नत्ता, जयंतु साहम्मिआ तेवि ॥ १३ ॥ जिणदत्त
 गणे नाणाइणो, सया जे धरंति धारिंति ॥ दंसिअसिय वायपए,
 नमामि साहम्मिआ तेवि ॥ १४ ॥ इति पष्ठं स्मरणम् ॥ ६ ॥

॥ अय उवसग्गहर नामकं सप्तम स्मरणम् ॥

॥ उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं ॥ विसद
 रविसनिष्पासं, मंगलकट्ठाण आवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ जवेजवे
 पासजिणचंद पर्यंत संपूर्ण कहना ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्त
 वनं सप्तम स्मरणम् ॥ ७ ॥ इति सप्तस्मरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ भक्तामरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रज्ञाणा, मुद्योतकं दलितपापत
मोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा, वालंबनं जवजले
पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलबाढ्मयतत्त्वबोधा, हु
हूनबुद्धिपटुजिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्जगन्नितयचित्तहरैरुदारैः, स्तो
त्र्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्दम् ॥ २ ॥ युग्मं ॥ बुद्ध्या विना
पि विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिविगतत्रयोऽहम् ॥ बा
लं विहाय जलसंस्थितमिंद्रविंब, मन्यः क इच्छति जनः सहसा
ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्ग शशांककांतान्, कस्ते क
मः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ॥ कटपांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं, को
वा तरीतुमलमंबुनिधिं जुजाज्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तवं ज
क्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवी
र्यमविचार्य मृगोमृगैर्हं, नाज्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्
॥ ५ ॥ अद्वयश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वन्नक्तिरेव मुखरीकुरुते
बलान्माम् ॥ यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारुचाग्रह
लिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन जवसंततिसंनिबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरज्ञाजाम् ॥ आक्रांतलोकमलिनी
लमशेषमाशु, सूर्याशुजिन्नमिव शार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति
नाथ तव संस्तवनं मयेद, मारज्यते तनुधियापि तव प्रज्ञावात् ॥
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदधिंडा
॥ ८ ॥ आस्तां तवस्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि
जगतां डरितानि हन्ति ॥ दूरे सहस्रकिरणाः कुरुते प्रज्ञैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशजांजि ॥ ९ ॥ नात्यन्तं ज्वन
ज्वणज्वन नाथ, ज्वनैर्गुणैर्जुधि ज्वंतमज्जिपुवंतः ॥ तुड्या ज्वन्ति
ज्वतो ननु तेन किं वा, जूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥

वेयावच्च कारिणो संति ॥ श्रवहरिश्च विग्ध संघा, हवंतु ते संघसंति
 करा ॥ १ ॥ सिरि श्रंजणय छिश्च पा, ससामि पयपन्नम पणय पा
 णीणं ॥ निद्वलिश्च डुरिश्च विंदो, धरणिंदो हरउ डुरिश्चाइं ॥ ४ ॥
 गोमुहपमुस्क जस्का, पमिदय पमिवस्क पस्क लस्का ते ॥ कयसुगु
 ण संघ रस्का, हवंतु संपत्त सिवसुस्का ॥ ५ ॥ अप्पमिचक्का पमुहा,
 जिण सासण देवयान्ज जिण पणिश्चा ॥ सिद्धाश्चा समेपा, हवंतु
 संघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काए सासच्चत्तर, पुरिष्ठिं वद्धमाण
 जिण ज्ञत्तो ॥ सिरि धंज संति जस्को, रस्कन् संघं पयत्तेण ॥ ७ ॥
 खित्तिगिह गुत्त संता, ए देस देवाहि देवया तात्त ॥ निबुद्ध पुर प
 हियाणं, ज्ञवाण कुणंतु सुस्काणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि चक्कधरा, विद्धि
 पहरि उच्चिस्स कंधरा धणिणं ॥ सिवसरण लग्ग संघस्स, सब्बा ह
 रन्त विग्घाणि ॥ ९ ॥ तिब्बवइ वद्धमाणो, जणेसरो संगत्त सुसंघेण
 ॥ जिणचंदो ज्ञयदेवो, रस्कन् जिणवल्लहो पढुमं ॥ १० ॥ सो
 जयन्त वद्धमाणो, जिणेसरो णेस रुव्व इयतिमिरो ॥ जिणवंदा ज्ञय
 देवा, पढुणो जिणवल्लहा जेय ॥ ११ ॥ गुरु जिणवल्लह पाए,
 ज्ञयदेव पढुत्त दायगे वंदे ॥ जिणचंद जिणेसरव, व्हामाण तिब्बस्स
 बुद्धिकए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मन्नंति कुणंति जेय कारंति ॥
 मणसा वयसा वत्तसा, जयंतु साहम्मिआ तेवि ॥ १३ ॥ जिणदत्त
 गणे नाणाइणो, सया जे धरंति धारिंति ॥ दंसिअसिय वायपए,
 नमामि साहम्मिआ तेवि ॥ १४ ॥ इति पष्ठं स्मरणम् ॥ ६ ॥

॥ अथ उवसग्गहर नामकं सप्तम स्मरणम् ॥

॥ उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं ॥ विसद
 रविसनिष्सासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ ज्ञवेज्जे
 पासजिणचंद पर्यंत संपूर्ण कदना ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्त
 वनं सप्तम स्मरणम् ॥ ७ ॥ इति सप्तस्मरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ भक्तामरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रज्ञाणा, मुद्योतकं दलितपापत
मोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा, वालंबनं जवजले
पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलबाह्मयतत्त्वबोधा, उ
द्धूनबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्द्वैतयचित्तदरैरुदारैः, स्तो
त्र्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्दम् ॥ २ ॥ युग्मं ॥ बुद्ध्या विनां
पि विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिविगतत्रपोऽहम् ॥ धा
लं विहाय जलसंस्थितमिंद्रविंश, मन्यः क इच्छति जनः सहसा
ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्ग शशांककांतान्, कस्ते ह
मः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ॥ कट्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं, को
वा तरीतुमलमंबुनिधिं जुजायाम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तवं ज
क्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवी
र्यमविचार्य मृगोमृगेंद्रं, नाज्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्
॥ ५ ॥ अष्टपश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वन्नक्तिरेव मुखरीकुरुते
बलान्माम् ॥ यत्कोकिलः किल मधो मधुरं विरौति, तच्चारुचात्रक
लिकानिकरैकदेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन जयसंततिसंनिबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरज्ञाजाम् ॥ आकांतलोकमलिनी
लमशेषमाशु, सूर्याशुजिन्नमिव शार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति
नाथ तव संस्तवनं मथेद, मारज्यते तनुधियापि तव प्रज्ञावात् ॥
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदधिंडः
॥ ८ ॥ आस्तां तवस्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि
जगतां उरितानि हन्ति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रज्ञैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशजांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवन
भूपरञ्जन नाथ, भूतैर्गुणैर्भुवि जवंतमज्जिपुवंतः ॥ तुल्या जवंति
जवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रितं य इदं नात्मसमं करोति ॥

॥ १० ॥ दृष्ट्वा ज्वंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति
जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युतिं डुग्धसिंधोः, क्षारं जलं
जलनिधेरशितुं कश्चेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिज्जिः परमाणु
जिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिजुवनैकललामज्जत ॥ तावंत एव खलु तेप्य
एवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्रं क
ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगद्वितयोपमानम् ॥ विंशं
कलंकमलिनं कं निशाकरस्य, यद्भासरे जवति पांडुपलाशकटपम्
॥ १३ ॥ संपूर्णमंरुलशशांककलाकलाप, शुभ्रा गुणास्त्रिजुवनं तव
लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं, कस्तान्निवारयति
संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाजि,
नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कट्वांतकालमरुता चक्षि
ताचलेन, किं मंदराद्विशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमव
र्तिरपवर्जिततैलपूरः, कृत्स्नं जगद्भयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न
जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः
॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहस्रां
युगपज्जागंति ॥ नांजोधरोदरनिरुद्धमहाप्रज्ञावः, सूर्यातिशायिमहि
मांसि मुनीन्! लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहाधकारं,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव मुखान्नमन
द्वपकांति, विद्योतयज्जागदूर्ध्वशशांकविंशम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरोषु
शशिनाह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेऽदलितेषु तमस्सु नाथ ॥ नि
ष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरेर्ज्जज्ञानरन्ध्रैः
॥ १९ ॥ क्षानं यथा त्वयि विज्ञाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिह
रादिषु नायकेषु ॥ तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु
किरणाकलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव
येषु त्वयि त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन जवता नृ

वि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ ज्वांतरेपि ॥ ११ ॥ स्त्री
 णां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी
 प्रसूता ॥ सर्वा दिशो दधति ज्ञानि सदस्त्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जन
 यति स्फुरदंशुजालम् ॥ १२ ॥ त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस,
 मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलक्ष्य जयन्ति
 मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींश्चपन्थाः ॥ १३ ॥ त्वामव्ययं वि
 ज्ञुमर्हित्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं
 विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति संतः ॥ १४ ॥
 बुद्धस्त्वमेव विबुधार्थितबुद्धिवोधात्, एवं शंकरोऽसि जुवनत्रयशंक
 रत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव जग
 वन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ १५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिजुवनार्तिहराय नाथ,
 तुभ्यं नमः क्लिततलामलजूपणाय ॥ तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्व
 राय, तुभ्यं नमोजिनज्जबोदधिदोषणाय ॥ १६ ॥ को विस्मयो
 ऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥
 दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः, स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितो
 ऽसि ॥ १७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, माज्जाति रूपममलं
 ज्वतो नितांतम् ॥ स्पष्टोत्तसत्किरणमस्ततमोवितानं, विंशं रवेरिव
 पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ १८ ॥ सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, वि
 ब्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥ विंशं वियद्विलसदंशुलताविता
 नं, तुंगोदयाद्दिशिगतीव सदस्त्ररश्मेः ॥ १९ ॥ कुंदावदातचलधाम
 रचारुशोभं, विब्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छांकशु
 चिर्निर्जरवारिधार, मुञ्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौंजम् ॥ २० ॥ उत्र
 त्वयं तव विज्जातिशशांककांत, मुञ्चैः स्थितं स्थगितज्ञानुकरप्रता
 पम् ॥ मुक्ताकलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्यापयच्चिजगतः परमेश्वर
 स्वम् ॥ २१ ॥ उन्निद्धेमन्वपंकजपुंजकांती, पर्युत्तसन्नखमयूख

शिखाजिरामौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेऽप्यतः, पद्मानि त
 त्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इदं यथा तव विभूतिरञ्जुज्जिने
 इ, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रज्ञा दिनकृतः प्रह
 तांधकारा, तादृकुतोऽग्रहणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्र्येत
 न्मदाविलविलोलकपोलमूल, मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐ
 रायताजमिजमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा जयं जयति नो जयदाश्रिता
 नाम् ॥ ३४ ॥ जिज्ञेज्जकुंजगलडुज्ज्वलशोणिताक्त, मुक्ताफलप्रकर
 जूपितजूमिजागः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति
 क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कटपांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पं,
 दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमु
 खमापतंतं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं
 समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फलेनमुत्फुल्लमापतंतम् ॥ आक्राम
 ति क्रमयुगेन निरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः
 ॥ ३७ ॥ वटगतुरंगगजगर्जितजीमनाद, माजौ बलं बलवतामपि नू
 पतीनाम् ॥ उद्यद्देवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु
 जिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रजिह्वगजशोणित वारिवाह, वेगावता
 रतरणातुरयोधजीमे ॥ युद्धे जयं विजितडुर्जपजेयपक्षा, स्वरत्पा
 पंकजवनाश्रयिणो लज्जन्ते ॥ ३९ ॥ श्रंजोनिधौ क्षुब्धजिह्वपणा
 क्रचक्र, पाठोऽनपीठजयदोहवणवारुवाग्नौ ॥ रंगतरंगशिखरस्थितप
 नपात्रा, स्वासं विहाय जवतः स्मरणाद्भजन्ति ॥ ४० ॥ उद्धूतजं
 पणजलोदरज्जारज्जुग्माः, शोच्यां दशामुपगताच्युतजीविताशाः ।
 त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या जवंति मकरध्वजतुल्यरूपा
 ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं वृहन्निगमकोटिनि
 ष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयं वि
 तर्धं जया जवंति ॥ ४२ ॥ मत्तर्हिपेऽमृगराजदवानलादि, संघ्राप्त

वारिधिमहोदरबंधनोद्यम् ॥ तस्याशु नाशमुपयाति जयं ज्ञियेव,
 यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्त्रजं तव जिनैः
 गुणैर्निबद्धां, जक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ॥ धत्ते जनो
 य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४
 ॥ इति जक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ वृद्धशांतिर्लिख्यते ॥

॥ जो जो जव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्व मेतत्, ये या
 श्रापां त्रिभुवनपुरोर्दत्तां जकिज्जाजः ॥ तेषां शांतिर्भवतु जवताम
 र्ददादिप्रजावा, दारोग्यश्रोष्टु तेमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥
 जो जो जव्यलोका इह हि जरतैरावतविदेहसंजवानां, समस्तती
 र्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः
 सुधोषाघण्टाचालनानन्तरं सकलसुरासुरैः सह समागत्य सविन
 यमर्हन्नद्वारकं एहीत्वा, गत्वा कनकाद्रिगुंगे, विहितजन्माज्ञियेकः,
 शान्तिमुदघोषयति, ततोऽहंकृतानुकारमिति कृत्वा, महाजनो येन
 गतस्त पंथाः ॥ इति जव्यजनैः सह समागत्य, छात्रपीठे छात्रं वि
 धाय, शान्तिमुदघोषयामि ॥ तत्पूजायात्राछात्रादि महोत्सवानन्तरं
 इति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं १, प्रीयं
 तां २, जगवन्तोऽर्हन्तः, सर्वज्ञा सर्वदर्शिनः ॥ त्रैलोक्यनाथाः, त्रै
 लोक्यमहिताः त्रैलोक्यपूज्याः त्रैलोक्येश्वराः त्रैलोक्योद्योतकराः ॥
 ॐ ओकेवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागर ३, महापश ४, विम
 ल ५, सर्वानुज्जति ६, श्रीवर ७, दत्त ८, दामोदर ९, सुतेजा १०,
 स्वामी ११, मुनिसुव्रत १२, सुमति १३, शिवगति १४, अस्ताग
 १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १९, जि
 नेश्वर २०, शुद्धमति २१, शिवंकर २२, स्यन्दन २३, संप्रति २४,
 एते अतीतः,

॥ चतुर्विंशतितर्थकराः ॥

॥ ॐ श्रीरूपज्ञ १, अजित २, संजव ३, अजिनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रज्ञ ६, सुपार्थ ७, चंद्रप्रज्ञ ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंभ १७, अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्थ २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिनाः

॥ ॐ श्रीपद्मनाभ १, सुरदेव २, सुपार्थ ३, स्वयंप्रज्ञ ४, सर्वानुज्ञाति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोष्टिल ९, शत कीर्ति १०, सुवत ११, अमम १२, निष्कपाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८, यशो धर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, जङ्कर २४.

॥ एते ज्ञावित्तीर्थकराः जिनाः ॥ शान्ताः शान्तिकरा ज वंतु मुनयो मुनिप्रवरा, रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु र कंतु वो नित्यं ॥ ॐ श्रीनाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महत्सेन नरेश्वर ८, सुग्रीव ९, हृढ रथ १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिद्धसेन १४, ज्ञानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुंज १९, सु मित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४ ॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

॥ ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्था ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नंदा १०, विष्णु ११, जया १२, दयामा १३, सुयशा १४, सु १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रजावती १९, पद्मा

२०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४ ॥ इति वर्त्तमान जिनजनन्यः ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुंगुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, पद्ममुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १९, वरुण २०, नृकुटि २१, गोमेष २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ ॥ इति वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, डुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, नृकुटि ८, सुतारका ९, अशोका १०, मानवी ११, चन्दा १२, विविता १३, अंकुशा १४, कंदर्पा १५, निर्वाणा १६, बला १७, धारिणी १८, धरणाप्रिया १९, नरदत्ता २०, गांधारी २१, अंबिका २२, पद्मावती २३, सिद्धापिका २४. एते वर्त्तमानचतुर्विंशतितीर्थकरशासनदेव्यः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं धृति, कीर्ति, कांति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयंतिते जिनेन्द्राः ॥ ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृंगला ३, वज्राकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, कालो ७, महाकाली ८, गौरी ९, गांधारी १०, सर्वस्वमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोध्या १३, अद्भुता १४, मानसी १५, महामानसी १६. एताः पौरुषविद्यादेव्यो रक्षंतु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतेषां तुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॐ महाभद्रसूर्या गारकबुधवृद्धस्पतिशुक्रशनेभरराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सोमयमवरुणकुबेरवासवावित्यस्कन्दविनायक ये सान्येऽपि मामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयतां ॥ २ ॥ अक्षोषकोशकोष्ठागारा नरपत

॥ चतुर्विंशतितर्थकराः ॥

॥ ॐ श्रीरूपज्ञ १, अजित २, संज्ञव ३, अज्ञिनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रज्ञ ६, सुपार्थ ७, चंद्रप्रज्ञ ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंत्यु १७, अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्थ २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिनाः

॥ ॐ श्रीपद्मनाभ १, सुरदेव २, सुपार्थ ३, स्वयंप्रज्ञ ४, सर्वानुज्ञाति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोष्टिल ९, शत कीर्ति १०, सुधत ११, अमम १२, निष्कपाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८, यशो धर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, ज इंकर २४.

॥ एते ज्ञावित्तीर्थकराः जिनाः ॥ शान्ताः शान्तिकरा ज वंतु मुनयो मुनिप्रवरा, रिपुविजयदुर्जिह्वरान्तरेषु दुर्गमागेषु र हंतु वो नित्यं ॥ ॐ श्रीनाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन नरेश्वर ८, सुमीव ९, दृढ रथ १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंदसेन १४, जानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुंज १९, सु मित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४ ॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

॥ ॐ श्रीमहदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्थ ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नंदा १०, विष्णु ११, जया १२, दयामा १३, सुपशा १४, सु प्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रजावती १९, पद्मा

२०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४ ॥ इति वर्तमान जिनजनन्यः ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायक २, त्रिमुख ३, यकनायक ४, तुं धुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यकराज ११, कुमार १२, पण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यकराज १८, कुबेर १९, वरुण २०, जू कुटि २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ ॥ इति वर्तमानजिनयक्षाः ॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, डुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, जूकुटि ८, सुतारका ९, अशोका १०, मानवी ११, चंदा १२, विदिता १३, अंकुशा १४, कंदर्पा १५, निर्वाणी १६, बला १७, धारिणी १८, धरणाप्रिया १९, नरदत्ता २०, गांधारी २१, अंबिका २२, पद्मावती २३, सिद्धाधिका २४. एते वर्तमानचतुर्विंशतितीर्थकरशासनदेव्यः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं धृति, कीर्ति, कांति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयन्ति ते जिनेन्द्राः ॥ ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृंगला ३, वज्राकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, कालो ७, महाकाली ८, गौरी ९, गांधारी १०, सर्वास्त्रमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोध्या १३, अक्षुता १४, मानसी १५, महामानसी १६. एताः पौरुषविद्यादेव्यो रक्षन्तु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रज्ञृतिचान्तुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॐ महाश्वेदमूर्ध्नि गारकबुधवृद्धस्पतिशुक्रशनैश्वरराहुकेतुसहिताःसलोकपालाःसोमयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रे देवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां ॥ २ ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपत

यथ जवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्रमित्रव्रातकलत्रसुहृत्स्वजनसंबन्धिबंधु
 वर्गसहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो जवंतु ॥ अस्मिंश्च ज्ञमं
 मूले आयतननिवासिनां साधुसाध्वी श्रावकश्राविकाणां, रोगोपस
 र्गव्याधिदुःखदौर्भनस्योपशमनाय शान्तिर्जवतु ॥ ॐ तुष्टिपुष्टि
 द्विवृद्धिमाङ्गल्योत्सवाः जवंतु ॥ सदाप्रादुर्भूतानि दुरितानि पापा
 नि शाम्यंतु शत्रवः पराङ्मुखा जवंतु स्वाहा ॥ श्रीमते शान्तिना
 म्नाय, नमः शान्तिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाप्य
 र्चिताङ्गये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे
 गुरुः ॥ शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहेष्टेष्टे ॥ २ ॥ ॐ उ
 न्मृष्टरिष्टदुष्ट, ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ॥ संपादितहितसंपत्,
 नामप्रदणं जयति शान्तेः ॥ ३ ॥ श्रीसंगपौरजनपद, राजाधिपरा
 जसन्निवेशानाम् ॥ गोष्ठीपुरमुत्थानां, व्याहरणैर्व्याहरेष्टांतिम् ॥ ४ ॥
 श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्जवतु, श्रीपौरलोकस्य शान्तिर्जवतु, श्रीराज
 सन्निवेशानां शान्तिर्जवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्जवतु, ॐ स्वाहा
 ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शान्तिः प्रतिष्ठा
 यात्रास्त्रावसानेषु, शान्तिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागरुधू
 पवासकुसुमांजलिसमेतः, स्नात्रपात्रे श्रीसंपत्समेतः, शुचिः शुचि
 वपुः पुष्पवस्त्रचंदनाभरणालंकृतः, चंदनतिलकं त्रिषाय पुष्पमालां
 कंठे कृत्वा, शान्तिमुद्धोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति
 ॥ नृत्यंति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायंति च मंगलानि ॥ स्तो
 त्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कड्याणञ्जाजोहि जिनाञ्जिपेके ॥ १
 ॥ अहं तिष्ठपरमाया शिवा देवी, तुम्ह नयरनिवासिनी ॥ अम्ह
 शिवं तुम्ह शिवं, अमुदोवसमं जवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवमस्तु
 सर्वजगतः, परहितनिरता जवंतु जूतगणाः ॥ दोषाः प्रयान्तु नाशं,
 सर्वत्र सुखी जवंतु लोकाः ॥ २ ॥ वृषसर्गाः कथं पान्ति, त्रिपंते वि

प्रवक्ष्यामः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥ इति
श्रीवृद्धशान्तिः समाप्ता ॥

॥ अथ जिनपंजरस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्धं अर्धब्रह्मो नमोनमः, ॐ ह्रीं श्रीं
अर्धं सिद्धेन्द्रो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्धं आचार्येन्द्रो नमो
नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्धं उपाध्यायेन्द्रो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ
र्धं श्रीं गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुन्द्रो नमोनमः ॥ १ ॥ एव पंच
नमस्कारः, सर्व पापहर्षकरः ॥ मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं जवति
मंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जयविजये, अर्धं परमात्मने नमः ॥ क
मलप्रजसूरीशो, ज्ञापते जिनपंजरम् ॥ ३ ॥ एकजक्तोपवासेन, त्रिकालं
यः पठेद्विदं ॥ मनोज्ञलिपितं सर्वं, फलं स लज्जते ध्रुवं ॥ ४ ॥ जू
शय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोजनिवर्जितः ॥ देवताये पश्चिन्नास्मा, प
ण्मासैर्लज्जते फलं ॥ ५ ॥ अर्धतं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चकुर्ललाटके
॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणैरु ॥ ६ ॥ साधुवृत्तं
मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च ॥ सूर्यचंद्रनिरोधेन, सुधीः सर्वा
र्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनक्षेत्री, वामपार्श्वे स्थितोजिनः ॥ अं
गसंधिषु सर्वज्ञः, परभेषी शिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वांशां श्रीजिनो रक्षे,
दक्षिणीं विजितेन्द्रियः ॥ दक्षिणांशं परं ब्रह्म, नैर्ऋतिं च त्रिकालवि
त् ॥ ९ ॥ पश्चिमांशां जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थे
रुत् सर्वा, मीशानीं च निरंजनः ॥ १० ॥ पातालं जगवानर्ध,
ल्लाकांशं पुरुषोत्तमः ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षंतु सकलं कुलं ॥
११ ॥ शयनो मस्तकं रक्षे, दजितोपि विलोचने ॥ संज
यः कर्णयुगलं, नासिकां चाग्निनंदनः ॥ १२ ॥ त्रयोश्रीसुमती र
क्षेत्, वंतान्पद्मप्रज्ञो विष्णुः ॥ जिह्वां सुपार्श्वदेवीयं, तालु चंद्रप्रज्ञो
विष्णुः ॥ १३ ॥ कंठं श्रीसुविधोरक्षेत्, हृदयं श्रीसुशोभितः ॥ श्री

यांसो बाहुयुगलं, वासुगुल्यः करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्ते,
 दनंतोऽसौ स्तनावपि ॥ सुधर्मोऽपुदरास्थीनि, श्रीशांतिर्नाजिमंजलं
 ॥ १५ ॥ श्रेकुंभुगुह्यकं रक्ते, दरो रोमकटीतटं ॥ मल्लिरूपद्विवं
 शं, जंघे च मुनिसुवनः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमी रक्तेत्, श्रीनेमि
 श्वरणद्वयं ॥ श्रीपाश्वर्धनाग्रः सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥
 पृथिवीजलतेजस्क, वाय्वाकाशमयं जगत् ॥ रक्तेदशपपापेभ्यो, वी
 तरागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रुसंक
 टे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, जूनप्रेतजयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणे
 प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोगपी
 निते ॥ २० ॥ नाकिनी शाकिनीयस्ते, महाग्रहणार्हिते ॥ नद्युक्ता
 रेऽव्वैपम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुच्चाय, यः
 स्मरेज्जिनपंजरं ॥ तस्य किंचिद्भयं नास्ति, लज्जते सुखसंपदं ॥ २२ ॥
 जिनपंजरनामेदं, यः स्मरंत्यनुवासरं ॥ कमलप्रज्जराजेंड, श्रियं न
 लज्जते नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुच्चाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेत
 ज्जिनपंजरारण्यं ॥ आसादयेत्सः कमलप्रज्जारण्यं, लक्ष्मीं मनोवाञ्छित
 पूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपत्नीयवरेण्यगच्छे, देवप्रज्जाचार्यपदाब्जदं
 सः ॥ वार्द्धिद्वूनामशिरेयजैनो, जीपाद् गुरुः श्रीकमलप्रज्जारण्यः
 ॥ २५ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ स्तोत्रोमैस्तोत्रलिखणा ॥

॥ अथ बहानवकार लिख्यते ॥

॥ किं कल्पनहरे अयाण चिंतन मणजितरि, किं चिंतामणि
 कामधेनु आरादो बहुपरि ॥ चिंतावेली काज किसे देसांतर संघट,
 रमणरासि कारण किसे सायर उल्लंघन ॥ चवदे पूरव सार युग लखन
 ए नवकार, सपक्ष काज मदियव सरे डगर तरे संसार ॥ १ ॥ के

बलि ज्ञासिय रीत जिके नवकार आराहै, जोगवि सुस्क अणंत
 अंत परम प्यसाहै ॥ इण जाणे सुर रिद्धि पुत्त सुद्ध विलसै बहु
 परि, इण जाणे देवलोक इंदपद पामे सुंदरि ॥ एह मंत्र सासतो
 जपे अर्चित चिंतामणि एह, समरण पाप सबे टले रिद्धि सिद्धि
 नियगेह ॥ २ ॥ निय सिर ऊपर जाण मझ चिंतवै कमल नर,
 कंचणमय अठदल सहित तिहां माहे कनकवर ॥ तिहां वेठा अ
 रिहंतदेव पञ्चमासण फिटकमणि, सेयवस्थ पदरेवि पढम पय
 चिंते नियमणि ॥ निवारय चउ गइ गमण पामिय सासय सुस्क,
 अरिहंत जाणे तुम लहो जिम अजरामर मुस्क ॥ ३ ॥ पनर जे
 य तिहां सिद्ध वीय पद जे आराहे, राते विजुमतणे वन्ननिय सो
 दग साहे ॥ राती घोती पदर जपै सिद्धिं पुढे दिसि, तयल लोय
 तिह नरहि होइ ततखिणतेंवति ॥ मूलमंत्र वशोकरण अवर स
 हू जगधंद, मणमूली उगध करे बुद्धि दीणजाचंध ॥ ४ ॥ दक्षिण
 दिसि पंखनी जपे नमो आयरिआण, सोवनवन्नह सीत सहित
 उवए सहिनाण ॥ रिद्ध सिद्ध कारणे लाज ऊपर जे ध्यावे, पदरे
 गीलावत्य तेह मन वंठिय पावै ॥ इण जाणे नव निधि हुवेए
 जोग कवे नवि होय, गज रथ हय वर पालखी चामर ठत्त तिर
 जोय ॥ ५ ॥ नीलवन्न उवजाय सीत पादंता पंछिम, आराहिजे
 पंग पुढ धारंत मणोरम ॥ पंछिम दिसि पंखनीय कमल ऊपर सु
 रजाण, जोवौ परमानंद तासु गय देवविमाण ॥ गुरु लघु जे रक्के
 वेडुर तिहां नर बहु फल होइ, मन सूधे विण जे जपे तिहां फल
 सिद्ध न होइ ॥ ६ ॥ तर्ब साधु उत्तर विज्ञाग सामला वश्या, जि
 ण धर्म लोय पयासयंत चारित गुण जिण ॥ मण वयण काएदि
 जपे जे एके जाणै, पंचवन्न तिहां नाण जाण गुण एह पमाणे ॥
 अनंत चौवीसी जग हुइए दोसी अवर अनंत, आदि कोइ जाणे

नदी इण नवकारह मंत ॥ ७ ॥ एसो पंच नमोकारो पद दितिअ
 गणेहिं, सब पावप्पणासणो पद जपनेरेहिं ॥ वायव दिति जाएह
 मंगलाणं च सद्येसि, पढमं हवइ मंगलं ईसाण पएसिं ॥ चिहुं वि
 सि चिहुं विदिसे मिलिय अठ दल कमल ठवेइ, जो गुरु लघु
 जाणी जपै सो घण पाव खवेइ ॥ ८ ॥ इण प्रज्ञाव घराणिंद हुठ
 पोयालह सामी, समलो कुप्रर उपन्न जिल्ल सुर लोयह गामी ॥
 संवल कंबल वे बलव पहुता देवा कप्पे, सूली दीयो चोर देव थयो
 नवकारहि जप्पे ॥ शिवकुमार मन बंठिय करे जोगी लियो मत्ता
 ण, सोनापुरसो सीधलो इण नवकार प्रमाण ॥ ९ ॥ ठीके बैठो
 चोर एक आकासे गामी, अहि फिट्टि हुई फूल माल नवकारह
 नामी ॥ बाबरू आचारंत बाल जल नदी प्रवाहे, बीघ्यो कंटही
 उपर मंत्र जपियो मनमांहे ॥ चिट्ठा कांज सबे सरे इरत परत
 विमास, पाळित सूरितणी परे विद्या सिद्ध आकास ॥ १० ॥ चौर
 धारु संकट टले राजा बसि होवे, तिठंकर सो होइ लाख गुण वि
 धिसुं जोवे ॥ साइण डाइण जूत प्रेत बेत्ताल न पोहवे, आधि
 व्याधि महतणी पीरुते किमहि न होवे ॥ कुठ जलोदर रोग सबे
 नासै एणही मंत, मयणासुंदरितणी परे नव पय जाण करंत ॥
 ११ ॥ एक जीह इण मंत्रतणा गुण किता वखाणुं, नाणहीण
 उठमड एह गुण पार न जाणुं ॥ जिम सत्तुंजय तिठराठ महिमा
 उदयवंतो, सवल मंत्र धुरि एह मंत्र राजा जयवंतो ॥ तिठंकर
 गंगाहर पणिष चवदह पूरव सार, इस गुण अंत न को कहे गुण
 गिरुठ नवकार ॥ १२ ॥ अरु संपय नव पय सहित इणसठ लहु
 अस्कर, गुरु अस्कर सत्तैव इह जाणो परमस्कर ॥ गुरु जिण वल्लह
 सूरि जणे सिव सुखह कारण, नरय तिरय गय रोग सोग बहु डस्क
 निवारण ॥ जल थल महियल वनगदण समरण हुवै इक चित्त, पंच

परमेष्टि मंत्रद तणी सेवा देज्यो नित ॥ १३ ॥ इति पंच परमेष्टि
महिमा गर्भित वृद्ध नवकार मंत्र संपूर्ण ॥

॥ अथ शक्ति जिन स्तोत्र ॥

॥ तिजय पहुत्त पयासं । अठ महापाणिदेर जुत्ताणं ॥ सम
य खित्त वियाणं । सरेमि चकं जिणं दाणं ॥ १ ॥ पणवीसाय अस्तिआ ।
पनरस्त पन्नास्त जिनवर समूहो ॥ नासेउ सयल डुरियं । नवियाणं
जनि जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणयाला विय । तीसा पन्नत्तरी जिणवरिं
वा ॥ गहजूअ रक्क साइणि । घोरुवसगं पणासेइ ॥ ३ ॥ सत्तरि पण
तीसा विय । सढी पंचेव जिण गणो एसो ॥ वाहि जल जलण हरकरि
। चौरारि महाजयं हरत्त ॥ ४ ॥ पण पन्नाय दसेवय । पन्नढी तहय
चेव चालीसा ॥ रक्कंतु मे शरीरं । देवासुर पणमिआ सिद्धा ॥ ५
॥ ॐ हरहुंदः सरसूंत । हरहुंदः तहय चेव सरसूंतः ॥ आलिदिय
नाम गमं । चकं किर सवत्त जहं ॥ ६ ॥ ॐ रोइणी पन्नत्ती । व
ऊसंखला तहय वऊअंकुसिआ ॥ चकेसरि नरदत्ता । कालि महाका
लि तहय गौरी ॥ ७ ॥ गंधारि महाज्वाला । माणविवइरुद्ध तहय
अबुत्ता ॥ माणसि महमाणसिआ । विऊा देवीउ रक्कंतु ॥ ८ ॥ पंचदस
कम्मजूमिसु । उप्पन्नं सत्तरि जिणाण सयं ॥ विविह रयणाणवन्नो ।
वत्तोहिअं हरत्त डुरिआइ ॥ ९ ॥ चत्ततीस अइसय जुआ । अठ
महापाणिदेर कयसोदा ॥ तिठयर गयमोहा । जाए अवा पयत्तेण
॥ १० ॥ ॐ वर कणय संख विहुम । मरगय घण सन्निहं विगय
मोहं ॥ सत्तरि सयं जिणाणं । सत्तामर पूइयं वंदे स्वाहा ॥ ११ ॥
ॐ जुवणवइ वाणमंतर । जोइसवासी विमाणवासीअ ॥ जे केवि
हुठ देवा । ते सबे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेणं
। फल देविदिक्कणखाविअंपीयं ॥ एगंतरगदमुग्गय । साइणि नृत्यं
पणासेइ ॥ १३ ॥ इय सत्तरि सयं जंतं । सम्मं मंतं । डुवार पणि

विद्वियं ॥ डुरिआरि विजयतंतं । निघ्नंतं निचमवेद ॥ १४ ॥
॥ इति शतति जिन स्तोत्रं ॥

॥ अथ नवग्रह गर्भित पार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ दोसावहार दस्को, नाखियायरवियासिगोपसरो ॥ रयणत्तय
स्त जणत्तं, पासजिणो जयत्त जय धस्को ॥ १ ॥ कय कुवलय प
मियोहो, हरणं किय विग्गहो कला निवत्त ॥ विद्वियारविंद मह
णो, दीयरत्तं जयत्त पासजिणो ॥ २ ॥ कंतीइ निज्झिणंतो, सि
वूरं पुदवि नंदणो कूरो ॥ जय जंतुअमअवक्को, सुमंगलो जयत्त
पहुपासो ॥ ३ ॥ उप्पलं दल नीलरुइ, हरिमंरुल संथुत्तं इलानंदो
॥ रयणियरदारत्तमह, बुहोपसीइज्ज पासजिणो ॥ ४ ॥ नाद्वियवाय
वियट्ठो, नायट्ठो नागरायकय पूत्त ॥ सिरि पासनाह देवो, देवाय
रित्तं सुहं दित्तत्त ॥ ५ ॥ राया वट्ट समुज्जत्तं, तणुप्पहा मंरुलो म
हात्तूइ ॥ असुरेहिं नमिज्जंतो, पासजिणंदो कवी जयत्त ॥ ६ ॥
तिमिरासि समारुट्ठो, संतो डुखावहो जयंम्मि धिरो ॥ बहुलतमा
सरित्तं सिरी, जय चक्कु सुत्तं जयत्त पासो ॥ ७ ॥ कवलीकय दो
सायर, मायंरुहं अहो तणु विमुक्कं ॥ लोआ ज्जरणी जूयं, पास
जिणं सत्तमं सरह ॥ ८ ॥ डुरिआइ पासनाहो, सिंहावमालीनहो
ज्जवणकेत्त ॥ दूरंतम रासीत्तं, सत्तम णण छिन्नं हरत्तं ॥ ९ ॥ इअ
नवग्रह थुइ गप्पं, जिणपहसूरीहिं गुंफियं अवणं ॥ तुह पास पढइ
जोत्तं, असुहावि गहा न पांरुत्ति ॥ १० ॥ इति नवग्रह गर्भित
पार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिन गर्भित नवग्रह शांति स्तोत्रम् ॥

॥ जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुज्ञापितं ॥ गृहशांतिं प्र
वक्ष्यामि, लोकानां सुखदेतवे ॥ १ ॥ जिनेन्द्राः खेचराक्षेयाः, पूज
नीया विधिक्रमात् ॥ पुष्पैर्विलेपनैर्धूपैः, नैवेद्यैस्तुष्टिदेतवे ॥ २ ॥

पद्मप्रज्ञस्य मार्त्तम, श्वंश्चन्द्रप्रज्ञस्य च ॥ वासुपूज्ये जूमीपूज्यो, बु
धोऽप्यष्टजिनेषु च ॥ ३ ॥ विमलानंतधर्माः, शांतिःकुंथुर्नमिस्त
था ॥ वर्द्धमानो जिनेन्द्राणां, पादपद्मे बुधं न्यसेत् ॥ ४ ॥ रूपज्ञा
जितसुपार्श्वा, अजिनंदनशीतलौ ॥ सुमतिः संज्ञवः स्वामी, श्रेयांस
श्च वृहस्पतिः ॥ ५ ॥ सुविधेः कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्वरः ॥
नेमिनाथे जवेन्द्रादुः, केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥ ६ ॥ जनाँल्लग्रे च
राशौ च, पीरयंति यदा ग्रहाः ॥ तदा संप्रजयेक्षीमान्, खेचरैः स
हितान् जिनान् ॥ ७ ॥ पुष्पं गंधादिर्जिर्धूपैः, फलनैवद्यसंयुतैः ॥ र्व
र्णसदृशदानैश्च, वासोजिर्दक्षिणान्वितैः ॥ ८ ॥ आदित्यसोममंगल,
बुधगुरुशुक्राः शनैश्वरो राहुः ॥ केतुप्रमुखाः खेटाः, जिनपतिपुरतोव
तिष्ठंतु ॥ ९ ॥ जिननामरुतोच्चार, देशनक्षत्रवर्णकैः ॥ स्तुताश्च पू
जिता जक्त्या, ग्रहाः संतु सुखावहाः ॥ १० ॥ जिनानामग्रतः
स्थित्वा, ग्रहाणां सुखहेतवे ॥ नमस्कारशतं जक्त्या, जपेदष्टोत्तरं
शतम् ॥ ११ ॥ जज्ञाहुर्वाचेदं, पंचमः श्रुतकेवली ॥ विद्याप्रज्ञाव
तः पूर्वाद्, ग्रहशांतिविधिर्मतः ॥ १२ ॥ इति चतुर्विंशतिजिनग
र्भित नवग्रहशांति स्तोत्रम् ॥

॥ सूर्यग्रह क्रूर होय तो १ पद्मप्रज्ञजीकी माला फेरणी.
चंद्र । २ चंद्राप्रज्ञजीकी ॥ मंगल । ३ श्रीवासुपूज्यजी ॥ बुध । ४ श्री
विमलनाथजी, अनंतनाथजी, श्रीधर्मनाथजी, श्रीअरुनाथजी, श्री
शांतिनाथजी, श्रीकुंथुनाथजी, श्रीनमीनाथजी, श्रीमहावीरस्वामी
॥ वृहस्पति । ५ श्रीरूपप्रदेवजी, श्रीअजितनाथजी, श्रीसुपार्श्व
नाथजी, श्रीअजिनंदनजी, श्रीशीतलनाथजी, श्रीसुमतिनाथजी,
श्रीसंज्ञवनाथजी, श्रीश्रेयांसजी ॥ शुक्र । ६ सुविधिनाथजी ॥
शनीश्वर । ७ श्रीमुनिसुव्रतजी ॥ राहु । ८ नेमनाथजी ॥ केतु
९ मल्लिनाथजी, पार्श्वनाथजी ॥ रंग मुजव दान गुरुमुपात्रज्ञ

क्ति करणी माला पूर्वोक्त फेरणी पूजा जिनेश्वरकी द्रव्ये उर
जावे करणी ॥

॥ अथ कल्याणमंदिर स्तोत्रं ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवयजेदि, जीताञ्जयप्रदमर्निंदितमंहि
पद्मम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु, पोतायमानमज्जनम्य जिने
श्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमांबुराशोः, स्तोत्रं सुविस्तृत
मतिर्न विभ्रुर्विधातुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो, स्तस्या
हमेव किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युगमम् ॥ सामान्यतोऽपि तव
वर्णयितुं स्वरूप, मस्मादृशाः कथमधीश ज्वंत्यधीशाः ॥ घृष्टोपि
कौशिकशिशुर्यदिवा दिवांधो, रूपं प्ररूपयति किं किल धर्मरश्मेः ॥
३ ॥ मोहद्वयादनुजवन्नपि नाथ मर्षो, नूनं गुणान् गणयितुं न
तव क्षमेत ॥ कळपांतवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मा, न्मीयेतकेन ज
लधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अच्युद्यतोस्मि तव नाथ जनाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं
वित्तं, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियांबुराशोः ॥ ५ ॥ ये योगिना
मपि न यांति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं जवति तेषु ममावकाशः ॥
जातातदेवमसमीकितकारितेयं, जल्पंति वा निजगिरा ननु पक्षिशो
ऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामर्चित्यमहिमा जिनसंस्तवस्ते, नामापि पाति
ज्वंतो ज्वंतो जगति ॥ तीव्रातपोपहतपांथजनान्निदाधे, प्रीणाति
पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्घर्त्तिनि त्वयि विजो शिथि
लोज्वंति, जंतोः क्षणेन निविना अपि कर्मबंधाः ॥ सद्यो जुजंगम
मया इव मध्यज्ञाग, मज्ज्यागते वनशिखंरिनि चंदनस्य ॥ ८ ॥ सु
च्यंत एव मनुजाः सदसा जिनेऽ, रौडैरुपश्वशतैस्त्वयिवीकितेपि
॥ गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपला
यमानैः ॥ ९ ॥ त्वं तारकोजिन कथं जविनां न एव, त्वामुद्धंति ह

दयेन यदुत्तरंतः ॥ यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेषनून, मंतर्गतस्य मं
 रुतः स किलानुजावः ॥ १० ॥ यस्मिन् हरप्रजृतयोऽपि हतप्रजाव
 वाः, सोऽपि त्वयारतिपतिः कृपितः कृणेन ॥ विध्यापिता हुतजुजः
 पयसाथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्देवामवेन ॥ ११ ॥ स्वामि
 न्नतुल्यगरिमाणमपि प्रपन्ना, स्त्वां जंतवः कथकदो हृदये दधानाः
 ॥ जन्मोदधिं लघु तरंत्यतिलाघवेन, चित्त्यो न हंत महतां यदि वा
 प्रजावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विज्ञो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्ता
 स्तदा वत कथं किल कर्मचौराः ॥ प्लोपत्यमुत्र यदि वा शिशिरा
 पिलोके, नीलडुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां यो
 गिनो जिन सदा परमात्मरूप, मन्वेपयंति हृदयान्बुजकोशदेशे ॥
 पूतस्यनिर्मलरुचेर्यदिवाकिमन्य, दक्षस्य संज्ञवि पदं ननु कर्णिकायाः
 ॥ १४ ॥ ध्यानाङ्गिनेश जवतो जविनः कृणेन, वेहं विहाय परमा
 त्मदशां व्रजंति ॥ तीव्रानलाडुपलजावमपास्य लोके, चामीकरत्व
 मचिरादिव धातुजेदाः ॥ १५ ॥ श्रंतः सदैव जिन यस्य विज्ञाव्यसे
 त्वं, ज्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यवि
 वार्त्तिनोहि, यद्विग्रहं प्रशमयंति महानुजावाः ॥ १६ ॥ आत्मा म
 नीषिन्निरयं त्वदज्ञेदबुद्ध्या, ध्यातो जिनेऽजवतीह जवत्प्रजावः ॥
 पानीयमप्यमृतमित्यनुचित्यमानं, किं नाम नो विपत्रिकारमपाकरो
 ति ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि, नूनं विज्ञो हरिहरा
 दिधिया प्रपन्नाः ॥ किं काचकामलिज्जिरीश सितोपि शंखो, नो गृ
 ह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ घर्मोपदेशसमये सविधानुजा
 वा, दास्तां जनो जवति ते तरुरप्यशोकः ॥ अच्युज्जते दिनपत्नौ
 स महोरुदोपि, किं वा विवोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥
 चित्रं विज्ञो कथमवाङ्मुखवृतमेव, विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृ
 ष्टिः ॥ त्वद्गोचरे सुमनसां यदिवा मुनीश, गच्छंति नूनमधएव हि

घंघनानि ॥ १० ॥ स्थाने गज्जीरहृदयोदधिसंज्ञवायाः, पीयूषतां
 तव गिरः समुदीरयन्ति ॥ पीत्वा यतः परमसंमदसंगजाजो, ज्ञव्या
 व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम् ॥ ११ ॥ स्वामिन् सुदूरमवनम्यसमु
 त्पतन्तो, मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः ॥ येऽस्मै नतिं विदधते
 मुनिपुंगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुक्लजावाः ॥ १२ ॥ इयामं
 गज्जीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न, सिंहासनस्थमिह ज्ञव्यशिखंरिन्स्त्वाम्
 ॥ आलोकयन्ति रत्नसेन नदन्तमुच्चैः, आमीकराद्दिशिरसीव नवांबुदा
 हम् ॥ १३ ॥ उदग्गता तव शितियुतिमंरुत्नेन, लुप्तदृढविरगो
 कतस्वज्ज्व ॥ सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग, नीरागतां
 व्रजन्ति कोन सचेतनोपि ॥ १४ ॥ ज्ञोज्ञोः प्रमादवधूय ज्ञजध्वमे
 न, मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रतिसार्थवाहम् ॥ एतन्निवेदयति देव जगन्न
 याय, मन्ये नदन्नजिनज्ञःसुरडुंडुजिस्ते ॥ १५ ॥ उद्योतितेषु ज्ञ
 वता ज्ञवनेषु नाथ, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ॥ मुक्ताक
 लांपंकलितोच्चृषितातपत्र, व्याजात्रिधा घृततनुर्ध्रुवमच्युपेतः ॥
 ॥ १६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगतयर्षिर्मितेन, कांतिप्रतापयशस्तामिव सं
 चयेन ॥ माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, सालश्रेषा ज्ञगवन्नजि
 तोविज्ञासि ॥ १७ ॥ दिव्यसृजोजिन नमस्त्रिदशाधिपाना, मुत्सृज्य
 रत्नरचितानपि मौलित्रंधान् ॥ पादौ श्रयन्ति ज्ञवतो यदि वा परत्र,
 त्वंत्संगमे सुमनसो न रमन्तएव ॥ १८ ॥ त्वं नाथ जन्मजलधेर्विष
 राङ्मुखोपि, यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्तं हि पार्थि-
 निपस्य सतस्तवैव, चित्रं विज्ञो यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ १९ ॥
 विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किं वाक्करप्रकृतिरप्यलिपिस्तः
 मीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति ॥
 श्वविकाशहेतुः ॥ २० ॥ प्राग्ज्ञारसंज्ञृतनज्ञांसि रजांसि रोषा, दुष्ट
 पितानि कमठेन शठेन यानि ॥ गायानि तैस्तव न नाथ हताह

ताशो, यस्तस्त्वमीजिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यज्ञर्जुर्जित
 घनौघमदन्ननीमं, व्रश्यत्तन्निन्सुसलमांसलघोरधारम् ॥ दैत्येन मुक्त
 मथ दुस्तरवारि दध्रे, ते नैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥
 ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुंन, प्राखं वृजृजयदवक्रविनिर्पदग्निः ॥
 भ्रेतव्रजः प्रतिजघंतमपीरितोयः, सोऽस्याऽजवत्प्रतिजवं जवदुःखदे
 तुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्तएव जुवनाधिप ये त्रिसंध्य, माराधयंति वि
 धिवद्भिधुतान्यकृत्याः ॥ जक्तपोल्लसत्पुलकपद्मलदेहदेशाः, पादद्व
 यं तव विज्ञो जुवि जन्मजाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारजववारिनि
 धौ मुनीश, मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु
 तव गोत्रपवित्रमंत्रे, किंवा विपद्भिग्वरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥
 जन्मांतरेपि तव पादयुगं न देव, मन्ये मया महितमीहितदानदक्ष
 म् ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश पराजवानां, जातो निकेतनमहं मयि
 ताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं वि
 ज्ञो सरुददि प्रविलोकितोऽसि ॥ मर्माविधो विधुर्यंति हि मामन
 र्थाः, प्रोद्यतप्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि महि
 तोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतति मया विधृतोऽसि जक्तया ॥
 जातोऽस्मि तेन जनवांघवदुःखपात्रं, यस्मात्किषाः प्रतिफलंति न
 जावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल दे शरण्य, कारु
 ण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य ॥ जक्तया नते मयि मद्देश दयां विधाय,
 दुःखाकुरोदलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणं श
 रण्य, माताय सादितरिपुप्रश्रितावदातम् ॥ त्वत्पादपंकजमपि प्र
 णिधानवंध्यो, वध्योऽस्मि चेज्जवनपावन हा दतोऽस्मि ॥ ४० ॥
 देवैर्द्वंद्वं विदिताखिलवस्तुसार, संसारतारक विज्ञो जुवनाधिनाथं
 ॥ त्रायस्व देव करुणाहृद मां पुनीदि, सोऽंतमद्य जयदव्यसनांशु
 राशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्तिनाथ जवदंहिसरोरुद्गाणां, जक्तेः फलं कि

मपि संततिसंचितायाः ॥ तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्यं नूनाः,
 स्वामी त्वमेव नुवनेऽत्र नवांतरेऽपि ॥ ४१ ॥ इत्थं समाहिताधयो
 विधिवज्जिर्नेद, सांक्षोत्तसत्पुलककंचुकितांगजागाः ॥ त्वद्विंशनिर्मल
 मुखांयुनवद्वलक्ष्या, ये संस्तवं तव विज्ञो रचयंति नव्याः ॥ ४२ ॥
 जननयन कुमुदचंद, प्रज्ञास्वराः स्वर्गसंपदो नुक्त्वा ॥ ते विग
 लितमलनिघया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ ४३ ॥ इति श्रीक
 ष्याणमंदिरस्तोत्रं ॥

॥ अथ रूपिमंडल स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ आद्यंताक्षरसंलक्ष्यं, मकरं व्याप्य यत् स्थितं ॥ अग्निज्वा
 लासमं नाद, विंदुरेखासमन्वितं ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रांतं, म
 नोमलविसोधकं ॥ देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्मलं ॥ २ ॥
 अर्द्धमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः ॥ सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, स
 र्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमोर्द्धञ्च ईशेऽन्य, ॐ सिद्धेऽन्यो न
 मोनमः ॥ ॐ नमः सर्वसूरिऽन्यः, उपाध्यायेऽन्य ॐ नमः ॥ ४ ॥ ॐ नमः
 सर्वसाधूऽन्यः ॥ ॐ ज्ञानेऽन्यो नमोनमः ॥ ॐ नमः त्वदृष्टिऽन्यः । चा
 रित्रेऽन्यो नमोनमः ॥ ५ ॥ श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्वेत, दर्शदाद्यष्टकं शुभं ॥
 स्थानेष्वष्टसु विभ्यस्तं, पृथग् बीजसमन्वितं ॥ ६ ॥ आद्यं पदं शिखां
 रक्ते, त्परं रक्तेषु मस्तकं ॥ तृतीयं रक्तेऽन्नेत्रे, तुर्यं रक्ते च नासिकां
 ॥ ७ ॥ पंचमं तु मुखं रक्ते, षष्ठं रक्ते च घण्टिकां ॥ नाभ्यंतं सप्त
 मं रक्ते, द्द्वेत्पादांतमष्टमं ॥ ८ ॥ पूर्वप्रणवतः सांतः, सरेकोदधि
 पंचपान् ॥ सप्ताष्टदशसर्थाकान्, श्रितोविंदुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥
 पूज्यनामाक्षरा आद्याः, पंचातोऽज्ञानदर्शन ॥ चारित्रेऽन्यो नमो मध्ये
 ॥ ह्रीं सांतदसमलंकृतः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं हूः हं हं हं ह्रीं
 हूः असिआजस्ता ज्ञानदर्शनचारित्रेऽन्यो नमः । जंबुवृक्षधरो दीपः,
 क्षारोदधिसमावृतः ॥ अर्द्धदाद्यष्टकैरष्टः, काष्ठाधिष्टैरलंकृतः ॥ ११ ॥

मध्यसंगतो मेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः ॥ उच्चैरुच्चैस्तरस्तार, स्तारा-
 लमन्तितः ॥ १३ ॥ तस्योपरि सकारांतं, बीजं मध्यास्य सर्वगं ॥
 गमि विंमार्दित्यं, ललाटस्थं निरंजनं ॥ १४ ॥ अक्षयं निर्मलं
 तं, बहुलं जाड्यतोन्नितं ॥ निरीदं निरदंकारं, सारं सारतर
 ॥ १५ ॥ अनुक्तं शुभ्रं स्फीतं, सात्त्विकं राजसंमतं ॥ तामसं-
 त्संबुद्धं, तैजसं शर्वरीसमं ॥ १६ ॥ साकारं च निराकारं, सरसं
 सं परं ॥ परापरपरातीतं, परंपरपरापरं ॥ १७ ॥ एकवर्णी द्विवर्णी च,
 त्रिवर्णी तूर्यवर्णकं ॥ पंचवर्णी महावर्णी, सपरं च परापरं ॥ १८ ॥
 त्वं निष्कलं तुष्टं, निर्धूतं प्रातिवर्जितं ॥ निरंजनं निराकारं, निर्लेपं
 तसंश्रयं ॥ १९ ॥ ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरु ॥
 तिष्ठं महादेवं, लोकालोकप्रकाशकं ॥ २० ॥ अर्द्धदारुपस्तु-
 तः, सरेफो विंदुमन्तितः ॥ तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहुधा नाद-
 जितः ॥ २१ ॥ अस्मिन् धीजे स्थिताः सर्वे, वृषजायां जिनो-
 ः ॥ चर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ताः, ध्यातव्यास्तत्र संगताः ॥ २२ ॥
 भ्रंशसमाकारो, विंदुतीक्ष्णसमप्रज्ञः ॥ कलाकणसमास्तांतः, स्वर्णाभिः
 रो मुखः ॥ २३ ॥ शिरसंलीनईश्वरो, विनीतोवर्णतः स्मृतः ॥
 तुसारसंलीनं, तर्ध्रुन्मन्त्रं स्तुमः ॥ २४ ॥ चंद्रप्रज्ञपुष्पदंतौ,
 स्थितिसमाश्रितौ ॥ विंदुमध्यगतौनेमि, सुव्रतौ जिनसत्तमौ
 ॥ २५ ॥ पद्मप्रज्ञवासुपुष्पौ, कलापदमधिष्ठितौ ॥ तिरिई स्थिति-
 तौ, पार्श्वमालोजिनेश्वरो ॥ २६ ॥ शेषास्तीश्रुतः सर्वे, हर-
 ने नियोजिताः ॥ मायावीजाकरं प्राप्ता, भ्रतुर्विशतिरर्द्धतां ॥ २७ ॥
 गवेषमोहाः, सर्वपापविवाजिताः ॥ सर्वदा सर्वकाले, ते जवंतु
 त्तमाः ॥ २८ ॥ देवदेवस्य यज्ञकं, तस्य चक्रस्य या विज्ञा ॥
 त्रादितसर्वाङ्ग, मामांदिनस्तमाकिनी ॥ २९ ॥ देवदेवस्य य०
 ऽदिनस्तुगाकिनी ॥ ३० ॥ देवदे० मामांदिनस्तुगाकिनी ॥ ३१ ॥

देव० मामांदिनस्तुकाकनी ॥ ३१ ॥ देवदेवस्य० मामांदिनस्तु
 शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मामांदिनस्तुहाकिनी ॥ ३३ ॥ देव
 मामांदिनस्तुयाकिनी ॥ ३४ ॥ देवदे० मामांदिस्तुपल्लगा ॥ ३५ ॥
 देवदे० मामांदिनस्तुहस्तनः ॥ ३६ ॥ देवदे० मामांदिस्तुराकत
 ॥ ३७ ॥ देवदे० मामांदिस्तुवह्नयः ॥ ३८ ॥ देवदे० मामांदिस्तु
 तुसिंहकाः ॥ ३९ ॥ देवदे० मामांदिस्तुडुर्जनाः ॥ ४० ॥ देवदे०
 मामांदिस्तुजूमिपा ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्या य
 न्तुविलब्धयः ॥ तान्निरञ्ज्युद्यतज्योति, रहं सर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥
 पातालवासिनो देवा, देवाज्जूपीठवासिनः ॥ स्वर्वासिनोपि ये देवाः, सर्वे
 रक्षंतु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः ॥
 ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जनाज्जुत-
 वेत्तालाः, पिशाचासुव्रलास्तथा ॥ ते सर्वेऽप्युपसाम्यंतु, देवदेवप्रजा-
 वतः ॥ ४५ ॥ ऊँही श्रीश्र धृतिर्लक्ष्मी, गौरी चंकी सरस्वती,
 जयांवाविजया नित्या, किन्नाजितामवद्वा ॥ ४६ ॥ कामांगा काम-
 वाणा च, सानंदानंदमालिनी ॥ माया मायाविनी रौंडी, कला
 काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो, वर्त्तते या जग-
 द्रये ॥ मह्यं सर्वाः प्रयच्छंतु, कार्तिं कीर्त्तिं धृतिं मतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो
 गोप्यः सुदुः प्राप्यः, श्रीरुपिमंरुलस्तव ॥ ज्ञापितस्तीर्थ, जगत्-
 प्राणरुक्तेनयः ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले वन्दौ, जले दुर्गे गजे हरो
 ॥ इमशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यब्र-
 ह्मा निजं राज्यं, पदब्रह्मानिजं पदं ॥ लक्ष्मीब्रह्मा निजां लक्ष्मीं,
 प्राप्नुवंति न संशयः ॥ ५१ ॥ ज्ञार्थार्थं लज्जते ज्ञार्थी, पुत्रार्थं लज्जते
 सुतं ॥ वित्तार्थं लज्जते वित्तं, नरः स्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णं
 रूपे पटे कांश्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ॥ तस्थवाष्टमहासिद्धिः,
 यदे दसति शायती ॥ ५३ ॥ जूर्यपत्रे लिखित्वेदं, गजके मुर्ध्नि वा

जुजं ॥ धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्वज्ञीतिविनाशकं ॥५४॥ जूतैः प्रे
 तैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुञ्जलैर्मलैः ॥ वातपितृकफोद्देहैः, मुञ्च्यते नात्र
 संशयः ॥ ५५ ॥ जूर्जुवः स्वस्वयीपीठः, वर्त्तिनः शाश्वता जिनाः ॥
 तेःस्तुतैर्वदितैर्दृष्टैः, यत्फलं तत्फलं श्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतत् गोप्पं महा
 स्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित्, मिथ्यात्ववासिनेदत्ते, बालहत्या
 पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादितपकृत्वा, पूजयित्वा जिनावर्त्तो ॥
 अष्टसाहस्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिदेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं
 प्रातः, ये पठन्ति दिने दिने ॥ तेषां न व्याधयो देहे, प्रज्ज्वन्ति न चापदः ॥
 ५९ ॥ अष्टमासावधिं यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् ॥ स्तोत्रमे
 तन्महातेजो, जिनविंशं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यार्हते विंशे,
 ज्ञवे सप्तमके ध्रुवं ॥ पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानन्दनन्दितः ॥
 ६१ ॥ विश्ववन्द्यो ज्ञेय्याता, कल्याणानि च सोऽश्रुते ॥ गत्वा
 स्थानं परं सोऽपि, जूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महा
 स्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परं ॥ पठनास्मरणाङ्गापात्, लज्जते पदमु-
 त्तमं ॥ ६३ ॥ इतं रूपि मन्त्रस्तोत्रं ॥ केवलश्लोकनिराकृत्य
 मूलयंत्रकल्याणानुसारेण लिखितं गणि । श्रेष्ठमाकल्याणोपाध्यायै
 तदानुसारेण मयापि लिखितं ॥

॥ अथलघुजिनसहस्रनामलिख्यते ॥

नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने ॥ वक्षे तस्यैव ना
 मानि । मौक्तसौक्ताजिलापया ॥ १ ॥ निर्मलः शाश्वतोऽशुद्धः । निर्वि
 कल्पो निरामयः ॥ निःशरीरो निरातंकः । सिद्धसूक्ष्मो निरंजनः ॥
 २ ॥ निष्कलंको निरालंघ्यो । निर्मादो निर्मलोत्तमः ॥ निर्जपो निरदं
 कारो । निर्विकारोऽथ निष्क्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषो निरुजः शांतः । नि
 ज्ञयो निर्ममः शिवः । निस्तरंगो निराकारो । निष्कर्मो निष्कलप्र
 जुः ॥ ४ ॥ निर्बादो निरुपमज्ञान । निरागो निरघो जिनः ॥ निःशब्द

प्रतिमश्लेष, । उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥ ५ ॥ निःसंगात् प्राप्तकैवल्य
 नैष्ठिकः शब्दवर्जितः ॥ अनिंद्यो महपूतात्मा । जगत् शिखरशिखरः ॥
 निःशब्दो गुणसंपन्नाः । पापतापप्रणाशनः ॥ सोऽपि योगात्
 प्राप्तः । कर्मद्योतिवलावहः ॥ ७ ॥ अजरो अमरः सिद्ध । आर्चितः
 कृतो विष्णुः ॥ अमुर्त्तः अच्युतो ब्रह्म, विष्णुरीशः प्रजापतिः ॥
 अनिंद्यो विश्वनाथश्च, अजो अनुपमो जवः ॥ अप्रमेयो जगन्नाथ
 बोधरूपो जिनात्मकः ॥ ८ ॥ अव्ययसकलाराध्यो, निष्पन्नो ज्ञा
 लोचनः ॥ अवेद्यो निर्मलो नित्यः । सर्वशल्पविवर्जितः ॥ ९ ॥
 अजेयसर्वतो जडः । निष्कपायो जवांतकः ॥ विश्वनाथः स्वयंशुद्धः
 वीतरागो जिनेश्वरः ॥ ११ ॥ अंतको सद्जानंद । अवाङ्मान
 गोचरः ॥ असाध्यशुद्धचैतन्यः । कर्मनोकर्मवर्जितः ॥ १२ ॥ अनंत
 विमलज्ञानी । स्पृहीध निष्प्रकाशकः ॥ कर्मवर्जितो महात्मानः
 लोकत्रयशिरोमणिः ॥ १३ ॥ अव्याबाधो वरः शंभुः । विश्ववेद
 पितामहः ॥ सर्वज्ञतहितो देव । सर्वलोकसरण्यकः ॥ १४ ॥ आनं
 दरूपचैतन्यो । जगवांस्त्रिजगद्गुरुः ॥ अनंतानंतधीशक्तिः । सत्यव्य
 क्तव्ययात्मकः ॥ १५ ॥ अष्टकर्मविनिर्मुक्तः । सप्तधातुविवर्जितः ॥
 गौरवादित्रयादूरः । सर्वज्ञानादि संयुतः ॥ १६ ॥ अजयः प्राप्तकै
 ल्यः । निर्माणो निरपेक्षकः ॥ निष्कलं केवलज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्र
 दायकः ॥ १७ ॥ अनामयो महाराध्यो । वरदो ज्ञानपायकः ॥ स
 र्वेशः सतमुखावासः । जिनेन्द्रो मुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अन्तर्गुणपरम
 ज्ञानी । विश्वतत्त्वप्रकाशकः ॥ प्रबुद्धोजगवांस्त्रयाथः । प्रस्तुतः पुन्य
 कारकः ॥ १९ ॥ शंकरः सुगतो रौद्रः । सर्वज्ञो मदनांतकः ॥ ईश्वरो
 ज्ञाननाथीशः । सच्चित्तः पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सदोजातमहात्मानं ।
 विमुक्तो मुक्तिवत्तजः ॥ योगीन्द्रो नादिसंमिद्धः । निरोद्धो ज्ञानगोच
 रः ॥ २१ ॥ सदाशिवां चतुर्वक्त्रः । सत्सौख्यस्त्रिपुरांतकः ॥ त्रिनेत्रः

त्रिजगत्पूज्यः । कल्याणकोष्टमूर्तिकः ॥ ११ ॥ सर्वसाधुजनैर्वन्द्यः ।
 सर्वपापविवर्जितः ॥ सर्वदेवाधिकोदेवः । सर्वज्ञूतहितकरः ॥ १२ ॥
 स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धः पापनाशनः ॥ तनुमात्रविदानंदः ।
 चैतन्यश्चैत्यवैजयः ॥ १४ ॥ सकलातिशयो देव । मुक्तिस्थो मह
 तांमहः ॥ मुक्तिकार्याय संतुष्टो । निरागः परमेश्वरः ॥ १५ ॥ महा
 देवो महावीरो । महामोहविनाशकः ॥ महाज्ञावो महादर्शः । म
 हामुक्तिप्रदायकः ॥ १६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महा
 समकः ॥ महर्द्विको महावीर्यो । महातिरुपदस्थितः ॥ १७ ॥ महा
 पूज्यो महावंद्यो । महाविघ्नविनाशकः ॥ महासौख्यो महापुंसो ।
 महामहिम अच्युतः ॥ १८ ॥ मुक्तामुक्तिजसं बोधः । एकानेकवि
 निश्चलः ॥ सर्वबंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानकः ॥ २० ॥ महासूरो
 महाधीरो । महादुःखविनाशकः ॥ महामुक्तिप्रदो धीरो । महाह
 यो महागुरुः ॥ २० ॥ निर्मारो मारविहंतो । निष्कामो विषयाच्यु
 तः ॥ जगवंतामहाप्रांतो । शान्तिकल्याणकारकः ॥ २१ ॥ परमात्मा
 परंज्योतिः । परमेष्ठी परमेश्वरः ॥ परमात्मा पगानंद । परंपरमश्रा
 मकः ॥ २२ ॥ प्रस्तुतानंतविज्ञानी । सख्यानिर्वाणसंपुतः ॥ ना
 कृतिं नाकरो वर्णी । व्योमरूपो जितात्मकः ॥ २३ ॥ व्यक्ताव्यक्त
 जसंबोधः । संसारवेदकारणः ॥ निरवद्यो महाराध्यः । कर्मजित्
 धर्मनायकः ॥ २४ ॥ बोधसत्सु जगद्वन्द्यो । विश्वात्मा नरकांतकः ॥
 स्वयंज्ञूपापहृत्पूज्यः । पुनीतो विजयः स्तुतः ॥ २५ ॥ वर्णातीतो
 महातीतः । रूपातीतो निरंजनः ॥ अनंतज्ञानसंपूर्णो । देवदेवेश
 नायकः ॥ २६ ॥ वरेण्यो जयविध्वंसी । योगिनी ज्ञानगोचरः ॥
 जन्ममृत्युजरातीतः । सर्वविघ्नहरो हरः ॥ २७ ॥ विश्वदृक् जयसं
 वंद्यः । पवित्रो गुणसागरः ॥ प्रसन्नः परमाराध्यः ॥ लोकालोकप्र
 दाशकः ॥ २८ ॥ रत्नगर्जो जगत्स्वामी । ईश्वर्यः सुरार्चितः ॥ नि

प्रपंचो निरातङ्गो ॥ निःशेषकेशनाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लो
संसेव्यो । लोकालोकविलोकनः ॥ लोकोत्तमो त्रिलोकेशो । लोका
शिखरस्थितः ॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि । ये पठन्ति पुनः पुन
ते निर्वाणपदं यान्ति । मुच्यते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥ इति श्री
द्वादुस्वामिना विरचितं लघुजिनसहस्रनाम संपूर्ण ॥

॥ अथमहिम्नस्तोत्रलिख्यते ॥

॥ महिम्नः पारन्ते परमविभुपस्ते क्लिनपरं । गणागीर्वाणाना
पि गुणगुरौर्गतुमनलम् ॥ नलम्भं लम्भं त्वाधिपमिह नयैस्सर्वकल
। नुवन्निः प्रापीनाप्रतिदत्तगतिर्वाग्मृतजित् ॥ १ ॥ जगत्रातः स्तो
किल निरवकाशोप्यहमिहो । दत्तप्रज्ञो यत्किंचिदचिदनघोश्चाव
बन्धः । शृणीयां सद्यं तत्तनुजुव इवेष्टार्थप्रतिज्ञूपदोपास्ते पार्श्वान्
यंजनयित्र्याशिवमम ॥ २ ॥ त्वकांशमासूनोधुतनिधनमूनोयवस
ना । सुनामन्नोडुनो स्मरमहमनूतोदयरमम् ॥ अजातानो ज्ञानो न
वनजवने नो वृषज्जरं । व्यधांमोहादेनोरयमथनतेनोत्कटविपत् ॥ ३ ॥
सुबोधं देया मे धनघनघटामेचकतनु । कङ्गञ्ज्यारामे मरकुरुद्वामे
यंजिनपाः ॥ इतोयाक्षग्रामे शितरसमकामेपुविजयी । त्वमर्काजी
ज्ञामे डुरमदजधामे तनमते ॥ ४ ॥ अपारे कूपारे चितरमपारे
जुवनया । अस्तारे संस्तारे गदशतविसारे वसमहम् ॥ धुतारेकेतारे
क्वसि सततारे कितमति । स्तवारे द्विद्वारे जवदहनवारे कुरुपा
॥ ५ ॥ निपीय व्याहारानरममृतधारासुमधुरा । न्समादेयान्सारान
हिमिधुनमाराव्ययविज्ञो ॥ ज्वलद्यस्योदारान्विषधरकुमाराधिपतिता
। मनुक्रोशागारावतुजिनमहाराजसज्जवान् ॥ ६ ॥ दिशश्रीमान्दे
वव्रजविहितसेवः कुशलता, लताजातेदेवः प्रशमिवरदेवत्वमतमाः ॥
तनालाजोमेवः परिकरिदरेवत्सलसदा, सदानंदकेयव्यचलपदमेवस्तु
तिष्ठते ॥ ७ ॥ कजन्माहंकायंकिरवगणदंकीर्तिधवलं, कुबेरेज्यं

कूदाव्रततिपरशुंकेतकगुणम् इत्तं कैवल्यंकोकिलकक्षरवंकौशलकरं
 ददानं कंकहोपमसुरमरालंनुततमम् ॥ ७ ॥ श्रियः पात्रंगार्त्रं
 ज्वकुशकदात्रंसुहृदयै रहोरात्रंगार्त्रंदधदतनुमात्रंतवप्रज्ञो पवित्रं
 सच्चित्रंशुचितरचरित्रंखुतमसा ममित्रंपैर्मित्रंस्तुतपुरुषवित्रंसरणकम्
 ॥ ८ ॥ वदान्यस्वन्नन्दंद्गुदकज्वैः पीतममलै रिहावन्याधन्याः स
 फलजनपस्तेखलुमताः इमेवन्याः सत्त्वाइवतुसदसव्यक्तिविकला ज
 घारणयेटन्तकथमपिजवंत्वंनदहसुः ॥ ९ ॥ नजानेहनेतः कुमततिमर
 प्रावृतदृशां गतिर्महद्वाणादरद्वरजवित्रीवरदका यदेतेवस्यन्तोप्य
 ज्जिमतफलोत्सर्जनपरां त्वदाण्यांनोर्चितामणिमिवज्जन्तेस्तविधयः
 ॥ १० ॥ त्वमेवेशेदानीमपिवित्तनुतात्कामपिकृपां ज्वास्ताघोदस्व
 जलनिपतितं प्रोद्धरतराम् मुहुःखिन्नस्त्वत्यकजशरणमीतोस्म्यशर
 णः शरण्योसिश्रेयान्प्रज्जुदलमकर्ध्वसनविधौ ॥ ११ ॥ जयत्वंधीरस्वा
 धरितकनकाहार्यमहिमा हिमालोप्रान्त्याब्धि प्रतिज्जटगजोरत्ववि
 दितः दितःप्रत्यूहालिः शुज्जमत जगत्यावनजिना जिनाशीनश्रीरः
 कुमतिवसुधासीरसततं ॥ १२ ॥ ततंविघ्नदोर्ध्वपरमपुरुषः सिद्धिर्न
 गरीं गरीयः ताम्रज्यंगणधरमहामात्रमदितः दितः कर्तुंकर्माष्टकरि
 पुवर्लन्नज्जयमहा माहतीर्षेशश्रीजरमतुलमाप्तः पृथुमहाः ॥ १३ ॥
 महाराज स्तुत्योद्धरिततरुसिन्दुरतिलको लकोनः पालाकः सकलज्ज
 विनामोद्दशमनः मनस्पश्रान्तं भेवरसरतिकादम्बइवसन् वसज्ज्जी
 यात्पार्श्वप्रज्जुरनघपार्श्वप्रणुतपत् ॥ १४ ॥ तपः श्रीजोलोकोत्तरपद
 मुपेतःसकलवि । त्ववित्रंदोपलंयवसलवनेप्राप्तविज्वः ज्वध्वस्थे
 नेस्तादनुपममहानन्दकलितो लितोविश्वरूपातेरनिशमवदातेर्गुण
 गणैः ॥ १५ ॥ पद्यचतुष्कंसिंहावलोकवंधुरम् ॥ ज्वन्तंसद्योग प्रश्नि
 तपदवीचारिनिवहा अजस्रंविश्रामंप्रलिदधतिविश्वेश्वरसमे इदंस्थाने
 यन्तिप्रसृमरसितोस्त्रंखलुखनाः कलावन्तांकिंनश्रुतमतसदाचारनि

रताः ॥ १४ ॥ अनन्तेतोदोपान्तकञ्जरुप्रकाशोधतमसं हरद्वौ
 न्नमलकमलोद्भासमयकम् प्रबोधं व्यातन्व निततः करतः पंकदल
 गच्चक्रुः पार्श्वोदिशतुकुशलं मे समयज्ञः ॥ १५ ॥ नितान्तं सन्त
 मतनुमतां च न्नमृतगुः कलाञ्जिः संपूर्णः कुवलयकलानन्दजनकः
 पेनोरम्यः समुपचितरत्नाकरइहा वताहामापुत्रः सपदिविपद
 कं पतिः १६ स्फुरंत्यासिंदुरं निजतनुरुचाचारुप्रकृति मंदोजन्म
 त्ययप्रज्ञतिदुःखाग्निजलदः बुधोबोधस्फीतिंदददविरतं राजतनयो
 यातो तोलौकेतनुजवनमाप्नोति बलवान् ॥ २० ॥ घरादिस्थेशान
 ज्ञरुविज्ञो गौरकरणः सदापायाद्देमासुरगुरुरपायाङ्गिनपतिः वि
 स्फारश्चोकस्तुतिसमुचितो ज्ञानुतनय स्तमो विघ्नध्वंसी नकुशल
 केतुरसितः ॥ २१ ॥ सुरज्येष्ठोऽयेन्यस्त्रिदसविसरेऽन्यो वरतया
 लोकेशो नूनं त्रिजगदवनात्वं कमलजः सुयोगीन्द्रस्वान्तामलकम
 न्माधिवसना चतुर्वक्त्र्याश्रेयोजिनपचतुरास्योऽस्युपदिशन् ॥ २२ ॥
 प्रतीतोदैत्यारिशठकमठमानप्रदलनात्परार्थ्यश्रीयोगात्कमलनिल
 सिजगवन् ननाकश्चिद्दिशति शयन्नरवित्तस्त्रिजुवने जघादृक्षो
 परं मपुरुषो तोहरिदयैः ॥ २३ ॥ मदेशानोसित्वं त्रिजुवनजनैक
 पतया शिवः शश्वन्नुणां परमपददानैकसुविधेः असित्वं सर्वज्ञः स
 जगदर्थौघकलना त्रिशूलीनोचोद्यो नचपशुपतिर्त्रोविपमदृक् ॥ २४ ॥
 अवाप्तः श्रेयः श्रीप्रवितरणलोलाविदलिता दितेयाश्चकोणीरुहम
 मतारोतिशयवान् विमुक्तस्त्रीसन्नः कृतकुमतज्जः सुमनसां हित
 शेषाणां सुकृतपदवीत्वं ककथयन् ॥ २५ ॥ जिनेन्द्राहोरात्रं बहु विप
 त्रं धृतमरं कलत्रं येनात्रकसदरिहरादिः सुरगणः सकर्णानाकर्णार्थि
 चरितताधूर्तनिबद्ध प्रतारीसदोऽयः भित्तसततरोपः स्थितिदतः ॥ २६ ॥
 समग्रामग्रामप्रजवज्रयदो बोधरहितः सरुग्जव्यधेरी पुरुडुरितकृत
 नकलितः पुरानोदान्नुतभिरमिदसद्गद्गोनमदितः सदेवो प्रायत्यं

मपिसमाप्तादिमयकाः ॥ २७ ॥ प्रज्ञोर्किंवामेतैरन्निमतविधानैलसतैरे
 रपासोपास्यस्तंखलुजिनवरेण्योनवरतम् मनोलिम्मेत्वत्यदनजयुगले
 सम्प्रतिवसन् परामेतिप्रीतिप्रणयकरुणामिष्टसुदृशा ॥ २८ ॥ अदब्रंद
 घ्रांसिन् इविणन्नरमडीसदृशं विहायेनाप्रत्नंधरसिकिलरत्नत्रयमहो
 दधत्सौवर्णानामुपरिन्लिनानाक्रमयुगं पुनर्त्रिलोञ्जानांधुरिसमतिमद्भि
 स्त्वमुदितः ॥ २९ ॥ लसन्तिः सीमश्री परिकलितमग्न्यंसुवरेण त्रयी
 मध्यं मेघोदधिधरणवास्तोप्यतिनुतः सनादध्यासीनाखिलनृपतिल
 क्षमांशिदधत् कुतस्तैर्नैराग्यंशिवयुवतिसंगोत्कमनसः ॥ ३० ॥ चलं
 प्राज्यंराज्यंविदितविज्जवापास्यलपतो महानंदानन्तामहदधिपतेनश्व
 रतरम् कतेनिर्गन्धत्वंप्रशमरसवाद्देस्यसुमतांमहच्चित्रंचित्तेजनयतित
 वेदंतुचरितं ॥ ३१ ॥ निकामार्थोत्सृष्ट्या ततवनदवृष्ट्यातिशयितं जगद्वा
 रिश्यामिं स्मकिलजिनविध्यापयसियः त्रिशुद्धयाध्यायन्तस्तवचरणयु
 मं सुद्धादया नतर्धं स्वेष्टासैसुरशिखरिणीशानदधते ॥ ३२ ॥ जग
 येकाधारादितनरककारानिलयतः समुद्धर्तुंजंतून्परिवृढसमंतूनपिकि
 त तवव्रातर्ज्ज्माजनिजननमुख्याकणहृत् जवेवेशस्तोर्थोपिचनिश
 मानन्दरसिकः ॥ ३३ ॥ अद्दीशस्तेशस्तक्रमणवरिवस्यस्यसुमना
 मनाक्यस्येद्रकोयदिवदनुगंमद्यसनितं नितम्बिन्यान्वोतः सपदिकुश
 तंस्वपसमं समाह्वयंवाग्रप्रजवतिनकः स्वामिकृपया ॥ ३४ ॥ प्र
 णापायाशुद्धास्तवगुणगणाज्जान्तिविशदा हिलोकीञ्जुजानेसुरपयमणे
 नानवश्च रसज्ञानांकोट्याप्यमलधिपणोनव्यधिपणो नतानीष्टेसरण्या
 मदरपरावर्त्यतुसरदां ॥ ३५ ॥ नमस्तुज्यंसंसृत्यतनुतटिनीतारणत्तरे
 मस्तुज्यंजीमामयसमददन्तावलहरे नमस्तुज्यंसूक्तातिमधुरिमदासी
 तसुधा समुद्रायासुद्रश्रुदवसिततुज्यंजिननमः ॥ ३६ ॥ पादेयाद्
 हिमालयायसुमनः सन्दोदशुश्रूषितां ह्रिद्वन्दायकलिच्छेदजगवते
 व्यावलीहेतवे लोकेशेपुरुषोत्तमायमदनामित्रायविश्वत्रयी मित्राय

कणदोदयायसततंश्रीपार्श्वतुन्यनमः ॥ ३७ ॥ सार्दूलविक्रीमि
 ठन्दः ॥ पवनाशनतारकवक्त्ररमा ज्ञरनिर्जिततारकराजगणः कृत
 कणतारकनेत्रयुगो जिनमामवतारकलारब्धे ॥ ३८ ॥ तोटकठन्द
 ज्ञवदमलपदाम्भोजन्मसंलग्नचेतो मधुतिमितिजिनेन्द्राप्राञ्जलिःप्रार्थ
 दम् वितरविततबोधयेनपश्यामिसाक्षा त्परमपुरुपरम्यंत्वामघिन्त
 स्वरूपम् ॥ ३९ ॥ मालनीवृत्तम् ॥ श्रीसिद्धपूरितमहामुनिराजसिंहप
 दप्रसादसन्नुपरधुनाथदासम् मांशुद्धशासनसहायकपार्श्वयक्ष पद्मावर्त
 प्रणुतसंसृतितोवपार्श्व ॥ ४० ॥ स्तोत्रकुरुद्रुनामगर्भैवसंततिलक
 वृत्तम् ॥ इति पार्श्वप्रज्जुस्तवः ॥ अहार्येषुस्तम्बेरमशशिमितेहायन
 थरे नज्जोमासरुण्येगजमुखतिथौजीवदिवसे सुनामस्थानीयेतपदिरपु
 नाथाहामुनिना स्तवोवामासूनोरचितलिखितोमोदज्जरतः ॥ १ ॥
 इतिश्री पार्श्वप्रज्जोमहिम्नस्तोत्र संपूर्णमगात् ॥

॥ अथ चैत्यवंदनस्तुति लिख्यते ॥

॥ अथ सिद्धाचल चैत्यवंदन ॥

॥ सिद्धो विज्ञाह चक्री नमि विनमि ॥ मुणी पुंनरीड मु
 निंदो । वाली पञ्जुन्न संवो ज्ञरहसग मुणी सेलगो पंथगोय ॥ रामो
 कोन्मी पंच इविड नरवई नारदो पंडुपुत्ता । मुत्ता एवं अणगे विम
 लगिरिमहं तिठमेयं नमामि ॥ १ ॥ इति सिद्धाचल चैत्यवंदनं ॥ सिवां ॥

॥ अथ श्रीथंभणापार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेटी तट मेरु धाम, थंजणपुर गंम ॥ सुरतरु सम
 सिरि पास सांम, राजे अजिरांम ॥ १ ॥ विवुधेसर सिरि अजय
 देव संठवियाणं दिय थुइ जलसिरिय नील वण, फण पल्लव मं
 भिय ॥ २ ॥ सुर नर सुद्ध कुसुमावलीए, सिवफल दायक जाण ॥
 आराद्ध जदि एग मण, पावो पद कट्ठपांण ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीसीमंधर स्तुति ॥

॥ वंदू जिनवर विहरमाण, सीमंधर सामी ॥ केवल कमला
कात दांत, करुणारस धामी ॥ १ ॥ कांचनगिरि सम देह, कांति
वृष लांछन पाय ॥ चौरासी लख पूर्व आय, सेवे सुरराय ॥ २ ॥
पूर्व विदेह विराजता ए, पुंरुरीकनी जांण ॥ प्रज्जु द्यो दरसन सं
पदा, कारण पद कळयाण ॥ ३ ॥ इति श्रीसीमंधर जिन स्तुति ॥

॥ अथ समेतशित्त स्तुति ॥

॥ पूरव दीप्ते दीपतो । गिरवो गिरवर नित्त । तीरथ सिख
र समेतको । चाहुं दरसण चित्त ॥ १ ॥ प्रथम चरम बारम प्रज्जु ।
बावीसम विण बीत्त ॥ अणसण कर इण गिरवरे । शिव पुद्गता सु
जगीत्त ॥ २ ॥ सुणिये इयापर सूत्रमें । जिनवर गणधर वांण ॥
जविजन जेटो जगतसुं । तीरथ करण कळयाण ॥ ३ ॥

॥ अथ पद्मनाभजिन चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम महेत्तर पदमनाज । समरुं सुखकारी ॥ जावी
जिनवर जरहखित्त । मंरुण मणिधारी ॥ १ ॥ लांछन वर्ण सुदेह
मान । धिति आयु प्रमाण ॥ परमेत्तर तिरि वर्द्धमान । जिनराज
उमाण ॥ २ ॥ उत्तम अमृत धर्मनो ए । विरह निवारक जांण ॥
जावी जिनवर जेटिये । कारण पद कळयाण ॥ ३ ॥

॥ अथ सरस्वति स्तुति ॥

॥ अवासा वामाक्षे सकलमुज्जयः कालघटना । द्विधा ज्ञूतं
त्वं जगदन्निधेयं जवतिय ॥ चर्दंतर्मंत्रं मे स्मरहरमयं सेंद्रुममलं
नेराकारं शस्वक्लप नरपते सिव्यतु सते ॥ १ ॥ अविरलशब्दघनोपा
प्रकालितसकलज्ञूतलकलंकाः ॥ मुनिजिरुपासित्त्वचरणा । सर
वती दरतु मे डरितं ॥ १ ॥ इति सरस्वती स्तुतिः ॥

॥ दर्शनं देवदेवस्य । दर्शनं पापनाशनं ॥ दर्शनं स्वर्गसोपानं
दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनैः प्राणां । साधूनां वंदनेन
च ॥ न तिष्ठति चिरं पापं । विद्महे यथोदकं ॥ २ ॥ अथ प्रका-
शितं गात्रं । नेत्रे च सफलो कृते । मुक्तोऽहं सर्वपापेभ्यो । जिनैः
तव दर्शनात् ॥ ३ ॥

॥ इत्या जेह सुलक्षणा, जे जिनवर पूजंत ॥ जे जिनवर
पूज्या नही, ते परघर काम करंत ॥ १ ॥ वारी चंपो मोगरो,
सोवन कूपलियांह ॥ पास जिनैसर पूजसा, पांचू आंगलियांह ॥
॥ २ ॥ जीवना जिनवर पजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा
नमे परजा नमे, आण न लोपे कोय ॥ ३ ॥ फूलां केरे बागमें,
देवा श्रीजिनराज ॥ ज्युं तारामें चंडमा, त्युं सोजे महाराज ॥ ४ ॥
जगमें तीरथ दो वना, सेतुंजो गिरनार ॥ उण गिरि रूपन समो
सरधा, उण गिरि नेमकुमार ॥ ५ ॥ मोहनी मूरत पासकी, मो
मन रही लोनाय ॥ ज्युं महदीके पातमे, लाली लखी न जाय
॥ ६ ॥ राजमती गिरवर चढी, वंदन नेमकुमार ॥ स्वामी अज
हु न बावरे, मो मन प्राण आधार ॥ ७ ॥ धन ते सांइ पंखियां,
वसे जो गढ गिरनार ॥ चुं चं जरे फल फूलसुं, चाढे नेमकुमार
॥ ८ ॥ श्री केशरियानाथकूं, नमन करूं चित चाय ॥ रुद्रि बुद्धि
मोहे दीजिये, दिन २ अधिक सवाय ॥ ९ ॥ श्रीकेशरियानाथके,
केसर हंदा कीच ॥ मरुदेवाके लामले, वसे पदामा बीच ॥ १० ॥
इस रागको नाम कल्याण हे, प्रजुजीको नाम कल्याण ॥ सकल
सज्जा कल्याण हे, जब प्रगटी राग कल्याण ॥ ११ ॥ सोरठ राग
सुहामणी, मुखां न मेली जाय ॥ ज्युं ज्युं रात गलंतमी, त्युं त्युं
मीठी थाय ॥ १२ ॥ धंदो कर धन जोरियो, लाखां ऊपर कोना
मरती बेला मानवी. लियो कंदोरो तोर ॥ १३ ॥

दया गुणारी बेलमी, दया गुणारी खाण ॥ अनंत जीव
मुगते गया, दयातणे परिमाण ॥१॥ दया मुगतितरु बेलमी, रोपी
आद जिनंद ॥ आचक कुल मंरुन जई, सींची सर्व जिनंद ॥२॥

॥ अथ नवपद चैत्यवंदनलिख्यते ॥

श्रीअरिहंत उदार कांति अति सुंदर रूप, सेवो सिद्ध अनंत
संत आतम गुण नूप ॥ आचारज उवघाय साधु समतारत धाम,
जिन ज्ञाखित सिद्धांत सुद्ध अनुजव अजिराम ॥ १ ॥ बोधबीज
गुण संपदा ए, नाण चरण तव शुद्ध ॥ ध्यावो परमानंद पद, ए नवपद
अविरुद्ध ॥ २ ॥ इह परजव आणंद जगमांदि प्रसिद्धो, चिंतामणि
सम जास जोग बहु पुन्ये लखे ॥ तिहुअण सार अपार एह महि
मा मन धारो, परहर पर जंजाल जाल नित एह संजारो ॥ ३ ॥ सिद्ध
चक्र पद सेवता ए, सहजानंद सरूप ॥ अमृतमय कढ्याणनिधि
प्रगटे चेतन नूप ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पञ्चतिर्थोका स्तवन ॥

॥ सुगुण सनेही साजण श्रीसीमंभरस्वाम, अरज सुणो एक
जगगुरु मुऊ आशाविशराम ॥ पूरव विदेहें विजय जली पुष्कळा
वई नाम, जिहां विधरे जिनवरजी धन ते नयरी गाम ॥ १ ॥
धन ते लोक सुणे जे जोजनगामिनी वाण, धन ते महियल चरण
धरे जिहां जिनवर ज्ञाण ॥ धन ते जविजन जे रडे प्रभु तादरे
परसंग, वंदनकमल निरखी नित्य माणे उत्सव अंग ॥ २ ॥ सुगुरु
मुखें प्रभु सुजस तुम्हीणो सांजल कान, मितवाने उलसे मन मा
हरुं धरुं एक ध्यान ॥ जगति जुगति करवानी ठे मुऊ सधली
जोर, पण प्रभु लग पडूंचीजें तेह नहि पग दोर ॥ ३ ॥ आमा
मूंगर अति घणा विचवहें नदियां पूर, किम मुऊथी अवराये प्रभुजी
एटली दूर ॥ आंखमली उलजो करे जोयवा मुख जिनराज, पांख

मली पाई नहि ते विन किम सरे काज ॥ ४ ॥ घाटमली वहने
 कोई न मिले सेंगू साथ, कागलियो लिख आपूं हुं जिम तेहने हाथ
 ॥ जाणूं शशहर साथे कहुं संदेशा जेह, पण अलगो धई ज्यारि
 वामे निकले तेह ॥ ५ ॥ जो कोई रीतें प्रभुजी तुमथी एथ अवाय,
 तो इण जरतना वासी जिविजन पावन थाय ॥ साहिबनी तो सुन
 जर सघले सरिखी होय, पण पोतानी प्राप्ति सारु फल प्रति जेय
 ॥ ६ ॥ अलगो तुं पण माहरे तुम शुं साची प्रीत, गुण गुणवंतना
 आवे हियमे खिण खिण चित्त ॥ हुं तुं सेवक तुं वे माहरो आत
 मराम, नहिय विसारूं जीवुं ज्यां लगि ताहरुं नाम ॥ ७ ॥ सावे
 दिलथी मुऊशुं धरजो धरम सनेह, करुणाकर प्रभु करजो मोपरि
 महिर अवेह ॥ दूसम काल तणो दुःख टालो दीन दयाल, पालो
 विरुद संजालो निज सेवकशुं रूपाळ ॥ ८ ॥ आशबिलुद्धा अलग
 थकी पण करे अरदास, पण महोटानी महिर वतां नवि थाय
 निराश ॥ केई वसे प्रभु पासें केई वसे वे दूर, राजमहिरनी रीतें
 सकलने जाणे हजूर ॥ ९ ॥ शिव सुखदायक नायक लायक स्वा
 मि सुरंग, ध्यायक ध्येय स्वरूप लहे निज आत्म उमंग ॥ सहिजे
 एक पलक जो थाये प्रभु तुऊ संग, लाज उदयजिन चंड लहे नि
 प्रेम अजंग ॥ १० ॥ इति श्रीसीमंधर स्वामी स्तवनं ॥

॥ अथ बीजो स्तवन ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हुं गणुं, सामि सीमंधरा तुह
 जगते जणुं ॥ जेटवा पायकमल जाव हियमे घणो, करिय सु
 साय जे वानवुं ते सुणो ॥ १ ॥ तुहशुं कूरु अरिहंत शुं राखियें
 जिस्थो अगे तिस्थो कर जोमि करि जांखियें ॥ अति सबल मुऊ
 हिये मोह माया घणी, एक मन जगति किम करूं प्रिजवन घणी
 २ ॥ जीव आरति करे नव नवी परिगमे, रीश चटको चढे

लोभ वयरी नमे ॥ नयण रस वयण रस काम रस रसीयो, तेम
 अरिदंत तूं हीयमे नवि वसीयो ॥ ३ ॥ दिवस ने राति दियमे
 अनेरो धरूं, मूढ मन रीऊवा वलिय माया करूं ॥ तूंहि अरिदंत
 जाणे जिस्यो आचरूं, तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ ४ ॥
 कम्मवसि सुख ने दुःख जे हुं सहूं, मन तणी वात अरिदंत कि
 एने कहूं ॥ करि दया करि मया देव करुणा परा, दुःख हरि सुख
 करि सामि सीमंधरा ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम वयण पण सुणुं,
 धर्म न कराय प्रभु पाप पोतें घणुं ॥ एक अरिदंत तूं देव बीजो
 नहिं, एह आधार जग जाणजो अह्म सही ॥ ६ ॥ घण कणाय माय
 पिय पुत परियण सहू, इस्यो बोढ्यो रम्यो रंग रातो बहू ॥ जयो
 जयो जगगुरु जीव जीवन धरा, तुह्य समोवरु नहिं अवर वा
 छेतरा ॥ ७ ॥ अमिय सम वाणि जाणुं सदा सांजलुं, बारवर
 परपदामांहि आवी मिलुं ॥ चित्त जाणुं सदा सामि पाय उल्लुं,
 किम करूं गम पुंडरगिरि वेगलुं ॥ ८ ॥ ज्योतिना जगति तूं चित्त
 हारे किस्ये, पुण्य संयोग प्रभु दृष्टिगोचर हुस्ये ॥ जेदने नामें मन
 वयण तन उल्लेसे, दूरथी दूकना जेम दियमे वसे ॥ ९ ॥ जल
 जलो एणि संसार सहु ए अवे, सामि सीमंधरा ते सहू तुम पवें
 ॥ ध्यान करतां सुपनमांहि आवी मिले, देखियें नयण तो चित्त
 आरति टले ॥ १० ॥ साम सोदामणा नाम मन गद्गदे, तेदरुं
 नेह जे वात तुह्य जी कहे ॥ तुह्य पय जेटवा अति छणो टलवलुं,
 रंख जो होय तो सहिय आवी मिलुं ॥ ११ ॥ मेरुगिरि लेखणी
 प्राज्ञ कागल करूं, क्षीरसागर तणां दूध खनिया जरूं ॥ तुह्य मि
 लवा तणा सामि संदेशना, इंद पण लेखियं न शके अवे एवना ॥
 १२ ॥ आपणे रंग जरि वात मुख जेटली, उपजे सामि न कहाय
 मुख तेटली ॥ सुणो सीमंधरा राजराजेसरा, लाम ने कोम प्रभु

पूर सवि मादरा ॥ १३ ॥ पुढ जवि मोद वश नेह हुवे जेदने,
 समरिये एणि संसार नित तेदने ॥ मेदने मोर जिम कमल जम
 रो रमे, तेम अरिहंत तूं चित्त मोरे गमे ॥ १४ ॥ खरुं अरिहंततुं
 ध्यान दियमे वस्युं, वापहुं पाप हिव रहिय करशे किस्सुं ॥ ठाम
 जिम गरुडवर पंखि आवे वही, ततखिण सर्पनी जाति न शके
 रही ॥ १५ ॥ पाप में कळ सावळ सहु परिहरी, सामि सीमंधरा
 तुम्ह पय अणुसरो ॥ शुद्ध चारित्र कहिये प्रजु पालशुं, दुःख जं
 मार संसार जय टालशुं ॥ १६ ॥ तुम्ह हुं दास हुं तुम्ह सेवक सही,
 एह में वात अरिहंत आगल कहो ॥ एवनी मारी जगति जाणी
 करी, आपजो बापजी सार केवल सही ॥ १७ ॥ कलश ॥ एम रुद्धिबुद्धि,
 समृद्धि कारण, डुरित वारण, सुख करो ॥ उवजाय वर श्री, जक्ति
 लाजें, शुण्यो श्री, सीमंधरो ॥ जय जयो जगगुरु, जीव जीवन, करी
 सामि, मया घणी ॥ कर जोनि बलि बलि, वीनवुं प्रजु, पूर आ
 शा, मन तणी ॥ १८ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनीस्तुति संपूर्णा ॥

॥ अथ पंजमी वृद्ध स्तवन प्रारंभः ॥

॥ प्रणमुं श्रीगुरु पाय, निर्मल न्यान उपाय ॥ पांचमि तप
 जणुं ए, जन्म सफल गिणुं ए ॥ १ ॥ चउवीसमो जिनचंद, केवल
 न्यान दिणंद ॥ त्रिगमे गहगह्यो ए, जवियणने कह्यो ए ॥ २ ॥
 न्यान वडूं संसार, न्यान मुगति दातार ॥ न्यान दीवो कह्यो ए,
 साचो सर्वह्यो ए ॥ ३ ॥ नयन लोचन सुविलास, लोकालोक प्र
 काश ॥ न्यान विना पशु ए, नर जाणे किश्युं ए ॥ ४ ॥ अधिक
 आराधक जाण, जगवती सूत्र प्रमाण ॥ न्यानी सर्वतु ए, किरियां
 देशतु ए ॥ न्यानी खासोद्यास, करम करे जे नास ॥ नारकीने सही
 ए, कोरु घरस कडी ए ॥ ५ ॥ न्यान तणो अधिकार, घोड्या

सूत्र मंजारे ॥ किरिया ठे संधी ए, पण पाठ केही ए ॥ ३ ॥
 किरिया सहित जो न्यान, हुवे तो अति परधान ॥ सोनो ने सुरो
 ए, शांखे वूधे जरयो ए ॥ ७ ॥ महानिशीथ मजार, पांचमि अंकर
 सार ॥ जगवेत जांखीयो ए, गणघर सांखियो ए ॥ ९ ॥

॥ ढालं दूजो ॥ कालहरानी देशी ॥

॥ पांचमि तप विधि सांजलो, जिम पामो जवपारो रे ॥
 श्रीअरिदंत इम उपविशे, जविषणने हितकारो रे ॥ पां० ॥ १ ॥
 मिगतर माद फागुण जला, नेठ आपाढ वैशाखो रे ॥ इण पट
 मासें लीजिये, शुजंदिन सद्गुरु साखो रे ॥ पां० ॥ २ ॥ देव जु
 दारी देहरे, गीतारंथ गुरु वंदी रे ॥ पोथी पूजो ग्याननी, सगति
 हुवे तो नंदी रे ॥ पां० ॥ ३ ॥ बे कर जोमी जावशुं, गुरु मुख
 करो उपवास्तो रे ॥ पांचमि पद्मिकमणो करो, पदो पंक्ति गुरु
 पास्तो रे ॥ पां० ॥ ४ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो, तिण दिन
 आरंज टाखो रे ॥ पांचमि स्तवन शुई कदो, ब्रह्मचरिज पिण पा
 लो रे ॥ पां० ॥ ५ ॥ पांच मास लघुपंचमी, जावजीव उत्कृष्टी
 रे ॥ पांच बरस पांच मासनी, पांचमि करो शुज दृष्टि रे ॥ पां० ॥ ६ ॥

॥ ढालं श्रीजी ॥ उहालानी देशी ॥

॥ दिव जविषण रे पांचमी व्रजमणो सुणो, घर सारु रे
 बारु धन खरचो घणो ॥ ए अवसर रे आचंतां वलि दोहिलो, पुणप
 जोगे रे धन पामंतां सोहिले ॥ उहालो ॥ सोहिलो वलिप धन
 पामतां पण धर्मकाज किहां वली, पांचमी दिन गुरु पास्त आंची
 कीजोपे फांउस्तगंरखी ॥ प्रये ह्यान इस्तिण चरण टीकी देइ
 पुस्तक पुंजिये, थापना पदिसी पूज केसर सुगुंर सेवा किंजिये ॥
 १ ॥ ढालं ॥ तिद्धांतनी रे पांच प्रति बीटांगणां, पांच पुठां रे
 मखमले सूत्र प्रमुख तणां ॥ पांच मोरा रे लेखण पांच

मजीसणा, वासकूपा रे कांबी वारू वतरणां ॥ उल्लाखो ॥
 वतरणां वारू चलीद कमली पांच जिलमिल अति जली, स्थाप
 नाचारिज पांच ठवणी मुहपत्ती परुपाटली ॥ पटसूत्र पाटी पंच
 कोथल पंच नवकरवालियां, इण परें आवक करे पांचम छजमणुं
 उजवालियां ॥ २ ॥ ढाल ॥ बलि देहरे रे आत्र महोत्सव कीजि
 यें, घर सारू रे दान वली तिहा दीजियें ॥ प्रतिमानी रे आगल
 ढोवणुं ढोइयें, पूजानां रे जे जे उपगरण जोइयें ॥ उल्लाखो ॥
 जोइयें उपगरण देवपूजा काज कलश जुंगार ए, आरति मङ्गलथा
 ल दीवो धूपधाणुं सार ए ॥ घनसार केशर अगर सूखरु अंगदू
 हणुं दीस ए, पंच पंच सघली वस्तु ढोवो सगतिशुं पचवीश ए
 ॥ ३ ॥ ढाल ॥ पांचमिना रे सद्दाम्मी सर्व जिमानियें रात्रि जोगे
 रे गीत रसाल गवानीये ॥ इण करणी रे करतां ज्ञान आराधियें,
 ज्ञान दरिस्तरें उत्तम मारग साधियें ॥ उल्लाखो ॥ साधियें मारग
 एह करणी ज्ञान लहियें निरमलो, सुरलोक नें नरलोक माहे ज्ञान
 वंत ते आगलो ॥ अनुक्रमे केवलज्ञान पामी सासतां सुख जे
 लहे, जे करे पांचमी तप अखंनित वीर जिणवर इम कहे ॥ ४ ॥
 कलश ॥ एम पंचमी तप फल प्ररूपक, वर्द्धमान जिणेतरो ॥ में
 शुण्यो श्री अरिहंत जगवंत, अतुल बल अलयेतरो ॥ जयवंत श्री
 जिन चंद सूरिज, सकलचंद नमंसियो ॥ वाचनाचारिज समग्र
 सुंदर, जगति जाव, प्रशंसियो ॥ २५ ॥ इति श्रीपंचमी वृद्धस्त
 वन संपूर्णम् ॥

॥ अथ पार्श्वजिन अथवा लघुपंचमी स्तवन ॥

॥ पंचमि तप तुमें करो रे प्राणी, निर्मल पामो ज्ञान रे ॥
 पदिलुं ज्ञान ने पठें किरिया, नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥ पं० ॥
 ॥ १ ॥ नंदिसूत्रमें ज्ञान बखाण्युं, ज्ञानना पंच प्रकार रे ॥ मति

श्रुत अवधि अने मनःपर्यव, केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० ॥ २॥
 मति अठावीश श्रुत चवदे वीश, अवधि ठ असंख्य प्रकार रे ॥
 दोय जेद मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक प्रकार रे ॥ पं० ॥ ३ ॥
 चंइ सूरज ग्रह नक्षत्र तारा, तेशुं तेज आकाश रे ॥ केवलज्ञान
 समुं नहिं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पं० ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथ
 प्रसाद करीने, मद्दारी पूरो उमेद रे ॥ समयसुंदर कहे हुं पण
 पासुं, ज्ञाननो पंचमो जेद रे ॥ पं० ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजि० ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ अमल कमल जिम धवल बिराजे, गाजे गौरी पास ॥
 सेवा सारे जेहनी सुर, नर मन धरिय उल्लास ॥ १ ॥ सोजागी
 सादिव भेरा बे, अरिहा सुग्यानी पास जिणंदा बे ॥ ए आंकणी ॥
 सुंदर सूरति मूरति सोहे, मो मन अधिक सुहाय ॥ पलक पलकमें
 पेखतां मानुं, नव नवि ठविय देखाय ॥ २ ॥ सोजा० ॥ अ० ॥
 जव डुःख जंजन जनमनरंजन, खंजन नयनशुं रंग ॥ श्रवण सुणी
 गुण ताहरा माहरां, विकस्यां अंगो अंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ० ॥
 दूरथकी हुं आयो बहिने, देव लह्यो दीदार ॥ प्रारथियां पहिने
 नहिं साहिवा, एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सो० ॥ अ० ॥ प्रभु
 मुखचंद विलोकित हरपित, नाचत नयन चकोर ॥ कमल हसे
 रवि देखिने जिम, जलधर आगम मोर ॥ ५ ॥ सो० ॥ अ० ॥
 किसके हरिहर किसके ब्रह्मा, किसके दिलमें राम ॥ मेरे मनमें
 तुं वसे सादिव, शिवसुखनोही ठाम ॥ सो० ॥ अ० ॥ ६ ॥ मा
 ता वामा धन्य पिता जसु, श्रीअश्वसेन नरेश ॥ जनमपुरी वणा
 रसी, धन धन काशीनो देश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ७ ॥ संवत सत
 रेशें वावीशें, वदि वैशाख वखाण ॥ आवम दिन जले जावशुं,
 मारी जात्र चढी परिमाण ॥ सो० ॥ अ० ॥ ८ ॥ सान्निध्यकारी

विघ्ननिवारी, परजपगारी पास ॥ श्रीजिनचंद जूहारता, मोरी स
फल फली सहु आश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ विमलजिनस्तवनम् ॥

॥ घर अंगण सुरतरु फल्यो जी, कवण कनक फल खाय
॥ गयवर बांध्यो वारणें जी, खर किम आवे दाय ॥ १ ॥ विमल
जिन महारी तुम्हशुं प्रीति, सुर सकलंकितशुं मिळ्या जी, हियनुं
हींसे केम ॥ वि० ॥ १ ॥ मन गमता मेवा लही जी, कुण खर
खावा जाय ॥ आदर साहिबनो लही जी, कुण छे रांक मनाय
॥ वि० ॥ २ ॥ रत्न उते कुण काचनें जी, अलवे पसारे हाय ॥
कुण सुरतरुयी ऊठिनें जी, बावल घाले बाय ॥ वि० ॥ ३ ॥ देव
अवर जो हुं करूं जी, तो प्रजु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज जवो
जवें जी, तुंदिज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशी वृद्ध स्तवनं ॥

॥ समवसरण वेठा जगवंत, धरम प्रकाशे श्रीअरिहंत
घारे परपदा बैठी जुनी, मागशिर शुदि इग्यारश वनी ॥ १ ॥
झिनाथना तीन कळ्याण, जनम दीक्षा ने केवलज्ञान ॥ अ
दीक्षा लीधी रुक्मी ॥ मा० ॥ २ ॥ तभिने ऊपनुं केवलज्ञान
पांच कळ्याणक अति परधान ॥ ए तिथिनी महिमा एवनी ॥ मा०
॥ ३ ॥ पांच जगत ऐरवत इमहीज, पांच कळ्याणिक हुवे ति
हीज, पंचासनी संख्या परगनी ॥ मा० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत
गणतां एम, दोढशें कळ्याणक आये तेम ॥ कुण तिथि ठे ए तिथि
जेवनी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इण परे गिणो, लाज इ
नंत उपवासा तणो ॥ ए तिथि सहु तिथि शिर राखनी ॥ मा० ॥
६ ॥ मौनपणें रह्या श्रीमझि नाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ
॥ मौन तणी परि व्रत इम पनी ॥ मा० ॥ ७ ॥ अठ पुढरी पोसो

लीजिये, चोविहार विधिगुं कीजिये ॥ पण परमाद-न कीजें पन्नी
 ॥ मा० ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजें उपवास, जावजीव पण अधिक
 उद्धात ॥ ए निधि मोक्ष तणी पावनी ॥ मा० ॥ ९ ॥ ऊजमणुं
 कीजें श्रीकार, ज्ञाननां उपगण इग्यार इग्यार ॥ करो काठसग
 गुरु पाये पन्नी ॥ मा० ॥ १० ॥ देहरे स्नात्र करीजें वली, पोथी
 पूजीजें मन रली ॥ सुगतिगुरी कीजें दूरनी ॥ मा० ॥ ११ ॥
 मौन इग्यारस महोदुं पर्व, आराध्यां सुख लहिये सर्व ॥ घत पञ्च
 रक्षाण करो आसुनी ॥ मा० ॥ १२ ॥ जेतन शोल इक्याश। समे,
 कीधुं स्तवन सहू मन गमे ॥ समयसुंदर कवे करो दाहनी ॥ मा०
 ॥ १३ ॥ इति श्रीएकादशि वृद्ध स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ श्रीशांतिनाथ स्तवनं ॥

॥ श्रीसारद मात नमूं सिरनामी, हुं गांठं त्रिजुवनके स्वामी
 ॥ संतहि संत जपे सब कोइ, जां पर शांति सदा सुख होई ॥ १ ॥
 सांत जपाने कीजें कामा, सोइ काम हुवै अजिरामा ॥ शांति ज
 पी परदेश सिधावै, ते कुशले कमला ले आवे ॥ २ ॥ गर्जयकी
 प्रजु मारि निवारी, शांतहि नाम दियो मदतारी ॥ जे नर शांति
 तणा गुण गावै, रुद्धि अर्चिंती ते नर पावै ॥ ३ ॥ जा नरक प्रजु
 शांति सुहाई, ता नरक कुठ आरति नांही ॥ जो कहु वंछे सोही
 पूरे, वालिइ दोष मिथ्यामत घूरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योति
 प्रकासी, घटके जीतर प्रजु वासी ॥ स्वामि सरूप कहा नवि
 जावै, कडितां मो मन अचरज आवै ॥ ५ ॥ नार दिया सबही ह
 थियारा, जीता मोदतणा दल सारा ॥ नारितजी शिवसु रंग राचे,
 राज तज्या पिण सादिव साचै ॥ ६ ॥ महा बलवंत कहोजै देवा,
 कायर कुंथु न एक दणोवा ॥ रुद्धि सहू प्रजु पास लहीजै, त्रिका
 हारी नाम कहोजै ॥ ७ ॥ निवक पूजक हे सग जाग्रक, पिण

सेवकूं सदा सुख दायक ॥ तजी परिग्रह जए जग नायक, नाम
 अतीत सबै विध लायक ॥ ८ ॥ सत्रु मित्र सम चित्त गिणीजै,
 नाम देव अरिहंत जणीजै ॥ सयल जीव हितवंत कहौजै, सेवक
 जाण महा पद दीजै ॥ ९ ॥ सायर जैसा होय गंजीरा, दूषण
 नहि इक मांहि सरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी ॥ पिण
 न रहै प्रजु एकण ठामी ॥ १० ॥ लोक कहे प्रजुजी सब देखै,
 पिण सुपनो कबहु नवि पेलै ॥ रीत विना बाकीस परीतइ, सैचा
 जीती तैं जगदीसइ ॥ ११ ॥ मान विना जग आंश मनावै, मा
 था विना सबसुं मन लावै ॥ लोचन विना गुणरास ग्रहीजै, जिकु
 जये त्रिगुणो सेवीजै ॥ १२ ॥ निग्रंथपणै सिर उत्र धरावै, नाम
 जती पिण चमर डुलावै ॥ अजय दान दाता सुखकारण, आगे
 चक्र चलै अरि दारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल जणीजै, कर्म
 सबीको मूल खणौजै ॥ चौविह संघ जे तीरथ थापै, लख घणी
 देखी नवि आपै ॥ १४ ॥ विनयवंत जगवंत कहावै, ना कितंदी
 कूं सीस नमावै ॥ अकिंचनको विरुद्ध धरावै, पिण सोवन पंकज
 पगडावै ॥ १५ ॥ तजि आरंज निज आतम ध्यावै, शिवरमणीकूं
 साथ चलावै ॥ राग नही सेवग पिण तारे, द्वेष नही निगुणां
 संगं वारै ॥ १६ ॥ तेरी महिमा अदनुत कहिये, तेरे गुणां हो पार
 न लहिये ॥ तूं प्रजु समरथ साहिब मोरा, हुं मनमोहन सेवक
 तोरा ॥ १७ ॥ तूं त्रिहुंलोकनणो प्रतिपाला, मे हुं अनाथ तूं दीन
 दयाला ॥ तूं सरणागत राखण धीरा, तूं प्रजु तारक वै वरवीरा
 ॥ १८ ॥ तुम जेसैं वरुजागज पायो, तो मेरो कारज चढ्यो त
 वायो ॥ कर जोमो प्रजु वीनवुं तोसुं, करो कृपा जिनवरजी मोतुं
 ॥ १९ ॥ जामण मरण निवारो तारो, जवसायरथी पार उतारो
 श्रीदयणापुर मंरुण सोहे, तिहां जिन शांति सदा मन मोहे

॥ २० ॥ पद्मसूरि गुरुराज पसायै, श्रीगुणसागरके मन-जायै ॥
जे जर नारी इक चित गावै, मन बंठित फल निधै पावै ॥ २१ ॥
इति श्रीशान्तिनाथ स्तवर्न ॥

॥ अथ चोरासी आसातना जिनमंदिरकी स्तवर्न ॥

॥ दाल ॥ बिलसै ऋद्धि समृद्धि मिली ॥ ए देखी ॥

॥ जय२ जिण पास जगत्र धणी, सोजा तादरी संसार
सुणी ॥ आयो हुं पिण धर आस धणी, करवा सेवा तुम चरण
तणी ॥ १ ॥ धन२ जे न पने जंजालै, उपयोगसुं वैसे जिन आलै
॥ आसातना चउरासी टालै, साभवता सुख तेहिज संजालै ॥ २ ॥
जे नाखै श्लेषम जिनहरमें, कलह कौ गाली जूये रमै ॥ धनुषादि
कला सीखण दूकै, कुरखो तंबोल जखे थूकै ॥ ३ ॥ सुरेबाय बनी
लघुनीत तणी, संझा कंगुलिया दोष सुणी ॥ नख केस तमारण रु
धिर क्रिया, चांदोनी नाखै चांमनियां ॥ ४ ॥ दातण ने वमन पिये
कावो, खावे धांणी फूली खावो ॥ सूवे बेसामण वितरावै, अज
गज पशु ने दामण दावै ॥ ५ ॥ सिर नासा कान दशन आखै,
नख गाल वपुपना मल नाखै ॥ मिलणो लेखो करे मंत्रणो, बिह
चन अपणो कर धन धरणो ॥ ६ ॥ वैसै पग ऊपर पग चढिया, आपै
गाला ठमै हुंठणियां ॥ सुकवै कप्पन पप्पन बनियां, नासीय छिपै
नृप जय पनियां ॥ ७ ॥ शोके रौवै विकथा ज कहै, इहां संख्या
वैतालीस लहै ॥ हवियार घने ने पशु बांवे, तापै नांणो परखै रां
धै ॥ ८ ॥ जांजी निस्तही जिनगृह पेसे, घरै उत्र ने मंमपमें
वेसै ॥ पहिरै वस्त्र अने पनहो, चामर वीजै मन ठाम नही ॥ ९ ॥
तनु तैल सचित्त फल फूल लियै, जूपण तज आप कुरूप थियै ॥
वरतणधी सिर अंजली न धरै, इगसामै उत्तरासंग न करे ॥ १० ॥

गौगो सिरपेच मौम जोमै, दमिये रंमने वेसे होमै ॥ संपणांसु
 जुंदार करे मुजरो, करे जंम घेष्टा कहै वचन जुगै ॥ ११ ॥ धरे ध
 रणो जगमे उल्लंगी, सिर गूधै बांधे पालंगी ॥ पसारे पंग पहरे चावनि
 यां, पंग ऊटक दिरावै डुखनियां ॥ १२ ॥ करदम लूहै मैद्युन मंमै,
 जू आचलि अँठ तिहां ठमै ॥ उघामे गुळ करै वयदा, काढे व्या-
 पार तणी कयदा ॥ १३ ॥ जिनहर परनालनो नीर धरै, अंधेले
 पीवां ठाम जरै ॥ दूषण जिनजवनमें ए दाख्या, देववंदनजापमें
 जे जाख्या ॥ १४ ॥ सुझानी आवग सगति ठतां, आसातन टांले
 वारसतां, परमाद वलै कोई थापै, आलोयां पाप सहू जापै ॥ १५ ॥
 तंबोल ने जोजन पांन जूआ, मल गूत्र सवन लो जोग हुआ ॥
 जूपण पनहो ए जघन्य दसे, वरज्या जिनमंदिर मांदि वसे ॥ १६ ॥
 इव्यत ने जावत दोष पूजा, एदनादिज जेद कहा दूजा ॥ सेवा
 प्रभुनी मन शुद्ध करै, वंगित सुख लीला तेह वरै ॥ १७ ॥
 कलश ॥ इम जव्य प्राणी जाव आणी, विवेकी शुद्ध वातना ॥
 जिनधिंव अरजै परी वरजै, घोरासी आसातना ॥ ते गोत्र तीर्थ
 कर अरजै, नमें जेदने केवलो ॥ उवजाय श्री अनर्तिह वंदे, जेन
 शासन ते वली ॥ १८ ॥ इति श्री घोरासी आसातना स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस जिन देहप्रमाण स्तवन लिख्यते ॥

॥ प्रणमं रूपज जिनेतर प.प, धनुष पांयसे उंची काय ॥ धी
 जो अजित जिन मुळ मन वनै, मांन धनुष साटासारते ॥ १ ॥
 तीजो संजव मुख दातार, उंची काय धनुष सो अपार ॥ अजिनं
 दन जिनसुं मन लीन, देह धनुष सो सादातीन ॥ २ ॥ पंचम
 सुमतिनाथ जगवांन, धनुष तीननो देही मांन ॥ पदम धनुष
 मन आस, देह धनुष दोयसे पचास ॥ ३ ॥ सानि सुमारत सभन
 दोष, देह प्रमांस धनुष सो दोष ॥ चंद्राप्रभु जिन मुळ मन यतै, देह

प्रमाण धनुष दोढसै ॥ ॥ ॥ सुविधनाथ नमिये सुविवेक, उंच प्र
माण धनुष सो एक ॥ शीतलनाथ नमें जंग सवे, देह प्रमाण ध
नुष जसु निवै ॥ ५ ॥ श्री श्रेयांस नमूं उल्लसी, उंच प्रमाण धनुष
तनु असी ॥ वासपूज्य धारम जिन चंद, मान धनुष सितर सुख
कंद ॥ ६ ॥ विमल २ गुणकर गंजोर, साठ धनुष जसु मान तरीर
॥ अनंत ज्ञान अनंत प्रकाश, देह प्रमाण धनुष पञ्चात ॥ ७ ॥
पनरम धरमनाथ जगदीस, मान धनुष जसु पैतालीस ॥ शान्ति
करण शीलम जिन शान्ति, देह धनुष चालीस सोर्जति ॥ ८ ॥
सतरम कुंथु जिन जगदाधार, मान धनुष पैत्रीस उदार ॥ अर अ
वारम दीनदयाल, त्रीस धनुष तन अति सुविशाल ॥ ९ ॥ मल्लि
नाथ जिन जगणीसमो, मान पच्चीस धनुष पय नमो ॥ बीसम
मुनिसुव्रत अरिहंत, बीस धनुष तनु मान कहंत ॥ १० ॥ इकवा
सम नमिजिन राजान, धनुष पनरे तसु रूप निधान ॥ बावीसम
श्रीनेमजिनंद, दस धन दीपे जाण दिणंद ॥ ११ ॥ तेवीसम श्री
पारसनाथ, नील वरण सोहे नव हाथ ॥ चोवीसमा जिनवर श्री
वीर, सात हाथ जगनाथ तरीर ॥ १२ ॥ इण परि ए जिनवर चो
वीस, प्रणमें प्रहं शम धरिय जगीस ॥ तां घर रुदि सिद्धि उठ
रंग, रंग विनय प्रणमें मुनि रंग ॥ १३ ॥ इति श्री चोवीस जिन
देहमान स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं लिख्यते ॥

॥ रूपजदेव प्रणमूं जिनराय, लाख चोरासो पूरव आय ॥ बी
जो अजित जसु सूत्रे साख, आठ वडुत्तर पूरव लाख ॥ १ ॥ ती
र्थकर संजव तीसरो, आठ लाख पूरव साठरो ॥ अर्जुनंदन पूरे
मन आस, आठ लाख पूरव पञ्चात ॥ २ ॥ सुमतिनाथ पंचम
जगदीस, आठ लाख पूरव चालीस ॥ श्री पद्मप्रज्जूनी ए यितः

जाण, लाख तीस पूरव परिमाण ॥ ३ ॥ श्री सुपार्श्व लाख पूरव
 बीस, दस लख पूरव चंदप्रभु ईस ॥ सुविधनाथ लख पूरव दोय,
 इक लख पूरव शीतल धित दोय ॥ ४ ॥ आयु वरस चोरासी
 लाख, श्री श्रेयांस तणी श्रुत साख ॥ लाख बहुत्तर वरसां तणो,
 वासुपूज्य परमायुष गिणों ॥ ५ ॥ विमल आयु लख साठ वरीस,
 वरस अनंत तणो लख तीस ॥ लाख वरस दस धरम दिणंद,
 लाख वरस श्री शांतिजिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस्र श्रिति पद्याणवै,
 श्री कुंथुनाथ तणी संजवै ॥ सहस्र चोरासी अर जिनतणी, मल्लि
 सहस्र पचावन जणी ॥ ७ ॥ वरस संपूरण त्रीस हजार, मनिषु
 व्रत परमाण उदार ॥ बीस सहस्र ननिजिन धित जणी, वरस स
 हस्र नेमीसरतणी ॥ ८ ॥ पास वरस एक सो सुखकंद, वरस
 बहुत्तर वीरजिणंद ॥ रुपजतणा तेरे अवतार, सात चंड शंती-
 सर वार ॥ ९ ॥ सुव्रत जव नव नव नेमीस, पार्श्व वीर वस सचा-
 वीस ॥ त्रिहुंश जव सतरे जगदीस, सगला जव एकसो अमतीस
 ॥ १० ॥ सिद्ध लही सहुने धन धन, गणधर चवदेसै वावन्न
 सहुने मुनि लख अठावीस, सहस्र ऊपरै अमतालीस ॥ ११ ॥ ला
 चमाल ठगाल हजार, परुधिक सहु साधवो सो व्यार ॥ श्राव
 लाख पचावन धुरै, अमतालीस सहस्र ऊपरै ॥ १२ ॥ एक को
 श्रावका सुजगीस, लाख पांच सहस्र अमतीस ॥ ए संघ चतुर्वि
 सहु जिनतणो, रंग विनय प्रणमें हित घणो ॥ १३ ॥ इति ५
 चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं ॥

॥ अथ तेसठ शलाका पुरुष स्तवन लिख्यते ॥

॥ दाल १ ॥ धरम महारथ सारथ सारं ॥ ए देशी ॥

सहुरु चरण कमल मन धारं, त्रेसठ उत्तम नर अधिकारं
 पन्नपासु श्रुत अनुसारं ॥ जेहने नाम विषै निसतारं, आपण सफल

हुवै अवतारं, पामीजै जव पारं ॥ १ ॥ रूपज अजित संजैव अ-
जिनंदन, सुमति पदमप्रभु नयनानंदन, सत्तम तेम सुपास ॥ चंड-
प्रभु ने सुविष शीतल जिन श्रेयांस, वासपूज्य जिन सुरमणि,
विमल गुणेंकर वास ॥ २ ॥ अनंत धर्म श्री शांति जिनेसर, कुं-
घुनाथ अर महि सुहंकर, मुनिसुव्रत नमि नेम ॥ पार्श्व वीर ए
जिन चोवीस ॥ जग वल्लभ जगगुरु जगदीस, प्रणमीजै पर प्रेम ॥ ३ ॥

॥ दाल २ जी ॥ प्रथम सुपनगज निरख्यो ॥ ए देशी ॥

॥ प्रथम जगत नरइंद, बीजो सगर सुरिंद ॥ मधवा तीजो
वदार, चोथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पांचमो शांति चक्रोस, ठो
कुंधु गणीत ॥ सातमो अरि नरनाथ, आठमो संजूमि सनाथ ॥
५ ॥ नवमो पदम नरेस, हरिपेण दसमो कहेस ॥ इग्यारम जय
तांम, बारम ब्रह्मदत्त नांम ॥ ६ ॥ एह चक्कीसर बार, क्षेत्र जगत
सिणगार ॥ मधवा सनतकुमार, पोदता सरग मजार ॥ ७ ॥ स-
जूम अने ब्रह्मदत्त, सत्तम नयर निरत्त ॥ आठ थया सिवगामी, ते
प्रणमुं सिरनामी ॥ ८ ॥

॥ दाल ३ जी ॥ मुनिवर आर्य सुहस्ति ॥ ए देशी ॥

॥ पहिलो त्रिपृष्टि जाण, द्विपृष्ट दूतरो, तीनो स्वयंप्रभु जा-
णिये ॥ पुरुषोत्तम ए चोथो, पंचम परगमो, पुरुषसिंह परमांणिये
ए ॥ ९ ॥ ठो पुरुष पुंनरीक, दत्त तिम सातमो, लक्ष्मण नांम
आठमो ए ॥ नवमो कृष्ण नरेस, ए नव केशवा, प्रह ऊठी ए
पिण नमूं ए ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव, नारकी सातमी, अगला
पांच ठो गंगा ए ॥ सातमो पंचग्री नर, चोथी आठमो, नवमो
तीजी नारीया ए ॥ ११ ॥ अचल विजय ने जइ, सुप्रभु सुदर्शन,
आनंद नंदन गुज नंता ए ॥ रामचंड बलजइ, बलदेव ए नव,
आठ थया तिहां सिव गती ए ॥ १२ ॥ बलजइ ब्रह्म देवलोक,

काल उत्सप्पणी, जास्यै तिव रुष्ण सासने ए ॥ अथवा निपुलाक
नाम, तीर्थकर दोस्ये, चवदमो इम बहुश्रुत जणे ए ॥ ११ ॥

॥ दाल ४ ॥ कुमारणै मधु रत्तां काल सुखै गमेए ॥ ए देशी ॥

अस्वमीव नैं तारक मेरुकवलि मधु तिताए, निशुंज बलय
प्रदलाद, रावण जरासिंधु जिता ए ॥ ए नव प्रतिवासुदेव नारक
गति गामिया ए, ते पिण जावि जिनेस केई प्रणमुंमुदा ए ॥ १४ ॥

॥ दाल ५ ॥ सकल संसारनी ॥ ए देशी ॥

शांति नैं कुंथु अरि एह जव एकदो, चक्रधर तीर्थकर दोय
पदवी लदी ॥ वीर वासुदेव अरिदंत जव जूजूआ, वेद तिणासाव
पिण जीव गुणसठ थपा ॥ १५ ॥ वासुदेव बलीय बलदेव केरा
पिता, एकदिज प्राय नव एण लेखे उता ॥ तीन चक्रधर तणा
मिलिय धोर टङ्ग्या, एम त्रैसठना तात इकावन मिट्या ॥ १६ ॥
तीन शक्रवर्जतणी टाल दीजे इसे, माय सहुनी अई साठ लेखे इसे
॥ एह नररयणनो ध्यान नित जे घरे, तेह सुरपद लदी मोक
पदवी घरे ॥ १७ ॥

॥ कण्ठ ॥

इम पुण्या तीर्थकर शक्तीगर वासुदेव बलदेव ए, प्रतिवासु-
देव गुप्तेक जेदनी करे सुरनर सेव ए ॥ त्रैसठ शक्तीका पुरुष उत
जगन जयवंतो सदा, प्रद शमे तेदना शरण पंकज नमै मुनि वगै
मुदा ॥ १८ ॥ इति त्रैसठ शक्तीका पुरुष स्तवनं ॥

॥ अथ सैशुंजगिरी स्तवनं ॥

श्री विमलाचल सिर तितो, आदीगर अरीदंत ॥ जगत्
धर्म निवारको, जय जंजल जगवंत ॥ श्रीः ॥ १ ॥ मुरा मजद
... वि एलो, सो दिन मज्ज विसेम ॥ ग्वामी श्री गिरेदेव
... निरामे ॥ श्रीः ॥ २ ॥ जंगल निराम विद्वाना, सः

तणे परिवार ॥ आदि जिनंद समोसरधा, पूरव निनाणूं वार ॥
 श्री० ॥ ३ ॥ अचिरा विजयानंदने, जगबंधव जगतात ॥
 इण गिरचनुमासे रद्धा, थिवर कहे ए वात ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पांमे
 शिव सुख साश्वता, गणधर श्री पुंरुरीक ॥ पुंरुरगिरि तिण कारणे,
 जगति करो निरजीक ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नमि नें विनमि सहोदरू,
 विद्याधर बलवंत ॥ सेत्रुंज शिवर समोसरधा, जे गरुआ गुणवंत ॥
 श्री० ॥ ६ ॥ थावच्चा मुनिवर सुक, सहस्र परिवार ॥ पंथग
 वयणे जागियो, सो सेलग अणगार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पांरुव पांच
 सदावलो, सुणि जादव निरवाण ॥ ते सोधा सिद्धाचलै, सुर नर
 करै वखाण ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इम सीधा इण मंगेरै, मुनिवर कोना-
 कोनि ॥ पाज चढता सांजैरै, ते प्रणमूं करजोनि ॥ श्री० ॥ ९ ॥
 जे बाधण प्रतिबुद्धो, ते दरवाजै जोय ॥ गोमुख यक्ष कवच मिळी,
 सानिधकारी होय ॥ श्री० ॥ १० ॥ जे विधसुं यात्रा करै, सुर नर
 सेवक तास ॥ राजसमुद्र गुण गावतां, अविचल लील विलास
 श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥ स्तवनं ॥

अथ श्री सिद्धाचल स्तवनं लिख्यते ॥

॥ देसी गरवानी ॥

श्री सिद्धाचल मंरुण स्वामी रे, जग जीवन अंतरजामी
 रे, एतो प्रणमूं हूं सिरनामी, यात्रोना जात्रा निनाणूं करिये रे ॥ १ ॥
 श्रीरुपज जिनेसर राया रे, जिहां पूरव निनाणूं आया रे, प्रजु
 समवसरधा सुख दाय ॥ या० ॥ २ ॥ चेत्रो पूनम दिन वखाणो रे,
 पांच कोनिसुं पुंरुरीक जाणो रे, जे पांम्या पद निरवाण ॥ या०
 ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख संतै रे, वे वे कोनिसुं साधु संघाते
 रे, एतो पोहता पद लोकांत ॥ या० ॥ ४ ॥ काती पूनम कर्मने
 तोमी रे, जिहां सीधा मुनि दस कोमी रे, ते वंदो वे कर जोमी

॥ या ० ॥ ५ ॥ इम जरतेसरने पाटे रे, अलंख्यात साधु धि
 थाटे रे, पांख्या मुगति तया। ए वाट ॥ जा० ॥ ६ ॥ दोष सदस
 मुनी परवारे रे, आवद्धा सुत सुखकारे रे, सय पंच सेजग अणगार
 ॥ या० ॥ ७ ॥ देवकी सुत सुजगीसे रे, सोधा बहु पादयवसे रे,
 ते नमो रे नमो मन हींसे ॥ या० ॥ ८ ॥ पांचे पांख इण गिर
 आया रे, सीधा नव नारद कपिराया रे, बलो संव प्रजून कदाय
 ॥ या० ॥ ९ ॥ ए तीरथ मद्दिमावेंते रे, जिहां सीधा साधु अनंते
 रे, इम जाप्यो श्रीजगवंत ॥ या० ॥ १० ॥ उज्ज्वल गिर सम नदी
 कोइ रे, तीरथ सगलामे जोइ रे, जे फरस्यां पावन दोइ ॥ या०
 ॥ ११ ॥ एकादारी ने सचित पदारी रे, पदगारो ने जूमि संशारी
 रे, शुद्ध समकित ने ब्रह्मचारी ॥ या० ॥ १२ ॥ इम गदरी जे नर
 पाले रे, पदुं दान सुपाये आले रे, ते जनम मरण जय टाले
 ॥ या० ॥ १३ ॥ घनरे ते नर ने नारी रे, जेट विमलायल इह
 तारी रे, जइये तेहतगी धरिदारी ॥ या० ॥ १४ ॥ श्रीजिनभंड
 सूरि सुरनाये रे, जिनद्वरे द्विये हुलसाये रे, इम विमलायल गुण
 लाले ॥ या० ॥ १५ ॥ इतिगरे ॥

वरस संख्याता बलि विकलेंडी, वेप धरया डुख धामी रे ॥ ज०
 ॥ ४ ॥ मु० ॥ सुर नर तिरि बली नरकतणी गति, पंचेडीपणो
 धारयो रे ॥ ज० ॥ चौबीसे दंरुफ मांदि जमियो, अब तो हूं पिण
 दारयो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ मु० ॥ जब नाटक नित करतो नव नव,
 हूं तुज आगल नाच्यो रे ॥ ज० ॥ समरथ सादिव सुरतरु सरिखो,
 निरखी तुजने याच्यो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ मु० ॥ जो मुज नाटक
 देखी रीझ्या, तो मन बंघित दीजे रे ॥ ज० ॥ जो नवि रीझ्या
 तो मुज ज्ञाखो, बाल नाटक नवि कीजे रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मु० ॥
 खालच धरि हूं सेवा सारुं, तुं डुखमा नवि कापे रे ॥ ज० ॥ दाता
 सेती सुंम जलेरो, बहिलो उत्तर आपे रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ मु० ॥
 तुज सरिपा सादिव पिण माहरो, जो नवि कारज सारो रे ॥ ज० ॥
 तो मुज करमतणी गति अबली, दोस्त न कोइ तुमारो रे ॥ ज० ॥ ९ ॥
 मु० ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, सुध समकित सह नाणी रे ॥
 ज० ॥ सुगुण सेवकना बंघित पुरो, तेहिज गुणमणि खाणी रे ॥
 ज० ॥ १० ॥ मु० ॥ वर्ष अढारै गुणतालीसै, ज्येष्ठ सुदी सोमवारो रे ॥
 ज० ॥ खालचंद प्रतिपद दिन जेटया, बीकानेर मजारो रे ॥ ज०
 ११ ॥ मु० ॥ इति श्री एकमदिन रूपनदेव स्तवनं ॥

॥ अथ अमावस दिनका महावीर स्तवनं ॥

॥ वीर सुणो मोरी वीनती, करजोमी हो कहूं मननी बात
 बालकनी पर वीनवूं, मोरा स्वामी हो तूं त्रिजुवन तात ॥ वी०
 १ ॥ तुम दरशण विन हूं जम्प्यो, जब मांहे हो स्वामी समुझंम
 पार ॥ डरक अनंता में सह्या, ते कहितां हो किम आवे पार ॥
 २ ॥ पर उगारी तूं प्रज, डुख जंजे हो जग दीनदयाल
 तिण तोरे चरणे हूं आवियो, सामी मुजने हो निज नयण निहाल
 वी० ॥ ३ ॥ अपराधी पिण ऊथरया, तें कीधी हो करुणा मो

रा स्वांम ॥ हुंतो परम जक ताहरो, तिण तारो हो नही दीखनो
 कांम ॥ वी० ॥ ४ ॥ सूलपाण प्रतिवूज्या, जिण कीधा हो तुज
 ने उपसर्ग ॥ मंक दियो चंमकोसिये, तें दीधो हो तसु आठमो सर्ग
 ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोसालो गुनदोण घणो, जिण बौद्ध्या हो तोरा
 अवरणवाद ॥ ते बलतो तें राखीयो, सीतललेस्या हो मूकी सुप्र
 साद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुण ठै इंडजालियो, इम कहतो हो आ
 यो तुम तीर ॥ ते गोतमने तें कियो, पोतानो हो प्रजुतानो वजी
 र ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन उयाप्या ताहरा, ते ऊगळ्यो हो तुज साथ
 जमाल ॥ तेहनें पिण पनरे जवे, शिवगांमी हो तें कीधो कपाल
 ॥ वी० ॥ ८ ॥ एमचो रिय जेरम्यो, जल मांहे हो बांधी मांठीनी
 पाल ॥ तिरती मूकी काठलो ॥ तें तारघो हो तेहनें ततकाल ॥
 वी० ॥ ९ ॥ मेघकुमर रुचि दूह्यो, चित चूको हो चारितयो
 अपार ॥ एकावतारी तेहने, तें कीधो हो करुणा जंमार ॥ वी०
 ॥ १० ॥ वार वरस वेस्या घरे, रह्यो मूकी हो संजमनो जार ॥
 नंदिपेण पिण ऊयरयो, सुर पदवी हो दीधो अति सार ॥ वी० ॥
 ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, ग्रहवासे हो वस्यो वरस चौवीस ॥ ते
 पिण आडकुमारने ॥ तें तारघो हो तोरी एह जगीत ॥ वी० ॥
 १२ ॥ राय श्रेणक रांणी चेलणा, रूप देखी हो चित चूका जेह
 ॥ समयसरण साधु साधवी, तें कीधा हो आराधिक तेह ॥ वी०
 ॥ १३ ॥ विरत नही नही आखमी, नही पोसो हो नही आदर दीख
 ॥ ते पिण श्रेणिकरायने, तें कीधो हो सामो आप सरीख ॥ वी०
 ॥ १४ ॥ इम अनेक तें ऊयरया, कहुं तोरा हो केता अवदात ॥
 सार करो दिव मांहीरी, मनमांहे हो आणो मोरमी वात ॥ वी०
 ॥ १५ ॥ सूयो संजम नहि पलै, नही तेदयो हो मुऊ दरसन
 ज्ञान ॥ पिण आधार ठै एतलो, इक तोरो हो धरुं निश्चल ध्यान

वी० ॥ १६ ॥ मेह महितल वरसतो, नवि-जोवे हो सम विखमी.
 गंम ॥ गिरुवा सहजे गुण करे, स्वांमी सारो हो मोरा वंछित.
 कांम ॥ वी० ॥ १७ ॥ तुम नांमे सुख संपदा, तुम नांमे हो दुख
 जाये दूर ॥ तुम नांमे वंछित फलै, तुम नांमे हो मुऊ आनंद पूर
 ॥ वी० ॥ १८ ॥ कलस ॥ इम नगर जेसलमेरु मंरुन, तीर्थकर
 चोवीसमो ॥ सासनाधीश्वर सिंद लंठन, सेवतां सुरतरु समो ॥
 जिनचंद त्रिसलामात नंदन, सकलचंद कला निलो, वाचनाचारज
 समयसुंदर ॥ संघुणयो त्रिजुवन तिलो ॥ १९ ॥ इति श्री माहा
 वीर जिन-स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस दंडक स्तवनं ॥

॥ दाल १ ॥ आदर जीव समर गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ पूर मनोरञ्ज पास जिनेसर, एह करुं अरदास जी ॥ ता
 रण तरण विरुद तुऊ सांजलि, आयो हूं धर आस जी ॥ पू० ॥ १ ॥
 इण संतार समुइ अथागै, जमियो जवजल मांदिजी ॥ गिलगिचिया
 जिम आयो गिमतो, सादिव हाथे सादि जी ॥ पू० ॥ २ ॥ हूं
 झानी तोपिण तुऊ आगै, वीतक कहिये वात जी ॥ चोवीसे दंरु
 क हूं जमियो ॥ वरणूं तेह विख्यात जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ साते न
 रकतणो इक दंरुक, असुरादिक दस जाण जी ॥ पांच आवर नें
 तीन विकलेंडी ॥ उगणीस गिणती आण जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ पंचें
 डी तिर्यच ने मानव, एह अया इकवीस जी ॥ व्यंतर ज्योतपां
 नें वैमाणिक, इम दंरुक चोवीस जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ पंचेंडी तिर्यच
 अने नर, परयासा जे होय जी, ए चोविह देवामें ऊपजै, इम देवां
 गति दोय जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ असंख्यात आउलै नर-तिरि, निहचै
 देव ज आय जी ॥ निज आऊलै सम के उठै, पिण अधिके नवि
 जाय जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ जवनपती के व्यंतर ताई, समूर्तिम तिर्यच

जी ॥ सरंग आठमां तांइ पोहचै, गरजज सुकृत संच जी ॥ पू०
 ॥ ८ ॥ आन संख्यातै जे गरजज, नर तिरजंच विवेक जी ॥ बाव
 पृथ्वी नें वलि पाणी, वनस्पती प्रत्येक जी ॥ पू० ॥ ९ ॥ पर्याप्त
 इण पांचे ठामे, आवी ऊपजै देव जी ॥ इण पांचा मांहे पिण
 आगै, अधिकांई कहुं देव जी ॥ पू० ॥ १० ॥ तीजा सरगधक
 मांकी सुर, एकेंडी नवि थाय जी ॥ अठमथी ऊपरला सगला
 मांनवमांहे जाय जी ॥ पू० ॥ ११ ॥

॥ दाढ ॥ २ ॥ आज निहेजोरे दीसै नाहलो ॥ ए देसी ॥

नरकतणी गति आगति इण परै, जीव जमै संसार ॥ दोय गति
 नें दोय आगत जोणियै, वलिय विशेष विचार ॥ न० ॥ १२ ॥ सं-
 ख्याते आयु परजापता, पंचेंडी तिरपंच ॥ तिमहीज मनुष्य एहि-
 ज बे नरकमें, जायै पाप प्रपंच ॥ न० ॥ १३ ॥ प्रथम नरक लग
 जाय असन्निपो, गोह नकुल तिम वीय ॥ गृह प्रमुख पंखी ग्रीजी
 लगे, सींह प्रमुख चोथीय ॥ न० ॥ १४ ॥ पंचमी नरकै सोमा सा
 पंणी, ठठि लग ली जाय ॥ सातमियें माणस के मावलो ॥ ऊप
 जै गरजज आय ॥ न० ॥ १५ ॥ नरकथकी आवे बिहुं दंरकै,
 तिरपंच के नर थाय ॥ तेपिण गरजज ने परयापता ॥ संख्याती
 जसु आय ॥ न० ॥ १६ ॥ नारकियां ने नरकथी नीतरघा, जे
 फल प्रापति दोय ॥ उत्कृष्टे जांगे करते कहुं, पिण निश्रै नदी को
 य ॥ न० ॥ १७ ॥ प्रथम नरकथी चवि चक्रवर्ति हुवै, धीजी हरि
 बलदेव ॥ तीजी लग तीर्थकरपद लदै ॥ चोथीकेवल एव ॥ न० ॥
 ॥ १८ ॥ पंचम नरकनो सरवविरति लदै, ठठि वेसधिरत्त ॥ सातमी
 नरकनो समकितहीज लदै, न हुवै अधिक निमत्त ॥ न० ॥ १९ ॥

॥ दाढ ॥ ३ ॥ करम परीसा करण कुमर चलो रे ॥ ए देसी ॥

॥ मानव गति विन भुगति हुवै नदी रे, एहनो इम अधिकार

॥આઝ સંસ્પાતૈ નર સદુ દંરુકે રે, આવી લદૈ અવતાર॥મા૦॥૨૦॥
 તેઝ વાઝ દંરુક વે તજી રે, વોજા જે વાઘીસ ॥ તિહાંથી આયા ધ્રાવૈ
 માનવી રે, સુલ્લ ડુલ્લ કર્મ સરીસ ॥ મા૦ ॥ ૨૧ ॥ નર તિરયંચ અસં
 સ્વી આઝપૈ રે, સાતમી નરકના તેમ ॥ તિહાંથી મરને મનુષ્ય હુવે
 નદી રે, અરિદંત જાણ્યો એમ ॥ મા૦ ॥ ૨૨ ॥ વાસુદેવ ઘલદેવ
 તથા વલી રે, ચક્રવર્તિ ને અરિદંત ॥ સરગ નરગના આયા એ હુવૈ રે,
 નર તિરિયી ન હુવંત ॥ મા૦ ॥ ૨૩ ॥ ચોવિદ્ દેવ થકી ચવિ રૂપ
 જૈ રે, ચક્રવર્તિ ઘલદેવ ॥ વાસુદેવ તીર્થકર એ હુવૈ રે, વૈમાનિકથી
 વેવ ॥ મા૦ ॥ ૨૪ ॥

॥ ફાલ ॥ ૪ ॥ નામિ અને મરુદેવા ॥ એ દેશી ॥

દિવ તિરયંચ તણી ગતિ આગતિ કહિયે અશેષ, જીવ જમેં
 ફણ પર જવ માંદે કરમ વિશેષ ॥ આઝ સંસ્પાતો જે નર તિર્થંચ
 વિચાર, તે સગલા તિરયંચા માંદે લદૈ અવતાર ॥ ૨૫ ॥ જિણ
 તિરયંચા માંદે આવે નારક દેવ, તે કહ્યા પદલી તિણ કારણ ન કહૂં
 દેવ ॥ પંચેંડી તિર્થંચ સંસ્પાતૈ આઝલૈ જેદ, તે મરી ત્રિહુંગતિમાં
 જાવે ફહાં નદી સંદેહ ॥ ૨૬ ॥ ધાવર પાંચ તીને વિકલેંડી આઝ
 કહાવે, તિહાંથી આઝ સંસ્પાતા નર તિરયંચમેં આવે ॥ વિકલ ચવી
 લદૈ સરવવિરતિ પિણ મુગતિ ન પાવે, તેઝ વાઝથી આયો તેહને
 સમકિત નાવે ॥ ૨૭ ॥ નારક વરજીને સગલાહી જીવ સંસાર,
 પૃથવી આઝ વનસ્પતીમાંદિ લદૈ અવતાર ॥ એ તીનેં ફહાંથી ચવિ
 આવૈ દસે ઝાંમે, ધાવર વિકલ તિરો નરમાંદે ઝતપત પામે ॥ ૨૮ ॥
 પૃથવીકાય આદ દેઈ દસ દંરુકે એહ, તેઝ વાઝ માંદે આવી રૂપજે
 તેહ ॥ મનુષ્ય વિના નવ માંદે તેઝ વાઝ વે જાવે, વિકલેંડી તે
 દસમાંદિ જાવૈ પૂઝાહી આવૈ ॥ ૨૯ ॥ એમ અનાદિતણો મિષ્યાત્વી
 જીવ એકંત, વનસ્પતી માંદે તિહાં રહિયો કાલ અનંત ॥ પુઢવી

पांणी अगनि अनै चोयो वलि वाय, कालचक्र असंख्याता त
जीव रहाय ॥ ३० ॥ वेइंड़ी तेइंड़ी अने चौरिंद्री मजारै, संख्या
वरंसां लगै जमियो करम प्रकारै ॥ सात आठ जव लगि तां न
तिरयंचमें रहियो, दिव मानवजव लहिनें साधुनें वेपमें रहिय
॥ ३१ ॥ राग द्वेष बूटे नही किम हुवै बूटकवार, पिण ठै माइ
मनसुध ताहरो एक आधार ॥ तारण तरण में त्रिकरण सुद्धे अ
रिहंत लायो, दिव संसार घणो जमिवोतो पुदगल आधो ॥ ३२ ॥
तूं मन बंझित पूरण आपद चूरण सांमी, ताहरी सेव लही तो
नवनिध सिद्ध पांमो ॥ अवर न कांइ इच्छू इण जव तूंहिज देव
सूधै मन इक होज्यो जव ताहरी सेव ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम सकल सुखकर नगर जेतल, मेर महिमा दिन दिनें
संवत सतर जगणतीसै, दिवस दीवाली तणै ॥ गुणधिमल चं
त्तमान वाचक, विजय दरप सुतीस ए ॥ श्री पातना गुण एम
गावै, धरमसो सुजगीस ए ॥ ३४ ॥ इति श्री चोवीस दंरुक स्तवनें ॥

॥ अय इरियावही मिछामिदुक्कड संख्या स्तवनं ॥

॥ प्रमु प्रणमूं रे पास जिनेसर थंभणो ॥ ए देसां ॥

पद पंकज रे प्रणमी वीर जिनंदना, त्रिकरण सुद्ध रे का
मुनिवर पय वंदणा ॥ एमने रे पन्निक्की जिम इरियावही, श्री
धीरनी रे वाणी तद्वच कर सरदही ॥ उल्लाखो ॥ सरदही यांणी
मन सुहाणी, चित्त आंणी ते वली ॥ मिछामिदुक्कड तणी संख्या,
कहिसुं जिम कहे केवली ॥ जू दग जलण तिम वाठ, वणसइ
विगल पण इंडी तणी ॥ करतां विराइण करम थंध्या, डुर ते क
रिवा जणी ॥ १ ॥ चाउ ॥ पुनवि दग रे वाठ तेउ वणसइ, पण
आयर रे वादर मुद्धम दसे अई ॥ प्रत्येकज रे वणसइ इग्याइ

थया, बावीसि रे पङ्कजग अपङ्कजतया ॥ उल्लाखो ॥ पङ्कज अपङ्क-
जग वखाण्या, विगल तिय ठह जाल ए ॥ जल थल खचर जुयंग
डुइ, पण इंडिय तिरि अरुयाल ए ॥ तस्मादि साते नरक पुरुषी,
नारकी तिहां सात जे ॥ ते चवद जेदे करी जाणो, पङ्कजतय अ-
पजज जे ॥ २ ॥ चाल ॥ पनरह विध रे सुरगण परमा इन्मिया,
किलविपिया रे त्रिविध करम ते निम्मिया ॥ जंजिय दस रे नव
लोगंतिक जांणियै, सोलह विध रे व्यंतर देव वखाणियै ॥ उल्लाखो ॥
वखाणियै दस विध जुवनपतिना, तार रवि सशि रिसिगहा ॥ चर
थिर दसै विध जोइसी सुर, वखाण्या जिनवर जिहां ॥ बारह
विमाणइ पण अनुत्तर, नवग्रीविके नव जणया ॥ पङ्कज अपजजग
अठाणूं, अधिक सत संख्या गिण्यां ॥

॥ दाल ॥ २ ॥ मेघ आगम सरी ए ॥ देखी ॥

पंचजरत बलि ऐरवत पंच पंच विदेइवर जूमिका ए ॥ खेत्र
ए पनरह करम जूमि जाणायै अति कसि मसिदि आजीविकाए ॥
देमवत खेत्र बलि तिम हरिवर रम्यक ऐरणवत सहीए ॥ मेरुपिण
पाखती चारि १ खेत्र दस कुरु अकरम जूमीकहीए ॥ ४ ॥ हिम-
गिर सिहरीय दाढ चीयारि लवण समुझमांदि विस्तरीए ॥ सात
१ अंतर दोय पासे दीप ठप्पन्न अन्तर धरीए ॥ दोइसै जेद डुइ
आगला जांणी मणुय पङ्कज अपङ्कजतयाए ॥ एक सौ एक समुर्छिम
जेद तीनसै तीनमणुआ थयाए ॥ ५ ॥

॥ दाल ॥ ३ ॥ दिव जनम्या जगगुरु ॥ ए देखी ॥

पणस्य त्रैसठिविध जीवसदू ठे एइ अजिहय आदिक दस
गुणित करीजै तेइ ॥ पणसदस ठसै बलि त्रीस अधिकते जाणि ॥
ते रागे दोसै डुगुण करी वखाण ॥ ६ ॥ डुइ सदस इग्यारह डुइ-
सय साठि प्रमाण ॥ ए प्रवचनवाणी जाणो हितउर आपा ॥ मन-

वंच काया करि त्रिगुणाकरि त्रिशंक ॥ तेतीस सदस सत सात
असी निःतंक ॥ ७ ॥ बलि करण करावण अनुमति त्रिगुण कि० ॥
इकलक्ख सदसइग तिसय चालीस प्रसिद्ध ॥ अतीत अनगत
वर्त्तमान बलिकाल जे अइयविराधना तिणि त्रिगुण संज्ञाल ॥ ८ ॥
तीन लाख सदस च्यार बेसै अधिक तेथाय ॥ अरिहंत प्रमुख उद
साखै उगुण जाय ॥ इम लाख अठारह बलि सदस चउवीस ॥
इकसो बीसोत्तर हुइ संख्या निसदीस ॥ ९ ॥

॥ दाल ४ थी ॥ चोपहनी ॥ ए देशी ॥

॥ इण परि मिछामि डुकरुंदेई जविक तरया जवजल नि
धिकेई ॥ तरै अठै बलि आगलि तरिती ॥ निरमल केवल लखमी
वरिती ॥ १० ॥ इरियावही धरम गंगाजल ॥ न्हाण करै आतम
करि निरमल ॥ सैं मुखजापै वीर जिणोसर ॥ सूत्रकरि गूँघै ते श्रु
तधर ॥ ११ ॥ इम पम्किमी मुनिवर अइमत्तो ॥ वीरसीत केव
ल पदपत्तो ॥ त्रिकरण सुध तसु पय प्रणामी जै ॥ मानव जनम
सफल इम कीजै ॥ १२ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम वीरजिणवर ग्यान दिणयर सयललोय सुइंकरो ॥
तियलोय सामि सिद्धिगामी सुद्ध धरम धुरंधरो ॥ उवजाय लक्ष्मी
किर्ति सीसै जैनवाणी मन धरी ॥ गणि लखिवल्लज तवन करि
इम संघुणयो ज्ञावै करी ॥ १३ ॥ इति इरियावही मिछामि डुकरु
संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ पंच समवाय स्तवन ॥

॥ दोहा ॥ सिद्धारथ सुत वंदीए, जगदीपक जिनराजा ॥ वस्तु
तत्त्व सवि जाणीए, जस आगमथी आज ॥ १ ॥ स्याद्वादथी
संपजे, सकल वस्तु विख्यात ॥ सत्त जंग रचना दिना, धंधन

चेते वात ॥ २ ॥ वाद वदे नय जूजूआ, आप आपणे गाम ॥
 पूरण वस्तु विचारतां, कोइ न आवे काम ॥ ३ ॥ अंध पुरुषे एहे
 गज, अही अवयव अकेक ॥ दृष्टिवंत लहे पूर्ण गज, अवयव मिला
 अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकल नये करी, जुगति योग शुद्ध बाध ॥
 धन्य जिनशासन जग जयो, जिहां नही किशो विरोध ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ राग आशाषरी ॥

श्रीजिनशासन जग जयकारी स्याद्वाद शुद्ध रूप रे ॥
 नय एकांत मिथ्यात्व निवारण, अकल अजंग अनूपरे ॥ ६ ॥
 ॥ श्री० ॥ कोइ कहे ए कालतणे वस, सकल जगत गत होय रे ॥
 काले ऊपजै विणसे काले, अवर न कारण कोइ रे ॥ ७ ॥ श्री०॥
 काले गर्ज धरै जग वनिता ॥ काले जनमे पूत रे ॥ काले बोलै
 काले चालै, काले जाले घरसूत रे ॥ ८ ॥ काले दूधधकी वही धायै,
 काले फल परपाक रे ॥ विविध पदार्थ काल उपावै, अंत करे बे
 वाक रे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ जिनचउवीसै बार चक्रवै, वासुदेव बलवंत
 रे ॥ काले कविलत कोइ न दीसै, जसु करता सुर सेव रे ॥ १० ॥
 ॥ श्री० ॥ उत्सर्पिणी अवसर्पणी आरा, ठै ठै जूजूये जाते रे,
 पद शंतु काल विशेष विचारो ॥ जिन २ दिन रात रे ॥ ११ ॥ श्री०॥
 काले बाल विलास मनोहर, यौवन काला केश रे ॥ बुद्धपणे हुप
 बलिश् दुर्बल, सकल नही लवलेस रे ॥ १२ ॥ श्री० ॥

॥ ढाल ॥ २ री ॥ गिरुवा गुण श्रीवीरजी ॥ ए देशी ॥

तव स्वज्ञाववादी वदै जी, काल किसुं करै रंक ॥ वस्तु स्वज्ञावे
 नीपजे जी, विणसै तिमज निस्संक ॥ १३ ॥ सुविवेक विचारो जुओ
 २ वस्तु स्वज्ञाव ॥ ए आंकणी ॥ ठते योग योवनवतीजी, बांजणि
 न जणै वाल ॥ मूठ नही महिला मुखै जी, करतल जणै न वाल
 ॥ १४ ॥ सु० ॥ विण सज्ञाव नवि संपजै जी, किमह पदार्थ कोया

अंघ्र न लागै नीबि नै जी, वाग वसंते जोय ॥ १५ ॥ सु० ॥ मोरपीठ
 कुण चोतरे जी, कुण करै संध्यारंग ॥ अंग विविध सब जीवना जी,
 सुंदर नयण कुरंग ॥ १६ ॥ सु० ॥ काटा वोर वंबूलना जी, कुणें अणि
 याला कीध ॥ रूप रंग गुण जूजूआ जी ॥ तस फल फल प्रसिद्ध ॥
 ॥ १७ ॥ सु० ॥ विसहर मस्तकै नित वसै जी, मणि हरै विस
 ततकाल, परवत धिर चल वायरो जी, ऊरघ अगननी जाल ॥ १८ ॥
 ॥ सु० ॥ मछ तुंव जलमां तिरै जी, धूमै काग पाहाण ॥ पंख जाति
 गयशे फिरे जी ॥ इण परै सहिज विनाण ॥ १९ ॥ सु० ॥ वाय
 सुंढरी उपशमें जी, हरमे करै विरेच ॥ सीजै नही कण कांगमो जी ॥
 सकल स्वजाव अनेक ॥ २० ॥ सु० ॥ देस विशेषै काठनो जी,
 भुंयमां थायै पाखाण ॥ संख अस्थिनो नीपजे जी, क्षेत्र स्वजाव
 प्रमाण ॥ २१ ॥ सु० ॥ रवि तातो सशि सीयलो जी, जव्यादिक
 बहु जाव ॥ ठए इव्य आपायशा जी, न तजै कोइ सुजाव ॥
 ॥ २२ ॥ सु० ॥

॥ दाल ॥ ३ ॥ कपूर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए देसी ॥

काल किसुं करै बापमो रे, वस्तु स्वजाव अकज्ज ॥ जो न
 होय जवतव्यता जी, तो किम सीजै कज्ज रे ॥ २३ ॥ प्रांली म
 करो मन जंजाल, ए तो जावी जाव निहाल रे ॥ प्रा० ॥ ए
 आकणी ॥ जलधि तरै जंगल फिरै जी, कोनि यतन करै कोय ॥
 अणजावी होये नही जी, जावी होय ते होय रे ॥ २४ ॥ प्रा० ॥
 आंध्रै मोर वसंतमां जी, मालै केइ लाख ॥ खरया केइ खांखटी
 जी, केइ आंवा केइ साख रे ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ वाउल जिम जव
 तव्यता जी, जिण जिण दिसे उजाय ॥ परवत मन मानसतणो जी,
 तृण जिम पूठे धाय रे ॥ प्रा० ॥ २६ ॥ नियत वसै पिण चितव्य
 जी, आवी मिलै ततकाल ॥ बरसां सोनुं चितव्यो जी, नियत कर

वितराल रे ॥ प्रा० ॥ २७ ॥ आठमो चक्री सुजूमिते जी, समुद्र
 पन्थो विकराल ॥ ब्रह्मदत्त चक्री तर्णाजी, नयण हरे गोवाल रे ॥
 प्रा० ॥ २८ ॥ कोकूहा कोयल करै जी, किम राखीस रे प्राण ॥
 आदेमी सर साकियो जी, ऊपर जमें सीचाण रे ॥ प्रा० ॥ २९ ॥
 आदेमी नागे म्हयो जी, बाण लग्यो सीचाण ॥ कोकूहो ऊमी
 गयो जी, कोठ नियत परमाण रे ॥ प्रा० ॥ ३० ॥ सख हण्या
 संग्राममा जी, रात पन्था जीवंत ॥ मंदिरमाहि मानवी जो,
 रोण्याही न रहंत रे ॥ प्रा० ॥ ३१ ॥

॥ दोल ४ थी ॥ ग्राहणी मनोहरणी ॥ ए देखी ॥

काल स्वजाव नियत मति रुमी, करम करे ते थाय ॥
 करमें नरप तिरिय नर सुर गति, जीव जवंतरे जाय ॥ ३२ ॥
 चेतन चेतज्यो रे करम न ठूटे कोय ॥ ए आंकणी ॥ करमें
 राम वस्या वनवाले, सीता पामी आल ॥ कर्म लंकापति रावणानुं,
 राज्य थयो वितराल ॥ ३३ ॥ चे० ॥ कर्म कीमी कर्म कुंजर ॥
 फमें नर गुणवंत ॥ कर्म रोग सोग डल पीमित, जनम जायै
 विलसंत ॥ ३४ ॥ चे० ॥ कर्म वरत लगे रिसहेसर, उदक न पामे
 बल ॥ कर्म जिनने जोत निमा रे, खोला रोण्या कल ॥ ३५ ॥
 ॥ चे० ॥ कर्म एक सुखपाले पैते, सैवक सैव पाय ॥ एक हय
 गय चढया चतुरनर, एक आगल ऊजाय ॥ ३६ ॥ चे० ॥ उद्यम
 मांती अंधतणी पर, जग हीमै हाहंतो ॥ कर्म बली ते लदै
 संकल फल, सुखजर सैज सूतो ॥ ३७ ॥ चे० ॥ ऊंदर एके
 कीधो उद्यम ॥ करंमीयो करकोले ॥ माहि पणा विवतनो नूखो,
 नांग रह्यो रुममोलै ॥ चे० ॥ ३८ ॥ विवर करी मूपक तलु
 मुखमा, दीये आपण वेद ॥ मार्ग लही वन नांग पधारपा,
 कर्म मर्म जेवो एह ॥ चे० ॥ ३९ ॥

॥ शाल ५ मी ॥ तो चढियो घन मान गजै ॥ ए देगी ॥

दिव उद्यमवादी जणे ए, ए च्यारे असमज तो ॥ सकल
पदारथ साधवा ए, उद्यम एक समरज तो ॥ ४० ॥ उद्यम
करतां मानवी ए, स्युं नवि सीजै काज तो ॥ रामें रयणायर तणी
ए, लीधो लंका राज तो ॥ ४१ ॥ करम नियत ते अणुसरै ए, जेहमां
सत्त्व न होय तो ॥ देवल वाघमुख पंखिया ए, पिठ पैसंता जोय
तो ॥ ४२ ॥ विन उद्यम कीम नीकले ए, तिल महिची तेल तो ॥
उद्यमथी उंची चढै ए, जोवो एकेंडिय वेल तो ॥ ४३ ॥ उद्यम
करतां इक समें ए, जेह न सीजै काज तो ॥ ते फिर उद्यमथी
हुवे ए, जो नवि आवे वाज तो ॥ ४४ ॥ उद्यमकरि ऊरघां विना
ए, नवि रंथायै अन्न तो ॥ आवी न पनै कोलियो ए, मुखमां कपे
जतन्न तो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यम कीधा कर्म
तो ॥ उद्यमथी दूरे टले ए, जोउ कर्मनो मर्म तो ॥ ४६ ॥ दृढप्र
हार हत्या करी ए, कीधा पाप आरंज तो ॥ उद्यमथी खट मासमां
ए, आप अया अरिहंत तो ॥ ४७ ॥ टीपैश् सरवर जरै ए, कां
करे २ पाल तो ॥ गिर जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम सकत निहाल
तो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जलविंडुठ ए, करे पाहाणमां गम तो ॥
उद्यमथी विद्या जणै ए, उद्यम जोनै दाम तो ॥ ४९ ॥

॥ शाल ६ ॥ ए छिंडी किहां राखी ॥ ए देसी ॥

ए पाचेही वाद करतां, श्रीजिन चरणे आवै ॥ अमिय
रसै जिन वयण सुणीनै, आणंद अंग न मावै रे ॥ ५० ॥ प्राणी
समकित मति मन आणो ॥ नय एकांत म ताणो रे ॥
॥ प्रा० ॥ ते मिथ्या मति जाणो रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ ए
पाचे समवाय भिड्यां विन, कोइ काज न सीजै ॥ अंगुल जोगै

कवल तणी पर, जे वुजै ते रजै रे ॥ प्रा० ॥ ५१ ॥ आग्रह आणी
 कोइ एकनै, एहमां दिखै वनाई ॥ पिण सेना मिल सकल रणंगण,
 जीते सुजट लमाई रे ॥ प्रा० ॥ ५२ ॥ तंतु स्वजावे पट उपजावे,
 काल क्रमें वणाई ॥ जवितव्यता होय ते नीपजे, नही तो विघन
 घणाई रे ॥ प्रा० ॥ ५३ ॥ तंतुवाय उद्यम जोकादिक, जाग्रत सबल
 सहकारी ॥ ए पांचे मिल सकल पदारथ, उतपत जोवो विचारी
 रे ॥ प्रा० ॥ ५४ ॥ निपत वसे हलु कर्म थईनें, निगोदधकी नीक-
 लियो ॥ पुण्ये मनुज जवादिक पांमी, सद्गुरुनें जइ मिलियो रे
 प्रा० ॥ ५५ ॥ जवधितनो परपाक थयो तब, पंक्ति बोर्य उल्लं-
 सियो ॥ जव्य स्वजावै शिवगति गांमी, शिवपुर जइनें वसियो रे
 ॥ प्रा० ॥ ५६ ॥ वर्द्धमान जिन इस पर बीनवै, सासन नायक गा
 वो ॥ संघ सकल सुखदाई जेदयी, स्यादाद रस पावो रे ॥ प्रा० ॥ ५७ ॥

॥ कलस ॥

॥ इम धर्म नायक मुगति दायक, वीर जिनवर संघुण्यो
 ॥ सय सतर संवत वह्नि लोचन, वर्ष हर्ष धरी घणो ॥ श्रीविजय
 देव सुरेंद पटधर, विजयप्रज मुर्णंद ए ॥ कीर्तिविजय वाचक
 सीत इस पर, विनय कहे आणंद ए ॥ ५८ ॥ इति श्री पञ्च स
 मवाय स्तवनं ॥

॥ अथ १४ गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ पंचणपुर भीपास भिणंदो ॥ ५ देशी ॥

॥ सुमति जिणंद सुमति दातार, वंदू मन सुख वारंवार,
 आणी जाव अपार ॥ चवदे गुण धानक सुविचार, कदिस्युं सूत्र
 अरथ मन धार, पांने जिम जव पार ॥ १ ॥ प्रथम मिश्यात कह्यो
 गुणठाणो, बीजो सास्वादन मन आणो, तीजो मिश्र वसाणो ॥ चो
 थो अविरत नाम कहाणो, देशविरति पंचम परमाणो, ठवो प्रमत्त

पिठाणूं ॥ १ ॥ अप्रमत्त सत्तम सलहीजै, अरु अप्रवृत्त
 कहीजै, अनिवृत्ति नाम नवम् ॥ सुखम लोभ दसम सुविचार,
 उपशांत मोह नाम इग्यार, स्त्रीणमोह बारम् ॥ १ ॥ तेरम
 सयोगी गुणघांम, चवदम थयो अजोगी नाम, वरणूं प्रथम
 विचार ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म वखाणै, ए लक्षण मिथ्या गुणगणै,
 तेहना पंच प्रकार ॥ ४ ॥

॥ दाल ॥ २ ॥ सफल संसारनी ॥ १ देशी ॥

॥ जेह एकांतनय पक्ष आपी रहै, प्रथम एकांत मिथ्यामती
 ते कहै ॥ जैन शिव देव गुरु सहु नमै सारखा, तृतीय ते विनय
 मिथ्यामती पारिखा ॥ सूत्र नवि सरदहै रहै विकल्प : षणैं, संत
 थी नाम मिथ्यात चोथो जणै ॥ ६ ॥ समज नही काय निज
 धंद रातो रहै, एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै ॥ एह अनादि अ
 नंत अज्ञान, करिय अनादि धिति अंतसुज्यनै ॥ ७ ॥ जेम
 नर खीर घृत खंरु जिमनै वमै, सरस रस पाय बलि स्वाद केहवो
 गमै ॥ चौथ पंचम ठहै गण चढने परे, किणहि कषाय बस आप
 पदलै अमै ॥ ८ ॥ रहै विच एक समयादि पट आवली, सहीय
 सासादनै धित इसी सांजली ॥ दिव इहां मिश्र गुणगण तीजो
 कहै, जेह ब्रह्म अंतरमहुरत लहै ॥ ९ ॥

॥ दाल ॥ ३ ॥ बे कर जोडी ताम ॥ १ देशी ॥

॥ पहिला ब्यार कषाय, सम कर समकितो, कैतो सादि
 मिथ्यामती ए ॥ ए बेहिज लहे मिश्र, सत्य असत्य जिहां, सर
 दहणां बेऊं ठती ए ॥ १० ॥ मिश्र गुणालय मोहि, मरण लहै
 नही, आठ बंधनपरै नवो ए ॥ कै तो लहै मिथ्यातकै समकि
 त लहै, मति सरखी गति परजवै ॥ ११ ॥ ब्यार अप्रत्याख्यात,
 उदय करी लहै, मति विन किहां समकितपणो ए ॥ ते अवित

गुणगण, तेजरीस सागर, साधिक श्रिति एहनी जणी ए ॥ १० ॥
 वया उपशम संवेग, निरवेद आसता, समकित गुण पांचै धरै ए ॥
 सहु जिन वचन प्रमाण, जिन शासन तणी, अधिक २ उन्नत करै
 ए ॥ ११ ॥ कोईक समकित पाय, पुदगल अरधतां, उल्लुछा जव
 में रहै ए ॥ केइएक जेदी गंठि, अंतरमहुरते, चढते गुण शिवपद
 लहै ए ॥ १४ ॥ च्यार कषाय प्रथम्म, त्रिण वलि मोदनी, मिथ्या
 मिश्र सम्यक्तनी ए ॥ साते प्रकृति जास, परही उपशम, ते उप
 शम समकित धणी ए ॥ १५ ॥ जिण साते क्षय कीध, ते नर
 कपायी, तिणदिज जव शिव अनुसरै ए ॥ आगलि बांध्यो आऊ,
 तातें तिहां थकी, तीजै चोये जव तिरै ए ॥ १५ ॥

॥ छाल ॥ ४ ॥ इण पुर कंबल कोइ न लेसी ॥ ए देसी ॥

पंचम वेसधिरति गुणगण, प्रगटै चोकनी प्रस्यारव्यान ॥ जेण
 तजैवा बीस अन्नक, पांभ्यो आवकपणो प्रत्यक्ष ॥ १७ ॥ गुण
 इकवीस तिके पिण धारै, साचा धारै मत संजारै ॥ पूजादिक पट्ट
 कारज साथै, इग्यारै प्रतिमा आराधै ॥ १८ ॥ आर्त रौड ध्यान द्वै
 मंद, आयो मध्य धरम आणंद ॥ आठ वरस कृणी पुढकोम, पंचम
 गुणगणो धित जोम ॥ १९ ॥ दिव आगे साते गुणयान, इक २
 अंतरमहुरत मान ॥ पंच प्रमाद वसै जिण गाम, तेष प्रमत्त ठगे
 गुणधाम ॥ २० ॥ धिवरकलप जिनकलप आचार, साथै पट्ट आव-
 स्यक सार ॥ उद्यत चौथा च्यार कषाय, तेष प्रमत्त गुणगण
 कदाय ॥ २१ ॥ रुधो राखै चित्त समाधै, धरम ध्यान एकांत
 आराधै ॥ जिहां प्रमाद क्रिया विध नासै, अपरमत्त सत्तम
 गुण जासै ॥ २२ ॥

॥ छाल ॥ ५ ॥ नदी यमुनाके तीर उदै दोय पलिया ॥ ए देसी ॥

पहिते अंसे अघम गुणगणातणें, आरंजे दोय श्रेण संख्येपै

ते गणें ॥ उपशम श्रेणि चढै जे नर हुवै उपशमी, कृपकश्रेणि
 कायक प्रकृति दस कय गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढता परिणाम
 अपूरव गुण लदै, अरुम नाम अपूरव करण तिणें कहै ॥ सुकल
 ध्याननो पहिलो पायो आदरै, निरमल मन परिणाम अरुिग ध्याने
 धरै ॥ २४ ॥ दिव अनिवृत्त करण नवमो गुण जांणियै, जिहां जाव
 धिररूप निवृत्ति न जांणियै ॥ क्रोध मान ने माया संजलणा हणें,
 उदै नही जिहां वेद अवेदपणो तिणें ॥ २५ ॥ जिहां रदै सुखम
 लोचन कांडक शिव अजिलखै, ते सुखम संपराय दसम पंक्ति अखै ॥
 संत मोह इण नाम इग्यारम गुण कहै, मोह प्रकृति जिण गाम
 सहू उपशम लदै ॥ २६ ॥ श्रेणि चढयो जो काल करै किराही
 परे, तो थायै अहमिइ अवर गति नादरै ॥ चार बार समश्रेणि
 करै संतारमै, एक जवे दोय श्रेण अधिक न हुवे किमै ॥ २७ ॥
 चढि इग्यारम सीम समीप पहिले पदै, मोह उदय उत्कृष्ट अरु
 पुदगल रमै ॥ कृपकश्रेणि इग्यारम गुणगणो नही, वशमअकी
 बारम चढै ध्याने रही ॥ २८ ॥

॥ दास ॥ १ ॥ एक दिन कोइ माणस आयो पुर्दर पास ॥ ए देसी ॥

खीशमोह नामे गुणगणो वारम जाण, मोह स्वपायो नेमो
 आयो केवलज्ञान ॥ प्रगटपणे जिहां चरित अमल यथा आख्यात,
 दिव आगे तेरम गुणध्यान तणी कहै वात ॥ २९ ॥ घातीय चोकनी
 कय गई रहीय अघातीय एम, प्रकृति पिब्यासी जेदने जूना कप्पन
 जेम ॥ दरसन ज्ञान वीरज मुख चारित पंच अनंत, केवलज्ञान
 प्रगट घयो विचरै श्रीजगवंत ॥ ३० ॥ देखे लोक अलोकनी गनी
 परगट वात, मदिमावंत अदरै दोषण रहित विख्यात ॥ आठे वारते
 ठणी कही इक पूरवकोहि, उत्कृष्ट तेरम गुणगणें ए धिति जोहि
 ॥ ३१ ॥ हर मेलेसी करण निरुध्या मन वच काय, तेज अयोगी

अंत समय सहु प्रकृति खपाय ॥ पांचे लघु अक्षर ऊचरता जेहनो
मांन, पंचम गति पांमें सिवपद चउदम गुणधान ॥ ३२ ॥ ब्रोजे
घारमें तेरमें माहे न भरै कोय, पहिलो बोजो चौथो परजव साथे
होय ॥ नारक देवनी गति माहे लाजै पहिला च्यार, धुरला पांच
तिरी माहे मणु ए सर्व विचार ॥ ३३ ॥

॥ कलस ॥

इम नगर वाहर मेरु मंरुण, सुमति जिण सुपसावळें ॥
गुणगण अवद विचार वरण्यो, जेद आगमनें जलै ॥ संवत सतरैसै
उत्तोलै, आवण वदि एकादसी ॥ वाचक विजय श्री हरण तानिध,
कहे मुनि इम धर्मसी ॥ ३४ ॥ इति श्री चवदै गुणगणा स्तवनं ॥

॥ अथ नव तत्व भाषा गर्भित स्तवनं ॥

॥ बूढा ॥ नमस्कार अरिहंतनें, सिद्ध सुरि उवझाय ॥ साधु
सकल प्रणमी करी, प्रणमी श्रीगुरु पाय ॥ १ ॥ करस्युं हूं नव
तत्वनी, गाथा जाला रूप ॥ मंद बुद्धि गुरु तानिधै, कहिस्युं
सुगम सरूप ॥ २ ॥

॥ शाल ॥ १ ॥ सूरती महीनानी ॥ एदेसी ॥

जीव अजीवें पुण्य पाप तिम आश्रव सोय, संवर निज्जर
बंध मोक्ष ए नव तत्व होय ॥ चवद २ बायाल वयासी बलि बायाल,
सत्तावन बारै चौ नव क्रम जेवनी माल ॥ १ ॥ इग डु ति चौविह
पणविह उद्धिह जीव कदाय, चेतन प्रस धावर वेदै गई करणे
काय ॥ एगेंदी सुखम बावर ए कोय जिय गण, सन्नि असन्नि
पण्णिदी वि ति चौरिंदी आण ॥ २ ॥ ए सग पळ्ळता अपळ्ळता चवदै
होय, अनुक्रम जीव गण ए सूत्र प्ररुप्पा सोय ॥ नाण वंसण
चारित वीरज तप तिम उपयोग, ए पर लक्षण छकत जीव इय
इह लोग ॥ ३ ॥ इग आहार सरीर इंदिय पळ्ळती तीन, सासोसास

जाया मन पर ए अनुक्रम लीन ॥ चार एगेंदी पंच पञ्जती
 विगलें जोय ॥ पंच असन्नि सन्नि तें पर पञ्जती होय ॥ ४ ॥ इन्द्रिय
 पांच उतास आऊ वल ए दस प्राण, चार ठ सात आठ एगेंदी
 विगलें जाण ॥ असन्नि सन्नि पंचेंदी नें नव दस क्रम आय, प्राणाधी
 जेवि प्रयोग जिय मरण कहाय ॥ ५ ॥ धम्माधम्म आगास तीनुना
 त्रिणश्चेद, काल दसम इग आगास पुगल चार विवेद ॥ खंधा वेस
 पएस परमाणू चवद अजीव, धम्माधम्म पुगल नञ कालें ए पांच
 न जीव ॥ ६ ॥ चलय सहाई धम्मेश्वर संठाण अधम्म, अवंगार्हे पूरण
 गलणें नञ पुगल धम्म ॥ समयावलिय महुत्त दीद पखं मातें नें
 साल पढ्योपम सागर उत्तप्पणी सप्पणी काला ॥ ७ ॥ पर इग दो सग
 सग सग पर इग अंक गिलाय, एग मुहुत्त आवलि संख्या सूत्र
 कहाय ॥ तीन सात वलि सात तीन कतासें माण, केवलनाणी
 जणियो एह महुत्त प्रमाण ॥ ८ ॥ साता उच्च गोय मणु सुर हुण
 पंचिदि जाय, पांच शरीर आदि प्रति शरीर उच्च कहाय ॥ आदि
 संघेण संगण चौवर्ण अगुरु लहु होय, परघ उतास तेम वलि आ
 तप ने उज्जोय ॥ ९ ॥ सुज्जखगइ निम्माणत सादि दशु नीमाल,
 सुर नर तिरि आऊ तिष्ठंकर पुण्य वयाले ॥ तस बावर पञ्जत प
 जेय धिरं सुज तोय ॥ सुजग सुतर आइऊ जतें वस दसको होय
 ॥ १० ॥ ताणंतराय दस कनक बीजा नच असाय, मित्थ आवर
 दशनादग त्रिक पचवीस कसाय ॥ तिरियं च दुग एगेंदी वि ति
 चौरिं दी तेय, कूलगई उपधा अपसत्थ वल चौ जेय ॥ ११ ॥ पढ
 म संघयण विना संघेण तेम संगण, एम बयासी प्रकृति पाप त
 तनी ए जाण ॥ आवर सुदम अपऊ सादारण अधिरै गेय, असुज
 दुजग दू सरणा इऊ अजस दस लेय ॥ १२ ॥ पण चौ पण तिय
 इदि कसाय अवय तिम जोग बायालीस तेय पचीस क्रिया संजो

॥ काँइय अहिगंरणीया पावसिया परित्ताप, प्रोणातिपात आरं
 नकी परिगहियानो ताप ॥ १३ ॥ माया प्रत्यय मिछावंसण वसी
 तेम, अपच्चखाणकी दिठ पुठ पाहुच्चिंथ जेम ॥ सार्भतो पनवणि
 य ने सत्थि सहत्थे जेह, आंझापनकी बेयारण अणजोगा तेह ॥
 १४ ॥ अणव कंख पच्चयेना उवउंगी समुदाय, प्रेम देव इरियाव
 ही किरिया ए कहिवाय ॥ सुमति गुपति परिसइज इ धम्म जाव
 ण चरित्त, पणातिग बावीस दत्त बारै पण संबर तत्त ॥ १५ ॥ इ
 रिया जावा एपणा सुमतीना जेह होय, आदान जंम उच्चार नि
 स्केवण पांचे जोय ॥ मनगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती त्रिण जांण, दि
 व आगे बावीस परिसइ कहूं दित्त आण ॥ १६ ॥ जूख पिपासा
 सीत उत्तेन मांसा निरवत्थ, अरति जोपा चरिया नैविद्या सिक्का
 सत्त ॥ अक्कोसवहंजायण अलाज रोग त्रिण फास, मल सक्कार य
 ज्ञां अन्नाण समत्त समास ॥ १७ ॥ खंति महव अज्जव मुत्ती तव
 संजंम सम्म, सत्थे सौच अकिंचन वंजचेरज इ धम्म ॥ पढम अ
 नित्य अत्तरण संसार एग अनत्त, असुत्ति आश्रव संबर निज्जर ज
 वि जावो नित्त ॥ १८ ॥ लोक सुजाव बोधे डुरलंज इग्यारम गाम,
 धरम साधक अरिदंत ए बारै जावना जाव ॥ सापायक छेदोप
 स्थापन बीजो सोय, परिहार विश्रुइ सुखम संपराय चउत्थो जोय
 ॥ १९ ॥ तिंम अइस्काय चरित्त सरव जिय लोग प्रसिद्ध, जेह सु
 विधि आचरणे के जिय पांन्या सिद्ध ॥ बारै विध मिज्जर तत्त्व बंध
 ना ग्यार प्रकार, प्रकृति विई अनुजाग प्रदेस जेदे निरधार ॥ २० ॥
 अणसण उणोदर वृत्ति संखेप रंतनो त्याग, काय कलेस सल्लीनता
 चाहिर तप पन जाग ॥ पावडित्त विनय वेप्पावच्च तेम सिक्काय,
 ध्यान काउसग अन्यंतर तप पन विच आय ॥ २१ ॥ प्रकृतिसु
 जाव काळ अवधारण धित निरवंच, अनुजागै रस तेम प्रसेदे दत्त

नो संव ॥ पेट प्रतिहार धार तरवार मध्य वलि तेम, निगम चि
 कर कुंजकार जंमारी जेम ॥ २२ ॥ अनुक्रम आव नामना जाय
 जे जे जाय, तिम झानावरणादिक अमना एह सजाव ॥ इम संत
 विवरण कीना आठे तत्त, प्रस्तावै पांम्यो वरण वस्युं द्वि मी
 तत्त ॥ २३ ॥ संत पदै परूपण इव्य नें खेत्र प्रमाण, फरसन का
 पांचमो ठो अंतर जाण ॥ जाग सातमो जाव आव तिम अल
 बहुत्त ॥ ए नव जेवें जावन कस्युं नवमो तत्त ॥ २४ ॥ मोक्ष ए
 पदवी ठै जे पदेअविनाजाव, व्योम कुसुम तिम सत्तिक शृंग जि
 नहीय अजाव ॥ एहवो जे पद मोक्ष तेहनो मगगा द्वार, विवर
 कर विरणवस्युं सुषाज्यो सुहुम विचार ॥ २५ ॥ संमत्तै क्वायक त
 अतन्नी येसन्नि, अणदारी आदारी अणदारी कपन्न इव्य प्रमाणे ति
 जीव ॥ इव्य होय अनंत, लोग असंखम जाग एग सिद्ध होय अणंत
 २६ ॥ फरसन क्षेत्रथी अधिक काल इग सिद्ध प्रतीत, सावि अनंत
 धित जिन आगमथी सुविदीत ॥ प्रतिपातां जावै नहि सिद्धां
 तर जोय, सरब जीवथी जाग अनंतम सद्दू सिद्ध होय ॥ २७
 वंशण नाण जेहने बे ते क्वायक जाव, जीवत जेहने वलि परणा
 क जाव समाव ॥ सहुथी थोना वेद नपुंसकथी जे सिद्ध, तेह
 थीनर अनुक्रम संख गुणा सुप्रसिद्ध ॥ २८ ॥ जे जाणे जीवादि
 नव तत्त तत्त सम्मत्त, अणजाणंताने हुय जे सरघा नेरत्त ॥ सर
 जिनेसर मुखथी जाण्या वयण जहत्थ, ए बुद्धी जेहने मन संम
 निचल तत्थ ॥ २९ ॥ अंतरमहुरत एग मात्र फरस्यो सम्मत्त,
 र्द्ध पुगल परियट्ट नियम संसार निमित्त ॥ उत्पलिय अणंत
 पुगल परियट्ट, अनंत अतीत अनागत तदगुण वयण प्रगट ॥ ३०
 ॥ इम नव तत्त जेद पन्निजेदै विवरण कीध, आवक आग्रह की
 सहाय पूरण रस पीध ॥ कोटिक गुण सुज सदन प्रकास नदी उपमान

श्रीजिनलान्धचंद कुल पुनमचंद समान ॥ ३१ ॥ अग्यानादिक
करिवर सिंदे वयरी साख, रत्नराजमुनि ते वमसाखानी पमिसाख ॥
ग्यानसार ते पमिसाखानी सूखम माल, ए नव पद नव रयणे
विनाणें गूंथी माल ॥ ३२ ॥ संवत्तर निश्चय नय विगई प्रवचन
माय, परम तिद्धि पद वाम गेंतें ए अंक गिलाय ॥ माघ कितन
तसि वार भेरु तिथ परन कीध, च्यार कथा तजि तत्वकथा ज्ञज
नर फल लीध ॥ ३३ ॥ इति नवतत्त्व ज्ञापागर्भित स्तवनं ॥

॥ अय दंडक भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ दुहा ॥ रूपजादिक चोवीस नमि, तेहनो सूत्र विचार ॥
दंरुक रचनायें तहुं, संखेपे निरधार ॥ १ ॥ नरक सात दंरुक
प्रथम, असुरा नाग सुवन्न ॥ विष्णु अगन दीवो दही, दिसि पवणें
अशियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आठ तेज वलि, वाज वणस्तइ काय ॥ वि
ति चौरिंदी गप्पधर, तिरि नर तिहां मिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइत
वेमाणिया, ए दंरुक चोवीस ॥ एहना चार कहूं द्विवै, गणनायें
ते बीस ॥ ४ ॥

॥ टाल ॥ १ ॥ वीर जिणेतरीनी ॥ ए देशी ॥

सरीर जगादण संघयणेंसणा संगण, कोदाई लेसिंदिय दो
समुग्घाय प्रमाण ॥ दिढी दंतण नाण जोग तिम वलि उवयोग,
उपपात वलि चवण ठिई पञ्जति प्रयोग ॥ १ ॥ केदिसिनोआहार
सन्नि गई आगयवेय, दार गादा डुगनो ए अरथ कह्यो संकेव ॥
द्विव तेवीस दारनो रहिस समय अनुसार, अलप रुची हुं तेहथा
कहिसुं अलप विचार ॥ २ ॥

॥ टाल ॥ २ जी ॥ देसी मुरती महीनानी ॥

चौ गप्पय तिरि वाज कायें च्यार सरीर, मनुष्य सें पांव
दंरुक इगवीस रह्या ति सरीर ॥ थावर च्यारनें जयनें ठकोसे देइ

प्रमाण, ज्ञाग असंख्यातम इग अंगुलनो परिमाण ॥ १ ॥ सरवने
 जघन्य स्वज्ञावक अंगुल ज्ञाग संख्यात, उक्रोते पणसै धनु सागर
 विज्ञात ॥ सुरनो सात हाथ गघ्नय तिरि वणस्तय काय, जोयण
 सहस साधक इक सहस अनुक्रम थाय ॥ २ ॥ नर तेइंदि तिगा
 वेइंदी जोयण वार, एग जोयण चवरेइी देह उंचै आकार ॥ आरं
 कालै वैक्रिय देहनो ए परिमाण, ज्ञाग एक इग अंगुलनो संख्या
 तम जाण ॥ ३ ॥ सुर नरनें साधिक इक लाख जोयण इक लाख
 नवसै जोयण तिरयंचने ए सूत्रे साख ॥ साज्ञावकथी दुगणो नार
 वैक्रिय काय, एक महरत नारय नर तिरि च्यार कहाय ॥ ४ ॥
 सुरनें पक्ष एक उक्रोसविजवण काल, विगल संधपणी थावर सु
 नारकनी माल ॥ गघ्नय नर तिरनें पर विगलनें ठेवठ एक, सर
 जीवनें च्यार दसेसणाये लेप ॥ ५ ॥ नर तिरनें पर सुरनें सम
 चौरस संवाण, हुंरुग इग नारग विगलेइी सूत्र प्रमाण, नाणावि
 धयसूईमरनी चंड आकार, वणसइ वाळ तेक जू बुदबुद अप्पा
 फार ॥ ६ ॥ सहनें च्यार कसाय गघ्नय पर नर तिरि दोय, पेमा
 लिय नारग तेव वाळ विगल त्रिक दोय ॥ जोयसि तेक लेसा से
 रहा ने च्यार, वार इंडियनो सुगम तेहनो स्युं विसतार ॥ ७ ॥
 समुद्रात सग नरनें पण गघ्नय तिरि देव, नरग वायुनें च्या
 भेसनें तीनुं जेव ॥ दिदी दोय विगलमें थावरने भिछ्यात, सेसनें
 तीन दिदि जिम प्रवचनमें विज्ञात ॥ ८ ॥ थावर धि ति ने एक प्र
 स्कू दंसण दोय, चौरिंइी ते चस्कू अचस्कू दंसण दोय ॥ मनुजनें
 च्यार सेस दंरुगमें दंसण तीन, नाण अनाण तीन सुर ति
 नारगनें सीन ॥ ९ ॥ थावर दोय अनाण विगल दो नाण अनाण
 गघ्नय मणुनें तीन अनाणनें पांचू नाण ॥ सुर नारग एकादस तिरनें
 मेर जोग, मनुजनें चार च्यार विगलनें जोग प्रयोग ॥ १० ॥

वाक्कायने पाच तीन आवर संयोग, मनुजने वार नरग तिर देवने
 नव उपयोग ॥ विगल डुगै पण पर चौरिंही आवर तीन, नववाय
 इग चवण दार दोनुं समकीन ॥ ११ ॥ एगसमै संख्यात असंख्या
 चवण पपात, गप्पय तिरि विकलेंही नारय सुरनी ख्यात ॥ मणुआ
 अथावर वणस्सइ संख संख अणंत, मणुज असत्री असंख चवंत
 तेम उपजंत ॥ १२ ॥ बावीस सात तीन दस वरस सदस ठक्कि,
 वणस्सई व्यारनें तीन दिवस तेऊने जिठ ॥ नर तिर तीन पढ्य
 नुर. नारग अयर तेतीस, व्यंतर पढ्य अधिक लख वरप पढ्य
 तोइत्त ॥ १३ ॥ असुरादिक दसनें इक सागर अधिको आय, देसें
 ऊणा दोय पढ्यनो नवेय निकाय ॥ विगलनें वार वरस गुणवास
 देवस वम्मास ॥ अंतमुहुत्तजइनें पुढवाई दस रास ॥ १४ ॥
 नुवनपती नारग व्यंतर दस वरस हजार, पढ्य तेना अरुंस वेमा-
 शय जोइत्त धार, सुर नर तिरि नारगनें पट आवरनें व्यार ॥ विग-
 लनें पंच पक्काती ए अठारम दार ॥ १५ ॥ सरय जीवनें होय ठए
 वतनो आहार ॥ होय न होय पंचादिक दिस ए सब मऊार,
 इह कालकी चौविह सुर नारग तिरपंच ॥ विगलनें देउ पण्णा
 त्रिरहित धिर पंच ॥ १६ ॥ गप्पय मणुजनें दोइ कालकी सन्ना
 य, केइक आचारज कदे दिविवायथी दोय ॥ निच्चय पक्काता पं-
 दि तिरि नर जेइ, चौविह देवां माहे आची ऊपजै तेइ ॥ १७ ॥
 खानपक्कत पंचेदी तिरि नर तेम, पक्काता नू दग पचेय वणस्सई
 म ॥ ए सरखेमें निधै, सुरनी आगति दुंति, पक्कत संख गप्पय
 रि नर सग नरके जंत ॥ १८ ॥ नरक उद वरत्त्या नर तिर
 रजै न हुवे सेत, नू अप्प वणस्सइमें नरग विण उपजै असेत्त ॥
 वाई दस पयमें नू आऊ वणजंति, पुढवाई दस पयमें तेउ वाऊ
 जंत ॥ १९ ॥ तेउ वाऊनो गमण पुढवी पद नवमें हुंत, पुढ-

चाई दस पदमें विगल जावंत आवंत ॥ सहुमें तिर गति आगति
मणुआ सहुमें जाय, तेउ वाऊथी मरीने जीव मनुज नवि घाय
॥ २० ॥ धीपुरसै चोविह सुर तिरि नर तीनूं वेद, धावर विगल
नारकनें एक नपुंसक जेद ॥ पङ्कजा मणु वादर अगन वेमाणिक
तेम जवण नरग व्यंतर जोइस चौपण तिरि, एम ॥ २१ ॥ वेइंड़ी तेइंड़ी
पृथ्वी ने अपकाय, वायु वणस्सइ अधिक अनुक्रम करि कहिवाय ॥
हे जिन ए सहु जावमें पांम्या वार अनंत, तेहनो अनुक्रम गिणतां
किमही न आवे अंत ॥ २२ ॥ नर सुर विन सहु दंरुगमें ते गति
संयोग, लाधो नही तुह दंसण कीनो कम्म प्रयोग ॥ सुरमें पिण
दंसण लहि विरत न पांमी मूल, ते सुर जात सहावे देसविरत
प्रतिकूल ॥ २३ ॥ आरजदेस आरजकुल शुद्ध सुगुरु उपदेस, तेइथी
तुह दरसनो किंचित पांम्यो लेस ॥ धारक तारक कारक वारक
दंशण देव, आतम गुण संसार समत्त कम्म सयमेव ॥ २४ ॥
खरतर गड जट्टारक श्रीजिनलान्न सुरिंद, रत्नराजमुनि सीस तेहना
पद अरविंद ॥ रज मकरंदे लीनो ग्यानसार तमु सीस, तेण तव्या
तेवीस दार दंरुग चौवीस ॥ २५ ॥ संवत ससि रस वारण तेम
चंद निरधार, पोस मास पख उळ्ळ सातमनें सोमवार ॥ आवक
आग्रहथी ए कीनो अलप विचार, अळम चौमासो कर जेपुर नगर
मजार ॥ २६ ॥ इति श्री चोवीस दंरुग स्तवनं ॥

॥ अय जीवविचार भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ डहा ॥ जुवन प्रदीपक वीर नमि, किंचित् जीव सरूप ॥
कहस्युं पूर्वाचार्य जिम, बासबोष गुरुरूप ॥ १ ॥

॥ हाठ १ छी ॥ देसी मुरली महीनानी ॥ ए देसी ॥

एक मुगति धीजा संसारी जीव डुजेद, सना जिनै सिद्ध अनं-
ते रूप अजेदा ॥ संसारी धावर इग तिम अस दोष प्रकार, तु अप बाध

तेन वण स्सई आवर धारा ॥ १ ॥ फिटक रयण मणि विद्धम हिंगुल बलि
 हरियाल, मनसिल पारो सुवरण आदि धातुनी माल ॥ सेदी वन्नी
 अरणेदो पालेवो पाषाण ॥ जोरुल तूरी उत्त जूमि पाहण जे खाण
 ॥ २ ॥ सुरमो लूण जात ए पुढवी काय विवेद ॥ जूमि आकास
 उत्त हिम करग आऊना जेद, हरित घास ऊपर जे जलकण धूं
 अर तेम ॥ होय घणो दधि अण्णकाय पिण पाहण जेम ॥ ३ ॥
 अंगारा ऊला जोजर तिम उलकापात, असणि कणग विद्युतादिक
 अगनि जीव विहात ॥ उष्णामग्नकलिका मंरुल बलि मुख वात,
 सुद्ध गूज तिम घण तणु धाऊ जेदें हात ॥ ४ ॥ साधारण पत्तेय
 वणस्सई जीव डु जेय, एग सरीर अनंत जीव साधारणनेय ॥ कं
 वा अंकुर कूपल फूलण बलि जंबाळ, जूफोमा अदत्तिय सरबे जे फ
 ल वाल ॥ ५ ॥ गाजर मोय वायलो थेग पालंको साग, गुपत
 सिरा सांथा गांठा जांजे सम जाग ॥ काटी माल जूमिमें रोप्यां पद्ध
 व थाय, जाल पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सरी रें
 एक जीव जे ते प्रत्येक, फूल माल फल मूल काठ बीजै जिय एक ॥
 वण पत्तेय विना जे पांचे पुढवीकाय, सयल लोगमें व्यापक अंतमु
 हुनै आय ॥ ७ ॥ सूखमयी ते नियमा दिही निजर न होय, लोकां
 लोक प्रकास थकी बलि अलप न कोय ॥ कवनी संख गंमोला लहिगां
 लटनी जात, चंदन काअलसीमेहरजोका विहात ॥ ८ ॥ माय वा
 हाक्रम पौरादिक वेईदी होय, गोमी माकण जूआ कीमा कीमी दोय
 ॥ दीपक ईली धीवेली गोगीमा जात, चरम जू कागादहिया गोवर
 कम उत्तपात ॥ ९ ॥ घनकीमा जिम चोरकीमा गोवालो तेह, ईली
 कंधुक ईङ्गोप तेईदी एह ॥ बीवू टंकण जमरा जमरी ईदी च्यार,
 तीना माखी मांस मडर कंसारी धार ॥ १० ॥ कवमोला मांक
 निय पतंग इत्यादिक जेद, नारक तिरि मणु देव पंचेई च्यार त्रिजेदा ॥

वार्हे दस पदमें विगल जावंत आवंत ॥ सहुमें तिर गति आगति
 मणुआ सहुमें जाय, तेन वाक्यी मरीने जीव मनुज नवि थाय
 ॥ २० ॥ थीपुरसै चोविह सुर तिरि नर तीनूं वेद, थावर विगल
 नारकनें एक नपुंसक जेद ॥ पङ्कजा मणु बादर अगन वेमाणिक
 तेम जवण नरग व्यंतर जोइस चौपण तिरि, एम॥ २१ ॥ वेइंड़ी तेइंड़ी
 पृथ्वी ने अपकाय, वायु वणस्तइ अधिक अनुक्रम करि कहिवाय ॥
 हे जिन ए सहु जावमें पांम्या वार अनंत, तेइनो अनुक्रम गिसतां
 किमही न आवै अंत ॥ २२ ॥ नर सुर विन सहु दंरुगमें ते गति
 संयोग, लाधो नही तुइ दंसण कीनो कम्म प्रयोग ॥ सुरमें पिण
 दंसण लहि विरत न पांमी मूल, ते सुर जात सहावे देसविरत
 प्रतिकूल ॥ २३ ॥ आरजदेस आरजकुल शुद्ध सुगुरु उपदेस, तेइयो
 तुइ दरसनो किंचित पांम्यो लेस ॥ धारक तारक कारक वारक
 दंशण देव, आतम गुण संसार समत कम्म सयमेव ॥ २४ ॥
 खरतर गछ जहारक श्रीजिनलान्न सुरिंद, रत्नराजमुनि सीस तेइना
 पद अरविंद ॥ २५ ॥ रज मकरंदे लीनो ग्यानसार तमु सीस, तेण तया
 तेवीस दार दंरुग चोवीस ॥ २५ ॥ संवत ससि रस वारण तेम
 चंद निरधार, पोस मास पख उज्जल सातमनें सोमवार ॥ आवक
 आग्रहयी ए कीनो अलप विचार, अळम चौमासो कर जैपुर नग
 मजार ॥ २६ ॥ इति श्री चोवीस दंरुग स्तवनं ॥

॥ अय जीवविधार भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ बुद्धा ॥ जुवन प्रदीपक वीर नमि, किंचित् जीव सरूप ॥
 कदस्युं पूर्वाचार्य जिम, बालबोध गुरुरूप ॥ १ ॥

॥ बाळ १ छी ॥ देखी मुली मरीनानी ॥ २ देखी ॥

एक मुगति धीजा संसारी जीव बुद्धेद, सत्ता जिनै सिद्ध अन-
 ते रूप अजेद ॥ संसारी थावर इग तिम अस दोष प्रकार, तु अप वाव

तेउ वण स्तई थावर धार॥१॥ फिटकरयण मणि विष्म हिंगुल बलि
 हरियाल, मनसिल पारो सुवरण आदि धातुनी माल ॥ सेटी वन्नी
 अरपेटो पालेवो पाषाण ॥ जोरुल तूरी नस जूमि पाहण जे खाण
 ॥ २ ॥ सुरमो लूण जात ए पुढवी काय बिठेद ॥ जूमि आकास
 नस हिम करग आकना जेद, हरित घास ऊपर जे जलकण धूं
 अर तेम ॥ होय घणो दधि अण्णकाय पिण पाहण जेम ॥ ३ ॥
 अंगारा जाला जोजर तिम उलकापात, असणि कणग विद्युतादिक
 अगनि जीव विक्रात ॥ उग्रामगजकलिका मंजल बलि मुख वात,
 सुद गंज तिम घण तणु धाऊ जेदें हात ॥ ४ ॥ साधारण पत्तेय
 वणस्तई जीव डु जेय, एग सरिीर अनंत जीव साधारणनेय ॥ कं
 दा अंकुर कूपल फूलण बलि जंवाल, जूफोना अदत्तिय सरबे जे फ
 ल वाल ॥ ५ ॥ गाजर मोथ वायलो थेग पालंको लाग, गुपत
 तिरा सांथा गांठा ज्ञांजे सम ज्ञाण ॥ काटी माल जूमिमें रोप्पां पल्ल
 व थाय, जाल पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सरिी रें
 एक जीव जे ते प्रत्येक, फूल ठाल फल मूल काठ बीजै जिय एक॥
 वण पत्तेय विना जे पांचे पुढवीकाय, सयल लोगमें व्यापक अंतमु
 हुनै आय ॥ ७ ॥ सूखमथी ते नियमा दिछी निजर न होय, लोकां
 लोक प्रकास थकी बलि अलप न कोय॥ कवनी संख मंजोला लहिगां
 लटनी जात, चंदन काअलसीमेहरजोका विक्रात ॥ ८ ॥ माय बा
 हाक्रम पौरादिक वेहंडी होय, गोमी माकण जूआ कीना कीनी दोष
 ॥ दीपक ईली धीवेलो गोगीना जात, चरम जू कागादहिया गोवर
 कम उतपात ॥ ९ ॥ घनकीना जिम चोरकीना गोवालो तेह, ईली
 कंधुक इङ्गोप तेइंही एह ॥ बीटू टंकण जमरा जमरी इंडी घ्यार,
 तीना मांखी मांस मझर कंसारी धार ॥ १० ॥ कवमयाला मांक
 मिय पतंग इत्यादिक जेद, नारक तिरि मणु देव पंचेडी चार बिठेदा॥

धम्ममा वंसा सैला अंजन रिषा क्रात, मघा माधवई नारंग ए नापे
 सात ॥१२॥ जलचारी थलचार। नजचारी तिरयंच, मछ कछ सुत-
 भार मगर गाहा जल अंच ॥ चौपय छरपरि जुजपरि साप जुचारी
 तेय, तिविहा गाय साप तिम नकुल अनुक्रम लेय ॥१२॥ खेचर चरम
 रोम पंखी चमचेर कपोत, मनुजलोकयो बाहिर समुग विगय पंखे
 होत ॥ सरवे जल थल खेचर समुष्ठम गप्पय दोय, कम्म अकम्म जूमि
 अंतर दीवा मणु जोय ॥१३॥ असुरादिक दस होय वाण व्यंतरियां अं,
 जोइत पंच वेमाणिय डुविहासु चें दिह ॥ पनरे जेदे सिद्ध कह्यो ए
 जीव प्रकार, तनु मानादिक द्वि एहनो कहिसुं अधिकार ॥१४॥ देह
 आनखो एक सरीरे थितनो मान, प्राण जेहने जेता तिम बलि योन
 प्रमाण ॥ अंगुल जाग असंख सद्ध एगिंदी काय, जोयण सद्धत साधिके
 पत्तेय वणस्तई काय ॥१५॥ वि ति चउरेई अनुक्रम उक्किवेह कंचास,
 धारै जोयण तीन गाठ इग जोयण जास ॥ सत्तमना नेरइयां धणु
 सय पंच प्रमाण, तेइयी अरय २ कृशा अनुक्रम रयणाण ॥१६॥ जो
 यण सद्धत गप्पधर मछ उरगनो देह, गाठ धणुअ पुद्धत जूगारो प
 खी जेह खेचर नव धणु उरग जुयंग जोयण नव होय, नव गाठ
 परिमाण समुष्ठम चौपय सोय ॥ १७ ॥ खर गाठ उंचास घउपं
 य गप्पय माण, तीन कोस उकोस मनुजनो काय प्रमाण ॥ जुव
 व्यंतर जोइत वेमाणिय ईसाणंत, सात हाथ उकोसै कंचपणे तणु
 हुंत ॥ १८ ॥ सनतकुमार मादेरे पर ब्रह्म लांत ६ पांच, शुक त
 हस्वारे उकोस चार कर पांच ॥ आणत प्राणत आरत अच्युत हाथ
 तीन, नवधैवेयक दोय पंचाणुतर इग लीन ॥१९॥ बावीस साततीन
 दत्त वरस तद्धस्से आय जू आऊ वाऊ वराती दिन तेऊकाय ॥ बां
 धरन गुणचात दिवस तिम बलि उम्मास, अनुक्रम येइंवी तेइंवी
 घौगिंदी रास ॥ २० ॥ सर नारंग जेतोम अयर उकोसै आय, घौग

तिरिय मनुजनौ तीन पढ्योपम थाय ॥ जलचर उपर जुजपर
उक्कोसे पुष्कोमि, पंखीने इग जाग असंख्य पढ्यनो जोर ॥ २१ ॥
सरव सूखम साधारण समूहम मणुं जेद, जदन्न उक्कोसे अंतमुहुत्त
नियम थिति तेह, इम उगादण आरूपो संखेपे अधिकार, जे वलि
इत्थ वितेस वितेस सूत्रसुं धार ॥ २२ ॥ असंख्य उत्पणो सह
एगिंडी आपणो काय, उपजै ववै अनंत साधारण वलस्तई काय ॥
संख्याता संवहर विगल आपणो देह, सात आठ जव पंचेइ तिरि
मणुआ जेद ॥ २३ ॥ नारंकथी उदवरती जीव नरक नवि जाय,
देव चवीने ते वलि देवपणे नवि थाय ॥ इंडिय सासोसास आठ
घल ए दस प्राण, च्यार ठ सात आठ इग छु ति चौरिंडीय जाण
॥ २४ ॥ सन्नि असन्नि पंचेइ दस नव अनुक्रम जोय, प्राणथक
जेवे प्रयोग जिय मरणे होय ॥ ज्ञोम सायर संसार अपार अनंती
चार, जमियो जीव धरम विन जोण असीने च्यार ॥ २५ ॥ सग सग
सग सग दस चवदे दो दो दो लाख, च्यार च्यार तिम च्यार चवद
लख सूत्रे साख ॥ जू अप तेउ वाऊ वणवत्तेय साधार, बि ति चौ
पय तिरि नारग सुर नर अनुक्रम धार ॥ २६ ॥ काय न आध न
पाण न जोणी कुल नही जात, सादि अनंत जंग जिन आगम थित
विकात ॥ रोग न सोग न जोग जोग नही नारी लिंग, नहीय नपु-
सक पुरस्तणा नही अंग उपंग ॥ २७ ॥ नाण दरस चारित वीरज
ए च्यार अनंत, सिद्ध थया तेदथी सिद्धतै सिद्ध कहंत ॥ इम ए
जीवविचार गाथाथो ज्ञापारूप श्रावक, आग्रहथी में कीनो सुगम
सुगम सरूप ॥ २८ ॥ खरतर गच्छ जहारक श्री जिनलान्न सूरीस,
रत्नराज गणि ग्यानसार मुनि सीस जगीस ॥ संवत सति रत्त
वारण सतिहर धर निरधार, माघ चोथ दिन कीनो जैपुर नगर
मजार ॥ २९ ॥ इति श्री जीवविचार स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ समवसरण विचारगणित भाषा स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्री जिनसासन सेहरो, जगगुरु पास जिनंद
प्रणमी जेदना पाय कमल, आवी चोसठ इंद ॥ १ ॥ तीर्थकर आ
तिदां, त्रिगनो करे तइयार ॥ समकित करणी साचवे, एह क
अधिकार ॥ २ ॥ करे प्रशंसा समकिती, भिग्यात्वी दोवे मूह
सूर्य देय दरखे सहू, जिम अंधारे घूक ॥ ३ ॥

॥ दाल ॥ १ ॥ वीर बलाणी राणी बेलणा ॥ ९ देसी ॥

आप अरिहंत जलै आबिया जी, गावे अपठरह गंयर्व ।
समवसरण रचै सुरवराजी, संखेपे ते कहूं सर्व ॥ ४ ॥ आ० ।
जुवनपति वीस इंदै मिट्या जी, सोलह व्यंतर सार ॥ जोइस ३
दस वेमाणिय जुमचा जी, चोसठ इंद सुविचार ॥ ५ ॥ आ० ॥
पवन सुर पूज परमारजै जी, जूमि योजन सम जात ॥ मेघकुमर
रचै मेघने जी, करिय सुगंध छिन्काव ॥ ६ ॥ आ० ॥ अगर कपूर
सुज धूपणा जी, करय श्री अगनकुमार ॥ वाणव्यंतर दिव वेगसूं
जी, रचय मणि प्रीठका सार ॥ ७ ॥ आ० ॥ पुहप पंच वरण
वरध मुखै जी, वरपए जाणु प्रमाण ॥ जवणवइ देव त्रिगनो जलो
जी, करय ते सुणत सुजाण ॥ आ० ॥ ८ ॥ रचय गढ प्रथम रूपा
तणो जी, सोवन कांगरै सार ॥ रवि सति रयण कोसीसको जी,
कनकनो वीच प्राकार ॥ आ० ॥ ९ ॥ रतनगढ रतनने कांगरै जी,
रचय वेमाणि सुरराज ॥ जलो त्रीजो गढ जीतरे जी, जिहां विराजै
जिनराज ॥ आ० ॥ १० ॥ जीत उंची धणु पांचसै जी, सवा
तेतीस विसतार ॥ ॥ धनुष से तेर गढ आंतरो जी, प्रौल पचास
धणु च्यार ॥ आ० ॥ ११ ॥ दस पंच २ त्रिहुं गढ तणो जी, पावनी
वीस हजार ॥ थाक अम नदिय चढतां थकां जी, एक कर उब
विस्तार ॥ आ० ॥ १२ ॥ पंच धणु सहस पृथ्वीथकी जी, उब

रहे त्रिगढ़ आकास ॥ तेह तल सहू यथास्थित वसै जी, नगर
 आराम आवास ॥ आ० ॥ १३ ॥ तोरण चिहुं २ दिस तिहां जी,
 नीजमणि मोर निरमाण ॥ उत्तय धनु मध्य मणि पीठका जी,
 उच्च जिण देह परिमाण ॥ आ० ॥ १४ ॥ च्यार आसण तिहां
 चिहुं दिसै जी, मोतीयें ऊकज्जमाल ॥ सम विव कूण ईसाणमें
 जी, देवउंदो सुविताल ॥ आ० ॥ १५ ॥ देवउंडजि नाद उपदिसै
 जो, जिन गुण गावसी तेह ॥ अह्न जिम आइ सिर ऊपरे जी,
 गाजसी तेह गुण गेह ॥ १६ ॥ आ० ॥

॥ ढाल २ ॥ सफल संसारनी ॥

पुष दिसि आसणे आय वेसे पद्म, सुर कृत चौमुख रूप देखै सहू
 ॥ दीपै असोक तल बारगुण देहथी, देखि हरखै सहू मोर जिम
 मेहथी ॥ १७ ॥ मोतियां जालि त्रिण उत्र सुविताल ए, रूप चि
 हुं २ दिसै चामर ढाल ए ॥ योजनगामनी बाण श्री जिनतणी,
 जगवंत उपदिसै बार परपद जणी ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणारूपथी अग
 निकूलें करो, गणधर साधवो तिम वैमाणिय सुरी ॥ ज्योतपो जु
 वणनी वितरी स्त्रीपणें, नैरुतकूण जिनबाण ऊज्जो सुणे ॥ त्रिहंत
 णा पति वायवकूंशमें जाण ए, सुर वैमाणिय नर नारि ईसाण ए
 ॥ बारह परखदा मद मछर ठोरु ए, नूख त्रिस वितरै सुणै कर जोरु
 ए ॥ १९ ॥ पूढ जामंरुल तेज प्रकास ए जोषण सहस्र ध्वज उं
 च आकास ए, ऊलहलै तेज ध्रुव चक्र गगने सही, महक सहू
 बारणे धूपधाणा सही ॥ २० ॥ बाहण बहिल सहू धरिय पहिले
 गैढे, दोय पगचार नर नार उंचा चढै ॥ जिनतणी वाणि सुणि
 जीव तिरयंच ए, बैर तजि वीय गढ रहे सुख संच ए ॥ २१ ॥
 पुन्यवंत पुरुष ते परपद बारमें, सुणें जिनवाणि धन गणिय अंब
 तारमें ॥ चौविह देव जिनदेव सेवा रचै, मणिमयी मांडिलो प्रौल

माहे वसै ॥ २२ ॥ चिहुं दिसि वाटली वावि चौ जाणिये, विदिसि
 चौ कूण दोय २ वखाणिये ॥ आठ जिहां वावि जल अमृत जेम ए,
 स्नान पाने वपु निरमल हेम ए ॥ २३ ॥ जय विजय जयंत अप
 राजिया, मध्य कंचण गढै प्रोल वसंतिया ॥ तुंवुरु पुरुष खटंग अ
 र्चि माल ए, रजतगढ प्रौलना एह रखवाल ए ॥ २४ ॥ पहिलो
 त्रिगंमो नहुयपुर जिण ग्राम ए, देव महर्दिक रचै तिण ग्राम ए ॥
 करण बारवार नही कारण कोय ए, आठ प्रातीहारज ते सही
 दोय ए ॥ २५ ॥ जिण समवसरणानी रुद्रि दीठी जियै, तेह ध
 धन धन्न अवतार पायो तियै ॥ पास अरदास सुणी वंजित पूरज्यो,
 दिव मुऊ ताहरो शुद्ध दरसन हुज्यो ॥ २६ ॥

॥ कलश ॥

इम समवसरणै रुद्रि वरणै सहू जिनवर सारखी ॥ सर-
 वंदे ते लदे शुद्ध समकित परम जिनधर्म पारखी ॥ प्रकरणा सिंक्षांत
 गुरु परंपर सुणी सहू अधिकार ए, संस्तव्यो पासजिनंद पाठक धर्म
 वर्द्धन धार ए, ॥ २७ ॥ इति समवसरण विचार स्तवन ॥

॥ अथ श्री रुपभेदेवजी सुण २ सैश्रुंज स्तवन लि० ॥

॥ डाल ॥ पाटोघरजी पाठियै प्यारो ॥ ९ देशी ॥

॥ सुण २ सैश्रुंजगिर स्वामी, जग जीवण अंतरजांमी,
 तो अरज करुं सिरनांमी ॥ रुपानिध विनती अवधारो, नवसाय
 पार उतारो, निज सेवक वांन वधारो ॥ क० ॥ १ ॥ प्रजू मूरा
 मोहनगारी, निरख्यां हरखै नर नारी, जाजं चारी हुं बार हजार
 क० ॥ २ ॥ दिव किसिय विमासण कीजै, मुऊ ऊपर महिर धरीजै
 रंजन दरसन दीजै ॥ क० ॥ ३ ॥ आजं सयल मनोरथ फलिया
 रना पातिक टलिया, प्रजू जो मुऊसै मुख मिलिया ॥ क० ॥
 ४ ॥ समरथा संकट टलि जावै, नव नव नित मंगल आवै, मुऊ

प्रांतं पुन्य जरावै ॥ रु० ॥ ५ ॥ करजोमी वीनंती कीजै, केसर
 वदन चरचीजै, दिन धन २ तेह गिणोजै ॥ रु० ॥ ६ ॥ प्रजु दरस
 रस लहि तोरो, अति हरपित हुवो चित मोरो, जिम दीक्षा चंद
 कोरो ॥ रु० ॥ ७ ॥ परतिख प्रजु पंचम आरै, वीस माहा जय
 कट वारै, सहु सेवक काज सुधारै ॥ रु० ॥ ८ ॥ सेवो स्वांमि
 दा सुखदाई, कमणा न रहै घर काई, वाधै संपत शोज सवाई ॥
 रु० ॥ ९ ॥ नाजिराय कुलंवर चंदा, जव जन मन नयण आनंदा,
 जगै सुर असुर सुरिंदा ॥ रु० ॥ १० ॥ जयकारी रिपज जिनंदा,
 ह सम घर परम आणंदा, वंदे श्रीजिन जक्ति सूरिंदा ॥ रु० ॥ ११ ॥
 ते शत्रुंजय स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ दसमीका बडा स्तवन पार्श्वनाथजीका लि० ॥

॥ बाल १ ॥

पास जिनेसर जग तिलो ए, गवनीपुर मंरुण गुण निलो
 तवन करिस प्रजु ताहरो ए, मन वंछित पूरो माहरो ए ॥ १ ॥
 यरी नाम वणारसी ए, सुरनयरी जिण रुद्धे हसी ए ॥ तेण पूरी
 दीपतो ए, अश्वसेन राजा रिपु जीपतो ए ॥ २ ॥ वामा तसु
 नार ए तसु गुणहि न लपै पार ए ॥ तास उयर अवतार ए,
 अतिशय रूप उदार ए ॥ ३ ॥ चवद सुपन तिण निसि लह्या ए,
 कुम करि ते सहु मन ग्रह्या ए ॥ पूवै जूपतिने कहा ए,
 जोनि कहा ते जिम लह्या ए ॥ ४ ॥

॥ बाल २ ॥

प्रथम सुपन गज निरख्यो, मायतणो मन हरख्यो ॥ बीजै
 न ऊंदार, घरणी जिण घरघो जार ॥ ५ ॥ तीजै सिंद प्रधान,
 बल कोय न मान ॥ चउथै देखी श्रीदेवी, कमल बसै सुरसेवी
 ॥ पांचमै पुष्पनी माला, पंच वरण सुविशाला ॥ छै दीगो

ए चंद, ग्रहगण केरो ए इंद ॥ ७ ॥ सातमें सूरज सार, दूर कियो
 अंधकार ॥ आठमें धज लहकंती, वरण विचित्र सोइंती ॥ ८ ॥
 नवमें पूरण कूंज, जरियो निरमल अंज ॥ देखि सरोवर दसमें,
 मनह थयो अति विसमें ॥ ९ ॥ समुद्र इग्यारमें ठामें, खीरजलधि
 इण नामें ॥ बारम देव विमान, वाजित्र धुन गीत गान ॥ १० ॥
 तेरम रतननी रासि, दह दिसि ज्योति प्रकासी ॥ सुपन चवदमें
 ए दोषो, पातक धूमथी नीगो ॥ ११ ॥ सुपन कहा सुविचार, हरखयो
 झूप ऊदार ॥ पुत्ररतन होस्यै ताहरै, आस्यै उदय हमारै ॥ १२ ॥

॥ दहा ॥

चवद सुपन श्रवणे सुणी, हरख कियो सुविचार ॥ सुंदर तुत
 तुमें जनमस्यो, कुलदीपक आधार ॥ १३ ॥ वामा प्रीतम वचन सुण,
 आवी मंदिर ऊत्ति ॥ देव सुगुरु कीरति करै, जनम कियो सुकपत्य
 ॥ १४ ॥ इण अनुक्रम ऊगो दिवस, कीधा सुपन विचार ॥ ते घर
 पहुता आपणै, दोधां दान अपार ॥ १५ ॥

॥ दाल ३ ॥

हिव जनम्या जगगुरुजगत्र थयो जयकार, खिण इक नारकिये
 पायो सुख अपार ॥ दिसिकुमरी मिलकर सूत्रकरम निति कीध,
 कर थांनक पोइती वंछित तेहनो तिद ॥ १६ ॥ तिणहीज निसि चोस
 इंड मिली तिदां आवै, लेइ निज जकै सुरगिरि स्नात्र करावै ॥ क
 री जनम महोछव जननी पासै गावै, तिदांथी सुर सब मिल द्वी
 प नंदीखर जावै ॥ १७ ॥ इम रयण विहाणी ऊगो दिवस ऊदार,
 १००१ गाईजै कीजै मंगलाचार ॥ इग्यारमें दिवसे मिली सहू परिवार,
 दियो श्री उत्तम पासकुमार ॥ १८ ॥ प्रभु बाधै दिन २ कला
 ॥ चंद, त्रिहुं ज्ञान विराजितरूप जिसो देविंद ॥ गुणकला
 विद्यातणो निधान, जीवनवय आयो परणायो राजान ॥ १९ ॥

कुमारपदै प्रज्जु रद्धतां काल सुखै गमै ए, आयो मन वैराग
 संजम लेवा समै ए ॥ तथ लोकांतिक देव जणावै अवसरु ए, देइ
 संवच्छरी दान याचक जन सुखकरु ए ॥ १० ॥ स्वामी संजम लेय
 इंद्रादिक सब मिट्ठ्या ए, देस विदेस विहार करी कर्म निरदळ्या
 ए, पांमीय केवलज्ञान सूरै महिमा करी ए, थापीय चौविह संघ
 मुगति रमणी वरी ए ॥ ११ ॥

इम श्री गोमीपासतणा गुण जे नर गावै, ते नर नारी इह
 परलोग सुवंचित पावै ॥ संघ करी संघपति जिके गवनीपुर जावै,
 चोर धाम संकट टले विघन बुराइ न आवै ॥ १२ ॥ धरणराय
 पञ्चमावइ जास वदे सिर आण, सांमल बरण सुसोजित नव कर
 काय प्रमाण ॥ कट्टपट्ट क चिंतामणि कांमगवी सम सोलै, श्री गुण-
 शेखर सीस समधरंग इण पर बोलै ॥ १३ ॥ इति श्री गोमी पार्श्व-
 जिन स्तवनं ॥

॥ अथ अजित शांति जिन स्तवनं लि० ॥

मंगल कमला कंद ए, सुख सागर धूनम चंद ए ॥ जगगुरु
 अजिथ जिणंद ए, शांतीसर नयणानंद ए ॥ १ ॥ विहुं जिनवर
 प्रणमेव ए, विहुं गुण गाइस संखेव ए ॥ पुण्यजंकार जरेसु ए,
 मानव जय सफल करेसु ए ॥ २ ॥ कोरुहि लाख पचास ए, सागर
 जिनसातण जास ए, रिसद जिनेसर वंस ए, उवझाय सरोवर
 हंस ए ॥ ३ ॥ इण अवसर तिदां राजियो ए, राजा जितशत्रु तिदां
 गाजियो ए ॥ विजया तसु घरनार ए, विहुं रमयति पासा सार ए
 ॥ ४ ॥ कूखहि जिन अवतार ए, तिण राय मनाब्यो द्वार ए ॥ उपर
 चस्यो दस मात्र ए, प्रज्जु पूरी जननी आस ए ॥ ५ ॥ विहुं जण

मन आंशंदियो ए, सुत नांम अजिय जिण तो दियो ए ॥ तितुअण
 सयल उद्याह ए, कमर बाधे जगनाह ए ॥ ६ ॥ हंस धवल सारित
 तणी ए, गति सुललित निज गति निरजणी ए ॥ मलपति धालें
 गेल ए, जाणे नयण अमोरस रेल ए ॥ ७ ॥ अवर नं समो सं
 सार ए, वलि न्यान विवेक विचार ए ॥ गुण देखो गज गद्गह्यो ए,
 लंठन मिसि पग लागी रह्यो ए ॥ ८ ॥ जोवन वय जब आधियो
 ए, तव वर रमणी परणावियो ए ॥ पीय साधै सब काज ए, प्रभु
 पाले पुद्गवी राज ए ॥ ९ ॥ दिव हयणापुर ठाम ए, विश्व
 सेन नरेश्वर नांम ए राणी अचिरा देव ए, मनहर सुख माणे देव
 ए ॥ १० ॥ चवदह सुपने परवस्यो ए, अचिरा उपरें सुत अवत
 र्यो ए ॥ मानव देव यत्नाणियो ए, चक्रीसर जिणवर जांणियो
 ए ॥ ११ ॥ देस नयर हुय संत ए, तिस नांम दियो आंशांत ए
 ॥ जिन गुण कुण जांशे कही ए, त्रिहुं जुवणे तसु उषम नदी ए
 ॥ १२ ॥ नयण सलूलो हिरणूलो ए, यन तिंदे धोदै एकलो ए ॥
 नयण समाधि निरोध ए, इण नयणे नारि विरोध ए ॥ १३ ॥ गी
 तहि राग सु रंग ए, पिण पन्नलै लोक कुरंग ए ॥ तो उज्जयो स
 ति संक ए ॥ तिण पांम्यो नाम कलंक ए ॥ १४ ॥ इण पर
 अति खलनड्यो ए, जव जंजण सांमि सांनड्यो ए ॥ आणवि
 मन आपणो ए, पाय सेवे मिस लंठन तणो ए ॥ १५ ॥ लीला प
 परले घणी ए, नव नविय कुमार रापां तणी ए ॥ बल बल अ
 यण जोगवे ए, पीय राज जलो पर जोगवे ए ॥ १६ ॥ कुमार
 लें मंमल समें ए, पंचास सदस वरसां गमे ए ॥ तो तेजे दिण
 जितो ए, ऊपर्यो चकरयण तिसो ए ॥ १७ ॥ साधी जगद
 वरतावी आण अखंड ए ॥ चवद श्यश नव तिदि, स
 सोल सदस नसै अदो ए ॥ १८ ॥ सदस पदुन ३

वरा ए, वत्तीस मौखबद्ध नरवरा ए ॥ पायक गांमै कोरु ए, छिन्न
 वे नमै वे कर जोरु ए ॥ १९ ॥ हय गय रहवर जुजुवा ए, लख
 चौरासी मंदिर हुआ ए ॥ लाख त्रि वाजित्र धमधमै ए, वत्तीस
 सहस नाटिक रमै ए ॥ २० ॥ रूप जिसी सुरसुंदरी ए, लक्षण ला
 वण्य लाला जरी ए ॥ जंगम सोदग देहरी ए, एसी चौसठ सह
 स अंतेजरी ए ॥ २१ ॥ अवरज रुद्धि प्रकार ए, मणि कंचण र
 चण जंमार ए ॥ ते कहिवा कुण जाण ए, वपुवपु रे पुण्य प्रमाण
 ए ॥ २२ ॥ इम चक्कीसर पंचमो ए, चौथोदूतम सूतम समो ए ॥ वरस
 सहस पचवीस ए, सब पूरी मनह अगीस ए ॥ २३ ॥ इण पर बिहुं
 तीर्थकरा ए, चिर पालिय राज विविह परा ॥ जाणी अवसर ए
 सार ए, बिहुं लीधो संजम जार ए ॥ २४ ॥ बिहुं खम दम धीर
 ज धरी ए, बिहुं मोह मयण मद परिहरी ए ॥ बिहुं जिन ज्ञाण
 समाण ए, बिहुं पांभ्या केवलनाण ए ॥ २५ ॥ बिहुं देवहि कोरु-
 हिमहि ए, बिहुं चौतीसै अतिसय सहि ए ॥ समवसरण बिहुं ठाण
 ए, बिहुं योजनवाण बखाण ए ॥ २६ ॥ नाचे रणकत नेउरी ए,
 बिहुं आगलि इंद अंतेजरी ए ॥ टिंगमिग जोवे जग सहू ए, रंगहि
 गुण गावै सुरबदू ए ॥ २७ ॥ बिहुं तिर ठत्र चमर विमल, बिहुं
 पग तल नव सोवन कमल ॥ बिहुं जिनतणें विहार ए, नवि रोग
 न सोग न मारि ए ॥ २८ ॥ बिहुं उवयार जुवन जरी ए, बिहुं
 सिद्ध रमणसुं परवरी ए, बिहुं जंजी जव फंद ए, बिहुं उदयो
 परमाणंद ए ॥ २९ ॥ इम बीजो ने सोलमो ए, जाणो चिंतामण सुर
 तरु समो ए ॥ शुणि अति संजु विहाण ए, तिहां इह परजव नत्रि
 हांण ए ॥ ३० ॥ बिहुं उछव मंगल करण, बिहुं संघ सयल डुरिय
 हरण ॥ बिहुं वर कमल नयण वयण, बिहुं श्रीजिनराज जुवण
 रयण ॥ ३१ ॥ इम जगते जोलिमतणी ए, श्रीअजिय शांति

जिण धुय जणि ए ॥ सरण विहुं जिण पाय ए ॥ श्रीमेरुनंदनं
उवझाय ए ॥ ३३ ॥ इति अजित शांति वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ मुद्दपत्ती पढिलेहण स्तवनं ॥

॥ दाल ॥ १ ॥ कपूर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

वरधमान जिनवरतणा जी, चरण नमूं चित लाय ॥ ज्ञान
क्रिया जिण उपदिस्ती जी, सब सुख तणो उपाय ॥ जविक जन
धर श्रीजिन उपदेस, ठूटे कर्म कलेस ॥ ज० ॥ आंकणी ॥ पढिलेहण
मुद्दपत्ती तणी जी, ज्ञाखी ठै पचवीस ॥ तिहां ए ज्ञाव विचारिये
जी, इम ज्ञाखै जगदीस ॥ ज० ॥ २ ॥ प्रथम वे पास विलोकिये
जी, सूत्र अरथनी दृष्टि ॥ ए पढिलेहण दृष्टिनी जी, करै धर्मनी
पुष्टि ॥ ज० ॥ ३ ॥ समकित मिथ्या मिश्रणी जी, मोहनी तीननो
त्याग ॥ कामराग स्नेहरागनें जी, तज वलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥
ज० ॥ सीप बधू टक गुरुथकी जी, वाम हाथ करनाउ ॥ नव
अखोमा आदरो जी, नव पखोमा गमाउ ॥ ५ ॥ ज० ॥ देवतत्व
गुरुतत्वसूं जी, धर्मतत्व ग्रह सार ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो जी,
तीनतणो परिहार ॥ ६ ॥ ज० ॥ ग्यान दरसण चारित्रना जी,
संग्रह तीन आचार ॥ तजो विराधन तीन ए जी, एह अरथ अव-
धार ॥ ज० ॥ ७ ॥ मन वच कायानी सदा जी, गुपति गृहीजे
शुद्ध ॥ परिहरिये वलि जाणनें जी, तीने दंभ विशुद्ध ॥ ज० ॥ ८ ॥
पढिलेहण पचवीस ए जी, मुद्दपत्तीनी सार ॥ दिव पढिलेहण
अंगनी जी, ते पिण चतुर विचार ॥ ज० ॥ ९ ॥ हास्य अरति
रति धोयनें जी, सुद्ध करो वांम वाद ॥ तज जय शोक दुगंठना
जी, दक्षिण पिण करै साह ॥ १० ॥ ज० ॥ घुरली लेस्या तीन
ए जी, ते सिरथी करि दूर ॥ रिद्धि रस साता गारवोजी, करि
मुखथी चकचूर ॥ ११ ॥ ज० ॥ काढ सव्य तीन उरग्रही जी, मा

या नियाण मिळ्यात ॥ चार कपाय वेव गलथी जी, क्रोधादिक व
 घात ॥ १२ ॥ ज० ॥ तज खटकाय विराचना जी, चरण विन्दे
 होय ॥ ए पन्निदेहण अंगनी जी, पचवीसे तूं जोय ॥ १३ ॥ ज०
 इम पन्निदेहण जे करै जी, धर मन ज्ञान विवेक ॥ सकल करम
 करै जी, पांमै सुख अनेक ॥ १४ ॥ ज० ॥ कलस ॥ इम वीर जि
 वरतणा मुखथी, अरथ गणघर सांजली ॥ कहै सूत्रवांणी मन सु
 णी, सुणो जवियण मन रखी ॥ उवझाय वर श्रीजञ्जिकीरत, सु
 थकी ए संप्रदी ॥ मुंदपती पन्निदेहण तणी विध, लञ्जिकीरत ग
 कही ॥ इति श्रीमुदपती पन्निदेहण स्तवनं ॥

॥ अथ आलोचन स्तवन लिख्यते ॥

॥ हाउ ॥ सकल संसारनी ॥ १ देशी ॥

ए घन सासन वीर जिनवरतणौ, जास परसाद उप
 थायै घणौ ॥ सूत्र सिद्धात गुरुमुखथकी सांजली, लहिय सम
 अने विरति लहिये वली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यान धर तप जप
 करै, जिणथकी जीव संसारसागर तिरै ॥ दोष लागी जिके गुरु
 आलोइयै, जीव निमल हुवै वख जिम घोइयै ॥ २ ॥ दोष ल
 तिके चार प्रकारना, धुरथकी नांम नें अरथ ते धारणा ॥ फिण
 कारण वसै पाप जे कीजियै, प्रथम ते नांम संकप्प कहीजियै ॥
 कीजीये जेह कंदर्प प्रमुखै करी, दोष तेवीय परमाद संज्ञा घर
 कूदतां गर्वतां होय हिंसा जिहां, दर्प इण नांम करि दोष ती
 तिहां ॥ ४ ॥ विणततां जीव जीवनेगिनर करे जिको, चोथी आ
 द्विया दोष कपजै तिको ॥ अनुक्रमें चार ए अधिक एक एक
 दोष घर प्रायञ्चित् जेह विवेकथी ॥ ५ ॥

॥ दाल २ ॥ अन्य दिवस कोई मागष आयो पुरंदर पास ॥ ए देशी ॥

पाटी पोथी कवली नवकरवाली जोय, ग्यानना उपगरण-
तणी आसातन कीधी होय ॥ जघन्यथी पुरमठ एकातणो आंखिल
उपवास, अनुक्रम एह आलोयण सुगुरु बताई तास ॥ ६ ॥ ए
जो खंमति आयै अथवा किहांई गमाय ॥ तो बलि नवा करायां
दोष सहू मिट जाय ॥ थापना अणपनिलेह्यां पुरिमठनो तप धार,
गिरतां एकासणनें गमता चोथ विचार ॥ ७ ॥ दर्शनना अतिचार
तिहां पुरमठ जघन्य, एकासण आंखिल अठम चिहुं जेदे मन्न ॥
आशातन गुरु देवनी सादमीसुं अप्रीति ॥ जघन्य एकासणनी
आलोयण चढती रीत ॥ ८ ॥ अनंतकाय आरंज विणास्यां चोथ
प्रसिद्ध, वि ति चउरेंडी प्रसायां एकासणथो वृद्ध ॥ बहु वि ति चौरै-
दिय हणयां वि ति चउ उपवास, संकटपादि चिहुं विधि डगुणा
डगुण प्रकास ॥ ९ ॥ उदेही कुलियावना कीनी नगरा जंग, बहुत
जलोयां मूक्या दस उपवास प्रसंग ॥ वमन विरेचन रुमि पातन
आंखिल इक एक, जीवांणी ढोलंता दोष उपवास विवेक ॥ १० ॥
संकटपादिक एक पंचेंडी उपडव होय, दोड त्रिण आठ दसै उपवासै
आलोयण जोड, बहु पंचेंडी उपडव ठठ अठमै दस बीस ॥ चिहुं
प्रकारै चढती आलोयण सुण ले सीस ॥ ११ ॥ पंचेंडीनें लकनी
प्रमुखै कीध प्रहार, एकासण आंखिल उपवास नें ठठ विचार ॥ साथ
समकें लोक समकें राज समक, कृपा आल दियां डड चौथर ठठ
प्रत्यक्ष ॥ १२ ॥ उपवास दस दंभायां तेम मरायां बीस, इक लख
असी सहस नवकार गुणो तजि रीस ॥ पख चौमास वरस लग
इक त्रिण दस उपवास, अधिको क्रोध करे तो आलोयण नहि तास
॥ १३ ॥ सूआवरुना दोष कियां गुरु ऊपर रोस, जीव विराधन
कीयां बहु अस्तंतने पोस ॥ करीय डवास्त वार हजार गुणो अव-

कार, मिच्छाडुक्कम् देइ आलोचो वारोवार ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ बे कर जोही ताम ॥ ए चाल ॥

॥ विण कीधा पञ्चखाण, विण दीधां वांदणा, पन्तिकम
विध पांतरे ए ॥ अणोझा नें असिहाय, तिहा अविधै जणया,
कश् आंघिल आचरै ए ॥ १५ ॥ गंतसीनें एकत्र, निधी आंघिल,
जै आलोचना इमें ए ॥ एक पांच पट आठ, नवकरवालीय ॥ गु
नवकार अनुक्रमे ए ॥ १६ ॥ उपवास जंग उपवास, आंघिल उ
रां, अधिको दंरु वखाणिये ए ॥ पांचम आठम आदि, जंग कि
वली, फिर ग्रही पातिक हाणीयै ए ॥ १७ ॥ ऊखल मूसल आ
चूले घरटियै, दीधै अठम तप करै ए ॥ मांगी सूई दीध, कातर
तुरी, आंघिल चढता आदरै ए ॥ १८ ॥ जीव करावै युद्ध, रा
जोजन, जल तिरणो खेलण जूओ ए ॥ पापतणा उपदेश, परदे
चींतव्या, उपवास एक२ जूजूआ ए ॥ १९ ॥ पनेरे करमांदा
नियम करी जंग, मद्य मांस माखण जस्या ए ॥ आलोचना
पवास, संकप्पादिक, चिहुं जेदे चढतां लिख्या ए ॥ २० ॥ बोड
मिरखावाद, अदत्तां दान त्थुं, जघन्य एकासण जाणीये ए ॥ अ
उत्कृष्टी एण, जाण आलोचना, उपवास दत्त२आणियै ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ सुगण सनेही मेरे लाल ॥ ए चाल ॥

॥ चौथे व्रत जागे अतीचार, जघन्य ठढ आलोचना धार
मध्ये दत्त उपवास विचार, उत्कृष्टा गुण लख नवकार ॥ २२ ॥
परिग्रह विरमण दोष प्रसंग, तीन गुणव्रतमांहे जंग ॥ चार सि
व्रतने अतिचारे, आंघिल त्रिण प्रत्येके धारे ॥ २३ ॥ शीलत
नववाणि कहाय, तिहां जो लागो दोष जणाय ॥ त्रियनें फ
हुआं अविवेके, एकं आंघिल कीजे प्रत्येके ॥ २४ ॥ साधुअने आव
पोसीध, ऐंझी सच्चित्त संघटे कीध ॥ बीसर जेले सच्चित्त जल

ध, दंरु एकासण आंखिल दीध ॥ २५ ॥ विण धोयां विण लूह्यां
पात्रै, एकासण तिम पुरिमह मात्रै ॥ गइ मुहपत्तो आंखिल सारो,
तिम नुपै अठम अवधारो ॥ २६ ॥ च्यार आगार ठाँमो राखै, व्रत
पच्चत्वाण करै पट् साखै ॥ दोपे मिछामिडुकरु दाखै, आलोयण
लेतां अजिलाखै ॥ २७ ॥ आलोयणनो अति विस्तार, पूरो कहिता
नायै पार ॥ तोपिण संकेपै तंत सार ॥ निरमल मन करतां वि
स्तार ॥ २८ ॥ इम श्रीवीर जिनेसर स्वांमी, जसु आगम वचने
विधि पांमी ॥ जीतकळप ठाणांगे आदि, वली परंपर गुरु सुप्रसाद २९

॥ कलश ॥

॥ इम जेह धरमी चित्त विरमी, पाप सर्व आलोयनें ॥ ए
कांत पूवै गुरु वतावै, शक्ति वय तसु जोयनें ॥ विध एह करली
तेह तिरसी, धरमवंततणै धुरै ॥ ए तवन श्रीधर्मसिंह कीधो, चौ
पने फल वधी पुरै ॥ ३० ॥ इति श्री आलोयण स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नंदीश्वर द्वोप स्तवनं ॥

नंदीसर बावन जिनालय, साध्वता चोमुख सोहे रे ॥ रुप
ज्ञानन चंझानन वारिपेण, वर्द्धमान मनमोहे रे ॥ नं० ॥ १ ॥
आठमो द्वोप नंदीसर अदन्तुत, बलयाकार विराजै रे ॥ तेहनेमध्य
विहुं दिस सोजित, अंजन गिरिवर ठाजै रे ॥ नं० ॥ २ ॥ जोयण
सदस चोरासी ऊंचा, ऊंचपणे अजिरामा रे ॥ मूलै प्रथुल सदस
दस जोयण, उवरि सदस कर ॥ ३ ॥ नं० ॥ ते ऊपर प्रासाद
प्रज्ञूना, अति उत्तंग उदारा रे ॥ साधू जंघा विद्याचारण, वांदे वि
विध प्रकारा रे ॥ नं० ॥ ४ ॥ चैत्यैश् इकसो चोवीस, विंश संख्या
सब दाखी रे ॥ ध्यावो सेवो ज.विजन जगते, सुध आगम कर सा
खी रे ॥ नं० ॥ ५ ॥ ऊंचपणै सहु जोयण बहुतर, सो जोयण
रे ॥ पिहुलपणे पचास जोयणना, प्रज्ञूप्रासाद सुगमा रे

॥ नं० ॥ ६ ॥ धनुष पांचसै आयात प्रजुनी, विविध रतनमई काया
 रे ॥ जिन कल्याणक उठव करवा, सुरपति जेके आया रे ॥ नं०
 ॥ ७ ॥ अंजन अंजनगिरि चहुं उबै, चोमुख च्यार विसाला रे ॥
 वाव१ विच इकर पर्वत, राजत रंग रसाला रे ॥ नं० ॥ ८ ॥ चो
 सठ सदस जोयण उत्तंगै, दस सदस सत पिहुला रे ॥ चिहुं दि
 सि सोल सदस दधिमुखगिरि, तिहां प्रासाद सुविमला रे ॥ नं० ॥
 ९ ॥ वाव२ नें अंतर विदसैं, रतिकर परवत रूमारे ॥ दोय२ संख्या
 जगदीसै, कहा नदी ए कूमा रे ॥ नं० ॥ १० ॥ जोयण सदस मानदस
 ऊंचा, दस२ सदस विस्तारारे ॥ ऊल्लरिसम संठाण जगत गुरु, नि
 श्वय ए निरधारघा रे ॥ नं० ॥ ११ ॥ तेह ऊपर प्रासाद सतोरण,
 अंजनगिरि परमाणै रे ॥ जिनपदिमानी संख्या तेहिज, श्रीजिन
 राज बखालै रे ॥ नं० ॥ १२ ॥ इम प्रासाद प्रजुना वावन, नंदीसर
 वर दीपे रे ॥ इय जाव विधि पूजा करतां, मोद मदा जम जायै
 रे ॥ नं० ॥ १३ ॥ प्रवचन सार उद्धार प्रकरणे, जोवाजिगमें जा
 णो रे ॥ इम अधिकार बै अंध अनेकै, इहां संका मत आयो रे ॥
 नं० ॥ १४ ॥ जिम सुरपति विरचै तिहां पूजा, ते अनुजव इहा
 व्यावो रे ॥ व्यावो जिम पावो परमात्म, जैनचंड गुण गावो
 रे ॥ नं० ॥ १५ ॥ इति नंदीश्वर स्तवनं ॥

॥ अथ अढाइ द्वोपै बीस विहरमाण स्तवनं ॥

॥ वंडु मनसुध विहरमाण जिणोसर बीस, द्वीप अढीमें विचरै
 जयवंता जगदीस ॥ केवलग्यानने धारै तारै करनपगार, किए २ ठामे
 कुण२ जिन कहस्युं सुविचार ॥ १ ॥ पैतालीस लक्ष योजन मानुषक्षेत्र
 प्रमाण, बलयाकारे आधे पुष्कर सीमा जाण ॥ दोय समुद्रै सोहं
 द्वीप अढाई सार, तिणमें पनरै करमानूमीनो कहूं अधिकार ॥ २ ॥
 पहिलो जंबूद्वीप समै विच थाल आकार, लांवो पिहुलो इक लख

जोयणने विसतार ॥ मोटो तेहने मध्य सुदरसन नामें मेर, तिणर्थ
 दिसि विदसानी गिणतो च्यारे फेर ॥ ३ ॥ मेरुथको दक्षिण दिसि
 एह जरत सुज क्षेत्र, पांचसे ठवीस जोयणठ कला तेहनो क्षेत्र ।
 उत्तरखंभमें एहवो एरवत क्षेत्र कहाय ॥ इण चिहु करमांजूमी ठण
 थरा फिरता जाय ॥ ४ ॥ तेत्रीस सदस ठसे चोरासी जोयण जाण,
 च्यार कला ए महाविदेह विखंज वखाण ॥ बावीससै तेरे जोयण
 एक विजय पडुलाण, एहवी वत्तीस विजय विराजै जेहने ठाण ॥
 ॥ ५ ॥ मेरु विचै कर पूरव पश्चिम दोय विजाग, सोलै १ विजय
 तिहां विचरै श्रीवीतराग ॥ सासते चोथे थारे तारै श्रीश्रिंहंत,
 एहवे महाविदेह करमजूमि त्रीजी तंत ॥ ६ ॥ पूरव विदेह विजय
 पुष्कलावतो आठमी ठांम, पुंमरीकणी नगरी तिहां श्रीसीमंथर-
 स्वांमि ॥ वप्रविजय पचवीसमी विजयापुरनो नाम, पछिम विदेह
 बीजो युगमंधिर कीजै प्रणाम ॥ ७ ॥ तिमहिज नवमी वछविजय
 वलि पूरव विदेह, नयर सुसीमा त्रीजो बाहु नमूं धरि नेह ॥
 नलिनावर्त चोवीसमी पछिम विदेह वखाण, बीतसोका नगरी
 तिहां चोथो सुवाहु सुजांण ॥ ८ ॥ ए च्यारेइ जिणवर जंबूद्वीप
 मजार, महाविदेह सुदरसन मेरुतणें परकार ॥ एहवो जंबूद्वीप मह
 गढ जेम गिरिंद, खाई रूपे दोय लख जोयण लवण समंद ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ दिवाली दिन आवियो ॥ ए चाल ॥

दीपे बीजो द्वीप ए, धन१ घातकी खंभ ॥ पिहुलो चिहुं
 लख जोयणो, मंमल रूपे मंभ ॥ १० ॥ दी० ॥ दोय जरत दोय
 एरवत, दोय वलि महाविदेह ॥ करमजूमि खट ठै जिहां, ठण-
 हिज नामें एह ॥ ११ ॥ दी० ॥ पूरव पश्चिम घातकी, खंभ गिणीने
 दोय, विजयमेरु पूरव दिसै, पछिम थचत्रमेरु जोय ॥ १२ ॥ दी० ॥
 इक २ मेरुने अंतरे, करमजूमि तीन २ ॥ निज २ मेरुयी मांनिने,

खो चिहुं दिसि लीन ॥ १३ ॥ दी० ॥ श्रीसुजात जिन पंचमो,
 ने स्वयंप्रभु ईस ॥ रूपज्ञानन जिन सातमो, समरीजै निस दीस
 १४ ॥ दी० ॥ अनंतवीरज जिन आवमो, ए च्यारे जिनराय ॥
 धातकी खंरुमें, महाविदेह रहाय ॥ दी० ॥ १५ ॥ पहिली
 हुं जिननी परे, विजयनगर दिसि गण, ॥ तिणहिज नामे अनुक्रमे,
 जयमेरु अहिनांण ॥ दी० ॥ १६ ॥ नवमो सूर प्रभु नमूं, दसमो
 विसाल ॥ इम वज्रधर इग्यारमो, त्रिकरण नमूं त्रिहुं काल ॥
 ० ॥ १७ ॥ धारमो चंडानन जिन, पछीम धातकी मांदि ॥ विचैरे
 रां जिणवरा, अचलमेरु उछाहि ॥ दी० ॥ १८ ॥ एहवो धातकी
 ए, परदक्षणा परकार ॥ अठ लख जोयण वींटीयो, समुझ कालो-
 व सार ॥ १९ ॥ दी० ॥

॥ ढाल ॥ ३ जी ॥ पहिली प्रतिमा एकण मासनी ॥ ए चाल ॥

कालोदधिने पैलै पार ए, वींठ्यो चूरी जेम विचाल ए ॥
 लख लख जोयण विसतार ए, दीप पूखरवर अति सुखकार ए ॥
 कालो० सुखकार पुष्करद्वीप त्रीजो, तेहनें आयै पगै ॥ विच पड्यो
 वत मानुष्योत्तर, मनुष्यक्षेत्र तिहां लगै ॥ तिण आधिकर अठ लाख
 जन, अरध पुष्कर एम ए ॥ तिहां करमजूमी ठ ए कहीजै, धात-
 खंरु जेम ए ॥ २० ॥ ढाल ॥ आयै पुष्करनें पूरव दिसै, मंदिर
 मे मेरु तिहां बसै ॥ पछिम विजुमाली मेर ए, इहां किण इतरो
 मे फेर ए ॥ उ० ॥ फेर ए इतरो इहां नामे, अवर ठामे को नही ॥
 २ मेरे तीन तीने, करमजूमि तिहां कही ॥ इम जरत एरवत
 हाविदेहे, नाम सरखो देत ए ॥ तिणहोज नामे विजय सगली,
 सता धर्म खेत ए ॥ २१ ॥ ढाल ॥ धातकी खंरु तिम पुष्कर
 दी, इहां क्षेत्रानी रचनाविधकही ॥ वार २ कदनां ए विसतार ए,
 हला पर लेज्यो सुविचार ए ॥ उ० ॥ सुविचार वाकी तेह सगलो,

नगर तिमहिज मन गमें ॥ पूरवे पश्चिम जेदनी ते, तेह तिमहीज
 अनुक्रमें ॥ श्रीचंद्रवाहु जुजंग ईसर नेम च्यार तीर्थकरा, पूरवे पुष्कर
 अरध मांहे, सरवर्जीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ ढाल ॥ वैरसेन वंदू जिन
 सेंतैरमो, श्रीमदाज्ज अछारम नित नमो ॥ देवजता उगणीसम
 देव ए, जसो रिद्ध वीसम जिण देव ए ॥ ३० ॥ जिण च्यार पुष्कर
 अरंध मांहे, कहा पश्चिम जाग ए ॥ तिहां मेरु विगुनमात्रि चिहुं
 दिसि, विचरता वीतराग ए ॥ चौरासी पूरव लाख वरसा, आठ इक
 २ जिण तणो ॥ पांचसै धनुष सरीर सोहे ॥ सोवन वरणा सुहामणो
 ॥ २३ ॥ ढाल ॥ काल जघन्ये ए जिण वीत ह ॥ दिव उरुष्टै
 जेद कहीत ए ॥ ॥ एकसो सत्तर तिहां जिनवर कहै, पांचे
 जरते जिम पांचे लहै ॥ ३० ॥ जिण लहै पांचे तेम पांचे;
 एरवत मिल वस हुवा ॥ इक २ विदेहे धत्तीत विजया,
 तिहा पिण ठै जूजूआ ॥ एकसो सत्तर एम जिनवर, कोमि
 नवसय केवली, नव सहस कोमी अवर मुनिवर, वंदिबै नित ते
 वली ॥ २४ ॥ ढाल ॥ इहां जरते एरवतें आज ए, पंचम आरै
 नही जिनराज ए ॥ धन २ पांचे महाविदेह ह, विचरे वीसै जिन
 गुणगेह ए ॥ ३० ॥ गुणगेह दोष अढार वरजित, अतिसयां चोतीत
 ए ॥ चौसठि इंद नरिंद सेवित, नमुं ते निसदीत ए ॥ तिहां आं
 तारण तरण विचरै, केवली दोष कोम ए ॥ दोष सहस कोमी सुसां
 बीजा, नमुं वेकर जोम ए ॥ २५ ॥ कलश ॥ इम अढी द्वीपे पनर करम
 जूमी क्षेत्र प्रमाण ए, सिद्धांत प्रकरण तेह जारुया वीस विहरमाण
 ए ॥ श्रीनगर जेसलमेर संवत सत्तर गुणतीसै समै, सुखविजय हरल
 जिनंद सानिध नेह धरि धमसी नमें ॥ २६ ॥ इति अढी द्वीप
 संपूर्ण ॥ १ जंबूद्वीप २ धातकी खंन ३ आधोपुष्करद्वीप एवं
 द्वीपमें ५ जरत ५ एरवत ५ महाविदेह १५ कर्मजूमामें विव;

રતા સાશ્વતા ૨૦ વિહરમાનકો મેરા નમસ્કાર હુવો ॥

॥ અપ આબૂજી તીર્થ સ્તવનં ॥

॥ જાત્રીનાજાઈ આબૂજીની જાત્ર કરેજ્યો, જાત્ર જણી ક
મહેજ્યો, તુમ્હે નરજવ લાહો લીજ્યો રે ॥ જાત્રી૦ ॥ પંચ તીર્થો
માંહે ઠાજે, આબૂ મારૂંદે બેસ વિરાજે રે ॥ જા૦ સ્વરગથી વાદે લા
ગો, મંચો અંબરિયે જઈ લાગો રે ॥ જા૦ ॥ ૧ ॥ એતો દેવાનો વાસ
ફદાવે, નિરલંતા પ્રિપતિ ન આવે રે ॥ જા૦ ॥ એતો મુંગરિયાનો રાજા,
અદની ઠે બારદ પાજા રે ॥ જા૦ ॥ ૨ ॥ ઘડ શુતુ વાસ વણાયો,
એતો ચંપલા અંબલા ઢાયો રે ॥ જા૦ ॥ સરવર ઝરણા ઝાઝા, જિહાં
તિહાં વનવેલ્યા ઝાઝા રે ॥ જા૦ ॥ ૩ ॥ જાર અઢોરે વણારાઈ,
એતો ફદાંદિજ નિજરે આઈ રે ॥ જા૦ ॥ દદદિસિ પરિમલ આવે, ફૂ
લમાનો રંગ સુદાવે રે ॥ જા૦ ॥ ૪ ॥ કપર ઝૂમિ વિસાલા, દેવલ
દીઠા રક્ષિપાલા રે ॥ જા૦ ॥ વિમલમંત્રી વરદાઈ, ચક્રેસરિ દેવી સદા
ઈ રે ॥ જા૦ ॥ ૫ ॥ પોરવાન વંસ વદીતો, જિણદલપતિ સાદિ જો
તો રે ॥ જા૦ ॥ દેવલ તેણ કરાયો, પાદણ આરાસ મંદાયો રે ॥ જા૦
॥ ૬ ॥ ઝીણીર કોરણી ઝેરયો, દલ માલખણલેમ ઝકેરયો રે જા૦
॥ નવીર જાંતિ વણાઈ, જિહાં તિહાં કોરણિયા ઝિણાઈ રે ॥ જા૦
॥ ૭ ॥ ઇત્તરે પાદણ જેતો, જોલ્હીને પાદણ તેતો રે ॥ જા૦ ॥
આદિ જિનેસર સાંમી, પ્રતિમા ઘાપી દિતકામી રે ॥ જા૦ ॥ ૮ ॥
ઝગણિસ કોમ સોમડયા, હ્ય લાગત કરિ જસ લીયા રે ॥ જા૦
॥ કરજોમીને આગે, મંત્રી જિનવર પાપ લાગે, રે ॥ જા૦ ॥ ૯ ॥
પુઠે ચઢિયા દાથી, મંદાણા પતિ સાદ સાથી રે ॥ જા૦ ॥ ફણદેવલ
સમવન કોઈ, ઝૂમંમલ માંદિ ન દોઈ રે જા૦ ॥ ૧૦ ॥ ઘલિ તિ
ણ વંસ વિગતાલા, વસ્તુપાલ અને તેજપાલા રે ॥ જા૦ ॥ દેવ નમો
કહિ પાઈ, ફદાં તિયાં પિણ સફલ કરાઈ રે ॥ જા૦ ॥ ૧૧ ॥ તે

नगर तिमहिज मन गर्भे ॥ पूरवे पछिम जेदनी ते, ते
 अनुक्रमे ॥ श्रीचंडवाहु जुजंग ईसर नेम च्यार तीर्थकरा,
 अरंध मांहे, सरवर्ज्जीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ ढाल ॥ वैस्ते
 सेंतैरैमो, श्रीमदाज्ञ अछारम नित नमो ॥ देवजता
 देव ए, जसो रिद्ध वीसम जिण देव ए ॥ ३० ॥ जिण
 अरंध मांहे, कहा पछिम जाग ए ॥ तिहां मेरु विद्युन
 दिसि, विचरता वीतराग ए ॥ चौरासी पूरव लाल बरसा
 २ जिण तणो ॥ पांचसै धनुष सरीर सोहे ॥ सोवन वरा
 ॥ २३ ॥ ढाल ॥ काल जघन्ये ए जिण वीत ॥ दि
 जेद कहीस ए ॥ ॥ एकसो सत्तर तिहां जिनकर
 जरते जिम पांचे लदै ॥ ३० ॥ जिण लदै पांचे ते
 एरवत मिल दस हुवा ॥ इक २ विदेहे वत्तीत
 तिहा पिण वै जूजूआ ॥ एकसो सत्तर एम जिनकर
 नवसय केवली, नव सहस कोमी अवर मुनिवर, वंदिये
 वली ॥ २४ ॥ ढाल ॥ इहां जरते एरवतें आज ए, पं
 नही जिनराज ए ॥ धन २ पांचे महाविदेह ॥ विचरे वी
 गुणगेह ए ॥ ३० ॥ गुणगेह दोष अछार वरजित, अतिसपा
 ए ॥ चौसठि इंद नरिंद सेवित, नमुं ते नितदीत ए ॥
 तारण तरण विचरै, केवली दोष कोरु ए ॥ दोष सहस कोमी
 बीजा, नमुंवे कर जोरु ए ॥ २५ ॥ कलश ॥ इम अढी द्वीपे
 जूमी क्षेत्र प्रमाण ए, सिद्धांत प्रकरण तेह ज्ञाहया वीत
 ए ॥ श्रीनगर जेसलमेर संवत्त सत्तर गुणतीसै समै, सुखवि
 जिनंद सानिध नेह घरि घमसी नमै ॥ २६ ॥ इति श्री
 स्तवन संपूर्ण ॥ १ जंबूद्वीप २ धातकी खंरु ३ यो
 १ ॥ घोपसे ५ जरत ५ एरवत ५ महाविदेह १ ५ कर्मजूमि

सो अस्ती ए ॥ ३ ॥ तेरेसे निव्यासी कोरि, साठ लाख सुंदर,
 सुवनपती मांदि मन वसी ए ॥ ४ ॥ बारे देवदोक प्रासाद,
 चौरासी लाख, सदस ठिन्नू ने सातसे ए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए चाल ॥

दिवै नवग्रीवैकै पंचानुत्तर सार, चेईदर त्रणसय त्रेवीसा
 सुविचार ॥ प्रत्येके प्रतिमा बीसासो तिहां जाण, अरुत्रीस सह
 स सत साठ अठै गुण पाण ॥ ६ ॥ नंदीसर बावन कुंमल रुचक
 बखाण, चउ१ चेईदर साठ सवे त्रिहुं ठांण ॥ इकसो चोवीसै गुण
 प्रतिमा चिहुं नाम, च्यारसै चालिसा सात सदस प्रणमाम ॥ ७ ॥
 नंदीसर विदिसै सोलस कुल गिरि तीस, मेरु वन अस्ती दस कु
 रु गजदंते बीस ॥ मानुपोत्तर परवत च्यार२ इखुकार, अेसो अति
 सुंदर बक सकार मजार ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥

॥ दिग्गजगिरि चालीस, अस्ती इहं सुजगीस ॥ कंचन गिर
 वरु ए, एक सदस धरु ए ॥ ९ ॥ वृत दीरघ बैताढय, बीस सत
 रसो आढय ॥ सतर महानदी ए, पंच चूला सदी ए ॥ १० ॥
 जंबू प्रमुख दस रुक्क, इग्यारैसै सतर सुक्क ॥ कुंरु त्रणसय अस्ती
 ए, बीसजमगवसी ए ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥

त्रिण सदस सो एक निवाणूं रे, जिनवर प्रासाद बखाणूं,
 बीस सो ए अंक गुणिये रे, तीर्थकर प्रतिमा शुणिये ॥ १२ ॥ त्रिण लाख
 सदस वलि उपासी रे, प्रतिमा आठसो ने अस्ती ॥ सरवाले सव
 मेलीजै रे, जिनवर प्रासाद नमीजै ॥ १३ ॥ आठ कोरि सचावन
 लस्का रे, दोयसै निव्यासी कयरुक्का ॥ दिव प्रतिमा ग्यान कदीजै

हवो जिणहर पासै, वार कोरुनी लागति जासै रे ॥ जा० ॥ १२ ॥
 एणी जेगणी, आलानी अलव कहाणी रे ॥ जा० ॥ १३ ॥
 ल सोह वधारी, नेमनाथजी वाल ब्रह्मचारी रे ॥ जा० ॥ १४ ॥
 बट पाहण केरी, मूरत सुरमा रंग हेरी रे ॥ जा० ॥ १५ ॥
 वामो दीगो, ते तो लागै नयणै मीठोरे ॥ जा० ॥ तिहां वे
 पासै, लोक जेवे घणो तमासै रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ त्रिण
 गल जाइयै, देवल देखी सुख लहिये रे ॥ जा० ॥ चोमुल
 ज्यारो, आदिनाथ देव जुहारो रे ॥ जा० ॥ १७ ॥ सोवन
 घातो, जिंगमिग रही दिनने रातो रे ॥ जा० ॥ मण चवदेतै
 लौ, जिण विंवनो जाव निहालो रे ॥ जा० ॥ १८ ॥ थ
 जोम सोजागी, जिणवरथी जसु लय लागी रे ॥ जा० ॥
 ॥ एहनी करणी वाहवाहो, इहां लीधो लखमी लाहो रे ॥
 ॥ १९ ॥ इण हुंगरियै आवी, जिण जात्र करै मन जावी
 जा० ॥ जिहां तिहां पूज रचावै, नाटकिया नाच करावै रे ॥ जा०
 ॥ २० ॥ रातीजोगो दियरावो, जिनवरना जत गुण गावो
 जा० ॥ साहमी वछल कीज्यो, जातरुलीनो जतलीजो रे ॥
 ॥ २१ ॥ आगेथी आवी चाली, वातां केइ अचरज वाली रे
 जा० ॥ सुणिये ठै जे कोई, अदिनांणे जोज्यो तेई रे ॥ जा०
 ॥ २२ ॥ ए तीरथना गुण गावै, जात्रानो फल ते पावे रे
 जा० ॥ ए तीरथ समतोले, कुण आवै रूपचंद बोले रे ॥ जा०
 २३ ॥ इति आवूजी स्तवनं ॥

॥ अथ सकल सास्वता चैत्य नमस्कार स्तवनं ॥

॥ रिपजाननं व्रथमान, चंडानन जिन, वारिपेण नामे रि
 णा ए ॥ १ ॥ तेह तणा प्रासाद, त्रिभुवन सासता, प्रणमुं विं व
 मणा ए ॥ २ ॥ चेइहर सग कोरु, लाख बहुतर, चैत्य प्र

घदनी प्रमुख जे शेष रह्या हुता रे, ब्यार अघाती कर्म ॥ दूर
 निवारया रे अनुक्रम तेदने रे, पाम्युं शिवपद शर्म ॥ ४ ॥ ज० ॥
 संप्रति काले रे श्रीजिनराजनो रे, पूजीजे प्रतिविंब ॥ प्रतिदिन
 लदिये रे प्रभु सुप्रसावधी रे, मन वांगित अविलंब ॥ ५ ॥ ज० ॥
 श्रीजिनवरनो बिंब बिलोकतां रे, उकृत दूर पुलाय ॥ इंडिय निग्रद
 सुग्रद संपजे रे, समकित पिण दृढ धाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ श्रीतज्ज-
 रुना मुखघी सांजिदबा रे, एदवा वचन विलास ॥ ते बहुमाने रे
 निज चित्तमें धरबा रे, नेमी सुत जाईवास ॥ ७ ॥ ज० ॥ धैत्य-
 कराव्युं रे सुंदर सोजतो रे, मनधर अधिक उलास ॥ शीतल प्रभुनो
 रे बिंब अराबिबो रे, सदसफणा बलि पास ॥ ८ ॥ ज० ॥ वरस
 अगारद सत्तावीसमे रे, माधव भास मजार ॥ उकल द्वादशी दि-
 वसे जावियो रे, बिंब अनेक उवार ॥ ९ ॥ ज० ॥ एकसो इक्पासी
 तहु मेले ब्या रे, बिंबादिक सुविचार ॥ कीध प्रतिष्ठा ते दिन ते-
 हनी रे, विधि पूर्वक मन बार ॥ १० ॥ ज० ॥ श्रीजिनलाज सूरि-
 श्वर दीपता रे, श्रीवरतर गड जाण ॥ तास पसाय में शीतल जिन
 धुण्या रे, विबुध कृपा कटपाण ॥ ११ ॥ ज० ॥ इति शीतल
 जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवनं ॥

॥ हारे दू तो भरावा गायी तट जमुना के तीर जो ॥ १ ॥ चान ॥

हारे मारे धरम जिनंदसुं लागी पूरण प्रीत जो, जीवरुजो
 लखचाणो जिनजीनी उलगे रे लो ॥ दारे मुंने घास्ये कोइपक
 समें प्रभु सुप्रसन्न जो, वातरुली तव घास्ये मदारी सधि चगे रे
 लो ॥ १ ॥ हारे कोइ दुर्जननो जंजेरयो मादरो नाथ जो, उज-
 वस्ये नदी क्यारे कीधी चाकरी रे लो ॥ हारे मारे स्वामी सरि-
 खो कुरा ठै डनियां मांद जो, जइये रे जिम तेदने घर आस्या

रे, जिनवरनी आण वहीजै ॥ १४ ॥ पनरेसै वेतालीस
अरुवन लख अधिके जोनी ॥ उतीस सदस अधिक क
प्रतिमा सगली सरदहियै ॥ १५ ॥

॥ बाळ ॥ ६ मी ॥

जोइस बितर प्रतिमा सासती, असंख्यात वलि जेदे
पायकमल तेदना नित प्रणमियै, सोवन वरणा सुदेहो जी ।
विनय करी जिन प्रतिमा वंदियै, सुंदर सकल सरूपो जी, प्र
तिमा चोविह देवता, बलिव विद्याभर जपो जी ॥ १ ॥ वि
जिनप्रतिमा बोली जिन सारणी, दित सुख मोक्ष निदानो
जवियणने जवसायर तारवा, प्रवदण जेम प्रधानो जी ॥ २ ॥
जीवाजिगम प्रमुख मांदि जाखीयो, ए सहू अरथ विचारो
सांजलतां जणतां सुख संपदा, हियमै दरख अपारो जी ॥ ३ ॥

॥ कळश ॥

इम शासता प्रास्ताव प्रतिमा संधुण्या जिनवर तणा, वि
नाम जिनचंद तणा त्रिजुवन सकलचंद सुदावणा ॥ वाचनाचारि
समयसुंदर गुण जणें अजिराम ए, त्रिहुं काल त्रिकरणा सुद होय
सदा मुज परणाम ए ॥ ५ ॥ इति साध्वता जिन चैत्य जित
संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ सूरत सहर सीतल जिन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवनं ॥

जविजन पूजो रे शीतल जिनपती रे, नयनानंदन वां ।
प्रज्जुजी विराजै रे सूरत विंदै रे, नंदादेवीना नंद ॥ १ ॥ ज० ।
जगदितकारी रे जिनजी अवतरणा रे, श्रीदृढरथ नृप गेद ॥ श्रीत
सोदे रे लांगन सुंदरु रे ॥ कनक वर्ण प्रज्जु देद ॥ २ ॥ ज० ।
विषय निवारी रे संजम संगह्यो रे, लाधू केवलनाण ॥ सयन प
धन जिम प्रम वरसता रे, विचरणा त्रिजुवन ज्ञाण ॥ ज० ॥ १६

खंता सुख आय ॥ म० ॥ पांच प्रासाद बीजा वली रे लाल,
 जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ ५ ॥ रा० ॥ आज कृतार्थ हुं थयो
 रे लाल, आज थयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवरतणी रे
 लाल, दूर गयूं दुख वंद ॥ म० ॥ ६ ॥ रा० ॥ संवत सोल ठियं-
 तरे रे लाल, मिगसिर मास मज्जार ॥ म० ॥ राणपुरै यात्रा करी रे
 लाल, समयसुंदर सुखकार ॥ म० ॥ ७ ॥ रा० ॥ इति श्री
 राणपूरा स्तवनं ॥

॥ अथ दर्शनद्वार ओआदिजिन स्तवनं ॥

समकित छार गुंजारे पैसतां जी, पाप परल गयां दूर रे ॥
 मोहन मारुदेवीनो लामलो जी, देगे मीगे आनंद पूर रे ॥ स० ॥
 ॥ १ ॥ आयू वरजित साते कर्मनी जी, सागर कोमाकोमी हीण
 रे ॥ स्थिती पढम करणें करी जीवनें जी, बीरज अपूरवनो घर
 लीध रे ॥ २ ॥ स० ॥ जुंगल जांगी आदि कषायनी जी, मिथ्यात
 मोहनो सांकल साथ रे ॥ धार ऊषामा सम संबेगना जी, अनुजव
 नवनें बेगो नाथ रे ॥ ३ ॥ स० ॥ तोरण बांधू जीवदया तशूं
 जी, साधियो पुरो सरघा रूप रे ॥ धुपघटी प्रभुगुण अनुमोदना
 जी, द्विगुण मंगल आठ अनूप रे ॥ ४ ॥ स० ॥ संवर पाणी अंग
 पखालनें जी, केशर चंदन उत्तम ध्यान रे ॥ आतम गुण रुची
 मृगमद महमदे जी, पंचाचार कुशम परधान रे ॥ ५ ॥ स० ॥
 जावपूजानें पावत आतमा जी, पूजो परमेसर पून्य पवित्र रे ॥
 कारण जोगें कारज नीपजै जी, कृमा विजय जिन आगम रीत रे
 ॥ ६ ॥ स० ॥ इति श्री आदीसर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीआदीसर जिन स्तवन ॥

आदि जिनेसर अरज सुणीजै, मोहन महिर घरीजै रे ॥
 दिलरंजन प्रभु दरसन दीजै, म्हारो मनमो रीजै रे ॥ आ० ॥ १ ॥

करी रे लो ॥ २ ॥ हारे मारे जस सेव्यांथी स्वारथनी नही सिं
जो, गाली रे सी करवी तेइथी गोठनी रे लो ॥ हारे कांइ फूवूं खा
ते मिठाईने माटे जो, क्यांही रे परमारथनी नही श्रीतनी रे लो
॥ ३ ॥ हारे प्रजु अंतरजांमी जीवत प्राणाधार जो, वायो रे नवि
जाण्यो कलियुग वायरो रे लो ॥ हारे मोरा लायक नायक जगत
बछल जगवंत जो, वारू रे गुण केरा सादिव सायरू रे लो ॥ ४ ॥
हारे प्रजु लागी मुऊने ताहरी माया जोर जो, अलगा रे रक्षांथी
होइ उजोगलो रे लो ॥ हारे कुण जांशें अंतर गतिनी विण मादा-
राज जो, देजे रे हसी बोलो वंसी आमलो रे लो ॥ ५ ॥ हारे तारे
मुखने मटके अटक्यूं मादरो मन्न जो, आंसरुली अणियाली का-
मणगारीयूं रे लो ॥ हारे मारे नयणा लंपट जोधे खिण २ तुज जो,
राती रे प्रजु रागे न रहे वारीयां रे लो ॥ ६ ॥ हारे प्रजु अलगा
ते पिण जांणज्यो करीनें इजूर जो, ताहरी रे बलिदारी हुं जात्रं
वारणो रे लो ॥ हारे कवि रूप विबुधनो मोइन करै अरदास जो,
गिरुआ थइ मन आंणो कलट अति घणो रे लो ॥ इति स्त० ॥

॥ अथ राणपुरा स्तवनं ॥

राणपुरै रलियामणो रे लाल, श्रीआदीत्तर देव, मन मोहुं
रे ॥ उत्तंग तोरण देहरूं रे लाल, निरखीज नित्य मेव ॥ म० ॥
रा० ॥ १ ॥ चोवीस मंरुप चिहुं विते रे लाल, चौमुख प्रतिमा
व्या ॥ म० ॥ त्रिजुवन दीपक देहरो रे ला०, समवरु नदी
संसार ॥ म० ॥ २ ॥ रा० ॥ देहरी चोरासी दीपती रे लाल,
मान्यो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ जखें जुदाया जोपरा रे लाल, सूतां
ऊठ सवेर ॥ म० ॥ ३ ॥ रा० ॥ देम जाणीनूं देहरूं रे लाल, मेटो
देस मेवारु ॥ म० ॥ खम्ब नवानुं खगाविषा रे लाल, धन यश
पोरयान ॥ म० ॥ ४ ॥ रा० ॥ अंतर गगई खंनसूं रे लाल, नि

श्रमल अखंरु अनूप ॥ अ० ॥ ता० ॥ ६ ॥ आरोपित सुख व्रम
 टढ्यो रे, ज्ञास्यो अव्याबाध ॥ समरथो अजिज्ञाखीपणो रे, कर्त्ता
 साधन साध्य ॥ अ० ॥ ता० ॥ ७ ॥ आदकता स्वामित्वता रे,
 व्यापक ज्ञोक्ता ज्ञाव ॥ कारणता कारज कृतारे, सकल ग्रह्यं निज
 ज्ञाव ॥ अ० ॥ ता० ॥ ८ ॥ अद्वा ज्ञासून रमणता रे, दानादिक परिणा
 म ॥ सकल थया सत्तारसी रे, जिनवर दरसन पामि ॥ अ० ॥ ता०
 ॥ ९ ॥ तिणें निर्यामक मादणो रे, वैद्य गोप आधार ॥ देवचंद्
 सुख सागर रे, ज्ञावधरम दातार ॥ अ० ॥ ता० ॥ १० ॥ इति श्री
 अजित जित स्तवनं ॥

॥ अथ आलोचन वृद्ध स्तवनं ॥

॥ बे कर जोरी वीनवूं जी, सुणि स्वांमी सुविदीत ॥ कून
 कपट मूकी करी जी, वात कहूं आप वीत ॥ १ ॥ रुपानाथ सु
 ऊ विनूती अवधार ॥ आंकणी ॥ तू समरथ त्रिजुवन घणी जी,
 मुऊने डुत्तर तार ॥ क० ॥ २ ॥ जवसायर जमतां थकां जी,
 दीठां डुख अनंत ॥ जागतंयोगे जेटियो जी, जयजंजण जगवंत
 ॥ क० ॥ ३ ॥ जे डुख जांजे आपणा जी, तेहनें कहिये डुक्क ॥
 परडुख जंजण तूं सुणयो जी, सेवगने द्यो सुक्क ॥ क० ॥ ४ ॥ आलोचण
 लीधां पलै जी, जीव रुखे संतार ॥ रूपी लक्ष्मणा महासती जी, एह
 सुणयो अधिकार ॥ क० ॥ ५ ॥ दूपमकालै दोहिलो जी, स्यो गुरु
 संयोग ॥ परमारथ पीठै नदी जी, गरुप्रवाही लोक ॥ क० ॥ ६ ॥
 तिण तुऊ आगल आपणा जी, पाप आलोचं आज ॥ माय
 बाप आगल बोलतां जी, बालक केही लाज ॥ क० ॥ ७ ॥ जि
 न प्रमत्त सहू कहै जी, थापे अपणी जी वात ॥ सामाचार
 जुड़ जुड़ जी, शंसय परचां मिथ्यात ॥ क० ॥ ८ ॥ जाण
 अजाणपणे करी जी, बोद्ध्या उत्सुत्र बोल ॥ स्तने काग

प्रभु देरसन लहिवो जंग डुरलज, विन देरसन नही किरियां रे
 जे देरसन विन किरियां पावै, ते नवि कहियै तरिया रे ॥ आ० ॥ २ ॥
 नय एकांते देरसन थापै, पिरुं जरे ते पापे रे ॥ आप आपणा म
 आलापै, ते जूला जव थापै रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ गुंइ देरसन स्या
 दादने संगे, जे ग्रहे आत्म उमंगे रे ॥ आनंदघन उपजै तसु अंगै
 सिद्धमणने रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ जव कोमाकोमीमें जमतां, तुज
 देरसन नहीं पायो रे ॥ सुकृत संयोगे ताहरे सनमुख, आज जसे
 हुं आयो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ ताहरी महिर लहिरनो लटकौ, जो
 जंगगुरु हुं पांउं रे ॥ सहेजे एक पलकमें अवजुत, आतम गुण
 उपजाउं रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ मरुदेवानंदन जंग वंदन, श्वामी देर
 सण दीजै रे ॥ लाजउंदय जिनचंद लहीने, सगला कारज सीजै
 रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति श्री आदिजिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीअजितनाथ स्तवनं ॥

॥ अनंत जिन आपज्योरे ॥ ए बाल ॥

ज्ञानादिक गुण संपदा रे, तुज अनंत अपार ॥ ते सांजलतां
 ऊपनी रे, रुचि तिए पार उतार ॥ अजित जिन तारज्यो रे ॥
 तारज्यो दीनंदयाल, आ० ता० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जे जे कारणा जे
 हनो रे, सामग्री संयोग ॥ मिलतां कार्य नीपजे रे, कर्ता तनय
 प्रयोग ॥ आ० ॥ ता० ॥ २ ॥ कार्य सिद्धि कर्ता वसु रे, लहिं का
 रण संयोग ॥ निज पदकारक प्रभु मिथ्या रे, दोष निमित्तम जोग
 ॥ आ० ता० ॥ ३ ॥ अज कुलगत केसरी खदे रे, निज पद सिद्ध नि
 दाल ॥ तिम प्रभु जेके जवि खदे रे, आतम शक्ति संजाल ॥
 ॥ आ० ता० ॥ ४ ॥ कारण पद कर्तापिणें रे, करि आरोप अजेद ॥ निज
 पद अर्थी प्रभुप्रकी रे, करै अनेक उमेद ॥ आ० ॥ ता० ॥ ५ ॥
 अद्वया परमात्म प्रभु रे, परमानंद सरूप ॥ स्यादाद सत्तासी रे,

स्वरूप ॥ क० ॥ १३ ॥ माया ममतामें पड्यो जी, कीधी अधिको
 लोभ ॥ परिग्रह भेट्यो कारमो जो, न चढी संजम सोज ॥ क० ॥
 ॥ २४ ॥ लाग्या मुऊनें लाखे जी, रात्रीजो जन दोष ॥ में मन
 भूख्यो माहरो जी, न घरयो धरम संतोष ॥ क० ॥ २५ ॥ इण जव
 परजव दूहव्या जी, जीव चोरासी लाख ॥ ते मुऊ मिछामिडकरं
 जी, जगवंत तोरी साख ॥ क० ॥ २६ ॥ करमादान पनरे कहा
 जी, प्रगट अठारे जी पाप ॥ जे में कीधा ते सहूजी, बगत २ माइ
 बाप ॥ क० ॥ २७ ॥ मुऊ आधार वै एतलो जी, सरदहणा वै शुद्ध ॥
 जिनधर्म भीठो जगतमें जी, जिम साकर ने दूष ॥ क० ॥ २८ ॥
 रिपजदेव तूं राजियो जी, सैतुंजगिर सिणगार ॥ पाप आलोया
 आपणा जी, कर प्रजु मोरी सार ॥ क० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिन-
 धर्मनो जी, पाप आलोयां जाय ॥ मनसुं मिछामिडकरं जी, देतां
 दूर पुलाय ॥ क० ॥ ३० ॥ तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिब
 तूं देव ॥ आण धरुं सिर ताहरीजी, जव २ ताहरी सेव ॥ क० ॥ ३१ ॥
 ॥ कलश ॥ इम चढिय सेतुंज चरण जेव्या नाजिनंदन जिन तणा,
 करजोनि आदिजिनंद आगे पाप आलोयां आपणां ॥ श्रीपूज्य
 जिनचंद सूरि सदगुरु प्रथम शिष्य सुजस्त घणें, गणि सकलचंद
 सुसीत वाचक समयसुंदर गणि जणें ॥ ३१ ॥ इति आलोयण वृद्ध स्त०

॥ अथ आनंदघनजी कृत स्तवन लिख्यते ॥

॥ अथ श्री रूपज देव जिन स्तवनं ॥

॥ करम परीक्षा करण कुमर चलयो रे ॥ ए चाल ॥

रूपज जिनेसर प्रीतम माहरो रे, नर न चाहूं रे कंत ॥
 रीज्यो साहिब संग न परिहरे रे, जागे सादि अनंत ॥ क० ॥ १ ॥
 प्रीत सगाई रे जगमां सहु करे रे, प्रीत सगाई न कोय ॥ प्रीत

उमावता जी, हारयो जनम निटोल ॥ रु० ॥ ए ॥ ज
 वंत ज्ञाप्यो ते किहा जी, किहां मुऊ करणी एह ॥ गज पाव
 खर किम सहे जी, सबल विमासण तेह ॥ रु० ॥ १० ॥ आ
 परुंपुं आकरो जी, जाणो लोक महंत ॥ पिण न करूं परमादिये
 जी, मासाहस दृष्टांत ॥ रु० ॥ ११ ॥ काल अनंत में लह्या जी
 तीन रतन श्रीकार ॥ पिण परमादे पानिया जी, किहां जइ करूं
 पुकार ॥ रु० ॥ १२ ॥ जाणूं उत्कृष्टी करूं जी, उद्यत करूं अ
 विहार ॥ धीरज जीव घरे नहीं जी, पोते बहु संसार ॥ रु० ॥ १३ ॥
 सहज पढ्यो मुऊ आकरो जी, न गमें जूनी बात ॥ परनिद्या क
 रता अकांजी, जायै दिन न रात ॥ रु० ॥ १४ ॥ किरिया करतां
 दोहिली जी, आलस आणे जीव ॥ धरम पतै धंदे पढ्यो जी,
 नरकै करसी रीव ॥ रु० ॥ १५ ॥ अणहंता गुण को कहे जी, तो
 हरखूं नितदीस ॥ को हितसीख जली दियै जी, तो मन आणूं
 रीत ॥ रु० ॥ १६ ॥ वादजणी विद्या जणी जी, पररंजण उपदेश
 ॥ मन संवेग धरयो नहीं जी, किम संसार तरेस ॥ रु० ॥ १७ ॥
 सूत्र सिद्धांत बखाणतां जी, सुणतां करम विपाक ॥ खिण इ
 मनमांहे ऊपजै जी, मुऊ मरकट वैराग ॥ रु० ॥ १८ ॥ त्रिवि
 २ कर उच्चरूं जी, जगवंत तुम्ह हजर ॥ वार २ ज्ञाजू बली जी
 बूटकवारो दूर ॥ रु० ॥ १९ ॥ आप काज सुख राचतां जी, कीध
 आरंभ कोमि ॥ जयणा न करी जीवनी जी, देवदया पर ठो
 ॥ रु० ॥ २० ॥ वचन दोषव्यापक कह्या जी, दाख्या अनरथ वंर ॥
 कूरु कपट बहु केलवी जी, व्रत काधा सत खंर ॥ रु० ॥ २१ ॥
 अणदीधो लीजे तृणो जी, तोही अदनादान ॥ ते दूषण जागा घणा
 जी, गिणतां नावे ज्ञान ॥ रु० ॥ २२ ॥ चंचल जीव रहे नहीं
 जी, राचै रमणी रूप ॥ काम विटंबन सी कहुं जी, ते तूं जाणो

सरूप ॥ क० ॥ १३ ॥ माया ममतामें पड्यो जी, कीधो अधिको
 लोभ ॥ परिग्रह मेढ्यो कारमो जी, न चढी संजम सोज ॥ क० ॥
 ॥ २४ ॥ लाग्या मुऊनें लासवें जी, रात्रीजो जन दोष ॥ में मन
 मूक्यो माहरो जी, न धर्यो धरम संतोष ॥ क० ॥ २५ ॥ इण जव
 परजव दूहव्या जी, जीव चोरासी लाख ॥ ते मुऊ मिछामिडुकमं
 जी, जगवंत तोरी साख ॥ क० ॥ २६ ॥ करमादान पनरे कहा
 जी, प्रगट अछारे जी पाप ॥ जे में कीया ते सहूजी, वगस २ माइ
 बाप ॥ क० ॥ २७ ॥ मुऊ आधार वै एतलो जी, सरदहणा ठे शुद्ध ॥
 जिनधर्म मीजो जगतमें जी, जिम साकर ने दूध ॥ क० ॥ २८ ॥
 रिपजदेव तूं राजियो जी, सैत्रुंजगिर सिणगार ॥ पाप आलोया
 आपणा जी, कर प्रजु मोरी सार ॥ क० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिन-
 धर्मनो जी, पाप आलोयां जाय ॥ मनसुं मिछामिडुकमं जी, देतां
 दूर पुलाय ॥ क० ॥ ३० ॥ तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं सादिव
 तूं देव ॥ आपण धरुं सिर ताहरीजी, जव २ ताहरी सेव ॥ क० ॥ ३१ ॥
 ॥ कलश ॥ इम चढिय सैत्रुंज घरण जेव्या नाजिनंदन जिन तणा,
 फरजोमि आदिजिनंद आगे पाप आलोयां आपणां ॥ श्रीपूज्य
 जिनचंद सूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस धर्णे, गणि सकलचंद
 सुसीत वाचक समयसुंदर गणि जणें ॥ ३१ ॥ इति आलोयण वृद्ध स्त०

॥ अथ आनंदधनजी कृत स्तवन लिख्यते ॥

॥ अथ श्री रूपज देव जिन स्तवनं ॥

॥ करम परीक्षा करण कुमर चल्पो रे ॥ ५ चारु ॥

रूपज जिनेसर प्रीतम माहरो रे, उर न चाहूं रे कंत ॥
 रीज्यो सादिव संग न परिहरे रे, जगि सादि अनंत ॥ क० ॥ १ ॥
 प्रीत सगई रे जगमां सहु करे रे, प्रीत सगई न कोय ॥ प्रीत

सगाई रे निरुपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय ॥ ३० ॥ १ ॥
 कोइ कंत कारख काष्ट जक्षण करे रे, मिलसुं कंतने धाय ॥ ए
 भेलो नवि कहियै संजवे रे, भेलो ठाम न धांय ॥ ३० ॥ २ ॥ कोइ
 पति रंजन अति धणो तप तपै रे, पति रंजन तन ताप ॥ ए पति
 रंजन में नवि चित धरयुं रे, रंजन धातु मिलाप ॥ ३० ॥ ३ ॥
 कोइ कहे लीला रे अलख अलख तणी रे, लख पूरै मन आत ॥
 दोष रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विलास ॥ ३० ॥ ४ ॥
 चित प्रसन्ने रे पूजन फल कह्यो रे, पूज अखंभित एह ॥ कपट रहित
 यह आतम अरपणा रे, आनंदधन पद रेह ॥ ३० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ श्री अथ अजित जिन स्तवनं ॥

॥ माई मन मोह्युं रे श्री विमलाचले रे ॥ ए चाल ॥

पंचमो निहालुं रे बीजा जिनतणो रे, अजित २ गुण धाम ॥
 जे ते जीत्या रे तेणे हुं जीतियो रे, मुरुप किस्सुं मुऊ नाम ॥ पं० ॥
 ॥ १ ॥ चरम नयण करी मारग जोवतो रे, जूलो सयल संसार ॥ जेणे
 नयणे करी मारग जोइये रे, नयण ते दिव्य विचार ॥ पं० ॥ २ ॥
 मुरुप परंपर अनुजव जोवता रे, अंधोअंध पुलाय ॥ वस्तु विचारे
 रे जो आगमे करी रे, तो चरण धरण नही गाय ॥ पं० ॥ ३ ॥ तर्क
 विचारे रे वाद परंपरा रे, पार न पढ़ंचे कोय ॥ अजिमते वस्तु वस्तुगते
 कहे रे, ते विरला जग जोय ॥ पं० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारे रे दिव्य
 नयणतणे रे, विरह प्रब्धो निरधार ॥ तरतम जोगे रे तरतम वासना रे,
 वासित बोध आधार ॥ पं० ॥ ५ ॥ काल सबधि लही पंच निहालसुं
 रे, ए आस्था अविलंब ॥ ए जग जीवे रे जिनजी जाणायो रे,
 आनंदधन मत अंध ॥ पं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संभव जिन स्तवनं ॥

॥ रातडी रमिनें किहांथी आविया रे ॥ १ ॥ चाल ॥

॥ संभव देव ते धुर सेवो सबे रे, लहि प्रभू जेद ॥ सेवन
सेवन कारण पहली जूमिका रे, अजय अक्षेप अखेद ॥ सं० ॥ १ ॥
जय चंच लता हो जे परिणामनी रे, द्वेष अरोचक जाव ॥ खेद
प्रवृत्ति हो करतां याकिये रे, दोष अवोधि लखाव ॥ सं० ॥ २ ॥
धरमावर्त हो चरम करण तथा रे, जव परणति परिपाक ॥ दोष टले
चली दृष्टी खुले जली रे, प्रापति प्रवचन वाका ॥ सं० ॥ ३ ॥ परिचय
पातिक घातक साधसूं रे, अकुशल अपचय चेत ॥ ग्रंथ अध्यात्म श्र
वण मनन करी रे, परिशीलन नय देत ॥ सं० ॥ ४ ॥ कारण
जोगे हो कारज नीपजे रे, एमां कोइ न याद ॥ पण कारण बिण
कारज साधिये रे, ए जिनमत जनमाद ॥ सं० ॥ ५ ॥ मुग्ध सु
गम करी सेवन आदरे रे, सेवन अगम अनूप ॥ देजो कदाचित् ते
चक याचना रे, आनंदयन रसरूप ॥ सं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अभिनंदन जिन स्तवनं ॥

॥ आज निहेन्यो रे दीसे नाहो ॥ १ ॥ चाल ॥

॥ अभिनंदन जिन दरशन तरसिये, वरसण दुर्लभ देव ॥
॥ मत १ जेदे रे जो जइ पूजिये ॥ सहु आपै अहमेव ॥ अजि०
॥ १ ॥ सामान्ये करी दरिण दोहलूं, निरणय सकल विशेष ॥
सदमे धेरयो रे अंधो किम करे, रवि शशि रूप विलेख ॥ अ० ॥
२ ॥ हेतु विवादे हो चित्त धरि जोइये, अति दुरगम नय वाद ॥
आगम वादे हो गुरुगम को नही, ए सबलो विषवाद ॥ अ० ॥
३ ॥ घाती हूंगर आमा अतिघणा, तुज दरिण जगनाथ ॥ धी
राइ करी मारग संचरूं, सेंधु न कोइ साथ ॥ अ० ॥ ४ ॥ दरि
ण २ रटतो जो फिरूं, तो रणरोज समान ॥ जेदने पीपासा हो अ

मृत पाननी, किम ज्ञाजै विप पान ॥ अ० ॥ ५ ॥ तरस न आवे
हो मरण जीवन तणो, सीजे जो दरसन आज ॥ दरसन दुर्ज
ज सुलेज कृपायकी, आनंदघन मादाराज ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमती जिन स्तवनं ॥

॥ राग वसंत तथा केदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा, दरपण जिम अवि
कार सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जांशिथे, परि तरपण सु
विचार ॥ सुग्यानी सु० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आत
मा, बहिरातम धुरि जेद ॥ सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो, पर
मातम अविछेद ॥ सु० सु० ॥ २ ॥ आतम बुद्धे हो कायादिक म
ह्यो, बहिरातम अध रूप ॥ सुग्यानी ॥ कायादिकनो हो साखीधर र
ह्यो, अंतर आतम रूपा ॥ सुग्यानी ॥ सु० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदे हो पूरण
पावनो, वरजित सकल उपाधि सुग्यानी ॥ अतिंदिय गुण गण मणि
आगरू, इय परमातम साध सुग्यानी ॥ सुम० ४ ॥ बहिरा
तमतज अंतरआतमा, रूपसुग्यानी अइ धिर जाय ॥ परमातमनू हो
आतम जाववूं, आतम अरपण दाव सुग्यानी ॥ सुम० ॥ ५ ॥ आ
तम अरपण वस्तु विचारतां, जरम टलै मतिदोष ॥ सु० ॥ परम
प्रदारय संपति संपजै, आनंदघन रस पोष ॥ सु० सुम० ॥ ६ ॥ इति

॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवनं ॥

॥ गुणह विसाला मंगलीक माया ॥ ए चान ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी, विविध जंगी मन मो
हे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता, उदासीनता सोदे रे ॥ शी०
॥ १ ॥ सर्व जंतु हितकरणी करुणा, कर्म विदारण तीक्ष्ण रे ॥
॥ रहित परणामी, उदासीनता विक्ष्ण रे ॥ शी० ॥ २
परदुःख वेदन इछा करुणा, तीक्ष्ण परदुःख रीजे रे ॥ उदासी

नता उन्नय विलक्षण, एक ठामे केम सीजे रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अ
 न्यदांत ते मल कय करुणा, तीक्ष्णता गुण जावे रे ॥ प्रेरण
 विष्णु कृत उदासीनता, इम विरोध मति नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥
 शक्ति व्यक्ति त्रिजुवन प्रजुता, निग्रंथता संयोगे रे ॥ योगी जोगी वक्ता
 मौनी, अनुपयोगि उपयोगे रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु जं
 ग त्रिजंगी, चमत्कार चित्त देती रे ॥ अचरजकारी चित्र विचित्रा,
 आनंदयन पद लेती रे ॥ शी० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्री कुंथुजिन स्तवनं ॥

॥ राग गुजरी ॥

॥ मननो किमही न बाजे हो, कुंथु जिन म० ॥ जिम२ ज
 तन करीनें राखूं, तिम२ अलगो जाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥ १ ॥ रज
 नी वासर वसती छजन, गण पायाले जाय ॥ तांप खापने मुखमुं
 थोथुं, ए ललाणो न्याय हो ॥ कुंथु जिन म० ॥ २ ॥ मुगतितणा
 अनिलापी तपिया, ज्ञान ने ध्यान अज्यासें ॥ वपरीमुं कांड एदवुं
 चितै, नाखे अवले पासे हो ॥ कुं० म० ॥ ३ ॥ आगम आगम
 धरनें हाथे, नाखे किण विध आं० ॥ किहां कणे जो इठ करी इठकूं,
 तो व्यालतणी पर बांकू हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ४ ॥ जो उग कहूं तो
 उग तो न देखूं, सादूकार पिण नांही ॥ सर्वमांड ने सहुग्री अ
 लगूं, ए अचरिज मनमांडी हो ॥ कुं० म० ॥ ५ ॥ जे जे कहूं ते
 कान न धारे, आप मते रहे कालो ॥ सुरनर पंथित जन समजावै,
 समजे न मादारो सालो हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ६ ॥ में जाणयुं ए
 लिंग नपुंसक, सकल मरवने ठेले ॥ बीजी वातें समरथ ठै नर,
 एदने कोई न जेजे हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तिण स
 गलूं सध्युं, एह वात नही खोटी ॥ एम कहे साध्युं ते नवि मानुं,
 ए कहि वात ठे मोटी हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ८ ॥ मनहुं उराराध्य ते

वस आणुं, ते आगमर्थी मति आणुं ॥ आनंदघन प्रभु मादरो आणो,
तो साचू कर जाणुं हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पडिकमणेमें बोलणेमें आवे ॥

॥ पार्श्वनाथजीके छोटे स्तवन लिख्यते ॥

॥ पद ॥ १ कुं ॥

॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर जेटियै, जवना संक्षित पाप परां सव
मेटियै ॥ मन घर जाव अनंत चरण युग सेवतां, अणहुंते एक
कोनि चतुर विध देवता ॥ १ ॥ ध्यान धरुं प्रभु दूरधकी में तादरो,
जल जिम जीनो मीन सदा मन मादरो ॥ जव २ तुमहीज देव
चरण हूं तिर घरुं, जवसायरथी तार अरज आहीज करुं ॥ २ ॥
भूख त्रिपा तप तीत आतप ए ना सदै, तप जप संजम जार त
णी नवी निरवहै ॥ पिण जिनवरजीना नामतणी आसत घणी,
एहिज ठै आधार जगतगुरु अम्ह जणी ॥ ३ ॥ तुम्ह दरिसल विण स्वांम
जवोदधि हूं फिरयो, सहीया डुस्क अनेक न कारज को सरघो
मिलिया दिव प्रभु मुज सदा सुख दीजियै, चौ गइ संकट घूर जग
जस दीजियै ॥ ४ ॥ याकवपति श्रीरुष्णतणी आरति हरी, सैन्य
कीध सचेत जरा दूरे करी ॥ परचा पूरण पास रयण जिम दीपतो
जयधंतो जिनचंद सख रिपु जीपतो ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ॥ २ कुं ॥

मनमोहन भादाराज, तीन जुवन तिरताज ॥ आगेलाख
नगर ब्रह्मपुर राजीया जी ॥ १ ॥ पास जिनंद प्रबान, निरमल
सुगुण निधान ॥ आगेलाख, यामासुत वरुजाणीयाजी ॥ २ ॥ सेव
कनी संजाल, करिय खरी ततकाल ॥ आगेलाख, संकट सहु प्रभु
जी ॥ ३ ॥ चिंता करी चकधूर, प्रयव्यो आनंद पूर ॥
॥ वाट विदमता पिण टली जी ॥ ४ ॥ प्रभुजीने परसाइ,

वीता सह विखवाव ॥ आगेलाव, मन वंगित मुऊ सह फल्या जी
॥ ५ ॥ ध्यान समाधिनी थाप, मिलिया जो प्रनु आप ॥ आगेलाव,
देउपो दरिण वलि सवा जी ॥ ६ ॥ अमृतधर्म सुजाप, सीस कमा-
कलपाण ॥ आगेलाव, वाचक इम वीनती करे जी ॥ ७ ॥ इति पर्व ॥

॥ पद ३ सुं ॥

जयकारी जिनराज, पुरिसावाणी रे ॥ वामासुत वरदाय,
निरमल नाणी रे ॥ १ ॥ पांच कमल प्रनु अंग, निरुपम निरग्या रे ॥
तीन कमल मुऊ संग, आतम दरस्या रे ॥ २ ॥ बदन महोदय देख,
चंद लजायूं रे ॥ गगन जमे निसदीस, इम मन आंशूं रे ॥ ३ ॥
सुरमणि ज्युं सुखकार, नयण विराजै रे ॥ हृदयकमल सुविदास,
थाल ज्युं गजै रे ॥ ४ ॥ प्रनु कर चरण विलोक, पंकज द्वारयो रे ॥
ततखिण निज संवास, जलमें धारयो रे ॥ ५ ॥ इम सरवंग ठदार,
श्रीजिन राया रे ॥ साचे पुण्य संयोग, सादिव पाया रे ॥ ६ ॥ प्रनु-
गुण अनुजवनीर, सांग सुरंगे रे ॥ टाढ्यो पातिक पंक, आतम संगेरे
॥ ७ ॥ वरस अद्वार चोतीस, बदि वैसाखै रे ॥ मनुहर पांचम दीस,
सहु संध साखै रे ॥ नगर मदेवा मांदि, पास जुहारया रे ॥ श्री
जिनचंद मुण्डि, वांगित सारया रे ॥ ८ ॥ इति पर्व ॥

॥ पद ४ सुं ॥

बालेसर मुऊ वीनती गोमीचा, अलवेसर अवधार दो गोमी
चाराप ॥ प्रगट थई पातालबी गोमीचा, सेवक जिन साधार दो
गो० ॥ वा० ॥ १ ॥ आंख थई कृतावली, गो० ॥ दरसण देखण
काज दो ॥ गो० ॥ पांशीनखमे पातली, गो० ॥ दो दरसण मदा-
राज दो ॥ गो० ॥ वा० ॥ २ ॥ तूं सादिव सुपनंतरे, गो० ॥ मिलियो
वै नित भेव दो ॥ गो० ॥ तोपिण आयो कृमदी, गो० ॥ संप्रति क-
रवा सेव दो, गो० ॥ वा० ॥ ३ ॥ जो पोतानो ब्रेवमो, गो० ॥ सगली

प्राति सदीव हो, गो० ॥ भुंयी नीची वातमें, गो० ॥ ये मति घालो
जीव हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ४ ॥ देव घणांही देवले, गो० ॥ दीगंते
न सुहाय हो ॥ गो० ॥ इक दीगं मन ऊत्रते, गो० ॥ इक दीगं
उद्धाय हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ५ ॥ काले वाळ्डे माहरे, गो० ॥
फीधी खरी सजीम हो ॥ गो० ॥ दरसण देवानी नकी, गो० ॥
पाणीवलि पिण ढील हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ६ ॥ ते कीवी तिम हूं
करै, गो० ॥ राखी चिहुं मांहे लाज हो ॥ गो० ॥ बलि अवसर
संनारज्यो, गो० ॥ इम जंपै जिनराज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ५ मुं ॥

अरज सुणीजै अंतरजामी, पास जिनेसर स्वांमी रे ॥ अश्व-
सेन वामाजीके नंदन, त्रिजुवन जन विसरामी रे ॥ अ० ॥ १ ॥ गुण
गिरवा गोमीचा स्वांमी, नाथ निरंजन नामी रे ॥ अ० ॥ जब अ-
टवी वन घन विच जमतां, पुण्ये सेवा पामी रे ॥ अ० ॥ २ ॥
दीनदयाल दया कर दीजै, अनुजव गुण अजिरांमी रे ॥ चरणकमल
सेवा चित चाहत, सुगण सदा हितकामी रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ६ हुं ॥

प्यारी पासकी, देखी मूरत मो मन जाय ॥ प्या० ॥ अश्वसेन
वामाजीके नंदन, देख्यां विल हरखाय ॥ प्या० ॥ १ ॥ तीन लोकमें
महिमा जाकी, सुर नर मुनि गुण गाय ॥ प्या० ॥ नील वरण मन-
मोहन निरख्यो, नाथ गोमीचा राय ॥ प्या० ॥ २ ॥ सुगण सेव-
गकी येही अरज हे; जबडख ताप मिटाय ॥ प्या० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ७ मुं ॥

॥ श्रीचिंतामण पासजी, अजव सुरंग अनूप ॥ सचाइ प्रज्ज-
जी, थारी सांवली सूरत म्हांनु प्यारी लागे राज ॥ वामाजी नंदन
वांदवा, चित्तुममें लागी ठे चूप ॥ सचाइ प्रज्जजी ॥ १ ॥ अशिया-

ली प्रज्ञा आंखनी, वदन सरोज विकास ॥ स० ॥ थां०
 ॥ नयण सलूणें जी निरखतां, ऊपजै अधिक उल्लास ॥
 स० ॥ थां० ॥ २ ॥ अंगज नृप अश्वशेननो, कसणां
 निधि करतार ॥ स० ॥ थां० ॥ पुण्य संयोगे जी पांमीयो, दिल
 रंजन दीदार ॥ स० थां० ॥ ३ ॥ सो दिन सफलो जांणियै, सो
 य घन्टी सुप्रमांश ॥ स० ॥ जगतवच्छल जल जेटियै, जिनवर चतुरसु-
 जाण ॥ स० ॥ थां० ॥ ४ ॥ जालम जेसखगद जयो, श्रीचिं
 तामणि पात ॥ स० ॥ जगपति श्रीजिनचंडनी, अविचल पुरो जी
 आस ॥ स० ॥ थां० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ८ मुं ॥

॥ जीवन मारा तेवीसमा जिनराय रे, जिनवरजी ॥ तुम
 वित देख्यां एक घन्टी न रदाय, म्दारा जिनवरजी ॥ १ ॥ तुमे
 अमारा ह्दीपमलाना हार रे, जि० ॥ अमे तुमारा दास ठियै निर
 धार ॥ म्दारा जि० ॥ लागी तुमसुं लगन हमारी जोर रे, जि०
 ॥ चंद्र चकोरा जलधर नैं जिम मोर ॥ म्दारा जि० ॥ २ ॥ नयण
 तुमारा कामणगारा जोर रे, जि० ॥ चितमो लीधोजिम तिम करि
 नैं चोर ॥ म्दारा जि० ॥ अरज हमारीमानो मोटा देव रे, जि० ॥
 आपो जवरे चरणकमलानी सेव ॥ म्दारा जि० ॥ ३ ॥ आस धरी-
 नैं आवे जे तुह पास रे, जि० ॥ नवि भूंकीजे स्वामी तेद निरास
 म्दारा जि० ॥ मोटानी तो मोटी थायै बुद्धि रे, जि० ॥ इम जांणि-
 ने करज्यो मादरी शुद्ध ॥ म्दारा जि० ॥ ४ ॥ राखेज्यो मुऊ ऊ-
 पर निवम सनेद रे, जि० ॥ अवगुण लांणी ठिटक न देख्यो वेद ॥
 म्दारा जि० ॥ खरतर गद्यपति श्रीजिनलाज सूरिंद रे, जि० ॥ तासु
 पसायें पजणें अनोपमचंद ॥ म्दारा जि० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ९ सुं ॥

॥ सुगण सनेही प्रजुजी अरज सुणीज्यो, अरज सुणीने
 मोसुं महिर धरीज्यो राज ॥ सु० ॥ तुं वै प्रजुजी म्हारो अंत
 जामी, पूख पून्यै थारी सेवा में पांमी राज ॥ सादिव में तो तु-
 जनें जाण्यो वै साचो, कदिय न विलमांहे आणुं हुं काचो राज
 ॥ सु० ॥ १ ॥ साचे तो विलसुं राज करीय सगाई, सुगण प्रजु
 जीस्युं वधज्यो प्रीत सवाई राज ॥ सु० ॥ वरसण प्रजुजी ताद-
 रो विलमांहे वसियो, रात दिवस थारा गुणनो वूं रसियो राज ॥
 सु० ॥ २ ॥ खिजमतगारो प्रजुजी चाकर वूं खासो, कदिय न मेवूं
 प्रजुजी पलजर पासो राज ॥ सु० ॥ मोटानी म्हारे राज मोटा क-
 हीजै, लाहो लाखीणो प्रजुजी संगे लहोजै राज ॥ सु० ॥ ३ ॥
 पिंजर तो फिरती राज केश परदेसे, राज सदाइ मारा विलमांहे
 रदस्ती राज ॥ सु० ॥ रंगै हूं चोल मजीठ रंगाणो, नदिय विसरस्युं
 प्रजुजी वरसण टाणो राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ लुलिर हूं तुम पाये
 जी, लागूं, मोज महिर तुम पासे हूं मांगू राज ॥ सु० ॥ श्रीजि-
 नचंड सदा साधारो, तारक प्रजुजी थे जवजल तारो राज ॥ सु०
 ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद १० सुं ॥

॥ मोरा पास जिनराज, सूरत थारी लागे प्यारी ॥ दीग
 आवे दाय, मो० ॥ जिमर सूरत देखियै प्रजु, तिमर बाधे प्रीत ॥
 तनमन मारा जलसै कांइ, रुमी प्रीतनी रीत ॥ मो० ॥ १ ॥ नयण
 कमलदल पांखनी प्रजु, मुखनो पुनमचंड ॥ दीपशीखाती नासिकां
 कांइ, दीग परमानंद ॥ मो० ॥ २ ॥ कौने कुंमल जिगमिगे प्रजु,
 कंठे नवसर द्वार ॥ चंपकली सोदे जली कांइ, मुखनै वयोत अपार
 ॥ मो० ॥ ३ ॥ तूं वै जगनो बालहो प्रजु, थारे सेवण कोर ॥ म्हारे

तूँहिज साहिवो काँइ, बंदू बे कर जोरु, ॥ मो० ॥ ४ ॥ आज
मनोरथ सब फलया, में दीठा श्रीजिनराज ॥ सदानंद पाठक तणा
काँइ, सीधां सखलां काज ॥ मो० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ११ मुं ॥

जिनजी महिर करीने राज, दरसण वहिलो दीजै ॥ दीजै
२ जी मादाराज, कारज सगला सीजै ॥ ए आंरणी ॥ मुऊ मन
जमरतणी पर मोह्यो, भोगायो नचि बूटै ॥ प्रेम राग बंधायो पूरण,
ते तो कदेय न खूटै ॥ जि० ॥ १ ॥ अलगथकां पिण हूं प्रजु तुमने,
जंद्दिय विसाहं दिखसुं ॥ रात दिवस एहवी मन बरतै, जाणूं नइ
मिलुं तुमसुं ॥ जि० ॥ २ ॥ पूरव पुन्यथकी में पायो, ए अवसर
आजूषो ॥ मिलियो तूं प्रजु पास चिंतामण, साहिव सहज सलूषो
॥ जि० ॥ ३ ॥ थारे तो सेवग ठै धहुला, मो सरिपा लख ग्याने,
माहरे तो इण जगमे जोतां, थारे नही कोइ टाणे ॥ जि० ॥ ४ ॥
आस दिये इक ताहरी राखूं, बीजो मुख नही जाखूं ॥ अमृत जेम
नही तुऊ गुणरस, तारो जल किम चाखूं ॥ जि० ॥ ५ ॥ मोहन
ए मुझानी महिमा, कहतां पार न आवे ॥ सायर खहर मालानें
गिणतो, कहो कुण मति उपजावे ॥ जि० ॥ ६ ॥ जगतपणै किंचित
गुण जाखूं, हूं म्दारी मति सारू ॥ निरुपमा अनुपम तुऊ गुण
खायक, त्रिजुवन जीवन सारू ॥ जि० ॥ ७ ॥ बरस अठार बली
इकताले, भिगसर पख उजवाले ॥ इग्यारस दिन अधिक सनेदे,
पात्र करी सुविशाले ॥ जि० ॥ ८ ॥ जेतलगिरि श्रीसंघ जुगतसुं,
मेखो तिहां भोगायो ॥ लाज उदय जिनचंदने प्रजुजी, बांध्यो प्रेम
सवायो ॥ जि० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ पद १२ मुं ॥

॥ तूं मेरे मनमें प्रजु तूं मेरे दिलमें, ध्यान धरूं पल२में ॥

पांस जिनेसर अंतरजामी, सेवा कहुं विनशमें ॥ तूं० ॥ १ ॥ का
हूको मन तरुणीसें राख्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरो मन प्रजु
तुमहीसे राख्यो; ज्युं चात्रक चित्त धनमें ॥ तूं० ॥ २ ॥ जोगीसर
तेरी गति जांलै, अलख निरंजन विनमें ॥ कनककीरत सुखसागर
तूही, सादिव तीन जुवनमें ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोहनो रे, केवल ज्ञान निधान ॥ जाव
दयासागर प्रजु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रजु सिद्ध
धया, संघ सकल आधारो रे, दिवक्षण जरतमां ॥ कुण करशे उर-
गारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहूणूं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे
संघ ॥ साथे कुण आधारथी रे, परमानंद अजंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥
मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहां परदा अग्रमाय ॥ वीर विहूणां
जीवना रे, आकुल व्याकुल धायो रे ॥ ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय
वेदक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे बीठे सुख कपजे रे,
ते विण किम रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्दामक जवतमुद्धनो रे,
जव अटवो सज्जवाह ॥ ते परमेतरविश मिद्धयां रे, किम बाधे उत्साहो
रे वीर० ॥ ६ ॥ वीर अकां पण श्रुत तथो रे, हुंतो परम आधार ॥
हमणां श्रुत आधार ठे रे, ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥
इश कालें सवि जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यायो सेवो जवि-
जना रे, जिनपदिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचा-
रिज मुनि रे, सहुनें इश परसिद्ध ॥ जव जव आगम संगथी रे, देव-
चंद्र पद लीघो रे ॥ वीर० ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमाला स्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय कवच समोत्तरा, जत्रा गुण जरया रे ॥ सिद्धा
साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुनि

जया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक वेदरो,
 गिरिसहरो रे ॥ जरतें जराव्यां विंव ॥ ती० ॥ आत्रु चौमुख अति-
 जजो, त्रिजुवन तिलो रे ॥ विमल वसई वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥
 समेतशिखर सोदामणो, रलियामणो रे ॥ सिद्धा तीर्थकर वीश
 ॥ ती० ॥ नयरा चंपा निरखीयें, दैये दरखीयें रे ॥ सिद्धा श्रीवा-
 सुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरो, रुद्धें जरी रे ॥ मुक्ति
 गया मदावोर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुदारीयें, दुःख वारीयें रे ॥
 अरिहंत विंव अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ बिकानेरज वंदीयें, चिर नंदीयें
 रे ॥ अरिहंत वेदरां आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो
 रे ॥ फलोधी अंजण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अंजावरो, अ-
 मीऊरो रे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक वेदरो,
 जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिसदेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनामुलाई जादवो,
 गोमी स्तवो रे ॥ ओवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां वेदरां,
 धावन जलां रे ॥ रुचक कुंरुल चारु चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती
 अशाश्वती, प्रतिमा बती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ
 जात्रां फल तिदां, होजो मुऊ इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ८ ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ आज आपें चालो सहीयो, सिद्धाचल गिरि जायें ॥ सिद्धा-
 चलगिरि जईए वहेनी, विमलाचलगिरि जईहं रे ॥ आ० ॥ सुण
 घेहेनी ए गिरिनी महिमा, आदिजिनंद इम जांखी ॥ जस्तादिक
 नरपतिने आगल, इंद्रादिक सहु साखी रे ॥ आ० ॥ १ ॥ इणां गि-
 रिवरिये काल अनंते, साधु अनन्ता सीधा ॥ जन्म मरणनां दुःख
 गोमीने, असल अखय गुण लीधा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इण गिरि स-
 न्मुख पगलां जरतां, आतम शुद्ध सुजावें ॥ कोमि जवांरां पातक
 लीधां, एक पल रुमें जावे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ सासतो तीरथ ए श्रेष्ठ

जो, जोतां लगे मीगो ॥ तीन जुवनमें इण गिरि तोले, वीजो कोइ
 जे वीगो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नीरंजनशुं नेह धरीने, आगें ललग क
 रस्यां ॥ अन्नत आदि जिनैसर निरखी, प्रेम सुधारस पीस्यां रे ॥
 ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुदप सुगंधा लेइ पचरंगा, हार सुगंधा गूंथी ॥ प
 हिरावी प्रजु कंठें लहिस्वां, शिव मारगनी सूथी रे ॥ आ० ॥ ६ ॥
 गहिर स्वरें जिनवर गुण गातां, जात्र नवाणूं करियें ॥ मन गमती
 जमती विच जमतां, जवस पर निततरियें रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूरव
 नवाणूं वार प्रथम जिन, रायण रूखे आया ॥ ए तरथ शुज जावें
 फरसी, करियें निरमल काया रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ लाज नदे ए गिरि
 वर लहियें, कदे इम केवल नाणी ॥ श्रीजिनचंद सदा हित बत्तल,
 प्रेम यणे चित्त आणी रे ॥ आ० ॥ ९ ॥ इति सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ अथ पारणा महावीर स्वामीका लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्रीअरिहंत अनंत गुण, अतिशय पूरण गात्र
 मुनि जे ज्ञानी संजमी, कहिये उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्रतणी ॥
 मोदना, करतो जीरणसेठ ॥ आवक अच्युय गति लदे, नयभैषे
 देठ ॥ २ ॥ दस चउमासा वीरजी, विचरत संजम वास ॥ बेश
 लापुर आविया, इग्यारमी चउमास ॥ ३ ॥ ढाल ॥ चोमासी :
 ग्यारमी जी, विचरत साहसवीर ॥ वेतालापुर बाहिरे जी, आव्य
 श्रीमहावीर ॥ १ ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जां, जले में जेठ्या श्री
 जिनराय ॥ सखीरी चोक पुरावो आय, मेरे जाग्य अनोपम माय
 ॥ ज० ॥ २ ॥ बलदेवनो ठे देहरो जी, तिहां प्रजु काठसग स
 थ ॥ पंचस्काण चोमासनो जी, स्वामीए तप कीय ॥ ज० ॥ ३ ॥
 ॥ तिहां वसे जी, पाले आवकधर्म ॥ आकारे तिण ठेठ
 ॥ जाणे श्रीजिन मर्म ॥ ज० ॥ ४ ॥ आज अठे उपवा
 जी, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ काले सदी प्रनु जीमस्ये श्री,

से हथ देख्युं दान ॥ ज० ॥ ५ ॥ सदा सेठ इम चितवे जी, हो
 ती सफल मुऊ आस ॥ पक्ष मास गिणतां थकां जी, पूरी पक्ष चो
 मास ॥ ज० ॥ ६ ॥ सामग्री आहारनी जी, जीरण कीधी तइ
 पार ॥ प्रजूनो मारग देखतो जी, बेवो घरने वार ॥ ज० ॥ ७ ॥
 घर आवे वे पाहुणो जी, निहुत्यो एकण वार ॥ प्रजुजी कां न
 पधारसी जी, में निहुत्या वारंवार ॥ ज० ॥ ८ ॥ पीठे करस्युं
 पारणो जी, हूं प्रजूनै पमिवाज ॥ होय मनोरथ एदवो जी, तोय
 विन वरसे आज ॥ ज० ॥ ९ ॥ अवतर ऊठ्या गोचरी जी, श्री
 सिद्धारयपुन ॥ वेसावापुर आवतां जी, पूरणघरे पहुत ॥ ज० ॥
 १० ॥ मिळ्याखी जाणे नदी जी, जंगम तीरथ एह ॥ चेनो प्रजे
 इम कहे जी, कांइक जिहा देह ॥ ज० ॥ ११ ॥ चाटू जरने वा
 कला जी, प्रजूनै आंगी दीध ॥ नीरणी तेदी खियर जो, तिहां प्र
 जू पारणो कीध ॥ ज० ॥ १२ ॥ देव वजावे डुंडुजि जी, जै वो
 ले कर जेनि ॥ देम वृष्टि तुइ तिहां जो, साढोवारे कोनि ॥
 ज० ॥ १३ ॥ कहे सेठ तुने स्युं दियो जी, कियो पारणो वीर ॥
 लोकां प्रते इन कहे जी, में बहिराइ कीर ॥ ज० ॥ १४ ॥ राजा
 दिक् सद्गुण कहे जी, धनश्च पूरणसेठ ॥ उंची करणी तेंकरी जी,
 अवर सहू तुऊ देठ ॥ ज० ॥ १५ ॥ जीरणसेठ सुणे तवे जी, वा
 जित डुंडुजिनाद ॥ अन्यत्र कियो प्रजु पारणो जी, मनमें अयो
 विरवाद ॥ ज० ॥ १६ ॥ हूं जगमें अजागियो जी, मेरे न आया
 सांम ॥ कल्पवृक्ष किम पांमोये जी, मारुमंरुल दांम ॥ ज० ॥
 १७ ॥ जेता मनोरथ में किया जी, तेता रह्या मनमांदि ॥ निर
 धन जिमर चितवे जी, तिमर निरफल थाय ॥ ज० ॥ १८ ॥ स्वा
 मी तिहां कियो पारणो जी, कियो अन्यत्र विहार ॥ आया पात
 संतानिया जी, तिहां मुनि केवलघार ॥ ज० ॥ १९ ॥ वेशालापुर

राजियो जी, लोकोस्थुं आणंद ॥ राय प्रश्न पूत्रे इस्थो जी, सुगुह
 चरणे अरविंद ॥ ज० ॥ २० ॥ मेरे नगरमें को अठे जी, जीव पु
 न्ये जेतवंत ॥ कहे केवली आज तो जी, जीरणसेठ महंत ॥ ज० ॥
 २१ ॥ राय कहे किण कारणे जी, जीरणसेठ महंत ॥ दांन दियो
 जिन वीरने जी, पूरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २२ ॥ राय प्रते कहे
 केवली जी, पूरण दीनो दांन ॥ हेमवृष्टि फल तेहने जी, अवर न
 कोइ प्रमाण ॥ ज० ॥ २३ ॥ देवलोक तिण वारमें जी, जीरण
 धोंढ्यो बंध ॥ विना दांन दियां लह्यो जी, उत्तम फल संबंध ॥ ज०
 ॥ २४ ॥ घरी एक सुर डुंडुजि जी, जो न सुणतो कान ॥ लहि
 तो जीरण तो सही जी, केवल अविचल ठाम ॥ ज० ॥ २५ ॥
 राजा जीरणने दियो जी, अधिक मांन सनमांन ॥ मुकनगरमें आ
 पियो जी, जोवो पुण्य प्रमाण ॥ ज० ॥ २६ ॥ दांन दियो सु
 पात्रने जी, ते निष्फल नहि जाय ॥ पात्रदांन अनुमोदना जी,
 जीरण जिम फल थाय ॥ ज० ॥ २७ ॥ इम जांणी अनुमोदना
 जी, दांन सुपात्र रत्ना ॥ दांन देवे सुपात्रने जी, तेहने नमे सु
 नि मांन ॥ ज० ॥ २८ ॥ इति श्रीवीर प्रभु पारणा संपूर्ण ॥
 ॥ अथ आलोयण जीवरासि स्वभावण पद्मावती लिख्यते ॥
 ॥ दिवं राणी पद्मावती, जीवरास स्वभावे ॥ जांणपणो ज
 गे दोहिलो, इण बेला आवे ॥ ते मुज मिहामिडुकरं ॥ १ ॥ अ
 रिहंतनीसाख ॥ जे में जीव विराधिया, चोरासी लाख ॥ ते मु०
 ॥ २ ॥ साते लाख पृथ्वीतणा, साते अप्पकाय ॥ सात लाख ते
 ककायना, साते बलि वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दस प्रत्येकवनस्पती, चव
 दे लाख साधार ॥ वि ति चउरेंदी जीवना, वे वे लाख विचार ॥
 ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यच नारकी, च्यार प्रकाशी ॥ चवदे लाख
 मनुष्यना, ए लाख चोरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इणजव परजव ते

विया, जे पाप-अद्वार ॥ त्रिविध करवोसरुं, डुरगति दातार ॥ ते०
 ॥ ६ ॥ दिंसा कीधी जीवनी, बोड्या मृषावाद ॥ दोष अदत्तादां
 नना, मैथुन उनमाद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेड्यो कारमो, की
 थो क्रोध विशेष ॥ मान माया खोज में कीया, बलि राग ने द्वेष
 ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूहव्या, दीधा कूमा कलंक ॥ नि
 द्या कीधी पारकी, रति अरति निस्तंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चामो की
 धी चोत्तरे, कीधो थांपणमोसो ॥ कुयुरु कुदेव कुधर्मनो, जलो आं
 यो जरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकोने जव जे किया, जीवना
 वध घात ॥ चिनीमार जव चिरकला, मारघादिन ने रात ॥ ते०
 ॥ ११ ॥ माठीगर जव माठला, जाड्या जलवासा ॥ धीवर जील कोलो
 जवे, मृग मारघा पास ॥ ते० ॥ १२ ॥ काजी मुखाने जवे, पदी
 मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक जवे किया, कीधा पाप अघोर ॥ ते० ॥
 १३ ॥ कोटवालजवमें किया, आकाराकर दंरु ॥ वंदीवान मराविया,
 कोरमा ठनी दंरु ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने जवे, दीधा नार
 की डुक्क ॥ वेदन जेदन वेदना, तामना, अति तिस्क ॥ ते० ॥ १५
 ॥ कुंजारने जव में किया, निवाह पचाया ॥ तेलीजव तिल पि
 लिया, पापे पेट जराया ॥ ते० ॥ १६ ॥ हालीने जव हल ख
 र्क्या, फाळ्या पृथ्वी पेट ॥ सूत्राने दान किया घणा, दीधा बलध
 चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने जव रोपिया, नानाविध वृक्ष, मूल
 पत्र फल फूलना, लागी पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधोवादी
 आंगमी, जरया अधिका चार ॥ पोठी छंट कोमा पड्या, दया ना
 बी लिगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ ठीप्राने जव ठेतरपो, कीधा रांगणपास
 ॥ अगनि आरंज किया घणा, धातुरवाद अज्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ सूर
 पणे रणजुंजतां, मारघां माणस वृंद ॥ मदिरा मांस माखण जरुघा,
 खाधा मूला ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खिणार् धातुनी, पाणो

उलंघ्या ॥ आरंज कीधा अतिषणा, पोते पाप ते संख्या ॥ ते० ॥ २२ ॥
 अंगारकर्म किया बली, धरमें दब दीधा ॥ सूत लेइ वीतरागना,
 कूमा कोसज पीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिल्ली जव ऊंर गिह्या, गि
 लोइ हत्यारी ॥ मूढ गिमारतणे जवे, में जूं लीख मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥
 जारुजूजातणे जवे, ऐकेंडी जीव, ज्वार चिणाग हुंसे किया, पामंता
 रीव ॥ ते० ॥ २५ ॥ खांरुण पीसण गारना, आरंज अनेक ॥ रांण
 इंधण अगनिना, कीया पाप उदेग ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकया ड्यार
 कीधी बली, सेव्या पांच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग पमादिया, रोदनवि
 खवाद ॥ ते० ॥ २७ ॥ साधु अने श्रावकतणा, ब्रत लेइने जणा,
 मूल अने उत्तरतणा, मुळ दूषण लागा ॥ ते० ॥ २८ ॥ साप विष्णु
 सिंद चीतरा, तिकरा ने समली ॥ हिंसक जीवतणे जवे, हिंसा
 कीधी सजली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सूआवमे दूषण घणा, बलि गरज
 गलाया ॥ जीवाणी ढोळ्या घणा, शीलघ्नत जंजाया ॥ ते० ॥ ३० ॥
 जव अनंत जमतां थकां, किया कुटुंब संबंध ॥ त्रिविध २ कर यो-
 सरुं, तिणसुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ इणजव परजव इण परे,
 कीधा पाप अलत्र ॥ त्रिविध २ कर योसरुं, करुं जनन पवित्र ॥
 ॥ ते० ॥ ३२ ॥ राग बेरामी जे सुणे, ए तीजी ढाल ॥ समयसुंदर
 कहे पापयां, वूटे ततकाल ॥ ते० ॥ ३३ ॥ इति आलोचना सिन्हाय सं० ॥

॥ अथ गोढीपार्श्वनायजीका वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूरा ॥

वाणी ब्रह्मा यादनी, जागे जग विह्वल ॥ पासतणा गुण
 गावतां, मुळ मुख बसज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगे अणदिलपुरे, अद
 मदावाडे पास ॥ गोमीनी घणी जागतो, सद्गुनी पूरे आत ॥ २ ॥
 शुभ वेला शुभ दिन घडी, महुरत एक मंशाण ॥ प्रतिमा तीने
 ॥ ३ ॥

॥ दाह ॥ १ ॥

गुणहि विशाला भंगलीकमाला, वामानो सुत साचो जी ॥
 धण कण कंचण मणि माणक दे, गोमतीनो घणी जाचो जी ॥ गु० ॥
 ॥ ४ ॥ अणदिलपुर पाटणमें प्रतिमा, तुरकतणे घर हूँती जी ॥
 अश्वनी जूमे अश्वनी पीसा, अश्वनी वाल विगूती जी ॥ गु० ॥ ५ ॥
 जागंतो जह जेहने कहिये, सुदणो तुरकने आपे जी ॥ पास जि
 नेसर केरी प्रतिमा, सेवण तुज संतापे जी ॥ ६ ॥ गु० ॥ प्रहळ
 ठीने परगट करजे, मेघागोठीने देजे जी ॥ अधिको मले जे ठगे
 मले जे, टक्का पांचसे लेजे जी ॥ ७ ॥ गु० ॥ नहि आपित तो मा
 रीस मुरमिस, मोरबंध बंधास्ये जी ॥ पुत्र कलत्रधन हय गय हाथी,
 खाव घणी घर जास्ये जी ॥ ८ ॥ गु० ॥ मारग पहिलो तुजने मिल
 स्ये, सारथवाहो गोठी जी ॥ निखवट टीखो चोखा चोढ्या, वस्तु
 वदे तस पोठी जी ॥ ९ ॥ गु० ॥

॥ दहा ॥

मनसुं बिहतो तुरकनो, माने वचन प्रमाण ॥ बीबीने सुह
 णातणो, संजलावे सहिनांण ॥ १० ॥ बीबी बोले तुरकने, वंसा
 देव हे कोइ ॥ अब सताव परगट करो, नदितर मारे सोय ॥ ११ ॥
 पावलीरात परोमिये, पहली बांधे पाज ॥ सुदणामांहे सेवने, संज
 लावे बकराज ॥ १२ ॥

॥ दाह २ ॥

एम कही यक्ष आयो राते, सारथवाहूने सुदणो जी ॥ पास
 तंणी प्रतिमा तूं लेजे, लेतो सिर मत धूणे जी ॥ ए० ॥ १३ ॥
 पांचसे टक्का तेहने आपे, अधिको म आपित वारु जी ॥ जतन करी
 पहुंचाडे थानक, प्रतिमा गुण संजारु जी ॥ ए० ॥ १४ ॥ तुजने
 होसी बहु फलदायक, जाइ गोठो सुणजे जी ॥ पूजे प्रणमे तेहना
 पाया, प्रदक्कनीने शुणजे जी ॥ ए० ॥ १५ ॥ सुदणो देहने सुर चाख्यो

आपणे आनक पढुतो जी ॥ पाटणमांहे सारथवाह, हींमे तुरकने
जोतो जी ॥ ए० ॥ १६ ॥ तुरके जातो दीगे गोठी, बोखा तिल
क निलाने जी ॥ संकेत पढुतो साचो जाणी, बोखावे बहु लाने
जी ॥ ए० ॥ १७ ॥ मुऊ घर प्रतिमा तुज्जे आपू, श्रीपास जिने
सर केरी जी ॥ पांचसे टक्का जो मुऊ आपे, तो मोल न भांगू फेरी
जी ॥ ए० ॥ १८ ॥ नाणो देइ प्रतिमा लेइ, थानक पढुतो रंगे जी,
केशर चंदन मृगमद घोली, विधसुं पूजा रंगे जी ॥ ए० ॥ १९ ॥ गादी
रुनी रुनी कीधी, ते मांदि प्रतिमा राखे जी ॥ अनुक्रम आण्या
पारकरमांहे, श्रीसंघने सुर साखे जी ॥ ए० ॥ २० ॥ उद्यव दिन
अधिका आये, सत्तर जेइ सनात्रो जी ॥ ठांमरना दरसश करवा,
आवे लोक प्रजातो जी ॥ ए० ॥ २१ ॥

॥ इहा ॥

इक दिन देखे अवधिसुं, पारकरपुरनो जंग ॥ जतन करू
प्रतिमातणो, तीरथ अठे अजंग ॥ २२ ॥ सुदणो आपे सेवने, धन,
अटवी ऊजाम ॥ महिमा आस्ये अतिथणी, प्रतिमा तिहां पढुचाना ॥
॥ २३ ॥ कुशल केम तिहां अठे, तुज्जे मुज्जे जांण, संका गोनी
काम कर, करतो म करीत कांण ॥ २४ ॥

॥ दारु ॥

॥ पास मनोरथ पूरा करे, वदण एक वृषेज जोतरे ॥ पा
करथी परियाणो करे, इक थल चंद्र बीजे ऊतरे ॥ २५ ॥ घारे कोइ
आयां जेतले, प्रतिमा नवि चाले तेतले ॥ गोठी मनह विमासण पर
पास जवन मंभावू सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किम करूं प्रयाण, छुट
को कोइ न दीसे वदण ॥ देवल पास जिनेसर सरतणो, मंभाठं कि
म घरथे विसो ॥ २७ ॥ जल विन श्रीसंघ रहस्ये किदा, सिलावटो
किम आवे इहां ॥ चिंतातुर अयो निदा सदे, पदराज आयी इम

कहे ॥ २८ ॥ गूढली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीज तिहा ॥
 स्वस्तिक सोपारी सहिनाण, पादणतणी जलटस्ये खांण ॥ २९ ॥
 श्रीकल सजल तिहां किए जुठ, अमृत जल नितरिस्ये कूठ ॥ खा
 राकूआनो इह सहनाण, जूमि पड्यो ठे नीलो गण ॥ ३० ॥ ति
 लावटो सीरोही वसे, कोढ पराजवियो कितमिसे ॥ तिहांथकी तूं
 इहा आणजे, सत्य वचन माहरो मानजे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन
 थिर थापियो, शिलाचटाने सुदणो दियो ॥ रोग गमाउं ने पूरुं आस,
 मासतणो मंमे आवास ॥ ३२ ॥ सुपनमांदि मांन्यो ते वेण, हेम
 वरण देखाज्यो नेण ॥ गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावटेने गया
 तेमवा ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवे सूरमो, जीमे खीरखांन घृत चूरमो ॥
 घमे घाट करे कोरणी, लगन जखे पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंज २
 कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रखी ॥ रंगमंमप रलियामणो
 रसे, जोतां मानवनो मन वसे ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्राशाद, स्वर्ग
 समो मंमे आवास ॥ दिवस विचारी इमो घड्यो, ततखिण देवल
 ऊपर चढ्यो ॥ ३६ ॥ गुज लगन गुज बेला वास, पद्यासण वेठा
 श्रीपास ॥ महिमा मोटी मेरु समान, एकलमल वगमे रहे वान ॥
 ३७ ॥ बात पुराणी में सांजली, तवनमांदि सूधी सांकली ॥
 गोठीतणा गोतरिया अवे, यात्र करीने परणे पठे ॥ ३८ ॥

॥ दहा ॥

विघन विहारण जइ जग, तेहनो अकल सरूप ॥ प्रीत करे
 शीसंधने, देखामे निजरूप ॥ ३९ ॥ गिरठ गौरीपास जिन ॥ आपे
 गरथ जंमार ॥ सानिध करे शीसंधने, आस्या पूरणहार ॥ ४० ॥
 नील पलाणे नील हय, नीलो थइ असवार, मारग चूकां मानवी,
 ट. दिखावणहार ॥ ४१ ॥

॥ शाल ४ ॥

वरण अढारतणो लहे जोग, विधन निवारे टाले रोग ॥
 वित्र अइ समरे जे जाय, टाले सगला पाप संताप ॥ ४१ ॥ नि
 धनने घर धननो सूत, आपे अपुत्रियाने पूत ॥ कायरने सूरपणो
 धरे, पार उत्तारे लछी वरे ॥ ४३ ॥ बोझागीने दे सोझाग ॥ पण
 विहूणाने आपे पाग ॥ ठांम नही तेदने थे ठांम ॥ मन वंजित पूरे
 अजिरांम ॥ ४४ ॥ निरधाराने थे आधार, जवसापर कतारे पार ॥
 आरतियानी आरत जंग, धरे ध्यान ते लहे सुरंग ॥ ४५ ॥ समरथां
 साद दिये जकराज, जेइना मोटा अछे दिवाज ॥ बुद्धिहीनने बुद्धि
 प्रकाश ॥ गूंगाने थे वचन विलास ॥ ४६ ॥ डुखियाने सुखनो वा
 तार, जयजंजण रंजण अवतार ॥ बंधन तूटे बेसीतणा, श्रीपार्श्व
 नाम अक्षर समरणा ॥ ४७ ॥

॥ दूरा ॥

श्रीपार्श्व नाम अक्षर जपे, बिम्बानर विकराल ॥ हस्तिबुद्ध
 दूरे टले, दुहर सींह सियाल ॥ ४८ ॥ चौरतणा जय चूकये, विप
 अमृत उरुकार ॥ विषधरना विष कतारे, संग्रामे जय जयकार ॥ ४९ ॥
 रोग शोग दाखिइ डाल, देइग दूर पूलाय ॥ परमेसर श्रीपासनो, म-
 दिमा मंत्र जपाय ॥ ५० ॥

॥ शाल ५ ॥ शाल कडलानी ॥

जैजततू २ जंज उपशम घरी, जै ह्रीं श्री श्रीपार्श्व अक्षर ३
 पंते ॥ जूतने प्रेत जोटिंग वितर मुरा, उपशमे वार इकबीस गुणते
 ॥ ५१ ॥ जै ० ॥ दुहरा रोग शोगा जरा जंतरा, ताय एकंतरा ३
 सर्पते ॥ गर्जबंधन मणं सर्प विवृ विपं, चात्रिका वास मेवाजलते
 ॥ ५२ ॥ जै ० ॥ साइणी माइणी रोइणी रंजणी, फोटका मोटका
 दोष हुंते ॥ दाद ऊंदरतणी कोल नोलां तणी ॥ श्रान सियाल वि-

कराल दंते ॥ ५३ ॥ ॐ ॥ धर्येण पद्मावती समर सोजावती, वा
 आघाट अटवी अटते ॥ लखमी लोंको भिले सुजस वेला वले
 सयल आस्था फले मन हसते ॥ ५४ ॥ ॐ ॥ अष्ट महाजय हं
 कानपीना टले ॥ ऊतरे शूल शीसग जणते ॥ वदत वर प्रीत
 प्रीतविमल प्रज्जु, श्रीपास जिण नांम अजिराम भंते ॥ ५५ ॥ इति
 श्रीगोमीपार्श्वे जिन स्तवनं ॥

॥ अथ मंगलीक लिख्यते ॥

धम्मो मंगल मुक्किं अहिंसा संजमो तवो ॥ देवा वितं न
 संति, जस्त धम्मे सयामणो ॥ १ ॥ जहा डुम्मस्त पुप्फेसु, जम
 आवि अइरसं ॥ नव पुप्फं किळामेइ, सोइ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥
 एव मेए समसा बुत्ता, जे खोए संति साहुणो ॥ विहंगमाइ पुप्फेसु
 दाणज्जे सणेया ॥ ३ ॥ वयं च वि चिं लज्जामो ॥ नहि कोइ उ
 हम्मइ ॥ अदागमे सुरीयंते, पुप्फेसु जमरो जहा ॥ ४ ॥ महुक
 समा बुद्धा, जे ज्वंति अणिस्सिया ॥ नाणापिं रय्याहिंता, तेण बु
 ति साहुणोत्तिवेभि ॥ ५ ॥ इति ॥ सर्व मंगल मांगळ्यं, सर्व कल्या
 कारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणं जैनं, जयति साशनं ॥ १ ॥ मंगलं जगदान्
 रो, मंगलं गौतम प्रज्जु ॥ मंगलं स्थलज्जज्ञाया, जैनोपमोस्तु मंगलं ॥

॥ अथ आत्मरक्षा स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ ॐ नमो परमेष्ठि नमस्कारं, सारं नवपदारमकं ॥ आ
 रक्षा करं वज्र, पंजरा जस्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं
 शिरस्त्रिशिर संस्थितं, ॐ नमो सब सिद्धाणं, मुखे मुखपटंबरं ॥
 ॥ ॐ नमो आपस्त्रिआणं, अंगरक्षाति शायिनी ॥ ॐ नमो उ
 ज्जायाणं, आयुधं हस्तयोर्दंढं ॥ ३ ॥ ॐ नमो खोए सब साहु
 मोचके पादयो सुजे ॥ एतो पंच नमोकारो, शिवा वज्रमई त
 ॥ ४ ॥ सब पावण्यासणो, वप्रो उज्जमयोवहि ॥ मंगलाग्रं च

ब्रह्मि, स्वादिरंगार स्वातिका ॥ ५ ॥ स्वादांतं च पदं ज्ञेयं, पठमं
 हवइ मंगलं ॥ वप्रो परिवज्जमयं, विधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥ मदा
 प्रजावात् रक्षेयं, कुक्षोपख नाशनी ॥ परमेष्टि पदोद्भूता, कथिता
 पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्टी पदे सदा ॥ तस्य
 नस्यान्नयं व्याधि, राधि आपि कदाचनः ॥ ॥ ८ ॥ इति आत्मरक्षा
 स्तोत्रं संपूर्णं ॥

॥ अथ नवकार स्तवनं ॥ (छंद)

॥ सुखकारण ज्ञवियण समरो नित नवकार, जिनशाशन
 आगम चवदे पूरव सार ॥ इण मंत्रनी महिमा कहितां न लहुं
 पार, सुरतरु जिम चिंतित वंठितफल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव
 मानव तेव करे कर जोरु, ज्ञयमंरुल विचरे तारे ज्ञवियण कोरि
 ॥ सुरठं दे विलसे अतिशय जास अनंत, पहिले पद नमिये अरिणं
 जिन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पनरे जेदे सिद्ध थया जगवंत, पंचमि
 गति पुहता अष्ट कर्म करि अंत ॥ कल अकल सरूपी पंचानंतक
 जेह ॥ सिद्धना पाय प्रणमुं बीजे पद बलि एह ॥ ३ ॥ गच्छतार
 धुरंधर सुंदरं शंशिहर शोम, कर शारणवारण गुण ठत्तीसे शोम
 ॥ श्रुत जाण शिरोमण सागर जेम गंजीर, तीजे पद नमिये अ
 चारज गुण धीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सूत्र जणावे सार
 तप विघ संयोगे ज्ञाखे अरथ विचार ॥ मुनिवर गुणयुक्ता ते
 हिये भवझाय, चोथे पद नमिये अदनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पं
 चाश्रव टाळे पाले पंचाचार, तपसी गुणधारी चारी विषय विकार
 ॥ त्रस थावर पीहर लोकमाहि ते साध, त्रिविधे ते प्रणाम परमा
 रथ जिण लाध ॥ ६ ॥ अरि हरि करि साइण माइख जूत वेताल,
 सब पाप पणासे विलसे मंगलमाल ॥ इण समरयां संकट दूर ट
 खे ततकाल, जेपे जिण गुण इम सुरवर तीस रताल ॥ ७ ॥

॥ અથ શ્રી સંલેશ્વરા પાર્શ્વનાથ સ્તવનં ॥ (છંદ)

॥ શેવો પાસં સંલેસરો મન સુદે, નમૂં નાથ નિશ્ચે કરી એક
 વુધે ॥ દેવી દેવતા અન્યને શું નમો ઓ, અહો જીવ્ય લોકો જુલા
 કાં જમો ઓ ॥ ૧ ॥ ત્રૈલોક્યના નાથને સું તજો ઓ, પઢ્યા પાશ
 મે જૂતમાને જજો ઓ ॥ સુરાધેનુ ંમી અજાને અજો ઓ, મહાપંથ
 મૂંકી કુપંથે વ્રજો ઓ ॥ ૨ ॥ તજે કોણ ચિંતામણી કાચ માટે,
 અદે કોણ રાજાને હસ્તિ સાટે ॥ સુરહુમ ઁપામને આક વાવે,
 મહામૂઢ તે આકુલા અંત પાથે ॥ ૩ ॥ કિહાં કાકરોને જે કિહાં મેરુ
 શ્રુંગ, કિહાં કેશરીને કિહાં તે કુરંગ ॥ કિહાં વિશ્વનાથં કિહાં અન્ય
 દેવા, કરો એક ચિત્તે પ્રજુ પાર્શ્વ સેવા ॥ ૪ ॥ પૂજો દેવ પ્રજાવતી
 પ્રાણનાથં, સહૂ જીવને કરે સહ સનાથં ॥ મહાતત્ત્વ જાણી સદા
 જેહ ધ્યાવે, તેહના ડસ્ક દાલિહ દૂરે ગમાવે ॥ ૫ ॥ પાંમી માનુષોને
 વૃથા વ્યુ ગમો ઓ, કુશીલે કરી દેહને કાં દમો ઓ, નહિ મુક્તિ
 વાસં વિના વિતરાણં ॥ જજો જગવંતં તજો દૃષ્ટિદરાણં ॥ ૬ ॥ ઇવય
 રત્ન જાણે સદા હેત આણી, દયાજાવ કીજે મોહિ વાસ જાણી
 ॥ મોરે આંજ મોતીઅદે મેહ વૂગ, પ્રજુ પાસં સંલેસરો આપ તૂગ
 ॥ ૭ ॥ ઇતિ પદં ॥

॥ અથ લઘુ ગૌતમ રાસ લિખ્યતે ॥

॥ વીર જિનેસર કેરો શીશ, ગૌતમ નાંમ જપો નિશ દીશ
 ॥ જો કીજે ગૌતમનો ધ્યાન, તો ઘર વિલશે નવે નિધાન ॥ ૧ ॥
 ગૌતમ નાંમે ગિરવર ચઢે, મન વંચિત લીલા સંપજે ॥ ગૌતમ નાંમે
 નાવે રોગ, ગૌતમ નાંમે સર્વ સંજોગ ॥ ૨ ॥ જે વૈરી વિરુઆ વંક
 માં, તસનાંમે નાવે ટૂંકમા ॥ જૂત પ્રેત નવિ મંદે પ્રાણ, તે ગૌતમ
 ના કરૂં વચાણ ॥ ૩ ॥ ગૌતમ નાંમે નિરમલ કાય, ગૌતમ નાંમે
 વાધે આય ॥ ગૌતમ જિનશાશન સિણગાર, ગૌતમ નાંમે જયચક્રાર

॥ ४ ॥ शाल दाल सदा घृत घोल, मनवन्तित कम्पन तबोल ॥
 घरे सुघरणो निरमल चित्त, गौतम नामे पूत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौ
 तम नृदयो अविचल ज्ञाण, गौतम नाम जपो जगज्ज्ञाण ॥ मोटा
 मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफल विद्याण ॥ ६ ॥ घर मयगल
 घोरानी जोरु, वारु विलसे वन्तित कोरि ॥ महियल मनि मोटा
 राय जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम
 सरस्ती संगत मिले ॥ गौतम नामे निर्मल ज्ञान, गौतम नामे बाधेवान
 ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहू, गुरु गौतमना गुण ठे बहू ॥ कहे ला
 वण्य समय कर जोरि, गौतम तूठा संपत कोरि ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ शोल शती छंद ॥

आदिनाथ आदि देइ जिनवर वांदी, सफल मनोरथ कीजिये
 ए ॥ प्रजात छत्री मंगलीक काजे शोले शती नाम लीजिये ए ॥ १ ॥
 धालकुमारी जगद्विहारी, ब्राह्मी जगतनी बहिननी ए ॥ २ ॥
 व्यापक अक्षररूपे शोल शती मांदि जे बनी ए ॥ ३ ॥ बाहुबल
 जगनी सतिय शिरोमणि, सुंदरी नामे रूपज सुता ए ॥ ४ ॥ अंग रू
 रूपी त्रिभुवनमांदि, जेइ अनोपम गुणयुता ए ॥ ५ ॥ चंदनवाला
 धालपणेशी शीलवती शुद्ध श्राविका ए, उरुदना बाकला वीर प्रति
 लाज्या, केवल लहि व्रत जाविका ए ॥ ६ ॥ उग्रसेन भूआ धारणी
 नंदन राजेमती नेम बल्लजा ए, योवन वेशे कामने जीती, शंजम
 सेइ देव डल्लजा ए ॥ ७ ॥ पंच जरतारी पांढर नारी, दुपदा नाम
 बखाणिये ए, एकशो आवे चीर पुराणा, शील महिमा तस जाणि
 ये ए ॥ ८ ॥ दशरथ नृपनी नारि निरोपम कौशल्या कुलधंदिका ए,
 शीषल तलूणी राम जनीता पुण्यतणी प्रनाजिका ए ॥ ९ ॥ कौश
 बिक ठामे शनानिक नामे, राज्य करे रंग राजियो ए, तम घर प
 रणी मृगावती नामे मृगजुवने जश गाजियो ए ॥ १० ॥ गुलशा

साची शील न काची राची नही विषयारसें ए, मुखनी जोतां
 युलाये नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ए ॥ राम रघुवंशी जेहनी
 मण जनकसुता शीता शती ए, जग सहू जांणे धीज करंता अ
 शीतल थयो शीलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतण चालणी बांधी
 बाथकी जल काढियो ए, कलंक कृतारवा शतिय सुजझ चंपा
 उघाभियो ए ॥ ११ ॥ सुरनर बंदित शील अकंपित शिवा शिव
 गांमनी ए ॥ जेहने नामे निरमल थइये बलिहारी तसु नांमर्न
 ॥ १२ ॥ इस्तिनागपुर पांरुवरायनी कूता नामे कामनी ए, पां
 माता दशे दशारनी, बहिन पतिव्रता पदमनी ए ॥ १३ ॥ इ
 वती नामे शीलव्रत धारणी, त्रिविधे तेहने बंदीये ए ॥ नांम
 ता पातिक जाए, दरसन छुरित निकंदि ए ॥ १४ ॥ निपथान
 नल नरपतनी, दवदंती तसु गेहनी, ए संकट पभियां शीलज रार
 त्रिभुवन कीर्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीता जगजन, ज
 पुष्पचूला ने प्रजावती ए ॥ विश्व विधाता कामित दाता, शो
 शती पद्यावती ए ॥ १६ ॥ वीरे दाखी शास्त्र ठे साखी, उदय
 जाये मुदा ए ॥ प्रह कवीने जे नरजणसे, ते जहिस्थे सुख संपदा ए

॥ अथ गौतम मंगल लिख्यते ॥

जय २ मंगलनिधान गौतम जयकारी ॥ ज० ॥ वृष्टवी
 रत्नहीर, विश्वजूति पितु सधीर ॥ व्यास वेद चतुरवीर मन्मथ
 वतारी ॥ ज० ॥ १ ॥ जज्ञ रंग विप्र संग, नृप्रा सुरलोक गंग
 करत धरत ठात्र पात्र, विरुद विबुधचारी ॥ ज० ॥ २ ॥ विच
 प्रजु आये चंग, बाणी गुण सप्त जंग ॥ वर्द्धमान जित अनंग, शं
 तम हारी ॥ ज० ॥ ३ ॥ देवागम त्रिगढ देख, इंद्रजाल संक रे
 वीतराग वचन पेख, मिथ्यामत टारी ॥ ज० ॥ ४ ॥ त्रिपदी
 अंग वा, स्वना कृत अति अपार, बोधन जग जीव तार, जये

गणधारी ॥ ज० ॥ ५ ॥ केवल चिद सरस पीन, मुक्ति लक्ष्मी धरम
लीन ॥ मुनि मन जल चरण मीन, कुंदन युतिसारी ॥ ज० ॥ ६ ॥
सिद्धियोग नंद चंद, कार्तिक शित संघ वृंद ॥ फूलत घर कल्प
कंद, दूज कुमति हारी ॥ ज० ॥ ७ ॥ गुणशीलपुर देवमणो इंद्रजूति
जगंधणी ॥ कुशल निधान सुख जगो, पाठक रुद्धिसारी ज० ॥ ८ ॥

॥ अथ मुनिवेष संबंधे पद लिख्यते ॥

॥ म्हांने प्यारो लागे ठे जी मुनिवर जेस ॥ म्हांने० हाथे
खकनिया कांधे कंबलिया, शिर शोजित तनु केश म्हां० ॥ १ ॥
चोलपट्ट चादर पांगरणी, उज्ज्वल रहत हमेश ॥ म्हां० ॥ २ ॥ जे
यणा कर मुखपत्ती धारक, रजोहरण सविसेस, म्हां० ॥ ३ ॥ धि
वरकल्प जिनमुद्राधारी ॥ काटत कर्म कलेश ॥ म्हां० ॥ ४ ॥
दे उपदेश जविक जनतारक, तमहर प्रगट दिनेश ॥ म्हां० ॥ ५ ॥
करतरामरुद्धिसार बंदना, निरखत एसो जेस ॥ म्हां० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ अरिहंत स्तवनं पद ॥

॥ राग नाटक ॥

॥ जबसे सरधा श्रुद जई, मन अरिहंत २ ध्याते हे ॥ अरि
हंत ध्यावत गुणगण पावत कर्म रहित हो जाते हे ॥ १ ॥ जय
२ जय २ श्रीजगदीश्वर, शंकर ब्रह्म कहाते हे ३ सहजानंदी जगत
उधारण, सुरनर चरण लुजाते हे ॥ सब देव मिल त्रिगुण स्वाते,
अपठर मंगल धुनि गाते हे ॥ देवडंडजि नाद बजाते हे, धर्म
ते हे सुख देते हे ॥ जविक जीव तिर जाते हे, जो निश्चय मन
लाते हे ॥ रामउद्धार कहे रुद्धिसार, तूं आधार प्रभु मोहे तार ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री श्रावक करणीनी सझाय ॥

॥ चोपाइ ॥ श्रावक तुं ऊठे परजात, चार घुम्ती-ले पाग
समरे श्री नवकार, जेम पामे जय सायुधपाद ॥ १ ॥

कवण देव कवण गुरुधर्म, कवण अमारुं ठे कुलकर्म, कवण अ
 भारो ठे व्यवसाय, एवुं चिंतवजे मन माय ॥ २ ॥ सामायिक ले
 ले मन शुद्ध, धर्मनी हेम धरजे बुध ॥ पम्किमणुं करे रयणी तणु,
 पातक आलोई आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्ति करे पञ्चस्काण सूधि पाले
 जिननी आण ॥ जणजे गणजे स्तवनसझाय, जिणहुंती निस्तारो
 प्राय ॥ ४ ॥ चितारे नित्य चउदे नीम, पाले दया जीवतां सीम
 ॥ देहरे जाइ जुहारे देव, इव्यजावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोपाले
 गुरु वंदन जाय, सुणो वखाण सदा चित्त लाय ॥ निर्दूषण सृजंतो
 आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥ साहम्मीवत्सल करजे घणां,
 सगण मढोटा साहम्मीतणां ॥ दुःखीया होणा दीना देखि, क
 रजे तात दया सुविशेष ॥ ७ ॥ पर अनुसारं देजे दान, मढोटाशुं
 म करे अजिमान ॥ गुरुने मुखे लेजे आखमी, धर्म न मूकीश ए
 के घमी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, उठा अधिकानो परिहार ॥
 म जरिशकेनी कूमी ताल, कूमा जनशुं कथन म जाल ॥ ९ ॥
 अनंतकाय कहिये वत्रीश, अजक्य वाविशे विश्वावीश ॥ तेजकण
 नवि कीजें किमे, काचा कवला फल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रिजो
 जनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साधू लोह ने गु
 ली, मधु धावमी मत वेधो वली ॥ ११ ॥ बली म करावे रंगण
 पात, दूरण घणां कट्यां ठे तात ॥ पाणी गलजे बेबे वार, असगल
 पीतां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करजे यत्न, पातक उंदी
 करजे पुण्य ॥ गणा इवण चूले जोय, वावरजे जिम पाप
 न होय ॥ १३ ॥ घृतनी परे वावरजे नीर, अणगल नीर
 म धोइश चीर ॥ ब्रह्मव्रत सूर्य पालजे, अतिचार सपला टालजे
 ॥ १४ ॥ किद्यां पत्तरे कर्मादान, पापंतणी परहरजे खाण ॥ किशुं
 म लेहे अनरेष दंम, मिश्यां मेल म जरजे पिम ॥ १५ ॥ तमकि

जें ॥१५॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर विर जिणवर नाश संपन्न पांचापुरं सुर
 भद्रिय, पत्तनाइ संसारतारण ॥ तिहिं देवइ निम्मदिय, समवसरण
 धहु सुख कारण ॥ जिणवर जग उज्जोय करे, तेजहि कर दिन
 कार सिंहासण सामी ठव्यो, दुष्ट तो जयजयकार ॥ १६ ॥ जात
 ॥ तो चटियो घणमाण गजे, इंद्रभूय भूयदेव तो ॥ हुंकारो कर सं
 चरिय, कवणसु जिणवर देव तो ॥ जोजन भूमि समोसरण, पे
 खवि प्रथमारंज ॥ तो दददिस वेसे विनुषवधू, आवंती सुरंज तो ॥
 १७ ॥ मणिमय तोरणदंभ ध्वज, कोसीसे नवधाट तो ॥ वपरवि
 यजितजंगुण, प्रातीदारिज आव तो ॥ सुर नर किन्नर असुरवर,
 इंद इंदानी राय तो ॥ चित चमणिय चितय ए, सेवंतां प्रनु पाय
 तो ॥ १८ ॥ सदस किरण सामा वीरजिण, पेलिप्र रूप पितात
 भो ॥ एइ असंजय संजय ए, साचो ए इंद जात तो ॥ तो बोला
 यड प्रिजग गुरु, इंदनूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसा सामि राखे,
 फेरे वेदपण तो ॥ १९ ॥ मान मेळ मद वेळ करे, जगतहिं ना
 थ्यो सीत तो ॥ पंध सयांसुं व्रत जियो ए, गोवम पद्विती सीत तो
 ॥ बंधव संजम गुणवि करे, अगनिनूइ आवेय तो ॥ नाम संइ आनाम
 करे, ते पण प्रतियोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणदररण, आयावीर
 इगार तो ॥ तो उपदेसे जुवन गुरु, संयमशुं व्रत वार तो ॥ विहुं वपरा
 ते पारलो ए, आपणपें विदंत तो गोवम संयम जग राया, जय जय
 कर करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इंदनूइ इंदनूइ चरियां बहुमान
 हुंकारो करि वपतो, समवसरण पद्वितां सुरतो ॥ जे संगा सामि स
 ये, परमनाइ फेरे करंत तो ॥ बोधव, ज सद्धापमनें, गोवम नवदि
 शिण ह दिम्ह सेई मिळत मदीं, गणदरपदमंज ॥ २२ ॥ जग
 गाज दुष्ट सुविदान, आज पंचविमां गुण्य जग ॥ २३ ॥ गोवम
 म, जो नियमयते अमिद जग ॥ समवसरण मज्जा, जे जे

संता ऊपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूवे मुनि पवरो ॥ २३ ॥
 जीहां दीजें दीख, तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कनें अणहुंत, गो
 यम दीजें दान इम ॥ गुरु उपर गुरु नक्ति, सामी गोयम ऊपनि
 ॥ अणचल केवल नाण, रागज राखे रंग जरे ॥ २४ ॥ जो अप
 पद सेल, वंदे चढ चनुवीस जिण ॥ आतम वृद्धि वसेण, चर
 सरीरी सोज मुनि ॥ इय देसणा निसुणेइ, गोयम गणह
 संचरिय ॥ तापस पररसएण, जो मुनि दीगो आवतो ए ॥ २५ ॥
 पसोसि पनिय अंग, अह्यां सगति न ऊपजे ए ॥ किम चढसे
 काय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुठ ए अजिमान, ताप
 जो मन चिंतवे ए ॥ तो मुनि चढियो वेग, आखंडवि दिनकर
 रण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न, दंरु कलस ध्वज वरु सहिय
 पेखवि परमाणंद, जिणइर जरेतेसर महिय ॥ निय निय काय
 माण, चिहुं दिसि संठिय जिणइ विंव ॥ पणमवि मन उल्लास,
 यम गणइर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यक
 जफदेव तिहां ॥ प्रति घोष्या पुंरुरीक, कंरुरीक अध्ययन जणी
 बलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ जेई आपण सा
 चाले जिम जूयाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांस घृत आण, अमी
 वुठ अंगूठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे ॥ पंच
 यां गुज्ज नाव, उज्जज जरियो खीर मिसे ॥ साचा गुरुसंयोग,
 वल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥ पंचसयां जिणनाइ, समवसर
 प्राकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उपपन्नो उज्जोय करे ॥ जाये
 णवि पीयूष, गाजंती वन मेघ जिम ॥ जिनवाणी निसुणेवि, ना
 हुया पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम ना
 पत्ररेतें, उपन्न परिवरिय, हरिउरिय जिणनाइ वंदइ, जायेदी ज
 गुरु वयण, तिहिं नाण अप्पाण निंदइ, चरमजिनेसर इम जरे

गोयम म करिस् खेव, ठेह जाय आपण सही, दोस्यां तुला बेव
 ॥ ३१ ॥ जास ॥ सामियो ए वीर जिणंद, पूनमचंद जिम उल्ल
 सिय ॥ विहरियो ए जरहवासंमि, वरस बहुतर संवसिय ॥ ठव
 तो ए कणय पत्रमेण, पायकमल संघें सहिय ॥ आवियो ए नय
 णाणंद, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखयो ए गोयमसामि,
 देवसमा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए तिसलादेवि, नंदन पुढतो पर
 मपए ॥ बलतो ए देव आकाश, पेखवि जाएयो जिण समे ए ॥
 तो मुनि ए मनविखवाद, नादजेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण
 समे ए सामिय देखि, आपकनासूं टालियो ए ॥ जाण तो ए तिहु
 अण नाह, लोक विवहार न पालियो ए ॥ अतिजलो ए कीधलो
 सामि, जाएयो केवल मागसे ए ॥ चिंतव्यो ए बालक जेम, अहवा
 केन लागसे ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिणंद, जगतहिं जोलें
 जोलव्यो ए ॥ आपणो ए उंचलो नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥
 साचो ए ए वीतराग, नेह न हेजें टालियो ए ॥ तिणसमे ए गो
 यम चित्त, राग वैरागें वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उल्लह,
 रहितो रागें साहियो ए ॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज
 उमाहियो ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल मदिमा सुर करे
 ए ॥ गणथरु ए करय बखाण, जविया जव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥
 ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पचास, गिदवासें तं
 वसिय तीसवरससंजम विजूसिय, तिरि केवलनाणपुण, धार वरस
 नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, बाणवड वरसाठ, सामी
 गुणनिलो, दोसे सिवपुर ठाठ ॥ ३७ ॥ जास ॥ जिम सह
 पल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल मदके, जिमचंदन सो
 वि ॥ जिमगंगाजल लहिरपां लहके, जिम कणयाचल ते जें ऊ
 ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे

देसा, जिम सुरतरुवरे कणयय तंसा, जिम महुयरे शा-
 रयणायर रयण विलसे, जिम अंवर तारागण विकसे, ति-
 रु केल घने ॥ ३९ ॥ पूनमनिसि जिम सतिपर सोहे, सुरत-
 मा जिम जगमाहे, पूरय दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम
 रिवर राजे, नर वड घर जिम मेगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि
 वरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम
 उत्तम मुख मधुरी जाया, जिम वन केतकि महमहे ए ॥ जिम नू-
 मीपती नुयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, गोयमलवधे
 गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ पितामणि कर चढीयो आज, सुरतरु सारे
 वंगिय काज, कामकुंज सहु वशि दुआ ए ॥ कामगवी पूरे मन
 कामी, अटमहासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरी ए ॥
 ॥ ४२ ॥ पणवस्कर पहिलो पजणी जे, माया बीजो श्रवण सुणीजे ॥
 श्रीमिति सोजा संजवो ए ॥ देवां पुर अरिहंत नमीजे, विनय पहु
 जवझाय अणीजे, इण मंत्रे गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वलतां
 काय करीजे, देस देसांतर काय जमी जे, कवण काज आयास क
 रो ॥ प्रह ऊढी गेयन समरीजे, काज समगल ततखिण सीजे,
 नवनिधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥ चवदयसय बारोत्तर वरसे,
 गोयम गणहर केवल दिवसे, कीयो कवित उपगारपणे ॥ आदहि
 भंगल ए पजणीजे, परव महोन्नव पहिलो दीजे, रिद्धि वृद्धि क
 ळ्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण जयरे घरियो, धन्य
 पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीक्षियो ए ॥
 विनयवंत विद्या जंमार, तसु गुण पुढवी न लझइ पार, वरु जिम
 साखा विस्तरो ए ॥ गोयमस्वामीनो रास जणीजे, चउविह संघ
 रलिघायत कीजे, रिद्धिवृद्धि कळ्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन
 उमो दिवरावो, माणक मोतीना चोक पूरावो, रयण सिंहासण बेस

गो ॥ ए ॥ तिहां ठेवी गुरु देशना देशी, जविक जीवना काज सरेसो,
 नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगौतम स्वामीनो
 रास संपूर्ण ॥

॥ राग प्रजाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर ॥ जूरुयां जोजन
 संपजे, कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत घसे, लक्ष्मि तणा जं
 नार ॥ जे गुरु गौतम समरिये, मनवंगित दातार ॥ २ ॥ पुं
 रुरीक गोयम पमुदा, गणधर गुण संपन्न ॥ प्रह ऊगीने प्रणमता,
 चवदेसे वावन्न ॥ ३ ॥ खंतिखमंगुशकलियं, सुविशियं सबलदिसं
 पसां ॥ वीरुस पढम सीसं, गोयमं सामो नमंतामि ॥ ४ ॥ सर्वा
 रिष्टप्रणाशाय, सर्वाजिष्टार्थदायिने ॥ सर्वलब्धनिधानाय, गौतमस्वा
 मिने नमः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सेत्रुंज रास लिख्यते ॥

॥ दृष्टा ॥

॥ श्रीरिसदेसर पाय नमो, आंणी मन आनंद ॥ रास ज
 ए रलियामणो, सेत्रुंजनो सुखकेद ॥ १ ॥ संवत व्यांर सतोतरे, तु
 आ वनेश्वर सूर ॥ तिण सेत्रुंज माहातम कियो, शिजदित्य जंजूर
 ॥ २ ॥ वीर जिगंद सनवसंरघा, सेत्रुंज ऊपर जेम ॥ ईडाविक आ
 गल कह्यो, सेत्रुंज महातम एम ॥ ३ ॥ सेत्रुंज तीरथ सारिखो
 नंदी ठे तीरथ कोथ ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमें, तरथ सगला जोय
 ॥ ४ ॥ नामे नव निध संपजे, दीग डुरित पुलाय ॥ जेटंता प्रव
 सेवता सुख थाय ॥ ५ ॥ जंजू नामे दीप ए, दक्षिण
 ॥ सोरठ देस मुद्रामणो, तिहां ठे तीरथ सार ॥ ६ ॥

॥ दान परिडी ॥ राग रामगिरी ॥

सेत्रुंजो ने श्रीपुंरुरीक, सिद्धकेश कहूं तदतीक ॥ निम
 ने कहूं प्रणाम, ए सेत्रुंजैना इकवीस नाम ॥ १ ॥ मुरगिदि

ने महागिरि पुन्यरास, श्रीपदपर्वत इन्द्रकास ॥ महातीर्थ पूखे
 सुखकाम ॥ ए० ॥ २ ॥ सासतो पर्वत ने दृढशक्ति, मुक्तिनिलो
 तिण कीजे जक्ति ॥ पुष्पदंत महापद्म सुगम ॥ ए० ॥ ३ ॥ ए
 श्वीपीठ सुजड केलास, पातालमूल अकर्मक तास ॥ सर्व काम
 कीजे गुणग्राम ॥ ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेतुंजना इकवीस नाम, जपेज बे
 वा अपने ठाम ॥ सेतुंज जात्रानो फल ते लदे, महावीर जगवंत
 हम कहे ॥ ए० ॥ ५ ॥

॥ दुरा ॥

॥ सेतुंजो पहिले अरे, असी जोयण परिमाण ॥ पिहुलो
 मूल उंचपण, उबीस जोयण जाण ॥ १ ॥ सत्तर जोयण जाणवो, बीजे
 अरे विस्तार ॥ बीस जोयण उंचो कह्यो, मुऊ बंवना त्रिकाल ॥
 २ ॥ साठ जोयण तीजे अरे, पिहुलो तीरथराय ॥ सोल जोयण
 उंचो सही, ग्यान धरुं चित लाय ॥ ३ ॥ पचास जोयण पिहुसपण,
 चौथे अरे मजार, उंचो दस जोयण अवल, नित प्रणामे नर नार ॥
 ४ ॥ बार जोयण पंचम अरे, मूलतणै विस्तार ॥ दो जोयण उंचो
 अठे, सेतुंजो तीरथ सार ॥ ५ ॥ सात दाय ठे अरे, पिहुलो पर
 बत एह ॥ उंचो दोसरे सो धनुष, सासतो तीरथ एह ॥ ६ ॥

॥ दारु बीजी ॥

॥ केवलनांणी प्रमुख तीर्थकर, अनंत सीधा इण ठाम रे ॥
 अनंत बलीसिऊस्ये इण ठामे, तिण करुं नित परणाम रे ॥ १ ॥ सेतुं
 जसाधू अनंता सीधा, सीऊसी बलिय अनंत रे ॥ जिण सेतुंज ती
 रथ नही जेळ्यो, तेगरजावास कहंत रे ॥ से० ॥ २ ॥ फागुण सुदि
 आवमने दिवसे, रूपनदेव सुखकार रे ॥ रायणकरुं समोसरया
 स्वांमी, पूर्व निनाणू बार रे ॥ से० ॥ ३ ॥ जरतपुत्र चैत्री पुनम
 दिन, इण सेतुंजगिरि आय रे ॥ पांच कोनीसुं पुंरुरीक सीधा, ति

हूँ अंगज तुझ ॥ इंदे आण्या अकृतवास, प्रभु आपे संघवीपद ता
 स ॥ ५ ॥ इंदे तिण वेला ततकाल, जरत सुजडा बिडुंते मात ॥
 पहिराची घर संप्रेमीया, सखर सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ रिष
 जदेवनी प्रतिमा वली, रतनतणी कीधी मन रली ॥ जरते गणधर
 घर तेनिया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मू
 की सहु देस, जरत तेमायो संघ असेस ॥ आयो संघ अयोध्यापुरी,
 प्रथमथकी रथजात्रा करी ॥ ८ ॥ संघ जगत कीधी अतिघणी, सं
 घ चलायो सेत्रुंजः जणी ॥ गणधर बाढूबल केवली, मुनिवर कोरु
 साये लिया वली ॥ ९ ॥ चक्रवर्त्तनी सघली रुद्र, जरते साये ली
 धीसिद्ध ॥ हय गय रथ पायक परिवार, ते तो कहतां नाये पार
 ॥ १० ॥ जरतेसर संघवी कदवाय, मारग चैत्य ऊधरतो जाय ॥
 संघ आयो सेत्रुंजा पास, सहुनी पूगी मननी आस ॥ ११ ॥ नयणे
 निरख्यो सेत्रुंजराय, मणि माणिक मोत्यांसुं वधाय ॥ तिण ठांमे
 रही महोदध कियो, जरते आणंद पुर वासियो ॥ १२ ॥ संघ
 सेत्रुंजा ऊपर चढयो, फरसंता पातिक ऊरु पड्यो ॥ केवलग्यानी
 पगला तिहार, प्रशम्यां रायणरुख ठे जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी
 खात्र निमित्त, ईशानेंद्र आणी सुपवित्र ॥ नदी सेत्रुंजे सोदामणी,
 जरते कीठी कौतुक जणी ॥ १४ ॥ गणधरदेव तणे उपदेश, इंदे
 बलि कीडो आदेश ॥ श्रीआदिनाथतणो वेदरो, जरत करायो गुरि
 सेदरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग, रतनतणी प्रतिमा मन
 रंग ॥ जरते श्रीआदीसरतणी ॥ प्रतिमा आपी सोदामणी ॥ १६ ॥
 मरुदेवानी प्रतिमा वली, माही पूनम आपी रली ॥ ब्राह्मी, सुंदरि
 प्रमुख प्राशाद, जरते आप्या नवला नाद ॥ १७ ॥ इस अनेक
 प्रतिमा प्राशाद, जरते कराया गुरु सुप्रशाद ॥ जरततणो पहिलो
 उदार, सगलोही जाणे संसार ॥ १८ ॥

ततली पर संव कियो, सेत्रुंज संघवी कंदायो जी ॥ १ ॥
 उन्नर संजलो, सोय मोटा श्रीकारो जी ॥ अतंत्या
 वंशी, तेन कहुं अधिकारो जी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करारो
 पो, सोनानो विंव सारो जी ॥ मुखगो विंव जंमारीपो,
 सि तिण वारो जी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रुंजनी जात्रा करी
 कियो अवतारो जी ॥ दंन्वीरज राजातलो, ए बीजो उदारो
 से० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिकम्पा, दंन्वीरजथी विव
 डगानेड करावियो ॥ ए तीजो उदारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥
 देवलोरुनो धरणी, मादेइ नाम उदारो जी ॥ तिण सेत्रुंज
 वियो, ए चोयो उदारो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ पांचमा देवलोरुनो
 अछेड समकितधारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करावियो, ए
 उदारो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ जुवनपती इइनो कियो, ए उदो
 जी ॥ चक्रवर्ति मगरतलो कियो, ए सातमो उदारो जी ॥
 अजिनंदन पामे मुणयो, सेत्रुंजनो अधिकारो जी ॥ व्यंतर
 वियो, ए आठमो उदारो जी ॥ से० ॥ ८ ॥ चंडप्रभु र
 पोतरो, चंडशस्त्र नाम मद्धारो जी ॥ चंडप्रशराय करावि
 नवमो उदारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥ शान्तिनाथनी मुनी
 शान्तिनाथमुन मुविचारो जी ॥ चक्रचराय करावियो, ए
 उदारो जी ॥ से० ॥ १० ॥ दमग्रगुन जगदीपतो, मुनिमु
 वारो जी ॥ श्रीरामचंड करावियो, ए श्यामो उदारो
 ॥ ११ ॥ पांचव कंद अमे पाविया, हिम वृदा मोरी
 ॥ कंद कुंती सेत्रुंजननी, जात्र दिवां पाव जायो जी ॥
 ॥ १२ ॥ पांच पांचव संघ कर्मी, सेत्रुंज जेकां अतागो जी, ॥

ह्य बिव लेपना, ए बारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी
 पाखाणनी, प्रतिमा सुंदर सरूपो जी ॥ श्रीसेत्रुंजनो संघ करो,
 थापी सकल सरूपो जी ॥ से० ॥ १५ ॥ अघोतर सो वरसां गया,
 विक्रम नृपथी जिवारो जी ॥ पोरवाम जाचम करावियो, ए तेरमो
 उद्धारो जी ॥ १६ ॥ से० ॥ संवत वार तिमोतेरे, श्रीमाखी सुविचा
 रो जी, वाहरुवे मुंहते करावियो, ए चवदमो उद्धारो जी ॥ १७ ॥
 से० ॥ संवत तेरे इकोतेरे, देसलहर अधिकारो जी ॥ समरेसाह
 करावियो, ए पनरमो उद्धारो जी ॥ १८ ॥ से० ॥ संवत पनर स
 त्यासिये, वेसाख वदि शुभ चारो जी ॥ करमे मोसी करावियो,
 ए सोलमो उद्धारो जी ॥ १९ ॥ से० ॥ संप्रति काले सोलमो, ए
 वरतेवे उद्धारो जी ॥ नित२कीजे वंदना, पांमीजे जवपारो जी ॥ २० ॥ से०

॥ द्वादश ॥

॥ बलि सेत्रुंज महातम कहूं, सांजलो जिम वे तेम ॥ सूरि
 घनेतर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्श-
 नी, सेत्रुंजे पूजनीक ॥ जगवंतनो जेय मानता, लाज दुवे तह-
 तीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपर, चैत्य करावे जेह ॥ दल परमांख
 समो लहे, पढ्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो, नवो
 नीपावे कोय ॥ जीर्णोद्धार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥
 सिर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार ॥ चक्रवर्त्तनी स्त्री थई,
 शिवसुख पांमे सार ॥ ५ ॥ काती पुनम सेत्रुंजे, चढने करे उप
 वास ॥ नारकी सो सागर समो, करे करमनो नास ॥ ६ ॥ काती
 परब मोटो कह्यो, जिहां सीधा दश कोमि ॥ ब्रह्म स्त्री वालक ह
 त्या, पापथी नाखे ठोर ॥ ७ ॥ सहस लाख आवक जणी, जो
 जने पुन्य विशेष ॥ सेत्रुंज साधु पण्डितानां, अधिको तेहथी देख ॥

हार चौथी ॥ राग सिंधुदो आसाररी ॥

॥ नरततणे पाट आठमे, दंनवीरज थयो रायो जी ॥
 ततणी पर संघ कियो, सेत्रुंज संघवी कंहायो जी ॥ १ ॥ से
 उद्धार सांजलो, सोल मोटा श्रीकारो जी ॥ असंख्यात वी
 बली, तेन कहु अधिकारो जी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करायो रूप
 णो, सोनानो विंघ सारो जी ॥ मूलगो विंघ जंमारीयो, पंडिम
 सि तिण बारो जी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रुजैनी जात्रा करी, सप
 कियो अवतारो जी ॥ दंनवीरज राजातणो, ए वीजो उद्धारो जी
 से० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंनवीरजथी जिवारो ज
 इशानेइ करावियो ॥ ए तीजो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥ चो
 देवलोकनो थणी, माहेइ नाम उद्धारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो क
 वियो, ए चोथो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ पांचमा देवलोकनो थणी
 ब्रह्मेइ समकितधारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करावियो, ए पांचम
 उद्धारो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ जुवनपती इइनो कियो, ए षष्ठो उद्धारो
 जी ॥ चक्रवर्ति सगरतणो कियो, ए सातमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ८ ॥
 अन्ननंदन पसे सुण्यो, सेत्रुंजनो अधिकारो जी ॥ व्यंतरइ कर
 वियो, ए आठमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥ चंडप्रभु स्वामीने
 पोतरो, चंडशेखर नाम मळहारो जी ॥ चंड्यशराय करावियो, ए
 नवमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणी देशना,
 शांतिनाथसुत सुविचारो जी ॥ चक्रधरराय करावियो, ए दशमो
 उद्धारो जी ॥ से० ॥ ११ ॥ दसरथसुत जगदीपतो, मुनिसुव्रत
 मी वारो जी ॥ श्रीरामचंड करावियो, ए इग्यारमो
 से० ॥ १२ ॥ पांनव कहे अमे पापिया, किम वृट
 जी ॥ कहे कुंती सेत्रुंजतणी, जात्र कियां पाप
 ॥ १३ ॥ पांचे पांनव संघ करी, सेत्रुंज

हय धिंव लेपना, ए बारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी
 पाखाणनी, प्रतिमा सुंदर सरूपो जी ॥ श्रीसेत्रुंजनो संघ करो,
 थापी सकल सरूपो जी ॥ से० ॥ १५ ॥ अछेतर सो वरसां गया,
 विक्रम नृपथी जिवारो जी ॥ पोरचाम जावरु करावियो, ए तेरमो
 उद्धारो जी ॥ १६ ॥ से० ॥ संवत वार तिमोतरे, श्रीमाली सुविचा
 रो जी, वाहरुवे मुंदते करावियो, ए चवदमो उद्धारो जी ॥ १७ ॥
 से० ॥ संवत तेरे इकोतरे, देसलहर अधिकारो जी ॥ समरेसाह
 करावियो, ए पनरमो उद्धारो जी ॥ १८ ॥ से० ॥ संवत पनर स
 त्यासिये, वेसाख बदि जुज वारो जी ॥ करमे मोसी करावियो,
 ए सोलमो उद्धारो जी ॥ १९ ॥ से० ॥ संप्रति काले सोलमो, ए
 वरतेवे उद्धारो जी ॥ नित२कीजे वंदना, पांमीजे जवपारो जी ॥ २० ॥ से०

॥ दहा ॥

॥ बलि सेत्रुंज महात्म कहूं, सांजलो जिम ठे तेम ॥ सूरि
 घनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेदवो तेदवो दर्श-
 नी, सेत्रुंजे पूजनीक ॥ जगवंतनो जेय मानता, लाज हुवे तह-
 तीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपर, चैत्य करावे जेइ ॥ दल परमाख
 समो लहे, पढ्योपम सुख तेइ ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो, नवो
 नीपावे कोय ॥ जीर्णोद्धार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥
 सिर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार ॥ चक्रवर्चनी स्त्री थई,
 शिवसुखे पांमे सार ॥ ५ ॥ काती पुनम सेत्रुंजे, चढने करे उप
 वास ॥ नारकी सो सागर समो, करे करमनो नास ॥ ६ ॥ काती
 परब मोटो कह्यो, जिहां सीधा दश कोरि ॥ ब्रह्म स्त्री बालक ह
 त्या, पापथी नाखे गोर ॥ ७ ॥ सहस लाख आवक
 जन पुन्य विशेष ॥ सेत्रुंज साधु पण्डितानां, अधिको

॥ दाल पांचमी ॥

॥ सेतुंज गया पाप वृष्टि, लीजे आलोयण एमो जी,
जप कीजे तिहां रही, तीर्थकर कह्यो तेमो जी ॥ से० ॥ १ ॥
ए सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन
ज चढी, एक करे उपवासो जी ॥ से० ॥ २ ॥ वस्तुतणी
करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सेतुंज चढी, एक
उपवासो जी ॥ ३ ॥ से० ॥ कांसी पीतल तांवा रजतनी ॥
क्रीधी जेशो जी ॥ सात दिवस पुरिमठ करे, तो वूटे गिरि
जी ॥ ४ ॥ से० ॥ मोती प्रहाला मंगिया, जिण चोरया नर
जी ॥ आंखिल कर पूजा करे, त्रिण टंक शुद्ध आचारो जी ॥
से० ॥ धान पाणी रस चोरिया, ते जेठे सिद्धहेत्रो जी ॥ से
तलदटी साधुने, पनिसाजे सुध चित्तो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ वस्त्रान
जिणे हरया, ते वूटे इण मेलो जी ॥ आदिनाथनी पूजा करे,
ज्ज्वी बहू बेलो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ देव गुरुनो धन जेहरे, ते इ
थाये एमो जी ॥ अधिको इव्य खरचे तिहां, पात्र पोये बहू
जी ॥ से० ॥ ८ ॥ गाय जैत घोडा मही, गज मद चोरण
जी ॥ ये ते वस्तु तीर्थे, अरिहंत ध्यान प्रकारो जी ॥ से० ॥
पुस्तक देहरा प्रारका, तिहां लिखे अपणो नामो जी ॥ वूटे उम्मा
तप कियां, सामायक तिया गमो जी ॥ से० ॥ १० ॥ कुंवारी
ब्राजरा, सधव, अधव गुरुनारो जी ॥ व्रत जाजे तेदनें कह्यो,
उमासी तप सारो जी ॥ ११ ॥ से० ॥ गो विप्र स्त्री बालक
एहनो पातक जेहो जी ॥ प्रतिमा आगे आलोवतां, वूटे तप
तेहो जी ॥ १२ ॥ से० ॥

॥ दाल छठी ॥

॥ संप्रति कावे मोलमो ए, ए वरते जे उदार ॥ सेतुंज पा

करे ए, सफल करे अवतार ॥ १ ॥ से० ॥ उदरी पालतां चालिये
 ए, सेतुंज केरी वाट ॥ से० ॥ पालीताणे पोदचिये ए, संघ मि
 ळ्या बहु थाट ॥ से० ॥ २ ॥ लखित सरोवर पेशिये ए, वलिसत्ता
 नी वावि ॥ तिहां विसरांमो लीजिये ए, वरुने चोतरे आवि ॥ ३ ॥
 से० ॥ पालीताणे पाजंमो ए, चढिये ऊपर परजात ॥ सेतुंजनदिय
 सीदामणी ए, दूरथकी देखंत ॥ से० ॥ ४ ॥ चढिये दिंगलाजने दमे
 ए, कलिकुंम नमिये पास ॥ वारीमांहे पैसीये ए, आणी अंग
 उल्लास ॥ से० ॥ ५ ॥ मरुदेवीदूर मनोदूर ए, गज चढी मरुदेवी
 मांय ॥ शातिनाथ जिण सोलमो ए, प्रणमीजे तसु पाय ॥ से० ॥ ६ ॥
 वंस पोरवाने परगमो ए, सोमजी सांद मलार ॥ रूपजी संघ
 वी करावियो ए, चोमुख मूल उद्धार ॥ से० ॥ ७ ॥ चोमुख प्रतिमा
 चरचिये ए, जमतीमांहे जला विंव ॥ पांचे पांख पूजिये ए, अद्वजुत
 आदि प्रजंब ॥ ८ ॥ से० ॥ खरतरवसही स्वतंसु ए, विंव जुहारुं
 अनेक ॥ नेमनाथ चवरी नमूं ए, टाळूं अलग उदेग ॥ से० ॥ ९ ॥
 धरमजुवारमांदि नीसरुं ए, कुगति करुं अतिदूर ॥ आठ आदिनाथ
 देहे ए, करम करुं चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥ मूलनायक प्रणमूं मुदा
 ए, आदिनाथ जगवंत ॥ देव जुहारुं देहे ए, जमतीमांहे जमंत
 ॥ ११ ॥ से० ॥ सेतुंज ऊपर कीजिये ए, पांचे गाम स्नात्र ॥ कल
 श अगोतर सो करिये, निरंमल नीरसु गात्र ॥ से० ॥ १२ ॥
 प्रथम आदीतर आगले ए, पुंरुरीक गणधार ॥ रायण तल पंग
 ला नमूं ए, चोमुख प्रतिमा च्यार ॥ १३ ॥ से० ॥ रायण तल प
 गला नमूं ए, चोमुख प्रतिमा च्यार ॥ बीजी जूमि विं
 आवली ए, पुंरुरीक गणधार ॥ १४ ॥ से० ॥ सूरजकुंम नि
 हालिये ए, अति जली उलकाजोल ॥ चेलणतलाइ सिंद
 शिला ए, अंग फरसुं उल्लोल ॥ १५ ॥ से० ॥ आदिपुर

ज. उत्तरुं ए, सिद्धवन्तुं विसराम ॥ चैत्यप्रवाह इण पर करी ए, ती
 धा. वंछित काम ॥ से० ॥ १६ ॥ जात्रा करी सेत्रुंजतणी ए, सफल
 कियो अवतार ॥ कुसल केमसुं आवियो ए, संघ सहू परवार ॥ से०
 ॥ १७ ॥ सेत्रुंज रास सोदामणो ए, सांजलज्यो सहू कोय ॥ घर
 वेगं जणे जावसुं ए, तसु यात्रा फल होय ॥ से० ॥ १८ ॥ संव
 त. सोल वयासिथे ए, आवण वदि सुखकार ॥ रास रच्यो सेत्रुंजत
 णो ए, नगर नागोर मजार ॥ से० ॥ १९ ॥ गिरुवो गढ खरतर
 तणो ए, श्रोजिनचंद सूरिस, प्रथम शिष्य श्रीपूजना ए, सकल
 चंद सुजगीत ॥ से० ॥ २० ॥ ताससीस जग जाणिये ए, सम
 यसुंदर नवझाय ॥ रास रच्यो तिण रूबनो ए, सुपतां आणंद था
 य ॥ से० ॥ २१ ॥ इति श्रीसेत्रुंजरास संपूर्ण ॥

॥ अथ शिखरगिरि रास लिख्यते ॥

॥ वृत्त ॥

॥ वादी वीस जिनेसरु, रचस्युं रास रसाल ॥ तीरथ
 खरसमेतनी, महिमा बनी विशाल ॥ १ ॥ मोटो तीरथ महिय
 प्रगट्यो शिखरसमेत ॥ कोनाकोनी मुनिवरु, सिद्ध गए इह खेत
 २ ॥ तीरथ शिखरसमेत ए, फरस्यां पाप पुलाय ॥ जविजन
 टो जावसुं, ज्युं सुख संपद आय ॥ ३ ॥ महिमा शिखरसमेतनी
 कहि न सके कवि कोय ॥ गुण अनंत जगवतना, तिम ए त
 रथ होय ॥ ४ ॥

॥ दाल १ ॥ चोपईती ॥

॥ गिरवर शिखर समो नहि कोष, एहनी महिमा स
 जग होय ॥ वीस जिनेसर मुगते गया, मुनिजन ध्यान धर
 ने रह्या ॥ १ ॥ प्रथम अयोध्यानगरी जली, तिहां जितशत्रु

नरेसर बली ॥ विजयाराणीने सुत जाण, अजितकुमर सहु गुण
नी खाण ॥२॥ जसु इहांदिक सेवा करे, इंझणी अति उच्च धरे ॥
तीर्थकरनी पववी लही, अंतर अरि जिण साध्या सही ॥३॥ अनु
क्रम इस जोगवतां जोग, पुन्य प्रसाद मिट्यो सहु जोग ॥ अवस
॥ दे संवत्सर दान, सैजम लीनो आप सुजाण ॥४॥ कर्म खपावो
पांम्यो ज्ञान, केवलदर्शन लह्यो प्रभां ॥ विचरे पुढवीमंनवमांदि,
ज्जयजीव प्रतिबोधन सादि ॥५॥ सिंदसेनादिक गणधर जया, पं
चाणवे संख्या सहु थया, एक लाख मुनिवर परिवरथा, आवक
आवकणी सहु करथा ॥६॥ तीन लाख बलि तीस हजार, साधव
या जाणो सुविचार ॥ आवक सहस अठाणुं सही, दोय लाख
संख्या गहगही ॥७॥ पांच लाख पैतालीस हजार, आवकणी सं
ख्या सुविचार ॥ धहुतर लाख पुरवनो आय, कंचनवरण सरिर
सुहाय ॥८॥ सादीव्यारसे धनुष तरीर, मान लह्यो प्रनु गुण गं
जरी ॥ गज लांगन प्रनुजीने जाण, अमृत सम जसु मीठी वाण
॥९॥ अनुक्रम प्रनुजी शिखरसमेत, गिरवर पर आव्या निज हेत
सहस मुनिवरने परिवार, मासखमण अणतण कर सार ॥ १० ॥
चैत्री सुवि पुनमने दिने, मुक्ति गये प्रनु तीरथ इणे ॥ नूचर खेव
र किन्नर सुरी, इंझदिकसहु उच्चव करी ॥११॥ थाप्यो तीरथ मोटो
मही, अठाइ महोच्चव कियो सही ॥ ए तीरथनी जात्रा करे, ते
जवियण अक्षयसुख वरे ॥ १२ ॥

॥ दुरा ॥

॥ श्रीसंजव जिनराज जी, गए इहां निर्वाण ॥ शिखरसमे
त सुहामणो, प्रगळ्यो तीरथ जाण ॥१॥

॥ दाल बीजी ॥ सुगण सनेरी साधन श्रीसीमंवर स्वाम ॥ ए देशी ॥

॥ सावडीनगरी जरी धन संपद बहु धोक, जैतारि नृप

राज करै सुखिया सब लोक ॥ सेनाराणी भीठी वाली गुणनी खो
 णी, जेहने सुत श्रीसंजव जनम्या सकल सुजाण ॥१॥ कंचनवरण
 सरीर मनोहर प्रचुनो जाण, लेंवन अश्वतथो सोहे प्रचुनो परधान
 न ॥ साठ लाख पूरबनो प्रचुनो आयु प्रमाण, धनुष च्यारसै उब
 पलै प्रचु देह बरवाण ॥ २ ॥ एकसो दोय संख्याये प्रचुने गणधर
 होय, दोय लाख मुनि जेहने गुणवरता जग जोय ॥ तीन लाख
 अमणी बली ऊपर सहस गतीस, जूमरुल विचरे प्रचु श्रीसंजव
 जगदीस ॥३॥ तीन लाख बलि सहस त्रयाणुं आवकलोक, पट
 लाख सहस गतीस आवकणी संख्या थोक ॥ त्रिमुखयक अरु ड
 रितादेवी सानिधकार, विचरंता प्रचु सकल संधमें जयश्कार ॥४॥
 सहस अमण परिवारे प्रचुजी सिखरसमेत, एक मास संलेखण
 कीनी निजपद हेत ॥ इण गिरि ऊपर पायो प्रचुजी पद निरवाण,
 तीरथ महिमा महियल मोटी थइय सुजाण ॥५॥

॥ बुरा ॥

॥ अजिनंदनं जिन वंदिये, पायो पद निरवाण ॥ शिखरस
 भेत सोदामणो, जेटो तीर्थ सुजाण ॥१॥

॥ डाल ग्रीनी ॥ सहस अमणसुं सुरु संनमपरो ॥ ५ देखी ॥

॥ नगरी अयोध्या सुरपुरि सम जली, संबर राजा सो
 मन रखी ॥ सिस्कार्थी राणी प्रचुतसु नंद ए, अजिनंदन जिन प्र
 टया चंद ए ॥ उल्लाखो ॥ चंद ए सोवन वरण सोहे, धनुष सा
 तीनसे ॥ सुंदर शरीर प्रमाण युतिकरा, कवि लंवन ते नित वसे
 पूर्व लाख पचास आयु, गणधर एकसो सोल ए ॥ तीन लाख मु
 ळ लाख आर्या, सहस त्रिसत् सोल ए, ॥१॥ चाल ॥ सहस अम्या
 दो लाख आदनी, संख्या चौ लाख सत्तावीसनी ॥ आवकएयांरी संख्या
 जाण ए, नायकयक कालिका गण ए ॥ उल्लाखो ॥ चाल ए शिखर

मत ऊपर मात-एक संलेखणा, इक सदस साधू परवरया प्रजु
 मुक्ति पहुंचे पेयणा ॥ इमही अग्रोष्या मेघ नरवर देवी मात सुमं
 गला, श्रीसुमति जिनवर जए नंदन सदा होत सुमंगला ॥३॥ चाल ॥
 सोवन वर्ण धनुष तसु तीनसे, खंवन क्रोंच सोहै सुजगे हसै ॥
 पूरव लाख पन्थासी आन ए, इकसौ गणधर गुणगण जान ए ॥
 उल्लाखो ॥ जान ए मुनि त्रिण लाख सोहै सदस बीत प्रमणां
 ए, पण लक्ष तीस हजार साध्वी आवक दोय लक्ष जाण ए ॥
 संख्या इक्यासी सदस ऊपर आवका इम आशिये, पण लाख
 सोहै सदस तुंवरु महाकाली मानिये ॥ श्रीशिखर ऊपर सात
 संख्या सदस साधु सुरंग ए, कर मातकी संलेखणा प्रजु मुक्ति
 पुहता चंग ए ॥३॥ चाल ॥ इम कोसंबीनगरी तात ए, धरनूप तात
 सुतीमा मात ए, पदम प्रजु तसु अंगज नाथ ए, खंवन कमलत
 णो सुज हाथ ए ॥ उल्लाखो ॥ हाथ ए धनुष प्रमाण पूरा अढाई
 सै त, कहौ, तीन लाख पूरव धित कहावै एकसौ गणधर लहो ॥
 लख तीन तीस हजार साधू बीस सदस लख च्यार ए, साधवी
 दोय खल सदस गिहतर आवक संख्या सार ए ॥४॥ चाल ॥ पांच
 लाख बलि पांच हजार ए, आवकण्यारी संख्या सार ए ॥ कुसम
 देव श्यामादेवी कही, लालवरण तन प्रजु सोहै सही ॥ उल्लाखो
 ॥ सोहै शिखरसमेत ऊपर, आवसे त्रिण मुनिवरा ॥ कर मात सं
 लेखन प्रजुनी, सेव करहै सुरवरा ॥ श्रीपदम प्रजुजी मुक्ति पहुंचा,
 गिर शिखर महिमा जई ॥ तसु चरण पंकज बालवंदे हृदय आनं
 द गहजही ॥ ५ ॥

॥ इरा ॥

॥ श्रीसुपास जिनंदना, पद पंकज आराम ॥ जविजन ब्रह्म
 रसु सेवतां, पामे वंचित काम ॥ १ ॥

॥ दाल चोयी ॥ श्रीसीमंहर साहिबा ॥ ए चाल ॥

॥ नगर बनारसी सोजता, राजा तात प्रतिष्ठ लाखे ॥ दे
वी पृथ्वी मात जी, स्वस्तिक लंगन सिष्ट लाखे ॥१॥ श्रीसुपार्थ
जिनंद जी, वीस पूरव लख आयु लाखे ॥ धनुष दोयसै देहनो क
चनवरण मुदाय लाखे ॥२॥ श्री० ॥ पचाणवे गणधर कहा,
धू त्रिण लाख दोय लाखे ॥ च्यार लाख तीस ऊपर, सहस
धवियां जोय लाखे ॥३॥ श्री० ॥ सहस सतावन लक्षनी, आ
संख्या थाय लाखे ॥ च्यार लाख बली जेणवै, सहस आवक
जाय लाखे ॥४॥ श्री० ॥ मातंगयक शांतासुरी, पांचसे मुनि
वर लाखे ॥ करि अणसण मुगते गया, नाम लियां निस्तार
ले ॥५॥ श्री० ॥ नगर चंडपुर इण परे, राजा तात महेस लाखे
देवी माता लक्ष्मणा, सुत चंडाप्रभु वेस लाखे ॥६॥ श्रीचंडाप्र
बंदिये, चंडवरण तनु जेह लाखे ॥ लंगन चंडतणो जलो, धनु
दोढसे देह लाखे ॥७॥ श्रीचं० ॥ जविककमल प्रतिबोधता, से
मुर नर यक लाखे ॥ दस लाख पूरव आलखो, तेणवे गणध
दह लाखे ॥ श्रीचं० ॥८॥ दोय लाख सहस पचाणवे, मुनि
मणी तीन लह लाखे ॥ असी सहस संका कही, आवक बलि
दोय लह लाखे ॥९॥ श्री० ॥ लाख पचास ऊपर बली, आ
विका चउ लह धार लाखे ॥ सहस इकाणवै ऊपरै, प्रभुजी
नो परिवार लाखे ॥१०॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव नृकुटीसुरी, स
हस साधु परिवार लाखे ॥ संखेखन इक मासनी, पुढता
मुक्ति मजार लाखे ॥११॥ श्री० ॥

॥ बुहा ॥

॥ जय श्रीसुबिद जिनेसरु, जगपति दीनदयाल ॥ स
मुगते गया, जविजनके प्रतिपाल ॥१॥

॥ दाल पांचमी ॥ श्रीविमलाचल सिरविलो ॥ ५ देवी ॥

॥ नयर काकंदी नरपति, एम पिता सुयीव ॥ देवी रामा
माता सुत, जए सुविध सुज जीव ॥ १ ॥ रजतवरण सम तनु
सत, धनुष एक परिमाण ॥ दोय लाख पूरव कह्यो, प्रजुनो आयु
सुजाण ॥ २ ॥ अक्यासी संख्या जए, गणधर परम प्रधान ॥ ल
ख दो मुनि विंशति सदस, इक लाख अमणी जाण ॥ ३ ॥ दोय
लक्ष आवक कहा, अरु गुणतीस हजार ॥ एकतर चौ लाख सदस,
आवकणी सुविचार ॥ ४ ॥ सुरी सुतारा सुर अजित, श्रीसंघ सा
निधकार ॥ सदस साधु परिवारसुं, आए सिखर सुचार ॥ ५ ॥
मात संलेखण कर प्रजु, मुक्ति गए इह ठोर ॥ तीरथ मदिमा म
दिपलै, प्रगटी घ्यारुं ठोर ॥ ६ ॥ इमदिज शीतलनाधनो, दिव सु
राज्यो अधिकार ॥ जदिलपुर दृढरथ पिता, मात नंदा सुखकार ॥
७ ॥ लंवन सुज श्रीवञ्जनो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ कंचनवरण नेउ
धनुष, मान सरीर अमंद ॥ ८ ॥ एक लाख पूरव कह्यो, प्रजुनो आयु
प्रमाण ॥ इक्यासी गणधर कहा, मुनि इक लाख सुजाण ॥ ९ ॥
एक लाख चाळीस सदस, अमणी संख्या ठोर ॥ सदस तयासी
दोय लाख, आवक संख्या जोर ॥ १० ॥ सदस अठावन लक्ष चौ,
आवकणी सुविचार ॥ देवी असोका ब्रह्म यक्ष, तहु संघ सानि
धकार ॥ ११ ॥ सिखरसमेत सदस एक, साधुने परिवार ॥ मुक्ति
गए प्रजु मातकी, संलेखन कर सार ॥ १२ ॥

॥ दाल छठी ॥ पनर संगठि सावो राजा ॥ ५ देवी ॥

॥ सिंदपुरी नगरी तिहां राजा, विष्णु नरेसर तात जी, कं
चनवरण श्रेयांस प्रजुजी, उपज्या विष्णु सुमात जी ॥ १ ॥ नमो
रेनमो श्रीविजुवन राजा, खमग लंवन प्रजु पायजी ॥ धनुष असी

देहमांन चौरासी, लाख वरसनो आयु जी ॥ २ ॥ न० ॥ गणधर
 बहुतर सदस चौरासी, मुनि श्रमणी तीन लक्ष जी ॥ तीन स
 स वलि सदस गुणपासी, श्रावक पुण दो लक्ष जी ॥ ३ ॥ न० ॥
 अमृतालीस सदस वलि चौ लख, श्राविका जाणो सार जी ॥ ४ ॥
 न० ॥ अमर सुरी मांनवी जाणो, श्रीसंघ सानिधकार जी ॥ ४ ॥
 न० ॥ सदस मुनीसरनै परिवारै, प्रभुजी सिखरसमेत जी ॥ मा
 स संलेखण कर प्रभु पोहता, मुक्तिमदल मुख हेत जी ॥ न० ॥
 ५ ॥ दिव कंषिलपुर तात नूपति, श्रीकृतवर्म सुमात जी ॥ ५ ॥
 मादेवी अंगज कपना, विमलनाथ जगतात जी ॥ न० ॥ ६ ॥
 कर लंगन सौवनकाया, साठ धनुष देहीमांन जी ॥ साठ लाख
 चरनो आयु, शिष्य सतावन जान जी ॥ न० ॥ ७ ॥ साठ सद
 मुनि अरु सय इक लख, श्रमणी श्रावक जाण जी ॥ आठ सद
 दोष लक्ष श्राविका, चौ लक्ष संख्या आण जी ॥ न० ॥ ८ ॥
 एमुख सुरवर विदिता देवी, प्रभुजी सिखरसमेत जी ॥ पट हजार
 साधू परिवारे, मुक्ति गए मुख हेत जी ॥ न० ॥ ९ ॥ नगरी नाम
 अपोष्या नरवर, सिंहासेन जग सार जी ॥ सुजसा मात तिणे सुन
 जायो, प्रभुजी अनंतकुमार जी ॥ न० ॥ १० ॥ लंगन द्येन सो
 वन सम काया, धनुष पचास प्रमाण जी ॥ तीस लाख चरनो
 आयु, गणधर पचवीस आंश जी ॥ न० ॥ ११ ॥ आठ सदस
 मुनीसर सोदे, बासठ श्रमणी हजार जी ॥ ८ हजार लाख दोष
 श्रावक, श्रावकणी इम धार जी ॥ न० ॥ १२ ॥ द्यार साठ इ
 लि चवइ हजार ए, अंकुसा देवी दोष जी ॥ पाताळ यह श्रीसंघ
 निध, कारी नित प्रति जोष जी ॥ न० ॥ १३ ॥ आठो मुनि
 परिवारै, सिखरसमेत प्रवान जी ॥ मास संलेखन कर वि
 १४ ॥ पुदक पद निरवाण जी ॥ न० ॥ १४ ॥

॥ दृष्टा ॥

॥ अस्ते धर्म जिनेसरू, पुद्गता पद निर्वाण ॥ सिखरसमेत
रिंद पर, तमोश् जयजाण ॥१॥

॥ दाल सातमी ॥ जयतगुरु त्रिसलानंदन जी ॥ पदधी ॥

॥ रत्नपुरी नगरी धणी जी, ज्ञानुराग सुजाण ॥ राणी
ब्रत मातने जी, धर्मनाथ गुणखाण ॥१॥ जगतपति धर्म जिने
सर सार ॥ धनुष पैतालीस तनु कह्यो जी, वज्र खंडन सुखकार
॥२॥ ज० ॥ चौतीस गणधर मुनि कहा जी, चौसठ सदस प्रमा
ण ॥ अमणी वासठ सदसस्ये जी, आवक दोय लक्ष मान ॥ ३ ॥
ज० ॥ चार सदस बलि ऊपरां जी, चौ लख एक हजार ॥
आवकणी संख्या कही जी, दस लक्ष आयु विचार ॥४॥ ज० ॥
किन्नर सुर यंतना सुरी जी, एक सदस परिवार ॥ समेतसिखर सु
गते गया जी, बांदू वार हजार ॥५॥ ज० ॥ इच्छापुर विश्वसेनना
जी, अचिर मात उदार ॥ शांति जिनेसर जनमिया जी, त्रिभुवन
जयशकार ॥ जगतपति शांति जिनेसर सार ॥६॥ मृग खंडन सोवन
समो जी, देही धनुष चाखीस ॥ आयु वरप एक लाखनो जी, ठ
तीस गणधर सीस ॥ ज० ॥७॥ वासठ सदस मूनि वसै जी, इगसठ
अमणी हजार ॥ दोय लाख आवक कहा जी, ऊपर नेऊ हजार
॥ ८ ॥ ज० ॥ सदस त्रिमाणू आविका जी, तीन लाख परिवार ॥
गुरुपद देवीसुरी जी, श्रीसंघ सानिप्रकार ॥ ज० ॥ ९ ॥ नवसै मु
नि परवार स्युं जी, आया सिखरसमेत ॥ मासखमणकर मुगतिमें
जी, पुद्गता निजपद देत ॥ ज० ॥ १० ॥ असें इच्छापुर जलो
जी, राजा सुर सुतात ॥ कुंथुनाथ जिन जनमियां जी, कंचन त
नु श्रीमात ॥ जगतपति कुंथु जिनेसर सार ॥ ११ ॥ गग
खंडन पेंतीसनो जी, धनुष देहनो मान ॥ सदस प्रण्याशव वरस

नो जी, आयु प्रज्जुनो जान ॥ १२ ॥ ज० ॥ पैंतीस गणधर दीपता
जी, साठ सदस मुनि जान ॥ उसै साठ सदस वली जी, अमली
संख्या मान ॥ ज० ॥ १३ ॥ सदस गुणियासी लकनो जी, आव
क संख्या होय ॥ सदस इक्यासी तीन लाखनी जी, आविका सं
ख्या जोय ॥ ज० ॥ १४ ॥ सातसे साधू परवरया जी, देवी ब
ला गंधर्व ॥ कुंघुनाथ मुगते गया जी, माख संखेखण सर्व ॥ ज० ॥ १५

॥ दुहा ॥

॥ श्रीअरिनाथ जिनंदनो, कहिस्युं अब अधिकार ॥ ओ
ता सुणज्यो प्रेम धर, थास्यै लान्न अपार ॥ १ ॥

॥ दाढ आठमी ॥ देसी विछियानी ॥ हारे लाला श्रीजिनकुशल सूरिसहाय देसी ॥

॥ हारे लाला श्रीअरिनाथ जिनेसरू, तिहां नगरी अयोध्या
चंदरे लाला ॥ तात सुदर्शन मातजी, नंदादेवीना नंद रे लाला

॥ १ ॥ श्रीअ० ॥ लंठन नंदावर्चनो, तीस धनुष देहीनो मान रे

लाला ॥ कंचनवरण सुहामणो, आयु सदस चौरासी प्रमाण रे लाला

॥ २ ॥ श्रीअ० ॥ इक लाख आवक ऊरे, वलि संख्या अधकी जाण

लाला ॥ सदस बहुतर ताननी लरु आविका संख्या आंशरे लाला ॥

श्रीअ० ॥ ३ ॥ देव देवी सानिध करे, इक सदस मुनि परया

रे लाला ॥ मुक्ति गए इण गिर प्रज्जु, कर मास संखेखण सा

ररे ॥ श्रीअ० ॥ ४ ॥ मिथिलानगर प्रजावती, मात पिता श्री

कुंज राय रे लाला ॥ लंठन कलस पचोसनो, वपु धनुष सोवन

सम कायेरे लाला ॥ श्रीमखिनाथ जिनेसरू ॥ ५ ॥ सदस पचा

वन बर्पनी, श्रित गणधर अणवीस रे लाला ॥ जविक कमल प्रति

बोधता, जगनायक श्रीजगदीस रे लाला ॥ ६ ॥ श्री म० ॥ वा

सदस मूनीसरू, अमली पचावन सदस रे लाला ॥ सदस

लकनी, आवकनी संख्या सार रे लाला ॥ ७ ॥ श्री म० ॥

श्राविका सिद्धर सदसनी, लक्ष्मी तीन संख्या सुविचार रे लाला ॥ सदस
मुनि परवारस्युं, गये मुक्ति संजैखण धार रे लाला ॥ श्रीम० ॥ १० ॥
विजयदी राजा पिता, सुग्रीव पद्मावती मात रे लाला ॥ श्यामव
रण तनु शोभता, जे कपिल खंठन विख्यात रे, लाला ॥ श्रीमुनिसुव्रत
लामिजी ॥ १० ॥ धनुष बीस देहीतणो, आयु वर तीस हजार
रे लाला ॥ अष्टादश गणधर प्रिया, तीस सदस मुनितर सार रे
लाला ॥ श्रीमु० ॥ ११ ॥ अमली सदस पचवीसनी, संख्या ब
हुतर हजार रे लाला ॥ इके लक्ष कपरि श्राविका, तीन लक्ष प
चास हजार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १२ ॥ वक्रणयक देवी जंली,
नरदत्ता सानिधकार रे लाला ॥ सदस मुनि परवारसे, गए मुक्ति
महल सुख सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १३ ॥ विजय पिता विप्रा
मातजी, सोवन सम श्रीनमिनाथ रे लाला ॥ नीलकमल खंठन
कह्यो, वपु धनुष पनर आयु साथ रे लाला ॥ श्रीनमिनाथ जिने
सुख ॥ १४ ॥ इस दंडार वरततणो, गणधर सिद्धर परिमाण रे
लाला ॥ बीस इकितालीस सदस कम, साधु साधवी संख्या जाण
रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १५ ॥ इक लख सिद्धर सदसनी, तीन ल
क्ष सदस बलि होय रे लाला ॥ श्रावक संख्या श्राविका, अनक्रम
करि संख्या जोय रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १६ ॥ विचरता जूमनखे,
आया सिद्धर समेत मजार रे लाला ॥ जूकुटी एक गंधारी सुरी,
इक सदस मुनि परवार रे लाला ॥ १७ ॥ श्रीन० ॥

॥ दूरा ॥

परमेश्वर श्रीपासनी, महिमा जगत विख्यात ॥ शिखर सि
द्धमणि सदसफण, जगजीवन जगतात ॥ १८ ॥

॥ दाढ नवमी ॥ आदर जीव क्षमागुण अदिर ॥ ए देशी ॥

॥ जय २ परम पुरुष पुरुषोत्तम, पारस पारसनाथ जी ॥

सांवरिया साहिब जगनायक, नाम अनेक विख्यात जी ॥ १ ॥
 जय श्री सिखर समेत सिरोमणि, श्रीसांवरिया पास जी ॥ ध्यावे
 सेवे जे नर तेदनी, पूरे बंठित आस जी ॥ २ ॥ ज० ॥ कासी दे
 स वणारसी नगरी, श्रीअश्वसेन नरिंद जी, वामामाता जगविख्या
 ता, तेदना सुत सुखकंद जी ॥ ३ ॥ जय० ॥ पन्नग लंगन नील
 वरण ठवि, देहि शुभ नख हाथ जी ॥ आयु इकसो वरस प्रमाणे,
 गणधर दस प्रभु साथ जी ॥ ४ ॥ ज० ॥ सोल सहस मुनिवर
 अरु श्रमणी, कही अरुतीस हजार जी ॥ जूमंरुल विचरे जवि
 जनक, बोधबीज दातार जी ॥ ५ ॥ ज० ॥ चोसठ सहस लाख इ
 क श्रावक, गुणचालीस हजार जी ॥ तीन लाख श्रावकणी स
 रूपा, पार्श्वयक्ष सुर सार जी ॥ ६ ॥ ज० ॥ बीस जिनैतर मुगते
 पुइता, महिमा थइय अपार जी ॥ तिण ए तीरथ प्रगट्यो ज
 में, मुक्तिणो दातार जी ॥ ७ ॥ ज० ॥ बदरी पाछे जे न
 जावै, जेठे सिखर गिरिंद जी ॥ ते नर मनबंठित फल पावे, ए
 रंतठनो कंद जी ॥ ८ ॥ ज० ॥ बहुविध संघतणी करै जकि, स
 घपति नाम धराय जी ॥ सफल करे संपद निज पामी, जेदनी
 सुजस सवाय जी ॥ ९ ॥ ज० ॥ परजव सुरनर संपद पामे, जा
 आ करे गहगाट जी ॥ सांघर्मी वछल मुनिजकि, पूजा छेव पा
 ट जी ॥ १० ॥ ज० ॥ दूंक २ पर चरण प्रज्जना, पूजो जविज
 न जाव जी ॥ ध्यान धरो जिनवरनो मनमें, आनंद अधिक ठ
 छाव जी ॥ ११ ॥ ज० ॥ रास रज्यो श्रीसिखरगिरीनो, सुणता
 नवेनिध थाय जी ॥ तिण ए जविजन जाव धरीने, सुणज्यो म
 न थिर लाय जी ॥ १२ ॥ ज० ॥ खरतर गछपति महिमाधारी,
 कीरत जग विख्यात जी ॥ जय श्रीजिनसौजाग्य सूरेश्वर, अमृत
 सुगात जी ॥ १३ ॥ ज० ॥ तामु पसायें रास रज्यो ए, अ

मृतसमुद्गे सीत जी ॥ बालचंद्र निज मति अनुसारे, सीधो विष्णु
 थ जगीत जी ॥ १४ ॥ ज० ॥ संयत उगणोसै सितमोत्तर, मुदि
 त्रैशाख सुदाख जी ॥ रास अजीमगंजमांहे कीनो, जणतां मंगल
 माख जी ॥ १५ ॥ ज० ॥ इति श्रीसिखर गिरी रास संपूर्ण ॥

॥ अथ मुनि मालका लिख्यते ॥ दाल १ ॥

रूपज्ञ प्रमुख जिन पाययुग प्रणमूं, तिवसुख दायक मनह
 उज्जात ॥ पुंढरीक श्रीगौतम आदिक, गणेश्वर गुरु मन कमल वि
 कास ॥ १ ॥ प्रह सम सूधा साधु नमुं नित, जावै अमण सुगुरु
 जगवंत ॥ नाम मक्षण कर पाप पखालूं, परमानंद सुमति विरुतं
 त ॥ २ ॥ प्र० ॥ जगत महाभुनि प्रथम चक्रोत्तर, बाहूबज उप
 शम जंकार ॥ सूर्यसादिक अठ मुनितर, पांभ्यो विमलाचल ज
 वषार ॥ ३ ॥ प्र० ॥ रूपज्ञवंत जे अनुक्रम हुवा, मुनिवर कोनो
 लाख असंख, ओतेष्टुंजे शिवपुर सीधा, कलमल कालक मूंकी कं
 ख ॥ ४ ॥ प्र० ॥ लगर प्रमुख निरुपम नव चक्रवर्ति, साधु महा
 बल संजम सीद ॥ अचलादिक बलदेव अष्टमुनि, राम रूपोत्तर न
 वन अवीह ॥ ५ ॥ प्र० ॥ श्रीप्रतिबुद्ध प्रमुख ठ वसुंदर, श्रीमल्लि
 नाथ पूरबजव नित्र ॥ पटुता परम रूपोत्तर शिवपुर, पाली श्रीजि
 न आंख पवित्र ॥ ६ ॥ प्र० ॥ बंडु विष्णुकुमार लवधि निधि, खं
 दक सूरिना सीत सब पंच ॥ कार्तिकसेठ सुसाधु कीर्तिधर, अम
 ण सुमोसल व्रत निरवंच ॥ ७ ॥ प्र० ॥ श्रीयष्टवंत अक्षोभसु सा
 गर, प्रमुख आठ अश्वार प्रवान ॥ श्रीरदनेमि नेमजिन बंधव
 निरमल गुणगण स्वण निधान ॥ ८ ॥ श्री० ॥ जालि मयाहिने
 उवयालो, पुरतसेण वारितेन प्रजुन्न ॥ संव अने अनिरुद्ध रूपोत्तर,
 सत्यनेमि दृढनेमि सुधन्य ॥ ९ ॥ प्र० ॥ कुमार अनीकजसादिक
 षष्ठ मुनि, गुणगिरुवो श्रीगजसुकसाव ॥ दंडण कपि श्रीथावचा

सुते, सहस्र साधु संजतसु रूपाल ॥ १० ॥ प्र० ॥

॥ बाल चीनी ॥ राग धन्याभी ॥

॥ सहस्र श्रमणसुं मुक संजमधरो, पंचसंयासु सेलग मुनि
वरो ॥ सिद्ध यया श्रीपुंरगिरिवरो, करुणाकर प्रसंग्यां संपदकरो ॥
उल्लाखो ॥ संपद करो समदम रिपीसर साधु सारण सोह ए, मं
तर प्रकासे तिमर नासे, जविकजन मन मोह ए ॥ प्रत्येकबुद्ध प्रबुद्ध
नारद मुनि प्रमुख पैताल ए, दसदंत महाकृपि कुंजवारे साधु नमुं
त्रिहुं काल ए ॥ ११ ॥ चाल ॥ रंग रिपजदत्त रतनत्रय मुणी, त
मरुं देवानंदा साहुणी ॥ पांचे पांनव प्रणमुं मुनिपती, केसपपती
बोधक जिनमती ॥ उल्लाखो ॥ जिनमती बालक पूत्र मेदल शिव
आणंद रत्नियो, अणगार कासव धर्म जाखयो सोघि तिसपुर
त्कियो ॥ कालासवेती पूत्र आतम अरथ सावक उपसमद, श्री
करीक महामुनीसर प्रणमिये शुज संयमी ॥ १२ ॥ चाल ॥
बलकलची रकेयली, श्री अयमचो मुनिवर मन रली ॥ श्रीकर
डुमद नमि निगया, निज देसे नरवर श्रीजुया ॥ उल्लाखो ॥
जुवा ए वृपजादि देखी अया वरु बंशरागिया, संजमतिरि जज
दनिजा तजिप्र जोगे जागिया ॥ प्रत्येकबुद्धा चार सिद्धा सिद्ध प्रा
एकण समे, सुप्रसन्नचंद मुनिंद निरसम प्रेम प्रणमुं प्रह समे ॥
॥ चाल ॥ खंत दुल्लकुमारसु ध्याइये, सोदंवा मुनि चरणे लय
इये ॥ काल उदाई प्रमुख म्दामुणी, संजम सुद जपंती साधु
॥ उल्लाखो ॥ साधूणी जाणी जगवलाणी, परमपद सुख पांनि
॥ श्रीश्रमणजड सुजड सुंदर अचल आतसरामिया ॥ श्रीसुप्रतिष्ठा
तीत सुव्रत, साधु सुव्रत सेदरो ॥ चारित्र रिप गुणवंत गोचर गुरु
॥ सागरो ॥ १३ ॥ चाल ॥ तिरि तिवराय रूपीसर बंदिये, दसा
॥ नमुं उल्ल बंदिये ॥ अर्जुननाली गुल संजमधरो, सुददना

१०. सितवरमणी बरो ॥ उल्लाखो ॥ सितवरमणी बरो श्री कूरगनू कर्मावंत
 प्रसिद्ध, कोन्निन्न दिन्न अनै सेवाली पनर सतक तिम्होत्तरा ॥ गो
 तम प्रबोधत सिद्ध पुदता नमुं चरण करणाधरा ॥ १५ ॥ चाल ॥
 गऊआ श्रीगुणसागर गाईये, प्रथवीचंड प्रणम्यां सुख पाईये ॥ खं
 दकुमार सदा अचिन्तदिये, नमिद्ध जगद् मित्र मन आर्णदिये ॥
 उल्लाखो ॥ आर्णदिये भैतार्य मुनिवर जगतसुं समरी करी, रूप ह
 लापुत्र चिलापुत्र मृगापुत्र हीये धरी ॥ श्रीई नाम निर्भय निर्मम
 धर्मरुचि धर्मागिरो ॥ तेतलीपुत्र सुबुद्धि बोध तसु जितशत्रु मुनी
 सरो ॥ १६ ॥ चाल ॥ उदय २ कर जगि २ जसतणो, भ्रमण सु
 वंतण सील सुदामणो ॥ श्रीअन्नयसुत आडकुमार ए, चित्त चतुर
 न्नर चित्त चमकार ए ॥ उल्लाखो ॥ चमकार सार सुजात रुषिवर
 देवतांनिध जस घणी, गंगेय गिरुवो गुणे गाजै सुजिन पावत हि
 त धणी ॥ श्रीधर्मघोष सुसीत धर्मरुचि, साधु श्रीजिनदेव ए ॥
 श्रीकपिल रुषि हरिकेशव बल मुनि, नित नमुं निरलेव ए ॥ १७ ॥
 ॥ चाल ॥ जति जयघोष विजयघोषे जल, सेवुं श्रुतधर श्रीदेवजसुता ॥ श्री
 इबुकार नृपति कमलावती, रांणी जूगुसुं श्रेष्ठित सुजसती ॥ उल्ला
 खो ॥ सुजसती जेदनी, जसाजार्था पुत्र दोष बलाणिये, ए वहुं
 लेइ चारु चारित्र मुगति पदुता जाणिये ॥ रुत्रिय मुनिसर साधु
 संजम धर्मरुचि महावती, निर्भयनाथ अनाथ बंदू समुद्रपाल सुत
 मती ॥ १८ ॥ चाल ॥ कुम्भापुत्र नमुं केवल कळपो, विषसुं शीतल
 सितकमला मिळ्यो ॥ धन धन धन्यो सुरगिरी धीर ए, वीरप्रशं
 स्या तप गुण वीर ए ॥ १९ ॥ श्रीवीर दीक्षित श्रीसुवाहुजह नं
 दकुमार ए, आदिक दसे रिष चरिय जेदना सुख विपाक उदार ए ॥
 श्रीचंरुद्ध सुसीत खंदग कर्मानिधि कदिये, इण कत्तै, कुरुदत्त सुत
 तीसग सरोरुद्ध, रिष नम्यां आस्या फले ॥ २० ॥ चाल ॥ अंग २

मुखं रिपु च्यारे आदरो, विधिसुं संजम सिद्धिवधू वरी ॥ अनेकुमा
मुनि अन्नयंकरो, दल्ल विदल्लसु आतम दितकरो ॥ उल्लासो
दितकरो दयावर मेघ मुनिवर नंदिवेण आराधियै, सुनहा
नै सर्वानुज्जति समर सिवसुख साधिये ॥ श्रीसिद्ध साधू अने
उदापेन चरम राजरूपीसरो, श्रीतालजइ सुधन्न मुनिवर समर
मंगलकरो ॥ २० ॥

॥ बाल ३ ॥ राग पञ्चासिरी ॥

वमवेरागी वर नमूं, युगवर जंजूसांमि ॥ प्रजव तियेपेन
परगमो, सुजस जसोजद्र स्वांमि ॥ मदा मुनिसर नित नमूं जो,
नामे पर नवनिध्द वाधै रिद्ध समुद्ध ॥ मदा० ॥ २२ ॥ जग सं
तिविजय जयो, जद्रपाहु रुतजद्र, जग जोगीसर जागतो, मुनि
श्रीधूलजद्र ॥ २३ ॥ म० ॥ जद्रपाहु स्वामीतणा, प्यार शि
मुनीराय ॥ सीत परीरद जिणसहा, सारपा २ आतम फाज ॥ म०
॥ २४ ॥ अल्लमदागिरि जाशिपे, अल्लमुदधि विसाल ॥ रांप्रति नृ
पतिबोदियो, श्रीअमवंतीसुकमाळ ॥ म० ॥ २५ ॥ आरिजसा
यसंसियो, अल्लमुजइ मुनीत ॥ अल्लमंगु मदिमा निलो, रींदि
रो समुनीत ॥ म० ॥ २६ ॥ पनगिरि त्रियर मदामनी, श्रीदया
स्वामी मुनिराय ॥ अरदक्षिण मुनि अमदरयो, जद्रगुपति निरमाय
॥ म० ॥ २७ ॥ वपरसेन विद्यावद्ध, श्रीरहत गुरु दक्ष ॥ पुन
मित्र गुल गदगदो, प्रनु डारवतका पक्ष ॥ म० ॥ २८ ॥ विं
धुं सुविद जरणो, श्रीत्रिगुल सुविद ॥ मूत्रमय रतेन जरणो,
रुमाअनव देवद ॥ म० ॥ २९ ॥ पंचम काव महामुनी, श्री
अरमे मूर दयाव ॥ मुद्ध क्रिया खरनर सही, त्रिन आजा प्रतिपा
॥ ३० ॥ इम वनर कमंडूमी त्रिदे, दुमा दारये अर
अत अंगधुत्री ॥ अत्रिगुणव ॥ म० ॥ ३१ ॥ अत्रि

सुंदर रायने, साधुणी चंदनबाल ॥ आदिक सीलवती सती, त्रिक
 रण सुद्ध त्रिकाल ॥ म० ॥ ३२ ॥ संवत् सोल बत्तीस ए, श्री
 विमलनाथ सुरसाल ॥ दिक्का कट्याणक दिने, भूश्री श्रीमुनिमाल
 ॥ म० ॥ ३३ ॥ रिणी पुरै रविधामणो, श्रीशीतल जिनचंद ॥
 रूरि विजय राजे सदा, संघ सकल आणंद ॥ म० ॥ ३४ ॥ श्री
 तिज्जइ सुगुरुतणें, सुपसाये सुखकार ॥ चारित्र सिंघ वखाणीये,
 तदा२ जयकार ॥ म० ॥ ३५ ॥ मनहर श्रीमुनिमालका, गुणग
 ॥ परिमलपूर ॥ कंठ उवे उत्तम जिके, पामे सुख जरपूर ॥ म० ॥
 ३६ ॥ महा मुनिसर गावतां, सुरतरु सफल समान ॥ अष्टम
 हातिद्व घेर फले, सदा२ कट्याण ॥ म० ॥ ३७ ॥ इति मुनिमाल
 का साधु वंदना संपूर्णम् ॥

॥ अथ छिन्नं जिन स्तवन लि० ॥

॥ दो० ॥ धरतमान चौवीसी वंदू, मन सूपै नित मेव री माई ॥
 रूपज अजित संजव अजिनंदन, सुमति पदम प्रजु सेव री माई ॥
 ॥ व० ॥ १ ॥ श्रीसुपार्थ वंद प्रजु प्रणमूं, सुविध शीतल श्रेयांस री
 माई ॥ वासपूज्य विमल अनंत धरम जिन, शांति कुंयु परसंस री
 माई ॥ व० ॥ २ ॥ अरिजिन महि अने मुनिसुवत, नमि नेमी
 पास जिनंद री माई ॥ चोवीसमा श्रीवीर जिनेसर, प्रणमूं परमा
 नंद री माई ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ दाल २ ॥ ग्रह सम सूप साधु जगु नित ॥ ए देखी ॥

॥ नित २ अतीत चोवीसी नमिये, जेइना नांम प्रगट ए जाण ॥
 केवलग्यानी ते निरवाणी, सागर मदाजस विमल वखाण ॥ ४ ॥
 ॥ नि० ॥ सर्वानुज्जति श्रीधरवत् जिनवर, वामोदर सुतजाश्रीस्वां
 मि ॥ मुनिसुवत सुमति शिवगति जिन, श्रीअस्ताग नेमीसर नांम
 ॥ ५ ॥ नि० ॥ अनिल पशोपर तेम कतारय, श्रीजिनेसर सुद्धम

ति सुजगीत, सिवकर स्थंदन संप्रति नामे, वंदीजे जिनवर वीर
स ॥ २६ ॥ नि० ॥

॥ गोल ३ ॥ सफल सैसारनी ॥

जे जविस्संतिअणागए काल ए तेह चौविस प्रणमीत त्रि
काल ए प्रथम माहाराज श्रेणिकतणो जीव ए श्रीपदमनाज प्र
मीत सदीव ए ॥ १ ॥ वीरनो पितरियो नाम सुपास ए, हुती
जिन वीर्य सुरदेव सुप्रकास ए ॥ श्रेणिक सुत उवाइ नरिव ए
तीसरो तेह सुपास जिणंद ए ॥ २ ॥ शिष्य श्रीवीरनो पोहजे
साव ए, चौथो स्वप्नप्रभू नाम आराधि ए ॥ दृढायुष जीव सि
तमें जाणियै, पंचम सर्वानुभूते प्रमाणिये ॥ ३ ॥ कीर्त्त इण नाम
इक जीव कहीजिये, देवश्रुत ते वगे स्वांमि सजहीजियै ॥ स
आवक दुस्यै उदय जिन सातमो, आनंदनो जीव पेदास जि
आवमो ॥ ४ ॥ सुनंदनो जीव ते नवम पोहल जिणं, सतक आव
शतकीर्त्ति वसमो जणूं ॥ देवकीजीव मुनिसुव्रत इग्यारमो, स
कीजीव ते अमम जिन बारमो ॥ ५ ॥ वासुदेवजीव निकया
जिन तेरमो, बलदेवजीव निपुलाक चवदम नमो ॥ पनरमो नि
मम देव सुजसा कही, रोहरीजीव विप्रगुप्त सोलम सही ॥ ६ ॥
समाध जिन सतरमो आवका रेवतो, अठारमो शंखजीव सं
जिनपती ॥ दीपायनजीव यशोधर उगणीसमो, कृष्णकोरजीव
ते विजय जिन बीसमो ॥ ७ ॥ महि इकवीसमो जीव नारदतणो,
देव घावीसमो अंबुज आवक जणूं ॥ तेवीसमो अमरजीव अनं
वीरज नमो, स्वातवुधजीव ते जइ भोवीसमो ॥ ८ ॥ पद आव
जिन जाणिया, प्रवचन सारनद्वारथी आणिया ॥ केइ ए
साम्ब अनुसारथी साय कर मरदहा

॥ श्लोक ३ ॥ आजनिरेजो रे दीसे नाराजो ए देखी ॥

विहरमाण जिन वीसे बंदिगै, महाविदेह विरुघात ॥ सीमंथर
शुगमंथिर वाहुजी, श्रीसुबाहु सुजात ॥ वि० ॥ ६ ॥ स्वयंप्रभु
रुज्जानन अनंतवीरजी, सूरप्रभु तेम विशाख ॥ वज्रधर चंडानन
चंडवाहुजी, सुजंग ईश्वर नेमि जाल ॥ वि० ॥ ७ ॥ बैरसेन महा
जइ नमुं वली, देवयसा यसोरिद्ध अढीदीपमे विचरे आज ए, नाम
लियां नचनिद्ध ॥ वि० ॥ ८ ॥

॥ श्लोक ४ ॥ रे जीव जिन धर्म कीजिये ॥ ए देखी ॥

ज्यार तीर्थकर सासता, इणदिज अजिधान ॥ रुक्मजानन चं-
जानन वारिपेण वर्द्धमान ॥ ज्यार० ॥ ए ॥ अठ कोमि ठप्पन्न
लाख ए सत्ताणू हजार ॥ चउसे बयासी देहरा, त्रिहुं लोक मज्जार
॥ ज्यार० ॥ १० ॥ नवसे पणवीस कोमिया, बिब प्रेपन लाख ॥
सदस अठावीस ज्यारसे, अठयासी जाल ॥ ज्यार० ॥ ११ ॥ विजु
जिणवर नाम ए, समरघा सुखदाय ॥ प्रणम्यां पाप मिटेपरा, तम
कित सुद्ध पाय ॥ ज्यार० ॥ १२ ॥

॥ कलस ॥

इम त्रिण चोवीसी वीस विहरमाण चक्र जिणवर सासता,
संयुग्या सतरैसै बयालै अधिक आणी आसता ॥ जिन रतनचित्त
मणितणो पर प्रबल बंठित पूर ए, प्रदत्तमै त्रिकरण श्रुद्ध प्रणमै
सदा जिनचंड सूर ए ॥ १३ ॥ इति श्री विघ्नं जिन स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अय उपदेशमाला पोसह सिधाय लि० ॥

जग चूनामणिजूठ, उसजो वीरो तिलोप सिरि तिलठ ॥
एगो लोणाइचो, एगो चम्कू तिहुअणस्त ॥ १ ॥ संवडरमुत्तज जिणो,
बम्मासे बढमाण जिणचंडो ॥ इइ विहरिया निरसणा, जए ऊएठव
भाषेणं ॥ २ ॥ जइता तिलोपनादो, विसदई बहुचाई असरितज

एस्त ॥ इय जीयंतकराई, एत खमा सबसादृशं ॥ ३ ॥ न
 ऊई चालेन, महइ महावदभाण जिणचंदो ॥ उवसंग सहस
 वि, मेरु जहा वायगुं जादिं ॥ ४ ॥ जहो विणीय विणन, प
 गणहरो समत्त सुयनाशी ॥ जाणंतो वि तमत्तं, विन्ध्य दि
 सुणइ सव्वं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइत्त तं सिरेण इत्तं
 इय गुरुजण मुह जणियं, कयंजलिउमेहिं सोयव्वं ॥ ६ ॥ उ
 सुर गणाण इंदो, गहगणतारागणाण जह चंदो ॥ जहय पया
 नरिंदो, गणस्त वि गुरु तहाणंदो ॥ ७ ॥ बालुत्ति मदीपालो,
 पया परिहवइ ए स गुरु उवमा ॥ जंवा पुरत्त कात्तं, विहरंति मु
 तहा सोवि ॥ ८ ॥ पमिरूवो तेहस्ति, जुगप्पहाणागमो महुख
 ॥ गंजीरो धिइमंतो, उवएसपरो य आयरित्त ॥ ९ ॥ अपरिस्ताव
 सोमो, संगहसीलो अज्जिगहमई य ॥ अविकच्छणो अचवलो, प
 तहियत्त गुरू होई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयराम
 पदं दात्तं ॥ आयरिएहिं पवयणं, धारिऊइ, संपयं सयत्तं ॥ ११ ॥
 अणुगम्मए जगवई, रायसुयळा सहस्त वंदेहिं ॥ तहवि न को
 माणं, परिय छइ तं तहा नूणं १२ ॥ दिण दिक्खियस्त वमग,
 अज्जिमुहा अऊचंदणा अऊआ ॥ नेछइ आसणगइणं, सो विणत्त
 अऊआणं ॥ १३ ॥ वरससय दिक्खियाए, अऊआए अऊदिक्खिं ता
 अज्जिमण वंदण नमं, सणेण विणएणसो पुऊो ॥ १४ ॥ ५
 पुरिस्सप्पज्जवो, पुरिस्सव रदेसित्त पुरिस्सजिणे ॥ लोएवि पदू पुरि
 किंपुण लोगुत्तमे धम्म ॥ १५ ॥ संवाइणस्ससरणो, तइया वाण
 रसीइ नयरीए ॥ कन्ना सहस्समदियं, आसी किरूववत्तीणं ॥ १६
 तह वि य सारायसिरी, उल्लंघंती न ताइया ताहिं ॥ उयरणि
 के, ए ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिआणसु बहुयाण वि,
 उ इइ समत्त घरसारो ॥ रायपुरिसेहिं निऊइ, जणेवि पुरिस्

जहिं नञि ॥ १८ ॥ किं परजण बहुजाणा, यणादिं वरमप्प सस्किं
 सुकयं ॥ इदं जरदचक्रवट्ठी, पसन्नचंदो यं दिहंता ॥ १९ ॥ वेसो वि
 अप्पमाणो, असंजम पएसु वट्टमाणस्त ॥ किं परियत्तियवेत्तं, वित्तं
 न मारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्कर वेसो, संकइ वेसेण दिस्सित्तं
 मिअइ ॥ उम्मग्गेण पणंतं, रक्कर राया जणवत्तं यं ॥ २१ ॥ अप्पा
 जाणइ अप्पा, जइब्बिं अप्पसस्सित्तं धम्मो ॥ अप्पा करेइ तं तइ,
 जइ अप्पसुदावइ दोई ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो, आविस्सइ
 जेण जेण जावेण ॥ सो तंमि तंमि समए, सुदासुदं बंधए कम्मं ॥
 ॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तोन वि सीउन्ह वायविस्सित्तं ॥ संव
 डरमणसीत्तं, बाहुवली तइ किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विग
 प्पियं चिं, तिण्ण सउंदवुद्धिचरिण ॥ कत्तो पारत्तदियं, कोरइ गुरु
 अप्पुवएत्तेणं ॥ २५ ॥ अहो निरोवपारी, अविणीत्तं गवित्तं निरवणा
 मो ॥ साहुजयास्तं गरइत्तं, जयेवि वयसिज्जयं लइइ ॥ २६ ॥
 ओवण वि सप्पुरिस्ता, सणकुमारु बकेइ वुत्तंति ॥ वेदे खयापरिदाणी,
 जंकिर देवेदिंसे कदियं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तम सुर, विमाण
 वासीवि परिवत्तंति सुरा ॥ धित्तिज्जंतं सेत्तं, संसारे सात्तयं कयरं ॥
 ॥ २८ ॥ कइतं जन्नइ सुक्कं, सुचिरेण वि जस्स उक्कमत्तिदियए ॥
 जं च मरणा वत्ताणे, जव संसाराणुवंधिं च ॥ २९ ॥ उवएस सह
 स्सेदिं, बोदिज्जंतो न बुद्धइ कोई ॥ जइ बंजदत्तराया, उदाइनिव
 मारत्तं चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए, अपरिच्चत्ताइ रायलट्ठीए ॥
 जीवात्तकम्मं कलिमलं, जरिय जरातो पणंति अदे ॥ ३१ ॥ वोत्तू
 णवि जीवाणं, सउक्केरा इति पावचरियाइ ॥ जयवजा सा साता,
 पच्चाएसो हु इणमो ते ॥ ३२ ॥ पणिवज्जिज्जण दोसे, नियए सम्मं
 च पायवेनियाए ॥ तो किर मिगयइत्तं उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥
 इति पोसइ सिखा ॥

एस्त ॥ इय जौयंतकराई, एस खमां सबसाहूणं ॥ ३ ॥ न
 ऊई चालेउ, महइ महावदभाण जिणचंदो ॥ उवसंग सदस्स
 वि, मेरु जहा वायगुं जाहिं ॥ ४ ॥ जहो विणीय विणउ, प
 गणहरो समत्त सुयनाणी ॥ जाणंतो वि तमउं, विन्ध्य दि
 सुणइ सधं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइत्त तं सिरेण इडंति
 इय गुरुजण मुह जणियं, कयंजलिउमेहिं सोयवं ॥ ६ ॥ ज
 सुर गणाण इंदो, गहगणतारागणाण जह चंदो ॥ जहय पया
 नरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो ॥ ७ ॥ बालुत्ति मदीपालो,
 पया परिहवइ ए स गुरु उवमा ॥ जंवा पुरउं काउं, विहरंति मु
 तदा सोवि ॥ ८ ॥ पनिरुवो तेदस्सि, जुगप्पहाणागमो महुख
 ॥ गंजीरो धिइमंतो, उवएसपरो य आयरिउ ॥ ९ ॥ अपरिस्ता
 सोमो, संगइसीलो अजिग्गदमई य ॥ अविकछणो अथवलो, प
 तहियउ गुरु होई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अपराम
 पदं दाउं ॥ आयरिएहिं पवयणं, धारिऊइ, संपयं सयलं ॥ ११ ॥
 अणुगम्मए जगवई, रायसुयळा सदस्स वंदेहिं ॥ तदवि न को
 माणं, परिय छइ तं तहा नूणं १२ ॥ विण दिस्सियस्स वमग, स्स
 अजिमुदा अऊचंदणा अऊ ॥ नेछइ आसणगइयां, सो विणउं ता
 अऊाणं ॥ १३ ॥ वरससय दिस्सियाए, अऊाए अऊदिस्सिउं साहू ॥
 अजिगमण वंदण नमं, सणेण विणएणसो पुऊो ॥ १४ ॥ धम्मो
 पुरिसप्पज्जवो, पुरिसव रदेसिउं पुरिसजिणो ॥ सोएवि पदू पुरिां,
 किंपुण लोयुत्तमे धम्म ॥ १५ ॥ संवादणस्ससरणो, तइया वाता
 रसीइ नयरीए ॥ कत्ता सदस्समदियं, आसी किरक्यवंतीणं ॥ १६ ॥
 तद वि य सारायसिरी, उल्लंछंती न ताइया ताहिं ॥ उवरवि
 इके, ए ताइया अंगचरिण ॥ १७ ॥
 उउत्त इद समत्त अरतातो ॥ रायण

दिं नञि ॥ १८ ॥ किं परजण बहुजाणा, वणादिं वरमप्य सत्किं
 कयं ॥ इदं ज्ञरहचक्रवट्टी, पसन्नचंदो यं दिष्टं ॥ १९ ॥ वेतो वि
 यमाणो, अतंजम पएसु वट्टमाणस्स ॥ किं परियत्तियवेत्तं, विसं
 मारेइ खळ्ळंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्कइ वेतो, संकइ वेसेण दिस्सिंतं
 अदं ॥ उम्मगेण पमंतं, रक्कइ राया जणवत्तं यं ॥ २१ ॥ अप्पा
 पाइ अप्पा, जइवित्तं अप्पसत्कित्तं धम्मो ॥ अप्पा करेइ तं तदं,
 अप्पसुदावदं होई ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो, आविस्सइ
 जेण ज्ञावेण ॥ सो तंमि तंमि तमए, सुदासुदं बंधए कम्मं ॥
 २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तोन वि सीउन्द वायविस्समिन्तं ॥ संव
 नणसीत्तं, बाहुवली तदं किस्सिस्तंतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विंग
 र विं, तिण्ण सत्तंइवुद्धिचरिण्ण ॥ कत्तोपारत्तदियं, कीरइ गुरु
 वण्णेषां ॥ २५ ॥ अद्धो निरोवयारी, अविणोत्तं गविन्तं निरवणा
 । साहुजणस्स गरहिन्तं, जसेवि वयणिक्कयं लदइ ॥ २६ ॥
 रा विसप्पुरिस्ता, ससंकुमारुक्केइ वुल्लंति ॥ देदे खणपरिहाणी,
 र देवेहिंसे कदियं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तम सुर, विमाण
 वि परिवमंति सुरा ॥ धित्तिज्झंतं सेत्तं, संसारे सासयं कयरं ॥
 २८ ॥ कइतं जन्नइ सुक्कं, सुविरेण वि जस्स उक्कमत्तिदियए ॥
 मरणा वसाणे, जव संसाराणुबंधं च ॥ २९ ॥ उवएस तदं
 , बोदिज्झंतो न वुल्लं कोई ॥ जइ बंजवत्तराया, उदाइनिव

॥ अथ राईसंधारा पोसह सिधाय ॥

॥ निस्सिद्दी निस्सिद्दी नमो खमासमणाणं, गोयमाईणं
महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमिज्जंते ३, कहियें, अणुजाणह डि
ठिजा, अणुजाणह परमगुरु. गुणगणरयणेहिं मंनिअसरोरा ॥ १ ॥
पन्निपुन्ना पोरिसि, राईसंधारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संधार
बाहुवदाणेण वामपासेणं ॥ कुक्कुर पाय पसारण, अंतरं तु पमअ
जूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संमासं, उवट्ठंतेय काय पन्निजेदा ॥ वेद
उवत्तंगं, कस्तासनिरुंजणालोयं ॥ ३ ॥ जइ मे दुक्कं पमाउ, इमस्त
वेदस्सिमाइ रयणीए ॥ आहार मुवहि वेदं, सबं ति विदेण वोरिसिं
॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधण, कलहा जस्काण परपरीवाउ ॥ अर
रई पेसुन्नं, माया मोसं च मिच्चत्तं ॥ ५ ॥ वोसिरित्तु इमाइमु, स्स
ग्ग संसग्ग विग्ग जूआइ ॥ डुग्गइनिबंधणाइ, अहारस पावणाण
॥ ६ ॥ एगो इं नछिमे कोइ, नाइमन्नस्स कस्सवि ॥ एवं अ
मणसो, अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे तासउ अप्पा, न
वंसणसंजुत्त ॥ सेता मे वाहिरा जावा, सब्बे संजोगलस्सका
॥ ८ ॥ संजोग मूला जीवेण, पत्ता डुस्सपरंपरा ॥ तम्हा सं
संबंधं, सबं ति विदेण वोसिरे ॥ ९ ॥ अरिइंतो मह देवो, जावज्ज
सुत्ताहुसो गुरुसो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इयसम्मत्तं मए गहियं ॥ १०
चत्तारि मंगलं, अरिइंता मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहु मंगलं, केव
पन्नतो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोयुत्तमा, अरिइंता लोयुत्तमा, सि
लोयुत्तमा, साहु लोयुत्तमा, केवल पन्नतो धम्मो लोयुत्तमो ॥
चत्तारि सरणं पवक्कामि, अरिइंते सरणं पवक्कामि, सिद्धे सरणं प
पवक्कामि, केवल पन्नत्तं धम्मं सरणं पवक्कामि
मत्तं, अरिइंता मय्य देवया ॥ अरिइंता कित्तिअत्त
पावगं ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मत्तं सिद्धाय म

देवया ॥ सिद्धा य कित्तिअत्ताणं, वोत्तिरामि ति पावगं ॥ २ ॥ आ
 यरिया मंगलं मझ, आयरिया मझ देवया ॥ आयरिया कित्तिअत्ताणं,
 वोत्तिरामि ति पावगं ॥ ३ ॥ उवद्याया मंगलं मझ, उवद्याया मझ
 देवया ॥ उवद्यायां कित्तिअत्ताणं, वोत्तिरामि ति पावगं ॥ ४ ॥ सा
 हूणो मंगलं मझ, साहूणो मझ देवया ॥ साहूणो कित्तिअत्ताणं,
 वोत्तिरामि ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अगणि मारुप, इक्किं सत्त
 जोणि जस्काउ ॥ वणपत्तेय अणंते, दत्त चत्तदत्त जोणि जस्काउ ॥
 । १ ॥ विगलेंदिणसु दो दो, चत्तरो चत्तरो य नारय सुरेसु ॥ ति
 रिणसु हुंति चत्तरो, चत्तदत्त जस्का यमणुणसु ॥ २ ॥ खामेमि सव्व
 जीवे, सव्वे जीवाखमंतु मे ॥ मिन्ती मे सव्वज्जणसु, वेरं मझं न
 केणवि ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंठिअं तम्मं ॥
 ति विदेण पम्किंतो, वंदामि जिणे चत्तव्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमा
 विअ मझ खमिअ, सव्वद जीव निकाय ॥ सिद्धसाख आलोयणदं,
 मझद वेर न जाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु, चत्तदद राज
 जमंतु ॥ ते मझ सव्व खमाविया, मझवि तेहं खमंतु ॥ ६ ॥ इति
 संपारा गाथा स० ॥

॥ अय निंदावारक सद्याय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बोद्ध्यां मद्दा
 पाप रे ॥ वयर विरोध वाघे घणो रे, निंदा करतां न गणे भाय
 वाप रे ॥ नि० ॥ १ ॥ दूर वलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमा बलती
 देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमा घोयां लूगनां रे, कदो केम ऊ
 जला होय रे ॥ नि० ॥ २ ॥ आप संजालो सहुको आपणो रे,
 निंदानी भूको परी टेव रे ॥ थोमे घणे अवगुणें सहु जरणां रे,
 केहनां नलीयां चुण केहनां नेव रे ॥ नि० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते
 आये नारकी रे, तय जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो

आपणी रे, जेम् हुंठकवारो आय रे, ॥ नि० ॥ ४ ॥ गुण प्रदजो
सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरं सुख पामशो
रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ नि० ॥ ५ ॥

अथ सीता सिंघाय लिख्यते ॥

॥ जल जलती मिलती घणी रे, जाली जाल अपार रे ॥ तु
जाण सीता ॥ जाणो केसू फूलियां रे जाल, राता खिरझार रे
॥ सु० ॥ १ ॥ धीज करे सीतासती रे जाल ॥ शीज तणे पा
माण रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे जाल, निरखे राणे
राण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ खान करी निरमल जले रे जाल, पा
पासे आय रे ॥ सु० ॥ ऊजो जाणे सुराङ्गना रे जाल, अनुपम
दिखाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलियां घणां रे जाल, क
करे हाय हाय रे ॥ सु० ॥ नरुम दुशी इण आगमे रे जाल, प
करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव दिन वांछो हुवे रे जाल
धुपनेही नहिं कोय रे ॥ सु० ॥ तो मुऊ अगन प्रजालजो
जाल, नहिं तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पेठी आ
मे रे जाल, तुरत अगन थयो नीर रे ॥ सु० ॥ जाणे इह जल
जरयो रे जाल, जीले धरम सुधीर रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम
चरपा करे रे जाल, एह सती सिरदार रे ॥ सु० ॥ सीता धीजे क
तरी रे जाल, साख जरे संतार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियायत स
हुको थयां रे जाल, सधले थया उबरंग रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम
खुशी थया रे जाल, सीता शीला सुरंग रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जग
जस जेहनो रे जाल, अविचल शील कहाय रे ॥ सु० ॥ ९ ॥
हर्ष सती तणा रे जाल, नित प्रणमीजे पाय रे ॥ सु० ॥
॥ इति सीतासती सिंघाय समाप्ता ॥

॥ अथ अनाथी रुषि सिखाय ॥

॥ श्रेणिक रयवामी चढयो, पेखियो मुनी ए कंत ॥ वर रु
पकाते मोहियो, राय पूरे रे कहो विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुं
रे अनाथी निर्धैथ ॥ तिणमें लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रे० ॥ ए
आंकणी ॥ इण कोसंबी नगर। वसे, मुऊ पिता परि गल धन्न ॥
परवार परे परवरयो हुं हुं तेहनो रे पुत्र रतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ इ
क दिवस मुऊ वेदना, ऊपनी ते न खमाय ॥ मात पिता सहु
जूरी रह्या, तोही पण रे समाधि न आय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरमी
गुण मन ठरनी, ठरनी अबला नार ॥ कोरमी पीना में सही,
नहिं कीधी रे मोरमी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राजवैद्य बुलाइया,
काधला कोनी उपाय ॥ बावना चंदन लेइया, पण तोही रे दाह
नवि जाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ वेदना जो मुऊ उपशमे, तो लेठें सं
जमजार ॥ इम चिंतवतां वेदन गई, प्रत लीधो रे हरप अपार ॥
॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जगमांहे को केहनो नहिं, ते जणी हुं रे अनाथा ॥
बीतरागनो धरम बाहरो, कोई नही रे मुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥
॥ ७ ॥ कर जोमी राजा गुण स्तवे, धन धन तुं अनगार ॥ श्रे
णिक समकित तिदां लहे, बांदी पहुंचे रे सरग मजार ॥ श्रे० ॥
॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी गावतां, कर्मनी तूटे कोनी ॥ गणि सनय
सुंदर तेदना, पाय बांदे रे बे कर जोमी ॥ श्रे० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रतिक्रमणसिखाय ॥

॥ कर पन्तिकमणो जावसुं, दोय धनी शुज जाण ॥ लाल
रे ॥ परजव जाता जीवनें, संवल साचुं जाण ॥ लाल रे ॥ १ ॥
कर पन्तिकमणु जावसुं ॥ ए आकणी ॥ श्रीमुख चीर समुच्चरे, श्रे
णिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाल खंकी सोना तणी, दीये दिन
प्रति दान ॥ ला० ॥ २ ॥ कर० ॥ लाल वस्त्र लगु ते बंली, एम

दीये इव्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामायिकनी तुला, नावे तेह लग
 ॥ ला० ॥ ३ ॥ कर० ॥ सामायिक चउविसब्बो, जलुं वंदम बो
 दोय वार ॥ लाल रे ॥ व्रत संजारो रे आपणां, ते जव कर्म
 वार ॥ लाल रे ॥ ४ ॥ कर० ॥ कर कानसग गुनध्यानथी, प
 स्काण सूधूं विचार ॥ लाल रे दोय सया ये ते बलो, टालो टाल
 अतिचार ॥ लाल रे ॥ ५ ॥ कर० ॥ सामायिक परसादथी, लदी
 अमर विमान ॥ ला० ॥ धरमसिंह मुनिवर कहे, मुगति तणुं
 निदान ॥ ला० ॥ ६ ॥ कर० ॥ इति प्रतिक्रमणसिधाय सं० ॥

॥ अथ मंगलिक सरणां लिख्यते ॥

॥ ग्रह ठठोने समरिजें हो ॥ जवियण मंगलिक सरणा
 ॥ आपदा टाले संपदा हो ॥ ज० ॥ दोलतनो दातार ॥ हियो
 खिजें हो ॥ ज० ॥ १ ॥ अरिदंत सिद्ध साधा तणी हो ॥ ज
 केवलि जाल्यो धर्म ॥ ए चारु जपतां थकां हो ॥ ज० ॥
 आवुं कर्म ॥ हि० ॥ २ ॥ ए चारु मुखकारि हो ॥ ज० ॥ ए
 मङ्गलिक ॥ ए चारु उत्तम कस्यां हो ॥ ज० ॥ ए चारु तदत
 हो ॥ हि० ॥ ३ ॥ गेले घाटें चालतां हो ॥ ज० ॥ समरं
 वार ॥ गामें नगरें चालतां हो ॥ ज० ॥ विघन निवारणदार
 ॥ हि० ॥ ४ ॥ रुकण साकण जूतनां हो ॥ ज० ॥ सिद्ध वित
 सूर ॥ वैरी हुसन चोरटा हो ॥ ज० ॥ रहे सदाइ दूर ॥ हि०
 ॥ ५ ॥ सुख ज्ञाता वरते घणी हो ॥ ज० ॥ ज ध्याये नरनार ॥
 जव जातां जीवने हो ॥ ज० ॥ सरणाको आधार ॥ हि० ॥ ६ ॥
 खो सरणाकी आसता हो ॥ ज० ॥ नेपो नहिं आयि रोग ॥ वर
 आनंद मुख सदी हो ॥ ज० ॥ वाला तणो संयोग ॥ हि० ॥ ७
 दिन याकुं ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ जीव तणो उदार ॥ कर्म
 ॥ ८ ॥ इ वस्तुनी हो ॥ ज० ॥ याहि जगमें सार ॥ हि० ॥ ८ ॥

मनचिंता मनोरथ फले हो ॥ ज० ॥ वरते कोरु कल्याण ॥ शुद्ध
 भक्त करी समरता हो ॥ ज० ॥ निर्भे पद निर्वाण ॥ दि० ॥ ए ॥
 ए सरणाने ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ नाम तपो आधार ॥ ए सर
 णाकी कीरति कही हो ॥ ज० ॥ ध्यावो मुनद मजार ॥ दि० ॥
 ॥ १० ॥ संवत् अदारे जावने हो ॥ ज० ॥ पाखि सहेर सुखकार ॥
 चोथमल्ल इम बीनवे हो ॥ ज० ॥ मुनजो बाल गोपाल ॥ दि० ॥
 ॥ ११ ॥ इति श्रीमंगलिक सरणां ॥

॥ अथ सिन्धाय संग्रह लिख्यते ॥

॥ दंडण रुपीनी सन्धाय ॥

॥ दंडण रुपिजीने वंदना हूं वारी, त्रल्लछो अणगार रे हूं वा
 री, खाल, अजिमह लीधो एहवो हूं ॥ लेखुं शुद्ध आहार रे ॥ हूं ॥
 ॥ १ ॥ दंड ॥ नितप्रति कते गोचरी हूं ॥ न मिलै शुद्ध आहार
 रे ॥ हूं वा ॥ मूल न लै अणसूजतो हूं ॥ पंजर कीधो गात रे ॥ हूं ॥
 ॥ २ ॥ दंड ॥ हरि पूवै श्रीनेमने हूं, मुनिवर सहस्र अदारे रे ॥ हूं
 वा ॥ त्रल्लछो कुण एहमें हूं ॥ मुजनें कही विचार रे ॥ हूं वा ॥
 ॥ ३ ॥ दंड ॥ दंडण अधिको वाखियो हूं ॥ श्रीमुख नेमजिणंद
 रे हूं वा ॥ कृष्ण कृमाहो वादवा हूं ॥ धन जादव कुलचंद रे हूं
 वा ॥ ४ ॥ दंड ॥ गवियारे, मुनिवर मिळ्या हूं, वांया कृष्ण
 नरेस रे हूं वा ॥ किणही मिळ्यात्वी देखने हूं, आयो जाव वि
 तेसरे हूं ॥ ५ ॥ दंड ॥ मुज घर आवो साधजी हूं, ज्यो मोदक वे
 शुद्ध रे हूं ॥ मुनिवर विहरीने पांशुरया हूं, आपा प्रजुजीने पात रे
 हूं ॥ ६ ॥ दंड ॥ मुज खवै मोदक मिळ्या हूं, कहोने तुम्हे
 किरपाल रे हूं ॥ खत्रष नही बड ताहरी हूं, श्रीपति खवधि
 निधान रे हूं ॥ ७ ॥ दंड ॥ एलेवा जुगतो नही हूं, ज्यो ज्यो परत-

ज काज रे हुं० ॥ इट निवा दे जायने हुं० चूरे करम समाज
हुं० ॥ ७ ॥ दं० ॥ आंशी चढती जावना हुं०, पांथ्यो केवल नाख
हुं० ॥ दंडण रुपि मुगते गया हुं०, कदे जिनदर्प सुजाण रे हुं०
॥ ८ ॥ दं० ॥ इति दंडण रुपि सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अय धनारूपी सिंहाय ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्ना, अमिय समाणी मोरा नंदन
मनमै तो मांती रे नंदन तादरै ॥ १ ॥ तूं अतहि वैरागी रे धन्ना,
धरमनो रागी मोरा नंदन, मादरो तो मनमो रे किम परचाव
॥ २ ॥ वस दिस्ती वीसे रे धन्ना, तो विन सूनी मोरा नंदन, अ
मति देतां रे जीज वदे नही ॥ ३ ॥ वत्तोसै नारी हो धन्ना,
अतहि पियारी मो० ॥ वाणी तो बोले रे मधुर सुदामणी ॥ ४ ॥
बाळक तो कामणी रे धन्ना, वय पिण तरुणी मो० ॥ गजगति
रे चाल सुदावणी ॥ ५ ॥ ए घर मंदिर हो धन्ना, ए सुख सज्या म
कोम बत्तीसे धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांणो रे धन्ना,
पिण जाणो मो० ॥ जोगवि लेज्यो रे जोग सुदामणो ॥ ७ ॥
अति दोहिलो रे धन्ना, नहिय सुदेखो मो० ॥ सुगम नदी ठे रे सा
दावणो ॥ ८ ॥ घर २ जिका हो धन्ना, गुरुतणी शिक्षा मो० ॥ कद
रे रदणी नही ठे सारखी ॥ ९ ॥ इक वारे सुणीये हो धन्ना,
गम जणीये मो० ॥ जिनवर जाणो हो डुकर जोग वै ॥ १० ॥
वनवासे रदणा हो धन्ना, परीसद सदणो मो० ॥ को
केता रे खोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें जाख्यो हे अ
जूठ न दाख्यो मोरी अम्मा ॥ डुकर मारग जननी दाखियो ॥ १२ ॥
सुख अजिलापी हे अम्मा, जूठ न आखी मोरी अम्मा ॥ कायर मा
जननी दाखियो ॥ १३ ॥ ए जग स्वार्थी हे अम्मा नही पर
थि मोरी अम्मा, वीर बखाण्यो परखदा सद् सुण्यो ॥ १४ ॥

मैं इस जाण्यो हें अम्मा, वीर बखाण्यो मोरी अम्मा, ए वन जो
वन आयु थिर नही ॥ १५ ॥ अनुमति दीजे हे अम्मा, दीख न कीजे
मोरी अम्मा, जो खिण जावे सु फिर आवे नही ॥ १६ ॥ अन-
मति आपी हो अम्मा, जीव सख पायो मोरी अम्मा, संजम लीधो
रे मनमां गदगदी ॥ १७ ॥ उठए पारणो हे अम्मा, विगय निवा-
रण मोरी अम्मा, वीर बखाण्यो सुरगर आगलै ॥ १८ ॥ सुख सं-
जम पावे हे अम्मा, दुपख टाले मोरी अम्मा, अंग इग्यारे अरथ
रूना जणै ॥ १९ ॥ संजम पाव्यो हे अम्मा, नव पखवाने मोरी
अम्मा, मात संघारे सरबारथसिद्ध लह्यो ॥ २० ॥ इति धन्ना
शुवि सिन्हाय संपूर्ण ॥

॥ अथ कर्मसिन्हाय लिख्यते ॥

देव दाणव तीर्थकर गणधर, हरि हर नरवर सवला ॥ करम
तयो वस सुख डुख पाया, सबल हुआ महा निबला रे प्राणी, कर्म
समो नहि कोई ॥ १ ॥ आदीसरजीने करम अटारया, वरत दिव-
स रह्या जूखा ॥ वीरने बारे वरत डुख दीधा, कपना ब्राह्मणी कूँवै
रे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ साठ सदस सुत मारया एकण दिन, जोष
जुवान नर जैसा ॥ सगर हुठ महा पूवनो डुखियो, कर्मतणा फल
पता रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ बत्रीस सदस देसारी साहिव, चक्री
सनतकुमार ॥ सोले रोग तरीरमे कपना, कर्म कीयो तनु मार रे
॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कर्म दवाल किया हरचंदने, वेची सुतारा रांणी ॥
बारे वरत लग माथे आय्यो, नीचतणे घर पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥
॥ ५ ॥ दधिवादन राजारी, बेटी चावी चंदनवाला ॥ चौपद ज्युं
चहुटामें वेची, कर्मतणा ए चाला रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ६ ॥ संजूम नामे
आठमो चक्री, कर्म सायर नाख्यो ॥ सोले सदस जह उज्जा देखे,
पिण कियही नहि राख्यो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे

न काज रे हूँ ॥ इट निवा दे जायने हुँ ॥ चूरे करम समाज रे
हुँ ॥ ७ ॥ दं० ॥ आंणी चढती जावना हुँ, पांभ्यो केवल नाश रे
हुँ ॥ दंदण रुषि मुगते गया हुँ, कहे जिनदर्प सुजाण रे हुँ
॥ ए० ॥ दं० ॥ इति दंदण रुषि सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ धनारुषी सिंहाय ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्या, अमिय समाणी मोरा नंदन,
मनमै तो मांती रे नंदन तादरै ॥ १ ॥ तूं अतहि वैरागी रे धन्या,
धरमनो रागी मोरा नंदन, मादरो तो ममरो रे किम परचावसुं
॥ २ ॥ वस विसी वीसे रे धन्या, तो विन सूनी मोरा नंदन, अनु
मति देतां रे जीज वहे नही ॥ ३ ॥ वचोतै नारी हो धन्या
अतहि पियारी मो० ॥ वाणी तो बोले रे मधुर सुदामणी ॥ ४ ॥
बालक तो कामणी रे धन्या, वय पिण तरुणी मो० ॥ गजगति चाले
रे चाल सुदावणी ॥ ५ ॥ ए घर मंदिर हो धन्या, ए सुख सज्या मो०
कोरु वचोते धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांलो रे धन्या, वय
पिण जांणो मो० ॥ जोगवि लेज्यो रे जोग सुदामणो ॥ ७ ॥ अत
अति दोहिलो रे धन्या, नहिय सुदेखो मो० ॥ सुगम नही ठे रे साधुक
दावणो ॥ ८ ॥ घर जिका हो धन्या, गुरुतणी शिक्षा मो० ॥ कदाणी
रे रहणी नही ठे सारखी ॥ ९ ॥ इक वारे सुणीये हो धन्या, आ
गम जणीये मो० ॥ जिनवर जांणो हो डुकर जोग ठे ॥ १० ॥
वनवासे रहणा हो धन्या, परीसद सदणो मो० ॥ कोमल
केता रे खोंच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें जारूपो दे अम्मा,
ऊठ न दारूपो मोरी अम्मा ॥ डुकर मारग जननी दाखियो ॥ १२ ॥
सुख अजिलापी दे अम्मा, ऊठ न आखी मोरी अम्मा ॥ कापर मारग
जननी दाखियो ॥ १३ ॥ ए जग स्वारथी दे अम्मा नही परमार
थि मोरी अम्मा, वीर बलाण्यो परखदा सहु सुण्यो ॥ १४ ॥

में हम जाण्यो हैं अम्मा, वीर बखाण्यो मोरी अम्मा, ए वन जो
वन आयु धिर नही ॥ १५ ॥ अनुमति दीजे हे अम्मा, ढील न कीजे
मोरी अम्मा, जो खिण जावे सु फिर आवे नही ॥ १६ ॥ अन
मति आपी हो अम्मा, जीव सख पायो मोरी अम्मा, संजम लीधो
रे मनमां गदगदी ॥ १७ ॥ ठठर पारणे हे अम्मा, विगय निव
रण मोरी अम्मा, वीर बखाण्यो सुरगर आगलै ॥ १८ ॥ सुख सं
जम पाले हे अम्मा, दुपरा टाले मोरी अम्मा, अंग इग्यारे अरथ
रुमा जणै ॥ १९ ॥ संजम पाळ्यो हे अम्मा, नव पखवाने मोरी
अम्मा, मास संथारे सरवारथसिद्ध लह्यो ॥ २० ॥ इति धन्या
कपि सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ कर्मसिंहाय लिख्यते ॥

देव दाणव तीर्थकर गणधर, हरि हर नरवर सबला ॥ करम
तणे वस सुख डख पाया, सबल हुआ महा निवला रे प्राणी, कर्म
समो नहि कोई ॥ १ ॥ आदीसरजीने करम अटारया, वरस दिव
स रह्या जूला ॥ वीरने बारे वरस डख दीवा, ऊपना आह्वणी कूलै
रे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ साठ सदस सुत मारया एकल दिन, जोष
जुवान नर जैता ॥ सगर हुठ महा पूत्रनो डखियो, कर्मतणा फल
एता रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ वत्रीस सदस देसारे साहिव, चक्री
सनतकुमार ॥ सोले रोग तरीरमे ऊपना, कर्म कीयो तनु गार रे
॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कर्म दवाल किया हरचंदने, बेची सुतारा रांणी ॥
बारे वरस लग माथे आय्यो, नीचतणे घर पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥
॥ ५ ॥ दधिवादन राजारी, बेटी, चाबी चंदनवाला ॥ चौपद ज्युं
चहुटामें बेची, करमतणा ए चाला रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ६ ॥ संजूम नामे
आठमो चक्री, कर्म सायर नाख्यो ॥ सोले सदस जह उजा देखे,
पिण किरादी नहि राख्यो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदेव नामे

धारमो चक्री, कर्म कीधो आंधो ॥ इम जाणीने अहो नविप्राण
 कर्म कोइ मत बांधो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ८ ॥ उपन्न कोनि ज
 दवरो सादिव, कृष्ण महाबल जाणी ॥ अटवी मांदि मूठ एकलमो
 विल २ करतो पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ९ ॥ पांनव पांच मव
 ऊजारा, हारी जेपदा नारी ॥ वारे वरस लग वन रुक्मिया,
 मिया जेम जिरुयारी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १० ॥ धीत जुजा वस
 अस्तक हुंता, लखमण रावण मारयो ॥ एकलन जग सहु नर जीत्या,
 ते पिण कर्मसुं हारयो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ११ ॥ लखमण राम
 महा बलवंता, अरु सतवंती सीता ॥ कर्म प्रमाणे सुख दुख पांन्या,
 वीतक बहु तस वीता रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १२ ॥ समकितधारी
 अशिक राजा, वेटे बांध्यो मुसकै ॥ धरमी नरने कर्म धकाया ॥
 कर्मसुं जोर न किसका रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १३ ॥ सतिय सिरोमणी जौ
 पदि कहिये, जिन सम अवर न कोई ॥ पांच पुरुषनी हुइ ते नारी,
 पुरुष कर्म कमाई रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १४ ॥ आज्ञानगरीनो जे
 स्वामी, साचो राजा चंद ॥ मांदि कीधो पंखी कूकनो, कर्म नारयो
 ते फंद रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १५ ॥ ईसर देव ने पारवती नारी, क
 रता पुरुष कहावै ॥ अदनित महिल मतांणमे वातो, जिका जो
 जन खावे रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १६ ॥ सहस किरण सूरज परतापी,
 रात दिवस रहे अटतो, सोल कला ससीधर जग चांचो, दिन २ जाये
 घटती रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १७ ॥ इम अनेक खंरुया नर कर्म,
 आज्या ते पिण सीजा ॥ रुद्धिहरष कर जोनीने विनवै, नमो २
 कर्म महाराजा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १८ ॥ इति कर्म सिंहाय सं० ॥
 ॥ अथ सात विसनकी सिंहाय लिख्यते ॥
 सात विसनना रे संग भतां करो, सुण तेदनो सुविचार वि
 वेकी ॥ सात नरकना रे जाइ सातेई, आपै दुस्त अपार विवेकी ॥

॥ सा० ॥ १ ॥ प्रथम जूवाने रे विसन, पम्पाथकां, पाम्व पां
 प्रसिद्ध विवेकी ॥ नखराजा पिण्ड, इण्ड विसने पढ्यो, खोइ सहू
 जरिह वि० ॥ सा० ॥ २ ॥ दूसरे मांस, जकण अवंगुण घणा, क
 पर जीव संहार विवेकी ॥ महासतकनी नारी रेवती, नरक गा
 निरधार विवेकी वि० ॥ सा० ॥ ३ ॥ तीजे मदिरा पांन विसन
 तजी, चित घरी वलि चाद वि० ॥ दीपायण रिपि दूहव्यो
 बवे, द्वारकानो थयो दाद वि० ॥ सा० ॥ ४ ॥ चोथे विसने वे
 स्याधर वसै, लोकमें न रहे लाज वि० ॥ कयवन्नादिकनो गयो
 कायदो, कुविसने रे काज वि० ॥ सा० ॥ ५ ॥ पाप आदेने
 कुविसन साचवै, प्राणी इणिये प्रहार वि० ॥ मारी मृगली श्रे
 णिक नृप गयो पहली नरक मजार वि० ॥ सा० ॥ ६ ॥ बडे
 चोरीने विसने करी, जीव लदे डसल जोर वि० ॥ मुंजदेव रा
 जायें मारियो, चावो हुंरुक चोर ॥ वि० ॥ सा० ॥ ७ ॥ परखीय
 संगत कुविसन सातमें, हाणि कुजस बहु दोष वि० ॥ राणो
 रावण सीता अपहरी, नास लंकानो रे जोय वि० ॥ सा० ॥ ८ ॥
 इम जाणीने जव्य तुमे आदरो, सीख सुगुरुनी रे सार वि० ॥ इण
 जव परजव आणंद अतिथणा, कहे धमसी सुखकार ॥ वि० ॥
 ॥ सा० ॥ ए ॥ इति सात विसनकी सिज्ञाय संपूर्ण ॥

॥ अथ चेलणा संतीनी सिज्ञाय लिख्यते ॥
 बीर बांदी वलतां थकां जी, चेलणा दीगो रे निग्रंथा राति वन
 मांदि काठसग रह्यो रे, साधतो मुगतिनो पंथ ॥ १ ॥ बीर वखा
 णी राणी, चेलणा जी, सतिय सिरोमणि जाण ॥ चेन्नाराजानी
 साते सुता जी, श्रेणिक सीयस परिमाण ॥ बी० ॥ २ ॥ सीत
 वंगार सबलो पमे जी, चेलणा प्रीतम साथ ॥ चारतियो चितमे
 वस्यो जी ॥ सौदि बाहर रह्यो दाथ ॥ बी० ॥ ३ ॥ ऊवक जागी

कहे खेलणा जी, किम करतो दुस्ये तेद ॥ कुसती मनमाहि ए कुण
 वस्यो जो ॥ श्रेणिक पळ्यो रे संदेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ अंतेउर परो
 जाखज्यो जी, श्रेणिक दियो रे आवेस ॥ जगवंत सांतो जाजियो
 जो, चमकियो चित्त तरेस ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीर वांदी बलतां थकां
 जी, पैसतां नगर मजार ॥ धुंआनों घोर देखी करी जी, जा जा रे
 अन्नयकुमार ॥ वी० ॥ ६ ॥ तातनो वचन पाली करी जी, व्रत
 लियो अन्नयकुमार ॥ समयसुंदर कहे खेलणा जी, पामियो जवत
 णो पार ॥ वी० ॥ ७ ॥ इती खेलणा महासती सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ वैराग्य सिंहाय ॥

॥ जूलो मनजमरा कांइ जमे, जमियो दिवस ते रात ॥
 मायारो लोत्री प्राणियो, जमियो परमल जात ॥ १ ॥ जू० ॥ जु
 न काचो काया कारमी, जेदना करो रे जतन ॥ विणसतां वार लागे
 नही, निरमल राखो रे मल ॥ २ ॥ जू० ॥ केदना डोरु केदना
 वावरु, केदना माय नै बाप ॥ ठ जीव जासी एकलो, साथे पुन्य
 नै पाप ॥ ३ ॥ जू० ॥ आस्या तो रंगर जेवनी, मरवो पगला रे
 देव ॥ धन संची संच कांइ करो, करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ जू०
 ॥ लखपति उत्रपती सब गए, गए लाखो के लाख ॥ गरब करी
 गोखै बैठता, जए जल बल राखे ॥ ५ ॥ जू० ॥ जवसापरजल
 डल जरयो, तिरबो ठे रे जेद ॥ बीचमें बीद सबलो अठै, कर्म
 वाय ने मेद ॥ ६ ॥ जू० ॥ जलट नही मारग चालवो, जायवो
 नले रे पार ॥ आगल नहि दृष्ट वाणियो ॥ संवल लेज्यो रे सार
 जू० भूरख कहे धन मादरो, धन केदतो दतो न धाय ॥
 जाय पोदवो, लखपति लाकरु माय ॥ ७ ॥ जू० ॥ मह
 वस्त वोरिये, जे कुण आवे रे साथ ॥ अपणो लाज उवा
 लेखो सादिव हाथ ॥ जू० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ बाहूबल सिन्हाय ॥

॥ राजतणा अति लोजिया, जरत बाहूबल ऊजे रे ॥
 उपासी मारिवा, बाहूबल प्रतिबूजे रे ॥ १ ॥ वीरा म्दारा गज
 की ऊतरो, बाह्मी सुंदरी जातै रे ॥ रुपज जिनेसर मोकली,
 बूबलने पासै रे ॥ वी० ॥ गज चढयां केवल न होई रे
 वी० ॥ २ ॥ लोच करी चारित्र खियो, वलि आयो अजिमांनो
 ॥ लघु बांधव बांदू नही, काठसग्न रह्यो शुज ध्यानों रे ॥
 वी० ॥ वरत दिवस काठसग्न रह्यो, वेदनियां बीटाणो रे ॥ पंख
 भाला मांनिबा, सीत ताप सूकाणो रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ साधवी
 चन सुण्या इसा, चमक्यो चित्त मजारो रे ॥ हय गय रय में
 रिहरया, पिण नवि मूक्यो अहंकारो रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ बैरागै म
 वालियो, मूक्यो निज अजिमांनो रे ॥ पांव उपासी बांधिवा, ऊ
 नो केवलज्ञानो रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ पहुंतो केवली परखवा, बा
 बल रुपिराया रे ॥ अजर अमर पदवी लही, समयसुंदर बा
 पाया रे ॥ ७ ॥ वी० ॥ इति ॥

॥ अथ अरणक मुनि सिन्हाय ॥

॥ अरणक मुनिवर चाढ्या गोचरी, तनके बाजे सीतो जी
 पाय उवराणा रे वेलू परजलै, तन सुकमाल मुनीतो जी ॥ अर
 १ ॥ मुख कमलाणो रे मालती फूल ज्युं, ऊजो गोखने हेगो
 जी ॥ खरै डुपहरै रे दीगो एकखो, मोदी माननी मीगो जी ॥ २
 ॥ अ० ॥ वयण रंगिले रे नयणे वेधियो, रुपि धंज्यो तिण वारो
 जी ॥ दासीने कहे जाय ऊतावली, उ रिपि तेनी आंणो जी ॥
 ३ ॥ अ० पावन कीजे रुपि घर आंगणो, वहिरो मोदक सारो जी
 ॥ नवजोवन रस काया कांइ दहो, सफल करो अवतारो जी ॥
 ४ ॥ अ० ॥ चंदावदनी रे चारित चूक्यो, सुख विलसे दिन रातो

इक दिन गोखै रमतो सोगठै, तब दीगो निज भातो जी
 अ० अरणक० करती माय फिरे, गलियैर भजारो जी ॥ ४ ॥
 ए दीगो रे मादरो अरणलो, पूछै लोक दजारो जी ॥ ५ ॥
 उत्तर तिहांधी रे जननीरे पाय नमे, मनमें लाज्यो तिला
 ॥ धिग२ मापी रे मादरा जीवने, एद में अकारज धारयो
 ॥ ६ ॥ अ० ॥ अगन घुखंती रे सिद्धा उपरै, अरणक अणस
 वो जी ॥ समयसुंदर कहे धन ते मुनिवरू, मन दंठित फल
 जी ॥ ७ ॥ अ० ॥ इति अरणक मुनि सिन्हाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ इलापुत्र सिन्हाय लिख्यते ॥

तम इलापुत्र जांशियै, धनदत्तसेठनो पुत ॥ नटवी देखी रे मो
 जे राखे घरसूत ॥ १ ॥ करम न छूटे रे प्राणिपा, पुरब नेह
 ॥ निज कुल ठंढी रे नट थयो, नाणी सरम लिगार ॥
 ॥ २ ॥ इक पुर आयो रे नाचवा, छंचो वंत्त विवेक ॥ तिहां
 वा रे आवियो, मिलिया लोक अनेक ॥ क० ॥ १ ॥ दोय
 री रे पावनी, वस्त चढयो गजगेल ॥ निरधारा छपर नाचतौ,
 वनवा खेल ॥ क० ॥ ४ ॥ ढोल बजावे रे नाटकी, गावे किन्नर
 पायनल घूघर घनघाँ, गाजै अंबर नाव ॥ क० ॥ ५ ॥
 प चिते रे राजियो, छुगयो नटवी रे साथ ॥ जो पनै नट
 नाचतौ, तो नटवी मुऊ दाय ॥ क० ॥ ६ ॥ दान न आयै
 ॥ नट जाणै नृप बात ॥ हू धन वंटू रे समयनो, राय वंटै
 त ॥ क० ॥ ७ ॥ तिहांथो मुनिवर पखियौ, धनश साधु
 ॥ धिग२ विपथा रे जीवना, मन आययो वैराग ॥ क० ॥
 संवरजावे रे केवली, ततखिश कर्म खप्पाय ॥ केवल मदि
 र करै, समय सुंदर गुण गाय ॥ क० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अय मेघकुमार मुनि सिद्धाय लिख्यते ॥

वीरजिनंद समोसरया जी, वंदे मेघकुमार ॥ सुण देशन वै
 रागीयो जी, ए संसार असार रे मायमी ॥ अनुमति द्यो मुज आज ॥
 संयम विषम अपार रे ॥ मा० ॥ अ० ॥ १ ॥ वठ तूं केणे ज्ञो
 व्यौ रे, श्रेणिक तात नरेस ॥ कांइ ऊणौ किण दूहव्यो रे, हूं नवि
 छुं आदेश रे जाया ॥ संयम विष० ॥ किम निरवाहित जार रे
 जाया ॥ हूंन० ॥ २ ॥ आदि निगोदे हूं रुढ्यो जी, सहिया डस्क
 अणंत ॥ सासोश्वासें जव पूरीया जी, तेद न जाणू अंत हे ॥
 ॥ मा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ दिवणा तूं बाळक अठे जी, जोवन जरघो
 रे कुमार ॥ आठ रमणि परणावियो रे, जोगवि सुस्क अपार रे
 जाया ॥ हूं नवि० ॥ ४ ॥ जनम मरण निरघातणौ जी, डस्क न
 सहणौ जाय ॥ वीरजिनंद वखाणियो जी, ते मै सुणियो कांन हे
 मायमी ॥ अ० ॥ ५ ॥ वठ कांठलीयै जीमणो जी ॥ अरस विरस
 आहार ॥ चुंइ पाला नित हींमणो जी, जाणसि तुज कुमार रे जाया ॥
 हूं न० ॥ ६ ॥ जमतां जीव अनंत जन्मो जी, धर्म डहेजो होय ॥
 जरा व्यापे जोवन खिसे जी, तव किम करणो होय रे मायमी ॥
 ॥ अ० ॥ ७ ॥ मृगनयणी आठे रमे जी, तोमे नवसर हार ॥ जो
 वनजर ठोरु नही जी, कांइ मूको निरधार कुमरजी ॥ हूं न० ॥
 ॥ ८ ॥ हंसतूळिका सेजनी जी, रूप रमणि रस जोग ॥ अतहि
 सुंदाली देहनी जी, किम हुय संजम जोग रे जाया ॥ हूं न० ॥
 ॥ ९ ॥ स्वारथनो सहू ए संगो जी, अरथ पखे सहू कोय ॥ विष
 विषम महुरा कहा जी, किम जोगविये सोय हे मायमी ॥ अ० ॥
 १० ॥ खमिश् माठ पंसाय करी जी, में दीधुं तुज डस्क ॥ दिउ आदेश
 जिम हूं सुखी जी, वीर चरणें ध्युं दीस्क हे ॥ मा० ॥ अ० ॥ ११ ॥
 तन फाटे लोयण ऊरे जी, डख न सहणा जाइ ॥ वछ सुखी हुवो

सुगुरु मुखे ज्विषण सरदही ॥ नगर प्रधान मरे जो कोइ,
 आठ पुदर असिझाई दोय ॥ ९ ॥ वसतीथकी सातां घर मांदि, नर
 विहने अहोरति असिझाई ॥ पुरुष पख्यो दोय मृतकअनाथ, तां
 असिजाय कही सो दाथ ॥ १० ॥ पुत्रतणै प्रसवै दिन सात, बेटी
 आठ दिवस विहात ॥ सो कर मांदि कही असिजाई, नारी शतु दिन
 तीन कदाइ ॥ ११ ॥ इमो फूटै प्रसवै गाइ, जां जर रुधिर पनै तिन
 गाइ ॥ असिझाई सो कर मांदि, त्रिएह पोदर के ऊपर नहो ॥ १२ ॥
 असाठै चौमासै दिने, पन्तिकमणा गायथी गिणै ॥ बार पोदर
 असिजाई कही, काती चौमासै इण पर सही ॥ १३ ॥ इण पर
 असिजाई ठे बहु, गीतारथ गुरु जाणै सहू ॥ सांजलि ए में कही
 संखेवि, हरखै पय प्रजू कीजै देवि ॥ १४ ॥ अंतवर्ग अंतकर जेह,
 च्यार मावठबीजे तेह ॥ सत्तम वर्ग बीअं अकरै, तब कवि नाम
 कहियो इण परै ॥ १५ ॥ इति असिजाइ सिजाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ बावीस अभक्ष सिजाय लिख्यते ॥

जिनशासन रे सूखी सरदहिणा धरो, श्रीगुरुमुख रे नव तत्व
 ए निरता करो ॥ मिछ्यामत रे कुमति कदायद परिहरो, सहि पालो
 रे ते नर समकित मन खरो ॥ १ ॥ तूटक ॥ मन खरौ समकित
 शुद्ध पालौ, टालो दोषदषा परो ॥ धुरि पंच अणुव्रत तीन गुणव्रत,
 च्यार सिद्धाव्रत धरौ ॥ इम देशविरती क्रिया निरती, सुणो ज्वि
 षण मनरली ॥ दाखविए गुण परंद केरा, दोष सम काटौ धली ॥
 ॥ २ ॥ मम काटो रे लोत्ती नर कूनौ करौ, जांणी सावध रे अ
 न्हक बावीसे परिहरो ॥ वरु पीपल रे पिलखण नें कहुंघरो,
 कंवरफल रे रखे तुमें जहण करो ॥ ३ ॥ उज्जाला ॥ रखे
 तुमें जहण करौ मांखण, मय मधु आम्रिय तणो ॥ विप हेम
 करदा ठंनि परदा, दोष मूल जाटी यणो ॥ परिहरो सक्कत र

निजोजन, प्रथम डुरगति वारणौ ॥ मम करौ व्यालू अति
 ॥, रविजदय विन पारणो ॥ ४ ॥ अथाणो रे अनंतकाय स
 ए, काचागोरस रे मांदि कठोल न जिमिये ॥ एह वैग
 मुठ फला सवि ठारु ए, आपणपूं रे व्रत लीधो नविखं
 ॥ ५ ॥ तूटक ॥ नवि खंरुए व्रत नियम लेइ, बेइ फ
 जंगनो ॥ अज्ञात फल बहुबीज जोजन, चलित रस हो
 नो ॥ संवर आणी अन्नक ग्यानी, तजो ए बावीस ए
 वयण विगते वली पूठयो, अनंतकाय वचीस ए ॥ ६ ॥
 ती रे कंद जाति जाणो सहू, जसु जकण रे पातिक बोध्य
 गहू ॥ कचूरौ रे हलदनीली आहुं वली ॥ वजचूरण रे कं
 कुंवलीफली ॥ ७ ॥ तूटक ॥ कुंवलीफलीकुंवली बीज पाखै, चाखै
 नर आंखिलो ॥ रतालू पिंमालू थेग थोहर, सतावरी लसण
 ॥ गाजर मूला गिलौ रींगण विरहाली दुकवजुलौ, पढ्यंक
 ए चाल वीली मौथ नीली सांजलौ ॥ ८ ॥ वंसकारेला रे
 कवला तरुणा, अंकुरा रे लोटा ते जलपोयणा ॥ कुमारी
 मरवृक्षनी बालनी, जे कहिये रे लोके अमृतबेलनी ॥ ९ ॥
 ती तानु ताजा खिलेना ने खरमुआ, जूय जूफोना वत्रा
 जाणौ नील फल सेवे जूआ ॥ वत्तस थोल प्रांसद थोड्या
 वीरतन सूरि इम कदे, परिहरे जे नर दोष जांणी प्रांणी
 वि सुख सदे ॥ २० ॥ इति बावीस अन्नक तिऊाय सं० ॥

॥ अथ गजलुकमाल सिधाय ॥

॥ संवेगरसमे जीवता, मनसुं करे आलोच ॥ देखीने दोदग
 तासु साधो रे में करि लोच ॥ १ ॥ यादवराय धन२ गजमुक
 हने करुं रे प्रसाम त्रिकाल ॥ या० ॥ आरुणी ॥ अन्
 ॥ आदरयो, तेहनो ए ॥ रिणाम ॥ मन वचन काया वसि

करी, जो हूं पामूं रे केवलज्ञान ॥ १ ॥ या० ॥ मुनि मुगति जा
 यवा अलजयो, परपैन दिन दस बीत ॥ साहसीक इम उचरतो
 पिण दिन जावे रे तो ठेह दीस ॥ या० ॥ ३ ॥ समसांण जा
 काउसग रह्यौ, तिण सांजि प्रचुने पूठ ॥ मुनिवर अवर इम चि
 त्तै, एहनै साची रे ठै मुंह मूठ ॥ या० ॥ ४ ॥ मुऊ सुता विन
 अवगुण तजी, सौमिल अगनि प्रजाल ॥ सिगमी रचि तिर ऊपरै,
 चिहुं दिसि बांधी रे माटीनी पाल ॥ या० ॥ ५ ॥ वेदना जिम अ
 धिक वधै, तिम वधै मन परिणांम ॥ चवदमें गुणठाणें चढ्यो, मु
 निवर पांमी रे केवलग्यांन ॥ या० ॥ ६ ॥ देवकी जांमणने थई,
 ते रयण वरस हजार ॥ वांदवा आवी प्रह समें, पिण नवि देखे रे
 प्रांणआधार ॥ या० ॥ ७ ॥ पूठतां प्रचु मांमी करी, रातिनी वी
 तग वात ॥ हरि देखी हियमो फूटसी, तेणें कीधो रे रुपिजीनो
 यात ॥ या० ॥ ८ ॥ उपसम सुधारस सेवतां, पांमियो अवेवजरा
 ज ॥ मनरंग साधु महंतना, गुण गावे रे श्रीजिनराज ॥ या० ॥ ९ ॥

॥ अथ प्रणचंद्र सिंघाय ॥

॥ राज बंमी रलियामणो रे, जांणी अथिर संसार ॥ वैरागै
 मन वालियो, कांइ लीधो संजम जार ॥ प्रणचंद्र प्रणमूं तुमारा
 गाय, तुमे मोटा मुनिराय ॥ प्र० ॥ १ ॥ वनमांहे काउसग रह्यो
 पग ऊपर पग ढाय ॥ बांइ बेउं उंची करी, मूरज सांमी इष्टी
 गाय ॥ २ ॥ प्र० ॥ श्रेणिक वंदन नीसरयो रे, बीरजीने वंदन
 गाय ॥ देइ तीन प्रदक्षणा, त्रिविध स्वमाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ डरमु
 दूत वचन सुणी रे, कोप चढ्यो ततकाल ॥ मनसुं संग्राम मां
 न्यो, जोव पड्यो जंजाल ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रेणिके प्रश्न पूठियो रे,
 हनी सी गति थाय ॥ जगवंत कहे दिवणां मरे तो, सातमी नर-
 जाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥ त्रिण इक अंते पूठियो रे, सरवारथसिद्धि वि

मांन ॥ बाजी देखनी डुंडजी, मुनि पांम्या केवलज्ञान ॥ प्र० ॥
 ॥ ६ ॥ प्रणचंद मुनि मुगते गया रे, श्रीमहावारना शिष्य ॥ रिद्ध
 रप कहे धन्य ते, जिण दीठा रे परतक ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ उत्पत्ति सिधाय ॥

॥ उत्पत्त जोय जीव आपणी, मनमांहि विमास ॥ गरजा
 वासे जीवमो, वसियो नव मास ॥ उ० ॥ १ ॥ नारीतणे नाजी
 तले, जिन वचने जोय ॥ फूल तणी जिम नालिका, तिम नामी ठै
 दोय ॥ उ० ॥ २ ॥ तसु तल योनि कहीजिये, वर फूल समान ॥
 आंवतणी मांजर जित्तो, तिहां मांस प्रधान ॥ उ० ॥ ३ ॥ रुधिर
 श्रवे तिण मांसथी, ऋतुकाल सदीव ॥ रुधिर शुक्र योगे करी,
 तिहां ऊपजे जीव ॥ ४ ॥ उ० ॥ जे अपान पवने करी, वासित
 डुरगंध ॥ तिण थानक तूं ऊपनो, दिव हूठ अंधमंध ॥ उ० ॥ ५ ॥
 नामी वांसतणी जरिये घणी, रूघाला ॥ ताती लोह सलाकतैं, जाले
 तंतकाल ॥ उ० ॥ ६ ॥ तिम महिलानी जोनिमें, ठै नव लाख जीव
 ॥ पुरुष प्रसंगे ते सहू, मरि जाय सदीव ॥ ७ ॥ ऊपजै नर नारी
 भिख्यां, पांचेडी जेह ॥ तेहतणी संख्या नही, तजो कारज एह ॥
 उ० ॥ ८ ॥ नव लाख जोव टिके तिहां, उलूछी वार ॥ जीव ज
 घन्यपणे टिके, एक दोय त्रिण च्यार ॥ उ० ॥ ९ ॥ जीव जघन्य
 तिहां रहे, महुरत परिमाण ॥ वार वरसनी धिति तिहां, उलूछी
 जाण ॥ १० ॥ उ० ॥ तिहां गरजे कोइ जीवमो, जंपे जग
 दीस ॥ फिर नर आवंतो रहे, संवत्सर चौबीस ॥ ११ ॥ उ० ॥
 महिला वरस पिचावनें, कदिये नीरवीज ॥ पिचइत्तर वरसां
 पठे, थापे पुरुष अवीज ॥ १२ ॥ उ० ॥ जीमणी कूर्च नर वसै,
 तिम वामे नारि ॥ बीच नपुंसक जांशिये, जिनवचन विचार ॥
 १३ ॥ उ० ॥ दिव सामान्यपणे इहां, आयो गरजावास ॥ सात

दिना उपरि रहे, नर गत नव मास ॥ ३० ॥ १४ ॥ आठ व
 रस तिर्यच रहे, उत्कृष्ट काल ॥ गरजावासै जोगव्या, इम बहु
 जंजाल ॥ ३० ॥ १५ ॥ कर्मण काये कर लियो, पहिलो आहार
 ॥ शुक्र अने स्त्रोणिततणो, नदी जूठ खिगार ॥ ३० ॥ १६ ॥ पर-
 जापत पूरी नदी, तिहां विसवावीस ॥ तिण आहारै तूं थयो, उदा-
 रिक मीस ॥ ३० ॥ १७ ॥ पवन अछै उदरै तिको, उपजायै अंग
 ॥ अगनि करै थिर तेहने, जल सरस सुरङ्ग ॥ १८ ॥ ३० ॥ कठन
 पणै पृथ्वी रचै, अवगाढ अकास ॥ पांचभूत सरीरमें, इम करै प्र-
 कास ॥ १९ ॥ ३० ॥ बारै महुत तां पवै, विलसै नर नारि ॥ गर-
 जतणी उतपति तिहां, नहीं अवर प्रकार ॥ २० ॥ ३० ॥ कलल हु-
 वै दिन सातमें, अखुद दिन सात ॥ अखुदणी पेसी बधै, धन मांस
 कहात ॥ २१ ॥ ३० ॥ मांसतणी बोटी हुवै, अमृतालीस टांक
 ॥ प्रथम मास जिनवर कहे, मन धरो निसंक ॥ २२ ॥ ३० ॥ सु-
 थिर मास बीजे हुवै, दिव तीजे मास ॥ कर्मतणै वसि ऊपजै, मा-
 ता मन आस ॥ २३ ॥ ३० ॥ चौथै मासै मातना, प्रणमै सहु अंग
 ॥ हाथ अने पग पांचमें, तिम सुतको संग ॥ २४ ॥ ३० ॥ पि-
 त्त रुधिर ठो पवै, सातमें इण संच ॥ नव धमणी नस सातसै, पे-
 सी सय पंच ॥ २५ ॥ ३० ॥ रोमराय पिण सातमें, साढीतीन कोमि
 ॥ ऊपजे छणै केतलै, इम आगम जोमि ॥ २६ ॥ ३० ॥ आठमें मा-
 सैं नीपनो, इम सकल सरीर ॥ उंचै सिर वेदन सहे, जंपै जिन वीर ॥
 २७ ॥ ३० ॥ सोणित शुक्र सलेपमा, लघु ने चरनीत ॥
 वात पित्त कफ गरजथी, धायै नर नीत ॥ २८ ॥ ३० ॥ मात-
 तणी सूँटि लगै, बालकनो नाख ॥ रस आहार करे तिहां, आवे ततकाल
 ॥ ३० ॥ २९ ॥ जननी व्ये आहारते, जाय नामोनाम ॥ रोम इंडी नख
 चख बधे, तिम मीजी नेदाथ ॥ ३० ॥ ३० ॥ सबहू अंगे ऊज

स, सरवंग आहार ॥ कवल आहार करे नदी, गरजे सुविचार ॥
 ॥ उ० ॥ ३१ ॥ मास बीजे किण जीवने, थाये ज्ञान विजं
 ग ॥ अथवा अथधि कदीजिये, तिण ज्ञान प्रसंग ॥ उ० ॥ ३२ ॥
 कटक करे वैक्रियपणें, ऊँजी नरके जाय ॥ को जिनवचन सुणी
 करी, मरी सुर पिण थाय ॥ उ० ॥ ३३ ॥ ऊँयै मुख गोमा
 हिये, सहितो बहु पीम ॥ दृष्ट आगलि वेहुं हाथसुं, रहे मुठी
 जींच ॥ उ० ॥ ३४ ॥ नर विण वस्त्र जलादिके, ऊपजै आ
 धान ॥ अथवा विहुं नारी मिढ्यां, कह्यो गरजविधान ॥ उ० ॥
 ॥ ३५ ॥ कोइ उत्तम चिंतवै, देखी डुलावात ॥ पुन्य करी तिम
 नीकलूं, नाउं गरजावात ॥ उ० ॥ ३६ ॥ ऊंठ कोनि चांपे सुई, कोइ
 समकाल ॥ तिणथी गरजै अठ गुणौ, सहे वेदन बाल ॥ उ० ॥
 ॥ ३७ ॥ माता दूखी दूखीयो, सुखणी सुख थाय ॥ माता सूती
 ते सुवै, परवस दिन जाय ॥ उ० ॥ ३८ ॥ गरजधकी डल जल
 गुणो, जांमैं जिण वार ॥ जन्म धयां डल बीसै, धिगूश मोह वि
 कार ॥ उ० ॥ ३९ ॥ ऊपज्यो अशुचिपणे जिहां, मल मूत्र कलेस ॥
 पिंन अशुचि कर पूरियो, किहां शुचि लवलेस ॥ उ० ॥ ४० ॥ तु
 रत रुदन करतो थको, जांमैं जिण वार ॥ मात पयोधर मुख ठवै,
 पीयै दूध तिवार ॥ उ० ॥ ४१ ॥ दिनश बीसे दीपतो, करै रंग अपा
 र ॥ लाम कोरु माता पिता, पूरै सुविचार ॥ उ० ॥ ४२ ॥ श्रोत्र
 इग्यारे नारिनि, नव नरने जांण ॥ रात दिवस बहिता रहै, चैतो चतुर
 सुजाण ॥ ४३ ॥ उ० ॥ सात धातु साते त्वचा, ठै सातसै ना
 रि ॥ नवसे नामी पिंनमें, तिम तीनसे हारु ॥ ४४ ॥ उ० ॥ संधि
 एरुसो साठ ठै, सतीचर सो सम ॥ तीन दोष पेसी पांचसै;
 ॥ ४५ ॥ ठै चरम ॥ उ० ॥ ४५ ॥ रुधिर सेर दस देहमें, पेताय
 ॥ ४६ ॥ सेर पांच चरबी तिहां, दोय सेर पुरीष ॥ उ० ॥

॥ ४६ ॥ उ० ॥ पित्त टांक चोसठ अठै, वीरज बत्तीस ॥ टांक बत्ती
 स सलेखमां, जाणै जगदीस ॥ ४७ ॥ उ० ॥ इण परिमाणयकी
 यदा, उठो अधिको थाय ॥ व्यापै रोग सररीरमें, नवि वाजे काय ॥
 ॥ ४८ ॥ उ० ॥ पोरुयो पहिले दाहके, इम वधियो अंग ॥ खान
 पान जूपण जला, करे नवनवा अंग ॥ ४९ ॥ उ० ॥ हिव बीजै
 दसके जणयो, विद्या विविध प्रकार ॥ तीजे दसकै तेहने, जाण्यो
 काम विकार ॥ ५० ॥ उ० ॥ जिण आनक तूं ऊपनो, तिणमें
 मन जाय ॥ चोथे दसके धनतणो, करे कोम ऊपाय ॥ ५१ ॥
 उ० ॥ पहुंतो दसके पांचमें, मनमें ससनेह ॥ बेटा बेटी पोतरा,
 परणावे तेह ॥ ५२ ॥ उ० ॥ ठे दसके प्राणियो, बले परवत्त
 थाय ॥ जरा आइ जोवन गयो, टुप्पा तोही न जाय ॥ ५३ ॥
 उ० ॥ आवै दसकै सातमें, हिव प्राणी तेह ॥ बल जागो बूढो
 थयो, नारी न धरे सनेह ॥ ५४ ॥ उ० ॥ आवमें दसके मोसलो,
 खुलिया सहुं दांत ॥ कर कंपावै सिर धुलैं, करे फोगट वात ॥
 ॥ ५५ ॥ उ० ॥ नवमें दसके प्राणियो, तन सूकत जाय ॥ साखै
 वचन बहुआंतणो, दिन जुरता जाय ॥ ५६ ॥ उ० ॥ खाटपण्यो
 खूखूं करे, सडू गाली वेह ॥ दाज दुकम हाले नही, बीयो परिजन
 वेह ॥ ५७ ॥ उ० ॥ आंख गले वे पुन मिले, पमै मुंहमे लाल ॥
 बेटा बेटी ने बहू, न करे सार संजाल ॥ ५८ ॥ उ० ॥ दस दृष्टा
 ते दोहिलो, लह्यो नरजव सार ॥ श्रीजिन धरम समाचरो, पांमो
 जिम जंव पार ॥ ५९ ॥ उ० ॥ चरणपणो जे तप तपे, पाले निर
 मल सील ॥ ते संसार तरी करी, खदे अविचल लील ॥ ६० ॥
 उ० ॥ कोमि रतन कवमो सटै, कांइ गमे रे गिवार ॥ धरम पलै
 पिण जीवनें, नहि कोइ आधार ॥ ६१ ॥ उ० ॥ काया माया
 कारमी, कारमो परिवार ॥ तन धन जीवन कारमो, साचो धरम

संज्ञार ॥ ६१ ॥ उ० ॥ चवदैं राज प्रमाणं ए, ठे लोक मंदंत ॥
 जनम मरण कर फरसियो, ते थार अणंत ॥ ६२ ॥ उ० ॥ आप
 सवारधिया सहु, नही केदनो कोय ॥ विण स्वारथ अणपहुंचतै,
 सुत पिण वैरी होय ॥ ६४ ॥ उ० ॥ जरां न आवे जां लगे, जां
 लग सबल सरीर, धरम करो जीव तां लगे, होय साहसधीर ॥
 ॥ ६५ ॥ उ० ॥ आरज देस लह्यो हिवे, लाघो गुरु संयोग ॥
 अंगथकी आलस तजो, करो सुकृत संयोग ॥ ६६ ॥ उ० ॥ श्रीनमि
 रायतणी परै, चेतो चितमांदि ॥ स्वारथना सहुको सगा, कोइ
 कियारो नांदि ॥ ६७ ॥ उ० ॥ जोग संयोग तजी सहु, थया जे
 अणगार ॥ धन१ तसु माता पिता, धन२ अवतार ॥ ६८ ॥ उ० ॥
 सुरतरु सुरमणि सारखो, सेवो जिनधरम ॥ जिणथी सुख संपति,
 वधे, कीजै तेहिज कर्म ॥ ६९ ॥ उ० ॥ तंडुलवेयाली अठै, एह
 नो अधिकार ॥ तिणथी ऊदरनें कह्यो, नही जूठ लिगार ॥ ७० ॥
 उ० ॥ कलस ॥ इह जैनधर्म विचार सांजलि लिये संजमज्ञार ए;
 परि सिंह केरा सदा पावै नेम निरतीचार ए ॥ संसारना सुख
 सकल जोगवि ते लहे जव पार ए, श्रीजिनदर्प सुसीत रंगै इम
 कहै श्रीसार ए ॥ ७१ ॥ उ० ॥ इति उत्तपति इकहत्तरी संपूर्ण ॥
 ॥ अथ आत्मनिष्ठा लिख्यते ॥

हे आत्मा ! हे चेतन ! ए कुदृष्टियां, यह कुश्रद्धाया, यह अकार्यमें
 प्रवृत्ति, यह रसगृहीपणो, यह खोटे दृष्टांत, सामायक दोष धनी
 मात्र कालमें तूं मत चिंतवन कर, क्यारे तूं सम्यक्तमोहनीमें,
 कज्जी तूं मिश्रमोहनीमें, कज्जी तूं कामरागमें, कज्जी तो स्ने
 हरागमें, क्यारे तूं दृष्टिरागमें, कज्जी तूं कुयुरुमें, कज्जी तूं कु
 देवमें, कज्जी तूं कुधर्ममें, कज्जी ज्ञान विराधनामें, कज्जी दर्शन
 विराधनामें, कज्जी चारित्रविराधनामें, कज्जी मनोदंभमें, कज्जी व

वनदंभमें, कज्जी कायदंभमें, कज्जी हास्यमें, कज्जी रतिमें, कज्जी
 प्ररतिमें, कज्जी ज्ञयमें, कज्जी सोकमें, कज्जी दुर्गममें, कज्जी
 दुष्णलेस्यामें, कज्जी नीललेस्यामें, कज्जी कापोतलेस्यामें, कज्जी तुं
 हृदिगारवमें, कज्जी तुं रसगारवमें, कज्जी तुं सातागारवमें, कज्जी तुं मां
 गतंल्यमें, कज्जी तुं नियाणासल्यमें, कज्जी तुं मिथ्यादर्शनसंल्यमें,
 कज्जी तेरे तेरेकाविया आय फिरता है, कज्जी तेरे बाहिर कर अं
 रे पापस्थानक आय फिरता है, रे तूं आरमा महा डुष्टो, महा
 राचारी, अरे तूं हीनतिथिका जाया, अरे तूं हीणपुत्रिया, अरे तूं
 ीणदंष्ट्री, अरे तूं अयोद्धा कामका करणहार, रे तूं डुष्ट पापिष्ठ जीव,
 यैं तो तेरे अनंतानुबंधियाक्रोध, अनंतानुबंधियामान, अनंतानु
 धिषीमाया, अनंतानुबंधीलोज्जरी चोकनो, विचारा तेरे स्वपी
 ही, गुणगणा तेरा पलटा नही, धैर्यगुण तेरे आया नही, तृष्णा
 ह तेरे मिठी नही, आकुल व्याकुलता तेरे मिठी नही, दरियाव
 सा कल्लोल तेरे उठल रहा है, तैं जो धर्मक्रिया करता है तो शून्य
 नसें करता है, धीरजगुणसें करेगा सो लेखे लगेगा, सूने मनसें
 ी जो क्रिया सो राख पर लीपले जेसा है, अरे चेतन ! सोगन
 ी लेखे सो पापी, उर लेकर जगि सो महापापी, तैं अनंतकाय,
 नका, शीलव्रत, जरदा, जंग, अमल, तमाखू, आदिकरा सोगन
 हर खोटा किया, तेरा कहां बूटकबारा होगी, रे चेतन ! तैं पुञ्जले
 स्ते कितनी आकुल व्याकुलता कर रह्यो है, मेरे पारस पत्थर,
 नवनिधान, मेरे रसकृपा, मेरे रसायण, मेरे चित्रावेल, मेरे अ
 गुटको, वा देवताकू वस करू, वादस्याह हो जाजं, राजा हो
 जं, प्रधान हाकम सेनापती हो जाजं, किसी तरे धन उपार्जन
 ; ये वाते तेरे हमेसां ऊपजै, दसमे गुणगणवालेकेही लोञ्जका
 ग नहीं, तो तेरी गरज तो कैसें सरे, रे चेतन ! तूं मनमें विचारता

हे मेरा घर मेरा पिता मेरी माता मेरा पुत्र मेरा कलत्र मेरा पु-
 ल, अरे चेतन ! चौरासी फिरते चौरासी लाख घर करता फिरा
 संसारमें न किसीका तूं दे, नहि कोई तेरा दे, रे चेतन !
 तेरा उत्पत्ति तो देख, केइ वखत मापणो, केइ वखत पूत्र
 पणो, केइ वखत पुत्रीपणें, किसी वखत स्त्रीपणें, जेसैं गगकी घेटी
 नैं अपनी मांसे पूवा-माताजी में जो पाप करतीहूँ सो कोण भो-
 गेगा ? मा बोली-घेटी, करेगा सो भोगेगा, तबतो उसने कहा धिक्
 दे इस स्वारथियें संसारकूं, कोइ किसीका नही, यह मनुष्यजन्म,
 आर्यदेस, आर्यकुल, आवकके घर जन्म पाया, श्रीजिनेश्वरदेवका
 धर्म पुन्यानुबंधी पुन्यसे पाया, उर पायकरके तेने ब्राह्मण जेसैं क
 उएकूं उभाणे चिंतामणिरत्न फेंककर खोया, तेसैं तें चिंतामणि
 रत्न जेसा सत्य सनातन धर्म जैनका पायकर मंदबुद्धि क्रिया आ-
 नंदरी कुगुरुनके उपदेससैं चिंतामणिरत्न जेसा शुद्ध जैनधर्म
 आझिप्रमाण जो था सो तेने खो दिया, अब तेरा निस्तारा केसैं
 होय, विष्टामें कमिपणें तें अनंती बार पेदा जया, मानरूपी गज
 पर बाहुंबल घटा उर संज्वलनमान था, उर बाह्नी सुंदरी बहिना
 जैसी समझाणेवाली थी जब समझै, उर तेरे सो एसा मान, अरे
 चेतन तेरा कोन दवाल होगा, देख तूं जरतमाहाराजा जिणोके
 केसीक राजरुद्धि सो केसीक जावना जावतां, धिःकार राज्यनैं, धिः
 कार पाटकूं, धिःकार चक्रवर्तिपदवीकूं, धिःकार मेरे विषयसुखोकूं,
 धन्य श्रीतार्थकर माहाराजका सो देसविरती धर्म पालते दे, धन्य
 जो सर्वविरती धर्म पालते हैं, धन्य जो बांन देते दे, धन्य जो
 सील पालते हैं, धन्य जो तपस्या करते हैं, धन्य जो जावना जाते
 हैं, एसैं जावना जावतैं जरतादिक केवलज्ञान केवल दर्शन
 पाया, इस तरें रे जीव तूं उनो ही बराबरी मतकर, बहतो तेसव

सलाका पुरुष चौथे आरेका जीव तें पंचम कालका जरतकेत्र-
का कीना उनोके देखते तूं किस गिणतीमें, कर्म अजीववस्तु तें जी-
ववस्तु, जीवसें जीवतो हमेसां परिचय करे लेकिन् अजीवसे क्यों
करै, कर्म सबल तें निर्बल, रे चेतन कर्म तो चौदेपूर्वधारीयोकों गि
राया, इग्यारमें गुलठाणेका जीव जुवनजानु केवलीजी, कमलप्र
ज्ञाचार्यजी, महाविदेहके मनुष्योक्तू भिगाय दिया तो तेरी तो
विस्मायतही क्या, आठ करम अछावनही प्रकृती हे प्रभु केसें जीता
जाय, मोदकर्म पीठै लगा सो केसें जीता जाय, हे चेतन चारित्र-
की फोजमें रह सद्बोध मोदतेकी आज्ञामें रह सदागमसुं परि-
चय रख, संतोपगुण धार, तृष्णारूप दादकूं पीठी मार, जेसें तें तिर
जांय, धन हे साधु मुनिराज पांचे सुमते सुमता, तीने गुप्ते गुप्ता,
वक्तायका पीपर, सात महाजयका टालणहार, आठ मदका जप-
क, नवविध ब्रह्मचर्यको वारुका रखणेवाला, दसविध जतीधर्मका
उजवालक, इग्यारे अंगका जणणेवाला, बारे उपांगका जणणेवाला,
कुंरकीसंवल मलि, मलिनगात्र, चारित्र पात्र, धन्य हे वह मुने
प्रभूकी आज्ञा मुजब धर्म पालै, रे चेतन तुजै कब नदै आवेगा, रे
चेतन तेरे उदय कहांसैं आवै, तेरे संसाररी बहुलताइ, धन्य देसत्र-
ती पाले जिके प्रभुजीकी आज्ञा पाले, जिके प्रज्ञात ठठ सामायक
करै, पम्कमणो करै, देवदर्शन करै, प्रभुजीकी द्वादसांगी वाणी
सुणै, देववंदन, देवपूजन, गुरुवंदन, दान, तपस्या, सील, पर्वतिथी
पोसा, संध्याकूं देवसी पम्कमणा जिनाज्ञा प्रमाणै पमाचइयक कर,
मुजेजी कजी उदय आयगा, रे चेतन ! तूं बुरे कर्म करता हे बुरा
दवाव दोगा, बुरे परणामोसे बुरीही गती उदय आयगी, सा-
मायक मनसुदै करो, निंदा विकथा मद परिहरो, पढण गुणना वां
चनेकी खप करो, जेसें जवसायर खीला तरो, सामायकवंतके यह

लक्षण है, उर तेरी सामायक तो निंदा विकथारूप है, तुजें पढ़ने गुणनेकी लगन नही, तेनें तो श्रुतज्ञानका विनय बहुमान नई किया, जो श्रुतज्ञानकी जक्ति करते हे उनोको ज्ञान दर्शनकी प्राप्ति होती है, केवलज्ञान उर केवलदर्शन पाता है वोही जीव मुक्तिरूप स्त्रीका जर्तार होता है. दिवस प्रते दै कोई सुजाण सोना खंरी लक्ष प्रमाण, उसके पुन्य होय जेतलो, सामायक कीधा तेतलो ॥ १ ॥ लेकिन् तूं इत जरोसे मत झूल, यह तेरी सामायक वो नही, यह सामायक आणंद कामदेव संख पुष्कली आदि उत्तम पुरुषोंकी, चंडावतंसकराजाकी, तेरी सामायक तो ऐसी है काम काज घरका चिंतवै, निंदा विकथा कर खिज रई; आरत रौड्यांन मन धरै, तूं सामायक निष्फल करै ॥ १ ॥ सामायकको लक्षण ऐसै है अपणा पराया सरपा गिणै, कंचन पत्थर समवन धरै, साचो ओनो आगम जणे, ते सामायक शुद्धे करै ॥ १ ॥ रे चेतन तें परायाबुरा चाहता, अपणा जला चाहता, वो पराया बुरा या नही चाह्या वो तेनें अपणे आत्माकाही बुरा चाहा, अरे चेतन तें कंचनकी चाह रखे, पत्थरकूं दूर करै, आखिर एक दिन यही पत्थर तेरे ठाती पर धरा जायगा, रे चेतन तूं सृष्टावाद बोल रहा है, तूं अपणे आत्माका गुण विचारे तो अवेदी है, अफरसी है, अधाती है, अलेसी है, अविनासी है, तें दिलमें विचारता है यह मेरा सज्जन, यह मेरा दुस्मन है, कोण तेरा सज्जन उर कोण तेरा दुस्मन है, आव कर्मरूपिया सत्रु है जिनोंको तूं ज्ञानरूपिये इंधनसूं वाल जस्म कर जिस्ते तेरो गरज सरे, अहोहो में जन्म हूं अजन्म हूं अथवा डुरजन्म हूं, मेरे संसार पोते बहोत दिखता है, प्रायेतो में अजन्मही दिखता हूं पीठे तो ज्ञानीयोने जाव देखा सो सही, हे रे जाइ तें तो ऐसी सामायक करता है, खुणे खाज मेने

करुका, उंचतणा लेवे सरमुका, तेरी सामायक तो ज्ञानी सिं-
कारेगा जब लेखे लगेगा, उदा-आत्मनिंद्या आपणी, ज्ञानसार मु-
नि कीन; जो आत्मनिंद्या करे, सो नर सुगुण प्रवीण ॥ १ ॥
इति आत्मनिंद्या संपूर्ण ॥

॥ अथ श्राद्धदिनकृत्य तथा देववन्दनभाष्यादिकसं मंदिर
जाणेकी पूजन द्रव्य भावसे करणेकी-विधि श्रीमहा-
निसीथ सूत्रकी आज्ञा मुजब लिखते हे ॥

महाकल्पसूत्रमें ऐसा लिखा है वती शक्ति साधु जिनमंदि-
रमें जाके दर्शन नही करे तो तेलेका मंन उर आवककूं बेलैका
मंन ॥ प्रथम आवक दो चार घन्टी रात रहे पिठली तब ऊठके
नवकारमंत्रका स्मरण करे, में कोण हूं, क्या मेरी जाति है, क्या
मेरा कृत्य है, क्या मेरा धर्म है, इस तरे धर्मजागरणासैं दिलको
सावचेत करे, पीठे मल मूत्रकी बाधाकूं दूर कर अंग शुचि करके
सामायिक लेके राईप्रतिक्रमण करे, फेर घरदोरासरकी पूजा करे,
पीठे यथाशक्ति अछा वस्त्र आभूषण पहरेके घोना हाथी रथ पाल-
खी सिपाइ नोकर चाकर जाई बंधु परिवार समेत पूजाके लायक
फल फूल प्रमुख संगमे लेकर ज्यजीवोंको मोक्षमार्ग दिखाता
हुआ जिनशासनकी प्रज्ञावना करता थका जिनमंदिरमें जावे,
जिन मंदिरमें प्रवेश करके झोपदीकी तरे ज्ञातासूत्रमें अधिकार
१० त्रिक विधि साचवन करे सो दस त्रिक लिखते हे—

पहिला त्रिक—१ बेर निस्तही कहणेका; जिसमें १ निस्तही
जिनमंदिरमें प्रवेश करतेही कहे पीठे संसार घर संबंधी कुठजी
कार्य विचारणा न करे १; दूसरी निस्तही प्रदक्षणा तीन दियां पीठे
कहे, जिनमंदिरमें फूटा टूटा मरम्मत कराणेकी जो सार शंजाल
रकीथी सोजी गोमे २; (इसमें द्रव्यपूजा करणी मोकली रही)

तीसरी निस्तही कहे पीठे निकेवल जावपूजाही करे, लेकिन् इय पूजा नही करे. यह प्रथम निस्तही त्रिक कहा. ?

दूसरा त्रिक—ज्ञान त्रिककी आराधना करणेकों प्रजूके दक्षिणावर्त्तसे तीन प्रदक्षिणा देवे.

तीसरा त्रिक—मूलनायकजीके बिंबको पंचाग मिलाके तीन बेर नमस्कार करे. ३.

चोथा त्रिक—प्रजूकी अंग ? अंग २ उर जाव ३ ऐसे त्रिविध प्रकारसे पूजा करे. अब निस्तही किये पीठे कृत्य अकृत्य तथा पूजाविधि संक्षेपसे लिखते हे, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, उर कायगुप्ति करके युक्त रहे, पांचो इंद्रियोकूं वसमे रस्के, चलणे उर फिरणेमें उपयोगी रहे, गीतादिक उतरोंका सुणके चित्तमें व्याकुलता नहि रस्के, कुञ्जी देवकार्यकों ठेरुके, उर कार्यकी विचारणा न करे, संपूर्ण राजकथा दिक ४ हो सो विकथाको ठेरुके, जन्म उर कर्मके अनुगत वचन नहि बोले अर्थात् कोईके मातापितादिकका किया जया खोटे कार्यकों प्रगट नहि करे तथा कर्मानुगत वचन आधेको अंधा, गोलेकूं गोला, इत्यादि वचन नहि बोले. निस्तही किये पीठे जिनमंदिरमें धर्मसंयुक्त आत्महितकारी प्रमाणोयेत वचन बोले, जिसमें मन वचन कायाके खोटे व्यापारोका निषेध अपणी आत्मासे किया हे उस जीवके जावसे निस्तही होय, उर जिसने दूरणका त्याग नहि किया हे उसके फकत शब्द उच्चारणे मात्र इयनिस्तही होय इस वास्ते पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरेके आठ तहका उज्जल वस्त्रसे मुखकोस बांधे, धूपादिकसे अंग अपणा शुद्ध करे, जावसे उतरा निस्तही कहते मूलगुंजारमें प्रवेश करे, जयणा संयुक्त पूजा करे, पूजा करते शरीरमें खांज नही खुणे, खेल खंखार नहि करे, नि केवल जगवानकी स्तवनामें चित्त रस्के. प्रथम सुगंध युक्त जल

पंचामृतसे स्नान करावे, सुकमाल अथवा कोमल सुगंधयुक्त वस्त्रसे जगवानका अंग लूहे, कपूर कस्तुरी मिश्रित शुद्ध केशरवंदनसे विलेपन करे, शुद्धवर्ण शुद्धगंधयुक्त जीवादि रक्षित निर्दोष गुलाब चंपा चंपेली केवला जाई जूई मोगरादिक पुष्पोसे पूजा करे, अष्टांगधूप अंगरचत्ती खेवे, मंगलीक दीपक करे, अर्चन उज्ज्वल अक्षतोसे प्रज्ञूके सन्मुख अष्ट मंगलीकलोखे-दर्पण १ जडासण २ वर्द्धमानसरावसंपुट ३ श्रीवत्स ४ भद्रयुग ५ कलश ६ स्वस्तिक ७ नंदारत्न ८ ऐसे अष्ट मंगलकी रचना करे, पंचरंगे फूलोंसे अष्टमंगलीककूं पूजे, अष्ट केशर चंदनके हस्ता देवे, उत्तम नेवद्य चढावे, अष्ट खाद्यफल चढावे, इत्यादि पूजाकी विधी आरती पर्यंत रायपत्नी झाताधर्मकथा जीवाजिगमादि सिद्धांतोमें लिखे मुजब करे, पीछे अंतरंग जक्तिसें प्रज्ञूके सन्मुख नाटक करे, जेस देवेंद्र दानवेंद्र नारद उदाहराजाकी राणी प्रजावती द्रौपदी रावण प्रमुख केश जीवोने जिनेश्वर तथा जिनेश्वरकी प्रतिमा आगे अष्टापदादि तीर्थोंपर तीर्थकर गोत्र उपार्जन किया नेसैं शंकारहित जव्यजीव नाटक करता उत्तम फल पावे, जल चंदनादि पुष्पोसे करीजावे सो अंगपूजा १ प्रज्ञूके सन्मुख नेवद्यादिक चढायाजावे सो अमपूजा २ प्रज्ञूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करे सो ज्ञावपूजा ३. इव्यपूजा गर्भित चोथा त्रिक कदा. ॥

अब पांचमा त्रिक-तीन अवस्था विचारणी. पिंसस्थ १, पदस्थ २, रूपातीत ३, इसमें पिंसस्थ अवस्थाके तीन जेद हे. जन्मावस्था १, राज्यावस्था २, अमणावस्था ३, उर केवल अवस्था फों विचारणा सो पदस्थ अवस्था, निरंजन निराकार सिद्धावस्था सो रूपातीत कहीजे. ५:

अब छठा त्रिक-तीन दिशा ओरके प्रज्ञूके सामने नजर रखे.

उर्ध्व १, अध २, तिरवी ३, दक्षणी ३४ बांइ पिठानी निजर नही करे. ६.
अथ सातमा त्रिक—तीन वेर धरती प्रमार्जके उस ठिकाने
चैत्यवंदन करे.

अथ आठमा त्रिक—वर्णादिक तीन संपदाका अक्षर शुद्ध उच्चारण करे सो वर्णशुद्धि १, अक्षरोके अर्थपर आलंबन रखे सो अर्थशुद्धि २, आलंबन एक जिनप्रतिमाका रखे सो मन शुद्धि ३. ७.

अथ नवमा त्रिक—तीन मुद्रा करणी. जोगमुद्रा १, जिनमुद्रा २, मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३. कमलकोशाकार दोनुं हाथोकी अंगुली मिलाणी सो योगमुद्रा कहीजे, इस योगमुद्रासें शक्रस्तव कहे १, कान्तसंग मुद्रा सो जिनमुद्रा २, उर दो सीपका जोमा तिस आकारसें हाथ रखे सो मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३, इस मुद्रासें प्रणिधान जयवीरराय कहे. ८.

अथ दशमा त्रिक—प्रणिधान तीन. जिनवंदन प्रणिधान १, मुनिवंदन प्रणिधान २, प्रार्थना प्रणिधान ३. इसमें जो जावंति चे इयाई इह संतो तत्रसंताइ तक तो जिनवंदन प्रणिधान १, जावंति केविसाहू तिविहेण तिवंरु विरियाणं तक मुनिवंदन प्रणिधान २, जयवीररायसे लेके आज्ञवमखंदा तक प्रार्थनारूप प्रणिधान ३. ऐसे दश त्रिकका पहिला द्वार कहा. १०.

अथ पांच अजिगमन साचवणेका दूसरा द्वार कहते हैं, स चित्तद्रव्य जो पुष्पादिक अपने जोगमें होय उसकूं दूर धरदेणा १, उर राजचिन्ह मुगट वत्र खमग चमर पाडका अचितवस्तुनकाजी ठोमणा आज्ञपण वगेरे पदरे रखेणा २, मन एकाग्र करेणा ३, एकपट्ट उत्तरासण करना ४, जिनविंवकूं देखतेही नमोज्ञुवणबंधुणो ऐसे नमस्कार करेणा ५. यह दूसरा द्वार कहा.

अथ तीसरा द्वार—दोदिशीका पुरुष दहिनी तरफ बैठके जगवंतकूं बांदे, स्त्री बांइ तरफ बैठके जगवंतकूं बांदे.

अब चौथा द्वार तीत अग्निग्रहका. अग्निग्रह देवगण्डशामे कहा है. जघन्यसे तो नव हाथ दूर बैठके देव वांटे १, मध्यम नव हाथसे उपरांत बैठके देव वांटे २, उत्कृष्ट ६० हाथ दूर बैठके देव वांटे ३.

अब पांचमा द्वार चैत्यवंदनका. सो जघन्य १, मध्यम २, उत्कृष्ट ३, एवं तीन जेद है. एमो अरिदंताणं एसा कहके अथवा एक दोय गाथाका नमस्कार चैत्यवंदन कहके शक्रस्तव कहला सो जघन्य चैत्यवंदन १, जिस देववंदनसे नमोब्रूणसे लेके अरिदंतचेष्ट्याणं इत्यादिक संपूर्ण कहके एक स्तुतिकी गाथा कहे सो मध्यम चैत्य वंदन तथा कोइ आचार्य कहते है पांचदंभक समेत शुईकी ध्यार गाथा कहे सो मध्यम चैत्यवंदन कहीजे. पांच शक्रस्तवसे आठ शुईसे देववांटे सो उत्कृष्ट चैत्यवंदन कहीजे.

अब षष्ठा द्वार पंचांग प्रणिपात करे, दो गोमे. दो हाथ, उर मस्तक, यह पांच अंग मिलाके जमीनमें लगावे.

अब सातमा द्वार. जघन्ये एक गाथासे लेकर उत्कृष्ट एकसो आठ श्लोक तथा काव्यसे प्रजुकी स्तवना करे ॥ इति ॥

॥अथ चवदे नियम दिनप्रति प्रमाण श्रावक करे सो विचार लि०॥

सञ्चित १, दध २, विगई ३, पाणहि ४, तंबोल ५, वल्य ६, कुसुमेसु ७, वाहण ८, सयण ९, विलेखण १०, वंज ११ दिशि १२, न्हाण १३, जत्तेसु १४ ॥ अर्थ ॥ श्रावक नितप्रति नियम संज्ञाले दिनमें जो चीज अपने अंग खाते लगे उसका प्रमाण रखे, उपरांत त्याग करे. उसमें पहिले सञ्चित वस्तुका प्रमाण इस तरेसे करे मट्टी सर्व जाति, पाणी सर्व जाति, जल अग्नि वायु वनस्पतिका वेदन जेदन, तरकारी फल परवल जीमी तोरी केला मतीरा ककमी खरबूजा नींबु आंव नारंगी जामूण इत्यादिक जो चाहे सो रखे, बाकीका त्याग करे १.

दूसरा इव्य प्रमाण, तहां घातु वस्तुकी शली तेसे अपर्ण
 अंगली विगर जो चीज मुंमें मालखेमें आवे सो सब द्रव्यकी गिण
 तीमे आता हे. नामांतर स्वादांतर स्वरूपांतर परिणामांतर द्रव्यांतर
 होखेसे इव्य जुदा गिणखेमे आता हे. जैसे गहूं एक इव्य उसकी
 पतली रोटी फीणारोटी बेढवारोटी बाटी यह सब जुदा द्रव्य कह
 लाता हे, इस तरे ज्ञात दाख रोटी कढ़ी मांनिया कढ़ तरकारी
 सब जात पापरु खीचिया लक सब तरेके फीणी घेवर खाजा
 इत्यादिकमेंसे सब इव्यमेंसे जो चहिये सो रखे बाकी नियम करे,
 उत्कृष्टपणे एक इव्यका नाम लेकर रखे सो एकही द्रव्य कहलावे,
 जैसेके मेवेकी खीचनी तो वह अनेक इव्यसे बणी नई हे तोजी
 एक इव्यही कहिये. इति इव्यप्रमाण दुसरा नियम २.

अथ तीसरा विगय प्रमाण नियम ॥ तहां दश विगयोंमेंसे
 आवककुं चार महाविगयका तो त्यागही होता हे. मदिरा १ मांस
 २ मस्करा ३ उर सदतका ४ रहे. ६ विगय--घृत १ तैल २ मीठा
 ३ दूध ४ दही ५ कढ़ाईकी तली चीज ६, यह धारणा प्रमाण
 रखे. इति विगय नियम ॥ ३.

अथ चोथा पादत्राण नियम ॥ तहां जूनी खन्नाठ मोजा
 अपना इतना विराणा ऐसे नित्य धारणा प्रमाण मोकला रखे ४.
 ॥ इति पान दि नियम ॥

अथ पांचमा तंत्रोल नियम ॥ पांनवीना सुपारी लोंग इला
 यची गोटो उर बनी जायफल जावंत्री प्रमुख सय खादिमवस्तु
 किरियाणैकी चीज धारणा प्रमाण रखे. इति तंत्रोल नियम ॥ ५.

अथ छठा वस्त्र नियम. पोसाख २ तय्या ४ चूटा वस्त्र ५
 ७ मोकला रखे, पोसाख १ में पयनी १ जामा २ कमरबंधा ३
 ४ इक पट्टा उत्तरासन ५ यह पांच वस्त्रकी एक पोसाख

कहेजे, ऐसेइ स्त्रीके स्त्री मुजब, जो ऐसा नही कर सके तो ४० तथा ५० कपर्णा दिनमे मोकला रखे, पराया वस्त्र झूल चुकमें आवे तो जयणा ॥ इति वस्त्र नियम ॥ ६.

अथ सातमा फूल नियम, गुलाब चंपेली बेला केवला केव की कुंद मुचकुंद सेवती चंपा मालती आदिक सब फूलका धारणा प्रमाण रखे, ॥ इति फूल नियम ॥ ७.

आठमा वाहन नियम ॥ रथ गामी वहली इक्का बघा कोच पालखी घोडा हाथी छंट तामजांम म्याना इत्यादिक सब यलवाहन, पालीमें चढ़नेवाले मोरपंखी बतक घुमदोम लचका मगर पनसोइ पलवार बजरानाव इत्यादि सब जिहाज बोट वगे तिरता फिरता चरता रेल वगेरे सब प्रकारके असवारीकी धारणा रखे, ॥ इति वाहन नियम ॥ ८.

अथ शय्या नियम ॥ पलंग खाट तखत चोकी पट्टा गद्द कुरसी बनावत सूजनी सेब्रूंजी डुलीचा चांदणी शीतलपट्टी चटई सफ दरखतकी बालका चमड़ेका कामला मुखमल अतल फारचोपी इत्यादि धारणा प्रमाणे शय्याका प्रमाण करे, इति शय्या नियम ९.

अथ दशमा विलेपन नियम, सरसूंका राईका आटेका ते फुलेल सब जातिका केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकू इत्यादि शरीरके सुख वास्ते तथा रोगादि कारणे औषधादिकका विलेपन फोने परमलम प्रमुख आंखोंमें अंजन इत्यादि अंगोपांगमें धारणा सो विलेपन धारणा प्रमाणे परिमाण करे, इति विलेपन नियम १०.

अथ ब्रह्मचर्य नियम, रातकों तथा दिनकों सूइ मोरे दृष्टांत जोगादिकका प्रमाण करे स्वप्नेकी मनकी वचनकी जयणा इति ब्रह्मचर्य नियम ११.

अथ दिशि नियम. पूरव. १ पश्चिम २ दक्षिण ३ उत्तर
अग्निकूण ४ नैऋतकूण ५ वायव्यकूण ६ ईशानकूण ७ अथो
शि ८ उर्ध्वदिशि १० यह दश दिशिका अपने जाणे आनेक
प्रमाण करे, चिह्न लिखणी आदमी जेजणा देशांतरकी चिह्न
वांचणी उसकी जयणा. इति दिशि नियम १२.

अथ तेरमा स्नान नियम. तहां आज दिनमें स्नान २ बेर
अथवा ४ बेर मोकला लेकिन पाणीका तोल रक्के, घने प्रमुख
का प्रमाण करे, एक स्नानमें इतना पाणी खरच करूं जवा
नदी गिराउं. इति स्नान नियम १३.

अथ चौदमा जात नियम. दिनमें जात १ सेर तथा १
बेर जीमूंगा अथवा चार बेर उपरांत डुविहार या चोविहार
धारणा प्रमाणे रक्के. तथा दिनमें जल पीणेमें आवे उसका
प्रमाण रक्के तोलसे या मापसे. इति चवदे नियमविचार संपूर्ण १४.

॥ अथ श्रावकके सम्यक्त मूल धारे व्रत ग्रहण विधि लिख्यते ॥

प्रथम जिनमंदिरमें जिनप्रतिमाके सामने शुद्ध सपेद वस्त्र
पहरके चंदनकेशरका तिलक करके चावल चढ़ावे, पीठे अखंड
तंडुल मुठ ३ आलमें रक्के उस पर नारेल रुपया या मोहर
धरे, तीन प्रदक्षिणा देकर इरियावही पक्षिमें इच्छाका० सम्य
क्त सामाश्चारादणार्थ चेइयाई वंदावेइ गुरु केइ वंदावेमो चैत्यवं
वण करे. बाये पासे चावलांको साथियो करे श्रीफल धरे पीठे
गुरु वर्द्धमान विद्यासें मंत्रकर श्रावकके मस्तक पर वासुदेव
करे, वर्द्धमान स्तुतिसें देववंदन करावे पीठे सतरे शुद्धमें नवकार १
एकेकका काउसग्य करे पीठे शासनदेवता निमित्त चार लोगस्त
का काउसग्य करे, पारके प्रगट लोगस्त कहे पीठे ३ नवकार
गुणे शक्रस्तव कहे नमोर्द्धतु० कहेके वना स्तवन कहे पीठे जप

धीधराय कहे इति नंदी विधिः । पीठे स्वमात्मण देइ श्रुतसां
 मायक सम्यक्तसामायक आराधणार्थं काविसमं करावेद्, गुरु कहे
 करावेमो सम्यक्तसामायक आरोपनार्थं करेमिसानुसमं. ४ लोग
 स्तका काउतगा करे पारके प्रगट लोगस्त कहे पीठे १ वेर नव
 कार गुणकर गुरुके पास तीन वेर सम्यक्तर्दमक उच्चरे गुरु पाठ
 बोले उत्तकी मनने धारणा रखे. सूत्रं अद्वैतं जते तुह्याणं सम वे
 मिष्ठताते पन्कमामि सम्मत्तं उवसंपञ्जामि नोमेकप्पइ अञ्जप्पजिइ
 अन्नतिठिइवा अन्ननिष्ठिदेवपाणिवा अन्नतीष्ठिपरिगहिय अरिहंत
 वेइयाणिवा वेदित्तएवा नमंसित्तएवा पुब्बिअणावित्तएणं आलवित्त
 एवा तेसिअसएणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा दाउंवा अणप्पाउंवा
 तेसिगंधमह्वाइं पेसित्तंवा नल्लवरायान्नियोगेणं गणाजि योगेणं बला
 न्नियोगेणं देवान्नियोगेणं गुरुनिग्गदेणं वित्तीकंतारेणं तंचउच्चिइं तंजहा
 दवत्तं खित्तत्तं कालत्तं जावत्तं तच्चदवत्तं दंसणं दवाइं अदिगिच्च खित्तत्तं
 जावत्तं जरदमझिमखंमे कालत्तं जावज्जीवाए जावत्तं जावउत्तेणं नउ
 विज्जामि जावत्तं निवाएणं नजविज्जामि जावकेसइ, उम्माइवत्तेणं
 एत्तो दंसणं पालणं परिणामो नपरिवमइ तावमे एत्तो दंसणाजिग्ग
 हो अन्नं उवाज्जेणं सदस्सागारेणं महत्तरागारेणं सबसमादिवत्ति
 यागारेणं वोत्तिरइ. पीठे जूं ह्रीं श्रीं अर्हं नमः एते अक्षर श्रीगुरुके
 पाससें दायमें लिखोके जिन प्रतिमाकूं वासहेप चढावे, नवकार
 पढतोथको १ प्रदक्षिणा देवे, देव गुरुकूं वांदि, पीठे श्रुतसामायक
 धिरि करणार्थं सत्तावीस उत्तास प्रमाणे एक लोगस्तका काउत
 ग करे पीठे प्रगटलोगस्त कहे पीठे सम्यक्तरूप कट्टपवृक्क पायके
 अति आनंदसें एसा वचन बोले अरिहंतोमहदेवो, जावज्जीवं सुता
 हुणो गुरुणो, जिनपन्नत्तंतत्तं, इयत्तम्मत्तंमएगहियं. १. पीठे गुरु
 चर्मदेशना देवे, भिग्गुवात्तरूप सम्यक्करे पांच अतीचार वजे, नित्य

चैत्यवेदन इतनी बेर कळंगा, इतना नवकार नित्य गुणूंगा, फल
केसरादिक वर्षप्रति इतना जिनमंकिमें चढानंगा, ज्ञान दर्शन चा
रित्रके जक्तिमें इतना द्रव्य खरचूंगा, शीलव्रत इतने पर्वनिधिमें पा
लूंगा, नित्य पञ्चखाण इस मुजब कळंगा, दिनकी नवकारसी आ
दिक रात्रिकों डुविहार तिबिहार चनुविहार छर धावीस अन्नक
वत्तोस अनंतकाय विदल वगेरे ठेडूंगा इत्यादिक अपणी धारणा
प्रमाण सब वस्तूका करे नियम, गुरुके सामने धारे व्रतकी टीप
सुणे अतीचार नहि लगे ऐसे उपयोगसे सदा वर्त्ते ॥

अथ प्राणातिपात व्रत दंरुक लि० ॥ अहन्नंजते तुम्हाणं स
मीधेवथूलगपाणाइवायं संकप्पिउ निरवराहं पञ्चस्कामि जावज्जीवाए
एगविहं एगविहेणं अथवा डुविहं तिबिहेणं मणेणं वायाए काएणं
नकरेमि नकारवेमि तस्सज्जंते पन्निक्कमामि निंदामि गरिहामि अ
प्पाणं वोसिरामि ॥ यह पहले व्रतका दंरुक तीन बेर उच्चारवे ॥ १ ॥
अहन्नंजते तुम्हाणंसमीवे थूलगं मुत्ताइवायं जीहाड्डेयाइहेठअं
कन्नालीयं गवालीयं जूमालीयं थापणमोत्ता कूटसाखीयं पंचविहं
पञ्चस्कामि दस्किन्नाए अविसेए दवउं खिउउं कालउं जावउं सवउं
मुत्तावायं खिउउंणं इउवा अणउवा कालउणं जावज्जीवाए जाव
उणं जावगहेणंनगहेळामि जावउलेणंनगलिळामि अन्नेणकेणवि
रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवरुई तावअज्जिग्गह डुविहं तिबिहेणं
अन्नत्यगान्नोगेणं सदस्सागारेणं मदत्तगागारेणं वोसिरई ॥ २ ॥
अहन्नंजते तुम्हाणंसमीवे अदिन्नादाणं सत्तखणणाइयं चोरंकारकरं
रापनिग्गदकारयं सच्चिन्नाचिन्ना वज्जुविसयं पञ्चस्कामि ववउं खिउउं
कालउं जावउं दवउणं अदिन्नादाणं खिउउणं इउवा अन्नउवा का
उउणं जावज्जीवं जावउणं जावगहेणं नगदिळामि जावउलेणं नग
लिळामि अन्नेणकेणवि रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवरुई ताव अ

संगहं उविहं तिविदेणं अन्नत्थं सहस्तीं मदत्तं सब्बं वोसि
 ॥ ३ ॥ अदन्नं तुम्हाणं समीवे उगारियं वेक्खियं ज्ञेयं धूलमेहुणं
 वस्कांमि अदागदियजंगणं विवेतिरिञ्चं माणसियं एगविहं एग
 देणं पच्चस्कांमि दव्वत्तं खित्तत्तं कालत्तं जावत्तं दव्वत्तं मेहुणं खि
 त्तत्तं इत्थवा अन्नत्थवा कालत्तं जावत्तीवाए जावत्तं जावगदेणं
 नगदेज्झामि अन्नं सहं मदं सब्बं वोसिरइ ॥ ४ ॥ अदन्नं
 तं तुम्हाणं समीवे परिगहं पमुच्च अपरिमिय परिगहं पच्चस्कांमि
 पधन्नाइ नवविद्वहु विसयं इत्थापरिमाणं भवत्तं पज्झामि अदाग
 यजंगणं तंजहा दव्वत्तं खित्तत्तं कालत्तं जावत्तं दव्वत्तं नवविद्व
 एगहं खित्तत्तं इत्थवा अन्नत्थवा कालत्तं जावत्तीव जावत्तं
 वगदेणं नगदेज्झामि अन्नं सहं मदं सब्बं वोसिरइ ॥ ५ ॥
 अन्नं ज्ञेयं तुम्हाणं समीवे विसिपरिमाणं पच्चस्कांमि तंजहा दव्वत्तं
 तत्तं कालत्तं जावत्तं दव्वत्तं विसिपरिमाणं खित्तत्तं धारणाप
 रं कालत्तं जावत्तीवाए जावत्तं जावगदेणं नगदेज्झामि जाव
 तावअज्जिगइ अन्नं सहं मदं वोसिरइ ॥ ६ ॥ अदसंजं
 तुम्हाणं समीवे जोगोवजोगयेजोगणत्तं अनंतकायबहुवीया राइ
 यणाइ परिहरामि कम्मत्तं पन्नरसकम्मदाणाइ ईगालकम्माइया
 दुत्तावज्जाइ खरकम्माइयं रायाज्जियोगंच परिहरामि तंजहा दव्वत्तं
 तत्तं कालत्तं जावत्तं दव्वत्तं जोगाव जोगवयं खित्तत्तं इत्थवा अन्न
 तं कालत्तं जावत्तीवाए जावत्तं जावगदेणं नगदेज्झामि अन्नं
 सहं मदं सब्बं वोसिरइ ॥ ७ ॥ अदसंजं ते तुम्हाणं समीवे
 त्यदं पच्चस्कांमि अववज्जाणं पापोपदेशं हिंसोपकरणं
 पमायवरितं चत्थिहं अन्नत्थदं जहासचीए परिहरामि तंज
 हा दव्वत्तं खित्तत्तं कालत्तं जावत्तं दव्वत्तं अन्नत्थदं खित्तत्तं इत्थ
 वत्तत्थवा कालत्तं जावत्तीवाए जावत्तं जावगदेणं नगदि०

अन्न० सह० मह० वोतिरइ ॥ ८ ॥ अहन्नंजते तुम्हाणंसमीवे
 सामाइयं पोसदोववासं देसावगासियं अतिथिसंविजागवयं जहा स
 तीए पन्निवज्जामि इच्चयं सम्मत्तमूलं पंचाणुबयं सत्तसिरकावयं कुंवा
 लसविहं सावगधम्मं उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अन्न० सह० मह०
 सबस० वोतिरइ ॥ ९ ॥ पद् साख उ ठंमी व्यार आगार संयुक्त
 पालं ॥ इति आचककूं संक्षेप बारे व्रत उचरावण विधि ॥

॥ अथ वीसथानकका छोटा स्तवन देववांदनेमे कहणेका ॥

श्रीजिनना रे चरण कमल प्रणमी करी, वीस थानक रे
 गणवुं विधि कइउ चित्त धरी ॥ पहले थानक रे नमो अरिहंताणं
 गणउ, सीमंधर रे जयवंत जिन पूजी धुणउ ॥ वृटक० ॥ धुणउ
 जविआं बीजइ थानकि, नमो सिद्धाणं सदी ॥ सिद्धपूजा चउवी
 स जितनी, पूंरुरीक आविइ कही ॥ त्रीजइ थानक नमो पवण
 स्त, प्रजावना संघनी करइ ॥ नमो आयरिआणं चउथइ थानकि,
 आचारज जगती धरइ ॥ १ ॥ नमो थेराणं रे पांचमइ धियर
 पूजा करो, नमो उवझायाणं रे उठइ थानक उचरउ ॥ वत्त कंवल
 र बहुश्रुतनइ ते दीजिए, नमो तवस्तीणं रे सातमें तपिआ
 पूजिए ॥ त्रू० ॥ पूजिए आठमे नमो नाणस्स ज्ञाननी जगति
 करउ, नमो दंसणस्स नवमें थानक चैत्यसेवा आदरो ॥ दंसमे ते
 नमो विनयकारीणं विनय वमानो कीजिए, इग्यारमे नमो क्रिया
 कारीणं पोसद पुरो लीजिये ॥ २ ॥ धारमे थानक रे नमो धंज
 धारीणं सदा, वृत्तधारी रे मन वच क्रम पूजउ मुदा ॥ मूल वय
 धारीणं रे नमो तेरमे अरचिये, समादिघरणं रे रात्रइ गीत गांन
 वरचिये ॥ त्रू० ॥ वरचिये नमो मुपत्तदायणस्स परमान्न दान ते
 नरमे, नमो वायणस्स विगयनउ त्याग करो थानक सोलमें ॥
 ततरमे नमो वेयावचकारीणं, उग्रध गुरुनइ आपिये ॥ अठारमे

नमो नाण धराणं, नवूं जणवूं थापिये ॥ ३ ॥ नमो सुत्रजत्तीणं
 रे जगणीसमे जविया मुण्ठं, पुस्तकपूजा रे नवूं लखावीनइं
 सुणो ॥ बीसमे थानक रे, नमो पद्मावगाणं कही, संघजगती रे
 यथासक्ति कीजे सही ॥ ३० ॥ सही कीजे बीस जली एक पठ
 मासि कीजीये, उपवास करिये बे सदस्त गुणिये पन्निकमणे
 लाहो लीजिए ॥ त्रणे काले देववंदन नादण धोअण टालिये,
 आरंज वरजी, पुन्य गरजी सीअल सूयो पालिये ॥ ४ ॥ साधु
 साधवी रे आचक आविकाये सेविआं, तीर्थकर रे तेणे नामकर्म
 बांधिआं ॥ वीरशासन रे नव जणां ते जाणिआं, गणांगे रे
 सौधर्मसामि, वखाणिआ ॥ ३० ॥ वखाणिआ गणधर श्रेणिकराजा
 सुपांस उवाई नृप बलि, पोटिख मुनिवर अने द्वादयुप शंख
 दातक आवक रुली ॥ सुवसा रेवती आविकाये एह थानक
 फरसिआ, सेवकजन कल्याणकारी वणला सफला किया ॥ ५ ॥
 इति बीसथानक स्तवनं ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग केरवो ॥ चाखो देखो री मधुवनको राव ॥ चा० ॥
 वामानंदन पात जिनेसर, शिर पर रे बाके चमर दोलाय ॥ चा० ॥
 ॥ १ ॥ तारण तरण जिनेसर लख के, जेते सहु जवि चित्त सुख
 पाय ॥ चा० ॥ २ ॥ गंगादरस्त उमादो लागो, कब फरसुं बाके
 मन वच काय ॥ चा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग घाटी ॥ मेरो मन बश कर लीनो, जिनवर प्रभु
 पात ॥ मे० ॥ अस्त्रियां कमल पाखनिया, मुख सुंदर जात ॥
 मे० ॥ १ ॥ काने कुंरुल दोष जलके, शशि सूरज सम जात ॥
 मे० ॥ नील वरण तन सोदे, त्रिजुवन परकाश ॥ मे० ॥ २ ॥

प्रभु तुम शरण रहीने, समरुं सासोसास ॥ मे० ॥ लालचंद
अरज सुनीजें, पुरो वांछित आस ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ तुमरी ॥ राग जंगलो ॥ सुणो सुजाण नेमजी, हरि में
खनी पुकारुं नेम तुंदीं तुंदीं तुंदीं ॥ सु० ॥ अरज करत हुं में
पईयां परत हुं, ईतनी अरज मेरी मानो ॥ सुजा० ॥ १ ॥ बिन
अवगुण क्युं तजो मेरे सादेव, नेह नजर मोर्ये भारो ॥ सुजा० ॥
॥ २ ॥ हरख चंद नेमी राजेसर, हुं जव जवकी चेरी ॥ सुजा० ॥ ३ ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ नेम जिणंदजीसैं आंखरुली, मोरी रेन
दिवस नित लग रहीर ॥ ने० ॥ मो० ॥ १ ॥ पहेली आय उन
दोस्ती कीनी, ले पीवें बिटकाय दई रे ॥ पसुअन पर प्रभु दया
करीने, सिवरमणी तें वर लेइ रे ॥ ने० ॥ मो० ॥ २ ॥ केहू
जविक रसना कर दोस्ती, रत्नविमल पद पाय लई रे ॥ ने० मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ पद ॥ राग भैरवी ॥

॥ आज प्रभु तोरे चरण लागि, मिथ्यातनिंद में खोई रे ॥
आ० ॥ १ ॥ दरसन कर परसन जयो मेरे, आनंद चित अब
जोई रे ॥ आ० ॥ २ ॥ तुम बिन उर न कोई मेरे, देख्यो त्रिभु
वन जोई रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ वास तुमारो करत विनति, तुम
प्रभु जव जव होई रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ रात गई अब प्रात होन जयो, क्या सोये
जिया जागरे ॥ रा० ॥ दोष घनी तमको अब रहियो, उर धरममें
लाग रे ॥ रा० ॥ १ ॥ जिनवाणी उरवीच धार ले, उर जरम
सब त्याग रे ॥ रा० ॥ २ ॥ आनंद सुगुरु वचन हित मानो, ए
शिवमाग रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ तुम बिन दीनानाथ दयानिधि, कोन खबर ले मेरी रे ॥ तु० ॥ १ ॥ भ्रमत फिरयो संसार जगतमें, भेटो जव दी फेरी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ जब जबके प्रभु तुम जगनायक, राखो शरण तेरी रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ उदय आशरो पकड़्यो तेरो, सरण अही मैं तेरी रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ कमलानी देशी ॥ जाव धरि धन्य दिन आज सफलो गणुं, आज मैं सजन आनंद पायो ॥ हर्ष धरि नजर जरि विमल गिरि निरख करि, रजतमणि कनक सुरतरु कहायो ॥ जा० ॥ १ ॥ पग पग उमंग धर पंथ नित प्रवृत्तां, धन्य दोष धरण तिहां चलत आयो ॥ आज धन दीद जागी सुकृतकी दिशा, आज धन दीद गिरि सुजस गायो ॥ जा० ॥ २ ॥ दूर दुर्गति ठरी जात्र विधिशुं करी, पुण्यजंगल पोतें जरायो ॥ वंदत जिनराज मणिरंग सुरगिरि शिखर, रूपज्जिनवंद सुरतरु कहायो ॥ जा० ॥ ३ ॥

॥ अथ सीमंघर जिन स्तवनं ॥

॥ श्री सीमंघर साहिबा, वीनतनी अवधार लाल रे ॥ परमात्म परमेस्वर, आत्म परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ केवलज्ञान दिवाकर, जंगे सादि अनंत लाल रे ॥ ज्ञातक लोकालो कको, क्षापिक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ इंद्र चंद्र चक्र। सरु, सुर नर रदे कर जोरु लाल रे ॥ पदपंकज सेव सुदा, अणदूते एक कोरु लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चरणकमल पिंजर वस्त्रो, मुळ मनहंस नित्यमेव लाल रे ॥ चरण सरण मोहि आसरो, जबजव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अंधमः उधारण गो तुमैं, दूर हरो जबहुःख लाल रे ॥ कहे जिनदर्प मया करो, देजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति सीमंघर जिन स्तवनम् ॥

॥ अथ अष्टापद गिरि स्तवनम् ॥

॥ मनमो अष्टापद मोह्यो माहरो जी, नाम जपुं निशि
दीप्त जी ॥ चत्तारी अष्ट वस दोय वंदीया जी, चिहुं दिशि जिन
चोवीश जी ॥ म० ॥ १ ॥ जोजन जोजन अंतरे जी, पावन
शाला आठ जी ॥ आठ जोजन उंचुं देहरं जी, दुःख दोह
जाये नाठ जी ॥ म० ॥ २ ॥ जरते जरयां जलां देहरां जी,
सो ज्योरां श्रूज जी ॥ आपे मूरत सेवा करे जी, जाण जोईने
ऊज जी ॥ म० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी तिहां चढ्या जी, बली
जांगीरय गंग जी ॥ गोत्र तीर्थकर बांधीयां जी, जाणे जोई ने
ऊज जी ॥ म० ॥ ४ ॥ दैव न दीधी मुऊने पांखमी जी, आहुं केम
हजूर जी ॥ समयसुंदर कहे वंदना जी, प्रह उगमते सूर जी ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ सुण अरदासा सुण निवासा, अमची पूरो प्रजु आशा
राज ॥ सु० ॥ देखि उदासा अपणा दासा, दीजे कबुक दिलासा
राज ॥ सु० ॥ १ ॥ चामी चटकी जवमांदि जटकी, नाच्यो में
वेध नटकी राज ॥ सु० ॥ २ ॥ हवे मन हटकी आपशुं अटकी,
आहुं प्रजुपय लटकी राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ ते हम टाली मुगत
जाली, प्रीत अमेंदिज पाली राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ एक हयाली
जाजे ताली, वात अचंजा वाली राज ॥ सु० ॥ ५ ॥ परजपगारी
स तुमारी, सेवामें विष सारी राज ॥ सु० ॥ ६ ॥ तत्त्व विचारी
न शुद्ध घारी, श्रीप्रमसी सुखकारी राज ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शंखेश्वर स्तवनम् ॥

॥ अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो ॥
जालीने आव्यो तुम तीरे, जनम मरण जय वारो ॥ १ ॥ सेवक
ज करे ठे राज, अमने शिवसुख आलो ॥ ए आंकणी ॥ सहु

कोना मनवाञ्छित पूरो, चिंता सहुनी चूरो ॥ एह बिरुद ठे राज तु-
 मारुं, किम राखो ओ दूरो ॥ सेवक० ॥ १ ॥ सेवकने बलबलतो देखी,
 मनमां महेर न धरशो ॥ करुणासागर केम कदेवाशो, जो उपगार
 न करशो ॥ सेवक० ॥ १ ॥ लटपटतुं दवे काम नही ठे, परतक
 वरिसण दीजें ॥ धूवामे धीजुं नही सादिव, पेट पड्या पतीजें ॥
 ॥ सेवक० ॥ ३ ॥ श्रीसंखेसर मंगण सादिव, वीनतमी अवधारो ॥
 कहे जिनदर्य मया करी मुऊने, जवसायरथी तारो ॥ सेवक० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्थजिन स्तवनम् ॥

॥ प्राण पीयारा जी हो पास जी, किम मेहुं किरतार ॥
 जिनेसर ॥ सादेब वसीया जीहो शिवपुरी, हुं इण जरत मऊ र
 ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ १ ॥ आम्हो अंतर जीहो अति घणो, सेंगु
 मिले साथ ॥ जि० ॥ लिख संदेशा जीहो खानला, कागज हुं किण
 हाथ ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ २ ॥ रमतां धें में जीहो एकठा, दिनमें
 दश दश वार ॥ जि० ॥ केइक दिन लग जीहो एकठा, मिलता
 पणो मनुहार ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ३ ॥ आवतो मिलणो जीहो
 अवसरें, मिलशे सुकृत संयोग ॥ जि० ॥ पण कण कण
 जीहो सांजरे, वाला तणो रे विजोग ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ४ ॥
 मिलस्यां जिण दिन जीहो मन रखी, फलशे ते दिन आश ॥
 ॥ जि० ॥ चंदमुनिंद कहे जीहो चित्तमें, बसजो प्रजु सुखवास ॥
 ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमतिजिन स्तवनम् ॥

॥ महाराज वधाई वाजे ठे ॥ जिनराज, वधाई, वाजे ठे ॥
 नगर अयोध्यामांदे, मेघ घर आज वधाई वाजे ठे ॥ ए टेक ॥
 मात सुमंगला जनमिया रे, सुमतिनाथ सुखकार ॥ सुमति जेई
 सहु देशमें रे, प्रगट जयो जयकार ॥ व० ॥ १ ॥ इत्यादिक सहु

सुर मङ्गलारे, मेरुशिखर पर आय ॥ मङ्गल पूजन बहुविध रे,
धिर करि मन वच काय ॥ व० ॥ १ ॥ घर घर रंग वधामणा रे,
घर घर मंगल चार ॥ घालचंद प्रज्जु जनमिया रे, सकल संप सुख
कार ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ अथ विरजिन स्तवनं ॥

॥ आज महोच्चव रंग रत्नो री ॥ ए टेक ॥ जायो सुत
त्रिशलादे रानी, कामित पूरन काम कली री ॥ आ० ॥ १ ॥
सजि शणगार सकल सुरवनिता, अपने अपने मेल चली री ॥
आवत सिद्धार्थजीके आंगन, पूरत मोतियन चोक पूरी री ॥
आ० ॥ २ ॥ इच्छाणी मिल मंगल गावत, नाटक नाचत सुरकुमरी
री ॥ बाजत ताल मृदंग सुरपधनी, घेना धीन मोचंग बली री ॥
आ० ॥ ३ ॥ इंदु हुकुम कर घरणीइ पठायो, सब वसुधा धन,
धान्य जरी री ॥ कनक रजत मनि पंच धरनके, कुसुम बिखेरत
गलिय गली री ॥ आ० ॥ ४ ॥ जयजयकार जयो जिनशासना
व्याधि व्यथा सबि विपत हरी री ॥ हरख चंद जनम्यो प्रज्जु मेरो,
मनकी आशा सफलफली री ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ देवचंद्रजी कृत स्नात्र पूजा ॥

चतुर्तीसय अतिसय जुज, वचनातिशये जुत्त ॥ सो परमेस्वर
देख जवि, सिंहासण संपत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिंहासण बेग जग
जाण, देखी जविजन गुणमणि खाण ॥ जे दीठे तुज निम्मल
जाण, लहिये परम महोदय गाण ॥ १ ॥ कुसुमांजलि मेलो आ
दिजिनंदा, तोरा चरणकमल चोवीस पूजो रे चोवीस सोजागी चो
वीस बैरागी चोवीसजिनंदा, कुसुमांजलि मेलो आदिजनंदा ॥ १ ॥
(इतना कह कुसुमांजलि चढाई जे चरणोके टीकी दीजे) ॥ गाथा ॥
जोनिअगुण० ऊ रम्यो, तसुअनुजवणत्त ॥ सुहसुगलआरोवता, ज्यो

तिसुरंगनिरत्न ॥ १ ॥ ढाल ॥ जो निज आतमगुल आनंदी, पु
गल संगेजे ह अफंदी ॥ जे परमेसर निजपद लीन, पूजो प्रणमो
ज्य अदीन ॥ १ ॥ कुसुमां० सांतिजिनंदा० तोरा० (एसा कह
गेके टीकी दीजे) ॥ २ ॥ गाथा ॥ निम्मलनांणपयासकर, निम्मलगु
णसंपन्न ॥ निम्मलधम्मवएसकर, सोपरमप्पदधन्न ॥ १ ॥ ढाल ॥
लोकालोका प्रकाशक नांणी, जविजन तारण जेहनो वांणी ॥ पर
मानंदतणी नीसाणी, तसु जगते मुळ मति उदरांणी ॥ १ ॥ कु
सुमांजली मेलो नेम जिनंदा तोरा० ॥ (एसा कह हाथे टीकी दीजे)
३ ॥ गाथा ॥ जेसिझासिझंतिजे, सिझस्तंतिअणंत ॥ तसुआलंबन
उविषमण, सोसेवोअरिहंत ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिवसुख कारण जेह
त्रिकाले, सम परिणामे जगत निहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग दिखा
ले, इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ १ ॥ कुसुमांज० पासजिनंदा
तोरा च० ॥ (एसा कह खांयोके टीकी दीजे) ४ ॥ गाथा ॥ सम्म
दिब्बिसेजय, सादूसादुणीसार ॥ आचारजउवझायमण, जोनिम्मल
आधार ॥ १ ॥ ढाल ॥ चौविह संघे जे मन धारयो, मोक्षतणो
कारण निरधारयो ॥ विवह कुसमवर जात गहेवी, तसु चरणे प्रण
मंत ठवेयी ॥ १ ॥ कुसुमांजलि० वीरजिनंदा तोराच० ॥ (एसा कह
मस्तक टीकी दीजे) ५ ॥ (पोठे स्नात्रिया चमर ले के प्रजुजीकूं
हुलावे) ॥ वस्तु ॥ सयलजिनवर १ नमिय मनरंग, कल्लाणक वि
हि संठविय, करित धम्म सुपवित ॥ सुंदर सय इक सित्तर तित्थंकर
र, इक समय विहरंत म्हायल, चवण समय इगवीस जिण ॥
जम्म समय इगवीस, जत्तहि जावे पूजिया, करो संघ सुज
गीस ॥ ढाल ॥ जव तीजे समकित गुण रम्भा, जिनजकी प्रमुख
गुण परिणम्भा ॥ तजि इंडिय सुख आसंसना, कर ध्यानक वीसनी
सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्रजावता, मन जावना एहवी

ज्ञावता ॥ सब जीव करूं शासन रसी, एसी ज्ञावदया मन उल्ल
 सी ॥ २ ॥ लही परिणाम एहवूं जलूं, निपजावी जिनपद निरम
 लूं ॥ आनबंध विचे इक जव करी, श्रद्धा संवेग ते थिर धरो ॥ ३ ॥
 तिहांथी चवि लहे नरजव उदार, जरते तिम एरवेंतज सार ॥ म
 हाविदेह विजय प्रधान, मऊखंदे अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥
 ॥ दाल ॥ पुण्ये सुपना ए देखे, मनमें हरख विशेषे ॥ गजवर
 उज्जल सुंदर, निरमल वृषज मनोहर ॥ निरभय केसरिसिंह, लख
 सी अतिह अबीह ॥ अनुपम फूलनी माला, निरमल शक्ति सुकमा
 ला ॥ तेज तरणि अति दीपे, इंद्रध्वजा जग जीपे ॥ पूरण कलश
 पकूर, पदम सरोवर पुर ॥ इग्यारमे रयणायर, देखे माताजी गुण
 सायर ॥ बारमे जुवन विमाण, अनुपम रत्ननिधान ॥ अगनशि
 खा निरधूम, देखे माताजी अनोपम ॥ हरखी रायने ज्ञासे, राजा
 अरथ प्रकासे ॥ जगपति जिनवर सुखकर, होस्ये पूत्र मनोहर ॥
 इंद्रादिक जसु नमस्ये, सकल मनोरथ फलस्ये ॥ १ ॥ वस्तु ॥ पुन्य
 उदय २, कृपना जिणताह ॥ माता तव रयणी समे, देख सुपन
 हरखंत जागी ॥ सुपन कही निज कंतने, सुपन अर्थ सांजले
 सो जागी ॥ त्रिजुवन तिलक महागुणी, होस्ये पूत्र निधान इंद्रा
 दिक जसु पाय नमी, करस्ये सिद्ध विधान ॥ १ ॥ दाल ॥
 चंडाजलाकी ॥ सोहमपति आसन कंठियो, देइ अवधे मन आ
 णंदियो ॥ मुऊ आत्म निरमल करण काज, जवजल तारण
 प्रगट्यो जिहाज ॥ १ ॥ जवअरुविय पारग सत्रवाह, केवलता
 णाइय गुण अगाह ॥ सिव साधन गुण अंकूर जेह, कारण जल
 आसाह मेह ॥ २ ॥ हरखे विकसे तव रोमराय, बलयादिकमां
 तनु न माय ॥ सिंहासणथी उठ्यो सुरिंद, प्रणमंतो जिन
 कंद ॥ ३ ॥ सग अरु पय समुदा आवि तव, कर अंजलि

प्रणमिय मञ्ज सत्य ॥ मुख जापे एं कृष्ण आज सार; तिय लोपे
 पहु दोहो उदार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुरलोच देव, विषयानल
 तापितं तनु सखेव ॥ तसु शांतिकरण जलधर समान, मिथ्या
 विष चूरण गरुडवांन ॥ ५ ॥ ते देव जगंत तारण समठ, प्रगट्यो
 तसु प्रणमी हुञं सनत्य ॥ इम जंपी सक्खिबेव करेवि, तव देव
 देवो हरखे सुणेवि ॥ ६ ॥ गावे तवरंजा गीत गांन, सुरलोक हुञं मंग
 लनिधान ॥ नरक्षेत्रे आरज वंस गाम, जिनराज वधे सुर हर्ष घाम ॥
 ॥ ७ ॥ पिता माता घरे उच्चैव अलेख, जिनशासन मंगल अतिविशेष ॥
 सुरपति देवादिक हरष संग, संयम अरथी जनने उमंग ॥ ८ ॥
 शुभ्र वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या इंद्रादिक हर्ष साथ ॥ सुख
 पान्थ्या त्रिभुवन सर्व जोव, वधाइइ थई अतीव ॥ ९ ॥ (एता पढ
 चैत्यवंदन करणा पीठे हाथमें साधिया करणा पीठे कलस पंचामृत
 का लेकर खना रहे ॥) श्रीतीर्थपतिनो कलस मज्जन गरिये सुख
 करे, नरखित मंगल उह विदंरुण जविक मन आधार ॥ तिहां
 राव राणा हरख उच्चैव थयो जग जयकार, दितिकुमर अबधि वि
 शेष जांणी लहो हरख अपार ॥ १ ॥ निय अमर अमरी संग कु
 मरी गावती गुण उंद, जिनजननी पासे आय पहुती गहकंती आ
 णंद ॥ हे माय ते जिनराज जायो सधिव घायो रम्म, अम्ह जम्म
 निम्मल करणे कारण करित सूर्यकम्म ॥ २ ॥ तिहां जूमिसोधन
 दीप दर्पण यांय वीजलधार, तिहां करिय कदली गेह जिनवरं ज
 ननि मज्जशकार ॥ वर राखनी जिन पाण वांधी दिये इम आसी
 स, जुग कोन्निगेनी चिरंजीवो धर्मदोषक ईस ॥ ३ ॥ दाल उला
 लानी ॥ जिन रणजीजी दस दिसि उल्लसिता घरे; मुज लगनेजी
 ज्योतिसचक्र ते संचरे ॥ जिन जनम्यांजी तिण अवसर माताघरे,
 तिण अवसरजी इंद्रासण पिण घरदरे ॥ बूटक ॥ घरदरे आसन इंद्र

चिंते कोन अवसर ए वन्यो, जिन जन्म उद्यवकाल जांणी अतदि
 आणंद ऊपनो ॥ निज सिद्धि संपत हेतु जिनवर जाण जगते ऊ
 मह्यो, विकशंत वदन प्रमोद वधते देवनायक गहगह्यो ॥ १ ॥
 ॥ ढाल ॥ तब सुरपतजी घंटानाद कराव ए, सुरलोकेजी घोषणा एह
 दिराव ए ॥ नरक्षेत्रेजी जिनवर जन्म हुन्न अवे, तसु जगतेजी सुरप
 ति मंदिरगिर गठे ॥ बूट० ॥ गठे मंदिर शिखर ऊपर जुवन जीवन
 जिनतणो, जिन जन्मउद्यव करण कारण आवळ्यो सब सुरगणो ॥
 तुम शुद्ध समकित आस्ये निरमल देव देवी निहालतां, आपणा पा
 तिक सर्व जास्ये नाथ चरण पखालतां ॥ २ ॥ ढाल ॥ इम सांज
 खंजी सुरवर कोनि बहू मिली, जिन वंदनजी मंदिर गिर सांढमी
 चली ॥ सोढमपतिजी जिनजननीघर आविया, जिनमाताजी वंदी
 स्वाभि वधाविया ॥ ब्रू० ॥ वधाविया जिनवर हर्ष बहुले धन्य हूं रु
 तपुन्य ए, त्रैलोक्य नायक देव दीगो मुऊ समो कुण अन्य ए ॥ हे
 जंगत जननी पूत्र तुमचो मेरु मज्जनवर करी, उडंग तुमचे वलिय
 थापित आतमा पुन्ये जरी ॥ ३ ॥ ढाल ॥ सुरनायकजी जिन निज
 करकमले ठव्या, पांच रूपेजी अतिशय महिमायें स्तव्या ॥ नाटक
 विधिजी तब बत्तीस आगलि वहे, सुर कोनिजी जिन दरशणने ऊ
 भेदे ॥ बूट० ॥ सुर कोनकोनी नाचती वलि नाथ सचि गुण गा
 वती, अठपरा कोनी हाथ जोनी हाव जाव दिखावती ॥ जय जयो
 २ तूं जिनराज जगगुरु एम दे आसीस ए, अम त्राण सरण आ
 धार जीवन एक तूं जगदीस ए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ सुरगिरवरजी पां
 मुंकवनमें चिहुं दिसे, गिर शिल परजी सिंहासण सासय वसे ॥
 तिदां आणीजी शेके निज खोले ग्रह्या, चोसठेजी तिदां सुरपति
 आवी रह्या ॥ बूट० आविया सुरपति सर्व जगते कलश श्रेणि व
 णाव ए, सिंदधार्थ पमुदा तीर्थ औषध सर्व वस्तु अणाव ए ॥ अच्यु

यपति तिहां हुकम कीनो देव कोमाकोरुने, जिन मज्जनारथ नीर;
 छणवो सवे सुर करजोरुने ॥ ५ ॥ ढाल ॥ आत्म साधन रसी देव
 कोमी इसी, उल्लसीने धसी खीरसागर दिसी ॥ पञ्चमदह आदि
 दह गंग पमुहा नई, तीर्थजल अमल लेवाजणी ते गई ॥ १ ॥ जाति
 अरु कलश कर सदस अढोचरा, वत्त चामर सिंहासण सुजतरा ॥
 उपगण पुष्प चंगेरी पमुहा सबै, आगमे जालिया तेम आणी ठवे
 ॥ २ ॥ तीर्थजल जरिय करि कलश कर देवता, गावता जावता
 धर्म व्रतति रता ॥ तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम
 सगति शुचि जगति इम जावता ॥ ३ ॥ समकित बीज निज आत्म
 आरोपता, कलश पाणी मिसे जक्तिजल सींचता ॥ मेरुतिहरोवरे
 सर्व आग्या वही, शक्र उछंग जिन देख मन गहगही ॥ ४ ॥ गाथा ॥
 हंद्देवा अणाइकालो अदिष्टपूवो, तियलोयतारणो तियलोयबंधु ॥
 मिञ्चत्तमोदधिदंसणो आणाइतिन्नविणासणो, देवादिदेवोदिद्वो २ दि
 यकामेहिं ॥ १ ॥ ढाल ॥ एम पज्जणंति वण जवण जोईसरा, देव
 वेमाणिया जत्ति धम्मायरा ॥ केविकप्पडिया केविमिताणुगा, केवि
 वररमणे वयणेण अइउठगा ॥ १ ॥ वस्त ॥ तत्थअच्चुयइ इइ आ
 देस, करजोमी सब देवगण लेइ कलस आदेस पामिय ॥ अवत्तुत
 रूप तरूप जुय कवण एह पुछंति सामिय, इइ कदे जगतारणो पा
 रग अम्ह परमेस ॥ नायक दायक धर्मनो करिये तसु अज्जियेस ॥
 ॥ १ ॥ ढाल ॥ पूर्ण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगे
 न्दामे ॥ आतम निरमल जाव करंता, वधते सुज परिणामे ॥ अ
 च्युत्तादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकांत ॥ सामानिक इंशणी
 पमुहा, इम अज्जियेक करंति ॥ १ ॥ पूर्णक० ॥ गाथा ॥ तवईसा
 णसुरिंदो, सकंपज्जणेशकरिसुपसान ॥ तुम्हअंकेमदताउ, त्विणमि
 संअम्हअप्पेद ॥ १ ॥ तासकिंदोपज्जणइ, साहमीयवज्जलम्भिवहुला

हैं ॥ आणाएवनेणं गिएहह होजकयत्थाजो ॥ १ ॥ (कलसे ढाले)
 सोहन सुरपति वृषज रूप करि, न्हवणं करे प्रज्जु अंगे ॥ करिय वि
 लेपने पुष्पमाल गवि, वरं आजरण अन्नंगं ॥ २ ॥ तव सुरवर बहु जयं
 रं कर, नञ्च धरि आणंद ॥ मोक्षमार्ग सारथपति पाम्भो, जाज
 सु हिव जवफंद ॥ ३ ॥ कोम वत्तीस सोवनं उवारी, वाजंते वर
 नाद, सुरपति संघ अमर श्रीप्रज्जुने, जननीने सुप्रसाद ॥ ४ ॥
 आणी थापे एम पयंपे, अहं निसतरिया आज ॥ पुत्र तुम्हारो
 धणी अहंमारो, तारणं तरण जिहाज ॥ ५ ॥ मात जतन कर राख
 ज्यो एहेने, तुम सुत अहं आधार ॥ सुरपति जगते सहित नदीस
 रं, करे जिन जक्ति उदार ॥ ६ ॥ नियं कप्प गंयां सवं निर्जर,
 कहतां प्रज्जु गुण सार ॥ दीक्षा केवलज्ञान कळ्याणक, इछा चित्त
 मजार ॥ ७ ॥ खरतर गछ जिनआणा रंगी, राजसार उवझाय ॥
 ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक, सुगुरुतणे तुपसाय ॥ ८ ॥ देवचंद
 जिन जगते गांयो, जनम महोछव उंद ॥ बोधबीज अंकूरो उल
 स्यो, संघ सकल आणंद ॥ ९ ॥ ढाल ॥ इम पूजा जगते करो,
 आतम हित काज ॥ तजिय विजाव निज जायमा, रमता सिव
 राज ॥ १० ॥ १ ॥ काल अनंते जे हूआ, होस्ये जेद जिणंद ॥
 संपइ सीमंधरं प्रज्जु, केवलनाण दिणंद ॥ १० ॥ २ ॥ जन्ममहोछव
 इण परे, आयक रुचिवंत ॥ विरचे जिनप्रतिमातणो ॥ अनुमोदन
 खंत ॥ १० ॥ ३ ॥ देवचंद जिन पूजना, करतां जव पार ॥ जिन
 प्रतिमा जिनसारखी, कही मुत्र मजार ॥ १० ॥ ४ ॥ इतिआत्रपूजासं०

॥ अय देवचंदर्जकृत अष्टप्रकारी पूजा ॥

प्रथम जल पूजा ॥ विमल केवल ज्ञासन जास्करं, जगत जंतु महो
 दय कारण ॥ जिनवरं बहुमान जलोधेतः, शुचि मनाः स्मरयामि वि
 १५५ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने, अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा

मृत्यु निवारणाय, श्रीमङ्गलनेत्राय जलं यजामहे ॥ १ ॥ बीजं चं-
 दन पूजा ॥ सकल मोहतमिश्र विनाशनं, परम शीतल ज्ञाव युतं
 जिनं ॥ विनय कुंकुम दर्शन चंदनैः, सदृज तत्त्व विकास कृतेर्चयेः ॥
 ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं केसरचंदनं यजामहे ॥ १ ॥ त्रींजी पुष्प पूजा ॥ विक-
 च निर्मल शुद्ध मनोरमे, विशद चेतन ज्ञाव समुज्ज्वलेः ॥ सुप. रणा
 म प्रसून घनैर्नवैः, परम तत्त्व मयं हिय जाभ्यहं ॥ ॐ ह्रीं
 प० पुष्पं यजामहे ॥ १ ॥ चौथी धूप पूजा ॥ सकल कर्म
 मर्द्धन दादनं, विमल संवर ज्ञावसु धूपनं ॥ अशुच पु-
 ञ्जल संग विवर्जनं, जिनपते पुरतोस्तु मुदर्यतः ॥ ४ ॥
 ॐ ह्रीं प० धूपं यजामहे ॥ ४ ॥ पांचमी दीपक पूजा ॥ जविक नि-
 र्मल बोध विकासकं, जिनगृहे शुच दीपक दीपनं ॥ सुगुण राग वि-
 शुद्ध समन्वितं, दधतु ज्ञाव विकास कृतेर्जनाः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं प०
 दीपं यजामहे ॥ ५ ॥ छठी अक्षत पूजा ॥ सकल मंगल फल नि-
 केतनं, परम मंगल ज्ञाव मयं जिनं ॥ अयति ज्ञापयना इति दर्श-
 यन्, दधति नाथ पुरोक्त स्वस्तिकं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं प० ॥ अक्षतं
 यजामहे ॥ सातमी नैवेद्य पूजा ॥ सकल पुञ्जल संग विवर्जनं, स-
 दृज चेतन ज्ञाव विलासकं ॥ सरस ज्ञेजन नव्य निवेदनात्, पर-
 म निर्वृति ज्ञाव महं स्पृहे ॥ ॐ ह्रीं प० नैवेद्यं यजामहे ॥ ७ ॥ आठमी
 फल पूजा ॥ कटुक कर्म विपाक विनाशनं, सरस पक्कफल व्रज लोकनं ॥
 विदित मोक्ष फलस्य प्रज्ञो पुरः, कुरुत सिद्धफलाय महाजना ॥ ८ ॥
 ॐ ह्रीं प० फलं यजामहे । (अर्थ) इति जिनवर वृंदं ज्ञातः पूजयं-
 ति, सकल गुणनिधानं देवचंद्रं स्तुवंति ॥ प्रतिदिवस मनंतं तत्त्व
 मुद्रावयंति, परम सदृज रूपं मोक्षं सौख्यं श्रयंति ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं
 प० अर्थं यजामहे ॥ (वख) शको यथा जिनपतेः सुर शैल चूला,
 सिंहासनो परिमित स्नपनावसाने ॥ दध्यकृते कुसुम चंदनं गंध

धूपैः, कृत्वा च नंतु दधाति सुवस्त्र पूजां ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ५० वस्त्र
यजामहे ॥ इति अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ सत्तरह भेदी पूजाकी विधी ॥

प्रथम स्नात्र करावै पीछे अष्ट प्रकारी पूजा करै फेर रक्तेबीमें कुंकुम दया
केसरका सायिया करै पीछे शुद्ध जलका कलस केसरमिश्रित रुपया १ कलममें
झालै मुखकोस बांध उत्तरासण कर तीन नवकार गुणै तीन बेर नमस्कार कर हाथ
के धूप देकर रक्तेबी हाथमें धौ मन सुद्धकर खड़ा रहे ॥

॥ अथ साधुकीरती मुनी कृत सत्तरह भेदी पुजा प्रारंभ ॥

॥ दूहा ॥ जाव जज्ञे जगवंतनी, पूजा सत्तर प्रकार ॥ पर
सिद्ध कीधी झोपदी, अंग ठहै अधिकार ॥ १ ॥ राग सरपदो ॥ ज्योति
सकल जग जागती, हारे अश्यो जा० सरसति समरि सुजिंद ॥ सत्तर
सुविध पूजातणी, पञ्चलिषु परमानंद ॥ १ ॥ गाढा ॥ न्दवण १ विलेखण
२ वत्पयुगं ३, गंधारुहणं च ४ पुष्करोदणयं ५ ॥ मालारोहण ६ व
न्नयं ७ चुन्न ८, पद्मागय ९ आत्तरणे १० ॥ २ ॥ मालकलासुय
वंसुधरं ११, पुष्पं पगरं च १२ अष्टमंगलयं १३ ॥ धूव ठखेवो १४
गीययं १५, नटं १६ वज्रं १७ तथा जलियं ॥ ३ ॥ सत्तर सुविध
पूजा पवरं, ज्ञाता अंग मज्जार ॥ दुपदमुता झोपदि परै, करियै विधि
विस्तार ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रथम न्दवण पूजा ॥ राग देसाख ॥

पूर्वमुख सावनं, करि दसन पावनं, अद्वत धोती धरी उच्चि
त मानी रे, अश्योउ० ॥ विद्वत मुखकोसके क्षीर गंधोदकै, सुनृतं
मलिकलस कर विविध वांनो ॥ अ० ॥ १ ॥ नमवि जिन पुंगवं,
लोम हस्तेनवं, मार्जनं करिअवा बारिबारि ॥ अ० ॥ जलिय कुत्त
मांजली, कलस विधि मन रखी, नवति जिन इंइ जिम तिम अ
गारी ॥ अ० ॥ २ ॥ दुहा ॥ परमानंद पीधूप रस, न्दवण मुगति
सोपान ॥ धरमरूप तरु सींचवा, जलधर धार समान ॥ १ ॥ पद

ली पूजा साचवै, आवक शुभ परिणाम ॥ शुचि पखाल जिनतनु
 तणे, करइ सुकृत दितकांम ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ पूजा सतर प्र
 कारी, सुण जैनकी पू० ॥ परमानन्द तिण ठळ्योरी सुधारत, तप-
 त बुजिय मेरे तनकी ॥ पू० ॥ १ ॥ प्रज्जुकुं विलोक नमि जतन
 प्रमारजित, करत पखाल सुचि धारविनकी ॥ पू० ॥ न्हवण प्रथ-
 म निज वृजन पुलावत, पंककु वरप जिम धनकी ॥ पू० ॥ २ ॥ तरुणि
 तरणि जवसिंधु तरणकी, मंजरी संपद फल वर धनकी ॥ पू० ॥
 शिवपुर पंथ दिखावन दोपी, धूमरि आपदवेल मरदनकी ॥ पू० ॥
 ॥ ३ ॥ सकल कुशलरंग मिळ्योरी सुमनि संग, जागी सुदिता शुभ
 मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ कहे साधुकीरति सारंगजरकरतां, आत फली
 मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति प्रथम न्हवण पूजा ॥ १ ॥

एता पद पंचामृतमुं न्हवण कीज । डावे पांवके अंगुडे जलधार दीजै ॥

॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥

(सुंदर जंगलएते अंग जिनविबका प्रमानकर केसर सुगंधद्रव्यमिश्रित लेके खडा रहै)
 रामगिरीमें राग ॥ गात्र लूहै जिन मनरंगसुं रे देवा, सखर
 सु धूपित वाससुं ॥ वाससुं हारे देवा वा०, गंध कसापसुं मेलिये
 ॥ गा० ॥ १ ॥ नंदन चंदन चंद मेलिये, हारे देवा नं० ॥ मांहे मृग-
 मद कुंकुम जेलीये, कर लीये हारे दे० क०, रयण पिंगणि कचो-
 लिये ॥ गा० ॥ २ ॥ पग जानु कर खंबे सिरै रे देवा, जाल कंठ उर
 उवरंत रै ॥ डाल हारै हारे देवा सुख करै, तिलक नवे अंग कीजोयै ॥
 गा० ॥ ३ ॥ दूजी पूजा अनुसरै, आवक दूजी पू० ॥ हरि विरचै जिम
 सुरगिरै, तिम करै हारे देवा ति० जिण पर जनमन रंजियै ॥
 ॥ गा० ॥ ४ ॥ राग ललितमें ॥ दूहा ॥ करहु विलेपन सुखतदन,
 श्रीजिनचंद शरीर ॥ तिलक नवे अंग पूजतां, लहे जवोदधि तीर
 ॥ १ ॥ मिटे ताप तसु देहको, परम शक्तिता संग ॥ धित खेद सम
 जपसमें, सुखमें समरसीरंग ॥ २ ॥ राग वैलाउउ ॥ विलेपन कीजै

[illegible]

॥ कर्म कर्मिणः कर्मणः कर्मणः ॥

३ अन्तरं नमः तव देवतायाः तव देवतायाः तव देवतायाः ॥

[illegible]

॥ अर सूर्य हरीरूपीनेरुज ॥

॥ सत्यं कुरु ॥ पुनः श्रुत्वा स्व परैः सुमति वधारण
 कुरति हर्षं हर्षं नरेन्द्र पात ॥ १ ॥ राग
 वेदाः श्रुत्वा चन्द्रनयनः प्रहसन् प्रहसन्, चुरत्त विधि विरचै

वासु ए ॥ हा हो रे देवा कुसुम चूरण चंदन मृगमदा, कंकोलतणो
 अधिवासू ए ॥ हा० ॥ १ ॥ वास दसोदिसि वासतें, पूजे जिन अंग
 उवंगू ए ॥ हा० लाठि जवन अधिवासिया, अनुगामिक सरम अजं
 गू ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग पूर्वीगौरी ॥ भैरै प्रजुजीको पूजा आ-
 नंदमेलै, पू० ॥ वासजवन मोह्यो सखलो ए, संपदा जेलै ॥ पू० ॥
 ॥ १ ॥ सत्तर प्रकारी पूजा, विजय देवा तत्तायेइ ॥ अप्रमित्तगुण
 तोरा, चरण सेवैकि ॥ पू० ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन वासै, पूजिथै जिन
 राजें तत्तायेइ, चतुर गति डुस्क गोरी, चतुर्थी धनकि ॥ ३ ॥ पू० ॥
 इति चतुर्थी वासकेप पूजा ॥ (एता कह चूर्णवास चढावे)

॥ अथ पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ पंचरंग पुष्प उत्तम खे के खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ मन विकसै तिम विकसता, पुढप अनेक प्रकार ॥
 प्रजु पूजा ए पंचमी, पंचमि गति वातार ॥ १ ॥ राग कामोद ॥
 चंपक केतकी मालती ए, अ० ॥ कुंदकिरण मचकुंद ॥ सोवन जाई
 जूहिका, बजलसिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण उवरि धरै ए,
 अ० ॥ मुकुलित कुशम अनेक ॥ सिवरमणीसैं वर वरे, विधि जिन
 पूज विवेक ॥ २ ॥ वि० ॥ इति ॥ राग कानको ॥ सोहे री माई व
 रणें, मन मोहे री माई वरणें ॥ अहो वरणें, विविध कुसुम जिनच
 रणें ॥ सो० ॥ विकसी हसीय जंपै साहिवकुं, राख प्रजु हम तर
 नै ॥ सो० ॥ १ ॥ पांचमी पूजा कुशम मुकुलितकी, कु० ॥ पंच
 विपै हां० पं० दुःख हरणै ॥ सो० ॥ कहे साधुकीरति जगति जग
 वंतकी, जयिक नरां हारे ज० सुख करणें ॥ सो० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ छठी पुष्पमालारोहण पूजा ॥

॥ दूहा ॥ ठगो पूजाए वती, महा सुरजि पुष्पमाल ॥ गुण
 मृथी आपे गलै, जेम ठलै दुख जाल ॥ १ ॥ राग रामगिरी गुज
 रो ॥ नाग पुन्नाग मंदार नवमालिका, मालिकासोम पारिध कली

ए ॥ जला पा० ॥ मरुक दमणक वकुल तिलक वासंतिका, लाल
 गुलाब पानल जिली ए ॥ जलां पा० ॥ १ ॥ जासु मणि मो-
 गरा बेजलां मालती, पंचवरणै गुंथी मालती ए ॥ जलां गुं० ॥ हे
 माल जिनकंठ पीठै ठवी लहलहै, जाणि संताप सब पावती ए ॥
 जलां स० ॥ २ ॥ इति ॥ राग आसावरी ॥ देखी दामा कंठ जिन अधिक
 श्रुतिनंदै, चकोरकुं देखि देखि जिम चंदै ॥ दे० ॥ १ ॥ पंच विधि
 वरण रची कुसमांकी, जैसी रयणा हे जै० बलि सुदमवै ॥ दे० ॥
 ॥ २ ॥ ठही रे तोरपूजा सब भार धूजे ॥ सब अरियण हारे सं०
 होइ तिम उंदै ॥ दे० ॥ १ ॥ कहे साधुकीरत सकल आस्था सुख,
 जविक जगत हारे ज० जे जिन वंदै ॥ दे० ॥ ४ ॥ इति ठही
 तोरपूजा ॥ ६ ॥ (एसा कह फूलमाला प्रचुकुं पहिरावे ॥)

॥ अथ सातमी अंगीरचन पूजा ॥ पांच रंगी फूल केसरों अंगी रचै ॥

॥ दूहा ॥ केतकी घंपक केवला, सोजै तेम सुगात ॥ चाटो
 जिम चढतां दुवै, सातमीवै सुख सात ॥ १ ॥ राग केदारो गौरी ॥
 कुंदकुम चरचित विविध पंच वरणक कुसममुं ए, हारे अ० ॥ कुंद
 गुलाबसुं घंपको दमणको जासमुं ए ॥ १ ॥ सातमी पूजामें अंगी
 अलंकारि, अंग अलंक मित माननी मुगति आलिंगियै ए ॥ २ ॥
 ॥ इति ॥ राग जैरवी ॥ पंचवरणी अंगी रची कुशम जाती, पं० ॥
 कुंद मचकुंद गुलाब सिरामणि, कर करणी सोवन जाती ॥ पं० ॥
 ॥ १ ॥ दमणक मरुक पानल अरविंदो, अंग जुई बेजलयाती ॥
 पारधि चरण क्यार मंदारो, विण पटकूल बनी जाती ॥ पं० ॥
 ॥ २ ॥ सुरनर चित्रर रमण गानी, जैरवी कुगति अत तिवाती ॥
 पं० ॥ ३ ॥ इति सातमी अंगीरचन पूजा ॥

॥ आठवीं देवरी पूजा ॥ अठारवी अठार पूजा अठार मठा ॥

दूहा ॥ अगर मेहरागन मार, सुनती गुना आठमी ॥

गंधवटी घनसार, लावे जिन तनु जावसे ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥
 कुंद किरण शशि ऊजलो जो देवा, पावन घस घनसारो जी ॥
 सुरजि सिखर मृग नाजिनो जी देवा, चुन्नरोदण अधिकारो जी ॥
 ॥ १ ॥ वस्तु सुगंध जब मोरीयो जी देवा, अशुज करम चूरीजै जी ॥
 अंगण सुरतरु मोरीयो जी देवा, तब कुमतीजन खीजै जी ॥ तब
 सुमतीजन रीजै जी ॥ २ ॥ राग सामेरी ॥ पूजो री
 माई जिनवर अंग सुगंधै, जि० पू० ॥ गंधवटी घनसार ऊदारै, गोत्र
 तीर्थकर बांधइ ॥ जलां गो० पू० ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर से-
 छदारस, जावै जिन तनु रागै ॥ धार कपूर जाव घन वरपत, सामेरी
 भति जावै ॥ जलां सा० पू० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ नवमी ध्वज पूजा ॥

॥ वृद्धा ॥ मोहन ध्वज धर मस्तकै, सूदव गीत समूल ॥ दीजै
 तीन प्रदक्षिणा, परसिद्ध नवमी पूज ॥ १ ॥ राग मैयगौरी ॥ वस्तु ॥
 सहस्रजोयणइ, हेममय दंड ॥ युतपताक पंचे वरण, धुमधुमत
 धुग्घरीय बाजै ॥ मृड समीर लहकै गवण, ल० ॥ जाण कुमतिद
 ज संपल जाजै ॥ सुरपति जिम विरचै धजा ए, हां ए वि० ॥ न
 वमी पूज सुरंग ॥ न० ॥ तिण पर श्रावक धज वहन, ति० ॥
 आपै दान अजंग ॥ आ० ॥ १ ॥ राग नटनारायण ॥ जिनराज
 को ध्वज मोहन, ध्वज मोहना रे ध्वज मोहना ॥ जि० ॥ मोहन
 सुगुरु अधिवासीयो, कर पंच सवद त्रि प्रदक्षणा, क० ॥ सधवधू
 सिर सोहना ॥ २ ॥ जि० ॥ जांति वसन पंचवरण धन्यो री,
 विधि कर ध्वजको रोदणा ॥ साधू जणत नवमी पूजा नव, पाप
 नियाणा खोदणा ॥ जि० ॥ २ ॥ इति नवमी पूजा ॥

(॥ ए कही ध्वजा चढाईने ॥ पहली बाजिब बाजनां सयबसी चांदीके थालमें
 धरकर गति ग्यान संयुक्त तीन प्रदक्षणा देकर प्रभु सन्मुख गुरुली कर पना पर गुरु
 पास वाससे कर के प्रभु सन्मुख ध्वजा विस्तार ॥)

॥ अथ दसमी आभरण पूजा ॥

(एक रुपया अथवा मुगटादिक आभरण ले के खड़ा रहे ॥)

॥ दूहा राग केदारमे ॥ दसमी पूजा आज्ञरण, रचना यथाश्र
नेक ॥ सुरपति जिम अंगे रचे, तिम श्रावक सुविवेक ॥ १ ॥ सिर सोहे
जिनवरतणै, रयण मुगट ऊलकंत ॥ तिलक जाल अंगद जुजा, श्रवण
कुंरुल अति जंति ॥ २ ॥ राग अधजास गुंमढहार ॥ आसावरी ॥
पाच पीरोजा नीलू लसणिया, मोती माणैक जाल रसणिबा, हीरा
सोहे रे ॥ धूनी चनी मुल कर केतना, जातिरूप सुजग अंक अं-
जना, मनमोहे रे ॥ १ ॥ मौलि मुगट रयणै जड्यो, काने कुंरुल
हारि अति जुगतै जुड्यो उर हारू रे, मन वारू रे ॥ जाल तिलक
वाहे अंगदा, आज्ञरण दशमी पूजा मुदा सुखकारू रे, डुलहारू
रे ॥ २ ॥ राग केदारो ॥ प्रजु सिर सोहे मुगट मणि रयण जड्यो,
रय० ॥ अंगद बाहु तिलक जालस्थल, यहुनीको कवण घड्यो ॥
॥ प्र० ॥ १ ॥ श्रवण कुंरुल शशि तरुण मंरुल जीपे, सुरतरुतै
अलंकरयो ॥ डुलकेदार चमर सिंहासन, उत्र सिर उवरि धरयो,
अलंकृत उचित वस्यो ॥ प्र० ॥ २ ॥ इति ॥ शोक इत्याज्ञरणादि चढाये ॥

॥ अथ इग्यामी फूलपर पूजा ॥

॥ दूहा ॥ फूलघरो अति सोजतो, फुंदे लहकै फूल ॥ मढके
परिमल फल मढा, इग्यामी पूज अमूल ॥ १ ॥ राग रामगिरी ॥
कोज अंकोल राय बेलि नवमालिका, कुंद मचकुंद वर विच कल
ए ॥ अईयो ० तिलक दमशकदलं मोगरा परिमलं, कोमला पारिध
पामलू ए ॥ हां० अ० ॥ प्रमुख कुसमै रचै त्रिजुवनकूं रुधै, कुश
मगेदे विच तोरणूं ए ॥ हारे अ० ॥ गुच्छ चंडोदयं जूयकाउन्नयं,
जालिका गोख चित्तचोरणूं ए ॥ अ० ॥ २ ॥ राग रामगिरी ॥ मेरो
मन मोह्यो माईरी फूलघर आणंद जिलै, फूल ॥ असत उतत दाम
वधरी मनोहर, देखत तवदी सय उरित खिलै ॥ फूल ॥ १ ॥

कुसुम मंदप शंज गुष्ठ चंदोदय, कोरणी चारु विनाण सजै ॥ इग्या
रमी पूजा वणी हे रामगिरी, विबुध विमान जैसें तिपुरि जजै ॥
॥ १ ॥ फूलमे० ॥ इति इग्यारमी फूलवर पूजा ॥ (फूलघर चढाईजै ॥)
॥ अथ बारमी पुष्पवर्षा पूजा ॥ पंचरंगे फूल अथवा गुलाबजल लेके खड़ा रहे ॥

॥ दूदा ॥ वरपै बारमी पूजमें, कुसुम वादलिया फूल ॥ हर
ण ताप डख लोकको, जानु समा बहुभूल ॥ १ ॥ राग जीम
मढदार करुखेकी जाति ॥ मेघ वरसै जरी पुष्प वादल करी, जानु
परिमाण कर कुसुम पगरं ॥ पंचवरणें वणयो विकच अनुक्रम चिण्यो,
अधोवृंत नही पीर पसरं ॥ मे० ॥ १ ॥ वास मढके मिलै जमर
जमरी जिलै, सरस रसरंग तिण डख निवारी ॥ जिणप आगै करै
सुरप जिम सुख वरै, बारमी पूज तिण पर अगारी ॥ मे० ॥ २ ॥
राग जीममढदार ॥ पुष्प वादलीया वरसै सुसमां, अहो० ॥ यो-
जन अशुचि हर वरस गंधोदक, मनुहर जान समां ॥ पु० ॥ १ ॥
गमन आगमनकी पीर नही तसु, इद जिनको अतिसय सुगुणें ॥
गुंजत २ मधुकर इम पजलै, गुं० ॥ मधुरवचन जिनगुण गुणइ ॥ पु०
॥ २ ॥ कुसुमसुपरि सेवा जो करइ, तसु पीर नही सुमणें, पु० ॥
समवसरण पंच वरण अधोवृंत, विबुध रचै सुमना सुसमा ॥ पु० ॥
॥ ३ ॥ बारमी पूज जविक तिम करै, कुसुम विकस इत उचरै ॥
तसु जीमबंधन अधरा हुवै, जे कराईजे जिन नमें ॥ पु० ॥ ४ ॥
इति बारमी पुष्पवृष्टि पूजा ॥

॥ अथ बारमी अर्घ्यगलीक पूजा ॥ हाथ चढ़ल लेके खड़ा रहे ॥

॥ दूदा ॥ तेरमी पूजा अवसरै, मंगल अष्ट विधान ॥ युवति रचै
सुमति सही, परमानंद निधान ॥ १ ॥ राग वसंत ॥ अतुल विमल
मिदया, अखंर गुणै जिदया, साल रजततथा तंडुला ए ॥ श्रवण
समाजक विध पंच वरणक, चंद्रकिरण जैसा कजला ए ॥ १ ॥
अ० ॥ मेल मंगल लिखै सखल मंगल अखै, जिनप आगै सुधानक

धैरे ए ॥ तेरमी पूजा विधि तेरमी मन मेरे, अष्टमंगल अष्टसिद्ध
करे ए ॥ अ० ॥ १ ॥ राग कल्याण ॥ हां हो पूजा वणी ते रसमें,
रसमें ३ हा हो ते० ॥ दर्पण ज्ञासन नंद्यावर्त पुर्णकुंज, मन्त्रयुग
श्रीवद्य तसुमें ॥ वर्द्धमान स्वस्तिक पूज मंगलकी, आनंद कल्याण
सुखरसमें ॥ १ ॥ पू० ॥ इति तेरमी पूजा ॥

॥ अथ चवदमी धूप पूजा धूप लेके खड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ गंधवटी मृगमद अंगर, सेढ्हारस घनसार ॥ कर
प्रजु आगल धूपणा, चवदमी अरचा चार ॥ १ ॥ राग वेलावल ॥
कुंप्पांगर कपूर चूर, सोगंध पंचेपूर ॥ कुदरुक्क सेढ्हारस सार, गंध
वटी घनसार ॥ १ ॥ गंधवटी घनसार चंदन, मृगमदारस जेलियै,
श्रीवास धूप दसांग अंबर, सुरजि बहु द्रव्य मेलियै ॥ घेरलिय दम
कनक मंजित धूपधाणो कर धरे, जववृत्ति धूप करति जोग रोग
सांग अशुज हरे ॥ १ ॥ राग मालवी गोन्दी ॥ सब अरति मयन
सुंदार धूप, करति गंध रसाल रे, देवाक० ॥ घामधूमावलिध धूसर,
कलुष पातक गाल रे, देवा क० ॥ १ ॥ उर्ध्वगत सूचंत जविकुं, म
धैमधे करनाल रे ॥ चवदमी वामांग पूजा, दीये रखण बिसाल रे ॥
आरती मंगल माल रे, मालवीगोन्दी ताल रे ॥ स० ॥ २ ॥ इति
चवदमी धूप पूजा ॥ (एसा पढके धूप लेव ॥

॥ अथ पनरमी गीतज्ञान पूजा ॥

॥ दूहा ॥ कंठ जलै आलापकर, गावो जिनगुन गीत ॥
जावो अथकी जावना, पनरमी पूजा प्रीत ॥ १ ॥ श्रीरागमें
आर्या ॥ पददन्त केवलमन्त, फलमस्ति जैनगुण गानं ॥ गुण
वर्ण तान वाद्ये, मात्रा ज्ञापयैयुक्त ॥ १ ॥ सप्त स्वर संगीति,
जयतादि ताव करणेश, चंचुर चारोचारी गीतं गानं सुगीतं
राग श्रीराग ॥ जिनगुन गान श्रुत अमृतं, तार मंडादि अ
नन, केवल जिव त्रिष फल अमृतं ॥ जि० ॥ १ ॥ निगुण

कुमार कुमरी आलापै, मुरज धपंग नाद जनितं ॥ जि० ॥ पाठ प्र
धंध धूयो प्रतिमानं, आवति गंद सुरति सुमतं ॥ जि० ॥ २ ॥ सबद
समान रूप्यो त्रिजुवनकुं, सुरनर गावे जिन चरितं ॥ सप्त स्वर
मोन शिव श्रीगीतं, पनरमो पूज हरै छरितं रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पू ॥

॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥ (कुमार कुमरी नाटिक करै ॥)

॥ दूहा ॥ करजोनी नाटिक करै, सऊ सुंदर सिणगार ॥
जवनाटिक ते नहि जमै, सोलमी पूजा सार ॥ १ ॥ राग शुद्धनट्ट
काव्यं ॥ ज्ञावादिप्पवणा सुचारु धरणा संपुन्न चंदानना, सपिम्मा
सम रुव वेस वयसो मलैज कुंजस्थणा ॥ लावणा सगुणा पिकस्त
रवई रागाईआ लावणा, कुम्भारी कुमरावी जौन पुरठ नचंति सिं
गारणा ॥ १ ॥ गद्यं ॥ तएणंते अहसयं कुमारिकुमरीउ सूरियाजे
एंदेवेणं संदिहा रंगमंवेपविहा जिणनमंता गायंता वायंता नचंति
॥ २ ॥ राग नट्ट त्रिगुण ॥ नाचंती कुमार कुमरी, झागन्दि तत्तायेइ
॥ अ० ॥ झागन्दि २ क. थौगिशन, मुखेतत्तायेईय ॥ अ० ॥ ना० ॥ वे
णु वीणा मुरज बाजै, सोलही सिणगार साजै ॥ तनन्नन्ननेईय ॥
अईयो० ॥ घणण घणण घणणण घुग्घरु घमके, रणसससससेईय ॥
॥ अईयो० ॥ २ ॥ ना० ॥ कसंती कंचुकि तरुणी, मंजरी जेकार क
रणी ॥ सोजंती कुमरीय ॥ अईयो० इस्तकं हावादिजावै, वदन्ती
जमरीय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ३ ॥ सोलमो नाटिकतणी, सूरयाजे
रावन्न कीनी ॥ सुगंध तत्तेईय ॥ अ० ॥ जिनप जगतं जविक
लोणा, आणंद तत्तेईय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ४ ॥ इति सोलमी पूजा ॥

॥ अथ सतरमी वाजित्र पूजा ॥

॥ दूहा ॥ ततवन सुखिरै आनधै, वाजित्र चौविव वाय ॥
जगत जली जगवंतनी, सतरमिये सुखदाय ॥ १ ॥ गाहा ॥ सुर
मदल कंतालो, महुयर मदल सुवङ्गए पणवो ॥ सुरनारि नंद तुरे,
पद्मणइ तूं नंद जिणनाद ॥ २ ॥ राग मधुमावरी ॥ तूं नन्दिआ

न्द बोधत नंदी, चरणकमल जसु जगत्रय वंदी ॥ तूं० ॥ ज्ञान निर्म
ल वावन मुखेवेदी, तिलक बोलै रंग अतदि आन्दी ॥ तूं० ॥ १ ॥
जेरी गयण वाजंती कुमति ताजंती, सेवे जैन जैणावंती ॥ जैन
शासन जयवंत नंदंती, उदयसिंघ परपरिय वदंती ॥ तूं० ॥ २ ॥
सेव जविक मधुमाधव फेरी, जवनी फेरी नप्पजणंती ॥ कहै
साधु सतरमी पूज वाजित्र सब, मंगल मधुर धुनि कर कहंती ॥
तूं० ॥ ३ ॥ इति सतरमी पूजा ॥

॥ अथ कलश पूजा ॥ राग गन्धासिरी ॥

॥ जवि तूं जण गुण जिनके सब दिन, तेज तरण मुखराजै
॥ ते० ॥ कवित शतक आठ थुणत शक्रस्तव, थुय रंगे हम वाजै
॥ जवि० ॥ १ ॥ अणदलपुर शांति शिवसुख दाइ, नवनिधि ति
ह आवाजै ॥ सतर सुपूज सुविध आवककी, जणी में जगति हि
त काजै ॥ जवि० ॥ २ ॥ श्रीजिनचंड सूरि खरतर पति, धरम
वचन तसु राजै ॥ संवत सोल अठार आवण धुर, पंचमि दिवस
समाजै ॥ ज० ॥ ३ ॥ दयाकलश गुरु अमर माणिक्यवर, तासु
पसायै सुविध हुय गाजै, कहै साधुकीरत करत जिन संस्तव, सब
लीला सुख साजै ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति सतर जेदी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ आरती करण विधि तथा आरती ॥

॥ पूजा भये पीछे बस्त्र पहरकर उत्तरासण करके तिलक करके रकेंपीमें
स्वस्तिक चावल सुपारी परकर दक्षिणावर्त्तसें आरती करै ॥

॥ अथ आरती लि० ॥ जै जै आरति शांति तुमारी, तोरा
चरणकमलकी में जात्रं बलिहारी ॥ जै जै० ॥ १ ॥ विश्वसेन अचिराजी
केनंदा, शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ जै० ॥ २ ॥ चालीस धनुष
सोवनमें काया, भृग खंठन प्रभु चरण सुहाया ॥ जै० ॥ ३ ॥ च
क्रवर्त्ति प्रभु पंचम सोदे, सोलम जिनवर जग सहु मोदे ॥ जै०
॥ ॥ मंगल आरती जोराहि कीजै, जन्म२ को लादो लीजै ॥

जै० ॥ ५ ॥ करजोमी सेवक गुण गावै, सो नर नारी अमरपदः
पावै ॥ जै० ॥ ६ ॥ इति श्रीआरती संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपदको पूजामें जो अवस्य चीज चाहिये उसकी याददास्ती ॥

॥ पंचामृत दूध दही घृत मिथी जल केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकुं मोली
छूटेफूल फूलोकीमाला फूलोकाचंद्रवा धूप धावल गहूं चणोकीदाल मूंग उडद
नव प्रकारका नैवेद्य नवतरेका फल नव प्रकारकी पक्काअ खजली मिथी पतासा
ओला बगैरे अंगदूहणो के वास्ते स्वेतवस्त्र धाससेप गुलाबजल अत्तर नारेल इग्यारे
नवनालीकेकलस ॥ १ ॥ रकेवी तसला आरसी मंगलदीपक घी अंगीसमोसरण याप
नामैं रोकनाया रु?) ज्ञानपूजा नारेल समेत ॥ विशेष विधि गुरुमुखसैं जाणनी ॥

॥ अथ सिद्धचक्रजीकी वडी पूजा लिख्यते ॥

॥ अथ प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ परम मंत्र प्रणमी करो, तास धरी नर ध्यान ॥
अरिहंतपद पूजा करो, निज शक्ति प्रमाण ॥ १ ॥ काव्य ॥ ० पपन्न
सन्नाण महोमयाणं, सप्पामि हेरा सणसंविद्याणं ॥ सहेसणाणं
दिय सङ्गाणां, नमो श होठ सयाजिणाणं ॥ १ ॥ नमो नंत संत
प्रमोद प्रदानं, प्रधानाय ज्ञव्यात्मने ज्ञास्वताय ॥ धया जेहना
ध्यानथो सौरयज्ञाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रोपाखराजा ॥ २ ॥ क
रथा कर्म डुममर्म चक्रचूर जेणें, जल ज्ञव्य नवपद ध्यानेन तेणें
॥ करी पूजना ज्ञव्य जावे त्रिकावे, सदा वासियो आतमा तेण
फालै ॥ ३ ॥ जिके तीर्थकर कर्म उदये करीनै, दिषे देसना ज्ञव्य
ने हित धरीनै ॥ सदा आठ महापाणिहारे समेता, सुरेसैं नरेसैं स्त
व्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ करथा धातिया कर्म च्यारे अलग्गा, ज्ञवोप
ग्रही च्यार ठे जे विलग्गा ॥ जगत्पंचकलयाणके मुख पांमै, नमो
तेह तीर्थकरा मोक्षरामै ॥ ५ ॥ ढाल ॥ तीरथपति अरिहा नमुं,
धरम धुरंधर धीरो जी ॥ देसना अमृत वरसता, निज वीरज वर
वीरो जी ॥ तो० ॥ वल्लालो ॥ वर अखय निर्मल ज्ञान ज्ञासन सर्व
ज्ञाव प्रकासता, निज शुद्ध अक्ष आत्म जावे चरण धिरता वास

ता ॥ जिन नांमकर्म प्रज्ञाव अतिसय प्रातिहारज सोजता, जगजंतु
 करुणावंत जगवंत जयिकजनने थोजता ॥ ६ ॥ ढाल ॥ श्री सी
 मंथर साद्विष आगे ॥ ए देसी ॥ तीजे जव वर थानक तप कर, जि
 न धांधुं जिननाम ॥ चउसठ इंदै पूजित जे जिन, कीजे तास प्र
 णाम रे जयिका सिद्धचक्र पद वंदो रे ॥ ज० ॥ जिम चिरकालै न
 दो रे ॥ ज० ॥ उपशमरसनो कंदो रे ॥ ज० ॥ रत्नत्रयीनो वंदो रे
 ॥ ज० ॥ सेवै सुरनर इंदो रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ७ ॥ ए आंकणी ॥ जे
 हने होय कळ्याणक दिवसे, नरके पिण उजवाळूं ॥ सकल अवि
 क गुण अतिशयधारी, तेजिन नमि अथ टाळूं रे ॥ ज० ॥ सि० ॥
 ८ ॥ जे तिहुं नाण सम्मग्न ऊपन्ना, जोग करम खिण जांणी ॥ लेइ
 दीक्षा सिद्धा दिये जगने, ते नमिये जिन नाणी रे ॥ ज० ॥ सि० ॥
 ९ ॥ महागोप महामाहण कहिये, निर्यामिक सत्यवाह ॥ उप
 मा एहवी जेहने गजै, ते जिन नमिये उच्चाह रे ॥ ज० ॥ सि० ॥
 १० ॥ आव प्रातीहारज जसु गजै, पैंत्रीस गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिबो
 धिं करे जगजनने, ते जिन नमिये उच्चाह रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ११ ॥
 ॥ ढाल ॥ अरिहंतपद ध्यातो थको, दबह गुण पर्यायै रे ॥ जेद छेद
 करी आत्मा, अरिहंतरूपी थायै रे ॥ १२ ॥ वीर जिणेसर उपदिसै, तां
 जलज्यो चित लाई रे ॥ आतम ध्याने आतमा, रुद्धि मिले सब
 आई रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ वैं हूं श्री परमात्मने, अनंतानंत ज्ञान
 शक्तये ॥ जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमत्सिद्धचक्राय अष्टाङ्ग
 यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी, कीजे दिल खुसियाळ ॥ अ
 शुभ करम दूर टले, फलै मनोरथ माल ॥ १ ॥ काव्य ॥ सिद्धाण
 माणंद रमालयाणं, नमोऽशंत चक्रयाणं ॥ सम्मग्न कम्मक्खपका

રંગાણં, જન્મંજરા હુસ્ક નિવારણાણં ॥ ૧૪ ॥ કરી આઠં કર્મ સ્વયં
 પાર પાંખ્યા, જરા જન્મ મરણાદિ જય જેણ વામ્યા ॥ નિરાવરણ
 જે આત્મરૂપે પ્રસિદ્ધા, થયા પાર પાંમી સદા સિદ્ધુદ્ધા ॥ ૧૫ ॥ ત્રિ
 જ્ઞાગોનેદેહાવગાદાત્મદેસા, રહ્યાજ્ઞાનમયજાતિવર્ણાદિલેસા ॥ સદાનંત
 સૌખ્યાશ્રિતાજ્યોતિરૂપા, અનાવાધઅપુનર્જવાદિસ્વરૂપા ॥ ૧૬ ॥
 ॥ ચાલ ॥ સકલ કર્મમલ ક્ષય કરી, પૂરણ શુદ્ધ સ્વરૂપો જી ॥ અ
 વ્યાવાધ પ્રજ્ઞતામર્ફ, આતમ સંપત જૂપો જી ॥ બહ્વાલો ॥ જે જૂપ
 આતમ સદ્જ સંપતિ, શક્તિ વ્યક્તિપણે કરી ॥ સ્વદ્વ્યક્ષેત્ર સ્વકા
 લજ્ઞાવૈ, ગુણ અનંતા આદરી ॥ સ્વસ્વજ્ઞાવ ગુણપર્યાય પરણતિ, સિ
 દ્ધસાધન પરજ્ઞણી, મુનિરાજ માનસરદંસ સમવન, નમો સિદ્ધ મહા
 ગુણી ॥ ૧૭ ॥ ઢાલ ॥ સમપપણસંતર અણફરસી, ચરમ તિજાગ
 વિસેસ ॥ અથગાદન લહી જે શિવ પુદ્ધતા, સિદ્ધ નમો તે અસેસ રે
 ॥ ૧૮ ॥ જ૦ ॥ પૂરવ પ્રયોગને ગતિ પરણામે, વંધન હેદ અસંગ
 ॥ સમય એક ઠરથગતિ જેદની, તે સિદ્ધ પ્રણમો રંગ રે ॥ જ૦ ॥
 ॥ ૧૯ ॥ સિ૦ ॥ નિરમલ સિદ્ધસિદ્ધાને કુપર, જોયણ એક લો
 કંત ॥ સાદિ અનંત તિદાં થિતિ જેદની, તે સિદ્ધ પ્રણમો સંત રે ॥
 ॥ ૨૦ ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ જાણે પિણ ન સર્કે કહી પુર ગુણ, પ્રાકૃત તિમ
 ગુણ જાસ ॥ ટપમા વિણ નાંણી જવમાંદે, તે સિદ્ધ વિન્ન બહ્વાસ
 રે ॥ જ૦ ॥ ૨૦ ॥ સિ૦ ॥ જ્યોતિસું જ્યોતિ મિલી જનુ અનુપમ,
 વિરમી સકલ ઝપાધિ ॥ આતમરામ રમાપતિ સમરો, તે સિદ્ધ સ
 દ્ધજ સમાધિ રે ॥ જ૦ ॥ ૨૧ ॥ સિ૦ ॥ ઢાલ ॥ રૂપાતીત સ્વજ્ઞાવ
 જે, કેવલદંસણનાણી રે ॥ તે ધ્યાતા નિજ આતમા, હોય સિદ્ધ ગુ
 ણ સ્વાણો રે ॥ વી૦ ॥ ૨૨ ॥ ઝ૦ ॥ હ્રી૦ ॥ ઇતિ શ્રીસિદ્ધપદ પૂજા ॥

॥ અથ તૃતીય આચાર્યપદ પૂજા ॥

॥ દૂહા ॥ દિવ આચારજ પદતણી, પૂજા કરો વિશેષ ॥ મો

इतिमर दूरै हरै, सूरै जाव असेप ॥ १ ॥ काव्य ॥ सूरिणदूरीकय
 कुगहाणं, नमो२सरिसमप्पहाणं ॥ सदेसणा दाणसमायराणं, अ
 स्कंठत्तीसगुणायराणं ॥ नमूं सूरिराजा सदा तत्वताजा, जिनेज्जग
 में प्रौढ साम्राज्यजाजा ॥ पट्यर्गवर्गित गुणै शोचमाना, पंचाचारने पा
 लवे सावधाना ॥ २॥ जविप्राणिने देशना देशकालै, सदाअप्रमत्ता यथा
 सूत्र आलै ॥ जिके सासनाधार दिग्दंतकळ्या, जगत्ते चिरंजीवज्यो
 शुद्धजळ्या ॥ ३ ॥ ढाल ॥ आचारज मुनिपति गणी, गुणवत्तीसे
 धामो जी ॥ चिदानंदरसस्वादता, परजावे निक्कामो जी उल्लाखो
 ॥ निक्काम निरमल शुद्ध चिदघन, साध्य निज निरधारथी ॥ वर
 ज्ञान दरसन चरण वोरज, साधना व्यापारथी ॥ जविजीवबोधक
 तत्वसोधक, सयलगुण संपतिधरा ॥ संवर समाधी गत ऊपाधी, उ
 विधत पगुण आदरा ॥ २५ ॥ ढाल ॥ पांच आचार जे सूघा पाळै,
 मारग जाखै साचौ ॥ ते आचारज नमिये तेहसुं, प्रेम करीने या
 चो रे ॥ ज० ॥ २६ ॥ सि० ॥ वर वत्तीसगुणैकरि सोजै, युगप्रधान
 जगबोहै ॥ जगमोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमूं ते जोहे रे ॥
 ज० ॥ २७ ॥ सि० ॥ नित अप्रमत्त धरम उवाण्ते, नहि विकथा
 न कपाय ॥ जेहने ते आचारज नमियै, अकलुस अमल अमाय रे
 ज० ॥ २८ ॥ सि० ॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पक्किचो
 यण वलि जनने ॥ पटधारी गच्छुंज आचारज, ते मान्या मुनिम
 ने रे ॥ ज० ॥ २९ ॥ सि० ॥ अत्थमिये जिन सूरज केवल, वंदी
 ते जगदीयो ॥ जुवन पदारथ प्रगटनपटुते, आचारज चिरंजीवो
 ॥ ज० ॥ ३० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ध्याता आचारज जला, महामं
 शुज ध्यानी रे ॥ पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज हुय प्राणी रे
 वी० ॥ ३१ ॥ उँ ह्रीं आचार्यपदे अष्ट ङ्गं यजामहे स्वाहा ३

॥ अथ चौथी पाठरूपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ गुण अनेक जग जेहना, सुंदर शोजित गात्र ॥

उवझायापद अरचिये, अनुजवरसनो पात्र ॥ १ ॥ काव्य ॥ सुतस्थ
 वित्थारणतप्पराणं, नमो२वायगकुंजराणं ॥ गणस्तसंधारणसायरा
 णं, सवप्पणावज्जियमञ्जराणं ॥ १ ॥ नदी मूरि पिण सूरिगुणने सु
 द्वाया, नमूं वाचकात्यक्त मदमोहमाया ॥ वलि द्वादशांगादि सूत्रार्थदा
 ने, जिके सावधाने निरुद्धाजिधाने ॥ २ ॥ धरै पंचनेवर्गवर्गितगु
 णौघा, प्रवादिद्विपोछेदनेतुल्यसिंघा ॥ गुणीगच्छसंधारणेस्थंजपूता,
 उपाध्यायतेवंदियेचित्प्रज्जता ॥ ३ ॥ ढाल ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ,
 अज्जव मद्धवजुत्ताजी ॥ सच्चंसोयंश्रकिंचणा, तवसंयमगुणरत्ताजी ॥
 उल्लालो ॥ जे रम्या ब्रह्मसुगुसगुसा, सुमति सुमता गुजधरा ॥ स्या
 द्वादवादं तत्वसाधक, आत्मपरविजंजनकरा ॥ जवजीरुसाधनधी
 रसासन, वहनधोरीमुनिवरा ॥ सिद्धांतवायनदानसमरथ, नमोपाठ
 कपदधरा ॥ ३३ ॥ ढाल ॥ द्वादशअंगसिंहाय करे जे, पारगधारग
 तास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रतिक ते, नमो उवझाय उल्लास रे ॥
 ज० ॥ ३४ ॥ सि० ॥ अर्थसूत्रने दानविज्ञाने, आचारज उवझाय ॥
 जवत्रिण्डै जे लहै शिवतपद, नमिथै ते सुपसायरे ॥ ज० ॥ ३५ ॥ सि०
 ॥ मुखशिष्यनीपायेजेप्रभु, पादणने पद्धवआणै ॥ ते उवझाय स
 कलजन पूजित, सूत्रअर्थ सविजाणै रे ॥ ज० ॥ ३६ ॥ सि० ॥ रा
 जकुमर सरिखा गणार्चितक, आचारजपद योग, ते उवझाय सदा ते
 नमतां, नावै जवजय सोग रे ॥ ज० ॥ ३७ ॥ सि० ॥ वावनाचंद
 नरस समवयणै, अहितताप सवि टालै ॥ ते उवझाय नमिजे जे
 वलि, जिनशासन उजवाले रे ॥ ज० ॥ ३८ ॥ सि० ॥ ढाल ॥
 तपसिंहायै रत सदा, द्वादस अंगनो घ्याता रे ॥ उपाध्याय ते
 आतमा, जगबंधव जगत्राता रे ॥ वी० ॥ ३९ ॥ वैं ह्रीं श्रीपा
 ठकपदे अष्ट इव्यं यजामहेस्वाहा ॥ इति चतुर्थी पूजा ॥

॥ अथ पांचमी साधूपद पूजा ॥

॥ दूदा ॥ मोहमारग साधनजणी, सावधान थया जेह ॥

ते मुनिवरपद वंदता, निरमल थाये देह ॥१॥ काव्य ॥ सांढूणें सैं
 साहियसंजमाणं, नमो२ शुद्धदयादमाणं ॥ तिगुतगुत्ताणसमाहियाणं,
 मुणीणमाणंदपयवियाणं ॥ करेसेवनासूरिवायगगणीनी, करूंवर्णना
 तेइनीसीमुणीनी ॥ समेतासदापंचसमतेत्रिगुता, त्रिगुतैनहकाम
 जोगेपुलिता ॥ ४१ ॥ बलोवाह्यअच्यंतैरैग्रंथटाली, हुईमुक्तिनेयो
 गचारित्रपाली शुजष्टांगयोगैरमैचित्तवाली, नमुं साधुने तेह निज पा
 प टाली ॥ ४२ ॥ ढाल ॥ सकल विषयविष वारिनें, निका
 मो निस्संगी जी ॥ जवदव ताप समावता, आतम साधन रंगी
 जी ॥ ४३ ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा,
 काजसगमुझा धीर आसन ध्यान अज्यासी सदा ॥ तप तैज दीपै
 कर्म जीपै नैव ठीपै परजणी ॥ मुनिराज करुणा सिंधु त्रिजुवन प्र
 णमो हितजणी ॥ ४४ ॥ ढाल ॥ जिम तरुफूजै जमरो वेस, पीना
 तसु न उपाय ॥ लेई रस आतम संतोपे, तिम मुनि गोचरी जाय
 रे ॥ ४५ ॥ ४४ ॥ सि० ॥ पांचंडीनें जे नित जीपे, पटकाया बंधु
 प्रतिपाल ॥ संजम सतर प्रकार आराधै, बंदू दीनदयाल रे ॥ ४६ ॥
 ४५ ॥ सि० ॥ अठारसहस सीलंगना धोरी, अचल आचार च
 रित्र ॥ मुनिमहत जयणायुत बंदी, कीजै जनम पवित्र रे ॥ ४७ ॥
 सि० ॥ ४६ ॥ नवविघ्न ब्रह्मगुत जे पाले, वारे विध तपसूरा ॥ ए
 हवा मुनि नमियै जो प्रगटै, पूरव पुन्य अंकूरा रे ॥ ४८ ॥ ४७ ॥
 सि० ॥ सोनातणी पर परीक्षा दीसै, दिन२ चढतै वानै ॥ संजम
 खप करता मुनि नमियै, देसकाख अनुमानै रे ॥ ४९ ॥ ४८ ॥ सि०
 ढाल ॥ अग्रमत्त जे नित रदै, नवि दरपै नवि सोचै रे ॥ साधु मु
 या ते आतमा, स्युं मुंमै स्युं लोचै रे ॥ ५० ॥ ४९ ॥ ४९ ॥ ४९ ॥
 साधुपंद थप ह्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ छंदी दर्शनार्थ पूजा विधानं ॥

॥ दूहा ॥ जिनवर जावित शुद्ध नर, तत्वद्वारी पालीन ॥

ते सम्यग्दर्शन सदा, आदरियै शुभ रीत ॥ १ ॥ काव्य ॥ जिणु
 पततेरुइलस्कास्त, नमो२ निम्मलवंसणस्त ॥ मिच्छतनासाइतमु
 गमस्त, मूलस्तसधम्ममहाउमस्त ॥ विपर्यासहोवासनारूपमिच्छा,
 टलेजेअनादीअवैजेकुपय्या ॥ जिनोकैदुइंसदजथीशुद्धध्यानं, कहि
 यैदर्शनंतेहपरमंनिधानं॥५०॥विनाजेइथीज्ञानमज्ञानरूपं, चरित्रंवि
 चित्रंजवारणयकूपं॥प्रकृतिसातनेउपसमैक्यतेहहोवे, तिहांआपरूपैस
 वाआपजोवै॥५१॥ढाल॥सम्यग् दर्सण गुण नमो, तत्त्व प्रतीत सरू
 पी जी॥जसु निरधार स्वजाव वै, चेतन गुण जे अरूपी जी॥ चाल ॥
 नेअनूप अद्वा धर्म प्रगटै सयल पर ईहा टले, निज शुद्ध सत्ता जाव प्रग
 ट अनुजव करुणा उछलै॥अदुमानं परणितवस्तु तत्त्वे अइव सुखकारण
 णै, निज साध्य दृष्टै सरव करणी तत्त्वता संपत्ति गिणै॥५२॥ढाल॥शुद्ध
 व गुरु धर्म परीक्षा, सद्वहणा परिणाम॥जेइ पांमीजै तेह नमीजै,
 सम्यग्दर्शन नाम रे॥ ज० ॥ ५३ ॥ ति० ॥ मल उपशम कय उ
 शम जेइथी, जे होइ त्रिविध अजंग ॥ सम्यग्दर्शन तेह नमीजै,
 तनधरमै दृढ रंग रे ॥ ज० ॥ ५४ ॥ ति० ॥ पांच वार उपश
 लहीजै, कयउपसमीप असंख ॥ एक वार कायक ते सम्यक्,
 र्शन नमीइ असंख रे ॥ ज० ॥ ५५ ॥ ति० ॥ जे विण नाण प्र
 ण न होवे, चारित्रतरु नवि फलियो ॥ सुख निरवाण न जे
 ण लहिये, समकित दरसन बलिष्ठ रे ॥ ज० ॥ ५६ ॥ ति० ॥
 नसव बोले जे अलंकरियो, ज्ञान चारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्श
 ते नित प्रणमूं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ ज० ॥ ५७ ॥ ति० ॥
 ढाल ॥ समसंवेगादिक गुण, खयउपसम जे आवै रे ॥ दर्शन ते
 न आतमा, स्युं होय नाम घरावै रे ॥ वी० ॥ ५८ ॥ छं छं
 दर्शनपदे अष्ट इयं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ ७ मी ज्ञानपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सतम पद श्रीज्ञाननो, सिद्धचक्र तपमाद ॥ आ

राधीजै शुभे मनै, दिन२ अधिक उछाहं ॥ १ ॥ कार्य ॥ अत्राण
 सम्मोदतमोदरस्त, नमो२ नाण दिवायरस्त ॥ पंचप्पधारस्सुवगा
 रगस्त, सत्ताणसवत्थपयासगस्त ॥ दोइजेइथीज्ञानगुह्यप्रबोधै, यथा
 वर्णनासैविचित्राविबोधै ॥ तिणैजाणीयेवस्तुपट्ठव्यज्ञावा, नदोवै
 विकटानिजेछास्वज्ञावा ॥ ५९ ॥ दोइपंचमत्यादिसुग्यानजेदे, गुरु
 पासथीयोग्यतातेहवेदइ ॥ वलीइयेदेयाउपादेयरूपै, लहैविचमांजे
 मध्यानेप्रदीपै ॥ ६० ॥ ढाल ॥ जठय नमो गुण ज्ञानने, स्वपरप्र
 काशक ज्ञावै जी ॥ परयाय धरम अनंतता, जेदाजेव स्वज्ञावै जी
 ॥ चाल ॥ जे मोक्ष परणति सकल ज्ञापक बोधवात्त विलासता,
 मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्धसाधन लंठना ॥ स्याद्वावर्त
 गी तत्त्वरंगी प्रथम जेव अजेवता, सवि कळप ने अविकळप वस्तु
 सकल संसय छेदता ॥ ६१ ॥ ढाल ॥ जक अजक न जे विण ल
 हिये, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे विन लहिये, ज्ञान
 ते सकल आधार रे ॥ ज० ॥ ६२ ॥ सि० ॥ प्रथम ज्ञान ने पीठे अहिंता,
 श्रीसिद्धातै ज्ञाख्युं ॥ ज्ञानने वंदो ज्ञानम निंदो, ज्ञानीये सिवसुख चा
 ख्युं रे ॥ ज० ॥ ६३ ॥ सि० ॥ सकल क्रियानुं मूल ते श्रय्या, तेहनूं मूल
 जे कहिये ॥ तेह ज्ञान नितश्च वंदीजे, ते विन कहो किम रहिये
 रे ॥ ज० ॥ ६४ ॥ सि० ॥ पांचज्ञानमांहे जेइ सदागम, स्वपरप्रकाश
 क तेह ॥ दीपकपर त्रिजुवन उपगारी, बलि जिम रवि शशि मेह
 रे ॥ ज० ॥ ६५ ॥ सि० ॥ लोक ऊरय अथ तिर्यग्ज्योतिष, पैमानि
 क ने सिद्ध ॥ लोक अलोक प्रगट सब जेदयी, ते ज्ञाने मुऊ गुडी
 रे ॥ ज० ॥ ६६ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ज्ञानावरणी जे कर्म वै, रूप
 उपशम तमु थाये रे ॥ तो दोइ एदिज आतमा, ज्ञान अयोधता
 जाये रे ॥ वी० ॥ ६७ ॥ नै ह्रीं प० ज्ञानपदे अष्ट द्वायं यजा
 महे स्वादा ॥ इति ॥

॥ अथ आठवीं चारित्रपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अष्टम पद चारित्रनो, पूजो धरी ऊमेद ॥ पूजत
 अनुत्तरस मिले, पातक दोष उठेद ॥ १ ॥ काव्यं ॥ आराधिया
 खं, अस्तक्रियस्त, नमोऽसंजमवीर्यस्त ॥ सप्तावणासंगविवद्विअ
 स्त, निवाणदाणाइसमुक्कयस्त ॥ बलिज्ञानफलतेवरियेसुरंगे, निरा
 संसताघाररोधेप्रसंगै ॥ जवांजोधिसंतारणेयानतुल्यं, धरंतेदचारित्र
 अप्राप्तमध्यं ॥ ६७ ॥ होइजासमहिमाअकोरंकराजा, बलिदावशां
 गोत्रणीदोइताजा ॥ बलिपापरूपोपिनिष्पापथायै, अईसिद्धतेकर्मने
 पारजायै ॥ ६८ ॥ चाल ॥ चारित्रगुण बलिश् नमो, तत्वरमण
 जसु मूलोजी ॥ पररमणीयपणो टलै, सकलसिद्धिअनुकूलो जो ॥
 उल्लाखो ॥ प्रतिकूल आश्रय त्याग संजम तत्व धिरता दममयी, शुचि
 रम खंति मुनींद संपद पंच संवर उपचयी ॥ सामायकादिक जे
 ॥ धरमै यथाख्यातै पूर्णता, अकषाय अकुलस अमल उज्ज्वल काम
 त्समल पूर्णता ॥ ७० ॥ ढाल ॥ देसविरत ने सर्वविरत जे, ग्रही
 तिने अजिरांम ॥ ते चारित्र जगत जयवंतो, कीजै तास प्रशाम
 ॥ ७० ॥ ७१ ॥ सि० ॥ तृण पर जे पदखंम सुख वंमी, चक्र
 त पिण वरित्त, ते चारित्र अखय सुखकारण, ते में मनमांदि धरि
 रे ॥ ७० ॥ ७२ ॥ सि० ॥ हूवा रंकपणे जे आदर, पूजत इंद
 रिंद ॥ अस्तरण सरण चरण ते वारू, वरित्त ज्ञान आनंद रे ॥
 ७० ॥ ७३ ॥ सि० ॥ वार मास पर्यायै तेहने, अनुत्तर सुखअतिक्रमिये ॥
 कृश अजिजात्य ते ऊपर, ते चारित्रने नमिये रे ॥ ७० ॥ ७४
 सि० ॥ चय ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र
 न निरुके ज्ञाख्यं, ते बंदू गुणगेद रे ॥ ७० ॥ ७५ ॥ सि० ॥
 ढाल ॥ जांशि चारित्र ते आत्मा, निजस्वजावमांदि रमतो रे
 जेस्या शुद्ध अलंकरयो, मोदवने नवि जमतो रे ॥ वी० ॥ ७६
 उं ह्रीं ५० चारित्रपदे अष्ट इव्यं यजामहे स्वाहाः ॥

॥ अथ नवमी तपपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ करमकाष्ठ प्रति जालवा, परतिख अगनि समांन
 ॥ ते तपपद पूजो सदा, निर्मल धरिये ध्यान ॥ १ ॥ काव्यं ॥ कम्म
 हुमोन्मूलनकुंजरस्त, नमोऽतिवतवोचरस्त ॥ अणेलक्ष्मीनिबंधण
 स्त, उत्तमअत्थाणयसादणस्त ॥ ३७ ॥ इयनवपयसिद्धिं, विद्धास
 मिद्धं, पयमियसरवगंहीतिरेहसमगं ॥ दिसिवइसुरसारंखोणिपीठाव
 यारं, तिजयविजयचक्रं सिद्धचक्रंनमामि ॥ ३८ ॥ त्रिकालिकपणें कर्म
 कपाय टालै, निकाचितपणें बाधिया तेह बाळै ॥ कह्यो तेह तप
 बाह्य अन्त्यंतर उ जेदे, कमायुक्ति निर्देत दुर्घ्यान वेदे ॥ ३९ ॥ होइ
 जास मदिमायकी लब्धि सिद्धि, अवांठकपणें कर्म आवरण शुद्धि
 ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेतै, होइ सिद्ध सीमंतनीजिम संके
 ते ॥ ४० ॥ इम नव पद ध्यावै परम आनंद पावै, नवजव सिय
 जावै देव नर जवज पावै ॥ ज्ञानविमल गुण गावै सिद्धचक्र प्रज्ञा
 वै, सवि दुरित समावै विश्व जयकार पावै ॥ ४१ ॥ ढाल ॥ इष्टा
 रोधन तप नमो, बाह्य अन्त्यंतर जेदै जी ॥ आतम सत्ता एकत्व
 ना, पर परंणति उछेदै जी ॥ १ ॥ उल्लाखो ॥ उछेद कर्म अनादि
 संतति जेइ सिद्धपणो वरे, शुज योग संग आधार ढालो जाव अ
 क्रियता करै ॥ अंतरमुहूरत तत्व साधै सर्व संवरता करी, निज आ
 ध्मसत्ता प्रगट जावै करो तपगुण आदरी ॥ ४२ ॥ ढाल ॥ इम न
 वपद गुणमंजलं, चउ निश्रेय प्रमाणें जी ॥ सात नयें जे आदरै, स
 भ्यगुणानें जाणै जी ॥ उल्लाखो ॥ निरवारसेती गुणे गुणानो करइजे
 ददुमान ए, जसु करण ईहा तत्वरमणें थायै निरमल ध्यान ए ॥
 इम शुद्धसत्ता जखो चेतन सकल सिद्धि अनुसरे, अक्षय अनंत म
 हंत चिदपन परम आनंदता वरै ॥ ४३ ॥ कलश ॥ इम सयल मुख
 कर गुणपुरंदर सिद्धचक्रपदावली, सवि सद्धिविद्धा सिद्धि मंदिर न
 बिक पूजो मन रत्नो ॥ उवझाय वर श्रीरजसारइ दानधर्मसु ॥

जता, गुरु दीपचंद सुचरण सेवक देवचंद सुशोभता ॥८४॥ ढाल ॥
जाणता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते जवमुगति जिनंद ॥ जेह आदरे कर्म
खपेवा, ते तप सुरतरु कंद रे ॥ ज० ॥ ८५ ॥ सि० ॥ करम नि
काचित पिण कय जावै, कमासहित जे करता, ते तप नमिये ते
ह दीपावै, जिनशाशन उजमंता रे ॥ ज० ८६ ॥ सि० ॥ आमोसही
पमुहा बहु लद्धि, दोवै जास प्रजावै ॥ अष्ट महासिद्ध नवनिध प्र
गटै, नमिये ते तप जावै रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ८७ ॥ फल शिव
सुख मोहुं सुरनखर, संपति जेहनूं फूल ॥ ते तप सुरतरु तरिखे
बंदू, शममकरंद अमूल रे ॥ ज० ॥ ८८ ॥ सि० ॥ सर्व मंगलमां
हि पदलो मंगल, वर्णवियो जे ग्रथै ॥ ते तपपद त्रिकरण नित न
मिये, वरसहाय शिवपंथ रे ॥ ज० ॥ ८९ ॥ सि० ॥ इम नवपद
शुणतो तिहालोनी, हुज तनमय श्रीपाल ॥ सुजस विलासै चोप्र
खंनै, एह इग्यारमी ढाल रे ॥ ज० ॥ ९० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ इ
छारोधन संवरी, परणित समता योगे रे ॥ तप ते एहिज आतमा,
वरते निजगुण जोगे रे ॥ वी० ॥ ९१ ॥ आगमनो आगमतणो,
जाव ते जाणो साचो रे ॥ आतमजावै शिर हूज, परजावै मत
राचो रे ॥ वी० ॥ ९२ ॥ अष्ट सकल समृद्धिने, घटमांदे रुद्धि वा
खी रे ॥ तिम नवपद रुद्धि जाणज्यो, आतमराम ठै साखी रे ॥
वी० ॥ ९३ ॥ योग असंख्य ठै जिनकहा, नवपद मुख्यते जाणो रे
॥ ए इतणै अविलंबने, आतमध्यान प्रमाणो रे ॥ वी० ॥ ९४ ॥ ढाल
बारमी एदवी, चोथै खंनै पुरी रे ॥ वाणी वाचक जसतणी, कोइय
न रही अपूरी रे ॥ वी० ॥ ९५ ॥ उँ ह्रीं प० तपपदे अष्ट द्युपं
यजामदे ॥ इति नवपद ॥ पूजा ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद पूजाकी कलसढालण विधी ॥

॥ नव लात्रिया केसरधें तिलक करे, हांके कांऊणडोरा बांधे, दरणे हाथें

साधिया करै, अरिहंत पदमें चावल, नमो अरिहंताणं कहके पंहुली पंचामृतके नव कलस ढाले फेर केसरकी टीकी देकर चरणो पर वाससेप चढ़ावे यथाक्रम अष्टद्रव्य चढ़ावे ॥ सिद्धपदमें गहूं लालरंगकी धजागोटा चढ़ावे, आचार्यपदमें चिणोकी दाल पीले रंगकी धजागोटा, उपाध्यायपदमें मूंग, साधूपदमें उडद, बाकी च्यारपदमें चावल चंदनलेपित गोटा चढ़ावे, श्वेतधजा चेत्रीपूनाम आसोजीपूनाम बगैरोंमें करे, नमो सिद्धाणं इत्यादि नवपदो के न्यारेर कह के चढ़ावे, गृहे मुजब पट्टे पर नव साधिया कर बीचमें अरिहंत ऊपर सिद्ध सिद्धचक्रयंत्र मुजब यथाक्रम चढ़ावे ॥

॥ ओली करणेवाला वाससेप पूजा करे तो एकेक पूजामें चालकी गायन तथा उछाले तक गाय कर अरिहंतपदे वाससेप यजामहे कहणा. एसें नवपदो की चाल ओर उछाला पद वाससेप चढ़ाणा ॥

॥ अथ दादायुरुमाहाराजकी लघु अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ न्दवण पूजा ॥ सुरनदी जल निर्मलधारया, प्रबल डुष्कृत दाघ निवारया ॥ सकल मङ्गल वंशित दायकं, कुशल सूरि गुरोश्रवणां यजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकुशल सूरि गुरौ चरणकमलेभ्य जलं यजामहे ॥ १ ॥ अथ चंदनपूजा ॥ मलय चंदन केसरवारिण, निखल जाज्यरुजातं पदारिणा ॥ सकल ० ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकु ॥ २ ॥ अथ धूपपूजा ॥ कमल केतकि धंपक पुष्पकैः, परिमला हृत् पदपद वृंदकै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ अथ अक्षत पूजा ॥ सरज तंडुल कैरित निर्मलै, प्रवर मौक्तिक पुंज वडुज्वलैः ॥ सकल मङ्गल ० ॥ ॐ ह्रीं श्री ५० अक्षतं यजामहे ॥ ४ ॥ अथ नैवद्य पूजा ॥ बहुविधैश्वरुज्जिर्वटकेपकैः, प्रवर मोदकपुंज सुखर्जकै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री नैवद्यं यजामहे ॥ ५ ॥ अथ दीपपूजा ॥ अति सुदीप्तमयै खलुदीपकैः, विमल कंचनजाजन संस्थितै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजि० दीपं यजामहे ॥ ६ ॥ अथ धूपपूजा ॥ अगर चंदन धूप वशांनजे, प्रसरिताखिल दिक्षुसुगन्धकः ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री० धूपं यजामहे ॥ ७ ॥ अथ फलपूजा ॥ पनदा मोच सदाफल कंकटे, सुसुखैः

किल श्रीफल चिन्तै ॥ सकल मं० ॥ नै ह्रीं श्री० फलं यजामहे
 स्वाहाः ॥ ८ ॥ अर्घ्यपूजा ॥ जल सुगंध प्रसून सुतंडुलै, श्वरुप्रदीप
 क धूप फलादिभिः ॥ सकल मं० ॥ नै ह्रीं श्रीं श्रीजि० अर्घ्य यजामहे
 स्वाहा ॥ इति श्रीदादाजीकी लघु अष्टप्रकारो पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ दादाजीकी आरती ॥

॥ जै जै सद्गुरु आरती कीजै, श्रीजिनकुशल सूरि समरी
 जै ॥ जैजै० ॥ पहली आरती दादाजीकी कीजै, डुल बोदग सब
 दूर हरीजै॥जै०॥१॥बीजी बीज पमंती धारा, जयवारण तूंदी सुख
 कारा ॥ जै० ॥ २ ॥ तीजी परचा पूरक तेरी, दूर हरौ सब दुर्म
 ति मेरी ॥ जै० ॥ ३ ॥ चौथी सुगलपूत जियवायक, सुरवर हुक
 म धरे ज्युं पायक॥जै०॥४॥पांचमी पांच नदी जिए तारी, संघ स
 कलनो संकट बारी ॥ जै० ॥ ५ ॥ छठी धांजोवज्र विदारी, विद्या
 पोथी परगटकारी ॥ जै० ॥ ६ ॥ सातमी चोसठ योगण साधी,
 सूरिमंत्र सुरने आराधी ॥ जै० ॥ ७ ॥ अण विध सात आरती
 कीजै, मनवंछित संपति फल लीजै ॥ जै० ॥ ८ ॥ जैनजात्र खर
 तर गणधारी, सद्गुरु चरणकमल बलिहारी ॥ जै० ॥ ९ ॥
 इति श्रीगुरुदेव आरती संपूर्णमं ॥

॥ अथ सूतकविचार लिख्यते ॥

॥ पुत्र जन्म होनेसे दिन १० दस सूतक ॥ पुत्री जन्म हो
 नेसे दिन १२ बार सूतक ॥ नर जो स्त्रीके पुत्र होय, उस स्त्रीके
 एक मासको सूतक॥पुत्र होके मरण पाये, तो दिन १ एक सूतक ॥
 परदेशें मृत्यु होय तो दिन १ एक सूतक ॥ गाय, जैय, घोड़ी,
 सांड, घरमांहे बियावे, तो दिन १ एक सूतक ॥ मरण हूवां कले
 वर घर बाहिर लइ जाय, जहां तक सूतक ॥ दास दासी अपनी
 नेशायें रहते पुत्र पौत्रादिकका जन्म मरण हो, तो दिन ३ तीन

सूतक ॥ उर जितना मंदिनाको गर्ज गिरे, तितने दिन सूतक ॥
 अब जिनके जन्म मरणका सूतक होवे, ये १२ बार
 दिन देवपूजा न करे. उर मृतकके सूतक में घरका जो
 मूल कांधिया होवे सो १० दस दिन देवपूजा न करे ॥
 उर अन्य घरका ३ तीन दिन देवपूजा न करे. उर जो मृत
 कको दूवा होवे, सो २४ चौबीस प्रहर पन्तिक्रमण न करे ॥ जो
 सदाका अखंड नियम होवे, तो समताजाव रख के संवरपणामें
 रहे. परंतु मुखसे नवकार मंत्रकाजी उच्चारण करे नहिं. स्थापना
 जीके हाथ लगावे नहिं. उर जो मृतकको दूवा न हो तो मात्र
 आठ प्रहर पन्तिक्रमण न करे ॥

जैसेके जब वच्चा होय, तब १५ पहर दिन पीठें दूध पीणो
 कछपे. गायके वच्चा होय तो १४ सतरे दिन पीठें दूध पीणो कछपे.
 बकरीको दूध ८ आठ दिन पीठें पीणो कछपे ॥

१ रतुवती स्त्री, चार दिन जाम्नादिकको न दुवे. २ चार दिन
 प्रतिक्रमण न करे, ३ पांच दिन देवपूजा न करे. ४ रोगादिक का
 रणें तिन दिवस उपरांत कोई स्त्रीको रक्त चलता दीसे, जिसका
 विशेष दोष नहिं ॥ शुद्ध विवेकसे पवित्र हो कर दिन ५ पांच पीठें
 स्थापना पुस्तक दुवे, जिनदर्शन करे, अग्रपूजा करे, परंतु अंगपूजा
 न करे, साधुको पन्तिजाजे. ऋतुवती तपस्या करे, सो तो सफल
 होय. परंतु रतु दिनमें जिनपूजा प्रतिक्रमणदिक क्रिया सफल न
 होवे, ऐसा चर्चरीयंत्रमें कहा है. जिसके घरमें जन्म मरणका सू
 तक होवे, उहां १२ बार दिन तक साधु आहार पाणी न बढ़ारे.
 सूतकवालेका घरका जलसे तथा अग्निसें १२ घारा दिन तक देव
 पूजा न करे. निशीथसूत्रके शोलमा उद्देशामें जन्म मरणके सूत
 कवालेका घर दुर्गन्धिक कहा है.

गायके मूत्रमें २४ चोवीस प्रहर पीवें, जैपके मूत्रमें १६ सोल प्रहर पीवें, गाम्बर, मधेमा, घोमीके मूत्रमें ८ आठ प्रहर पीवें, हर नारीके मूत्रमें ४ चार प्रहर पीवें, समूर्द्धिम जीव उपजे, इत्यादि सूतकका संक्षेप विचार इहां लिखा है. विशेष विचार शास्त्रांतरसे जानमा ॥ इति सूतकविचारः संपूर्णः ॥

॥ अब असद्यायकी विगत कहते हैं ॥

१ धूंझारी पने, तासीम असद्याय आपणी.

२ सर्वदिशामों राती ठावा तथा अरण्य संबंधी रज उमे, निरंतर पने तो दिन १ सीम उपरांत असद्याय.

३ मेह परसते बुदबुदाकारी होय, तो दिन ३ तीन उपरांत असद्याय.

४ नाला छांटा निरंतर, दिन ७ सात उपरांत वरसे अमे न रहे तो असद्याय होय.

५ मांसवृष्टि, शिलावृष्टि, केशवृष्टि, पूत्रिवृष्टि, जालगें होय, सां सीम असद्याय. अने ओ रुधिरवृष्टि होय तो अदोरात्र असद्याय.

६ बुदबुदा रदित निरंतर वरसे तो ५ पांच दिन उपरांत असद्याय होय.

७ चैत्र शुद्धि पांचमहंती पन्निवा लगे असद्याय. तेरस, चौदस, पूनम सीम समी सांजे. अचित्त रजउझावणठं काउस्तग करुं? इहं. अचित्त रज्ज उझावणठं करेमि काउस्तगं. पठी जोगस्त उझोपगरेना चार काउस्तग करवा.

८ आशोशुद्धि पांचमने दिने द्विप्रहरयी आरंजीने पन्निवा लगे असद्याय.

९ वश विग्वार्दे प्रहर १ एक असद्याय.

१० अकाले गाजतां प्रहर २ वे सीम असद्याय.

११ अकालें बीज उल्कापात होय तो प्रहर १ असद्याय,
 १२ अजवालीये पक्षें समी सांज, पन्वो, बीज, त्रीज,
 इयारी असद्याय, परंतु दश वैकालिक गुणीजें.

१३ अकालें मेघ वरसे, तो प्रहर १ एक असद्याय.

१४ जूमिकेंपें प्रहर ८ आठ असद्याय.

१५ चंद्रग्रहणें प्रहर ११ वार उत्कृष्टें, अने जयन्यें प्रहर
 ७ आठ असद्याय.

१६ सूर्यग्रहणें उत्कृष्ट प्रहर १६ सोल, अने जयन्य प्रहर
 १२ वार असद्याय.

१७ आसाढ चउमासा पनिकमण गायार्दूती प्रहर ११
 वार असज्जाय.

१८ कार्तिक चउमासे पण प्रतिक्रम्या पीठें पन्विवा लगे प्र
 हर वार असज्जाय.

१९ मांदोमांदे मल्लादिक युद्ध हुवे, तावत्काल असज्जाय.

२० कलह युद्ध जां लगे हुवे, तां लगे असज्जाय.

२१ उपाश्रय नजीक स्त्रीपुरुषने कलह हुवे त्यां पर्यंत असज्जाय.

२२ फागण चउमासे रजपर्वी ज्यां लगे रज उठे, अने उप
 शमें नदि, तां लगे असज्जाय.

२३ दंभको मार पडते जांलगी अनेरो. न हुवे, तां लगी
 असज्जाय.

२४ परचक्रादि जय उपजे, अने जां लगे उपशमे नदि, तां
 लगे सूत्र जणवुं न सूजे ॥ अयं परमार्थः ॥

२५ नगरमांदे प्रधान पुरुष विदने, तो अदोरात्र असज्जाय:

२६ उपाश्रयशी सात घरमांदे जो कोइ पुरुष विदने, तो
 अदोरात्र असज्जाय.

२४ तो हाथमादे अनाथं पुरुष मृतक पढ्यो होय, तो ता अणउळ्हे एडले ज्या पर्यंत मृतककूं न उठावे, त्यां सीम असद्याय.

२५ तिर्यचना रुधिर पम्वाथी हाथ १०० तो माहे अहो-
रात्र असद्याय.

२६ मनुष्यना रुधिर पम्वाथी हाथ १०० तो माहे अहो-
रात्र असद्याय.

२७ मनुष्यनां अस्थि, हांत, दाढ पमे हाथ १०० तो माहे
सूत्र पढवुं तूजे नहिं.

२८ स्त्रीने रुतु आवे थके दिन ३ त्रश असऊजाय.

२९ आर्क्ष नक्षत्र आठवा पीठें स्वाति नक्षत्र पर्यंत जो गाजे,
बीजे, मेह वरसे, तो असऊजाय न होय.

३० पुत्रने प्रसवे दिन ४ सात असद्याय. अने दीकरीने प्रस
वे दिन ८ आठ असऊजाय.

३१ कालग्रहण विषकी जलवो गुणवो नहिं. प्रहर १२ वार
असऊजाय.

३२ वैशाखवदि १, आषाढवदि १, कार्तिकवदि १, मार्गशि
खवदि १, ए चार दिवसें सदैव असऊजाय अने सूत्रनी असऊजाय
तो प्रहर १२ वार सूधी जाणवी.

॥ अथ साधु ओर श्रावककों कोनसी वस्तु कितने प्रहर ॥

॥ ओर दिन पीछें न खावणी सो लिख्यते ॥

॥ चावल प्रहर ८, राव प्रहर १२, धीत प्रहर २०, गार्गी
प्रहर २४, दहिं प्रहर १६, दूध प्रहर ४, कांजीबर्ना प्रहर २४,
घोमवर्ना प्रहर ४, तट्यां वमा प्रहर ४, घूमी प्रहर ८, रोटी प्रहर
४, तथा ६. वाजरा कृष्ण प्रहर १२, जवार कृष्ण प्रहर १२, वां
जरीकी खीचमी प्रहर ८, जवारकी खीचमी प्रहर ८, चावलकी

खीचनी प्रहर ४, सीयाले आटो दिन १०, उन्हाले आटो दिन ८, वरसाले आटो दिन ५, पक्कान्न सियाले दिन ३०, उन्हाले पक्कान्न दिन १५, वरसाले पक्कान्न दिन ७, उन्हाले लूण फासू ८ दिन, वरसाले लूण फासू दिन ३, सीयाले फासू लूण दिन ५, सीयाले फासु घी दिन ८, उन्हाले फासु घी दिन ५, वरसाले फासु घी दिन ३, तथा हमेसका सियाले फासु पाणी प्रहर ५, वरसाले फासु पाणी प्रहर ३, सर्व अनाजकी घूघरी पाणी ज़ीजोइ प्रहर ८, पाणीकी ज़सेइ घूघरी प्रहर १८, घी तेलकी तली घूघरी प्रहर २०, तथा २४. बनी प्रहर ८, कढी प्रहर ४, सर्व दाल प्रहर ४, तथा ६. रायता प्रहर ८, घीकी तली प्रहर १६. एवं सर्व वस्तु ए कीये परिमाण उपरांत चलितरस होवे, सो साधु तथा श्रावकको खावे योग्य रहे नहिं ॥

॥ अथ नव ग्रह तथा दस दिग्पाल की स्थापन ओर पूजन विधि तथा आह्वान विसर्जन विधि लिख्यते ॥

॥ पांच दस स्नात्रिया शुद्ध होकर गुरू के पास केसरका तिलक करै, केसर मंत्रायकै दाहिना हाथके मौली उर कांकणमोरा मंत्राय के बाँवै ॥ (ॐ नमो परमेष्ठि नमस्कारं) इत्यादि स्तोत्रसें गुरु आत्मरक्षा करावै. पीठै एक थालीमें १०, एक थालीमें ९, फेर एक थालीमें फेर ९, ऐसें १८ नागरवेलका पान रखै. जिसपर पुष्प अकृत नैवेद्य फल रोकड़व्य यथाशक्ति धरै उरज्जी पंचामृत फूल पुष्पमाला अकृत नैवेद्य तरेर के गीले उर सूकेफल अतर गुलाबजल केसर कपूर कुंकु आदि पूजापेका सामान रखै. फेर स्नात्रपूजा की थापना रखै, स्नात्र करावे अष्ट प्रकारी पूजा करावै पीठै दसदिग्पाल के पट्टे ऊपर जलका गीटा देकर वासक्षेप करे ॥ एकेक दिग्पालके केसरकी टीकी देकर पुष्प चढ़ाके फल नैवेद्यादि समेत नागरवेल पान चढ़ावै ॥

॥ अथ दस दिग्पालके पट्टेकी पूजाविधि ॥

॥ उँहंदाय सायुषाय सवाहनाय सपरिकराय इहअस्मिन्जं
 बूदीपे दक्षिणज्जरतार्द्धकेत्रे अमुकनगरे अमुकचैत्ये अमुकपूजामहो
 छवे आगच्छ१ वलिं० उदय० कुरु२ स्वाहाः उँहंदाय न
 मः इति इँदआह्वानपूजा ॥ (पूर्वदिसि जल चंदनादि अष्ट इव्य च
 ढावै) ॥ १ ॥ अथ अग्नि दिग्पाल पूजा ॥ उँअग्नये सायुषाय सवा
 हनाय सपरिकराय अस्मिन्जंबूदीपे दक्षिणज्जरतार्द्धकेत्रे अमुकनगरे
 अमुकचैत्ये अमुकपूजामहोछवे आगच्छ१ वलिं० उदय० कुरु२ स्वाहाः उँअग्नये नमः ॥ २ ॥ अथ यम दिग्पाल पूजा ॥ उँय
 माय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जंबु० दक्षिण० अमुकन०
 अमुकचैत्ये० अमुकपूजा० आग० वलिं० उदय० स्वाहा उँय
 माय नमः ॥ दक्षिण ॥ ३ ॥ अथ नैऋत दिग्पाल पूजा ॥ उँनैऋताय
 सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० दक्षि० अमुक पूजामहोछवै
 आग० वलिं० उदय० स्वाहा उँनैऋताय नमः ॥ ४ ॥ अथ वरुण दि
 ग्पाल पूजा ॥ उँवरुणाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० अमुकपू०
 आ० वलिं० उदय० स्वाहा उँवरुणाय नमः ॥ पश्चिम० ॥ ५ ॥ अथ वा
 यव दिग्पाल पूजा ॥ उँवायवे सायु० सवा० सप० अस्मिन्० द०
 अमुकचैत्ये० अमुकपूजामहोछवे० आ० वलिं० उदय० स्वाहा
 उँवायवैनमः ॥ वायव्य ॥ ६ ॥ अथ कुबेर दिग्पाल पूजा ॥ उँकुबेरा
 य सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमु
 कपूजामहोछवे आ० वलिं० उदय० स्वाहा उँकुबेराय नमः उत्तर
 दिशि ॥ ७ ॥ अथ ईशान दिग्पाल पूजा ॥ उँईशानाय सायु०
 सवा० सप० अस्मि० द० अमुकपू० आ० वलिं० उद० स्वाहा
 उँईशानाय नमः ॥ ईशानकृण ॥ ८ ॥ अथ ब्रह्म दिग्पाल पूजा ॥
 उँब्रह्मणे सायु० सवा० सप० अस्मिन्० द० अमुकन० अमुकचैत्ये

अमुक पू० आ० बलि० उदय० स्वाहा उन्नमोन्नमः ॥ उन्नमिदिशि०
 ॥ ए ॥ अथ नाग दिग्पाल पूजा ॥ उन्नमाय सायु० सवा० सप०
 अस्मिन् दक्षि० अमुकन० अमुकचैत्ये अमुकपू० आ० बलि०
 उदय० स्वाहा उन्नमायनमः ॥ १० ॥ अघोदिशि अष्टद्वय चढावै ॥
 कं पर कसूमल वस्त्र बांधै मौलीसे पीठै ॥ उन्नमदिग्पालायनमः
 ॥ एता कदके यथाशक्ति रोकमध्य समेत नागरवेलका पान आदि
 सर्व द्रव्य चढावै, पट्टेके चोतरफ दस घृतके दीपक घरे अथवा एक
 दीपक आगै घरे ॥ इति दस दिग्पाल पूजनविधिः ॥

॥ अथ नव ग्रह पूजनविधिः ॥

॥ अथ सूर्य पूजा ॥ उन्नमोन्नमिदिशाय सायुधाय सवाद्वा
 य सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणज्जरतक्षेत्रे अमुकनगरे अमुक
 चैत्ये अमुकपूजामहोद्यवे आगच्छ २ बलिपूजां गृहाण २ उदयमध्युदयं
 कुरु १ अत्रपीठेतिष्ठ २ स्वाहा उन्नमसूर्यायनमः ॥ (एसापट्टेकेजलचंदनादि
 अष्टद्वयचढावै) ॥ १ ॥ अथ चंद्रपूजा ॥ उन्नमोन्नमिदिशाय सायु० सवा० स
 प० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुकपू० आ० बलि १०
 उदय० अष्टपीठेति० स्वाहा उन्नमोन्नमिदिशायनमः ॥ २ ॥ अथ मंगल पूजा ॥

उन्नमोन्नमिदिशाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमु०
 अमुकपू० आ० बलि० अत्रपीठे उदय० स्वाहाः उन्नमोन्नमिदिशायनमः ॥
 अथ बुधपूजा ॥ उन्नमोन्नमिदिशाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अ
 मुकनग० अमु० चै० अमुकपू० आ० बलि० उदयम० अत्रपी०
 स्वाहा उन्नमोन्नमिदिशायनमः ॥ ४ ॥ अथ बृहस्पति पूजा ॥ उन्नमोन्नमिदिशाय
 सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुक
 पूजाम० आ० बलि० अत्रपी० उदय० स्वाहाः उन्नमोन्नमिदिशायनमः ॥ ५ ॥
 अथ शुक पूजा ॥ उन्नमोन्नमिदिशाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं०
 द० अमुकन० अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० बलि० अत्र

पीठे उदयम० उंशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ ॥ अथ शनि पूजा ॥
 उंनमोशनिश्चराय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन०
 अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे तिष्ठ२ उदयम०
 स्वाहा उंशनैश्चरायनमः ॥ ७ ॥ ॥ अथ राहु पूजा ॥ उंन
 मोराहवे सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै
 त्ये अमुकपूजा० आ० वलि० अत्रपी० उदयम० उंराहवेनमः ॥ ८ ॥
 अथ केतू पूजा ॥ उंनमोकेतवे सायु० सवा० सप० अस्मि
 न्जं० द० अमुकनग० अमुकचै० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे
 तिष्ठ२ उदयम० स्वाहा ॥ उंकेतवेनमः ॥ इति ॥ (इसी मुजब ऊपर लाल
 वस्त्र मोलीते बांधे पीठे नागरवेलेके पान आदि अष्टङ्ग्य रोकन इव्य
 समेत सांमने जेट धरे फेर एसा कहे ॥ उंनवग्रहायनमः ॥ च्यारों तरफ
 नवदीपक वा एक दीपक सांमने धरे इति नवग्रह थापन पूजनविधिः
 ॥ बाये तरफ मंरुलके नवग्रहकी थापना करे दहिणे बाजू दसविगुणा
 की थापना करे ॥ जिस महोच्चवमें इनोकी पूजा कराणी उस महो
 च्चवका नाम लेणा विशेष विधि गुरुमुखसें सीखणी ॥ शुद्ध जल
 से पवित्रपणे बणायाजया सधवस्त्रीके या पुरपके हाथसें पांचरंग
 के धानके बाकला पांच रंगकी खजली गुलगुला खीर दहीका करवा
 मालपूवा पांचरंगके लहु इत्यादिखाद्य उत्तम वस्तु मंगाकर एक परातमें
 सब इव्य एकठे करै उर घृत खांन अत्तर गुलाबजल पंचरंगे फूल
 यहजी बाकलोंमें मिलावे पीठे गुरु ३ तीन बार मंत्रके तीन घेर
 बाकुलो पर वासशेष माले,) अथ वासशेष मंत्र ॥ उंहांहींसवोप
 इंविविंस्परक२स्वाहा उंशमोअरिहंताणं उंशमोसिद्धाणं उंशमोआ
 यस्त्रिआणं उंशमोउवझापाणं उंशमोलोएसवसादूणं उंशमोआगास
 गामीणं उंशमोचारणलदीणं जेइमे किन्नर किंपुरस महोरग गरुड
 गंधर्व जस्क रस्क पिशाच भूथ माइणप्पजइउ जिणघरनिवाति

णां सन्निधियाय तेसधेविलेखं ध्रुवपुष्पफलवत्संसाहिं वलिपत्ति
 छंता तुष्किराजवंतु पुष्किरा संतिकराजवंतु सबंजणकुर्वंतु सबजि
 णाणं संहणप्पजावत पसन्नजावतणे सबत्थरस्कंतुकुर्वंतु सबडुरियाणी
 नासंतु सदाशिवमुवसमंतु संतितु षिपुणिसिवसत्थयणकारिणो जवंतु
 स्वाहाः ॥ इत मंत्रसें तीन वेर वासकेपकूं मंत्रके बलवाकुलोमें
 मालके सुद्ध करे ॥ पीठै आधा बलवाकुल दूसरी परातमें विसर्जनके
 वास्ते वस्त्रसें ढककर रखलोमे. आधा लेकर घरके तथा चैत्यके ऊपर
 इग्यारे छात्रिया शुद्ध होकर पहला एक आवक चोटीके बाल खो
 लकर बलवाकुल लेके पूर्वकी तरफ खम्हा रहे, २ दूसरा केसरकी
 कटोरी, ३ तीसरा पुष्पकी चंगेरी, ४ चौथा ओता, ५ पांचमा धूप
 धाणा, ६ षष्ठा दीपक, ७ सातमा चमर, ८ आठमा पंटा, नवमा
 जलका कलश, १० दसमा बलवाकुलकी घाली, ११ इग्यारमा मंग
 लवाजित्र. इस तरे सब छात्रिये एकेक दिशाकी तरफ खम्हा रहे.
 जब पुरु शुद्धमंत्र उच्चारण करचूके तब क्रमसें जल चंदन फूल वा
 कुंजादिक चढ़ावे, चामरकरे, शारीता दिसावै, वाजित्र बजावै ॥

॥ अथ दस दिग्पाल आह्वानमंत्र ॥

॥ ऐरावतः समारूढः शक्रः पूर्वदिशि स्थितः संवत्सरांतपेसो
 स्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ १ ॥ (एता कदके पूर्वदिशाकी तरफ
 बलवाकुल चढ़ावै) (अग्निकूशके सामने) ॥ सदावह्निदिशो
 नेता पावकोमेपवादनः संवत्सरांतपेसोस्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ २ ॥
 (एता कद द्यकुंजादिद्रव्य चढ़ावै) (दक्षिणदिशानी तरफ) ॥
 दक्षिणस्यां दिशः स्वामी यमो महिषवादनः संवत्स० वलि० ॥ ३ ॥
 (बलवाकुल चढ़ावै वाजित्र बजावै) (नैऋतकूशकी तरफ) ॥
 यमापरांतरालोको नैऋतः शिववादनः संवत्स० वलि० ॥ ४ ॥
 (अथ पश्चिमदिशि) ॥ यः प्रतीची दिशो नाग्रः वरुणो मकरस्थितः

संघस्य० वलि० ॥ ५ ॥ (अथ वायव्यकूण) ॥ हरिणोयादनंयस्य
 वायव्याधिपतिर्मस्तु संघस्य० वलि० ॥ ६ ॥ (अथ उत्तर दिशि)
 ॥ निधाननवरूढ उत्तरस्यादिशिप्रजुः संघस्य० वलि ॥ ७ ॥
 (ईशान कूण) ॥ सितेवृषेधिरूढश्च ईशानांचदिसोविजुः संघस्य०
 वलि० ॥ ८ ॥ (अथ अधोदिशि) पातालाधिपतियोस्तु सर्वदापद्म
 चादनः संघस्य० वलि० ॥ ९ ॥ (अथ उर्ध्वदिसि) ब्रह्मलोकवि
 ज्ञोयस्तु राजदंससमाश्रित संघस्य० वलि० ॥ १० ॥ इति दश दि
 ग्पाल आह्वानविधिः ॥

॥ अथ पूजा प्रतिष्ठादि हुपां पीठे दिग्पाल विसर्जनविधिः ॥

॥ ओर बलवाकुलादि द्रव्यपूजा पूर्ववत् ॥

॥ छैनमोईशाय पूर्वदिग्अधिष्टायकाय ऐरावणवादनाय सदस्त्र
 नेत्राय वज्रायुधाय सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणार्धे अमु कन
 गरे अमुकचैत्ये अमु रुमहोष्ठवे सर्वोपद्वादलिरक्ष २ गच्छ २ स्वाहा ॥
 पूर्वदिशाकी तरफ छैनंज्ञायनमः ॥ १ ॥ (अग्निकूण) ॥ छैनमोअ
 ग्निमूर्तये शक्तिदस्ताय सायुधाय सवा० सप० अस्मिन्० अमुक०
 सर्वोपद्वादलिरक्ष २ गच्छ २ स्वाहा ॥ इति ॥ (दक्षिणदिशि) छैन
 मोयमाय दक्षिणदिग्धिष्टायकाय महिषवादनाय दंरुआयुधाय कृष्ण
 मुर्तये सायु० सवा० सप० अस्मि० सर्वोपद्वादलिरक्ष २ गच्छ २ स्वा
 हा ॥ १ ॥ इति ॥ (नेस्तकूणे) ॥ छैनमोनेस्ताय खरुगदस्ताय
 सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्वादलिरक्ष २ गच्छ २
 स्वाहा ॥ ४ ॥ इति ॥ (पश्चिमदिशि) ॥ छैनमोवरुणाय पश्चिम
 दिग्धिष्टायकाय मकरवादनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु०
 सर्वोपद्वादलिरक्ष २ गच्छ २ स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥ (वायवकूणे) ॥
 छैनमोवायवे वायवाधिपतये ध्वजदस्ताय हरिणवादनाय सायु०
 सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्वादलिरक्ष ० स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥

णां सन्निधियायं तेसधेविलेखं ध्रुवपुष्पफलवस्वसंलार्हिं वलिपनि
 छंता तुष्किराजवंतु पुष्किरा संतिकराजवंतु सध्वजं कुर्वंतु सबजि
 णाणं संधणप्पजावज पसन्नजावतणे सधत्थरखंतु कुर्वंतु सबडुरियाणी
 नासंतु सदाशिवमुवसमंतु संतितु ण्णुणिसिवसत्थयणकारिणो ज्वंतु
 स्वाहाः ॥ इस मंत्रसें तीन वेर वासुकेपक्षूं मंत्रके बलवाकुलोमें
 मालके सुद्ध करे ॥ पीछे आधा बलवाकुल दूसरी परातमें विसर्जनके
 वास्ते वस्त्रसें ढककर रखवोने. आधा लेकर घरके तथा चैत्यके ऊपर
 इग्यारे लालिया शुद्ध होकर पहला एक आवक चोटीके बाल खो
 लकर बलवाकुल लेके पूर्वकी तरफ खना रहे, २ दूसरा केसरकी
 कटोरी, ३ तीसरा पुष्पकी चंगेरी, ४ चौथा ओता, ५ पांचमा धूप
 धाणा, ६ छठा दीपक, ७ सातमा चमर, ८ आठमा घंटा, नवमा
 जलका कलश, १० दसमा बलवाकुलकी घाली, ११ इग्यारमा मंग
 लवाजित्र. इस तरे सब लालिये एकेक दिशाकी तरफ खना रहे.
 जब गुरु शुद्धमंत्र उच्चारण करचूके तब क्रमसें जल चंदन फूल वा
 कुलादिक चढ़ावै, चामरकरे, आरीसा दिखावै, वाजित्र बजावै ॥

॥ अथ दस दिग्पाल आह्वानमंत्र ॥

॥ ऐरावतः समारूढः शक्रः पूर्वदिशि स्थितः संवत्सरांतयेतो
 स्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ १ ॥ (एसा कहके पूर्वदिशाकी तरफ
 बलवाकुल चढ़ावै) (अग्निकूशके सामने) ॥ सशवह्निदिशो
 नेता पावकोमेपवाहनः संवत्सरांतयेतोस्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ २ ॥
 (एसा कह वाकुलादिष्वय चढ़ावै) (दक्षिणदिशाकी तरफ) ॥
 दक्षिणस्यां दिशः स्वामी ॥ (नैऋतकूशकी तरफ) ॥ ३ ॥
 बलवाकुल ॥ (नैऋतकूशकी तरफ) ॥ ४ ॥
 संवत्सरांतयेतोस्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ ४ ॥

वरुणो मकरस्थितः

संघस्य० वलि० ॥ ५ ॥ (अथ वायव्यकूण) ॥ हरिणोयादनंयस्य
 वायव्याधिपतिर्मरुत् संघस्य० वलि० ॥ ६ ॥ (अथ उत्तर दिशि)
 ॥ निधाननवकारूढ उत्तरस्यादिशिप्रभुः संघस्य० वलि ॥ ७ ॥
 (ईशान कूण) ॥ सितेवृषेधिरूढश्च ईशानांचदिसोविभुः संघस्य०
 वलि० ॥ ८ ॥ (अथ अधोदिशि) पातालाधिपतियोस्तु सर्वदापद्म
 चादनः संघस्य० वलि० ॥ ९ ॥ (अथ उर्ध्वदिशि) ब्रह्मलोकवि
 ज्ञोयस्तु राजहंससमाश्रित संघस्य० वलि० ॥ १० ॥ इति दश दि
 ग्पाल आह्वानविधिः ॥

॥ अप पूजा प्रतिष्ठादि हुयां पीठे दिग्पाल विसर्जनविधि ॥

॥ ओर बलवाकुलादि द्रव्यपूजा पूर्ववत् ॥

॥ नैनमोईशाय पूर्वदिग्अधिष्टायकाय ऐरावणवाहनाय सदस्त्र
 नेत्राय वज्रायुधाय सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणार्धे अमु कन
 गरे अमुकचैत्ये अमु रुमहोद्यवे सर्वोपद्वाहलिरक्षश् गच्छश् स्वाहा ॥
 पूर्वदिशाकी तरफ नैईशायनमः ॥ १ ॥ (अग्निकूण) ॥ नैनमोअ
 ग्निमूर्त्तये शक्तिहस्ताय सायुधाय सवा० सप० अस्मिन्० अमुक०
 सर्वोपद्वाहलिरक्षश् गच्छश् स्वाहा ॥ इति ॥ (दक्षिणदिशि) नैन
 मोयमाय दक्षिणदिग्धिष्टायकाय महिषवाहनाय दंरुआयुधाय कृष्ण
 मुर्त्तये सायु० सवा० सप० अस्मि० सर्वोपद्वाहलिरक्षश् गच्छश् स्वा
 हा ॥ १ ॥ इति ॥ (नेरुतकूणे) ॥ नैनमोनेरुताय खरुगहस्ताय
 सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्वाहलिरक्षश् गच्छश्
 स्वाहा ॥ ४ ॥ इति ॥ (पश्चिमदिशि) ॥ नैनमोवरुणाय पश्चिम
 दिग्धिष्टायकाय मकरवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु०
 सर्वोपद्वाहलिरक्षश् गच्छश् स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥ (वायव्यकूणे) ॥
 नमोवायवे वायवाधिपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सायु०
 सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्वाहलिरक्षश् स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥

(उत्तरदिशि) ॥ नैनमोधनदाय उत्तरदिग्धिष्टायकाय नरवाहनाय
 गदाहस्ताय सप० अस्मि० अमुकनगरे सर्वोपद्रवाहलि० गच्छ२ स्वा
 हा ॥ ३ ॥ इति ॥ (ईशाणकूणे) नैनमोईशानाय त्रिसूलहस्ताय
 ईशानाधिपतये वृषजवाहनाय सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाह
 लि० गच्छ२ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ (उर्ध्वलोके) नैनमोब्रह्मणे रा
 जहस्तवाहनाय उर्ध्वलोकाधिष्टायकाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्०
 अमु० सर्वोपद्रवाहलि० गच्छ० स्वाहा ॥ ९ ॥ इति ॥ (अधोलोके)
 नैनमोनागाय पातालनिवाताय पद्मवाहनाय० सायु० सवा० सप०
 अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाहलि२ गच्छ२ स्वाहा ॥ १० ॥ (इत
 तरे पदे वाद सर्व देवतांके विसर्जनका श्लोक पढ़े ॥ यथा ॥ शक्राद्या
 लोकपालादिशिविदित्सिगता शुद्धसङ्गमशक्ताः, आयातास्त्रात्रकाले क
 लुपहन्तिरुते तीर्थनाथस्यजक्त्याः न्यस्ताशेषापदाद्याविहितशिवसु
 खाः स्वास्पदंसांप्रतंते, आत्रेपूजामवाप्यस्वमतिरुतमुदोपांतुकल्याण
 प्राजः ॥ १ ॥ आग्यादीनंक्रियादीनं, मंत्रादीनंचयत्कृतं; तत्सर्वंक्रम
 तंदेवः, प्रशीदपरमेश्वरः ॥ २ ॥ आह्वानंनैवजानामि, नैवजानामि
 पूजनं; विसर्जनंनैवजानामि, त्वमेवशरणंमम ॥ ३ ॥ पीठे यथाश
 क्ति ज्ञानपूजा गुरुपूजा साधर्मीवात्सल्य करै ॥ इति नवग्रह दश
 दिग्पाल स्थापन आह्वान विसर्जन विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद मंडल पूजाविधि ॥

प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नव आत्रिया मंत्रितजलसे स्नान
 करे (जलमंत्र) ॐ ह्रीं अमृतेअमृतोन्नवे अमृतवर्षणी अमृतंश्राव
 य२ स्वाहा (इस मंत्रसे जलमंत्रे पीठे) ॐ ह्रीं अमलेविमले वि
 मलोन्नवे सर्वतीर्थजलोपमे पांपावावाअशुचिशुचिजयामिस्वाहा (इत
 मंत्रको सातवेर पढ़ता हुआ स्नान करे पीठे ॥ ॐ ह्रीं आँ क्राँः॥ (सा
 न वेर इस मंत्रसे वरु गरु कर पढ़िरे पीठे ॥ ॐ आँ ह्रीं क्राँ अर्दते

नमः) इस मंत्रसे सात वेर गुरु पाससे केसर मंत्रायके तिलक करै. (पीठै) उँ ह्रीं अवतर २ सोमे २ कुरु २ बळगु २ सुमणसे सो मणसे महुमहुरे उँ रुवलीकः कः स्वाहा ॥ (इस मंत्रसे मोली मेंढल मरोमाफली मंत्रायके हाथके बांधै उँर जब मंरुलजीके व्यारुं तरफ मोलीमेंढल बांधे सोजी इसी मंत्रसे मंत्रायके बांधे. इस तरे अपणा अंग शुद्ध करके आत्रिया गुरुके सामने हाथ जोरुके बैठै तब गुरु आत्मरक्षा स्तोत्र जो पड़िली लिखा हे उससे तीन वेर पढ़के गुरु आत्मरक्षा करवावे. पीठै तीन वेर नवकारमंत्रसे मंत्रके चोटीके गांठ देवे तथा तीन नवकार गुणके सब आत्रियाके कानामें फूंक देवे. इतनी विधी तो हरकोइ पूजा प्रतिष्ठा मंरुलादिकमें आत्रियोंको प्रथम अवस्य कराणी चाहिये. पीठै मंरुलजीमें अधिष्टायक जो देव देवी होय उसकी पूजा करावे अष्टङ्ग्य चढ़ावे. पीठै चंपेलीके तेलमें हिंगलू वा सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजी की पूजा करे, चांदीके वरक या मालीपाना चढ़ावे, अंतर चढ़ावे, फूल धूप नैवद्य फल जल शोकरङ्ग्य इत्यादि सर्वङ्ग्य (उँ क्षेत्रपाला यनमः) एता धोलता हुवा चढ़ावे. पीठै मंरुलजीके दहणे तरफ १० दिग्पालके पट्टेकी आपना करे. अकेक दिग्पालकी पूजा पढ़के जल चंदनादि सर्व ङ्ग्य चढ़ावे. नागरबेलके पांन समेत दसोंकी पूजा पढ़के ऊपर लालवस्त्र मोलीसे बांधे. आगे फेर सर्व द्रव्य चढ़ाके दीपक करै. पीठे बायें तरफ नवग्रहके पट्टेकी आपना कर पूर्वोक्त काव्य पढ़के इसी मुजब पूजा करै.) पीठे सर्व आत्रिया कूं १८ स्तुतीसे देववंदावे.

अदारे स्तुतिका देववंदाणेकी विधी लिखते हैं ॥ पड़ली इरियाचही यन्त्रिकमें व्यार नवकारका काउसग कर लोगस्त कहे. नीचे बैठके दहेणागोमा धरतीपर रख के मावागोमा नमीजूत करके चैत्यवंदन करै,

नमोऽनु० कइके अरिहंतचेइयाणं० वंदणवत्ति० अन्ननु०
 एक नवकारका काउसग्ग करै, नमोईत् तिइ० कइके यईहि
 मनादेव शुइकी पहली गाथा कहे ॥ लोगस्स० वदण० अन्ननु० ए
 नवकारका काउसग्ग इस्स शुईकी दुसरी गाथा कहे. पु
 रवरदी० वंदणवत्ति० एक नवकारका काउसग्ग० शुईकी तीसरी
 गाथा कहे. तिइयाणंनुइ० वेयावच्चगरा० वंदणव० एक नवकारका
 काउसग्ग शुईकी ४थी गाथा कहे. पीठै बैठके नमोऽनु० कइके खम
 हो के श्रीशांतिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थ करैमिकाउसग्गं वंदण
 व० अन्ननु० १ नवकारका काउसग्ग कर० ॥ रोगशोगादिजिउंपै र
 जितायजितारये नमः श्रीशांतयेतस्मै विहितानतशांतये ५ (ततः
 श्रीशांतिदेवतानिमित्तंकरैमिकाउसग्गं० १ नवकारका काउसग्ग)
 ॥ श्रीशांतिजिनज्जाय ज्जव्यायसुखसंपदं श्रीशांतिदेवतादेया दशांति
 मपनीयते ६ (ततः श्रीश्रुतदेवतानिमित्तं०) सुवर्णशालनीदेयात्
 द्वादशांगीजिनोप्पवा श्रुतदेवीसदामह्य मशेषश्रुतसंपदं॥७॥ (ततः श्री
 सुवर्णदेवताआराधनार्थं०) चतुर्वर्णायकीस्तुति १ गाथा कहे ॥ (ततः
 क्षेत्रदेवतानिमित्तं०) यासांक्षेत्रगतास्संति १ गाथा कहे ॥ ९ ॥
 (ततः श्रीअंविक्कादेवतानिमित्तं०) अंवानिहितमिंधामे सिद्धुद्धसम
 न्विता सितोसिंदेस्थितागौरी वितनोतुसमीहितं ॥ १० ॥ (ततः श्री
 पद्मावतीदेवतानिमित्तं०) धराधिपतिपत्नीया देवीपद्मावतीसदा कुशे
 पद्भवतःसामां पातुफुल्लत्फणावली ॥ ११ ॥ (ततः श्रीचक्रेश्वरीदे
 वतानि०) चंचश्चक्रधराचारु प्रवालदलसन्निजा चिरंचक्रेश्वरीदेवी
 मंदतानिवज्जाञ्चमां ॥ १२ ॥ (ततः श्रीअच्युतादेवतानि०) खम्वे
 टककोदंरु वाणपाणिस्तमित्युतिः तुरंगगमनाच्युता कल्याणानिकरो
 तुमे ॥ १३ ॥ (ततः श्रीकुवेरदेवतानि०) मथुरापुरीसुपार्थ श्री
 पार्थस्तपरकका श्रीकुवेरानंगारुढा सतांकावतवोज्ञयात् ॥ १४ ॥

(ततः श्रीब्रह्मदेवतानिमित्तं करेमि) ब्रह्मशांतिसमाप्ताया दपाय
 द्वीरसेवकः श्रीमत्सत्सपुरेसत्या येनकीर्तिःकृतानिजः ॥ १५ ॥
 (ततः श्रीगोत्रदेवतानिमि०) यागोत्रपालयत्येव सकलापायतः स
 दा श्रीगोत्रदेवतारक्षां शंकरोतुनतांगिरां ॥ १६ ॥ (ततः श्रीशक्र
 दित्तमस्तदेवतानिमि०) श्रीशक्रप्रमुखापक्षा जिनशासनसंस्थिता
 देवादेव्यस्तदन्पेपि संघरक्षंत्वपायतः ॥ १७ ॥ (ततः श्रीसिद्धार्थ
 का श्रीशासनदेवतानि० च्यारखोगस्तको कान्तस्सगकर स्तुति
 कहे) श्रीमद्भिमानमारुढा यक्षमातंगसेविता सामांसिद्धायिकापात्
 चक्रेचापेपुधारणी ॥ १८ ॥ लोगस्त कहके बैठे चैत्यवं० नमोब्रु
 जयवीरराय पर्यंत कहै ॥ इस तरे १८ स्तुतिसे देववांछा विधि

॥ अथ मंडल प्रतिष्ठाविधिः ॥

॥ प्रथम दोनों तरफ मौली सूत्रकी बत्ती जगाके घृतका दी
 पक करै, इन दोनों दीपकको चार प्रहर अखंड रखै (पीठे) से
 ने चांदी बगेर के कलसमें अबोटजल भरके सोनवाणी करै, हाथमें
 कलस लेके सात नवकार गुणै ॥ ॐ ह्रीं जीरावलापार्श्वनाथरक्षांकुठः
 स्वाहा ॥ इस मंत्रसे सात बेर जलको मंत्रके मंडलजीके चारों तरफ
 फ धारा देवे, ऊपर जरा ठींटा देकर पवि करै, धूपखेचै (पीठे)
 नवतारी मोलीसूत्रका साढ़ातीन आंटा मंडलजीके बाहर करदेवे
 पूर्वोक्त मंत्रसे मंत्रके मोली तथा मंडल मरोमाफली चारुं तरफ
 बांधे (पीठे) केसरकी कटोरी हाथमें लेके ॥ ॐ आँ ह्रीं श्री अर्द्धतेनमः ॥
 इस मंत्रसे मंत्रके मंडलके ऊपर केसरका ठींटा देवे (ऊपर) च
 वल्लोंको साधियो करै, टीकीदेवे, मंडलके अगामी साधिया चार
 लोंका वा नंदावर्च करके नातेर रुपिया ऊपर जेट धरै, (पीठे)
 केशरचंदन लेकर मंडलजीके चारों तरफ तीन रेखा आलेखन क
 रै ॥ (पीठे) वासुदेव पुष्प हाथमें लेके ॥ ॐ जूगंतीजूतधात्रीविश्व

धारैनमः ॥ इस मंत्रसे सात बेर मंत्रके मन्त्रजूमि तथा पीठकी
पूजा करै, फेर आचार्यगुरु वासकेप हाथमें लेके ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ
त्पीठायनमः ॥ इस मंत्रसे सात बेर मंत्रके मन्त्रपीठकी पूज
करे (पीठै) स्नात्रिया हाथमें पुष्प चावल ले लेके तीन बेर मन्त्र
कों बधावे, नीचे चावलोंका साधिया करके रुपिया नालेर थापन
कों धरे (पीठै) स्नात्रिया मंदरके नीतरसे प्रतिमाजी लायके त्रि
गम्बेके सिंहासण पर मंत्र पढके थापन करै. (स्थापनमंत्र) ॥ ॐ न
मो अर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेष्ठिने दिग्गुमरी परिपूजिताय च
तुषष्टिसुरासुरेण्डसेविताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्यमहिताय अत्रपीठेति
ॐ स्वाहाः ॥ इस मंत्रको ७ बेर पढके नव प्रतिमा वा एक प्रतिमा
स्थापन करै इस तरे मन्त्रप्रतिष्ठा करके पीठै सिद्धचक्रपूजा सरू करै।

॥ अथ सिद्धचक्र पूजा ॥

॥ प्रथम एक रकेवीमें सपेद गोटा, सपेद वस्त्र, सपेद धजा,
७ कर्कतनरत्न, ३४ हीरा, पुष्प अक्षत फल नैवद्य दीप धूप हाथ-
में ले के अरिहंतपदकी पूजा पढै (यथा) अथाष्टदलमध्याब्ज क-
र्णिकायां जिनेश्वरान् आविर्जूनोत्तसद्बोधा नाव्रतः स्थापयाम्यहं ॥
॥ १ ॥ निःशेषदोषेण धूमकेतुः नपारसंसारसमुद्रसेतून् यजैतमस्ता
तिशयैकदेतून् श्रीमज्जिनानां बुजकर्णिकायां ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह
प्रयोनमः स्वाहा. (इस मंत्रकूं बोलके अर्हत्पदकी पुजा करै, अपने २
जगे सर्व द्रव्य चढावै, पीठै रकेवीमें लालगोटा, लालधजा लालव
स्त्र, ७ माणकरत्न, ३१ मूंगा, अष्ट द्रव्य लेके सिद्धपूजा पढै (यथा)
तस्य पूर्वदले सिद्धान् सम्पक्तादिगुणात्मकान् निःश्रेयसंपदप्राप्तान् नि
दधेज्जक्तिनिर्जरः ॥ ३ ॥ तत्पूर्वपत्रे गतितः प्रणष्टः क्षुराष्टकर्ममधिग
म्यशुद्धि प्राप्तान्नरान्सिद्धिमनंतबोधान् सिद्धान् यजे शांतिकरान्नराणां
॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेष्ठिने दिग्गुमरी परिपूजिताय च
तुषष्टिसुरासुरेण्डसेविताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्यमहिताय अत्रपीठेति
ॐ स्वाहाः ॥ इस मंत्रको ७ बेर पढके नव प्रतिमा वा एक प्रतिमा
स्थापन करै इस तरे मन्त्रप्रतिष्ठा करके पीठै सिद्धचक्रपूजा सरू करै।

पूजा करै, सर्व द्रव्य चढावै इति ॥ (पीठै) रकेजीमें पीला गोटा,
 पीली घजा, पीलावस्त्र, ५ गोमेदकरत्न, ३६ सोनेकाफूल, जलादि
 सर्व द्रव्य ले के पूजा पढै (यथा) स्थापयामिततःसूरीन् दक्षिण
 स्मिन्उत्तरेमले चरतःपंचधाचारान् पटत्रिसत्युणैर्युतान् ॥ ५ ॥ सू
 रीसदाचारविचारसारा नाचारयंतः स्वपरान्यथेष्टं उग्रोपसर्गैरानवा
 रणार्थं मन्त्र्यर्चयाम्पकृतगंधधूपैः॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं सूरीज्योनमःस्वा
 दा (दक्षिणादिसकी तरफ आचार्य थापना पूजा करै इति ॥ पीठै)
 हरागोटा, हरीधजा, हरवस्त्र, मूंगकालहु, ४ इंद्रनील, १५ मरकतप
 न्ना, सर्व द्रव्य लेके खना रहे, उपाध्याय पद पूजा पढै (यथा)
 द्वादशांगश्रुताधारान् शास्त्राध्ययनतत्परान् निवेशयाम्युपाध्यायान्
 पवित्रेष्वभिमेदले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशंप्रशस्त्यै पठंतिचेन्या
 न्यपिपाठयंति अध्यापकस्तान्पराप्जपत्रै स्थितान्पवित्रान्परिपूज
 यामि ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेज्योनमः स्वादा (पश्चिमदि
 शाकी तरफ उपाध्यायपदकी थापना पूजा करै इति ॥ पीठै)
 स्यामगोटा, स्यामवस्त्र, स्यामघजा, उरुदकालहु, ५ राजपट्ट, २७
 अरिष्टरत्न, जलादि सर्व द्रव्य ले के साधूपदकी पूजा पढै (यथा)
 व्याख्यादिकर्मकुर्वाणान् शुभ्रध्यानैकमानसान् उदकपत्रगतानवारान्
 साधुवासीसमुव्रतान् ॥ ९ ॥ वैराग्यमंतर्वचसिप्रसिद्धं सत्यंतपोद्वा
 दशधाशरीरे येषामुदक्यवगतान्सुकृतान्पवित्रान् साधून्सदातान्प
 रिपूजयामि ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सर्वसाधुज्योनमः स्वादा ॥ ५ ॥
 (उत्तरदिसाकी तरफ साधूपदकी थापना पूजा करै इति ॥
 पीठै) सपेदगोटा, सपेदघजा, सपेदवस्त्र, ६७ मोती, सर्व द्रव्य
 हाथमे ले के खना रहे काव्य पढै (यथा) जिनेंद्रोक्तमनश्चक्षुः, ल
 क्षणेदर्शनेयजे ॥ मिथ्यात्वमयनंशुद्धं न्यस्तमीशानसदले ॥ ११ ॥
 ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनायनमः स्वादाः (ईशानकूलमें दर्शनपदकी

थापना पूजा करै इति ॥ पीठै) ५१ मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा,
 श्वेतवस्त्र, चावलोकालक्षु, आदि सर्व द्रव्य ले खम्हा रहै ॥ काव्य
 पढै (यथा) मशेषद्रव्यपर्याय, रूपमेवावज्ञासकं ॥ ज्ञानमाप्नेयप
 त्रस्थं पूजयामिहितावहं ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्ज्ञानायनमः
 स्वाहा ॥ ७ ॥ (अग्निकूणकी तरफ ज्ञानपदकी थापना पूजा करै ॥
 इति ॥) फेर) रकेवीमें ७० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा, श्वे
 तवस्त्रादि सर्व द्रव्य ले के खम्हा रहे. काव्य पढै (यथा) सामायि
 कादिजिज्ञैदै, श्वारित्रं चारुपंचधा ॥ संस्थापयामिपूजार्थं, पत्रैर्दनेरु
 तेक्रमात् ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्चारित्रायनमः स्वाहा (नैरु
 तकूणकी तरफ चारित्रपदकी थापना पूजा करै इति ॥ ८ ॥)
 पीठै) रकेवीमें ५० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा वस्त्रादि सर्व
 द्रव्य लेके काव्य पढै (यथा) द्विधाष्टादशधाजिन्नं, पूतेपत्रतपस्व
 यं ॥ निधाययामिज्जत्तपात्र, वायव्यादिशिशर्मदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं
 श्रीं सम्यग्तपसेनमः स्वाहाः (वायव्यकूणकी तरफ तपपदकी था
 पनापूजा करै इति ॥ अथअर्थ) निःस्वेदत्वादिविव्यातिशयम
 यतनन्श्रीजिनेद्रान्सुसिद्धान्, सम्यक्तादिप्रकृष्टाष्टकगुणजृदाचार
 साराश्वसूरीन् ॥ शास्त्राणिप्राणिरक्षाप्रवचनरचनासुंदराण्यादिसंज्ञं
 स्तत्सिद्धयैपाठकानांयतिपतिसहिता नर्चयाम्यर्घदानै ॥ १५ ॥ इत्थं
 अष्टदलंपद्मं, पूरयेदर्ददादिजिः ॥ स्वाहांतैप्रणवाद्यश्च, पदैर्विघ्ननिवृत्तं
 ये ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह असिआनसा सम्यग्दर्शन ज्ञान चा
 रित्र तपसेज्यो ह्रीं श्रीं अर्ह परमेष्ठिन परमनाथ परमदेवाधिदेव
 परमार्हन् परमानंतचतुष्टय परमात्मनेतुज्यंनमः (इति मूलामंत्र)
 इति सिद्धचक्र प्रथम बलय पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय बलय पूजा ॥

पहिले बलयमें एक तो बीचमें चार दिशिमें चार विदि

तामि एतै अटदल कमलके आकार नव कोठे मंजुलके मध्य जाग
 में होय उनोकी पूर्वोक्त प्रकार पूजा करावै (पीठे) दूसरे वलयमें
 बूनीके आकार १६ कोठा होय (जिसमें) एकैक कोठाके अनं
 तर आठ कोठोमें अवर्गादि आठ वर्ग स्थापन करे (ओर) एकैक
 कोठा बीचमें खाली रहा हे उत्तमें अनाहतपद छै हूँ। णमो अरि
 हंताणं) एसा पद स्थापन करै (पीठे) एक रकेयोमें मिश्री ल-
 वंग (तथा) एक रकेयीमें मोठी दाखां ले के खना रहे, अनाहत-
 पदमें मिश्री लवंग चढावै ओर आठ वर्गमें दाखां चढावै (यथा)
 (छै हूँ। णमो अरिहंताणं) मिश्री लोंग चढाणा ॥ अ आ इ ई
 उ ऊ ऋ ॠ नृ ए ऐ उ औ अं अः (छै हूँ। स्वर वर्गायनमः)
 (इहां) १६ दाख चढावै ५ (छै हूँ। णमोअरिहंताणं) मिश्री
 लोंग ३ क ख ग घ ङ (छै हूँ। व्यंजनवर्गायनमः) १६ दाख
 चढावै ४ (छै हूँ। णमोअरिहंताणं) ५ च ठ ज ञ झ (छै हूँ।
 चवर्गायनमः ॥ ६ (छै हूँ। णमोअरिहंताणं) ७ ट ठ न ढ ण
 (छै हूँ। टवर्गायनमः) ८ (छै हूँ। णमोअरिहंताणं) ९ त थ द
 ध न (छै हूँ। तवर्गायनमः) १० (छै हूँ। णमोअरिहंताणं) ११
 प फ ब ज म (छै हूँ। पवर्गायनमः) १२ (छै हूँ। णमोअरिहंता-
 णं) १३ य र ल व (छै हूँ। यवर्गायनमः) १४ (छै हूँ। णमो-
 अरिहंताणं) १५ श ष स ह (छै हूँ। शवर्गायनमः) १६ पहिले
 अवर्गसे प वर्ग तक वर्ग प्रति सोलेश दाख चढावै सब ए६
 (ओर) य र ल व १ श ष स ह २ इण दो वर्गोंमें ६४ चोसठ
 दाख चढावै इति ॥ दूसरा वलय पूजा ॥ २ ॥

॥ (अब तीसरा वलयमें) चार दिश चार विदिशिमें आठ
 परमेष्ठिपद स्थापन निमित्त आठ कोठा करै इस आठ कोठाके
 बीचमें बलाका तीन देवे तीनु बलाकामे २४ खाना होय एकै

क खानेमें २ दोय २ दोय लब्धिपद स्थापन करणेतें चौबीस धरो
में ४८ लब्धिपद होय स्थापन कर पूजन करणा ॥

॥ अथ लब्धिपद पूजनविधि ॥

आठ परमेष्टीपदमें (उँ ह्रीं परमेष्टिनेनमः स्वाहा) एसा
८ वेर कदके ८ बीजोरा चढावै, उर लब्धिपदका नाम बोलके खा
रका ४८ चढावै (यथा) उँ ह्रीं अर्हणमोजिणाणं ॥ १ ॥ उँ ह्रीं
अर्हणमोउदिजिणाणं ॥ २ ॥ उँ ह्रीं अर्हणमोपरमोदिजिणाणं ॥
॥ ३ ॥ उँ ह्रीं अर्हणमोसबोदिजिणाणं ॥ ४ ॥ उँ ह्रीं अर्हणमोअ
णंतोदिजिणाणं ॥ ५ ॥ उँ ह्रीं अर्हणमोकुब्बुदीणं ॥ ६ ॥ उँ ह्रीं
अर्हणमोवायवुदीणं ॥ ७ ॥ उँ ह्रीं अर्हणमोपयाणुसारीणं ॥ ८ ॥
उँ ह्रीं अर्हणमोआसीविसाणं ॥ ९ ॥ उँ ह्रीं अर्हणमोदिठिविसाणं ॥
॥ १० ॥ उँ ह्रीं अर्हणमोसंजिन्नसोयाणं ॥ ११ ॥ उँ ह्रीं अर्हणमोस
यंसंबुद्धाणं ॥ १२ ॥ उँ ह्रीं अर्हणमोपत्तेयवुद्धाणं ॥ १३ ॥ उँ ह्रीं अ
र्हणमोबोदिबुद्धीणं ॥ १४ ॥ उँ ह्रीं अर्हणमोउज्जुमईणं ॥ १५ ॥
उँ ह्रीं अर्हणमोविज्जलमईणं ॥ १६ ॥ उँ ह्रीं अर्हणमोवसपूर्वीणं ॥ १७ ॥
उँ ह्रीं अर्हणमोचउदसपूर्वीणं ॥ १८ ॥ उँ ह्रीं अर्हणमोअवंगनिमत्तकु
सत्ताणं ॥ १९ ॥ उँ ह्रीं अर्हणमोविज्जवणइत्तिपत्ताणं ॥ २० ॥ उँ ह्रीं
अर्हणमोविक्कादराणं ॥ २१ ॥ उँ ह्रीं अर्हणमोचारणलक्षीणं ॥ २२ ॥
उँ ह्रीं अर्हणमोपप्पासमणाणं ॥ २३ ॥ उँ ह्रीं अर्हणमोआगासगामी
णं ॥ २४ ॥ उँ ह्रीं अर्हणमोखीरासवेणं ॥ २५ ॥ उँ ह्रीं अर्हणमोस
प्पियासवाणं ॥ २६ ॥ उँ ह्रीं अर्हणमोमहुआसवाणं ॥ २७ ॥ उँ ह्रीं अ
र्हणमोअमियासवाणं ॥ २८ ॥ उँ ह्रीं अर्हणमोसिद्धायणाणं ॥ २९ ॥
उँ ह्रीं अर्हणमोज्ञयवयामहाइमहावीरवद्धमाणबुद्धरितीणं ॥ ३० ॥
उँ ह्रीं अर्हणमोउगातवाणं ॥ ३१ ॥ उँ ह्रीं अर्हणमोअस्कीणमहाण
सियाणं ॥ ३२ ॥ उँ ह्रीं अर्हणमोवद्धमाणाणं ॥ ३३ ॥ उँ ह्रीं अर्हण

मोदित्तवाणं ॥ ३४ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोत्ततवाणं ॥ ३५ ॥ ॐ-ह्रीं अ
 र्हणमोमहातवाणं ॥ ३६ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोघोरतवाणं ॥ ३७ ॥ ॐ-
 ह्रीं अर्हणमोगोरगुणाणं ॥ ३८ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोघोरपरिक्रमाणं ॥ ३९ ॥
 ॐ-ह्रीं अर्हणमोघोरबंजयारीणं ॥ ४० ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोआमोसहि
 पत्ताणं ॥ ४१ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोखेलोसहिपत्ताणं ॥ ४२ ॥ ॐ-ह्रीं अ
 र्हणमोजलोसहिपत्ताणं ॥ ४३ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोविण्णोसहिपत्ताणं ॥
 ॥ ४४ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोसघोसहिपत्ताणं ॥ ४५ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोम
 णवलीणं ॥ ४६ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोवयणवलीणं ॥ ४७ ॥ ॐ-ह्रीं अर्ह
 णमोकायवलीणं ॥ ४८ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमपाललब्धिप्रेदज्ज्योनमः ॥ इत्त
 तरे लब्धिपदका नाम बोल २ के तीजे चोथे पांचमें बलयमें २० खारका
 चढ़ावै ॥ (पीठे) मंगलजीके गलेमें ह्रींकारजी स्थापन किया हे
 (जहांसे) साढ़ातीन नवलाका मंगलजीके चोतरफ देके नीचे
 (क्रों) एसा अक्षर लिखा हे (जिसके) प्रथम बलयमें आठ दि-
 शायें आठ गुरुपादका स्थापन करके ८ आठ दार्मिकफल चढ़ाव
 (यथा) ॐ-ह्रीं अर्हत्पाङ्कजाज्योनमः ॥ १ ॥ अनारचढ़ावै ॥ ॐ-ह्रीं ति
 द्दपाङ्कजाज्योनमः ॥ २ ॥ ॐ-ह्रीं आचार्यपाङ्कजाज्योनमः ॥ ३ ॥ ॐ-
 ह्रीं गुरुपाङ्कजाज्योनमः ॥ ४ ॥ ॐ-ह्रीं परमगुरुपाङ्कजाज्योनमः ॥
 ॥ ५ ॥ ॐ-ह्रीं अष्टगुरुपाङ्कजाज्योनमः ॥ ६ ॥ ॐ-ह्रीं अनंतगुरुपाङ्क
 जाज्योनमः ॥ ७ ॥ ॐ-ह्रीं अनंतानंतगुरुपाङ्कजाज्योनमः ॥ ८ ॥ ॐ-
 ह्रीं अष्टगुरुपाङ्कजाज्योनमः स्वाहाः ॥ इत्त तरे ठेके बलयमें ८ दा-
 र्मिक चढ़ावै (पीठे) सातमा बलयमें आठों दिसाओं जयादिक ८
 देवीको स्थापन करके ८ नारंगी चढ़ावै (यथा) ॐ-ह्रीं जयायै नमः
 स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ-ह्रीं जंजायै नमः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ-ह्रीं विजयायै नमः
 स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ-ह्रीं शंजायै नमः स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ-ह्रीं जयंत्यै नमः
 स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ-ह्रीं मोहायै नमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ-ह्रीं अपराजिता

यैनमः स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं अंधायैनमः स्वाहा ॥ ८ ॥ (इती
 तरे) सातमें वलयमें ८ नारंगी चढ़ावै (पीठे) आठमें वलयमें
 १६ बिद्यावैवीयोकी स्थापना करके चांदीके वर्ग लपेटी १६ सुपा
 री चढ़ावै (यथा) ॐ ह्रीं रोहण्यैनमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं प्रहसैनमः ॥ २ ॥
 ॐ ह्रीं वज्रशृंगलायैनमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं वज्रांकुशायैनमः ॥ ४ ॥ ॐ
 ह्रीं चक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं पुरुषदत्तायैनमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं
 काष्ठ्यैनमः ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं माहाकाष्ठ्यैनमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं
 गौर्यैनमः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं गंधार्यैनमः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं सर्वात्म
 महाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं मानव्यैनमः ॥ १२ ॥
 ॐ ह्रीं वैरोद्यायैनमः ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अश्रुतायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं
 मानस्यैनमः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं माहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इस तरे
 आठमा वलयकी बोलके वरक समेत सुपारी चढ़ा के पूजा करै पी
 ठे नवमें वलयके बायें तरफ शासनदेवीयां ॥ १४ की स्थापना
 कर पूजा करै ॥ १४ पूंगीफल चढ़ावै (यथा) ॐ चक्रेश्वर्यैनमः ॥ १ ॥
 ॐ अजितवलायैनमः ॥ २ ॥ ॐ उरितायैनमः ॥ ३ ॥ ॐ काष्ठ्यैनमः
 ॥ ४ ॥ ॐ महाकाष्ठ्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐ श्यामायैनमः ॥ ६ ॥ ॐ शांतायैनमः
 ॥ ७ ॥ ॐ नृकुट्टियैनमः ॥ ८ ॥ ॐ सुतारकायैनमः ॥ ९ ॥ ॐ अशोकायैनमः
 ॥ १० ॥ ॐ मानव्यैनमः ॥ ११ ॥ ॐ चंदायैनमः ॥ १२ ॥ ॐ विदि
 तायैनमः ॥ १३ ॥ ॐ अंकुशायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ कंदप्पाययिनमः
 ॥ १५ ॥ ॐ मिर्वाण्यैनमः ॥ १६ ॥ ॐ वलायैनमः ॥ १७ ॥ ॐ धार
 ण्यैनमः ॥ १८ ॥ ॐ वरणाप्रियायैनमः ॥ १९ ॥ ॐ नरदत्तायैनमः
 ॥ २० ॥ ॐ गांधार्यैनमः ॥ २१ ॥ ॐ अंत्रिकायैनमः ॥ २२ ॥ पद्माव
 त्यैनमः ॥ २३ ॥ ॐ सिद्धायिकायैनमः ॥ २४ ॥ इति ॥ दक्षिणे त
 रफ २४ यक्षराजकी स्थापना करै वरकलपेटी २४ सुपारी चढ़ावै ॥
 (यथा) ॐ अक्षयान्त्यैनमः ॥ २४ ॥ ॐ गार्वायैनमः ॥ २५ ॥ ॐ गो

मेघायनमः ॥ २२ ॥ नैऋकुटयैनमः ॥ २१ ॥ उवुरुणायनमः ॥
 २० ॥ नैकुवेरायनमः ॥ १९ ॥ नैयहराजायनमः ॥ १८ ॥ नैगंघ
 र्यायनमः ॥ १७ ॥ नैगरुणायनमः ॥ १६ ॥ नैकिन्नरायनमः ॥ १५ ॥
 नैपातालायनमः ॥ १४ ॥ नैपण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ नैकुमाराय
 नमः ॥ १२ ॥ नैयहराजायनमः ॥ ११ ॥ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥
 नैअजितायमः ॥ ९ ॥ नैविजयायैनमः ॥ ८ ॥ नैमातंगायनमः
 ॥ ७ ॥ नैकुसुमायनमः ॥ ६ ॥ नैतुंबुरुयैनमः ॥ ५ ॥ नैपक्ष्माय
 कायनमः ॥ ४ ॥ नैत्रिमुखायनमः ॥ ३ ॥ नैमहायकायनमः ॥ २ ॥
 नैगोमुखायनमः ॥ १ ॥ इति ॥ पीठे चार दिशामें ४ द्वारपालकी
 स्थापना कर के पीला बलवाकुल चढ़ावे (यथा) नैकुमुदायनमः
 ॥ १ ॥ पूर्वदिशि ॥ नैअंजनायनमः ॥ २ ॥ दक्षिणदिशि ॥ नैवामनाय
 नमः ॥ ३ ॥ पश्चिमदिशि ॥ नैपुष्पदंतायनमः ॥ ४ ॥ उत्तरदिशि ॥
 पीठे चार विदितकी तरफ चार वीरपदमें काले बलवाकुल चढ़ावै
 (यथा) नैमाणज्जायनमः ॥ १ ॥ नैपूर्णज्जायनमः ॥ २ ॥ नैक
 पिलायनमः ॥ ३ ॥ नैपिंगलायनमः ॥ ४ ॥ (इस तरे दसमें बल
 यमें आठु दिशामें ४ द्वारपाल ४ वीर स्थापन करै पीठे पूर्ण कल
 सके आकार ऊपरसे कियाजया सिद्धचक्रजीके गलेके ठिकाणे ठि
 काणे नवनिधान पढ़े तब सोने चांदीके कलसादिकोंमें यथाशक्ति
 रोकनाणा मालके स्थापन करै) (यथा) नैनैसर्पकायनमः ॥ १
 ॥ नैपांडुकायनमः ॥ २ ॥ नैपिंगलायनमः ॥ ३ ॥ नैसर्वरत्नायनमः
 ॥ ४ ॥ नैमहापद्मायनमः ॥ ५ ॥ नैकालायनमः ॥ ६ ॥ नैमहा
 कालायनमः ॥ ७ ॥ नैमाणवायनमः ॥ ८ ॥ नैशंखायनमः ॥
 ९ ॥ (इस तरे मुखस्थानकपदे ९ कलस स्थापन करै ॥ पीठे
 कोदलेका फल हाथमें ले के दक्षिणनेत्रके बराबर पासमें बंगली
 का आकार किया है (जहां) नैह्रीविमलस्वामिनेनमः १ ॥ एसा

फइकेचढ़ावै ॥ फेर कोइलाफल हाथमें ले के बांयेनेत्रके पास बंग
 लीमें (उँकेत्रपालायनमः) एसा बोलके चढ़ावै २ ॥ पीठे तीसरा
 कोइलाफल) हाथमें ले के नीचै पीँदिके दक्षिणे तरफ बंगलीमें)
 उँचक्रेश्वरैनमः (एसा बोलके चढ़ावै ॥ ३ ॥ (पीठे) चौथा को
 इलाफल हाथमें ले के नीचे पीँदिके बांये तरफ बंगलीमें (उँअप्र
 सिद्धसिद्धचक्राधिष्ठायकायनमः) एसा बोलके चढ़ावै ॥ ४ ॥ (पीठे
 दसूँ दिशामें इँडादिक दस दिग्पालकी स्थापन करै, वणसकेतो अ
 पणा २ वर्ष मुजब वस्त्र नैवद्य पुष्पादि इव्य चढ़ावै अथवा सर्वकों
 एक इव्य सर्व समान चढ़ावै (यथा) उँइंझायनमः ॥ १ ॥ कनक
 वर्ण चंदन केसर चंपो द्राख पीलावस्त्र पांन सुपारी रोकइव्य आ
 दि सर्व इव्य चढ़ावै ॥ (अग्निकूणे) उँअग्नयेनमः ॥ २ ॥ रक्तवर्ण
 का वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ २ ॥ (दक्षिणदिति) उँअमायनमः
 ॥ ३ ॥ काले वर्णका वस्त्रादि इव्य चढ़ावे ॥ ३ ॥ (नैऋतकूणे)
 उँनैऋतायनमः ॥ ४ ॥ धूसरवर्णका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै (पश्चि
 मदिश) उँवरुणायनमः ॥ धूसरवर्णका सर्व इव्य चढ़ावै ५ (वा
 यव्यकूण) उँवायवेनमः ॥ ६ ॥ नीलवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य च
 ढावै ॥ ६ ॥ (उत्तरदिति) उँकुबेरायनमः ॥ ७ ॥ सपेदव
 र्णका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै ॥ ७ ॥ (ईशानकूण) उँइशाना
 यनमः ॥ ८ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै ॥ ८ ॥
 (अघोदिति) उँनागायनमः ॥ ९ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक इव्य
 चढ़ावै ॥ ९ ॥ (उर्द्धदिशि) उँब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ सपेदवर्णका
 वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढ़ावै ॥ १० ॥ इस तरे दस दिग्पालका स्था
 पन पूजन करै ॥ (पीठे यंत्रके पीँदीके स्थानक नव कोठा किया
 जया हे जहां नवग्रहकी स्थापन पूजन करै (यथा) उँसूर्यायनमः
 ॥ १ ॥ (नीचदिशि) उँवासुवायनमः ॥ २ ॥ उँसोमायनमः ॥ ३ ॥

सपेदवर्णवस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ २ ॥ उँजोभायनमः ॥ ३ ॥ लो
 सरंगवस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ३ ॥ उँवुषायनमः ॥ ४ ॥ मृंगेरंग
 का वस्त्रादि द्रव्य चढ़ावै ॥ ४ ॥ उँवृद्धस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ पीलेवर्ण
 वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ५ ॥ उँशुकायममः ॥ ६ ॥ सपेदवर्णनंदोल
 वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ६ ॥ उँशनेश्वरायनमः ॥ ७ ॥ नीलेरंग
 का वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ७ ॥ उँराहवेनमः ॥ ८ ॥ कालेरंग
 का वस्त्रादि द्रव्य चढ़ावै ॥ ८ ॥ उँकेतवेनमः ॥ ९ ॥ ठींटरंग व
 स्त्रादि द्रव्य चढ़ावै ॥ ९ ॥ इस तरे नीचै नवग्रहकी स्थापनपूजा
 करै, पीठै स्नात्र नवपदजीकी पूजा पढ़ावै चैत्यवंदन कर शुद्ध क
 इकर नवपद स्तवन कहे ॥ पीठै गुरु पास आकर ज्ञानपूजा कर
 चासक्षेप लेवे ॥ गुरुपूजा वस्त्रपात्रसें करै पीठै यथाशक्ति साथ
 मों वास्तव्य करै ॥ इति मंगल पूजनविधि ॥ जाणना चाहिये
 (जब) कोइ श्रीमंत छलीकी तपस्या करै तब तो ठए महीने मं
 रल पूजा विस्तार विधीसे करता रहै ॥ ४ ॥ बरसे तप पूरण
 जये बाद छछव के साथ मंगलपूजा कराके नव२ उपगणोसें उ
 द्यापन करै, जलजात्रादि अर्घाईमदोछव कर धर्मशालासिपागारै
 (फेर) देवका देवखाते, ज्ञानका ज्ञानखाते, गुरुका गुरुखाते च
 ढावै, रुद्धिरहित जावसें यथाशक्ति रोकद्रव्य चढ़ावै (छर) पंचा
 यंती संघकी तरफसें मंगलीकके वास्ते मंगलपूजादिक नवपदपूजा
 अवश्य विधिसंयुक्त करता रहै ॥ इतिउद्यापनविधि ॥

॥ अथ सर्व तपस्याविधि लिख्यते ॥

॥ अथ सत्तर सो को गुणनो लिख्यते ॥

॥ अथ जंबूद्वीपमें प्रथम महाविदेरे जिननाथकी प्रथम पंक्ती ॥ १ ॥

जपदेवस्वामीसर्वज्ञायनमः ॥ १ ॥ करणजस्वामीसर्वज्ञाय
 नमः ॥ २ ॥ श्रीलक्ष्मीनाथसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीअनंतनाथसर्वज्ञा

गनमः ॥ ४ ॥ श्रीगंगाधरसर्वज्ञायनमः ॥ ५ ॥ श्रीविशालचंद्रसर्व
 ज्ञा० ॥ ६ ॥ प्रियंकरनाथसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ अमारिदत्तसर्वज्ञा० ॥
 ॥ ८ ॥ श्रीरुष्णनाथसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ श्रीगुणगुप्तसर्वज्ञा० ॥ १० ॥
 श्रीपद्मनाभसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीजलंधरस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥
 श्रीयुगादित्यसर्वज्ञायनमः ॥ १३ ॥ श्रीवरदत्तसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥
 श्रीचंद्रकेतुसर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ श्रीमहाकायसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ श्री
 अमरकेतुसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः ॥ १८ ॥
 श्रीहरिहरसर्वज्ञायनमः ॥ १९ ॥ स्तम्भेन्द्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २० ॥
 श्रीशान्तिरुतसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ अनंतरुतसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ गजेंद्र
 प्रज्ञसर्वज्ञाय० ॥ २३ ॥ सागरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ महेश्वरदत्त
 सर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ लक्ष्मीचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ रूपज्ञनाथसर्वज्ञा०
 ॥ २७ ॥ सोमकांतसर्वज्ञाय० ॥ २८ ॥ नेमिचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥
 अजितचंद्रसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ महीधरसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीराजे
 श्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ अथ घातकीखंडे प्रथम महाविदेहे जिननाम्नि ॥ २ पंक्ती ॥

वीरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ ब्रह्मसेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ नीलकांति
 सर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ पूंजकेलीसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ रुग्मिकसर्वज्ञायनमः ॥
 ॥ ५ ॥ खेमंकरसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ भृगांकनाथसर्व० ॥ ७ ॥ मुनिमृ
 त्सिर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ विमलनाथसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ आगमिकसर्वज्ञा०
 ॥ १० ॥ दुक्तितनाथसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ वसुधाधिपसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥
 महल्लनाथसर्वज्ञाय० ॥ १३ ॥ वनदेवसर्वज्ञाय० ॥ १४ ॥ चलंभृत
 सर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ अमृतवाहनसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ पूर्णमेन्द्रसर्व
 ज्ञाय० ॥ १७ ॥ श्रीरेवांतिसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीकल्पशाकसर्वज्ञा०
 ॥ १९ ॥ श्रीनिलनीदत्तसर्वज्ञा ॥ २० ॥ श्रीविद्यापतिसर्वज्ञा ॥
 ॥ २१ ॥ श्रीजानुनाथसर्वज्ञाय० ॥ २२ ॥

॥ २३ ॥ श्रीप्रज्जलसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीविशिष्टसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥
 श्रीजलप्रज्जलसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ २७ ॥
 श्रीकृष्णपालसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीकुम्भगंदसर्व० ॥ २९ ॥ श्री
 ध्वजधरसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीनूतानंदसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीती
 र्थेश्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ३ पातकीखंडे महाविदेहे जिननामानि ॥

॥ धरमवत्सर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीनूमिपतीसर्वज्ञा० ॥ २ ॥
 श्रीमरुदत्तसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीसुमित्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीपेश
 नाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीप्रज्ञानंदसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीपद्माकरसर्व
 ज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीमहाघोषसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीचंद्रप्रज्ञनाथसर्वज्ञा०
 ॥ ९ ॥ श्रीनूमिपालसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीसुमतिपेशसर्वज्ञा० ॥ ११
 ॥ अतिव्युत्सर्वज्ञाय० ॥ १२ ॥ श्रीललितांगसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥
 श्रीतीर्थनूतिसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअरचंदसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसमा
 धिसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ १७ ॥ श्रीमहेंद्रनाथ
 सर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीशशांकनाथसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीजगदीश्वर
 सर्व० ॥ २० ॥ श्रीदेवेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीगुणनाथसर्वज्ञा०
 ॥ २२ ॥ श्रीसद्योतनाथसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीनारायणनाथसर्वज्ञा०
 ॥ २४ ॥ श्रीकपिलनाथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीप्रज्ञाकरसर्वज्ञा० ॥
 २६ ॥ श्रीजिनदीक्षितसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीसकलनाथसर्वज्ञा० ॥
 ॥ २८ ॥ श्रीशिलारनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीवज्रधरसर्वज्ञा० ॥
 ॥ ३० ॥ श्रीसदस्त्राजसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीअशोकनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ४ ॥ पुष्करार्द्रप्रथममहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ श्रीमेघवाहनसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीजोचिकृष्णिकसर्वज्ञा० ॥
 ॥ २ ॥ श्रीमहापुरुषसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीपापहरसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥
 श्रीमृगांकनाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीसूरसिंहसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीज
 गत्पूज्यसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीसुमतिनाथसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमदाम

हेन्द्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्रीश्रमरज्जुतिसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीकुमा
 चंद्रसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीवीरपेणसर्वज्ञायनमः ॥ १२ ॥ श्रीरमणनाथ
 सर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीस्वयंप्रज्ञसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअचलज्जद्रसर्व
 ज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीश्रमरकेतुसर्व० ॥ १६ ॥ श्रीसिद्धार्थसर्वज्ञाय०
 ॥ १७ ॥ श्रीसफलस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीविजयदेवसर्वज्ञाय
 नमः ॥ १९ ॥ श्रीनरसिंहसर्वज्ञाय० २० ॥ श्रीशीतानंदसर्वज्ञाय०
 ॥ २१ ॥ श्रीचंद्रारिकसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीचंद्रातपसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥
 श्रीचंद्रगुप्तसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीदृढरथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीमहा
 रथसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीउमोकनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीप्रद्युम्नना
 थसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीमहातेजसर्वज्ञायनमः ॥ २९ ॥ ओपुष्पकेतु
 सर्वज्ञायनमः ॥ ३० ॥ श्रीकामदेवसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीसमतकेतुस
 र्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ६ ॥ पुष्करार्द्ध द्वितीये महाविदेहे जिननामानि ॥

॥ प्रसन्नचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ महासेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ वज्र
 नाथसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ सुवर्णबाहुसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीकूरचंद्रसर्व
 ज्ञा० ॥ ५ ॥ श्री वयवीर्यसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीविमलचंद्रसर्वज्ञा० ॥
 ७ ॥ श्रीयसोधरसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाबलसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ श्री
 वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीविमलबोधसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीजी
 मनाथसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीमेरुजङ्गलसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीजङ्गलसर्व
 ज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीमुद्गधसदस्त्रसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसुव्रतनाथसर्व
 ज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीहरिचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीप्रतिमाधरसर्वज्ञा०
 ॥ १८ ॥ श्रीअतिश्रेष्ठसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीकनककेतुसर्वज्ञा० ॥
 २० ॥ श्रीअजितवीर्यसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीफलगुप्तनाथसर्वज्ञा०
 २२ ॥ श्रीब्रह्मज्जुतसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीहितकरसर्वज्ञा० ॥
 ॥ श्रीवरुणदत्तसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीयशकीर्तिसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥

नागेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीमहीधरसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ रुतव्र
हनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीमहेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीवर्द्ध
मानसर्व० ॥ ३१ ॥ श्रीसुरेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ६ ॥ पांच भरत पांच एरवत जिननामानि ॥

(जंबुद्वीपेजरतक्षेत्रे जिननामानि) श्रीश्रजिनाथसर्वज्ञा०

॥ १ ॥ (धातकीखंमेप्रथमजरते०) सिद्धांतनाथसर्वज्ञायनमः ॥ २ ॥

(धातकीखंमे द्वितियजरतेजिननाम) करणनाथसर्वज्ञायनमः ॥

॥ ३ ॥ (पुष्करार्द्धेप्रथमजरतेजिननाम) प्रज्ञासनाथसर्वज्ञा० ॥ ४

॥ (पुष्करार्द्धेद्वितियजरतेजिननामः) प्रज्ञावकनाथसर्व० ॥ ५ ॥ (जं-

बुद्वीपेएरवतक्षेत्रेजिननाम) चंद्रनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ६ ॥ (धात

कीखंमेप्रथमएरवतेजि०) जयनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ७ ॥ (धातकीखंमे

द्वितियएरवते) पुष्पदंतसर्वज्ञायनमः ॥ ८ ॥ (पुष्करार्द्धेप्रथमएरव

तेजिनना०) आमादिकसर्वज्ञाय० ॥ ९ ॥ (पुष्करार्द्धेद्वितियएरवतेजि०)

श्रीबलिज्जनाथसर्वज्ञायनमः ॥ १० ॥ इति सत्तर सय तीर्थंकर तपका

शुणना संपूर्ण ॥ ११६ स्थांम, ३० लाल, ३८ नीला, ३६ पीला, ५०

श्वेत, सर्व संख्या १७० ॥

॥ अथ सत्तर सो जिन को स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ स्वस्ति श्री दायक सदा, त्रैसलेष जिनचंद ॥ त-

त्पद नामी कंधरा, कारण तिव सुखकंद ॥ १ ॥ वार्द्धकासरदातणो,

जर धरि समरण शक्ति ॥ सस्युत्तर तत जिनतणी, रघस्युं नुति सु

चि जक्ति ॥ २ ॥ ठे जे द्वीप समस्तने, मध्यमेरु कनकाज ॥

पूर्वापर जवि तेदनें, विजय नामको लाज ॥ ३ ॥ मूलविजय वसु

प्रतिदिशा, कयनामै युगतीस ॥ शीतोदा तरणीतणो, कारण वि

श्वावीस ॥ ४ ॥ खंरु धातकी दूसरो, द्वीप मनोहर तेद ॥ कंचन

गिरि युग ठे तिहां, मन धारो धर नेद ॥ ५ ॥ त्रयतम पुष्कर जां

णिये, द्वीप सकल गुणखांख ॥ अर्थ जाग जसु उत्तमैं, निरि यु
 जलद समान ॥ ६ ॥ ज्ञोन्नवि संख्या विजयनी, प्रति मेरो वत्तस
 ॥ धारो गणित अनुक्रमैं, पष्टयुत्तर शत हींस ॥ ७ ॥ एह अढा
 द्वीपनी, विजयतणो परिमाण ॥ काल चतुर्थ तिहां सदा, ज्ञाप्य
 श्रीजिनज्ञाण ॥ ८ ॥ जिण तीर्थकर वारके, विचरथा जे जिनर
 थ ॥ ते हूं प्रति विजये जणूं, आगमसुं चित लाय ॥ ९ ॥ (हाल
 पारणोकी) ॥ तिण काले ने तिण समे जी, तीर्थकर महाराज ॥ अ
 जित जिनेसर राजता जी, तारण तरण जिहाज ॥ जविकजन प
 रज्यो धर्म सनेह ॥ टेर ॥ १ ॥ अतिशय चौतीस संजुआ जी, वा
 णी गुण पैतीस ॥ लोकालोक प्रकाशता जी, प्रणमत नरसुर ईस ॥
 ज्ञ० ॥ २ ॥ एहवा श्रीजिन वारके जी, एकसो साठ जिनंद ॥ वि
 चरथा महियल बोधता जी, विजय मजार सज्जंद ॥ ज्ञ० ॥ ३ ॥
 पंचर जतरैरवतैं जी, दशमित श्रीजिनराय ॥ विचरै जगजन ता
 रता जी, समरथां संपति आय ॥ ज्ञ० ॥ ४ ॥ ए सत्तर सो जिन
 वरू जी, अतुल सकल गुणखांख ॥ श्यांमवरण सोले कहा जी,
 अकल कला द्युतिवांख ॥ ज्ञ० ॥ ५ ॥ रक्ताकृति त्रिंशत कहा जी,
 नीलवरण वसु तीस ॥ रवि जिम ऊललह ज्ञाधरू जी, कनकवर
 ण वत्तीस ॥ ज्ञ० ॥ ६ ॥ रजत मुक्त पय जलकणा जी, सम सित
 विमल प्रकाश ॥ जविक चकोर प्रमोदता जी, शशि जिम जिन पञ्चा
 स ॥ ज्ञ० ॥ ७ ॥ प्रति जिन व्रत उपवासथी जी, बीस प्रमित
 जपमाख ॥ त्यक्त कषाय शुजातमां जी, घरिये जाव विशाल ॥
 ज्ञ० ॥ ८ ॥ इम ए तप पूरण दुयां जी, उजमणे निज शक्ति ॥
 कीजे श्रीजिनशासने जी, संघ सद्दूनी जक्ति ॥ ज्ञ० ॥ ९ ॥ ए त
 पविधि जवि जे करे जी, प्रेम सहित जिनधर्म ॥ साधन गुण अ
 नुमोदता जी, ते लदे दिव शिव शर्म ॥ ज्ञ० ॥ १० ॥ कलश ॥

संवत् मूनि सर लोक नारद चंड ज्येष्ठ पशुर ए, वदि सप्तमी रवि
दिने हितवद्धन कथनधर जूर ए ॥ गुरु खरतरावर तरणि सन्नि-
ज जैनचंड सनूर ए, ए तवन कीधो जीमगंजे श्रमणचंद कपूर ए
॥ ११ ॥ इति श्रीसत्तर सय जिन स्तवनं ॥

॥ अथ कम्मपयडी को गुणनो लिख्यते ॥

॥ ज्ञानावरणीकर्मकी ५ प्रकृती—मतिज्ञानावरणीरहितायश्री
सिद्धान्तनमः १, श्रुतज्ञानावरणीरहितायश्रीसिद्धान्तनमः २, अवधि
ज्ञानावरणीरहितायश्रीसि० ३, मनपर्यवज्ञानावरणीरहितायश्रीसि
द्धान्तनमः ४, केवलज्ञानावरणीरहितायसि० ५, (दर्शनावरणकर्मकी नव
प्रकृती ए)—चक्षुदर्शनावरणरहितायसि० ६, अचक्षुदर्शनावरण
र० ७, अवधिदर्शनावरणर० ८, केवलदर्शनावरणर० ९, निष्कर्म
रहितायसि० १०, निद्रानिद्रारहि० ११, प्रचक्षार० १२, प्रचक्षप्रच
क्षार० १३, धीणद्धी० १४ ॥ (वेदनीकर्म की प्रकृति २)—सातावे
दनीरहितायश्री० १५, अशातावेदनीरहिताय० १६, (मोहनी
कर्म की प्रकृती १८)—सम्यक्मोहनीर० १७, मिथ्यमोहनीरहिताय
१८, मिथ्यात्वमोहनीर० १९, अनंतानुबंधीक्रोधर० २०, अनंतानु
बंधीमानर० २०, अनंतानुबंधीमायार० २२, अनंतानुबंधिलोचर०
२३, अप्रत्याख्यानीक्रोधर० २४, अप्रत्याख्यानीमानर० २५, अप्रत्या
ख्यानीमायार० २६, अप्रत्याख्यानीलोचर० २७, प्रत्याख्यानीक्रो
धर० २८, प्रत्याख्यानीमानर० २९, प्रत्याख्यानीमायार० ३०,
प्रत्याख्यानीलोचर० ३१, संज्वलनक्रोधर० ३२, संज्वलनमानर०
३३, संज्वलनमायार० ३४, संज्वलनलोचर० ३५, हास्यमोह
नीर० ३६, रतिमोहनीर० ३७, अरतिमोहनीर० ३८, जयमोह
नीर० ३९, सोकमोहनीर० ४०, दुःखमोहनीर० ४१, स्त्रीवेदर०
४२, पुरुषवेदर० ४३, नपुंसकवेदर० ४४ ॥ (आयुर्कर्मकी प्रकृति।

णिये, द्वीप सकल गुणखांख ॥ अर्ध जाग जसु उत्तमें, नि
 जलद समांन ॥ ६ ॥ जोजवि संख्या विजयनी, प्रति मेरो
 ॥ धारो गणित अनुक्रमें, पष्टयुत्तर शत हींस ॥ ७ ॥ एद
 द्वीपनी, विजयतणो परिमाण ॥ काल चतुर्थ तिहां सदा,
 श्रीजिनजाण ॥ ८ ॥ जिण तीर्थकर वारके, विचरया जे
 य ॥ ते हूं प्रति विजये जणूं, आगमसुं चित लाय ॥ ९ ॥
 पारणोकी) ॥ तिण काले ने तिण समे जी, तीर्थकर महाराज
 जित जिनेसर राजता जी, तारण तरण जिहाज ॥ जविकज
 रण्यो धर्म सनेह ॥ टेर ॥ १ ॥ अतिशय चौतीस संजुआ जी
 णी गुण पैतीस ॥ लोकालोक प्रकाशता जी, प्रणमत नरसुर ई
 ज्ञ० ॥ २ ॥ एदवा श्रीजिन वारके जी, एकसो साठ जिनंद ॥
 चरया महियल बोधता जी, विजय मजार सज्जंद ॥ ज्ञ० ॥ ३
 पंच२ जरतैरवतैं जी, वशमित श्रीजिनराय ॥ विचरै जगजन
 रता जी, समरयां संपति आय ॥ ज्ञ० ॥ ४ ॥ ए सत्तर सो जि
 वरू जी, अतुल सकल गुणखांन ॥ श्यांमवरण सोले कहा जी
 अकल कला युतिवांन ॥ ज्ञ० ॥ ५ ॥ रक्ताकृति त्रिंशत कहा जी
 नीलवरण वसु तीस ॥ रवि जिम ऊललद जाधरू जी, कनकर
 ण वचीस ॥ ज्ञ० ॥ ६ ॥ रजत मुक्त पय जलकणा जी, सम सित
 विमल प्रकाश ॥ जविक चकोर प्रमोदता जी, शशि जिम जिन पञ्च
 स ॥ ज्ञ० ॥ ७ ॥ प्रति जिन व्रत उपवासथी जी, बीस प्रमित
 जपमाल ॥ त्यक्त कपाय शुजातमां जी, वरिये जाव विशाख ॥
 ज्ञ० ॥ ८ ॥ इम ए तप पूरण हुयां जी, उजमणो निज शक्ति ॥
 कीजे श्रीजिनशासने जी, संघ सहूनी जकि ॥ ९ ॥
 प्रविधि जवि जे करे जी, प्रेम
 सुमोदता जी, ते लदे दिव

संवत् मूनि सर लोक नारद चंड ज्येष्ठ पशुर ए, वदि सप्तमी रवि
दिने हितवस्त्रज कथनधर झूर ए ॥ गुरु खरतरांवर तरणि सन्नि-
ज जैनचंड सनूर ए, ए तवन कीधो जीमगंजे श्रमणचंद कपूर ए
॥ ११ ॥ इति श्रीसत्तर सय जिन स्तवनं ॥

॥ अथ कम्मपयडी को गुणनो लिख्यते ॥

॥ ज्ञानावरणीकर्मकी ५ प्रकृती—मतिज्ञानावरणीरहितायश्री
सिद्धायनमः १, श्रुतज्ञानावरणीरहितायश्रीसिद्धायनमः २, अवधि
ज्ञानावरणीरहितायश्रीसि० ३, मनपर्यवज्ञानावरणीरहितायश्रीसि
द्धा० ४, केवलज्ञानावरणीरहितायसि० ५, (दर्शनावशकर्मकी नव
प्रकृती ए)—चक्रुदर्शनावरणीरहितायसि० ६, अचक्रुदर्शनावरणी
र० ७, अवधिदर्शनावरणीर० ८, केवलदर्शनावरणीर० ९, निष्कर्म
रहितायसि० १०, निद्रानिद्रारहि० ११, प्रचक्षार० १२, प्रचक्षप्रच
क्षार० १३, धीणद्धी० १४ ॥ (वेदनीकर्म की प्रकृति २)—सातावे
दनीरहितायश्री० १५, अशातावेदनीरहिताय० १६, (मोहनी
कर्म की प्रकृती १८)—सम्यक्तमोहनीर० १७, मिश्रमोहनीरहिताय
१८, मिथ्यात्वमोहनीर० १९, अनंतानुबंधीकोधर० २०, अनंतानु
बंधीमानर० २०, अनंतानुबंधीमायार० २२, अनंतानुबंधिलोचर०
२३, अप्रत्याख्यानीकोधर० २४, अप्रत्याख्यानीमानर० २५, अप्रत्या
ख्यानीमायार० २६, अप्रत्याख्यानीलोचर० २७, प्रत्याख्यानीको
धर० २८, प्रत्याख्यानीमानर० २९, प्रत्याख्यानीमायार० ३०,
प्रत्याख्यानीलोचर० ३१, संज्वलनकोधर० ३२, संज्वलमानर०
३३, संज्वलनमायार० ३४, संज्वलनलोचर० ३५, हास्यमोह
नीर० ३६, रतिमोहनीर० ३७, अरतिमोहनीर० ३८, जयमोह
नीर० ३९, सोकमोहनीर० ४०, दुःखमोहनीर० ४१, स्त्रीवेदर०
४२, पुरुषवेदर० ४३, नपुंसकवेदर० ४४ ॥ (आयुर्कर्मकी प्रकृति

४) - देवायुरदि० ४५, नरायुर० ४६, तिर्यचायुरदि० ४७, नरकायुरदि० ४८ ॥ (नामकर्मकी प्रकृति १०३) - देवगति ४९, नरकगति० ५१, तिर्यचगति ५२, नरगतीरहिता० ५०, ऐकंद्रीजातिर० ५३, वेइंड़ीजातिर० ५४, तेइंड़ीजातिर० ५५, चौरेंड़ीजातिर० ५६, पंचेंद्रीजातिर० ५७, औदारिकशरीर० ५८, वैक्रियशरीर० ५९, आहारकशरीर० ६०, तेजसशरीर० ६१, कर्मणशरीर० ६२, औदारिकअंगोपांगर० ६३, वैक्रियअंगोपांगर० ६४, आहारकअंगोपांगर० ६५, औदारिकऔदास्किबंधनर० ६६, औदारिकतेजसबंधनर० ६७, औदारिककर्मणबंधनर० ६८, वैक्रियबंधनर० ६९, वैक्रियतेजसबंधनर० ७०, वैक्रियकर्मणबंधनर० ७०, आहारकबंधनर० ७२, आहारकतेजसबंधनर० ७३, आहारककर्मणबंधनर० ७४, औदारिकतेजसकर्मणबंधनर० ७५, वैक्रियतेजसकर्मणबंधनर० ७६, आहारकतेजसकर्मणबंधनर० ७७, तेजसतेजसबंधनर० ७८, कर्मणकर्मणबंधनर० ७९, तेजसकर्मणबंधनर० ८०, औदारिकसंघातन० ८१, वैक्रियसंघातनर० ८२, आहारकसंघातनर० ८३, तेजससंघातनर० ८४, कर्मणसंघातनर० ८५, वज्ररूपजनाराचसंघयणर० ८६, रूपजनाराचसंघ० ८७, नाराच० ८८, अर्धनाराचसंघयणर० ८९, कीलकासंघयणर० ९०, सेवार्तसंघयणर० ९१, समचतुरस्त्रसंस्थानर० ९२, न्यग्रोधसंस्थानर० ९३, सादिसंस्थानर० ९४, वामनसंस्थानर० ९५, कुब्जसंस्थानर० ९६, हुंरुकसंस्थानर० ९७, रुष्णवर्णरदि० ९८, तीलवर्णर० ९९, लोहितवर्णर० १००, पीतवर्णर० १०१, स्वेतवर्णर० १०२, सुरजिगंधर० १०३, डुरजिगंधर० १०४, तिकरसर० १०५, कटुकसर० १०६, आम्लरसर० १०७, कषायरसर० १०८, मधुरसर० १०९, शीतफरसर० ११०, उष्णफरसर० १११, जालीफर

सर० ११२, हलकाफरसर० ११३, परखराफरसर० ११४, सुक-
 सालफरसर० ११५, लूखाफरसर० ११६, चीकणाफरसरदितया०
 ११७, नरकानुपूर्वीर० ११८, तिर्यवानुपूर्वीर० ११९, नरानुपूर्वी
 र० १२०, देवानुपूर्वीर० १२१, शुजविदायोगति १२२, अशुज-
 विदायोगतिर० १२३, पराधातनामकर्मर० १२४, कृतासनामकर्म
 र० १२५, आतपनामकर्मर० १२६, उद्योतनामकर्मर० १२७, अ
 गुरुलघुनामकर्मर० १२८, तीर्थकरनामकर्मर० १२९, निर्माणनाम
 कर्म १३०, उपधातनामकर्मर० १३१, त्रसनामकर्मर० १३२, बाद
 रनामकर्मर० १३३, पर्यासिनामकर्मर० १३४, प्रत्येकनामकर्म
 १३५, धिरनामकर्म १३६, शुजनामकर्म १३७, सौजाग्यनाम
 कर्म १३८, सुस्वरनामकर्मर० १३९, आदेयनामकर्म १४०,
 यशनामकर्म १४१, थावरनामकर्म १४२, सूक्ष्मनामकर्म १४३,
 अपर्यासिनामकर्मर० १४४, साधारणनामकर्मर० १४५, अधिर
 नांमकर्मर० १४६, अशुह्यनामकर्मर० १४७, दौर्जाग्यनामकर्मर०
 १४८, दुस्वरनामकर्मर० १४९, अनादेयनामकर्मर० १५०, अयश
 नांमकर्मर० १५१, (गोत्रकर्मकी प्रकृति २) उच्चैर्गोत्र १५२, नी
 चैर्गोत्र १५३, ॥ (अंतरायकर्मकी प्रकृति ५) दानांतरायकर्मर०
 १५४, लाजांतरायकर्मर० १५५, जोगांतरायकर्मर० १५६, उप
 जोगांतरायक० १५७, वीर्यांतरायकर्मरदितायश्रीसिदायनमः ॥
 ॥ १५८ ॥ इति श्रीकम्मपयनीरो गुणनो संपूर्ण ॥

॥ अथ कम्मपयनी स्तवन लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ सेनामात जितारि सुत, श्रीसंजव जिनराज ॥

मूलकरम उत्तर पगइ, हणी चढे सिवपाज ॥ १ ॥ अष्ट कर्मकूं
 क्षय करी, गुण अष्टक निष्पन्न ॥ सावि अनंत स्थिति लही, चिदा
 नंद विदपन्न ॥ २ ॥ तासु चरण प्रणनी करी, कम्मपयनि विस्ता

ज० ॥ अग्रमत्त गुण अंत सवीमें, करमबंध अठ सत्त ॥ ज० क०
 ॥ ५ ॥ अपूरव अनिवृत्ति गुणमें, आयु वरज सत्त बंध, ज० ॥ सुद्रुम
 संपराय ददशम गणें, विन मोहायु पट खंव ॥ जवि० क० ॥ ६ ॥
 उपशम खीण सजोगमें, वेदनी बंध उदार, ज० ॥ अयोगी गुण
 चवदमें, नदी बंधत कर्म द्वार ॥ ज० ॥ क० ॥ ७ ॥ कर्मबंध देतु
 कहा, मिथ्यात अविरत जोय, ज० ॥ कोथ प्रमुख कयाययो, यो
 म युगत व्यार होय ॥ ज० ॥ क० ॥ ८ ॥ पन्नवशा उपांगमें, कर्म
 स्थिति पद लेय; ज० ॥ कर्म वेद पणवीसमें, कर्म प्रकृति वेद क्षेत्र
 ॥ जवि० क० ॥ ९ ॥ कम्मपयमी कर्मयंथमें, कर्मतथो निरधार,
 ज० ॥ बंध सत्ता उदीरणा, उदय प्रमुख परकार ॥ जवि० ॥ क०
 ॥ १० ॥ इकसो अठावन थया, चउत्थजत्त तप सार, जवि० ॥ त
 प उपापन इम करो, पूजा अष्ट प्रकार ॥ जवि० ॥ क० ॥ ११ ॥
 अष्ट ज्ञानोपगण जला, अष्टगंगल वृद्ध थाल, जवि० ॥ चात्सव्य
 चउविद् संघनी, यथाशक्ति सुविशाल ॥ ज० ॥ क० ॥ १० ॥ इच्छा
 रोधन तप करे, कर्म प्रकृतिनो सार, ज० ॥ सुरनर सुख अनुक्रम
 लही, शिवरमणी जरतार ॥ ज० क० ॥ १३ ॥ कलश ॥ जिन-
 चंद सूरि मुनिंद खरतर गण ख शशि सम युगवरा, तासु बघने
 स्तवन कीथो नयर श्रीवालूचरा ॥ चंद्रानुयोग निष्पेक वरपे विशद
 फाळ्युन द्वादशी, उवजाय तत्व प्रधान गणिनें अमृत गति चित्त
 नित वशी ॥ १४ ॥ इति श्री कम्मपयमी स्तवनं ॥

॥ अथ नवकार तप स्तवन ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे जिनवर नमी, पंच परमेष्टि सार ॥ परम
 मंत्र नवकारनी, महिमा जणूं उदार ॥ १ ॥ ढाल १ ॥ मुनिवर
 आर्य सुदस्त ॥ ए देशी ॥ समरो श्री नवकार, सार पूरवतणो,
 नव निधि सिद्धि आपे सदा ए ॥ महिमा मोटी जात, संकट सदा

टले, मिले मनोरथ संपदा ए ॥ १ ॥ अरुसठ वरण विस्वात,
 सात गुरु अक्षर, नव पद आठे संपदा ए ॥ सात सागरनां पाप,
 जाये अस्करे, संपूरण पांचसैं मुदा ए ॥ २ ॥ पुष्करवर दीपार्द,
 सिद्धावट गांम, पासे परवत कंदरा ए ॥ चोमासी पंचस्कांण, करने
 तिहां रह्या, वमसार नामे मुनीसरा ए ॥ ३ ॥ जील जीलणी बेअ,
 मन सुघ जावसुं, नवकार मुनि पासे जणी ए, बीजे जव राज-
 सिंद, रतनवती रांणी, शिवसुख पांम्या कर्म हणी ए ॥ ४ ॥ रत
 नपुरी यसोज्जड, सेठतणो सुत, शिव नामा विसनी घणूं ए ॥ अति
 आदरसुं तात, नवकार सीखव्यो, महामंत्र गुणवहु जणूं ए ॥ ५ ॥
 एकदा योगी एक, समसाने ले गयो, शिवकुमार मनमें धर्यो ए ॥
 नवकारने परजाव, सबल संकट टढ्यो, सोनापुरसो तिण कर्यो ए ॥
 ॥ ६ ॥ ढाल २ ॥ चरणकरणधर मुनिवर वंदिये ॥ ए देशी ॥ श्री
 नवकार तणी महिमा सुणो, पोतनपुर सुज ठामो जी ॥ सेठ सु-
 जद्र तणी सुता श्रीमती, आविका धर्मनो कामो जी ॥ श्री० ॥ १ ॥
 मिथ्यामते किण एक विवहारिये, परणी मनधर रागो जी ॥ धरम
 न मूके हणिये मन धरी, कलसमें मूक्यो नागो जी ॥ श्री० ॥ २ ॥
 साप फीटीने फूलमाला थई, महियल महिमा एहो जी ॥ पिठने
 कुटंब सहू प्रतिबूज्यो, साचो धर्म सनेहो जी ॥ श्री० ॥ ३ ॥
 कितिप्रतिष्ठित बजराजा तिहां, इक दिन वूगो मेहो जी ॥ नदीपूर
 बीजोरो आवियो, नृपने दीधो तेहो जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ स्वाद
 लही चिठी राजा करी, बीजोराने कांमो जी ॥ व्यंतर जद्र करे
 नरने तिहां, ये बीजोरो तामो जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चिठी आवी
 जिनदाससेठनी, आवक शुद्ध विवेको जी ॥ नमस्कार जण बीजोरो
 ग्रह्यो, वूज्यो व्यंतर ठेको जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ढाल ३ ॥ नमणी
 खमणी ने मन गमणी ॥ ए देशी ॥ श्री वसंतपुर जितदात्र राया,

तडा नामे नारि सुदाया ॥ चंरुपिंगल चोरस्यो नृप दारा, गणिका
दीधो मनुदारा ॥ १ ॥ गणिका पदस्यो दार ते जाणी, सूली
दीधो चोर ते आणी ॥ निज प्रमाद गणिका पठतावे, चोर समीपे
आवे ॥ २ ॥ नमस्कार पिंगलने दीधो, तास प्रजावे वंछित
दीधो, नृपने घर सुत अइ अवतरियो, पापी चोर एणे ऊधरियो ॥

३ ॥ मधुरानगरी जिणदाससेठ, तिहां किण हुंमक पापनी डेठ ॥
कदा चोरी करतां जाड्यो, राजा हुकमें सूली घाड्यो ॥ ४ ॥
नक चोर ते प्यासे गाढो, सेठ कने जल मांग्यो टाढो ॥ नौकार
दीधो उपगार आंणी, सुर थयो ततखिण धर्म सहिनाणी ॥ ५ ॥
पानगरीमें जे कीधूं, सुजडा सती निकलंक प्रतीधूं ॥ श्रीनवकार
साद ते जाणो, मनमें एदनी आसति आंणो ॥ ६ ॥ ढाल ४ ॥
रतनूप जावसुं ॥ ए देशी ॥ अमावसि पूनिम करी ए, वांजल
धी आकास, नमुं नवकारने ए ॥ १ ॥ वृक्ष उपासी चलावियो ए,
नुपम महिमा जात ॥ न० ॥ २ ॥ वाठरूपा एक चारतो ए,
देष प्रवाह्यो बाल, न० ॥ नमस्कार मन चिंतव्यो ए, जल फादो
काल ॥ न० ॥ ३ ॥ इत्या चार करी इवे ए, वली करया पां
क, न० ॥ वुटकरबारी एदयी ए, आवे चित्त विवेक ॥ न० ॥
४ ॥ मंत्र मांहे मोटो कह्यो ए, लाख गुणे मनरंग, न० ॥ ती
र पद ते लहे ए, श्रीनवकारने संग ॥ न० ॥ ५ ॥ दिन २
धेकी संपदा ए, मनवंछित सुख थाप, न० ॥ दयाकुसल वाचक
ए, धर्ममंदिर गुण गाय ॥ न० ॥ ६ ॥ इति श्रीनवकारका
शालिया स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नवकार तपविधि लिख्यते ॥

शुद्धदिन गुरुके पास नवकारतप ग्रहण करे. जिस पदका
तना अक्षर होय उतनाही उपवास करे ॥ उस पदका ॥ २०००॥

गुणना करे सो लिखते हे ॥ १ ॥ एमोअरिहंताणं ॥ उपवास्त ७ ॥
 २ । नमो सिद्धाणं ॥ उपवास्त ५ ॥ ३ । नमो आयरियाणं ॥ उपवा-
 वास्त ७ ॥ ४ । एमोउवझायाणं ॥ उपवास्त ७ ॥ ५ । एमोलोए
 सबसाहूणं ॥ उपवास्त ६ ॥ ६ । एसोपंचनमोकारो ॥ उपवास्त ७ ॥
 ७ । सवपावप्पणासणो ॥ उपवास्त ७ ॥ ८ । मंगलाणंचसबोत्ते ॥
 उपवास्त ७ ॥ ९ । पढमंदवइमंगलं ॥ उपवास्त ६ ॥ एते नवकार
 मंत्रका ६७ उपवास्त करे ॥ किंकप्पत्तरु ॥ वरानवकार अथवा ऊपर
 लिखा सो स्तवन सुणे, तप पूर्ण होणेतें यथाशक्ति नवपदका
 उठव करे. चवदे पूर्वका सार इस नवकारके तप प्रज्ञावतें अनेक
 सुख संपदाकी प्राप्ति होय ॥ इति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक स्तवन लिख्यते ॥

नमिय पयकमल सुज्जवा सवि जिनतणा, पंच कल्याण
 दिणं जणिसु जिनवरतणा ॥ कसिण कत्तीतणै पस्कि पंचमि दिणै,
 नाण संजवतणौ खयकरम चिहुं तणैः ॥ १ ॥ नेमि जिण चवण
 सुरजवणथी वारसै, पउमपह जम्म वलि दिस्क तसु तेरसै ॥ वीर
 सिवमां बसै पस्कि दिव ऊजलै, नाणसिरि सुविधि अर तीज वार
 सि मिले ॥ २ ॥ ज्ञास ॥ मिगसर वदि रे सुविधि पंचमी जनमि
 थो, सोइ ठै रे संयमधर सुर पणमियो ॥ दसमी दिन रे वीरे सं-
 यम आदस्थौ, इग्यारसि रे उपमप्पह सिवसिरि वरथौ ॥ सिर वरथौ
 मिगसर सुदि वरामी दिण रचणि अरजिन जामीयो, वलि मुगति
 पिण तिण दिवस पत्तो व्रत इग्यारसि पांमीयो ॥ इग्यारसै वलि
 महिजिणने जम्म दिस्क सुनाणीया, वलि महि दिस्का नाण ठै
 अंग पोसि वखाणिया ॥ ३ ॥ इहां कारण रे लिखित दोष संज्ञा
 विधे, कइ कोइ रे अवर हेतु पिण जावियै ॥ ते परि सचि रे गीता-
 रथ सदगुरु लहे, श्रुतकेवलि रे वचन सह सम सद्धे ॥ सद्धे

सहूयै ते प्रमाणजि बलि इग्यारसि नमितणौ, श्रीनाण कढ्याणक
 चउदसि जनम संजवनों थुणौ ॥ पूनिभें संजव दिस्का पांमी दया
 धरि जगजोवनी, दिव पोस वदि दसमी इग्यारस जनम दिस्का
 पासनी ॥ ४ ॥ वारस तिथि रे चंदप्पद जिण जाइयौ, बलि तेर
 सि रे संजम रंग सुणाइयौ ॥ चवदस दिन रे ओशोतल थयो के-
 वली, पोसइ सुदि रे ठठ विमल नाणी वली ॥ नाणी बलि थयौ
 नवमि संती अजितनाथ इग्यारसें, चवदसें अजिनंदनें केवल पूनि
 मै धम्मैं वसें ॥ माइइ ठठे पनुम चवियो वारसें शीतल थयौ,
 बलि तासु संजम कसिण तेरसि रिसइ जिण शिवपुर गयो ॥ ५ ॥
 अम्मावसि रे दिवसें नाण इग्यारमें, जिन पांमो रे माइसुदे दिव
 अनुक्रमें ॥ सित बीजे रे अजिनंदन चासुपूजनों, कढ्याणकरे ज
 नम ठाण अनुक्रम मनो ॥ अनुक्रमें मानो बिहू बीजे विमल धरम
 सुजामिया, श्रीविमल दिस्का चउथे अठमि अजित वतपति पांमि
 या ॥ नवमियें दिस्का अजित पांमी वारसें अजिनंदनें, श्रीधर्मनाथें
 सार संयमसिद वरितेरसि दिनें ॥ ६ ॥ जास ॥ फागुण वदि ठठे सुपास
 केवलसिरि पत्तो, सत्तम बलि तसु मुगति चंदप्पनु नाणें जुत्तो ॥
 नवमि सुचिद जिण चवण रिसइ इग्यारसि केवल, वारस सुघय नाण
 जम्म सेयंसइ निम्मल ॥ ७ ॥ तेरसि वत सिद्धंत तयो चवदस वसु
 पुज्ज, जम्म हुठ अम्मावसें ए तसु संजम रज्ज ॥ सुकज बीज चउथि
 अठमियें अर मल्लि संजव, चवण सुवारसि मल्लि मुगति सुवय वय
 उच्चव ॥ ८ ॥ (दाख फागनी) चैत्र पढम पस्कि चउथि नाण च
 वणं पासस्त, पंचमि सत्तिपद चवण जम्म अठमि रिसइस्त ॥
 बलि संजम पिण रिसइसांमि अठमि आदरियो, धवल तीज दिव
 कुंथुनाथने केवल फुरियो ॥ ९ ॥ पंचमि अजित अमंत थने सं
 जवने मुगति, नवमि इग्यारस मुगति नाण बलि पांम्यो सुमनि ॥

॥ त्रिशलादेव वीरनाह तेरसनिस्ति जायो, पूनिम दिन श्रीपदमंता
ह केवलसिरि पायो ॥ १० ॥ जास ॥ दिव वैसाख वंदेपनिवा दिन,
कुंथु सिद्ध शीतल बीजे दिन, पंचमी कुंथु चरित्र ॥ ठे, श्रीशी
तल अवतरियो, दशमैं नमिजिण सिवसिरि वरियो, तेरसि जनम
अणंत ॥ ११ ॥ चवदस दिस्का नाण अणंतद, जनम हुठ श्रीकुंथु
जिणंदद, वंदद सिवपुर सत्थ ॥ सेत चउथ अजिनंदन उत्तम, ध
रमनाथ चवियो वलि सत्तमि, अठमि सिद्ध चउठ ॥ १२ ॥ सुम
तिनाथ अठमिये जायो, नवमैं संयम सामे पायो, गायो धरि आ
णंद ॥ दशमैं नाण वीरजिण पामी, बारसि चव्यो विमल जगस्था
मी, तेरसि अजिय जिणंद ॥ १३ ॥ ढाल ॥ जेठ कसिण पत्कि
ठठ, चवियो सेयंस, अठमी सुवय जनमियो ए ॥ नवमि मुगति
सोपत्त, तेरस चवदसि, संति जम्म सिव वय हुठ ए ॥ धरमनाथ
सिव पत्त, धवलो पंचमैं, नवमैं वसुपुक्क अवतरयो ए ॥ श्रीसुपास
जिण जम्म, बारसि तेरसि, जगगुरु संयमसिरि वरयो ए ॥ १४ ॥
जास ॥ दिवै असाढ वदि चउथि रिसदेस, चवण सत्तमिदि सिरि
विमल ॥ मुक्क नवमि नमि वय गहण, सेय ठे चवण ॥ धीरनो
अठमि नेमि मुक्क चवदसें श्रीवसुपुक्क जिणंद, ठ सय वर साधु
कर परवरयो ए ॥ बहुतर वसत खख पुरि चंपापुरें, करमदणि मुग
ति रमणी वरयो ए ॥ १५ ॥ ढाल ॥ आयण वदि दिव तीज मु
गति सेयंसद पामिय, सत्तमि चवित्ठ अणंतनाद अठमि नमि जा
मिय ॥ नवमि कुंथुजिण चवण हुठ अद निम्मल धीजे, मुमति
चवण पंचमिद नेमिजिण जम्म जणीजे ॥ १६ ॥ ठे मुनिवर ने
मि हुय, अठमि सीधो पास ॥ मुनिमुषय पूनिमरयणि, चवित्ठ गु
ण वास ॥ १७ ॥ जास वदि सनमैं संति सति चवण जय
अठमि चविय मुपास नवमि मुदि मुविच सिचंगप ॥ दिव

आसुं यदि तेरसीं ॥ श्रीबीर जिनेसर गद्य ॥ हरण अम्मावसी
 ए, नांणी नेमीसर ॥ १८ ॥ पुंनिम नमि जिणवर चविय, इण
 पर बारह मासि ॥ श्रीआवस्यक दाखवी, जिण कळयाणक रासि
 ॥ १९ ॥ जिण चवण जम्म चरित्त केवल नांण शिव प्रापति दिं
 ने, अरिहंत जत्ते सुद्ध चित्ते तप करे जे इक मनै ॥ कळयाण नीते
 कोनि पांमी अनुक्रमे सिवसुख लहे, ए हेतु जांणी सुगुरु नांणी
 एह कळयाणक कहे ॥ २१ ॥ इम पांच जरते ऐरवत करि एक
 दिन जिनवरतणा, वस कळयाणक हुवे इण दिन सुर करे उच्चवं
 घणा ॥ जिम हूआ ते तिम वली होस्पे पंच कळयाणक सदा, श्री
 पुण्यसागर कहे खरतर एह आराहो मुदा ॥ २१ ॥ इति श्रीपंच
 कळयाणक स्तवनं ॥

॥ अथ रुपिमंडल सुणणेकी वा पूजणेकी विधि ॥

॥ भयंम आद्यंताकर संलक्ष० यह रुपिमंडल स्तोत्र धूप
 दीपादि विधि संयुक्त आठ महीने तक प्रजात समय सुणें. रुपिमं
 रलमें जो मूल मंत्र हे सो शुद्ध दिन शुद्ध घंटी हाथमें फल
 फूल जेट शक्ति माफक लेकर गुरुके पास जावे. जेट धरके वि-
 नय संयुक्त मूलमंत्र गृहण करै. उसका ८००० आठ हजार जाप
 आठ महीनेमें करे. आंखिलकी शक्ति होय तो हमेस करै, नहीतो
 आठम चौदस दो आंखिल जरूर करे. आठ महीने बाद ऊजमणां
 करै. ऊजमणोके दिन एकसो आठ बेर सुणै. पीठै शक्ति होय तो
 विधि संयुक्त रुपिमंडल स्थापन करायके पूजा करै. विशेष जक्ति
 करे तो २४ प्रकार पूजा करावै, गुरुजत्की करे, सादमीवछल करै.
 विशेष विधि गुरुगमसें जाणनी ॥ रुपिमंडल सुणणेवाले पूजणेवा
 ले जयजीवके घरमें कच्ची उपद्रव नहि होय, सदा आनंद उछाह रहे ॥

॥ अथ भगवंतके नव अंग पूजन ॥

॥ दूहा ॥ जल जरी संपुट यत्रमां, युगलिक नर पूजंत ॥

शेषज्ञ चरण शृंगूठमो, दायक जवजल अंत ॥ १ ॥ जानु बले का
 उत्सर्ग रहा, विचर्या देस विदेस ॥ खमां२ केवल लह्यो, पूजो
 जानु नरेस ॥ २ ॥ लोकांतिक वचने करी, वरस्था वरसी दान ॥
 कर कंठे प्रभु पूजना, पूजो जवि बहुमान ॥ ३ ॥ मान गयो दोष
 शंसणी, देखी वीर्य अनन्त, जुजावले जवजल तर्या, पूजो खंध म
 हंत ॥ ४ ॥ रत्न त्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विसराम ॥ ना
 निकमलनी पूजना, करतां अविचल धाम ॥ ५ ॥ हृदयकमल
 उपशम धले, बाढ्यो राग ने छेप ॥ हेम ददे वनखंमने, हृदयक
 मल संतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देइ देसना, कंठ विवर वरतूल,
 मधुर ध्वनी सुर नर सुणे, तिम गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तर्धकर पद
 पून्यथी, त्रिजुवन जन सेवंत, त्रिजुवन तिलक समा प्रभु, जाल
 तिलक जयवंत ॥ ८ ॥ सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतिक जगवंत ॥ व
 सिया तिण कारण विजु, शिरशिखा पूजंत ॥ ९ ॥ उपदेशक नव
 तत्त्वना, तिम नव अंग जिणंद, पूजो बहु विध जावथी, कहे शुभ
 वीर मुणिंद ॥ १० ॥ इति नव अंगपूजन उहा ॥

॥ शिक्षा दोहा ॥

जीवना जिनवर पूजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमैं
 परजा नमैं, आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंजे बांध्यो जल रहे,
 जल विन कुंज न होय ॥ झानि बांध्यो मन रहे, गुरु विन ज्ञान न
 होय ॥ २ ॥ गुरु दीपक गुरु देवता, गुरु विन घोर अंधार ॥ जे
 गुरुवाणी वेगला, रम्यमिया संसार ॥ ३ ॥ ज्ञावे जिनवर पूजिये,
 ज्ञावे दीजे दान ॥ ज्ञावे ज्ञावना ज्ञाविये, ज्ञावे केवलज्ञान ॥ ४ ॥
 पांच कोनीने फूलने, पांम्या देश अदार ॥ राजा कुमारपालने, व
 रत्या जैजैकार ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ नव पदो के नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा नव थुई ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन ॥

जय२ श्रीअरिहंत जानु, जविकमल विकासी ॥ लोकालोक
अरूपि रूपि, सम वस्तु प्रकासी ॥१॥ समुद्धात शुभ्र केवलै, कथ
कृत मल रासी, शुद्ध चरम शुचि पादसैं, जयो वर अविन्यासी ॥
॥ २ ॥ अंतरंग रिपुगण इणी ए, हुय अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद
पंकजमें रमत, हीरधरम नित संत ॥ ३ ॥ इति ॥ जंकिंचिं नाम-
तित्थं० नमोर्हं० ॥

॥ अथ अरिहंतपद स्तवनं ॥

पूजो मनरली हां हो दादा कुशल सूरिंद ॥ ए चाल ॥ श्री
तेरम गुण वसिके कंत, कर्मकुं जंजे श्रीअरिहंत ॥ मन मानले ॥
अष्ट समयमें समय तीन, सर्व आहारथी होवे हीन ॥ म० ॥ १ ॥
वावरकायें मन वच जोग, तनु२सैं फुन दृढ तनुयोग ॥ म० ॥ सुद्ध
मकायतें मन वच रोक, निज वीर्थे ताकुं कर फोक ॥ म० ॥ २ ॥
संझी मात्रके मन व्यापार, बेईद्रीने दाक्ष प्रचार ॥ म० ॥ आदि
समय रह्यो पनकसु जीव, सुयम लह्यो तिण योग अतीव ॥ म० ॥
॥ ३ ॥ एपां योगथी समयें एक, होना संख गुणो कर ठेक ॥ म० ॥
समयासंखे जोग निरोथ, कृत्वा जो लह्यो जोगी सोथ ॥ म० ॥ ४ ॥
वेदसमेनाहारता पाय, कुशल कहे ते श्रीजिनराय ॥ म० ॥ तेरमें
गुणमें गुण समै देव, आपो सा जगकुं नितमेव ॥ म० ॥ ५ ॥
इति अरिहंतपद स्तवनं ॥

॥ अथ अरिहंत पद थुई ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपो जी, केवल
ग्यानकी ज्योति प्रकाशक अनंत गुणे करि पूरो जी ॥ तंजै जव
थानक आराधी गोत्र तीर्थकर नूरो जी, वारे गुणां करि एदवा अ
रिहंत आराधो गुण चूरो जी ॥ इति अरिहंत पद थुई ॥

झपझ चरण अंगूठमो, दायक जवजल अंत ॥ १ ॥ जानु बले क
 उत्तमग रह्या, विचर्या देस विदेस ॥ खमां२ केवल लह्यो, पूजे
 जानु नरेस ॥ २ ॥ लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान
 कर कंमे प्रभु पूजना, पूजो जवि बहुमान ॥ ३ ॥ मान गयो दोय
 अंतर्था, देखी वीर्य अनन्त, जुजावले जवजल तर्या, पूजो खंभ
 हंत ॥ ४ ॥ रत्न त्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विसराम ॥ न
 निकमलनी पूजना, करतां अविचल घांम ॥ ५ ॥ हृदयकमल
 उपशम बले, वाढ्यो राग ने छेप ॥ हेम दहे वनखंमने, हृदयक
 मल संतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देइ देसना, कंठ विवर वरतुल,
 मधुर ध्वनी सुर नर सुणे, तिम गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तथैकर पद
 पून्यथी, त्रिजुवन जन सेवंत, त्रिजुवन तिलक समा प्रभु, जाल
 तिलक जयवंत ॥ ८ ॥ सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतिक जगवंत ॥ व
 सिया तिए कारण विजु, शिरशिखा पूजंत ॥ ९ ॥ उपदेशक नव
 तत्वना, तिम नव अंग जिणंद, पूजो बहु विध जावथी, कहे शुभ
 वीर मुणिंद ॥ १० ॥ इति नव अंगपूजन उदा ॥

॥ शिक्षा दोहा ॥

जीवमा जिनवर पूजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमैं
 परजा नमैं, आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंजे बांध्यो जल रदे,
 जल विन कुंज न होय ॥ ज्ञानि बांध्यो मन रदे, गुरु विन ज्ञान न
 होय ॥ २ ॥ गुरु दीपक गुरु देवता, गुरु विन घोर अंधार ॥ जे
 गुरुवाणी वेगला, रमवन्धिया संसार ॥ ३ ॥ जावे जिनवर पूजिये,
 जावे दीजे दान ॥ जावे जावना जाविये, जावे केवलज्ञान ॥ ४ ॥
 पांच कोटीने फूलमे, पांम्या देश अद्वार ॥ राजा कुमारपालने, व
 रत्या जैजैकार ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ नव पदो के नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा नव थुई ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन ॥

जय२ श्रीअरिहंत जानु, जविकमल विकासी ॥ लोकालोक
अरूपि रूपि, सम वस्तु प्रकासी ॥१॥ समुद्धात शुभ्र केवलै, कथ
कृत मल रासी, शुद्ध चरम शुचि पादसें, जयो वर अविन्यासी ॥
॥ २ ॥ अंतरंग रिपुगण हली ए, हुय अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद
पंकजमें रमत, हीरधरम नित संत ॥ ३ ॥ इति ॥ जंकिंचिं नाम-
तित्थं० नमोर्हं० ॥

॥ अथ अरिहंतपद स्तवनं ॥

पूजो मनरली हां हो दादा कुशल सूरिंद ॥ ए चाल ॥ श्री
तेरम गुण वसिके कंत, कर्मकुं जंजे श्रीअरिहंत ॥ मन मानले ॥
अष्ट समयमें समय तीन, सर्व आहारथी होवे हीन ॥ म० ॥ १ ॥
बादरकायें मन वच जोग, तनु२सें फुन दृढ तनुयोग ॥ म० ॥ सुद्ध
मकायतें मन वच रोक, निज वीर्यें ताकुं कर फोक ॥ म० ॥ २ ॥
संझी मात्रके मन व्यापार, बेइंद्रीने बाक्ख प्रचार ॥ म० ॥ आदि
समय रह्यो पनकसु जीव, सुषम लह्यो तिण योग अतीव ॥ म० ॥
॥ ३ ॥ एपां योगथी समयें एक, होना संख गुणो कर ठेक ॥ म० ॥
समयासंखे जोग निरोध, कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध ॥ म० ॥ ४ ॥
वेदसमेनाहारता पाय, कुशल कहे ते श्रीजिनराय ॥ म० ॥ तेरमें
गुणमें गुण समै देव, आपो सा जगकुं नितमेव ॥ म० ॥ ५ ॥
इति अरिहंतपद स्तवनं ॥

॥ अथ अरिहंत पद थुई ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपो जी, केवल
ग्यानकी ज्योति प्रकाशक अनंत गुणे करि पुरो जी ॥ तंजै जव
धानक आराधी गोत्र तीर्थकर नूरो जो, वारे गुणां करि एइवा अ
रिहंत आराधो गुण चूरो जी ॥ इति अरिहंत पद थुई ॥

॥ अथ सिद्धपद चैत्यवन्दन ॥

श्रीशैलेशी पूर्व प्रांत, तनुर्दिनंत जागी ॥ पुब पन्थपसंग
सैं, ऊरथ गत जागी ॥ १ ॥ समय एकमें लोकप्रांत, गयो निगुण
निरागी ॥ चेतनजूषे आत्मरूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवल
दंशणनाणथी ए, रूपातीत स्वजाव ॥ सिद्ध जये तसु हीरधर्म,
वंदे धरि शुभ जाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपद चैत्यवं० ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवनं ॥ यारे महिला ऊपर मेह श्रोतै बीनली ॥ ए चाल ॥

अष्ट वरस नग मास हीना कोमी पूर्वमें, म्हा० लाल ही० ॥
उल्लुष्टो करै वास सयोगी धाममे, म्हा० त० ॥ अजोगीके अंत तजै
जवतव्यता, म्हा० त० ॥ शैलेसी लहै कर्म दलै गुण श्रेणिता;
म्हा० दलै० ॥ १ ॥ हस्याकर पंच काल रहै ते योगमें, म्हा०
र० ॥ तेरस प्रकृतिनो अंत करीने अंतमें, म्हा० क० ॥ गमन करे
नगरकृतै अक्रिय होयने, म्हा० अ० ॥ पुब पयोग असंग स्वजाव
अध्वने, म्हा० स्व० ॥ २ ॥ इहु गुण नव परमाण योजन लहै
कही, म्हा० यो० ॥ वर्तुल विशदाजास निराखंवन सही, म्हा०
नि० ॥ मध्ये योजन अष्ट घनाकृति अंतमें, म्हा० घ० ॥ मकी
कयी हीन जणी सिद्धांतमें, म्हा० ज० ॥ ३ ॥ तनुपप्रारा ना
सिलासैं जोयने, म्हा० सि० ॥ जुग लोचनमें जाग अलोककुं
र्शन, म्हा० अ० ॥ लघु अंगुल बनीस प्रमाण स्वगादणा, म्हा०
प्र० ॥ रुद्रि धनु शत पंच गुणासैं हीनता, म्हा० गु० ॥ ४ ॥
मितिया एकमेंनंत अयाथा ना लही, म्हा० अ० ॥ अष्ट प्राण धरि
रम्य सिरिही जो सही, म्हा० सि० ॥ बीजो पद श्रीसिद्ध धरो
नगदमें, म्हा० घ० ॥ कुशल जये जगजीव मित्रोणा तेहमें, म्हा०
मि० ॥ ५ ॥ इति सिद्धपद स्तवनं ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवनं ॥

अष्ट करमकुं धमन करीने गमन कियो शिववागी जी, अ-

व्यावाधे सादि अनादि चिदानंद चिदरासी जी ॥ परमात्मपद पूर-
ण विलासी अघ धन दाघ विनासी जी, अनंत चतुष्टमय शिव
पद ध्यावो केवलज्ञानी ज्ञासी जी ॥ १ ॥ इति तिरुपद थुई ॥

॥ अथ तृतीय आचार्य पद चैत्यवंदन ॥

जिनपद कुल मुख रस अनिल, मित रस गुण धारी ॥
प्रबल सबल धन मोदकी, जिणतें चमुदारी ॥ १ ॥ कृष्णादिक जि
नराज गीत, नव तन विस्तारी ॥ जवकूपें पापें परत, जगजन
निस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारी जीवके, आचारजपद सार ॥ तिनकुं
वंदे हीरधर्म, अघोतर सो वार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ आचार्य पद स्तवनं ॥ नणदल वीदली ये ॥ ए चाल ॥

खंती खरुगथी जेणे, हणयो क्रोध सुजट सम देणे हो, गण
पति गुणपेखी ॥ १ ॥ मान महा गिरिवरे, अति शोजन मदव वरे
हो ॥ ग० ॥ १ ॥ इंजरूप विसवेली, वर अरुवकीलै ठेलो हो ॥ ग० ॥
मुर्छावेलथी जरियो, लोहसागर मुत्तें तरियो हो ॥ ग० ॥ २ ॥ मदन
नाग मद हीनो, जिण वमसम जंत्रे कीनो हो ॥ ग० ॥ मोह माहा
मल्ल ताळ्यो, पुण वैराग मुगें पाळ्यो हो ॥ ग० ॥ ३ ॥ दोस गयंद
वस कीनो, धर उपशम अंकुस लीनो हो ॥ ग० ॥ अंतरंग रिपु जेद्या,
सुरवर पिण जिण लिपेद्या हो ॥ ग० ॥ ४ ॥ रस रुति गुणथी लीणो,
सूत्र अरथे आगम पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारजपद एहवो, धरी जी
व कुशलता सेवो हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति आचार्यपद स्तवनं ॥

॥ अथ आचार्यपद थुई ॥

॥ पंचाचारकुं पालै उजवाळै द्रोप रहित गुणधारी जी, गु
ण वृत्तीसे आगमधारी दादस अंग विचारी जी ॥ प्रबल सबल धन
मोह हरणकुं अनिल समो गुण वाणी जी, क्रमा सहित जे संज
म पालै आचारज गुण ध्यानी जी ॥ १ ॥ इति थुई ॥

॥ अथ उपाध्यायपद चैत्यवन्दन ॥

॥ धन धन श्री उवजाय राय । सठता धन जंजन । जिन
वर दिसत डुवाल संग । कर कृत जन रंजन ॥ १ ॥ गुणवण जं
जण मण गयंद । सुय शृणि कियगंजण । कुणालंध लोय लोयणें ।
जत्थय सुय मंजण ॥ २ ॥ महा प्राणमें जिन लह्यो ए । आगमसे पद
तुर्य । तिनपें अहनिश हीर धर्म । वंदे पाठक वर्य ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवनं ॥ सांवलिया अलगा रहोनें ॥ ए देशी ॥

॥ हुयने ३ दूरी हुयने, चेतन ज्ञापै सठने, दूरी हुयने ॥ तुं
मुऊ पास क्युं आवै, दू० ॥ तुऊनें कुण वतलावे, दू० ॥ ए आंकणी
॥ तो संगै निज पंचेडोनो, रचना चरम जुलाणो ॥ नाणावरणी
खयउपसमसे, ज्ञावेडी मंमाणो ॥ दू० ॥ १ ॥ इयै ते परजासे
कीना, जातिनाम व्यपदेश ॥ एवंतो गो तुरग गजादिक, किय क
में उपदेश ॥ दू० ॥ २ ॥ इत्यादिक बहु मुऊकुं संका, तेरे संगे ला
गी ॥ नीलवर्णकी समता सेती, में ज्यो तोसुं रागी ॥ दू० ॥ ३ ॥
उप कहिये हणियो जवियानो, अधियां छाजत आय ॥ आधीनांमन
पीनानामें, मायोयेनविलाय ॥ दू० ॥ ४ ॥ आधिक्ये स्मरीयै वर
आगम, सूत्रसें ते उवज्ञाय ॥ तत् सेवाते हणि सठताकुं, चेतन
कुशलता पाय ॥ दू० ॥ ५ ॥ इति उपाध्याय स्तवनं ॥

॥ अथ उपाध्यायपद शुद्ध ॥

॥ अंग इग्यारै खवदै पूरव गुण पचवीसना घारी जी, सूत्र
अरथघर पाठक कहियै योग समाधि विचारी जी ॥ तपगुण सूर
आगम पूरा नय निक्षेपै तारी जी, मुनिगुण घारी बुध विस्तारी
पाठक पूजो अविकारी जी ॥ १ ॥ इति उपाध्यायपद शुद्ध ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमसाधुपद चैत्यवन्दनं ॥

॥ दंसण नाण चरित्त करी, वर शिवपद गामी ॥ धर्म शुरु
शुचि चक्रसें, आदिम खय कामी ॥ १ ॥ गुणपमत्त अपमत्तसें,

जये अंतरजामी ॥ मानस इन्द्रिय दमनजून, समदम अजिरामी
॥ २ ॥ चारुति घन गुणगण जरघो ए, पंचम पद मुनिराज ॥
तत्पदपंकज नमत हे, हीरधर्मके काज ॥ इति ॥

॥ अथ साधुपद स्तवनं ॥ मालनर मति कहो ॥ ए देशी ॥

॥ निकपाया जगजन कहे, धारै चउगति बसनतें रोत हो,
मुनिंदजी ॥ राग हीण जय तूं करै, साहिजा शिवरमणीतें हेत हो
मुनिंदजी ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद तजी रदै, सा० ठहै पूरव कोरु हो
मु० ॥ शत सोगम आगम करै, सा० लघु कालै गुण आदि हो
मु० ॥ २ ॥ स्त्यानहीनिद्रा उदै, सा० पांमे कर्म निकंद हो मु० ॥ प्रच
लानिझामें रही, सा० बारम गुणनो वास हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ स्थि
ति रस घात प्रमुख धरै, सा० जो गुण संख्यातीत हो मु० ॥ तो
पिण तिण जगमें लही, सा० त्रिक घन गुणनी रूपात हो मु० ॥
॥ ४ ॥ रयण त्रयतें शिवपर्ये, सा० साधन पर वर जीव हो मु०
॥ साधु हुवइ तसु धर्ममें, सा० कुशलु जवतु जगतीव हो मु०
॥ ५ ॥ इति साधुपद स्तवनं ॥

॥ अथ साधुपद गुरु ॥

॥ सुमति गुपति कर संजम पालै दोष बघालीत टालै जी,
पट्ट काया गोकुल रखवालै नव विध ब्रह्मव्रत पालै जी ॥ पंच म
हाव्रत सूधा पालै धर्म शुद्ध उजवालै जो, कृपकश्रेणि कर कर्म
खपावै दमपद गुण उपजावै जी ॥ १ ॥ इति साधुपद स्तुति ॥

॥ अथ दर्शनपद चैत्यवंदन ॥

॥ हुय पुगल परिघट्ट, अट्ट परमित संसार ॥ गंजिजेद
तव करि लदै, सब गुण आधार ॥ १ ॥ द्वायक वेदक शशि असं
ख, उवसम पण वार ॥ विना जेण चारित्र नाण, नही हुवै शिव
दातार ॥ २ ॥ श्री सुदेव गुरु धर्मनी ए, रुचि लब्धन अजिराम ॥
दरसनकुं गणि हीरधर्म, अद्वित्स करत प्रणाम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ दर्शनपद स्तवनं ॥ रामचंदके बाग आंबो मोहि रह्यो री ॥ ए चाल ॥

॥ देव श्री जिनराज, गुरु ते साथ जण्यो री ॥ धर्म जिने
श्वर प्रोक्त, लक्षण बोधितणो री ॥ १ ॥ बोधि लाजके काज सत्तम
नरक जलो री ॥ तेण विना सुरलोक, तातें अधिक बुरो री ॥ २ ॥
मिथ्या तापे तप्त, बोधही गंड लदेरी ॥ उपशम कायक वेद, ई
श्वर तीन कहे री ॥ ३ ॥ जवसायर हे अपार, फुल अस्ताथ क
ह्यो री ॥ जसु लाजे ते होय, गोसपद मात्र खरोरो ॥ ४ ॥ यद्
जावे अप्रमाण, नाण चारित्र जलारी ॥ बोधधर्ममें जीव, लाजें
कुशल कला री ॥ ५ ॥ इति दर्शन पदं ॥

॥ अथ दर्शनपद युई ॥

॥ जिनपण्णतत्त सूधा सरथै समकित गुण उजवाले जी,
जेद वेद करि आतम निरखो पशु टाली सुर पावै जी ॥ प्रत्या-
ख्यान सप्त तुल्य जारुयो गणधर अरिहंत मूरा जी, ए दर्शनपद
नित २ वंदो जवसागरको तीरा जी ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ क्षिप्रादिक रस राम बह्नि, मित आदम नाण ॥ जाव मि
लापसैं जिन जनित, सुय बेस प्रमाण ॥ १ ॥ जव गुण पज्जवि
उहि दोय, मण लोचन नाण ॥ लोकालोक स्वरूप जाण, इक के
बल जाण ॥ २ ॥ नाणावरणी नासथी ए, चेतन नाण प्रकाश ॥ सप्त
प्रदमें हीरधर्म, नित चाहत अवकास ॥ ३ ॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदन

॥ अथ ज्ञानपद स्तवनं ॥ म्हारे अति उछरंगे ॥ ए चाल ॥

जिनवर जापित आगम जणिया, तत्व यथास्थित गमि
जी ॥ म्हारे जगजन तारु ॥ ते उत्तम वर नाण कदायै, जविज
अदनिश चाहै जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ जकाजक कुपंथ सुपंथ, ये
यापेय ग्रंथा जी ॥ म्हा० ॥ देव कुदेव अहित हितधारी, जा
विचार जी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ श्रुति मति दोय ठे इंडी तारु

तेणं परोक्ष विचारू जी ॥ म्हा० ॥ उंदी मण केवल दे वारू, जीव
 प्रत्यक्ष सुधारू जी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ अयविजस्त वलें जग जाणें,
 लोकादिक अनुमाने जी ॥ म्हा० ॥ त्रिजुवन पूजै जासु पसायें,
 धारी शुभ अध्यवसायें जी ॥ म्हा० ॥ ॥ ॥ नाणावरणी तपशम
 हयथी, चेतन नाणकुं विलसै जी ॥ म्हा० ॥ सप्तम पदमें जवि
 जन हरखे, निसदिन कुशलता निरखै जी ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ इति ॥
 ॥ अय कानपद पूर्ण ॥

मति श्रुति इंदी जनिंत कहियै लहियै गुण गंजीरो जी,
 आतमधारी गणधर विधारी द्वादस अंग विस्तारो जी ॥ अवधि म
 नपर्यव केवल वलि प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी, ए पांच ज्ञानकूं वंदो
 पूजो जविजनने सुखकारो जी ॥ १ ॥ इति युई ॥

॥ अय चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

जस्त पसायें साहु पाय, जुग२ समितेंद ॥ नमन करै शुभ
 जाव लाय, फुन नरपति वृंद ॥ १ ॥ जंपै धरि अरिहंतराय, करि
 कर्म निकंद ॥ सुमति पंच तीन गुति युत, दै सुख अमंद ॥ २ ॥ इखु
 कति मान कसायथो ए, रहित लेस सुचवंत ॥ जीव चरितकूं हीर
 धर्म, नमन करत नित संत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

॥ अय चारित्रपद स्तवन ॥

॥ निर्विकल्प अज निर्गुणी, चिदाज्ञास निस्संग ॥ सुग्यानी
 साजलो ॥ टेर ॥ मूर्ति हीन चेतन करै, रूपी पुदगल रंग ॥ सु०
 ॥ १ ॥ स्पर्धक कारण वर्गणा, कार्ये कारण जाव ॥ सु० ॥ कृत्वा जो
 गसुधामता, लब्धा संख स्वजाव ॥ सु० ॥ २ ॥ पर्याप्ता लघु जो
 गर्भे, वृद्धि लहे जगमान ॥ सु० ॥ मध्यें वसु समयें लहे, अंतें दोंते
 जाण ॥ सु० ॥ ३ ॥ सहकारी मानसमुखा, कारण रम्य बलेण ॥
 सु० ॥ प्राप्ता घस्य प्रकारता, सप्त एजृतका तेन ॥ सु० ॥ ४ ॥ तडो
 घन रूपी जलो, चेतन संजम धाम ॥ सु० ॥ कर घन मिल पद

धर्ममें, कुशल जवतु अजिराम ॥ सु ॥ ५ ॥ इति चारित्रपद स्तवनं ॥

॥ अथ चारित्रपद शुद्धि ॥

॥ कर्म अपचय दूर खपावै आतम ध्यान लगावे जी, धारे
जावना सूधी जावै सागर पार ऊतारै जी ॥ खट खंन राजकूं दूर
तजीनें चक्रो संजम धारै जी, एहवो चारित्रपद नित वंदो आतम
गुण हितकारै जो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीरूपजादिक तीर्थनाथ, तन्नव सिव जाण ॥ बिहि अं
तेरपि बाह्य, मध्य द्वादस परिमाण ॥ १ ॥ वसुकर मित आमो त
ही, आदिक लब्धि निदान ॥ जेदे समता युत खिणें, दृग्धन कर्म
विमान ॥ २ ॥ नवमो श्रीतपपद जलो ए, इच्छारोध सरूप ॥ वंदनसें
नित हीरधर्म, दूर जवतु जवकूप ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद स्तवन ॥

॥ धारस जेद जण्या जिनराजे, बाह्य मध्यतणा जग काजे
रे ॥ म्हारे शिवपदश्रेणि ॥ ए आकणी ॥ तिण जव सिद्धितणा
वर ग्याता, जिनवर पिण तपना कर्ता रे ॥ म्हारे शि० ॥ १ ॥ त
मता सहितें जिनतें ज्ञारी, जली कर्मचमु पिण दारी रे ॥ म्हारे
शिवपदश्रे० ॥ जीव कनकसें कर्म कचोरा, दहे तप पावकका जोरा
रे ॥ म्हारे शिव० ॥ तप तरुवरना कुसम दे रुद्धि, देव नरनी
फल ते सिद्धि रे ॥ म्हारे शि० ॥ पाप सकल दे तमनी रासी, तप
जानुसे जायें नासी रे ॥ म्हारे शि० ॥ ३ ॥ जस्त पसायें लहियें
वारू, लब्धा सगली जगहितकारू रे ॥ म्हा० ॥ अति उकर फुन
साध्यता हीना, काम तातें वारू फीना रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ इच्छा
रोधन रूपी कहिये, तपपदही चैतन बहिये रे ॥ म्हा० ॥ पाठक
रुपासे, नवपद कुसलाकूं जासे रे ॥ म्हारे शि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ तप पद युई ॥

इन्द्रारोधन तप ते ज्ञास्यो आगम तेदनो साखी जी, इय
जावसे द्वादश दाखी जोग समाधी राखी जी ॥ चेतन निजगुण
परणित पेखी तेहिअ तपगुण दाखी जी, लवधि सकलनो कारण
देखी ईश्वरसें मुख ज्ञाखी जी ॥ १ ॥ इति तपपद स्तुति ॥

॥ अथ अतुर्विंशति जिन स्तुति ॥

श्रीमद्वृषज सर्षप, वृषजांक सुवर्णरुक् ॥ जय देवाधि देवादा,
नाजिराजेंद्र नंदनः ॥ १ ॥ बुगस्पादौ त्वयायेन, ज्ञानत्रय युते न
गत् ॥ जनन्या मरुदेवाबाः, बावनं जठरं कृतं ॥ २ ॥ इति वृषज
स्तुति ॥ अर्हताजितनाथेन, गज लांठन शालिना ॥ जितसत्रु
इदीपाल, पुत्रेण कनकत्विषा ॥ ३ ॥ विजयाकुक्षि रत्नेन, जगवं-
त्वयका जिनः ॥ जिता रागादयोयेन, वंदेत्वां सर्वदा मुदा ॥ ४ ॥
त्यजित स्तुति ॥ जितारिन्पतेर्वयात्, संजवः संजवाजिधः ॥
नाया नंदनो हेम, वणों गंधर्व लांठनः ॥ ५ ॥ सर्वसौख्यप्रदो मुख्य,
तन दर्शन संयुतः ॥ मुनीनां पुंगवो देवो, नित्यं दिसतुमांजिनः ॥
६ ॥ इति शंजव स्तुतिः ॥ सिक्षार्था नंदनं सार्धं, वीतरागं जग-
ति ॥ श्रीसंवर समुत्पन्नं, ध्रुवगांकं हिरण्यजं ॥ ७ ॥ अजिनंदन
मानं, विशुद्ध हृदयं सदा ॥ यस्तौति परया जक्त्या, सनालोकेजि
पते ॥ ८ ॥ इत्यजिनंदन स्तुति ॥ मेधाजिध धरि त्रोट, तन
मंगलप्रदः ॥ क्रोध लक्षण नृश्रेष्ठ, मरीचिर्मगलांगजः ॥ ९ ॥ सत्यं
वतिनाथेश ॥ सुमतिं तनु सचमां ॥ जविनां पुण्य कर्तृणां, स्वर्ग
रुपा वलि प्रदं ॥ १० ॥ इति सुमति स्तुतिः ॥ सुसीमापुत्र
क्रोक, नवद्युति धराधर ॥ धराजिव नृपोद्भूतः, पद्म लक्षण
कः ॥ ११ ॥ जवाब्धौ जव संकीर्णं, दुस्तरे पततां नृणां ॥
प्रायः सततं देव, पद्मप्रज जिनेश्वर ॥ १२ ॥ इति पद्मप्रज

स्तुति ॥ श्रीसुपार्श्वजिघोदेवः, पृथ्वीजः स्वस्तिकांकजृत् ॥
 प्रतिष्ठ नृप संजात, श्रामीकर करो जिनः ॥ १३ ॥ समुद्र
 इव गंजीरः, कर्माणां छेदने परः ॥ यः सार्वः परमब्रह्मा, रतं
 नौमि सदा विजृं ॥ १४ ॥ इति सुपार्श्व स्तुतिः ॥ चंडप्रज प्र
 जोकांत, चंड लक्षण संयुतः ॥ तमापतिष्ठ विज्ञान, तमोव्यूह वि
 नाशनः ॥ १५ ॥ संसार जलधेर्नाथ, महसेन नृपोन्नव ॥ लक्ष्मणा
 पुत्रमां स्वामि, नव केवल बोधजृत् ॥ १६ ॥ इति चंडप्रजु स्तुति ॥
 (अत्राद्यश्चत्रबंधः श्लोकः) ॥ संस्तुतोबोधवत्वाश्रु, सुरासुरनरेश्वरैः
 ॥ सुविधिर्वावितशर्म, सुग्रीवनृपनंदनः ॥ १७ ॥ यस्यासीकननीरा
 मा, माननीयादिवौकसां ॥ मानमुक्तोवदातोयो, मायौमकरलांघिनः
 ॥ १८ ॥ इति सुविधनाथ स्तुतिः ॥ (चामरबंधाविमौ) ॥ श्री
 मञ्जीतलनाथेश, नन्दादृढरथात्मजः ॥ ज्ञास्वत्सुवर्णवद्देह, श्रीवत्सांघां
 कधारक ॥ १९ ॥ त्वदीयचरणांजोज, सेवकानांविपुर्नृतां ॥ प्राकृ
 तं वृंजनव्यूहं ॥ इष्टंशंजोयदेविजो ॥ २० ॥ इति शीतलनाथ स्तु
 तिः ॥ विष्णुर्वैशार्कवद्देवो, विष्णुपुत्रोदिरण्यजः ॥ श्रेयोदृक्किरोज
 स्त्रं, खड्गलांघिनजृक्जिनः ॥ २१ ॥ हित्वाकर्मरिपुन्सार्य, श्रेयांसश्रे
 यसैः सेद ॥ परज्ञानमयेनत्वं, महानन्दपदंपरं ॥ २२ ॥ इति श्रेयां
 स स्तुतिः ॥ ११ ॥ वरोवार्त्तिरामीदा, जवतांरयदि ॥ ऊटितिष्ठे
 दितुंचित्ते, जोजव्याः प्राप्तुमकरं ॥ २३ ॥ तदाजजध्वमेनंदि, यातु
 पूज्यजपासुतं ॥ वसुपूज्यकुजोत्तंसं, महियांकंचरक्तजं ॥ २४ ॥ इ
 ति वासपूज्य स्तुतिः ॥ १२ ॥ श्रीमहिमलनाथेश, कृतवर्मसमुन्नयः
 ॥ शूकरांकधरस्यामा, पूत्रकल्याणदीधिते ॥ २५ ॥ चंड्यविमलज्ञान,
 त्वदांपस्मरणंविना ॥ कुर्वन्नप्येतिनोब्रह्म, प्रक्रियांनातिविस्तरां ॥ २६
 ॥ इति विमल स्तुतिः ॥ १३ ॥ देमवर्णस्यपूत्रस्य, सुवशःसिंद
 सेनयोः ॥ देवस्यदधेनचिह्नस्य, वर्णानन्तगुणोदधेः ॥ २७ ॥ इन्द्रा

योऽपि यस्यांतं, गुणानां खेजिरेनेहि ॥ अनन्तस्य गुणान्तस्य, कमो वक्तुं
 नरः कथं ॥ २८ ॥ इत्यनंतं स्तुतिः ॥ १४ ॥ सुव्रतापूत्रवर्जांक,
 आनुवंशार्कसन्निभः ॥ कनकप्रज्ञसर्वज्ञ, धर्मनाथान्निधेश्वरः ॥ २९ ॥
 तवागोपि पुरश्चारी, ज्ञातलेयास्यशोकतां ॥ अनुत्तरफलाः संति, सतां
 संगतयोपि हि ॥ ३० ॥ इति धर्मनाथ स्तुतिः ॥ विश्वसेनधराधी
 सं, नन्दनं मृगलक्षणं ॥ आचिरेयं सुवर्णानां, कलायामिजिनेश्वरं ॥
 ॥ ३१ ॥ तं श्रीमज्जातिनामानं, यस्याग्रे कुर्वते मुदा ॥ प्राज्यां सुमनसां
 वृष्टिं, विबुधाविबुधप्रियां ॥ ३२ ॥ इति शान्तिनाथ स्तुतिः ॥ श्री
 युतायाः श्रियपुत्र, श्रेयस्करहिरण्यज ॥ सूरिजूपतिसंजात, जगल
 क्षणधारकः ॥ ३३ ॥ कुंभुनाथजिनेशस्य, तीर्थं करजगरुते ॥ मदीयं
 पापसंदोहं, ज्ञवांतरकृतं घनं ॥ ३४ ॥ इति कुंभुनाथ स्तुतिः
 सुदर्शननृपोद्भूतं, नंदायर्त्ताकृतं युतं ॥ अंजोजवन्निरालेपं, देवीपुत्रसु
 वर्णजं ॥ ३५ ॥ जगन्मुख्यागुणाः सर्वे, धुर्य्यप्रज्जुतयाजिनं ॥ चरी
 कर्मिणमस्तमा, अरायपरमात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथस्तुति ॥ १८
 ॥ कुंजप्रजावतीपूत्रौ, नीलवर्णौ घटांकनृत् ॥ जगन्मित्रइव ध्वान्त,
 नासनाद्विदितः सदा ॥ ३७ ॥ उत्र प्रययुतो जाति, देवयोविष्टपुत्रये
 ॥ तस्य श्रीमल्लिनाथस्य, स्मरणेन मुदा सखे ॥ ३८ ॥ इति मल्लिना
 थ स्तुतिः ॥ सुमित्रनृपतेः सूनो, पद्माकुक्षिपवित्रकृत् ॥ कुर्मल
 क्षणजृद्धर्म, दायकस्यामलज्जये ॥ ३९ ॥ मुनिसुव्रतदेवेन, क्षीणक
 र्मारिभं मल ॥ देहित्वं मे व्ययीजातं, पदंतत्पुरुषोत्तमः ॥ ४० ॥ इ
 ति मुनिसुव्रत स्तुति ॥ २० ॥ श्रीमहिजयनूपाल, कुलोत्तंसहिर
 ण्यरूक् ॥ वप्रासुतनमिनाथ, नीलोत्पलसदंकनृत् ॥ ४१ ॥ यस्ते
 पंचजनो देव, निन्दाचक्ररुतेश्वरं ॥ स एति परमज्ञानं, कोपिनह्यत्र
 संशयः ॥ ४२ ॥ इति नमिनाथ स्तुतिः ॥ २१ ॥ शिवायास्तनयेव
 र्यं, समुद्रविजयोज्ञे ॥ हरिवंसद्वारौ शंजौ, शंखांकिकमलप्रज्ञे ॥ ४३

॥ त्यक्तराजीमतीस्नेहे, नेमनाथेजितेस्मरे ॥ सिद्धिप्रमदयामाला, प्र
त्यक्षेपिजिनेश्वरे ॥ ४४ ॥ इति नेमनाथ स्तुतिः ॥ २२ ॥ अश्वसेना
क्षेत्रपाल, सुतेनपरमेष्ठिना ॥ वामेयेनदितायेन, कमठस्याजिमान
ता ॥ ४५ ॥ तस्मैश्रीपार्श्वनाथाय, नमोस्तुमामकंसदा ॥ पवनास
नचिन्हाय, नीलवर्णायसंज्ञवे ॥ ४६ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥
श्रीमत्सिद्धार्थवंशार्क, त्रिशलेयजगत्पणे ॥ महानादध्वजार्दित, क
ल्याणंकरसर्वदा ॥ ४७ ॥ चरमस्तीर्थरुद्दीर, मोदेज्जहननेमृगात् ॥
स्वन्नक्तिदत्तचित्ताय, कमलांदेहिमेजिन ॥ ४८ ॥ इति वीरप्रभुस्तुतिः
॥ २४ ॥ इति श्रीकृष्णकल्याणोपाध्याय कृत चतुर्विंशति जिन स्तुतिः ॥

अथ नवपदजांके जलौके देववन्दनमें कहणैका चैत्यवन्दन प
हली लिखा है ॥ ॥ अथ नवपद वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

सुरमणी सम सहु मंत्रमां, नवपद अजिरामी रे लोय ॥
अहो न० ॥ करुणासागर गुणनिधी, जग अंतरजामी रे लोय ॥
अहो ज० ॥ १ ॥ त्रिजुवनजन पूजित सदा, लोकालोक प्रकासी
रे लोय ॥ अहो लो० ॥ एहवा श्रीअरिहंतजी, नमुं चित्त उज्जासी
रे लोय ॥ अहो न० ॥ २ ॥ अष्ट करमदल क्षय करी, अया सिद्ध
मरूपी रे लोय ॥ अहो अ० ॥ सिद्ध नमो ज्ञवि ज्ञावधी, जे आगम
अरूपी रे लोय ॥ अहो जे० ॥ ३ ॥ गुण उत्तीसे सोजतां, सुंदर
सुखकारी रे लोय ॥ अहो सु० ॥ आचारज तीजै पदै, बंदू अविकारी
रे लोय ॥ अहो वं० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशमी, तप दु विध
आराधी रे लोय ॥ अहो त० ॥ चोथे पद पाठक नमो, संवेग
ममाधी रे लोय ॥ अ० सं० ॥ ५ ॥ पंचाचार पालण परा,
पंचाश्रव त्यागी रे लोय ॥ अ० पं० ॥ गुणरागी मुनि पांचमें, प्रणमं
वन्दनागी रे लोय ॥ अ० प्र० ॥ ६ ॥ निज पर गुणनै उल्लै,
श्रुत अक्ष आवै रे लोय ॥ अ० श्रु० ॥ ठठे गुण दरसन नमो, आ-

तम शुभ्र ज्ञावे रे लोय ॥ अ० आ० ॥ ३ ॥ ग्यान नमो गुण
 सातमे, जे पंच प्रकारे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ स्व पर प्रकाशक
 दिनमणी, अज्ञान निवारे रे लोय ॥ अ० अ० ॥ ८ ॥ आठमें चा
 रित्रपद नमो, परज्ञाव निवारी रे लोय ॥ अ० प० ॥ स्वत्यादिक
 दस धर्मनो, जेह ठे अधिकारी रे लोय ॥ अ० जे० ॥ ए ॥ नवमे
 बलि तपपद नमो, बाह्यान्तर जेदे रे लोय ॥ अ० बा० ॥ बांध्या
 काल अनंतना, जे कर्म उछेदे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ १० ॥ ए
 नवपद बहुमानथी, ध्यावै शुभ्र ज्ञावै रे लोय ॥ अ० घ्या० ॥ नृप
 श्रीपालतणी परै, मन वंछित पावै रे लोय ॥ अ० म० ॥ ११ ॥
 आसू चैत्रुक मासमां, नव आंबिल करिये रे लोय ॥ अ० न० ॥
 नव उली विधि युत करी, शिवकमला वरिये रे लोय ॥ अ० शि० ॥
 ॥ १२ ॥ सिद्धवक्रनी बहु परै, वर मदिमा कीजे रे लोय ॥ अ०
 व० ॥ श्रीजिनलान कहे सदा, अनुपम जस लोजे रे लोय ॥ अ०
 अ० ॥ १३ ॥ इति नवपद स्तवनं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन २ जुं ॥ राग मारु ॥

तीरथनायक जिनवरु जी, अतिसय जास अनूप ॥ सिद्ध
 अनंत महागुणी जी, परमानंद सरूप ॥ जविक मन धारज्यो रे ॥
 धारज्यो नवपद ध्यान ॥ ज० ॥ १ ॥ ए टेर ॥ श्री आचारज गण
 धरु रे, गुण उचीस निवास ॥ पाठक पदवर मुनिवरु जी, श्रुत दा
 यक सुविजास ॥ ज० ॥ २ ॥ सुमति गुपति धर शोभता जी,
 साधू समतावंत ॥ सम्यग्दर्शन सुंदरु जी, ज्ञान प्रकाश अनंत ॥
 ज० ॥ ३ ॥ संवर साधना चरण ठै रे, तप उत्तम विधि दोय ॥
 ए नवपदना ध्यानथी रे, निरुपाधिक सुख दोय ॥ ज० ॥ ४ ॥
 अमृत सम जिनधर्मनो रे, मूल ए नवपद जाण ॥ अविचल अनु
 जव कारणे जी, नितप्रति नमत कज्याण ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ३ जुं ॥ राग प्रभाती ॥

नवपद ध्यान धरो रे, जविका न० ॥ मन वच काया कर
एकंते, विकथा दूर दरो रे ॥ न० ॥ १ ॥ मंत्र जमी अरु तंत्र घणे
रा, इन सबकुं विसरो रे ॥ अरिहंतादिक नवपद जपनें, पुण्य जं
मार जरो रे ॥ न० ॥ २ ॥ अरुसिद्ध नवनिधि मंगलमाजा, संपत्ति
सहज वरो रे ॥ लालचंद याकीबखिदारी, सुरतरु बीज खरो रे न० ॥ ३ ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ४ थुं ॥

जीया चतुरसुजाण नवपदके गुण गाय रे, जी० ॥ नवपद
महिमा जगमें मोटी, गणधर पार न पाय रे ॥ जी० ॥ १ ॥ जो
अपणो आतमसुख चाहे, तो इक ध्यान लगाय रे ॥ जी० ॥ करम
निकाचित दूर करणकुं, सुंदर शुद्ध ऊपाय रे ॥ जी० ॥ २ ॥ इन
को पुष्ट आलंबन करतां, अजर अमर पद थाय रे ॥ जी० ॥ इय
जिन जए आगामी होयगे, नवपद संग पसाय रे ॥ जी० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ५ मुं ॥

जिन नित नमो, नित नमो नमो नमो, जि० ॥ अरिहंत
सिद्ध उर आचारज, उवजाया मन गमो २ ॥ जि० ॥ १ ॥ सर्व
साधू मंगल ए पांचू, याहीसें दिल रमो २ ॥ जि० ॥ दर्शन ज्ञान
धरण तप उत्तम, याहीसें दिल दमो २ ॥ जि० ॥ सर्व पाप तज
जज नवपदकुं, सर्व पाप उपशमो २ ॥ जि० ॥ बाल कहे यही सार
जगतमे, उर द्वार मत जमो २ ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद थुई ॥

नितप्रति हूं प्रणमुं सिद्धचक्र सुज जाव, दिव कारज ति
दिनो जाधो एह ऊपाय ॥ तुज नाम पसायें आरति व्याधि पुलाय,
इग तुज अनुग्रहथी सुख संपत्ति मुज थाय ॥ १ ॥ श्रीअरिहंत न
मिथै सिद्ध सूरि उवझाण, मुनिवर त्रिक करनें वंसण नाण सुहाय ॥

हुग विधि चारिन्हें बुध बिष तप मन जाय, ये नवपद ध्यावता नि
रुपम शिवसुख थाय ॥ २ ॥ विद्यापरवादे जाणो ए अधिकार, श्री
गुरु उपदेशें सिद्धचक्र उद्धार ॥ प्रवचन अनुसारे जाण्यो एह विचा
र, जविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणजंमार ॥ ३ ॥ जिनधरम अ
नुरागी चक्रेसार सुखकार, सेवकने आपे सुख संपति परिवार ॥
द्विब निद्वि उदय करि चारित्रनंदी मम जाय, जिनचंद सूरिसर
खरतरपति सुपसाय ॥ ४ ॥ इति शुई ॥

॥ अथ जैतीसंगुक्त नवपद उलो करण विधि लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम दिवस विधि लिख्यते ॥

(प्रथम) आसो सुदि ७ अथवा चैत्र सुदि ७ सें उलो सरू
करे, कजी तिथि घटी होय तो ६ सें सरू करे, बढी होय तो ८ सें
सरू करे, लेकिन आंगिल ए पूनम तक करे. प्रथम जमीन शुद्ध
करके मारुणादिकसैं चित्रित करे, पीठे पट्टे पर सिद्धचक्र थापके त्रि
फाल पूजा करै. प्रज्ञातसमें राईपम्किमणा करके पीठे बल्लोंकी
पम्किहणा करै. जहां सिद्धचक्रकी थापना हे उहां आयके पांचे
शक्रस्तवे देव बांवे, पीठे नव चैत्योंमें अथवा नव प्रतिमा आगे नव
चैत्यवंदन करै, वासुकेय पूजा करे, पीठे केसरचंदनसैं पूजा करै.
गुरु पास आयके अष्टुक्तिमिके पाठसैं राई आलोवे, आंगिलका प
ञ्चस्काण करै. प्रथम अरिहंतपदका श्वेत रंग हे इत वास्ते चावलोंसैं
उर गरमपाणीसैं आंगिलका नियम करे. पीठे अरिहंतके बारे गु
णोंको विचार कर नमस्कार करै, सो लिखते हैं. सब गुणोंमे इहा
मिखमात्मणो वं० पाठ कदिके नमस्कार करै ॥

॥ अथ द्वादश अरिहंत गुणाः ॥

१ असोकवृक्ष प्रातिहार्य संगुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥

२ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संगुताय श्रीअ० ॥

३. दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

॥ चामरयुग प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

५. स्वर्णसिंहासण प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

६. चामंदल प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

७. कुंडुजि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

८. वज्रत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

९. ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअ० ॥

१०. पूजातिशय संयुताय श्रीअ० ॥

११. वचनातिशय संयुताय श्रीअ० ॥

१२. अपायापगमातिशय संयुताय श्रीअ० ॥ इति द्वादश अ० गु०

॥ इत्यादि नमस्कार करके अन्नदूतसियेण कहिके १२ लोगस्तका काउसग्न करै. एत लोगस्त प्रगट कहे, पीठै स्वस्थानक जा के चैत्यवंदन करै, पञ्चत्वाण पार के आंखिल करै. पहले बखत जल पीवे तब चैत्यवंदन कर के पीवे, पीठै मध्याह्न समय पांचे शक्रस्तवे देव बांढे. गुणनो (२०००) ॥ उँ ह्रीं एमो अरिहंतारण ॥ इस पदका करै, श्रीपालचरित्र सुणे. पूरा पहर दिन रहनेसे तीसरी बेर पांचे शक्रस्तवे देव बांढे. पीठै फेर चैत्यवंदन कर के त्रिविहार पञ्चस्काण करे पाणहारका । फेर सानायक ले के दिन रहते प्रति क्रमश करै. आरती के बखत दीप धूप पुष्प पूजा करै अथवा पहले आरती वगेरे करके पीठै पन्तिकमणा करै. (सोणे के बखत) पहले इरियाचही पन्तिकमके चैत्यवंदन करै, फेर २.५ संघारा गाथा सुणै ॥ निज्ञ नदी आवे जहां तक नव गुल स्मरण करै ॥ इति ॥

॥ अथ द्विनिष दिवस विधि विन्यसे ॥

॥ अथ इसी मुजब दूसरे दिन प्रजात समे की राय करजा पहले मुजब करके सिष्पदका लाज रंग दे इत वास्ते गेहूं की रो;

१ आबिल करै ॥ नै हँही एमो सिद्धाणं ॥ इस पदका दो हज़ार जा करै, सिद्धपदका ॥ गुण दे. ७ नमस्कार गुरु करावे सो लि० ॥

॥ अथ सिद्ध अष्ट गुणाः ॥

- १ अनंत ज्ञान संयुताय श्री सिद्धाय नमः ॥
- २ अनंत दर्शन संयुताय श्रीसि० ॥
- ३ अव्याबाध गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ४ अनंत सम्यक्त चारित्र गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ५ अक्षयस्थिति गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ६ अरूपी निरंजन गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ७ अगुरु लघु गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ८ अनंतवीर्यगुण संयुताय श्रीसि० ॥ इति सिद्धाष्टगुणाः ॥

यह आठ नमस्कार करके अन्नव्रतति ७ कहेके आठ लोगस्तका वसग करै, एक लोगस्त प्रगट कहे, फेर पूर्वोक्त करणी करै ॥

॥ अथ द्वितीय दिवस विधि लिख्यते ॥

पूर्वोक्त विधितें प्रजात कर्त्तव्य करै, आचार्यपद पीले वर्ण दे । वास्ते चणाकी दालका आबिल करै ॥ नै हँही एमो आचारि णं ॥ इस पदका दो हज़ार जाप करै, आचार्यके ३६ गुण दे, सित नमस्कार गुरु करावे सो लिखते दे ॥

॥ अथ आचार्य छत्रीस गुणाः ॥

- १ प्रतिरूपगुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- २ सूर्यवक्त्रेजस्वी गुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ३ युगप्रधानागम संयुताय श्रीआ० ॥
- ४ मधुर वाक्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ५ गांजीर्धगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ६ धैर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥

- ७ उपदेशगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 ८ अपरिश्रावीगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 ९ सौम्यप्रकृतिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 १० शीलगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 ११ अविग्रहगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 १२ अविकथकगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 १३ अचपलगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 १४ प्रसंतवदनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 १५ कृमागुण संयुताय श्रीआ० ॥
 १६ मृडगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 १७ सर्वसंगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 १८ रुजुगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 १९ द्वादस विध तपगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 २० सप्तदश विध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 २१ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 २२ सौचगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 २३ अकिंचनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 २४ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 २५ अनित्य ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
 २६ असरण ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
 २७ संसार स्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
 २८ एकत्व स्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
 २९ अन्यत्व ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
 ३० अशुचि ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
 ३१ आश्रय ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३२ संवर जावना जावकाय श्रीआ० ॥

३३ निर्जरा जावना जावकाय श्रीआ० ॥

३४ लोकस्वरूप जावना जावकाय श्रीआ० ॥

३५ बोधदुर्लभ जावना जावकाय श्रीआ० ॥

३६ धर्मदुर्लभ जावना जावकाय श्रीआ० ॥ इतिपदत्रिसत् आ०

॥ यह उक्तीस नमस्कार करके अन्ननूससि० कदके उक्तीस
६ लोगस्तका काउसग करे, प्रगट लोगस्त कदे, पूर्वोक्त करणी
मसें करै, इति तृतीय दिवस विधि ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं शमो उवज्ञायाणं ॥ इस पदका २, दझार जाप
रै, हरेमूंगका आंबिल करै, उपाध्याय पदके २५ गुण याद करके
मस्कार करै ॥

॥ अथ उपाध्यायजी के २५ गुण लिख्यते ॥

- १ श्रीआचारांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ॥
- २ श्रीसुयगमांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ३ श्रीगणांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ०
- ४ श्रीसमवायांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ५ श्रीजगवतीसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ६ श्रीज्ञातासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ७ श्रीउपासगदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ८ श्रीअंतगमदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ९ श्रीअणुचरोववाइसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- १० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ११ श्रीविपाकसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- १२ उत्पादपूर्व पठनगुण यु० ॥

१३ आश्रयणीपूर्व पठनगुण यु० ॥

१४ वीर्यप्रवाद पठनगुण यु० ॥

१५ अस्तिप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

१६ ज्ञानप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

१७ सत्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

१८ आत्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

१९ कर्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

२० प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व पठनगुण यु०

२१ विद्याप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

२२ अविध्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

२३ प्राणायामप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

२४ क्रियाविस्तारपूर्व पठनगुण यु० ॥

२५ लोकविस्तार पठनगुण यु० ॥ इति पंचविंशत्योपाध्यायगुण

इस तरे २५ नमस्कार करै, खना हो के अन्नदूध कहे ।
लोगस्तका काउसग करै, प्रगट लोगस्त कहै पारे, पीठे पूजे
करणी करै ॥ इति चतुर्थ दिवस विधि ॥

॥ अथ पंचम दिवस विधि लिख्यते ॥

उं ह्रीं एमो लोए सब साहूणं ॥ इस पदका २ हजार गुण
ना करै, साधुपद काले वर्ण हे इस वास्ते उरुद के वाकलोसें अ
विल करै, सर्व साधुपदके सत्ताईस गुण विचारता हुवा नमस्कार करै

॥ अथ साधुपदके २७ गुण लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणव्रत युक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥

२ मृपावादविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥

३ अदत्तादानविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥

४ मैथुनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥

- ५ परिग्रहविरमणव्रत युक्ताय श्रीता० ॥
 ६ रात्रिज्ञोजनविरमणव्रत युक्ताय श्रीता० ॥
 ७ पृथ्वीकाय रक्षकाय श्रीता० ॥
 ८ अग्निकाय रक्षकाय श्रीता० ॥
 ९ तेजकाय रक्षकाय श्रीता० ॥
 १० वायुकाय रक्षकाय श्रीता० ॥
 ११ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्रीता० ॥
 १२ व्रसकाय रक्षकाय श्रीता० ॥
 १३ एकैन्दीजीव रक्षकाय श्रीता० ॥
 १४ द्वैन्दीजीव रक्षकाय श्रीता० ॥
 १५ त्रैन्दीजीव रक्षकाय श्रीता० ॥
 १६ चोद्दीजीव रक्षकाय श्रीता० ॥
 १७ पंचैन्दीजीव रक्षकाय श्रीता० ॥
 १८ लोभ निग्रहकाय श्रीता० ॥
 १९ क्रमागुण युक्ताय श्रीता० ॥
 २० शुद्धज्ञावना ज्ञावकाय श्रीता० ॥
 २१ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीता० ॥
 २२ संजमयोग युक्ताय श्रीता० ॥
 २३ मनोगुप्त युक्ताय श्रीता० ॥
 २४ वचनगुप्त युक्ताय श्रीता० ॥
 २५ कायगुप्त युक्ताय श्रीता० ॥
 २६ सीतादि द्वाविंशति परीतद् सदृश तत्पराय श्रीता० ॥
 २७ मरणांतउपसर्ग सदृश तत्पराय श्रीता० ॥ इति साधुगुणः ॥

इस चजे २७ नमस्कार करै, २७ लोगस्तका काउसग करै,
 प्रगट लोगस्त कहिके पारे. पीठे पूर्वोक्त करणी करै. यह पंच पर

मेष्टि पदके सब गुण मिलाएते १०८ होता हे, इस वास्ते माल
एकसो आठ मणिये होते हे ॥ इति पंचम दिवस विधिः ॥

॥ अथ षष्ठ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ नै ह्रीं एमो वंसणस्त ॥ इस पदका २ हजार जाप क
दर्शनपद सपेद वर्ण हे इस वास्ते चावलोंका आंखिल करै, सम्यक्
समस्त गुण चितवकर नमस्कार करै ॥

॥ अथ सम्यक्के सबसठ भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थ संस्तवनारूप श्रीसद्दर्शनाय नमः॥
- २ परमार्थ ज्ञानृसेवनारूप सद्० ॥
- ३ व्यापन्न दर्शन वर्जनरूप सद्० ॥
- ४ कुदर्शन वर्जनरूप सद्० ॥
- ५ शुश्रूषारूप सद्० ॥
- ६ धर्मरागरूप सद्० ॥
- ७ वैषादृत्तरूप सद्० ॥
- ८ अर्द्धदिनयरूप सद्० ॥
- ९ सिद्धविनयरूप सद्० ॥
- १० चैत्यविनयरूप सद्० ॥
- ११ श्रुतविनयरूप सद्० ॥
- १२ धर्मविनयरूप सद्० ॥
- १३ साधुवर्ग विनयरूप सद्० ॥
- १४ आचार्य विनयरूप सद्० ॥
- १५ उपाध्याय विनयरूप सद्० ॥
- १६ प्रवचन विनयरूप सद्० ॥
- १७ दर्शन विनयरूप सद्० ॥
- १८ संसारे जिनसारमिति चितवनरूप सद्० ॥
- १९ संसारे जिनमति सारमिति चितवनरूप सद्० ॥

- २० सैसारे जिनमत स्थित साध्यादि सारमिति चिं० ॥
 २१ शंकादूषण रदिताय सद० ॥
 २२ कांक्षादूषण रदिताय सद० ॥
 २३ विचिकित्सारूप दूषण रदिताय सद० ॥
 २४ कुट्टप्रिशंसादूषण रदिताय सद० ॥
 २५ तत्परिचय दूषण रदिताय सद० ॥
 २६ प्रवचनप्रज्ञावरूप सद० ॥
 २७ धर्मकथाप्रज्ञावरूप सद० ॥
 २८ वादीप्रज्ञावरूप सद० ॥
 २९ नैमित्तिकप्रज्ञावरूप सद० ॥
 ३० तपस्वीप्रज्ञावरूप सद० ॥
 ३१ प्रज्ञापादिक विद्याभूतप्रज्ञावरूप सद० ॥
 ३२ चूर्णभ्रंजनादि सिद्धप्रज्ञावरूप सद० ॥
 ३३ कविप्रज्ञावरूप सद० ॥
 ३४ जिनसासने कौसलता ज्ञापण सद० ॥
 ३५ प्रज्ञावनाज्ञापणरूप सद० ॥
 ३६ तीर्थसेवाज्ञापणरूप सद० ॥
 ३७ स्थैर्यताज्ञापणरूप सद० ॥
 ३८ जिनसासने ज्ञातिज्ञापणरूप सद० ॥
 ३९ उपशम गुणरूप सद० ॥
 ४० संवेग गुणरूप श्रीत० ॥
 ४१ निर्वेद गुणरूप श्रीत० ॥
 ४२ अनुकंपा गुणरूप श्रीत० ॥
 ४३ आस्तिका गुणरूप सद० ॥
 ४४ परतीर्थकादि वंदनवर्जनरूप सद० ॥

- ४५ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जनरूप सह० ॥
 ४६ परतीर्थकादि आलाप वर्जनरूप सह० ॥
 ४७ परतीर्थकादि संलाप वर्जनरूप सह० ॥
 ४८ परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन श्रीस० ॥
 ४९ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषणवर्जन श्रीस० ॥
 ५० राजाज्ञियोगाकारयुक्त श्रीसह० ॥
 ५१ गणाज्ञियोगाकारयुक्त श्रीस० ॥
 ५२ बलाज्ञियोगाकारयुक्त श्रीसह० ॥
 ५३ सुराज्ञियोगाकारयुक्त श्रीसह० ॥
 ५४ कांतारवृत्याकारयुक्त श्रीस० ॥
 ५५ गुरुनिग्रहकारयुक्त श्रीस० ॥
 ५६ सम्यक्तचारित्रधर्मस्व मूलमिति चिंतनरूप सह० ॥
 ५७ चारित्रधर्मस्य पुरस्यद्धारमिति चिंतन श्रीसह० ॥
 ५८ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सह० ॥
 ५९ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सह० ॥
 ६० चारित्रधर्मस्याधारमिति चिंतनरूप सह० ॥
 ६१ चारित्रधर्मस्य ज्ञानमिति चिंतनरूप सह० ॥
 ६२ चारित्रधर्मस्य सन्निभमिति चिंतनरूप सह० ॥
 ६३ अस्तिजीवेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीसह० ॥
 ६४ सचजीव नित्येति श्रद्धानस्थानयु० सह० ॥
 ६५ सचजीव कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थानयु० सह० ॥
 ६६ सचजीव कृतकर्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्थान यु० सह० ॥
 ६७ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस० ॥
 ६८ अस्तिपुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस० ॥ इति सह० ॥
 ॥ इति वजे समस्त नमस्कार कर खमादोके अन्नबू० कदके

६७ लोगस्तका काउसग करै. एक लोगस्त प्रगट कहेके पारे. पीठे पूर्वोक्त करणी करै. इति षष्ट दिवस विधिः॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो नाणस्त ॥ इस पदका २ हजार जाप करै. ज्ञानपद उज्ज्वल बर्णी, तंडुलका आंखिल करै, इकावन जेद ज्ञानपद के चिंतव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ ज्ञानपदके ५१ भेद लिख्यते ॥

- १ स्पर्शनेंदी व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- २ रसनैंदी व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- ३ घ्राणेंदी व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- ४ श्रोत्रेंदी व्यंजनावग्रह मति० ॥
- ५ स्पर्शनेंदी अर्थावग्रह मति० ॥
- ६ रसनैंदी अर्थावग्रह मति० ॥
- ७ घ्राणेंदी अर्थावग्रह मति० ॥
- ८ चक्षुरिंदी अर्थावग्रह मति० ॥
- ९ श्रोत्रेंदी अर्थावग्रह मति० ॥
- १० मन अर्थावग्रह मतिज्ञाना० ॥
- ११ स्पर्शनेंदीईदा मति० ॥
- १२ रसनैंदीईदा मति० ॥
- १३ घ्राणेंदीईदा मति० ॥
- १४ चक्षुरिंदीईदा मति० ॥
- १५ श्रोत्रेंदीईदा मति० ॥
- १६ मनेकरीईदामति० ॥
- १७ स्पर्शनेंदीअपाय मति० ॥
- १८ रसनैंदीअपाय मति० ॥
- १९ घ्राणेंदीअपाय मति० ॥

- २० चक्षुरिंद्रीश्रपाय मति० ॥
 २१ श्रोतेरिंद्रीश्रपाय मति० ॥
 २२ मनैनापाय मति० ॥
 २३ स्पर्शनेरिंद्रीधारणा मति० ॥
 २४ रसनेरिंद्रीधारणा मति० ॥
 २५ घ्राणेरिंद्रीधारणा मति० ॥
 २६ चक्षुरिंद्रीधारणा मति० ॥
 २७ श्रोतेरिंद्रीधारणा मति० ॥
 २८ मनोधारणा मति० ॥
 २९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ३० अनक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ३१ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ३२ असंज्ञी श्रुत० ॥
 ३३ सम्पक् श्रुत० ॥
 ३४ मिथ्या श्रुत० ॥
 ३५ सादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ३६ अनादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ३७ सपर्यवसति श्रुत० ॥
 ३८ अपर्यवसति श्रुत० ॥
 ३९ गमिक श्रुतज्ञान० ॥
 ४० अगमिक श्रुत० ॥
 ४१ अंगप्रविष्ट श्रुत० ॥
 ४२ अनंगप्रविष्ट श्रुत० ॥
 ४३ अणुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥
 ४४ अणूणगामि अवधि० ॥

४५ बद्धमान अवधि० ॥

४६ हीयमान अवधिज्ञा० ॥

४७ प्रतिपाती अवधि० ॥

४८ अप्रतिपाती अवधि० ॥

४९ रुजुमति मनःपर्यवज्ञानाय नमः।

५० विपुलमति मनःपर्यवज्ञा० ॥

५१ लोकालोक प्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नमः॥इति पं० ज्ञा०।।

इस तरे ५१ नमस्कार करे, खन्ना होके अन्नवू० कढ़के एका वन लोगस्तका काजसग करे, एक लोगस्त प्रगट कढ़के पारे, पीठे पूर्वोक्त करणी करे, इति सप्तम दिवस विधि ॥

॥ अथ अष्टम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो चारित्रस्त ॥ इस पदका २ हजार जाप करे, चारित्र पदका उज्ज्वल वर्ण हे, इसोसिं तंडुलका आंघिल करे, सत्तर जेव चारित्रपदके चित्तवके नमस्कार करे,

॥ अथ चारित्रपद के ७० भेद लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूप चारित्राय नमः ॥

२ मृषावादविरमणरूप चारित्रा० ॥

३ अदत्तादानविरमणरूप चारि० ॥

४ मैथुनविरमणरूप चारि० ॥

५ परिग्रहविरमणरूप चारि० ॥

६ क्षमाधर्मरूप चारित्रेज्यो नमः॥

७ आर्षवधर्मरूप चारित्रे० ॥

८ मृडताधर्मरूप चारित्रे० ॥

९ मुक्तधर्मरूप चारित्रे० ॥

१० तपोधर्मरूप चारित्रे० ॥

- ११ संयमधर्मरूप चारि० ॥
- १२ सत्यधर्मरूप चारि० ॥
- १३ सौचधर्मरूप चारि० ॥
- १४ अकिंचनधर्मरूप चा०
- १५ वंजधर्मरूप चारि० ॥
- १६ प्रज्वीरकासंयम चारि० ॥
- १७ उदगरकासंयम चारि०
- १८ तेजुरकासंयम चा० ॥
- १९ वाजुरकासंयम चारि० ॥
- २० वनस्पतिरकासंयम चारि० ॥
- २१ वैश्वीरकासंयम चारि०
- २२ तेज्ज्वीरकासंयम चारि० ॥
- २३ चौज्वीरकासंयम चारि० ॥
- २४ पंचेज्वीरकासंयम चारि० ॥
- २५ अजीवरकासंयम चारि० ॥
- २६ प्रेकासंयम चारि० ॥
- २७ उपेकासंयम चारि० ॥
- २८ अतिरक्तवस्त्रजकादि परव्रत त्यागरूप संयम चारि०
- २९ प्रमार्जनरूप संयम चारि० ॥
- ३० मनसंयम चारि० ॥
- ३१ वाक्संयम चारि० ॥
- ३२ कायासंयम चारि०
- ३३ आचार्य वेद्यावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥
- ३४ तपाध्याय वेद्यावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥
- ३५ तपस्वी वेद्यावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥

- ३६ लघुशिष्यादि वेयावृत्त्यरूप संयम चा० ॥
 ३७ गिलाणसावु वेयावृत्त्यरूप संयम चा० ॥
 ३८ साधु वेयावृत्त्यरूप संयम चा० ॥
 ३९ श्रमणोपासक वेयावृत्त्यरूप संयम चा० ॥
 ४० संघवेयावृत्त्यरूप चारि० ॥
 ४१ कुलवेयावृत्त्यरूप चारि० ॥
 ४२ गणवेयावृत्त्यरूप चारि० ॥
 ४३ पशुपंम्गादिरहित वसति वसण ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
 ४४ स्त्रीदास्यादि विकथावर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
 ४५ स्त्रीआसनवर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
 ४६ स्त्रीअंगोपांग निरीक्षण वर्जनरूप चारि० ॥
 ४७ कुरुयंतरसहित स्त्रीदावजाव सुणन वर्जन ब्र०
 ४८ पूर्वस्त्रीसंज्ञोग चिंतन वर्जन ब्रह्मगुप्त चा०
 ४९ अतिसरस आहारवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
 ५० अतिआहार करणवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
 ५१ अंगविज्ञूपावर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
 ५२ अणसण तपोरूप चा०
 ५३ उणोदरी तपोरूप चा० ॥
 ५४ वित्तसंखेवरूप चा० ॥
 ५५ रसत्याग तपोरूप चा० ॥
 ५६ कायकिलेस तपोरूप चा० ॥
 ५७ संलेखणा तपोरूप चा० ॥
 ५८ प्रायश्चित्त तपोरूप चा० ॥
 ५९ विनय तपोरूप चा० ॥
 ६० वेयावच्च तपोरूप चा० ॥

६१ तिज्जाय तपोरूप चा० ॥

६२ ध्यान तपोरूप चारि० ॥

६३ उपसर्ग तपोरूप चा० ॥

६४ अनंत ज्ञान संयुक्त चा० ॥

६५ अनंत दर्शनसंयुक्त चा० ॥

६६ अनंत चारित्रसंयुक्त चा० ॥

६७ क्रोध नियन्त्रण चारि० ॥

६८ मान नियन्त्रण चारि० ॥

६९ माया नियन्त्रण चा० ॥

७० लोभ नियन्त्रण चा० ॥ इतिसित्तचारित्रज्ञेदाः ।

॥ इस तरै ७० नमस्कार करे, खम्हा हो के अन्नब्रूतसि
७० लोगस्तका काउसग करे, एक लोगस्त प्रगट कहे, पूर्वोक्त
रणी करे ॥ इति अष्टम दिवस विधिः ॥

॥ अथ नवम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ठैं हूँ। एमो तवस्त ॥ इस पदका २ हजार गुणना को
तपपदका उज्ज्वल वर्ण इस वास्ते चावलोंका आंघिल करे, पया
ज्ञेद तपपदके चितव के नमस्कार करे ॥

॥ अथ तपपद के ५० भेद लिख्यते ॥

१ यावन् कश्चिन् तपसे नमः ॥

२ इत्यत्र तपज्ञेद तपसे नमः ॥

३ बाह्यउणोदरी तपज्ञेद तपसे नमः ॥

४ अन्यंतरउणोदरी तपज्ञेद त० ॥

५ उच्यतपवृत्ती संखेय तपज्ञेद त० ॥

देशतप विनी संखेय तपज्ञेद त० ॥

कालतप विनी संखेय तपज्ञेद त० ॥

७ ज्ञेयतप विनी संखेय तपज्ञेद त० ॥

१० कायकिलेस तपजेद तप० ॥

१० रसत्याग तपजेद तप० ॥

११ इंद्रिकपाय योग विषयक संलीणता तपसे नमः ॥

१२ स्त्री पशु पंढकादि वर्जित स्थान अवस्थित संलीणता त० ॥

१३ आलोचन प्रायश्चित्त तप० ॥

१४ पन्तिकमण प्रायश्चित्त तप० ॥

१५ मिश्र प्रायश्चित्त तपसे ० ॥

१६ विवेक प्रायश्चित्त तप० ॥

१७ उपसर्ग प्रायश्चित्त त० ॥

१८ तप प्रायश्चित्त त० ॥

१९ जेद प्रायश्चित्त त० ॥

२० मूल प्रायश्चित्त त० ॥

२१ अणवस्थित प्रायश्चित्त त० ॥

२२ पारंचिय प्रायश्चित्त त० ॥

२३ ग्यान विनयरूप तप० ॥

२४ दर्शन विनयरूप तप० ॥

२५ चारित्र विनयरूप त० ॥

२६ गुर्वादिक मन विनयरूप त० ॥

२७ वचन विनयरूप त० ॥

२८ काय विनयरूप त० ॥

२९ उपचारक विनयरूप तप० ॥

३० आचार्य वेयावच्च त० ॥

३१ उपाध्याय वेयावच्च त० ॥

३२ साधू वेयावच्च त० ॥

३३ तपस्वी वेयावच्च त० ॥

३४ लघुशिष्यादि वेयावच्च त० ॥

३५ गिलाणसाधू वेयावच्च त० ॥

३६ श्रमणोपासक वेयावच्च त० ॥

३७ संघ वेयावच्च तप० ॥

३८ कुल वेयावच्च त० ॥

३९ गण वेयावच्च तप० ॥

४० वायणा तपसेनमः ॥

४१ पृच्छना तपसे नमः ॥

४२ परावर्त्तना तपसे नमः ॥

४३ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ॥

४४ धर्मकथा तपसे नमः ॥

४५ आर्त्तध्याननिवृत्त तपः ॥

४६ रौद्रध्याननिवृत्त तप० ॥

४७ धर्मध्यान चिंतन त० ॥

४८ शुक्लध्यान चिंतन तप० ॥

४९ बाह्य उपसर्ग तपसे नमः ॥

५० अन्त्यंतर उपसर्ग तपसे नमः ॥ इति पंचाश तपपद ज्ञेयाः ।

इस तरे ५० नमस्कार करै. खना होके अन्नब्रूसति० इत्य
दे कदेके ५० लोगस्तका कान्तगग करै. एक लोगस्त प्रगट कदे
ीठै पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति नवम दिवस विधिः ॥

॥ अय तपस्या ग्रहण करणेंकों गुरु पास जाणेकी विधिः ॥

प्रथम शुज घनी देखेके अछा वस्त्र आज्ञापण पहरके तिलक
रकै दोवसरसुं मस्तकमें धारण करके हाथके मौली बांधेके अक्षत
नी श्रीफल नैवद्य यथाशक्ति रोकझ्य लेके नवकार गुणता
५ गुरुके पास जावै. द्वादशावर्त्त वंदना करके ग्यानपूजा करै

वै प्रमोदयंत होके तप ग्रहण करे, ग्रहण करनेकी विधि आगे
लिखी है ॥ इति तपस्या ग्रहणार्थं गुरु पास जानेकी विधिः ॥

॥ अथ संक्षेप उजमणाविधि उलीकी लिख्यते ॥

पंचवर्ण के अनाजसें सिद्धचक्रका मंमल करै. सिद्धचक्रजी
चो तरफ तीन गढ़ चूनीके आकार बनावे. पहिले गढ़में अष्टदल
मलके आकार नवपद स्थापन करै. पद९ के रंग मुजब गुण
आणसें रत्न चढ़ावे उर पंचवर्णके फूज, पंच वर्णके धान्य, नव
वर्णका गोटा रंगके अपणेश रंग मुजब धीतुरेसे जरके चढ़ावै
रंगी ए धजा चढ़ावे, दूसरे वलयमें सोखे श्रीफल अथवा सु-
नी चढ़ावै. तीसरे वलयमें ४० ठूहारा चढ़ावै, नव निधानोंकी
नव बने फल चढ़ावै, नवग्रह दसदिग्पाल पदमें पकान्न रंगरं
चढ़ावै. इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धचक्र स्थापना घरदेरासरमें
उर जिनमंदिरमें धादिरले मंमपमें ए ॥ ७ ॥ हाथ प्रमाणें
रचना करै. विस्तारसें सब विधि गुरुके हाथसें करै, नवपद
की पूजा पढाय फलत ढालै, धवलमंगल गीतग्यान गावै, वाजि
जावै, महा महोच्चर उदार चित्तसें करै, मंगलद्वीप आरती प्र
करै. दूसरे दिन वित्तर्जन करै. इति संक्षेप सिद्धचक्र मंमल वि
॥ अब दसमें दिन गुरु पास आयके उलीके तपकों पारै. तप
को विधि आगे लिखी है तथा उद्यापनमें ग्यानजक्तिके कार
पूजा ए बीटांगणा ए पुस्तक ए लेखण ए ठवणी नव जिल
ए रुमाल ए मोरा ए मिजासणा ए थापना ए चंद्रआ ए पू
ए आरती ए कलश ए जपमाला ए मंदिर करवावे, ए प्रति
तिलक ए मुगट इत्यादिक नवर चीज बणवावे, शक्ति नही
तो यथाशक्ति रोकनाणो चढ़ावै. देवपदका देवमें देवे, गुरुप
गुरुकुं देवे, ज्ञानपदका ज्ञानस्वाते लगावै, इत्यादिक यथायोग्य
वेत्रमें स्वरचं करै. इति सिद्धचक्र संक्षेप उजमणाविधिः ॥

त नाम जगवानने अनुमोगद्वारसूत्रमें सूत्रका लिखा है, एकार्थ
चक्र दे इत वास्ते जइवाह उमास्वातिवाचकादिकोके बनाये
र्युक्त वेद प्रशमरति आदि पांचसो ग्रंथ सूत्रवत् मानने चाहिये,
क क्रोम पुस्तक श्रुतकेवलीयोके बनाये अन्नं। जंमारोमे मौजूद है ॥

॥ अथ अष्टापद जुली करण विधि लिख्यते ॥

॥ इसी चैत्र मासमें सुदि (८) से लेकर पूर्णमासी तक
केइयक जयजीव) अष्टापदजीकी जुली करते हैं (जिसमें)
मेकमणा, देववंदन, देवपूजा, इत्यादिक सब विधि नवपदजीकी
ही तुल्य करे. (इतना विशेष है) श्री अष्टापद तीर्थाय नमः
इस पदका) २००० गुणना (वा) बीस जाप करै. अरिहंतप
; १२ गुणका नमस्कार करै, ११ लोगस्तका काउसग्य करै, आ
त्र (वा) एकातणेका पञ्चस्काण करै, पीठै पूणमासीके दिन अ-
वपर्वतकी आपना करै, मंगल रचै, सो विधि लिख्यते हैं ॥

पूर्व

१ । २ ।

त्रिवेदिकमध्य
असोकवृक्ष
उर्ध्वः

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२

पश्चिम

(चत्वारि दक्षिणाए, पश्चिम

अवउत्तरारि ॥ दस पुवाए दो अवा,

वंगमि वंदे चउबीसं ॥ १ ॥ पुवा

इं उत्तमजिये ॥ दक्षिणात्वं सं

जवाइ चत्वारि, पश्चिम सुपातमा

इ, धम्माइ दसउत्तरत्वं ॥ २ ॥)

इति प्रथम परिपाटी ॥ प्रथम

यथाक्रमसें चौबीस कोठे मंगल

में बणाणा. इहां कांकणनोरे मो

ली आत्मरक्षापूर्वक नवपदजीके

मंगलवत् जाणना. नवग्रह दश

दग्पाल थापना करे. पीठै एक २

काव्यपद २ के एकेक कोठेमें एक २

१५१६१७१८१९२०२१२२२३२४

०५१०१११२१३१४१५१६१७१८१९२०२१२२२३२४

पश्चिम

जिनेश्वरके नामके चिठी उत्त पर बरक चढा सुपारी
 एवं ॥ २४ ॥ अथ काव्य ॥ श्रीनाजेशजिनेश्वरं, नं
 सितांशुकः ॥ यथाकुमुदतीनेता, नंदायतसितांशुकः ॥ १ ॥
 श्री अर्ह ऐ श्रीरूपजदेवस्वामी वेदिकापोठे तिष्ठ २ स्वाहा ॥
 उपाध्वमजितंजक्त्या, कंदयानामनेकपं ॥ प्रणतोद्धेधितंज्ञान,
 धानामनेकपं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्ह ऐ श्रीअजितस्वामी०
 श्रीशंजवप्रपन्नाये, समयंतेसदादरात् ॥ तेसंतारवनांमुक्ति,
 तेसदादरात् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्ह ऐ श्रीसंजवस्वामी० ॥
 येजिनंदनतेतीर्थ, राजपादसज्जाजनाः ॥ विलसंतिचिरंतेत्र, रा
 दसज्जाजनाः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्ह ऐ श्रीअजि० ॥ ४ ॥
 तांहीदयीमुक्तये, कांताराजीवमालया ॥ सुमतेतवलीनादः, कां
 जीवमालया ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्री ऐ श्रीसुमति० ॥ ५ ॥ पद्म
 सुदृष्टीनां, जूरिशोभातपोदयाः ॥ हन्यात्तमांसिपूवेव, जूरिशो
 पोदयाः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्ह ऐ श्रीपद्मप्रज्ञ० ॥ ६ ॥ सु
 तत्श्रुतंश्रुत्वा, दर्पकोपक्रमानलां ॥ मुंचंतिजंतवःशांता, दर्प
 क्रमानलां ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्ह ऐ श्रीसुपार्थ० ॥ ७ ॥ जव
 प्रज्ञेदेण, यैरजाजिसमुन्नतः ॥ यैरजाजिसमुन्नतः॥
 ॐ ह्रीं श्री अर्ह ऐ श्रीचंद्र० ॥ ८ ॥ सुविधेत्वद्विधिंप्राप्य, प्रमा
 समाहितः ॥ येतेश्रेयःश्रयंश्रस्त, प्रमायंतसमाहितः ॥ ९ ॥
 ह्रीं श्री अर्ह ऐ श्रीसुविधि० ॥ ९ ॥ सेवतेशीतलत्वांये, देवसं
 केवलं ॥ अपिमुक्तिर्जवेत्तेपां, देवसंपन्नकेवलं ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं
 अर्ह ऐ श्रीशीत० ॥ १० ॥ श्रीश्रेयांसतनूजाजां, परमोक्तगतिर्ज
 न् ॥ अनंतानुसत्त्वविश्रांतं, परमोक्तगतिर्जवान् ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं
 अर्ह ऐ श्रीयांस० ॥ ११ ॥ वासुपूज्यनवस्वर्ण, नीरजारूढसक्रमः ॥
 त्वंदिरहंमोहं, नीरजारूढसक्रमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्ह ऐ

वासुपूज्य० ॥ १२ ॥ विमलत्वांप्रतिस्वये, रंजयंतिमनोजवं ॥ श्री
 पुर्जयमुच्चैस्ते, रंजयंतिमनोजवं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीं
 मल० ॥ १३ ॥ जग्मिवांसमनंतत्वां, नमस्यंतिमहापदं ॥ येतेविश्व
 यीलक्ष्मी, नमस्यंतिमहापदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीं
 त० ॥ १४ ॥ नाशुतस्तवसिद्धांतो, येनावीतनयस्ततः ॥ वरंधर्म
 नदर्मा, येनावीतनयस्ततः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीधर्म०
 ॥ १५ ॥ श्रीशांतेदेहिनांदेहि, सारंगविदधेष्टुतिं ॥ शर्मकर्मततेरं
 सारंगविदधेष्टुतिं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीशांति० ॥ १६
 कुंशुनाथस्तुपंथानं, विधुतारोवृषाहतः ॥ पुंसांतन्यात्पिनाकीच,
 धुतारोवृषाहतः ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीकुंशु० ॥ १७
 येनत्वंनाचितःकर्म, वनवैश्वानरोपमः ॥ सोऽग्रनाथकुधीर्जव्या,
 नवैश्वानरोपमः ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री अर० ॥ १८ ॥
 द्विपद्मसुतःसिद्धि, पतिपन्नसुदारुणः ॥ येनतेजियतेमद्धे, प्रतिप
 सुदारुणः ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमल्लिस्वामी० ॥ १९
 श्रीसुव्रतजिनाधीश, मरुमालोपलक्षितं ॥ विरंचिमिवसेवद्ध, म
 मालोपलक्षितं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमुनि० ॥ २०
 देव्योपित्वद्गुणोज्ञाना, सद्दामंदरस्तानुगाः ॥ गायंतित्वांनमेजत्तप
 सद्दामांदरस्तानुगाः ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीनमि०
 ॥ २१ ॥ तृष्णातापात्वयावर्ष, शमितादानवारणा ॥ श्रीं
 मेजनताराध्य, शमितादानवारणा ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ
 ऐं श्रीनेम० ॥ २२ ॥ पार्श्वदेवसदारुण, महादारतरंगिताः
 नाट्यंतिचरित्रंते, महादारतरंगिता ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं
 पार्श्व० ॥ २३ ॥ वीरोजिनपतिःपातुः, तत्त्वानःकांचनश्रियं ॥
 अन्नमेपुनिस्सीमां, तत्त्वानःकांचनश्रियं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ
 ऐं श्रीवीरस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठस्वाहाः ॥ २४ ॥ ५

चोवीस माहाराजकी पूजा करावै, पीठै बलवाकुल देके दिग्पालां
को विसर्जन करै ॥ इति अष्टापदपूजा ॥ दूसरापर्व २ ॥

॥ शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्वाधिकारः ॥ ३ ॥

चेत्र सुदि १३ के दिन श्रीमहावीरस्वामीका जन्मकल्याणक
जया दे, इस वास्ते सब जगे धर्मरागीपुरष गुरुमुखसैं समझके जल
जात्रादिक संपूर्ण जन्मकल्याणकका महोत्सव करै, एसेही इक्षिंत
श्रावककूं धर्मके उद्योत वास्ते सब जगवंतके कल्याणक जो जो
होय उसका उत्सव करणा, एसी शक्ति नहीं होय तो सासनाधी-
श्वर देवाधिदेव श्रीमहावीरस्वामीके ज्यवनकल्याणकसैं लेकर नि-
र्वाणकल्याणक पर्यंत जिसदिन जो कल्याणक होय उसीका महो-
त्सव पूजन करणा चाहिये, इससैं धर्मका उद्योत होय, श्रीसंघमें
परम आनंद होय ॥ इति तीसरा पर्व ३ ॥

॥ अथ चेत्रोपूनमपर्वाधिकार सामाचारी सतकानुसारसे लिखते हैं॥

प्रथम चावलके पूंजसैं सेतुंजयपर्वतको स्थापन करै (तिस
पर) पट्टा रखके श्रीपुंरुरीक गणधर (वा) श्रीरूपजदेवस्वामीका
धिंव स्थापन करै, अकृत मोतियोसैं पर्वतको बधावै, केसरचंदनसैं
पर्वतको पूजै, सब श्रीसंघ एकठे दोरु पर्वतके चो फेर तीन प्रद
क्षिणा देवे (पीठै) पूजन सरू करे (यथा) दश (१०) बीस (२०)
तीस (३०) चत्ता (४०), पन्ना (५०) पुष्पदामेणलदर्श ॥ चउगछबग्राम,
दसमदुवालस कलाइंच ॥ १ ॥ अथ प्रथम १० प्रकारसैं पूजनका
अधिकार लिखते हैं, एकाम चित्तसैं अष्टमंगलीक आगे रखके
शुद्धोदकसैं मूलप्रतिमाको न्दवण करावै, पीठै श्रीसंघ खना होके
(१०) दस नमस्कार उच्चारपूर्वक १० फूल तथा १० फूलमाला
चढाके प्रतिमाके १० तिलक करै, यथाशक्ति सुपारी नारेल इत्यादि
सब चीज उत्कृष्टसैं दस२ जघन्य नारेल १ सुपारी १० तरा फल

फूल यथासंभव चढ़ावै, धूप खेवै, कपूरकी आरती करै, पीठै सिद्ध
 गिरी गुणगर्भित चैत्यवन्दन करके पांचे शक्रस्तवे देव वांदै, १० ख
 मासमण देके (श्रीसिद्धकेश पुंमरीक गणधराय नमः) इत पदका
 १० वेर नमस्कार करै. पीठै (श्रीसिद्धजय पुंमरीक आराधनार्थ करै
 'मि काउसगं अन्नवूसति०) कहके १० लोगस्तका काउसग करे
 (इहां केइ आचार्यने कहे ते कि बहुत उन्नव होय बखत कम रहे तब
 एक लोगस्तका काउसग करै १० जेतीके ठिकाणे १० गाथाका
 स्तवन कहे) पीठै अनेक प्रकारका वाजित्र बजावै ॥ इति प्रथम
 पूजा विधि ॥ अब इसी तरै (बीस । तीस । चालीस । पच्चास ।
 यह चारों पूजाके जेद जाण लेणा (इतनाहो विशेष हे) दूसरी
 पूजामें १० के ठिकाणे १० की विधि करै ॥ तीसरी पूजामें १०
 की जगें ३० की विधि करै, चौथी पूजामें १० की जगें ४० की
 विधि करै, पांचमी पूजामें सब विधी ५० की करै, तथा (सिद्ध
 केश श्रीपुंमरीकाय नमः) इत पदका दो दङ्कार गुणनो करै, उ-
 त्कृष्टें पांचूं पूजामें जुदी२ धजा चढ़ावै, जघन्यसे पांचूं पूजा किये
 पीठै १ धजा चढ़ावै । यह तप गुरूके मुखसे लेके जघन्य १ वर
 स, ज्यादा हो सके तो ३ वरस, उत्कृष्ट १२ वरस विधि संयुक्त
 तपस्या करै. गुरूके मुखसे उपदेश सुनै, संपूर्ण तप हुआं पीठै
 सिद्धगिरीकी जात्रा करै, ग्यानपूजा करै, गुरुजत्नी करै, सा-
 हमीबहुल करै (यह) चैत्रीपूनमके दिन श्रीरूपजदेवस्वामी
 के प्रथम गणधर श्रीपुंमरीकजी पांच कोमी साथ साथ अक्षय
 सुखको प्राप्तछये. (इतबादो) जरत प्रथम चक्रवर्तीने चैत्री
 पूनमको आराधन करके (यह) चैत्रीपूनम पर्व प्रसिद्ध कि-
 या, यह चैत्रीपूनम पर्व आराधन करणसें इत जवमें अनेक सुख
 संपदा प्राप्त होय, स्त्रियोंके पुत्र पुत्रादिककी वांछा पूरण होय, उर

आधिब्याधि सोग संताप सब दूर होय, परजन्ममें देवादिक रुद्धि प्राप्त होय, कीलकर्मों होणेंसे अक्षयसुखकों प्राप्त होय ॥ इति चैत्र मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ चैत्रोपूनम स्तवन लिख्यते ॥

(ढाल) पय प्रणमी रे जिनवरना सुपसाजलै, पुंरगिर रे गाईस हूं सुज जाजलै ॥ मति सुरगिर रे सहस जीज जो मुखहु वै, किम ते नर रे विमलाचलना गुण तवै ॥ (उल्लाखो) किम तवे गुणगण एह गिरिना जिहां मुनि सीधा बहू, गिरिरायना गुण वै अनंता कहे जिनवर मुख सहू ॥ निय जनम सफलो करण कारण केतला गुण जापियै, तिरयंच नारकतणी गतिना दुःखदूरै राखियै ॥ १ ॥ (चाल) जिनराजारे पहितो आव जिनैसरू, तसु नंदनो चक्रवर्ति जरतेसरू ॥ तसु अंगज रे पुंररीक गुणगण निलो, समदम रस रे विनय विवेक गुणै जलो ॥ (उल्लाखो) गुण जलो अनुक्रम आदि जिनवर पास संजम शिवपुरा, पुंररीक गणधर प्रथम विहरै सुमति गुप्तै संचरी ॥ पण कोरु साथै विमलगिरिवर मुग ति पदवी पाय ए, सुदि चैत्रपूनम तेण ए गिरि पुंररीक कदाव ए ॥ २ ॥ (चाल) दिव चैत्री रे पूनम पर्व सुदामणो, सेअंजे रे आरा ध्यां फल हुबे घणो ॥ मनसुद्धे रे आपणपे आनक रही, आराध्या रे यात्र पुन्य पामे सही ॥ (उल्लाखो) ते पुन्य पामे दान तप जप धर्म ध्यान मने धरै, बहु जाव जतै त्रिविध पूजा आदि जिनवरनी करै ॥ जावना जावै तेण दिवसे पंचकोरु गुणो फलै, अनुक्रमे ते नर मुगति पामी सिद्धमुंदरने मिलै ॥ ३ ॥ (चाल) दस बीसा रे तीस चालीस पूजा कही, पन्नासा रे आवक निरतो सगदही ॥ चउत्रयं ॥ ॥ ॥ दसन दशजते, पूजा फल रे अनुक्रम एमुऊ मन वगै ॥ (उल्लाखो) मन वसै पूजकपूरधूप मासखमरा फल बली, सामग्र

धूपै परकनो फल जे करे मननी रखी ॥ दिव पूजनी विधि जेमः
 गुरुमुख सुणीअवै परंपरा, ते मोह माया कपट ठंकी सुणो जवि
 पण सादरा ॥ ४ ॥ (ढाल) तंडुलरासि विमलगिरि आपी, तसु
 ऊपर पट्टादिक आपी ॥ प्रतिमा आदिजिनेसर केरी, पुंमरीकनी
 आपी निवेरो ॥ ५ ॥ सेतुंजगिरिने मन चिंतीजै, करमतणा मल
 दूर करीजै ॥ मोती तंडुल करीय वधावो, तीन प्रदक्षण पुज रचा
 वौ ॥ ६ ॥ मंगलीक पहिला तिहां आठ, करमबंध दूर करि आठ ॥
 प्रतिमा मूल सनात्र करेवा, जिनवरना गुण हियने धरेवा ॥ ७ ॥
 ऊजा अर्घ नवकार गुणंता, दस२ जैती तिलक करंता ॥ माला
 पुष्प पूंगीफल ढोवो, मेरु जरण वर धूप उस्केवो ॥ ८ ॥ (ढाल)
 शकस्तव पांचि देव वांदै, जघन्यना वंदण पाप ठेदे ॥ दसे नमस्का
 र करंत जैती, राखी करी दृष्टि जिनेइ सेती ॥ ९ ॥ आराधिवा
 काजे काउसग, जिणे किये जांजै कर्मवग ॥ लोगस्तउज्जोय दसे
 चखाणु, बेला प्रमाणे अहिण आणू ॥ १० ॥ इणे प्रकारै धूपपूज
 एह, इस्ती परै बीज। च्यार तेह ॥ वसांतणी वृद्धि तिहां गिणीजै,
 एक चित्त सूधै शुज पुन्य कीजै ॥ ११ ॥ धजातणी रोप तिहां करी
 जै, एकेक पूठै अघवा गिणिजै ॥ महुत्तरे आरति मंगलेवो, पठा
 प्रजु आगल ते करेवो ॥ १२ ॥ (कलश) इम करिय पूजा यथा
 योगै संघपूजा आवरो, साहमोवञ्चल करो जविका जवतमुइ ल।
 लावरो ॥ संपदा सोदग तेह मानव रुद्धि वृद्धि बहू लदै, आअमर
 माणिक सीत सुपरै साधुकोरति इम कहै ॥ १३ ॥ इति श्री चै०स्त० ॥
 ॥ अथ नंदीश्वर तपस्या करण विवि लिख्यतै ॥

स्तवन पदवी वने स्तवनोमें लिखा है सो सुणाणा. अथ शुज
 घनी शुजदिन गुरूके पास नंदीश्वरतपप्रदण करे. नंदीश्वरदीपके च्यारुं
 दिसि तरफ ५२ चैत्यकी अपेक्षाये अमावस्य (५२) वावन उपवास

करै, जिस दिन जो माहाराजके नामका उपवास होय उसही नामकी १००० गुणना करै, सो लिखते हैं ॥ १ श्रीरूपज्ञाननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ २ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ श्रीवारिषेणजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ४ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय नमः ॥ (यह) चार नामकूं ४ बेर उलटा, ४ बेर सुलटा गिणे ॥ अनुक्रमे ११ उपवास करणसें एक उली होय, ४ उली करणसें यह तप संपूर्ण होय ॥ पीठे शक्ति मुजब कजमणा करै, नंदीश्वरद्वीपका मंरुल वणावै, पूजा करावै, इत्यादि महोच्चवकरके ग्यानपूजा, गुरु पूजा करै, साह जीवहल करै, मंरुलकी विधि एकेक दिसीमें (११) तेरे २ पद्मानकी रचना करै चार दिसामें ५२ करै, बीचमें अंजनगिरी, च्यारुं दिसा में च्यार श्वेतपर्वत, दोय २ दधिमुखपर्वतके बीचमें दोय २ रतिकर पर्वत, एवं ८ रतिकर, एवं सब एक दीसीमे १३, च्यारुं दिसिके ५२, सब पर जिनविंवा थापे, इनको पूजामें ५२ थापना, ५२ नारेल, ५२ पान नागरवेलके, ५२ अंगलूहणा, इत्यादि सब चीज ५२ धावन लेवै, क्रमसें एकेक काव्य पढ़के जल चंदनादि अष्ट ६ व्यसें अंगपूजा तथा अग्रपूजा करे ॥ इति नंदीश्वर तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ वैसाख मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ वैशाखके महीनेमें मित्ती वैसाख सुदि १ हे सो अक्षय तृतिया नामसें पर्व प्रसिद्ध है, इस दिन श्रीरूपजदेव स्वामीके चारित्र्य अदण किया पीठे धारे मासीका पारणा सोमयशराजाके पुत्र श्रीश्रेयांसकुमरजीके हाथसें इक्षुरससेती जया, उस बखत उत्तम दानके प्रज्ञावसें सब देवगण प्रमोदयंत होके सुगंधजलकी वर्षा १, सुगंधपुष्पोंकी वर्षा २, साढीधारे कोनि सोनइयोकी वर्षा ३, ब्राह्मणसमें अक्षोदान ४, ऐसी उदघोषणा ४, देवधुंडजी वाजित्र ५, ऐसे पांच इत्य प्रगट किये, श्रेयांसकुमरका जस तीन जुवनमें विस्तरण

आ. उस दिनसे आहारदानकी विधी सबको मालम नई. इस
 प्रजावसे श्रेयांसकुमार अक्षयसुखको प्राप्त नया. इस वास्ते
 प्रकृत्यतृतिया पर्व श्रीसंवमें परम मंगलकारी है. इस पर्वके आणसे
 स्व आचूषण पहरके जगवंतके मंदिर जाके अष्ट द्रव्यसे पूजन
 करै, स्नात्र, अष्ट प्रकारी, सतरह जेदी, आदि पूजा करावै. पीवै
 गुरुके मुखसे एकातणादिकेक पञ्चस्काण करके पर्वकी महिमा सुणे.
 अपने घर गुरुको बहिराषके सब कुटुंब समेत जीमें, ठर जो मंग
 लीक कार्य करणा होय सो इस दिन करै, इस माफक इत पर्वको
 जो जव्यजीव सेवन करते रहेंगे उणोका तपतेज हमेसां बढ़ता र
 हेगा ॥ इति अक्षयतृतिया पर्वधिकारः ॥

॥ अथ तृतीय ज्येष्ठ मासाभ्यंतर पर्वधिकारः ॥

॥ जेष्ठ कृष्णत्रयोदशीके दिन सोखमें श्रीशांतिनाथ स्वामीका
 निर्वाण कल्याणकका दिन है इस वास्ते इस उचम दिनमें सब जगे
 श्रीसंघ एकठा होके विधिसंयुक्त शांतिपूजाका महोत्सव करावै. शां
 तिजल लेजाके अपने घरमें गंटे. इस शांतिपूजाके कराणसे मा
 री, हेजा, इत्यादिक समुदायिक रोग कजी श्रीसंघमें प्राप्त न होय
 (अथवा) किसी आवकके घरमें रोग चाला रहता होय तो (या)
 बहुत चिंता रहती होय तो इसी दिन शांतिपूजाका उत्सव कराणा
 चाहिये. (इससे) आधि व्याधि ग्रहादिककी पीना सब दूर होय,
 अनेक मंगलश्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्ठ मास पर्वधिकारः ॥

॥ अथ आपाद मास मध्ये पर्वधिकार लिख्यते ॥

॥ आपादसुदि १४ के दिन चौमासी इस नामसे पर्व प्रतिद्व है सो
 लि० है. ॥ यथा ॥ सामायकावस्यकपोषनानि, देवार्चनस्नात्रविलेपना
 नि ॥ ब्रह्मक्रियादानतपोमुखानि, जव्याश्चतुर्मासिकमंननानि ॥१॥
 (अर्थ) ज्ञानाएतानि सामायकादि धर्मकृत्यानि चतुर्मासिकस्यं

मंरुलानि अलंकारभूतानि विद्यन्ते ॥ अहो ज्ञव्य प्राणी जीवो यह
 सामायककों आद लेके जो धर्मकृत्य दे सो चोमासेके मंरण दे, अ
 र्थात् अलंकार समान दे. यथाशक्ति यह चोमासेपर्वमें कोइ जीव
 सामायक पन्निमणा पोसा करै, कोइ जगवानके मंदिरमें नाना-
 प्रकारकी पूजा करे, केइ सीलव्रत पालै, कोइ सुपात्रदान देवे, कोइ
 नानाप्रकारकी तपस्या करै, जेसा धर्मकाम अपनी शक्तिसँ वण
 आवै सो करै, इसमें विरोध नही. लेकिन कोईजी प्रकारसँ धर्मका
 उद्योत करणा चाहिये. जिससँ सब श्रीसंघमें कढयाणमाला प्रगट
 होय, उर चोमासी (१४) के दिन सब मंदिरोंमें दरशन करणेकों
 जाणा, पांच शक्रस्तवसँ देववादै, पीठै गुरुके पास जाके चोमासे
 पर्वका व्याख्यान सुणे, सब चीजका प्रमाण करके उपरांतका सोगन
 खेवै, सांजकू चोमासी पन्निमणा करे. इस मुजब काती चोमासे
 फागुण चोमासे कौंजी सेवन करै ॥ इति चतुर्मासपर्वधिकार.

॥ अथ श्रावणमास मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥

श्रावणमासमें केइ ज्ञव्यजीव मम्मई आदि क्षेत्रोंमें तरे२
 को पूजा लाखीणी अंगिया कराय के चोमासेपर्वका उद्योत करते
 हैं, इस माफक सब जगे तरे२ की पूजा कराणी चाहिये. उर देस
 देसमें श्रावणमास इस महीनेमें केइ२ तरेकी तपस्यायें करती हैं.
 जिसमें उत्तमफलकी देणेवाली केइयक तपस्या विधिप्रपाठग्रंथसे
 उद्धरण करके संक्षेपविधिसँ इहां लिखते हैं ॥

॥ अथ वृत्कर तपस्याविधि लिख्यते ॥

पुरिमठ १, एकातण १, नं.वी १, आंविष १, उपवास १,
 (यह १ उज्जी) इस तरे पांच उज्जी करै. तपोदिन २५. उज्जमनें
 २५ साहू चढ़ावै ॥ इति इंद्रीजयतप ॥ १ ॥

एकातण १, नीवी १, आंविष १, उपवास १, इस तरे

उत्ती च्यार करै. तपोदिन १६. ऊजमणें १६ लहू चढावै ॥ इति
कपायजयतपः ॥ २ ॥

नीवी १, आंखिल १, उपवास १, इसी तरे उत्ती ३ करै. तपो
दिन ९. ऊजमणें ९ लाडू चढावै ॥ इति योगशुद्धितपः ॥ ३ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकंदर उपवास ३, ऊजमणें झा
नपूजा करै ॥ इति नाणतपः ॥ ४ ॥

इकसार उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३, ऊजमणें
स्नात्र पूजा करावै ॥ इति दर्शनतपः ॥ ५ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३, ऊजमणें
गौतमस्वामीकी पूजा करै ॥ इति चारित्रतपः ॥ ६ ॥

अठम १, उठ, १, उपवास १, एकासण १, एकलवाणो १, दति
१, नीवी १, आंखिल १, यह एक उत्ती. इसी तरे उत्ती आव करै.
तपोदिन ८८, ऊजमणें रूपेका वृक्ष, सोनेका कुहाना करायके ग्यान
खाते देवे ॥ इति आव कर्मसूततपः ॥ ७ ॥

जाइवा वढ़ि चउअसैं लेके पनरे दिन पर्यंत इकसार एकास
णा अथवा त्रिआसणा करै, घरदेरातर आगे अथवा अछे ठिकाणें
कलस स्थापन करै, एक मुछी चावल सदा कलसमे ज़रै, संवत्तरीके
दिन कलस ऊपर नारेख रख के महोत्सवपूर्वक मंदिरमें जाके देव
आगे रखै, स्नात्रपूजा करै, ज्ञानपूजा करै ॥ इति अक्षयनिधि तपः ८ ॥

श्रीवासुपूज्य पूजापूर्वक रोहिणी नक्षत्र के दिन उपवास वा
नीवी, आंखिल सात वरस सात मास करै (श्रीवासुपूज्यस्वामी
सर्वज्ञायनमः) इस पदका २००० गुणना करै, गुरु के पास स्त
वन सुणे. (सो स्तवन आगे लिखेंगे) ऊजमणें ज्ञानके उपकरणसैं
ज्ञानज्ञकि गुरुज्ञकि करै. इति रोहिणीतपः ॥ ९ ॥

सुनिपहूके पांचमके दिन श्रीनेमि अंधिका पूजापूर्वक पाच

एकासणादिक तप करै. अंघ्रिकादेवीकूं वेस चढ़ावै ॥ इति अंघ्रिकातपः ।
 सुदिपक्षके इग्यारसके दिन सिद्धांतपूजापूर्वक मौनसंयुक्त
 उपवास करै. इति श्रुतदेवतातपः ॥ ११ ॥

सुदि पक्षमें एकांतर उपवास ८। पारणें आंचिल ८, एवं दिन
 १६. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै. इति सर्वांगसुंदरतपः ॥ १२ ॥

चैत्रमासे एकांतर उपवास १५, एवं दिन ३०. ऊजमणें
 सोनेका अथवा रुपेका वृक्ष अनेक फल सहित चढ़ावै ॥ इति सौ-
 आग्यकल्पवृक्षतपः ॥ १३ ॥

पनिवा, बीज, तीज, १ अनुक्रमसें पूनम पर्यंत (१५) उप-
 वास करै. जो तिथि जूले सो तिथि उर करै. ऊजमणें एकसो बीत
 लहू मंदिर चढ़ावै, सात्र करावै ॥ इति सर्वसुखसंपत्तितपः ॥ १४ ॥

वरसातका इग्यार मास उर पोष, चैत्र, यह पट मास टा-
 लके ठोटी पांचमतप सरू करै. अंधारी वजवाली पांचम मास ५
 लग एकासणादि तप करै. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै ॥ इति ठोटी
 पांचमतप ॥ १५ ॥

सुद पांचमकूं पांच वरस पांच मास उपवास करै, उपवास
 के दिन देव वांदणादिक क्रिया करै. ऊजमणें पुस्तकादिक ज्ञानोप-
 गरण पक्कान फल कलशादिक पांच ५ चढ़ावै, सत्तरजेदी पूजा
 करावै, साहमी बजल करै ॥ इति ज्ञानपंचमीतपः ॥ १६ ॥

॥ आपाठ सुदि पनिवा, बीज, तीज, चोथ, पांचम, एकाश-
 णादि तप करै. अशोगवृक्ष पूजापूर्वक देव आगे नेवेद्य चढ़ावै. इस
 तरै वरस १ तप करै. ऊजमणें चावलसें असोगवृक्ष लिखके पूजा
 करै ॥ इति अशोगवृक्षतपः ॥ १७ ॥

आपाठ वदि ३ श्रीविमलनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ आवण
 वदि ३ श्रीअनंतनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ काती वदि ३ श्रीआ

दिनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ पोषवदि ३ श्रीपार्श्वनाथ पूजापूर्वक उपवास करै, स्नात्र करै, ऊजमणें चावलोंने लोकनाल वणाके सां ते राज सात पावनी करके उसपर सिद्धक्षेत्र (उसको) सोनेरत्न का मुगट चढ़ावै ॥ इति मुगटसप्तमीतपः ॥ १८ ॥

आसोज सुदि ८ तक एकादशादि तपकरै, आठ प्रकारकी पूजा करै, नैवेद्य चढ़ावे, पहिले वरस अष्टापदकी एक पावनी, इ स तरे आठे वरसे आठ पावनी अष्टप्रकारी पूजापूर्वक आराधिय, ऊजमणें अष्टापदपूजा करावै, पकवान फल सर्व चौबीस चढ़ावै ॥ इति अष्टापदपावनीतपः १९ ॥

सुदि पक्षके ८ आठमके दिन उपवास अथवा आंबिल करै. ऊजमणें दूधका कटोरा जरके आठ लक्ष्म देव आगे चढ़ावै ॥ इति अमृतआठमितपः २० ॥

॥ वदपक्ष अथवा सुदपक्ष के दशम के दिन दस उपवास अथवा बीस एकादशा करै. ऊजमणें अखंनित धी धारपूर्वक ती ए प्रदक्षणा देवे ॥ इति अखंनितदशमीतपः ॥ २१ ॥

वदिपक्ष अथवा सुदिपक्षमें ११ के दिन सिद्धांतपूजापूर्वक एकादश, नीवी, आंबिल, वा उपवास ११ करै. ऊजमणें ११ अं गको पूजा करै ॥ इति श्रीङ्ग्यारअंगतपः ॥ २२ ॥

सुदिपक्षके १४ के दिन एकादशादि १४ तप करै. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै, चवद प्रकारके पकवान प्रमुख चढ़ावै ॥ इति १४ पूर्वतपः ॥ २३ ॥

पांच अमृततेला मास ६ में करै (प्रथम तेले) सिखरणसें पारणा (दूसरे तेले) सारेका पारणा (तीसरे तेले) लापशीका पारणा (चौथे तेले) लक्ष्म पारणा (पांचमें तेले) खीरसे पारणा. पारणे प्रथम साधुको बहिराके पारणा करै ॥ इति पंचामृततेलातपः ॥ २४ ॥

अष्टम १, एकासणो १, अष्टम १, एकासणो १, अष्टम १, एकासणो १ ॥ यद् मोटारत्नोत्तरतपः ॥ २५ ॥

आंधिल १२ करके ऊजमणें रूपाका चक्र मंदर चढ़ावे तो सदा जय होय, विणज व्यापारमें लाज होय ऊगनेमें जीत होय इति धर्मचक्रतपः ॥ २६ ॥

उपवास ५, व्यासणा ५ एकांतरै करै ॥ इति पंचमहाव्रततपः २१ उपवास १, एकसणो १, नीवी १, आंधिल १, व्यासणो १, उपवास १, एकासणो १, नीवी १, आंधिल १, व्यासणो १, एवं दिन १० पूनमसें सरू करै. पारणै साधु पन्डितानै, ग्यानपूज करै ॥ इति दालिइहरणतपः ॥ २७ ॥

एकेंद्रिये उपवास १, वेइंद्रिये उठ १, तेंद्रिये अष्टम १, चौरेंद्रिये दसम १, पंचेंद्रिये द्वादशम १, उक्कायें चतुर्दसम १, तप करै. ऊजमणें सुखमीसें ६ स्त्री लीमावे ॥ इति उक्कायआलोयणतपः ॥ २८ ॥

नीवी आठ निरंतर करै ॥ इति सासूसुखतपः ॥ ३० ॥

आंधिल आठ निरंतर करै ॥ इति सुसरसुखतपः ॥ ३१ ॥

उठ पांच करै ॥ इति पूत्रीसुखतपः ॥ ३२ ॥

॥ अष्टम पांच करै ॥ इति पुत्रसुखतपः ॥ ३३ ॥

॥ उपवास आठ एकांतर करै ॥ इति जर्त्तारसुखतपः ॥ ३४ ॥

॥ निवी पांच निरंतर करै ॥ इति जेठसुखतपः ॥ ३५ ॥

॥ एकासणा पांच निरंतर करै ॥ इति देवरसुखतपः ॥ ३६ ॥

॥ एकासणा पांच एकांतर करै ॥ इति पितामातासुखतपः ३७

॥ इत्यादिक केइ तरीके तपस्या बहुत ठिकाणें की आवक

एयो कियाकरती हे. इस वास्ते बहुतेके उपगारार्थ शास्त्रोंसें उक्ता करके संक्षेपविधिसें इहां लिखी हे. ज्यादा शक्ति होय तो पूजा सादमीवछल तीर्थयात्रा इत्यादिक सातुं शुभकैत्रोमें अथवा धन.

खरच करै, धर्मका उद्योग करै ॥ इस तपस्याके प्रज्ञावर्षे इस जन्ममें संसारसंबंधी दुःखदालिङ्ग दूर होके सर्व कुटुंबमें सुख संपदा होय, परजन्ममें देवादिक रुद्धी प्राप्त होय. (किंबहुना) इति वृत्तं तपस्याविधिः ॥

॥ अब भाद्रपद मासे पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ ज्ञात्वा महिनेमें मिति ज्ञात्वा सुद ४ तथा केइ मतकी अपेक्षासे ५ तिथिओं संवत्सरी नामसें पर्व प्रसिद्ध है (प्रथम इस संवत्सरी पर्वकी महिमा कहते हैं) जैसे जगत्त्रयमें अनेक मंत्र हैं वैसे नवकार समाप्त कोइ मंत्र नहीं १, तीर्थोंमें सेत्रुंजय समान कोइ तीर्थ नहीं २, पांवदानमें अन्नदान सुपात्रदान समान कोइ दान नहीं ३, गुणमांहे विष्णुगुण ४, व्रतमांहे ब्रह्मव्रत ५, नियममें संतोष ६, तपमें उपशमतप ७, दर्शनमें जैनदर्शन ८, जलमांहे गंगाजल ९, अलंकारमांहे चूनामली १०, उद्योगोंमें चंद्रमा ११, तेजमांहे सूर्य १२, गजमें एरावण १३, दैत्यमांहे रावण १४, तुलसीमें पंचवत्सजकिशोर १५, वृक्षमांहे कल्पवृक्ष १६, वनमांहे वन १७, काष्ठमांहे चंदन १८, साहसिकमें विक्रमादित्य १९, पुरुषमांहे श्रीराम २०, रूपवंतमें काम २१, सतीमांहे शीता २२, सखीमांहे शाला २३, सुगंधमें कस्तूरी २४, वस्तुमें तेजनतूरी २५, जगत्त्रयमें जज्ञा २६, स्त्रीमांहे रंजा २७, धातुमें स्वर्ण २८, दाता कर्ण २९, गौमें कामधेनु ३०, वृक्षमें कल्पवृक्ष ३१, जलमें वृत्त ३२, छेदमांहे धृत् ३३, इत्यादिक सर्व चीजोंमें एकत्र चीज मिलती है. इस तरे सर्व पर्वोंमें उत्कृष्ट राजाधिराज पर्व श्री संवत्सरी (दूसरा नाम) श्रीपर्यूपण पर्वको जगत्त्रय श्रीमाहावीर जीजीने उत्तम वर्णन किया. अब श्रीपर्यूपणपर्वके आशेषोंमें प्रथम श्रीताधुके करणें योग्य धर्मकृत्य कहते हैं ॥ संवत्सरी प्रतिक्रमण

करै १, लोच करावे २, तेलका तप करै ३, सर्व मंदिरोंमें जगत् की ज्ञावस्तवना करै ४, सर्व श्रीसंघसें खमावे ५, यह पांच कारु के वास्ते श्रीतीर्थकर गणधरोनें पर्युपणापर्व प्रवर्तन किया ॥ अब शुद्धश्रावक संवहरी पर्व आराधन करणेंकूं आठ दिन अठाइ मही छव करै सो कल्पलता शालोंसें लिखते हे ॥ प्रथम श्रुतज्ञानही जक्ति करै, कल्पसूत्रजीकूं विधिसंयुक्त अपने घर लेजाके रात्रोजाग ए करावै, प्रजातसमय नगरके सर्व श्रीसंघकूं निमंत्रण कर तथा योग्य सत्कार सन्मान करै, पीठे पुस्तकमादक पुरुष सर्वसें उत्तम । आचूपण पहरकै मुगट उत्र चामर इत्यादिक समेत साक्षात् ई हाराजका रूप बनाकर हाथी पर अथवा पालखी पर बैठ अष्ट गलीकरचित आलमें पुस्तक धरके अपने दोनुं हाथमें आल धरके दू तरफ पुरुष अष्टा वस्त्र आचूपण पहरके चमर ढाले, अनेक प्रकारके जित्त वाजते जेबे, दान देते जेबे, नानाप्रकारके श्रुतज्ञानके गुण बर्ण करते जेबे, नगरमें प्रदक्षणा तुल्य फिरके गुरुके पास आवै, गुरु पि खमा होके विनयसंयुक्त पुस्तकको नमस्कार करके आगे रस्कै, श्री षके आज्ञासें वाचनापूर्वक वावे १, नगरमें सब जगे अमारिपन बजावै, दूसरा वचनसें तथा द्रव्यसें कसाइ धोबी जमजूजा इत्य दिक सबका आरंज ठोकावे २, सुपात्रदान देवे ३, विदाम सुपारी नालेरादिक की प्रजावना करे ४, श्रीवीतरागदेवकी उदार जक्तिसें पूजा करै, चौदसके दिन संवहरीके दिन चतुर्विध श्रीसंघ इकेदो कर सर्व मंदिर दरसन करणेंको जावे ५, सच्चिदा परिहार करै ६, ब्रह्मचर्य पाते ७, चउठ, ठठ, अठ्ठादिक तप करै ८, अपने विनके अनुसार जन्मकल्याणका उद्योग करै ९, अठपहरी पोसा करै १०, संवहरी प्रतिग्रमग करै ११, निमज्ज होके सर्व श्रीसंघ से खमावे १२, पारणके दिन पोसद पन्ध्रपणेशाले साधर्मोत्सवः

घोंकी जक्ति करै १३, गुरुजक्ति करै १४, संवञ्जरी दान देवै, ताहमी
 वठल करै १४. इस विधिसंयुक्त यह कंठपसूत्र एक चित्त सुणनेतें
 आराधन करलेसैं आठ जवसैं मोक्षस्थानहुं प्राप्त होता है (उर)
 केइयक जव्यजीव अत्यंत शुद्ध जाव भरतेजये अठमादि तप कर
 के युक्त कंठपसूत्रजीकों वांचते है उर सुणनेवाले प्रमाद निझा वि
 कथा ठोनेके अठमादि तप करके एक चित्तसैं शुद्धजाव रखके इक
 बीस बेर सुणते है, सो जव्य देवगतीकों प्राप्त होके तीसरे जव सिं
 द्विस्थानकों प्राप्त होते है ॥ इस पर्यूपणपर्वका महोद्यव जो जव्य
 जीव करते है सो धन्य है, धर्मके प्रज्ञावीक है, अपणी लहमीसैं
 धर्मका उद्योत करते है. उस पुणपात्माकों देव सहायता करते है उर
 नमस्कार करते है ॥ (अथ कंठपसूत्रजीका महात्म कहते है ॥ यह
 कंठपसूत्र नवमेंपूर्वसैं उद्धारण कियाजया दशाश्रुतस्कंधका आठमा
 अध्ययम है. सर्व श्रीसंघके मंगलके कारण श्रुतकेवली श्रीजब्रवाहु
 स्वामी प्रसिद्ध किया है. यह श्रीकंठपसूत्रके अनंत विषय है. जेसैं
 सर्व नदीके बालू के कण होय उससे जी एक सूत्रके अनंत विषय है.
 इस कंठपसूत्रका महात्म जो देवाचार्य हज्जार जीन करके कहे
 तोजी महात्मका एक अंश जी कह सकता नही. ऐसा इस पर्वका
 महात्म जाण जो जव्यजीव शुद्ध जावसैं सेवन करेंगे सो अनेक तरे
 सैं शक्ति वृद्धी सुख सौभाग्य का प्राप्त होंगे. उर परजवमें देवादिक
 शक्ति पावके मुक्तिसुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति पर्यूपणपर्वधिकारः ६ ॥

॥ अथ आश्विन मास मध्ये पर्वाधिकारः ॥

॥ आसोज महीनेमें मिती आसोज सुदि ७ से लेके आसोज
 ज सुदि १५ तक नवपदजी की नवी तथा अष्टापदजीकी नवी
 विधिसंयुक्त करै. सो सब विधि पहली लिखो है उसी माफक करै ॥

॥ अथ कार्तिक मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्तिक महीनेमें मिती कार्तिक वदि अमावस है सो दी-

पमालिका नामसें पर्व प्रसिद्ध है. यह दीपमालिकापर्व कवसें
 सो लिखते है. चौबीसमें तीर्थकर श्रीमहावीरस्वामी समस्त
 साध्वी साथ विचरते थेके अंतकी चोनासी मध्यमपादापुरीमें
 यके रहे, उहां आगामीकालकी सर्व बात ज्ञयजीवोंके सामने नि
 पण किया, फेर अपना अंत समय जाण के हस्तिपालराजके
 कुशालामें आयके रहे. अपने पर गौतमस्वामीका बहुत स्नेह
 के निजीक गाममें देवशर्मा ब्राह्मणको प्रतिबोध देणेकूं जेजा,
 ठानी पद्मासन धारण करके शोले पहर तक अखंन देसना
 जये बहुतर वरसका आयु पूरण पालके इसी अमावासके दिन
 ठली दो घनी रात रहणसें सिद्धिस्थानको प्राप्त जये. जिस सम
 जगवंतका निर्वाणकल्याणक जया उस समय चौसठ इंद्र देवता
 एके आणे जाणसें बना उद्योत जया, उर जो राजा पोषधमें बै
 जयेथे सो जावउद्योतका अस्तपणा देखके सब जगे रत्न धरके द्य
 उद्योत किया. एकमके प्रजात समें देवतोका आणा जाणा उर
 चन सुणके श्रीगौतमस्वामीकूं केवलज्ञान उत्पन्न जया. दूजके दिन
 सुवर्शना बहिन अपने जाई नंदिवर्द्धनराजाकूं घरमें बुलाके जीम
 या, शोक दूर कराया जिससें जाईबीज प्रवर्त्तन हुई. इससें यह
 दीवाली पर्व बना उत्तम है. इस दिवालीकी रातकूं जो गुणता
 करते है सो लिखते है ॥ ॥ श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥
 श्रीमहावीरस्वामी पारंगतायनमः ॥ श्रीगौतमस्वामी सर्वज्ञायनमः
 ॥ इस एक २ पदको १००० गुणनो करै, उपवास करै, रात्रीजागर
 ण करै, निर्वाणकल्याणककी आरती करै ॥ स्तवन बोलै । निर्वाण
 कल्याणकका अधिकार सुणै । गौतमरास सुणै. इत्यादिक उदार
 ॥ सर्व त्रिकाणें दीवालीपर्वका उन्नव करणा चाहियै ॥ दिया
 ॥ स्तवन पूर्वे लिखा है सो पढे ॥

॥ अथ ग्यानपंचमी पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ दूसरा कात्ती महीनेमें कार्तिक सुदि पंचमी सो ज्ञानपंचमी नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन सर्व जन्मजीवोंको ज्ञानका विशेष आराधन करणा चाहिये. ज्ञानके समान संसारमें उत्तम पदार्थ कुछ ज्ञी नहीं है. सर्व तत्वमें ज्ञानके समान कोई तत्व नहीं. मोक्षमार्ग साधनकूं ज्ञान समान कोई उपाय नहीं. इस ज्ञानपंचमीके आराधनसें अनेक दुष्टकर्म नाश होय. गूंगापणा, मूर्खपणा, वक्रपणा, और कोढ़ादिक रोग सर्व दूर होय. अनुक्रमे ज्ञानावरणी कर्म के क्षय होणेसें पांचो ज्ञान प्रगट होय. जेसें बरदत्त गुणमंजरी के रोगादिकके सर्व उपद्रव दूर होके मनोरथ पूर्ण जये, इस तरे जो ज्ञानपंचमीका आराधन करेगा उसका मनोरथ पूर्ण होगा ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमी देववंदन विधि ॥

॥ प्रथम पवित्र स्थानक चौकीपट्टे पर ग्यानकों स्थापन करै, उसके आगे पांच साधिया करै, फल फूल प्रमुख चढ़ावै, पांच बत्ती का दीपक चढ़ावै, अगर कपूरका धूप खेवै, पूजा पढ़के वासुदेव कपूरसें ज्ञानपूजा करै, यथाशक्ती रोकद्रव्य चढ़ावै तथा पूवा बिटांगणादि चढ़ावै. (ज्ञानपूजा लिखते है) नमंतिसाभंतमदीवनाहं, देवायपूयंसुविदेयपूर्वि ॥ जतीयचित्तमणिदामएहिं, मंदारपुष्पसवेहि नाणं ॥ १ ॥ तद्देवसद्वामणिमुत्तिएहिं, सुगंधपुष्पेहिंवरसएहिं ॥ पूयंतिवदंतिनमंतिनाणं, नाणस्सज्जाज्ञायन्नवत्कथाय ॥ २ ॥ यह गाथा पढ़के ज्ञानपूजा करै. (इस तरे द्रव्यपूजा करके पीठे ज्ञानपूजा करे सो लिखते हैं) खमासमण दे के । हरियावही पम्किमें । लोगस्त कहे । वेठके । मुंदपत्ती पम्किदे । अणूजाणह मेमिउगहं (इत्यादिक) दो चांदणा देवै, पीठे पांच खमासमण दे के ज्ञानका नमस्कार कहै ॥

॥ अथ ज्ञाननमस्कार लिख्यते ॥ सकल वस्तु प्रतिज्ञात ज्ञान

निरमल सुखकारण, सम्यग्दर्शन पुष्टहेतु ज्वजलनिधि तारण ॥ सं
 यमतप आनंदकंद अन्नाण निवारण, मार विकार प्रचार ताप तापि
 त जिन वारण ॥ १ ॥ स्याद्वाद् परिणाम धर्म परणति पन्विबोद्धं,
 साधु साधुणो संघ सर्व आराधन सोद्धण ॥ मोह तिमरविध्वंससूर
 मिष्ट्यात्व पणासण, आतमशक्ति अनंत शुद्ध प्रचुता परगासण ॥
 ॥ २ ॥ मति श्रुति अवधि विगुह नाण मणपङ्कज केवल, जेद प-
 चास क्षायोपसमिक एक क्षायिक निरमल ॥ दोष परोक्ष प्रथम तिहां
 डुग परतक्ष दीप्तत, सकल प्रतक्ष प्रकाश ज्ञास भुव केवल अपर
 मित ॥ ३ ॥ धर्म सकलनो मूल शुद्ध त्रिपदी जिन ज्ञाशै, बाहिर
 अंग प्रधान खंघ गणवर सुप्रकाशै ॥ शाखाश्रीनिर्युक्ति ज्ञाप्य पणि
 शाखा दीपै, चूरण टीका पत्र पुष्प संशय सब जीपै ॥ ४ ॥ पंचां
 गो सार बोध कह्यो जिन पंचम अंगै, नंदी अनुयोगद्वार शाख मा-
 नो मनरंगे ॥ वीर परंपर जीत अनुजव उपगारी, अज्यासो आग-
 म अगम निरुपम सुखकारी ॥ ५ ॥ मोहपंक हर नीर सम सिद्धंत
 अवोधै, देववंड आणा सहित नयजंग आराधै ॥ ए श्रुतज्ञान सोदा
 मणो सकल मोक्ष सुखकंद, जगते सेवो जविकजन पामो परमा
 नंद ॥ ६ ॥ इति ज्ञानस्तुति ॥ इत्यादि नमस्कार कहके । एमो
 स्थुणं० जावंतिचेइयाइं० जावंतिकेविताडू० नमोर्दत्त सिद्धा० । कद-
 के ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय० ॥ इत्यादि ज्ञानका स्तवन बोलै, जयवी
 यरायण कहै, वंदणव० अन्नत्रू० कहके एक नवकारका कांउसग
 करै, शुई कहै ॥ ॥ अथ शुई लिख्यते ॥ देविंदबंदिपएहिंपरुवि
 याणि, नाणाणिकेवलमणोहिमईसुयाणि ॥ पंचाविपंचमगईसियपं
 चमोए, पूयातवेगुणरवाणजियाणदिंतु ॥ १ ॥ यह स्तुति कहके
 ज्ञान आराधवा निमित्तं करेमि काउसगं) तस्सुत्तरी० अन्नत्रू०
 ॥ १ लोगस्तका कानुमग करै, (पारके) बोधागायं० (इत्या-

दिगाथापदके) पीठे ॥ आज्ञाशिरोहियनाणं १ सुपनार्णवेवत्तहिना
 णंच ॥ तदमणपक्खवनाणं । केवलनाणंचपंचमयं ॥ २ ॥ यह गाथा
 कदके । इष्टामिखमासमणो० श्रीमतिज्ञानायनमः १, श्रीश्रुतिज्ञा
 नायनमः २, श्रीश्रवणज्ञानायनमः ३, श्रीमनपर्यवज्ञानायनमः ४,
 समस्त लोकालोकज्ञास्करश्रीकेवलज्ञानायनमः ५. इस तैरे पांच
 नमस्कार करै, थिरता होय तो (५१) ज्ञानके गुणोंको नमस्कार
 करै, सो पूर्वे नवपदजीके गुणनेमें लिख्या है ॥ उस माफक करै
 ॥ पीठे (जै ह्रीं लामोमाणस्त) इस पदका २००० गुणना करै. कम
 थिरता होय तो इगारे अंगकी सिझायों पढै वा सुणै, सो लिखते है ॥

॥ प्रथम आचारांग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल इठीलानी ॥ पहिलो अंग सुदामणो रे, अनुपम आ
 चरांग रे ॥ सुगणनरा ॥ वीर जिनंदे जापियो रे लाल, उववाई जात
 उवंग रे ॥ सु० १ ॥ बलिहारी ए अंगनीरे, हुं जानं वारंवार रे ॥ सु० ॥
 विनये गोचरी आवरे रे लाल, जिहां साधुतणो आचार रे ॥ सु०
 ब० ॥ १ ॥ सुयखंध दोष वै जेइना रे, प्रवर अध्ययन पचवीस रे ॥ सु०
 ॥ उद्देशादिक जाणिये रे लाल, पिण्यासी सुजगोस रे ॥ सु० ब० ३ ॥
 हेतु जुगत कर सोजता रे, पद अदार दङ्कार रे ॥ सु० ॥ अक्षरप
 दने जेइने रे लाल, संख्याता श्रीकार रे ॥ सु० ब० ४ ॥ गमा अनंता
 जेइना रे, बलिखि अनंत पर्याय रे ॥ सु० ॥ अस परितो वै इहां
 रे लाल, थावर अनंत कदाय रे ॥ सु० ब० ५ ॥ निवड निकाचित
 सासता रे, जिनप्रणीत ए जाव रे ॥ सु० ॥ सुणतां आतम उजसे
 रे लाल, प्रगटे सहज स्वजाव रे ॥ सु० ब० ६ ॥ सुगुण थावक
 वारु आविका रे, अंगे धरिय उल्लास रे ॥ सु० ॥ निधिपूर्वक तुमे सां
 जलो रे लाल, गीतारथ गुरु पास रे ॥ सु० ब० ७ ॥ ए सिझांत
 मदिनानिलो रे, उत्तारे जव पार रे ॥ सु० ॥ विनयचंद्र कहे माइरे

रे लाल, एहिज अंग आधार रे ॥ सु० व० ८ ॥ इति आचारांग सि० ॥

॥ अथ २ सुयगदांगसूत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ दाल रसियानी ॥ बीजो रे अंग तुमे सांजलो, मनोहर
श्रीसुगदांग ॥ मोरासाजन ॥ त्रिणसे तेसठ पाखंतीतणो, मत खंख्यो
धर रंग ॥ मो० १ ॥ मीठी रे खाने वाणी जिनतणी, जागे जे
हथी रे ग्यान ॥ मो० ॥ ए वाणी मन माली माहरै, मानु सुधा रे
समान ॥ मो० मी० २ ॥ रायपसेणी उपांग ठे जेहनो, ए तो सूत्र
गंजीर ॥ मो० ॥ बहूथुत अरथ जाणे सद्गुरु, कीर नीर धनु तीर ॥
मो० मी० ३ ॥ एहना रे सुयखंध दोय ठे, बलि अध्ययन तेवीत
॥ मो० ॥ उदेता समुदेता जिहां जला, संख्याये रे तेत्रीस ॥ मो०
मी० ४ ॥ नव निकेप प्रमाण जरया, पद ठसीस हजार ॥ मो० ॥
संख्याता अक्षर पदमांहे, कुण लहे तेहगो रे पार ॥ मो० मी० ५ ॥ ग
मा अनंता पर्याय बली, जेद अनंत जिण माहि ॥ मो० ॥ तुण
अनंत त्रस परिच कह्या, थावर अनंत जे माहि ॥ मो० मी० ६ ॥
निबद्ध निकाचित्त जे सासय कमा, जिम पणत्ता रे जाव ॥ मो० ॥
जापी रे सुंदर एह प्ररूपणा, चरण करणनो रे जाव ॥ मो० मी०
मी० ७ ॥ करिये जगत जुगत ए सूत्रनी, निधै लहिये रे मुक्ति ॥
मो० ॥ दिनचंद्र कहे प्रगटे एहथी, आतमगुणनी रे शक्ति ॥
मो० मी० ८ ॥ इति सुयगदांग सिद्धाय ॥ २ ॥

॥ अथ ३ षाणांगसूत्रसिद्धाय लिख्यते ॥

॥ दाल ॥ आठ ठके कंकण लियोरी ॥ ए चाल ॥ बीजो अंग
जलो कह्यो रे जिनजी, नामे श्रीगणांग ॥ मोरो मन मगन अयो ॥
दारे देखी २ जाव, दारे जीवाजीव स्वजाव ॥ मो० ॥ सयल जगत
करी गजतो रे जि०, जीवाजिगम उरांग ॥ मो० ॥ १ ॥ एह
अंग मुळ मन वस्यो रे जिनजी, जिम कोंकिल दल अंग ॥ मो० ॥

गुहिर जाव कर जागतो रे जि०, आज तो एह आलंब ॥ मो० २
 । कूट शैल सिलरी शिवा रे जि०, काननमें बलि कुंरु ॥ मो० ॥
 । दर आगर इह नदी रे जि०, जेहमें अगे रे उदंरु ॥ मो० ॥ ३ ॥
 । स गंगा अति दीपता रे जि०, गुणपर्याय प्रयोग ॥ मो० ॥ परित्त
 । इहनी वाचना रे जि०, संरुताता अनुयोग ॥ मो० ॥ ४ ॥ वेष्ट सि
 । लोक निजुतपुं रे जि०, संगहशी पन्निचित्त ॥ मो० ॥ ए सहु सं-
 । पातां जिहां रे जि०, सुगतां जलसे चित्त ॥ मो० ॥ ५ ॥ सुय
 । थ इक राजनोरे जि०, वश अध्वयन उदार ॥ मो० ॥ उदेशादिक
 । स ठै रे जि०, पद बहुतर दज्जार ॥ मो० ॥ ६ ॥ रागी जिनशा
 । न तणो रे जि०, सुखे सिद्धांत बखाण ॥ मो० ॥ विनयचंड कहे
 । हुवे रे जि०, परमारधरा जाण ॥ मो० ॥ ७ ॥ इति श्री० ग० सं० ॥
 ॥ अथ ४ ॥ समवायांगसूत्र सिद्धाय ॥

॥ ढाल ॥ आरा महिलां ऊपर मेह ऊरोखे बीजलो ॥ एचाल ॥
 श्री समवायांगसुखो श्रोता गुणी, हो लाज सुखो श्री०, पन्नवणा
 । ग करो सोजा वणी, हो लाल करो सो० ॥ अरध मागघो जापा
 । वा सुरतणी, हो लाल साखा सु०, समकित जाव कुसुम परि-
 । व्यापो घजा, हो लाल परि० ॥ १ ॥ जोव अजीवने जीवाजीव
 । सग्री, हो लाल जो०, लहीयै एहथो जाव विरोध कांइ नथो,
 । लाल वि० ॥ जांगा तीन स्व समवादिक्ता जाणीये, हो लाल
 । ०, लोक अलोक ने लोकालोक बखाणीये, हो लाल लो० ॥ २ ॥
 । प्रकी ठै सत समवाय परूपणा, हो लाल सम०, कोमाकोमि प्र
 । क जीव निरूपणा, हो लाल जो० ॥ वारसविह गणी पिटकत
 । संख्या कही, हो लाल त०, सासता अरथ अनंत कि ठै एहना
 । हो लाल ठै० ॥ ३ ॥ सुखखंड अध्वयन उदेशादिके जला, हो
 । उ०, संख्यायें एक एक प्रत्येके गुण निला, हो० प्रत्ये० ॥ ५ ॥

एक लाख चौमाल संहत तेजतरा, हो० स०, पदनें अग्रउदग्र सं-
 ग्यातां अक्षरा, हो० सं० ॥४॥ ज्ञाप्य चूर्णं निर्युक्ती करी सोहे सदा,
 हो० करी०, सुणतां जेद गंजीर त्रिपत न दोष कदा, हो० त्रि० ॥
 जेह नमावै अंगकि अन्तरगत हसी, हो० अन्त०, जल वरसंते जोर
 कुण न हुवे खुसी, हो० कु० ॥ ५ ॥ जाग्यो धरम सनेह जिणंदसुं
 मांहरो, हो० जि०, तजिया शास्त्रमिष्ट्यात सुत्र जाण्यो खरो, हो०
 सू० ॥ जिम मालती लहे जूंग करीनेन विरहे, हो० क०, इश्वर
 शिर सुरगंग तजी परि नवि वहे, हो० त० ॥ ६ ॥ ए प्रवचन नि-
 ग्रंथतणो जुगते वनो, हो० त०, साकर सेलनी झाख धकी पिण
 मीठनो, हो० थ० ॥ स्युं कहिये बहु वात विनयचंद्र इम कदै, हो,
 वि०, एहना सुणने जाव श्रोता अति गहगहै, हो० श्रो० ॥ ७ ॥

॥ अथ ५ ॥ भगवतीसूत्र सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल पंथोमानी ॥ पंचम अंग जगवती जाणिये रे, जिहा जिन
 वरना वचन अथाह रे ॥ हिमवंत परवत सेती निकट्या रे, मानुं पर
 तिल गंग प्रवाह रे ॥ पं० १ ॥ सूरपन्नती नामे परगमी रे, जेहनी
 वै उदाम उवांग रे ॥ सूत्रतणी रचना दरिया जिसी रे, मांदिजा
 अरथ ते सजल तरंग रे ॥ पं० २ ॥ इहां तो सुखखंय एक अति
 जलो रे, एकसो एक अध्ययन उदार रे ॥ दश द्दुआर उदेसा जेह
 ना रे, जिहां किण प्रश्न ठत्तीस द्दुआर रे ॥ पं० ३ ॥ पद तो दोष
 लाख अरथे जस्था रे, ऊपर सदस अठ्यासी जाण रे ॥ लोकालो
 क स्वरूपनी वर्णना रे, विवादपन्नती अधिक प्रमाण रे ॥ पं० ४ ॥
 करिये पूजा अने परजावना रे, धरिये सद्गुरु ऊपर राग रे ॥
 सुणिये सूत्र जगवती रागमूं रे, तो दोष जवसागरनो त्याग रे ॥ पं०
 ५ ॥ गोतम नामे इय चढाइयै रे, सम्यक् ज्ञान उदय होय जेम
 रे ॥ कीजै साधु तथा साधमीतणी रे, जगति युगति मन आशो

प्रेम रे ॥ पं० ६ ॥ इण त्रिषसुं ए सूत्र आराधतां रे, इण जव
सीजे वंजित काज रे ॥ परजव विनयचंड कहे ते लहे रे, मोहन
मुगतिपूरीनो राज रे ॥ पंच० ७ ॥ इति श्रीजगवतीसूत्र सिंहाय सं० ॥

॥ अथ ६ ॥ ज्ञातासूत्र सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ कितलख लागी राजाजीरै मालियै ॥ ए देशी ॥
उठो अंग ते ज्ञातासूत्र वखाणियै जी, जेदना ठै अरथ अनेक उई
रु हो ॥ म्हा० सुणज्यो धरि नेह तिहांतनी वातनी जी ॥ श्रवणे
सुणतां गाढो रस ऊपजे जी, मधुरता तर्जित जिम मधुखंरु हो ॥
म्हा० १ ॥ जंबुहीवपन्नती उपांग ठै जेहनो जी, इण मांहे जिन
पूजानी विधि जोरहो ॥ म्हा० ॥ अर्चिक सुण परम शांतिरस अ
नुजवे जी, चर्चिक सुण करै सम सोर हो ॥ म्हा० २ ॥ नगर उ
द्यान चैत्य वनखंरु सोहामणो जी, समवसरण राजानो मात ने
तात हो ॥ म्हा० ॥ धरमाचारज धर्मकथा तिहां दाखवी जी, इह
लोक परलोक रुद्धि विशेष सुहात हो ॥ म्हा० ३ ॥ जोग परि
त्याग प्रव्रज्या पर्यया जी, सूत्र परिमद बारू तप उपधान हो ॥
म्हा० ॥ संलेदण पच्चस्काण पादपोषगमनता जी, स्वर्गगमन शुभ
कुल उत्तपन्न हो ॥ म्हा० ४ ॥ बोधिलाज वलि तंत ते अंतक
त्या कही जी, धर्मकथाना दोय ठै खंरु हो ॥ म्हा० ॥ पहिलाना
उगणीस अध्ययन ते आज ठै जी, बोजाना दस वर्ग महा अनुव
ध हो ॥ म्हा० ५ ॥ उंठकोमि तिहां सकल कथानक ज्ञापिया जी,
ज्ञाप्या वलि उगणीस उदेस हो ॥ म्हा० ॥ संख्याता हजार जला
पद एदना जी, एह थकी जायै कुमति कलेश हो ॥ म्हा० ६ ॥
विनय करे जे गुरुनो बहु परै जी, तेदने श्रुत सुणतां बहु फल
दोय हो ॥ म्हा० ॥ ते रसिया मन वसिया विनयचंडने जी, सो मांहे
मिले जोया एककै दोय हो ॥ म्हा० ७ ॥ इति ज्ञाताधर्मकथांग सि० ॥

॥ अथ ७ ॥ उपासकदशा सूत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल विठियानी ॥ हिबै सातमो अंग ते सांजलो, उपासकदशा नामे चंग रे ॥ अमणोपासकनी वर्णना, जसु चंदपन्नती उपाग रे ॥ १ ॥ मन लागो मोरो सूत्राथी, एतो जव वैराग तरंग रे ॥ रस राता ज्ञाता गुण लहे, परमारथ सुविहित संग रे ॥ म० २ ॥ इण अंगे सुयखंध एक वै, अध्ययन उदेस विचार रे ॥ दस संख्यायें दाखव्या, पद पिण संख्यात हजार रे ॥ म० ३ ॥ आदि दादिक आवकतणो, सुणतां अधिकार रसाल रे ॥ रस लागे जा मोहनी, श्रोताजनने ततकाल रे ॥ म० ४ ॥ श्रोता आगल तो चतां, गीतारथ पामे रीऊ रे ॥ जे अर्द्धदग्ध समजै नही, तेहसुं त करवी धीज रे ॥ म० ५ ॥ दस आवक तो इहां जापया, पि सूत्र जणो नही कोय रे ॥ ते माटे शुद्ध आवक जशी, एक अर नी धारणा होय रे ॥ म० ६ ॥ साचो होय ते प्ररूपिये, निस्सं पणें सुजगीत रे ॥ कवि विनयचंड कहै स्युं थयो, जो कुमती रस्यै रीत रे ॥ म० ७ ॥ इति उपासकदशांग सिद्धायः ॥

॥ अथ ८ ॥ अंतगडदशांग सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा ज ॥ ए देशी ॥ आठमो अंग अंतगडदशा जी, सुणी करो कान पवित्र ॥ अंतगड वे वली जे थया जी, तेहना रे इहां चरित्र ॥ आठ० ॥ १ ॥ कर्म कठिन दल चूरतां जी, पूरता जगत्तनी आस ॥ जिनवरदेव इहां जा सता जी, सासता अर्थ सुबिलास ॥ आठ० २ ॥ सकल निक्षेप न य जंगथी जी, अंगना जाव अजंग ॥ सहिज मुख रंगनी तट्टि का जी, कट्टिपका जास उवाग ॥ आठ० ३ ॥ एक सुयखंध इण अंगनो जी, वर्ग वै आठ अजिराम ॥ आठ उदेसा ठे वली जी, संख्याता सदस पद ठाम ॥ आठ० ४ ॥ आठमा

अंगना पाठमें जी, एहवोअ ठे रे मीगास ॥ सरस अनुजव रसे
 ऊपजै जी, संपजै पुण्यनी रास ॥ आ० ५ ॥ विषयलेपट नर जे
 हुवे जी, निरविषयी सुण्यां थाय, जिम मादा विष विषवरतणो
 जी, नागमंत्रे सुण्या जाय ॥ आ० ६ ॥ अमृतवचन मुख वरसती
 नी, सरस्वती करो रे पसाय ॥ जिम विनयचंद्र इण सुत्रना जी,
 रत लहै अन्निप्राय ॥ आ० ७ ॥ इति श्रीअंतर्गमवशा सूत्र सि० ॥

॥ अथ ए ॥ अणुत्तरोवाई अंग सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ नणदल विंदली लै ॥ ए चाल ॥ नवमो अंग
 प्रणुत्तरोवाई, एहनी रुच मुऊने आई हो ॥ आयरू सूत्र सुणो
 । सूत्र सुणो हित आणी, एतो वीनरागनी वाणी हो ॥
 आ० १ ॥ जसु कडवाणवतंसिका नामै, सोहे उपांग प्रकामे हो ॥
 आ० ॥ ए तो आगमने अनुकूला, मानु मेरुसिखरनी खूला हो ॥
 आ० २ ॥ ए तो सूत्रनो नाम सुणीजै, तिमर अंतरगति जीजै
 हो ॥ आ० ॥ प्रगटे नवल सनेदा, एहयी तलसे मोरी देहा हो ॥
 ॥ आ० ३ ॥ अणुत्तर सुरपद पाया, तेदना गुण इगमें गाया
 हो ॥ आ० ॥ नगरादिक जाव बखाण्या, ते तौ ठहै अंगे आयो
 हो ॥ आ० ४ ॥ इहां एक सुयखंध वारू, त्रिण वर्ग वली मनोहारू
 रे ॥ आ० ॥ ठहैसा त्रिण सनूरा, संख्यात सहस पद पूरा हो ॥
 आ० ५ ॥ सूत्र सुणावूं अमे तेहनें, साची श्रद्धा हुय जेदने हो ॥
 आ० ॥ ओतायी प्रीत लगावूं, निंदकने मुंह न लगाजं हो ॥ आ० ॥
 ६ ॥ जे सुणतां करै वकोर, ते तो माणस नदी पिण डोर हो ॥
 आ० ॥ कवि विनयचंद्र कहे साचो, श्रुत रंगै सद्गुको राचो हो ॥
 आ० ॥ ७ ॥ इति श्रीअणुत्तरोवाई सिद्धायः ॥

॥ अथ १० ॥ प्रपञ्चाव्याकरण सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आधा आम पवारो पूज ॥ ए देसी ॥ दशमो अंग

सुरंग सुहावै, प्रणव्याकरण नामें, सूत्र कल्पतरु सेवे ते तो, चि
 दानंद फल पामे ॥ आवो० गुणना जाग तुमने सूत्र सुणानं ॥
 पुष्पकली ज्युं परिमल मद्दकै, गुरु परागने रागै ॥ तिम उपांग
 पुष्पिका एहनो, जोर जुगति करि जागै ॥ आवो० २ ॥ अं
 ष्टादिक जिहां प्रकास्या, प्रणवादिक अति रुना ॥ ते ठै अष्टोत्तर ता
 ए तो, सूत्र मध्य मणिचूना ॥ आ० ३ ॥ आश्रव द्वार पांच इह
 आण्या, पांचे संवर द्वारा ॥ माहामंत्र वाणीमां लहियै, लब्धि जे
 सुखकारा ॥ आ० ४ ॥ सुखबंध एक ठै दसमे अंगै, पणयालीस
 अङ्गयणा ॥ पणयालीस उद्देस वली पद, सहस संख्यातनी रयणा
 ॥ आ० ५ ॥ जे नर सूत्र सुणै नही कानै, केवल पोपे कांया ॥
 माया मांहि रहै लपटाणा, ते नर इमहिज आया ॥ आ० ६ ॥
 सूत्र मांहि तो मारग दोयठै, निश्चयनय व्यवहारा ॥ विनयचंद्र कहै
 ते आदरियै, तज मन मदन विकारा ॥ आवो० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ ॥ विपाकसूत्र सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल कम्बुखानी ॥ सुणो रे विपाकश्रुत अंग इग्यारमो,
 तजो विकथा वृथा जे अनेरी ॥ ललित उपांग जसु प्रवर पुष्पचूलि
 का, मूलिका पाप आतंक केरी ॥ सु० १ ॥ अशुभ किंपाक सम
 डुक्तफल जोगवी, नरकमें गरक थया जेह प्राणी ॥ सुकृतफल जोग
 गवी स्वर्गमांजे गया, तास वक्तव्यता इहां आणी ॥ सु० २ ॥ दोयश्रुत
 खंधने वीश अध्ययन बलि, वीस उद्देस इहां जिन प्रयुंजे ॥ सहस
 संख्यात पद कुंद मचकुंद जिम, बहुल परिमल चमर चित्त गुंजे ॥
 सु० ॥ ३ ॥ सरस चंपकलता सुरजि सद्गुने रुचै, अन्य उपगारनी बुझि
 माटे ॥ सूत्र उपगार तेदथी सबल जाणियै, जेहथी पुरुष सुख अ-
 चल खाटे ॥ सु० ४ ॥ बंध ने मोहना बेजं कारणअठै, डुक्तने
 जोवो विचारी ॥ डुक्तने परिहरी सुकृतने आदरी, जिनव-

अन धारियै गुण संजारी ॥ सु० ५ ॥ म कर रे म कर निया नि-
 ण पारकी, नारकी तणी गति कांइ बांधै ॥ नारकी, प्रकृत तज
 हेज संतोष जज, लाग श्रुत सांजली घरमधंधै ॥ सु० ६ ॥ सुख
 दुःख विपाक फल दाखव्या, अंग इग्यारमें वीतरागै ॥ चिरजयो
 र शासन निहां सूत्रथी, कवि विनयचंद्रगुण ज्योति जागै ॥ सु० ७ ॥

॥ अथ इग्यारै अंगकी वर्णना लिख्यते ॥

॥ ढाल वधावाकी ॥ अंग इग्यारै में धुएया, सहेली ए ॥
 ॥ ज अपा रंगरोल कि ॥ स० ॥ नंदीसूत्र मांहि एहनो, स० ॥
 ॥ प्यो सर्व निचोल कि ॥ १ ॥ सहेली ए आज वधामणा ॥ आंक-
 ॥ पत्तरी अंग इग्यारनी, स० ॥ मुऊ मन मंरुप वेल कि ॥ सींचू
 हरखे करी, स० ॥ अनुजव रसनी रेल कि ॥ स० २ ॥ हेज धरी
 सांजलै, स० ॥ कुश बूढा कुण बाल कि ॥ तो ते फल लहे फू
 ॥ स० ॥ स्वादे अतहि रसाल कि ॥ स० ३ ॥ हरख अपार धेरी
 ॥ स० ॥ अहम्मदावाद मजार कि ॥ जात करी ए अंगनी,
 ॥ वरत्या जय२कार कि ॥ स० ४ ॥ संवत सतर पचावनें,
 ॥ वरपाशुतु नजजात कि ॥ दसमी दिन सुदि पक्षमां, स० ॥
 ॥ थई मन आस कि ॥ स० ५ ॥ श्रीजिनधर्म सूरी पाटवी,
 ॥ श्रीजिनचंद्र सूरीत कि ॥ खरतरगछना राजिया, स० ॥
 ॥ राजै सुजगीत कि ॥ स० ६ ॥ पाठक रहखनिधान जो, स० ॥
 ॥ तिलक सुपसाय कि ॥ विनयचंद्र कहे में करी, स० ॥ अंग
 ॥ सिझाय कि ॥ स० ७ ॥ इति श्रीइग्यारै अंग सिझाय ॥

॥ अथ ज्ञानका पुनः स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग तुमरी ॥ मेरे रे मन मानी ज्ञान जरी, मे० ॥ पर उप
 सुगुरु वताई, पांचु जेई करी ॥ मति श्रुति अवधि अवर मन
 , केवल बोध वरी ॥ मे० १ ॥ तप करि अग्नि मूंस दंतनकी,

करमेंधनल करी ॥ सक्रिय संजम करतासुं मिल, सिद्धि रत्न
धरी ॥ मे० २॥ पूरण पुन्य मिली मोहि सजनी, सकलानन्द दरी,
वाल कहै अथ विसरत नाही, पल तिन एक धरी ॥ मे० ३॥ इति पद॥

॥ पुनः आगम स्तवन ॥ २ ॥

श्रुत अतहि जलो, संघ सकल आधार नमूं श्रीजुवन तिलो
॥ आंकणो ॥ शरथें श्रीवीरजिनंद आख्यो, सूत्रें श्रीगणधरगुरु
जाण्यो, तडुन्नयथी जे मुनिवर राख्यो ॥ श्रु० १ ॥ जेहथी जग
जाव सकल जाणे, नय एकांत मुनिजन नवि ताणे, निश्चय विवदार
ते मन आणे ॥ श्रु० २ ॥ जिहां अंग नपांग वै अति रूना, ठ छेद
पयना नहि कूना, मूलसुत्र नंदी अनुयोग चूना ॥ श्रु० ३ ॥ जिहां
निरयुक्ती सूत्रे संगी, बलि जाण्य चूरण टीका चंगी, पंचम अंगे
कही पंचांगी ॥ श्रु० ४ ॥ जिहां साधु आवक मारग लहियै,
संवेगपखी बलि सरदहियै, ए त्रिण विन जवमारग कहियै ॥ श्रु०
५ ॥ जेदनी अनुपेदा नित करियै, उपचारे दूषण परिहरियै,
आराध्यां निज अनुजव तरियै ॥ श्रुत० ६ ॥ जिन आगमना जे
गुण गावे, शुद्धाशय जे मनमें ध्यावे, ते कृमाकल्याण सदा पावै ॥
श्रु० ७ ॥ इति ज्ञान स्तवनं ॥

॥ अथ कार्तिक चोमासाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्तिक महानेमें भिति कार्तिक सुदि १४ के दिन सब
मंदरमें दर्शन करणेंको जाणा, व्याख्यान सुणना, सामायकादिक
धर्मकृत्य करणा । इत्यादिक सब अधिकार आसाढ चोमासे मुजब
जाणना ॥ इति कार्तिकचोमासा सेवनविधिः ॥

॥ अथ कार्तिक पूर्णमासीका अधिकार लिख्यते ॥

प्रथम कार्तिक वदि १ सैं सेत्रंजरास सुणें, निवी वा
एकासणा व्यासणादि तप करै, दोनुं टंक पम्किमणा करै, देववंद

दि करै, (नै हँ) श्रीसिद्धक्षेत्र अनन्तसिद्धायनमः ॥) इस मंत्रका
 प करे १०८ बेर ॥ शक्ति होय तो सिद्धिगिरी जात्रा करणेंको
 वै. कातिपूनमेके दिन विस्तारसंयुक्त सिद्धिगिरीकी पूजा करावै,
 आई महोच्चव करै, विस्तारसैं देववंदनादिक विधि करै, (११)
 सेत्रुजरास सुणे (नै हँ) श्रीसिद्धक्षेत्र अनन्तसिद्धाय नमः)
 पदसैं २१ जेती देवै. (कदास) सिद्धिगिरी जाणेकी शक्ति
 होय तो जहां सिद्धिगिरीका पट्ट मंठा होय उहां महोच्चव
 दशन करणेंको जावै, पूजादिक सब विधि करै, गच्छत कर
 वा चउत्तरयज्ञ करके इस पर्वकूं आराधन करै, गुरुजक्ति करै, सा
 वछल करे. इत्यादिक विधि संयुक्तसिद्धिगिरीकी सेवना करणेंसैं
 अशुभकर्म विध्वंस होय, मंगलमाला प्रवर्त्तन होय ॥ इस दि-
 गीद्रावन वारखिल्ल प्रमुख दस कोनि साधु सिद्धिस्थानक प्राप्त
 जितसैं इस दिन जो धर्मकृत्य करणेंमें आता हे उसका नि-
 शकोनि गुणा फल होता है ॥ इस जगतक्षेत्रमें सिद्धिगिरीके
 न दुसरा तीर्थ नही. संवत् १९१२ की सालमें मेरा चतु-
 सुंवईमें था. उहांसैं कार्तिकमें यात्रा गया, तब सर्व बिंबोके
 करके गिणाती देखणेमें आई सो बारे इज्जार तीनसैं अघा
 संख्या मिली, ठर बहुत जगे चरणोकी स्थापना हे, अन-
 धू अणत्तण लेके परमपद पाए हे, इस वास्ते जो तुरत ज
 वीव होंगे. सो शुद्धजावसैं इस तीर्थको सेवेंगे, जो सेवते हे
 न्य हे. गुर्जरदेस वासियोंकी बहुलता तार्थआसातनाकारी
 यज्ञकक जतीसाधू जो संवेगपक्षी गीतार्थोंके छेपी एसी वक
 जीर्णोद्धार तथा नोकारसी प्रमुखके वादनेसैं अन्य देसांतरी
 जी जयजीवोंका धन उगलेकी वृत्तिसैं तीर्थ सेवन अनन्त सं-
 जवन्नमण समजके वर्जना, एसैं उरबुद्धियोंकी पूजाव्रतपञ्च-

खाणादि द्रव्यकरणी श्रावकाचारवृत्तिरूप जाणके उनोका संगतीन
करणा. शुद्धजावसें सिद्धगिरी सेवे ताकूं नमस्कार हे ॥

॥ अथ सिद्धगिरी स्तवनं ॥ १ ॥

॥ देशी गरवानी ॥ ते दिन क्यारे आवसी हे, जो रे वहिनी
॥ जासुं सिद्धाचलनी जात्र, मोरी सहियां हे ॥ पाजै चढतां प्रेम
हे, जो रे वहिनी ॥ गाइये गुण अस्त्रियात, मोरी सहियां हे ॥
दि० १ ॥ अदभुत ऊंचो देहरो ए, जो रे वहिनी ॥ मूलनायक अ
दिनाथ, मोरी सहियां हे ॥ ज़ोली जगत ज़ली परे हे, जो रे व
॥ निरख्यां होय सनाथ ॥ मो० ते० १ ॥ नाही निरमल नीर
हे, जो रे० ॥ पहिर खीरोदक चीर, मो० ॥ केसर जरिय कचो
लनी हे, जो रे० ॥ पूजसुं सुगुण सुधीर ॥ मो० ते० १ ॥ रुमी
रायणां हम्मी हे, जो रे० ॥ आदिजनेंद ऊदार, मो० ॥ तिहा
जगनाथ समोसखा हे, जो० ॥ पूरव निनाणू वार ॥ मो० १ ॥
इण गिरवरिये ऊपरा हे, जो रे० ॥ सीधा साधु अनंत, मो० ॥
चोमासे रह्या होय जिनवरा हे, जो रे० ॥ अजित जिनेसर शांती
॥ मो० ५ ॥ चेलणातलाइ सिद्धसिला हे, जो रे० ॥ अब्रुत
उलकाजोल, मो० ॥ सिद्धवरु सेतुंजैनदी बहे हे, जो रे० ॥ करिये
नित रंगरोल ॥ मो० ६ ॥ इण सुंगर बीठा अकां हे, जो रे० ॥
ऊपजै परमानंद, मो० ॥ गहिरी गिरवर वांढनी हे, जो रे० ॥ कहे
नित जिणचंद ॥ मो० ते० ॥ ७ ॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ २ ॥

श्रीचंडाप्रभु प्राहुणो रे । ए देशी ॥ नमो रे नमो से
जुंजगिरी रे, त्रिकरण शुद्ध त्रिकाल रे ॥ पापपल्ल दूरै टलै रे, तूटे
करमजंजाल रे ॥ नमो० १ ॥ पूरव निनाणू समोसखा रे, प्रथम
जिनेंद जगदीस रे ॥ बावीसम जिनवर विना रे, समवसखा

तेवीस रे ॥ नमो० २ ॥ साधु अनंत अनसण ग्रही रे, सी
 दिज ठोम रे । काल अनंत बलि सीऊस्यै रे, साधू अनंती कोम
 रे ॥ नमो० ३ ॥ अनंत कळ्याणक जूमिका रे, महिमावंत महंत
 रे ॥ सास्वतो तीरथ ए सद्दी रे, अतिशय जास अनंत रे ॥ नमो०
 ४ ॥ कोमि जवांतर जे किपा रे, पातिक विविध ऊपाय रे ॥ से-
 ङ्गुजे सनमुख चालतां रे, पग२ ते सद्दू जाय रे ॥ नमो० ५ ॥
 धन दिन तेदिज जाणसूं रे, बढिस्युं सेङ्गुजे केरी वाट रे ॥ वढरी
 यथाविध पालस्युं रे, संघ सहित गढगाट रे ॥ नमो० ६ ॥ पग२
 जव अतिथला रे ॥ पग२ याचकदान रे ॥ प्रेम जगत साहमीतणी
 रे, जीर्णोद्धार प्रधान रे ॥ न० ७ ॥ धन ते गिरिराय निरखसुं रे, व-
 दती मंगलमाल रे ॥ मणि मोतीयने बधावस्युं रे, रजत सोवन जर
 थाल रे ॥ नमो० ८ ॥ धन दिन ते गिर फारसस्युं रे, करस्युं पाव-
 न मोरी काय रे, जगति जुगति जुद्धारस्युं रे, नाजिनंदन जिनराय
 रे ॥ नमो० ९ ॥ द्रव्य जाव करसुं मुदा रे, पूजा विविध प्रकार रे ॥
 जावै जावना जावसुं रे, करसुं सफल अवतार रे ॥ नमो० १० ॥
 रत्नत्रयी जमती जली रे, देसुं ते धर बुद्धि रे ॥ जवजव घमण
 निवारसुं रे, लहिसुं आतमसुद्धि रे ॥ नमो० ११ ॥ विध फरसन
 मन माहरो रे, मोहि रह्यो दिनरात रे ॥ पुन्य प्रवलथी पामियो
 रे; उल्लङ्गगिरि केरी जात रे ॥ नमो० १२ ॥ नार्थ धूलेवा सुपता-
 यथी रे, कारज सगला सिद्ध रे ॥ कहे जिनहरप सूरिसरू रे, हो-
 यजो मंगल बुद्ध रे ॥ नमो० १३ ॥ इति सिद्धचल स्त० ॥

॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥ ३ ॥

॥ देशी पंथीमानी ॥ अंग ऊमाहो मोने अतिथणो, जेटवा
 विमलगिरिंद रे पंथीमा ॥ नाजिराया कुल चंदलो, जिद्दां वसै मरु-
 देवानंद रे पंथीमा ॥ बढिजुं बोले रे पंथी म्दारा बढिजुं बोले रे ॥

सेतुंजो वै कितनी दूर रे पंथीना ॥ वहि० १ ॥ पालीताणो नगर
 सोहामणो, रुनी ललतासरनी पाल रे पंथीना ॥ जिहां अंबला रे
 वमला घणा, ऊक रही चंपलारी माल रे पंथीना ॥ वहि० २ ॥
 धनं ते पंखी पारेवना, सेतुंज वसिया जे मोर रे पंथीना ॥ ऊ
 हो करीने जे घर रहे, माणस नदी ते ढोर रे पंथीना ॥ वहि०
 ३ ॥ सेतुंज वाटे जी चालतां, जीणीर ऊमे खेह रे पंथीना
 मैला आवे संघना कापना, निरमल थायै देह रे पंथीना ॥ वहि
 ४ ॥ उंचो देहरो आदिनाथनो, आगल चोक विसाल रे पंथीना ।
 जिहां मिलर घणा मानवी, गावै प्रज्जुगुण माल रे पंथीना ॥ वहि
 ५ ॥ घस केसर जर वाटका, पूजेवा जिनवर अंग रे पंथीना ।
 फूलाहंदो सोहे प्रज्जु सिर सेहरो, दिवळारी ज्योति अजंग रे पंथी
 ना ॥ वहि० ६ ॥ ए गिरवर दीगां माहरै, ऊपजै परम आनंद रे
 पंथीना ॥ मोने जेटणरो जी कोरु ठै, प्रेम घणे जिनचंद रे पंथी
 ना ॥ वहि० ७ ॥ इति श्रीसिद्धचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ४ ॥

॥ जात्रा निनाणूं करिये विमलगिर, जात्रा० ॥ पूरव निना
 णूं वार सेतुंज गिर, रूपज जिनंद समोसरियै, सेतुंजगिर यात्रा० ॥
 कोनिसहस्र जव पातक तूटै, सेतुंज सामे रुग जरिये ॥ विम०
 जात्रा० १ ॥ चोथ ठठ दोय अछम तपस्या, कर चढियै गिरवरियै ॥
 विम० जा० ॥ पूंरुकीक पद जपियै हरपै, अधवसाय शुज धरियै ॥
 वि० जा० २ ॥ पापी अजघी निजर न देखै, हिसरु पिण ऊपरि
 यै ॥ वि० जा० ॥ जूमिसंधारी ने नारितणो संग, दूरअकी परह-
 रियै ॥ वि० जा० ३ ॥ एकल आहारी ने सचित्त परिहारी, गुरु साथे
 पद चरिये ॥ वि० जा० ॥ पम्किमणा दोय विधसुं कीजै, पापम-
 ल विष हरियै वि० जा० ४ ॥ कलिकालै ए तीरथ मोटो, प्रवदण

सम जवदरिये ॥ वि० जा० ॥ नूतन ए गिरवर सेवता, पदम कहे
नव तरिये ॥ वि० जा० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरो स्तवन ॥ ५ ॥

॥ राग प्रजाती ॥ जाव धर धन्य दिन आज सफती गिणयो,
प्राज में सजन आनंदपायो ॥ जा० ॥ हर्ष धर निजर जर विम-
लगिरि निरख कर, रजत मणि कनक मोतियन वधायो ॥ जा०
१ ॥ पगर उमंग धर पंग्र नित पूठतां, धन्य दोष चरण जिहां
बलत आयो ॥ जा० ॥ आज धन दोह जागी सुकृतकी दिशा, आज
धन दीह में सुजस गायो ॥ जा० २ ॥ डुर डुरगते टरो जात्र
विघसुं करी, पुन्यजंनार पोते जरायो ॥ वदतजिनराज मनरंग सु-
गिरतिखर, कपज जिनचंद सुरतरु कदायो ॥ जा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ मार्गशोर्ष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ मिगसर महीनेमें मिती मिगसर सुद ११ सो मोनइग्या-
रस नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन ऋतसें कळयाणक जये हैं सो
लिखते है, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान, यह तीन कळयाणक श्रीमद्वि-
नाथस्वामी के जये, श्रीश्ररयनाथस्वामीनें दीक्षा अंगीकार करी, श्री
नमिनाथस्वामीकों केवलज्ञान जया. एते इस जगतक्षेत्रमें वर्तमान,
चोवीसीके पांचकळयाणक जये. इस तरे पांच जगत, पांच एरवत
में, चोवीसीके पांच२ कळयाणक मिलाएसें पञ्चास कळयाणक जये.
अतीत, अनागत, वर्तमानकालकी अपेक्षासें ऋतसे कळयाणक जये.
इस वास्ते यह दिन वरुा उत्तम है. इस दिन मौन संयुक्त उपवास
करै, अठ पहरा पोसा करै मौनइग्यारसका गुणना करै. पोसह
की शक्ति नही होय तो देसावगासि लेके गुणना करे. ऐसे
इग्यारे वरसमें इग्यारे उपवास करे. अगर जो इग्यारस करणे
की इच्छा होय तो महीनेमें दोनों पक्षकी दो एकादसीकों इ-

ग्यारे वरत इग्यारे महीना करै, यह तपस्या करतां इग्यारै अंग जा-
वसैं सुणें, इग्यारै अंग लिखायेके देवै, पढ़ेवालोंको सहाय देवै,
तपस्या ग्रहण करणेकी तथा पारणेकी विधि करै, सो गुरुमुखसैं
करै. (समवसरण बैठा जगवंत) इत्यादि इग्यारसका स्तवन पूर्व
लिख्या हे सो पढ़े वा सुणै. पीछै उद्यापनमें पैंतालीस आगमकी
पूजा करै. यथाशक्ति साहमीवच्छल करै, गुरुपूजा करै ॥ इति विधिः

॥ अथ मोनएकादशीको गुणनो लिख्यते ॥

॥ जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे अतीत

२४ जिन पंच क-

ल्याणक नमः ॥

॥ प्रथम ॥

४ श्रीमहायशसर्वज्ञायनमः

६ श्रीसर्वानुज्जुतिश्रद्धतेनमः

६ श्रीसर्वानुज्जुतिनाथायनमः

६ श्रीसर्वानुज्जुतिसर्वज्ञायनमः

७ श्रीश्रीधरनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे वर्तमान २४

चिन पंच कल्याणक ॥२॥

२१ श्रीनमिसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीमह्निश्रद्धतेनमः

१९ श्रीमह्निनाथायनमः

१९ श्रीमह्निश्रद्धायनमः

१८ श्रीश्रीधरनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे अनागत २४

जिनपंचकल्याणक ॥३॥

४ श्रीस्वयंप्रभुसर्वज्ञायनमः

॥ धातकीखंडेपूर्वभरते अती

२४ जिन पंच कल्या

णक नमः ॥ ४ ॥

॥ द्वितीयः ॥

४ श्रीश्रकलंकसर्वज्ञायनमः

६ श्रीशुजंकरश्रद्धतेनमः

६ श्रीशुजंकरनाथायनमः

६ श्रीशुजंकरसर्वज्ञायनमः

७ श्रीसतनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वभरते वर्तमान २४

जिन पंच कल्याणकनाम ॥५॥

२१ श्रीब्रह्मेन्द्रसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीगुणनाथश्रद्धतेनमः

१९ श्रीगुणनाथनाथायनमः

१९ श्रीगुणनाथसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीगंगांगीशनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वभरते अनागत २४

जिनपंचकल्याणकनाम ॥६॥

४ श्रीसांप्रतिसर्वज्ञायनमः

६ श्रीदेवश्रुतग्रहतेनमः
 ६ श्रीदेवश्रुतनाथायनमः
 ६ श्रीदेवश्रुतसर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीनृदयनाथायनमः
 पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअतोते २४ जि

नपंचकल्याणक० प्रया॥७॥

४ श्रीमृदुसर्वज्ञायनमः

६ श्रीव्यक्तग्रहतेनमः

६ श्रीव्यक्तनाथायनमः

६ श्रीव्यक्तसर्वज्ञायनमः

७ श्रीकलाज्ञतनाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वभरतेवर्त्तमान२४जिन
 पंचकल्याणक । ८ ।

२१ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः

१९ श्रीयोगनाथग्रहतेनमः

१९ श्रीयोगनाथनाथायनमः

१९ श्रीयोगनाथसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीअयोगनाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअनागत२४जिन
 पंचकल्याणकनामः ९

४ श्रीपरमसर्वज्ञायनमः

६ श्रीशुद्धार्तिग्रहतेनमः

६ श्रीशुद्धार्तिनाथायनमः

६ श्रीशुद्धार्तिसर्वज्ञायनमः

७ श्रीनिष्केशनाथायनमः

६ श्रीमुनिनाथग्रहतेनमः

६ श्रीमुनिनाथनाथायनमः

६ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः

७ श्रीविशिष्टनाथायनमः

घातकीखंडेपश्चिमभरतेअतोत
 २४जिनपं०ना०द्वितीय॥१०॥

४ श्रीसर्वार्थसर्वज्ञायनमः

६ श्रीहरिजङ्गग्रहतेनमः

६ श्रीहरिजङ्गनाथायनमः

६ श्रीहरिजङ्गसर्वज्ञायनमः

७ श्रीमगधाधिनाथायनमः

घातकीखंडेपश्चिमभरतेवर्त्तमान
 २४पंचकल्याणकना० ॥११॥

२१ श्रीप्रयत्नसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीअक्षोजग्रहतेनमः

१९ श्रीअक्षोजनाथायनमः

१९ श्रीअक्षोजसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीमल्लिसिंदनाथायनमः

घातकीखंडेपश्चिमभरतेअनाग-
 त २४ जि०पं०क० १२

४ श्रीआदिकरसर्वज्ञायनमः

६ श्रीधनदग्रहतेनमः

६ श्रीधनदनाथायनमः

६ श्रीधनदसर्वज्ञायनमः

७ श्रीपौपनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअतीत२४जिन

पंचकल्याणक ॥१३॥

४ श्रीप्रलंबसर्वज्ञायनमः

६ श्रीचारित्रनिधिर्हतेनमः

६ श्रीचारित्रनिधिनाथायनमः

६ श्रीचारित्रनिधिसर्वज्ञायनमः

७ श्रीप्रशमजितनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेवर्त्तमान२४

जिनपंचकल्याणक ॥१४॥

२१ श्रीस्वामिसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीविपरीतार्द्धतेनमः

१९ श्रीवीपरीतनाथायनमः

१९ श्रीवीपरीतसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीप्रसादनाथायनमः

॥ पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअनागत

२४जिनपंचकल्याणक ॥१५॥

४ श्रीअघटितसर्वज्ञायनमः

६ श्रीब्रमर्णेर्द्धतेनमः

६ श्रीब्रमर्णेद्रनाथायनमः

६ श्रीब्रमर्णेर्द्धसर्वज्ञायनमः

७ श्रीरिपज्जचंद्रनाथायनमः

घातकीसंघेपूर्वपरवतेअतीत३२जिन

पंचकल्याणकनाम ॥१६॥

॥१६॥

॥१६॥

जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेअतीत २४

जि०पंचक ० १६

४ श्रीदयांतसर्वज्ञायनमः

६ श्रीअजिनंदनार्द्धतेनमः

६ श्रीअजिनंदननाथायनमः

६ श्रीअजिनंदनसर्वज्ञायनमः

७ श्रीरत्नेशनाथायनमः

जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेवर्त्त० २४

जिनपंचक ० नाम १७

२१ श्रीशामकाष्टसर्वज्ञायन

१९ श्रीमरुदेवार्द्धतेनमः

१९ श्रीमरुदेवनाथायनमः

१९ श्रीमरुदेवसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीअतिपार्थनाथायनमः

॥ जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेअना० २४

नपंचकल्याणकनाम ॥१८॥

४ श्रीनेदिपेणसर्वज्ञायनमः

६ श्रीवतधरार्द्धतेनमः

६ श्रीवतधरनाथायनमः

६ श्रीवतधरसर्वज्ञायनमः

७ श्रीनिर्वाणनाथायनमः

॥ पुष्करार्द्धपूर्वपरवतेअतीत२४

जिनपंचक ० नाम १९

४ श्रीअष्टादिकसर्वज्ञायनमः

६ श्रीवणिक्कर्द्धतेनमः

६ श्रीत्रिविक्रमनाथायनमः
 ६ श्रीत्रिविक्रमसर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीनारसिंहनाथायनमः
 तकीखंडे पूर्व एरवते वर्त्तमान २४
 जिनपंचकल्याणकनाम ॥ २० ॥

२१ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः
 १ ए श्रीसंतोषितग्रहतेनमः
 १ ए श्रीसंतोषितनाथायनमः
 १ ए श्रीसंतोषितसर्वज्ञायनमः
 १८ श्रीकामनाथायनमः
 तकीखंडे पूर्व एरवते अनागत २४
 नपंचकल्याणकनाम ॥ २१ ॥

१ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः
 श्रीचंद्रदाहग्रहतेनमः
 श्रीचंद्रदाहनाथायनमः
 श्रीचंद्रदाहसर्वज्ञायनमः
 श्रीदिलादित्यनाथायनमः
 तकीखंडे पश्चिम एरवते अतीत २४
 जिनपं० क० नाम ॥ २५ ॥

श्रीपुरुषसर्वज्ञायनमः
 श्रीअवबोधग्रहतेनमः
 श्रीअवबोधनाथायनमः
 श्रीअवबोधसर्वज्ञायनमः
 श्रीविक्रमेन्द्रनाथायनमः

६ श्रीवणिकुनाथायनमः
 ६ श्रीवणिकुसर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीउदयज्ञाननाथायनमः
 पुष्करार्द्धपूर्व एरवते वर्त्तमान २
 जिनपंचक० नाम ॥ २३ ॥
 ११ श्रीतमोक्तदनसर्वज्ञायनमः
 १ ए श्रीसायकाक्षग्रहतेनमः
 १ ए श्रीसायकाक्षनाथायनमः
 १ ए श्रीसायकाक्षसर्वज्ञायनमः
 १८ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः

पुष्करार्द्धपूर्व एरवते अना० २
 जिनपंचक० नाम ॥ २४ ॥
 ४ श्रीनिर्वाणसर्वज्ञायनमः
 ६ श्रीरविराजग्रहतेनमः
 ६ श्रीरविराजनाथायनमः
 ६ श्रीरविराजसर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीप्रथमनाथायनमः
 पुष्करार्द्धपश्चिम ए० अतीत २४
 जिनपं० क० ना० ॥ २८ ॥

४ श्रीअश्वत्थदसर्वज्ञायनमः
 ६ श्रीकुटिलग्रहतेनमः
 ६ श्रीकुटिलनाथायनमः
 ६ श्रीकुटिलसर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीवर्द्धमाननाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएवतेवर्तमान२४

जिनपंचकल्याणकनाम॥२६॥

११ श्रीसुशान्तसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीहरअर्हतेनमः

१९ श्रीहरनाथायनमः

१९ श्रीहरसर्वज्ञायनमः

१० श्रीनंदिकेशनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएवतेअना०२४

जिनपंचकल्याणकनाम॥२७॥

४ श्रीमहामृगेंद्रसर्वज्ञायनमः

६ श्रीअसौचितअर्हतेनमः

६ श्रीअसौचितनाथायनमः

६ श्रीअसौचितसर्वज्ञायनमः

७ श्रीधर्मेन्द्रनाथायनमः

पुष्कराक्षेपश्चिमएवतेवर्त०

२४जिनपंचक०ना०२९

११ श्रीनंदिकसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीधर्मचंद्रअर्हतेनमः

१९ श्रीधर्मचंद्रनाथायनमः

१९ श्रीधर्मचंद्रसर्वज्ञायनमः

१० श्रीविवेकनाथायनमः

पुष्कराक्षेपश्चिमए०अना०

२४जिनपं०क०॥३०॥

४ श्रीकलापसर्वज्ञायनमः

६ श्रीवितोमअर्हतेनमः

६ श्रीवितोमनाथायनमः

६ श्रीवितोमसर्वज्ञायनमः

७ श्रीआरणनाथायनमः

इति मौनएकादशी गुणना संपूर्ण ॥

॥ अथ विधि ॥ ॥ एकेक कल्याणककी एकेक माला गुणनेसें नेढसें माला होती है. जो नव्यजीव शुद्धचित्तसें गुणेंगे तो थोमे जवोंमें अनंतसुखको प्राप्त होंगे ॥ इति मार्गशोर्प मास मध्ये प० ॥

॥ अथ पोष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ पोष महीनेमें मिति पोष वद १०, सो पोषदसमी नामसे पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका जन्मकल्याणक है, इसीसें यह दिन श्रीसंधर्मे परम आनंदकारी है, इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका अधिकार सुणे, एकासणादिकका पञ्चस्काण करे, जहां श्रीपार्श्वनाथस्वामीका नामसें तीर्थ प्रसिद्ध होय उहां जात्रा करणेंको जावै, जो कच्ची यात्रा करणेंको नही जा सकै तो जहां

श्रीपार्श्वनाथस्वामीका मंदिर होय उहां मद्दोछव संयुक्त दरसन करणेकों जावै, जलयात्रादि मद्दोछव करै अष्टोत्तरीलात्र करावै अथवा पंचकड्याणकजीकी वा सत्तरजेदी पूजा करावै, तोरण बांधै, गीतगान नाटकादिकसँ अनेक तरैके उछव करै, और (पास जिनेसर जगतिलो ए) वा (बाणी ब्रह्मा वादिनी० आदिक) पार्श्वनाथस्वामिके गुणगर्जित स्तवन पढ़ै वा सुणै. इस पर्वका सेवन करणेसँ आधिभ्याधि सोग संताप सर्व दूर होंगे, अनेक तरैसँ रुद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकों प्राप्त होंगे ॥ (स्तवन पासजिनेसर जगतिलो) सुणै वा पढ़ै सो उर (बाणी ब्रह्मा०) पढ़ली लिखादे॥इति॥

॥ अथ माघ मास पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ माघ महीनेमें मित्ती माघ वदि १३, सो मेरुतेरस नाम सँ पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीरूपजदेवस्वामीका निर्वाणकड्याणक है, इस वास्ते जगवंतमहाराज इस दिनकों उत्तम कहा है. इस दिन चोबिदार उपवास करै, रत्नमई पांच मेरु जगवानके आगे चढ़ावै, बीचमें १ बरुा मेरु, च्यारुंदिस ठोटा च्यार मेरु, एसँ पांच मेरु चढ़ावै. एसी शक्ति नही होय तो सोनेके, चांदीके, वा धृतके मेरु करके चढ़ावै । आगे च्यारुं दिश तरफ च्यार नंदावर्त करै, अष्टप्रकारी, सत्तरदेजेदी पूजा पढायके अष्ट द्रव्य चढ़ावै. पीठै श्रीरूपजदेवस्वामी (पारंगतायनमः) इस पदका दो हजार गुणना करै, उर जो कोइ तेरसके दिन पोसह करे तो पूजादिक सब विधि पारणेके दिन करै. अतिथिसंविज्ञाग करै पारणा करै. इस तरै १३ बरस अथवा तेरे महीना तप करै. पीठै शक्ति मुजब उछवसँ ऊजमसां करै, तीर्थोंकी यात्रां करै, साधर्मीवच्छल करै ॥ इहां दृष्टांत कहते हैं ॥ जेसँ अयोध्यानगरीमें अनंतवीर्यराजाका पुत्र पिंगलरायकुमार गांगिलमुनीके पास इस पर्वका अधिकार सुणके

धातकीखंडेपश्चिमएरवतेवर्त्तमान२४
जिनपंचकल्याणकनाम॥२६॥

२१ श्रीसुशान्तसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीहरअर्हतेनमः

१९ श्रीहरनाथायनमः

१९ श्रीहरसर्वज्ञायनमः

१० श्रीनंदिकेशनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएरवतेअना०२४

जिनपंचकल्याणकनाम॥२७॥

४ श्रीमहामृगेंद्रसर्वज्ञायनमः

६ श्रीअसौचितअर्हतेनमः

६ श्रीअसौचितनाथायनमः

६ श्रीअसौचितसर्वज्ञायनमः

७ श्रीधर्मेन्द्रनाथायनमः

पुष्कराद्धेपश्चिमएरवतेवर्त्तमान२४
जिनपंचक०ना०२९

२१ श्रीनंदिकसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीधर्मचंद्रअर्हतेनमः

१९ श्रीधर्मचंद्रनाथायनमः

१९ श्रीधर्मचंद्रसर्वज्ञायनमः

१० श्रीविवेकनाथायनमः

पुष्कराद्धेपश्चिमएर०अ

२४जिनपं०क०॥३॥

४ श्रीकलापसर्वज्ञायनमः

६ श्रीविसोमअर्हतेनमः

६ श्रीविसोमनाथायनमः

६ श्रीविसोमसर्वज्ञायनमः

७ श्रीआरणनाथायनमः

इति मौनएकादशी गुणना संपूर्ण ॥

॥ अथ विधि ॥ ॥ एकेक कल्याणककी एकेक माला
एनेसें नेढसें माला होती है. जो जन्मजीव शुद्धचित्तसें गुणों
थोमे जवोंमें अनंतसुखको प्राप्त होंगे ॥ इति मार्गशोर्ष मास मध्ये १०

॥ अथ पोष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ पोष महीनेमें मिति पोष वद १०, सो पोषदसमी नाम
पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका जन्मकल्याणक
इसीसें यह दिन श्रीसंघमें परम आनंदकारी है, इस दिन श्रीपा
नाथस्वामीका अधिकार सुणे, एकासणादिकका पञ्चकाण करे, ज
हां श्रीपार्श्वनाथस्वामीका नामसें तीर्थ प्रसिद्ध होय उहां जा
जो नही जा सकै तो जहां

श्रीपार्श्वनाथस्वामीका मंदिर होय उहां महोत्सव संयुक्त दरसन करणेंकों जावै, जलयात्रादि महोत्सव करै अष्टोत्तरीस्तोत्र करावै अथवा पंचकल्याणकजीकी वा सत्तरजेदी पूजा करावै, तोरण बांधै, गीतगान नाटकादिकसँ अनेक तरैके उत्सव करै, और (पास जिणेसर जगतिलो ए) वा (वाणी ब्रह्मा वादिनी० आदिक) पार्श्वनाथस्वामिके गुणगर्जित स्तवन पढ़ै वा सुणै. इस पर्वका सेवन करणेंसँ आधिभ्याधि सोग संताप सर्व दूर होंगे, अनेक तरेंसँ रुद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकों प्राप्त होंगे ॥ (स्तवन पासजिनेसर जगतिलो) सुणै वा पढ़ै सो उत्तर (वाणी ब्रह्मा०) पढ़ली लिखादे॥इति॥

॥ अथ माघ मास पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ माघ महीनेमें मित्ती माघ वदि १३, सो मेरुतेरस नाम सँ पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीरूपजदेवस्वामीका निर्वाणकल्याणक दे, इस वास्ते जगवंतमहाराज इस दिनकों उत्तम कहा है. इस दिन चोविदार उपवास करै, रत्नमई पांच मेरु जगवानके आगै चढ़ावै, बीचमें १ वरुा मेरु, चारुंदिस ठोटा च्यार मेरु, एतें पांच मेरु चढ़ावै. एसी शक्ति नही होय तो सोनेके, चांदीके, वा घृतके मेरु करके चढ़ावै । आगे च्यारुं दिश तरफ च्यार नंदावर्त करै, अष्टप्रकारो, सत्तरहजेदी पूजा पढ़ायके अष्ट द्रव्य चढ़ावै. पीठै श्रीरूपजदेवस्वामी (पारंगतायनमः) इस पदका दो हजार गुणना करै, उत्तर जो कोइ तेरसके दिन पोसह करे तो पूजादिक सब विधि पारणके दिन करै. अतिथिसंविज्ञाग करै पारणा करै. इस तरै ११ वरस अथवा तेरे महीना तप करै. पीठै शक्ति मुजब उत्सवसँ ऊजमसा करै, तीर्थोंको यात्रा करै, साथभीवञ्चल करै ॥ इहां दृष्टांत कहते हैं ॥ जेसँ अयोध्यानगरीमें अनंतवीर्यराजाका पुत्र पिंगलरायकुमार गांगिलमुनीके पास इस पर्वका अधिकार सुणके

तपस्या करी. तपस्याके करणसे पांगलापणोका रोग मिटा. तब तपस्या पूर्ण जयां पीठै तेरे मंदिर बनवाया, १३ स्तनमई, १३ स्तनमई, १३ रूपेमई प्रतिमा स्थापन करी. १३ वेर संवसमेत तीर्थोंकी यात्रा करी. तेरे वेर साधर्मो वात्सल्य किया, बहोत तेरेसे ज्ञान ज्ञक्ति करी, अंतमें महसेनकुमरकों राज्य देकै श्रीसुव्रताचार्यजीके पास दीक्षा ग्रहण करी, अनुक्रममें चवदे पूर्वकों पढके सर्व कर्मोंका क्षय करके अनंतसुखकों प्राप्त जया. जो जन्मजिव इत पर्वकों विधी संयुक्त सेवन करेगा सो इस जव नर पर जवमें अनेक सुखकों प्राप्त होगा. इति माघ मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ फाल्गुणमास मध्ये पर्वाधिकारः लिख्यते ॥

॥ फाल्गुणमहानेमें मित्ती फाल्गुन सुद १४, सोतीसरे चोमासेकी चौदश नामसे पर्व प्रसिद्ध हे । इस दिनको सर्व कर्तव्य आपाठचोमासे तुल्य करै, सो पहली लिखा हे ॥
अब इहां विशेष होलीका अधिकार लिखते हैं ॥ ॥ श्रमणजगवंत श्रीमहावीरस्वामी वारे महीनोंमें ६ वने पर्व कहा हे. ३ तीन चोमासे, १ नली, १ पर्यूपण. जिसमें नली २ का नर पर्यूपण का एवं ३ अठाईका महोद्यव तो प्राये सर्वत्र होता हे. जितमेंजी जेसा बीकानेरमें खरतर गछवालोका पोधा अर्थात् पुस्तकका उद्यव हाथीके होदे वने आमंवरसे होता हे वा वरघोमा पुस्तकका मुंढा इमें जी होता हे. लेकिन हस्त्यारूढ नही. नर कार्तिक महोद्यव अन्यत्र जी बहोत जगे होता हे लेकिन कलकत्ते जेसा महोद्यव स्वमतमें तथा परमतमें कहाइ जी नारतवर्षमें हमने देखा नही. दक्षिणमें मलेबार तक हम गये, पूरबमें दिल्ली लखनेउ थागरा कासी पटना तक में नही देखा. उगणीसें वावनके वर्षमें हमने यह उद्यव कलकत्तेमें देखा था, नर फाल्गुणमहोद्यव मकमूदावादका बहोत अछा होता

हे, जगणीससँ सुमतालीसमें देखा था, उसरी जगे नही कहाँ ज्ञी देखा, लेकिन किसीज्ञी धर्ममहोच्चममें आज्ञा विरुद्ध जो काम होय सो अज्ञा नही. एक तो जगवंतके समवसरणके संग आजकलके ज्ञाग्यवानलोक धूपके मरसँ रेतीके मरसँ आप तो ज.ते नही फक-त बेसमऊ अदम्योंको जेजदेतेहें, वो लोक कूदते नाचते ज्ञागते समवसरणकों उछालादेते लेजातेहें उसमें कितनी आसतना होती हे, कितना कर्म बंधताहे, उसकूं सम्पत्तीजीव विचारके आप विवेक विनय संयुक्त शुद्धज्ञावसँ धर्मकाममें उद्योग करतेहें उनका दोनुं जव सफल हे. वोही महोच्चव लायकतारीफके हे इस वास्ते आ-त्मार्थी धर्मज्ञ पुरुष हे सो शैलका चोमासापर्वज्ञाणके सर्व जगें जगवंतके धर्मका उद्योत करतेजये शुजध्यानरूप अग्निसें अष्ट कर्म-रूपी काष्ठको जलाके होली करते हैं, पीवै सुबोधजलसँ स्नान क-रके अत्यंत सुंदरताकूं प्राप्त होते हैं. अब यह होलीपर्व दो प्रकारसें हैं. इवें तर जावै, सो प्रथम इव्य होलीका अधिकार लिखते हैं ॥

॥ इस फाटगुनमहीनेमें चौदश पूर्णमाशी के दिन केइयक अज्ञा-नीजीव विवेकविकल जयेयके नीचजातिके परंपराको प्राप्त जये थके लक्ष्म ठाणे जलायके द्रव्यमई होलिका करते हैं, उत्तम चोमा-सा धर्मपर्वका विराधना करते हैं. दूसरे दिन मलमूत्र रेतीसँ क्रीडा करते हैं, खोटे वचन बोलते हैं, गधे पर चढ़ते हे, अनेक जीवोंकों दुःख देते हैं, ऐसे जीव बीतरागकी आज्ञा ठेरुके ज्ञान जरमोंकी कुत्रमर्याद करते हैं, मिष्टान्न त्याग विष्टा खाते हैं, दूध ठेरु पेसाव पीते हैं. ऐसे पुरुष निकेवल कर्मका सघन बंधन करके दुर्गतिकों उपार्जन करते हैं, अनर्थदंरुसँ अनंत जव संसारको स्थिती बांधते हैं. इसवास्ते आत्मार्थी जव्यजीवोंकों ज्ञावहोली करणा चाहियै, सो इस मुजब-अनुके गुणग्राम वसंतके स्तवन धोवै, रात्रीजागर-

ए करावै, मंदिरोंमें पूजा करावै, महोच्चव निकाले, नानाप्रकारका नाटिक करै, साहमीवच्चल करै, साधर्मिजाई आपसमें नाना-तरेकी क्रीडा करै ॥ आगे राजालोक जी वसंतरुतु आणेसें मदन महोच्चव करणेंकों जाते थे, नानातरेके जल चंदन केसर अवीर गु-लालसे सहरके लोक वगीचोंमें क्रीडा करते थे, इत्यादि लेख तो शास्त्रोंमें बहोत जगे बांचणेमें आया हे, लेकिन मलमूत्र राख धूम्रतें खेलणा, होली जलाणा, पादत्राण खाणा, जंम चेष्टा करणी, कुल मर्याद ठोमणा, वनेरोकी लज्या ठोमणी, ऐसा कृत्य उत्तम पुरु-षोंके करणे लायक नहीं. यह क्रीडा वाममार्गीयोकी चलाइ जई हे. इसकों प्रवृत्त जयें प्राये दो हज़ार वर्ष करीब जया. पीठै स्वामी शंकराचार्यकूं यह बात सम्मत जई तबसें धीरे-धीरे अज्ञानी जीव ए-ककी देखादेख बहोत लोक करणे लगगये, लेकिन ऐसी कर्तव्यता किसी जी शास्त्रमें नहीं देखणेमें आई. देखो केसी आश्चर्यकी बात हे, जब मंदिरजीमें पूजादिक महोच्चवका काम होता हे उस वख-त तो जाणें को फुरसत नही मिलती हे, उर होलीके दिनोंमें मा-तापिता जाई बहिन सखोंकी लज्या ठोमके बहोत दिलमें खुतब-खती मानताजया पागलके माफक जानोंकी तरे वकते फिरता हे. कोइ बैस्याउका नाच होता होय उहां तो हज़ारुं रुपये खरच कर देतेहे. मनमें फूलते हैं हमने वना नाम किया. तख नजरसे देखे उर विचारे तो नाम क्या निकला, बलके अशुजगतीके पाये पूरे-मजबूत बंध करणेंमें आये. ऐसी लज्जाठोमके जिनमंदिरका महो-च्चव करो, रात्रीजागरण, नाटकादिक धर्मका उद्योत करो, ऐसी होली खेलो सो तुमारा दोनोंही जन्म सुधरे. यह द्रव्ये उर जावे होलीका स्वरूप बांचके आत्मार्थी धर्मज्ञ पुरुष तो प्रसन्न होयेंगे, उर जो मद्दामूर्ख अज्ञानीजीव होंगे सो तो रोय धारण करेंगे उर

सच्ची वातकू कुयुक्तियोंसे जूठी गहरावेंगे, नर मध्यस्थ विचारवंत तो
 ऐसा कहेंगे यह वात सच है. किसका पर्व किसका खेल, निकेवल
 इसमें अनर्थ दम लगता है, लेकिन दम इकेला क्या करें, जाइबं-
 धोंको ऐसा करते देख हमजी करते हैं, हमसे रहा जाता नही.
 परंतु यह प्रथा बंध हो जाय तो अच्छा है. इस वास्ते हे जव्यजो-
 वो इसमें समुदायी कर्म बंधता है. ठोमे सो धन्य है. नरकके जाते
 का संग नही करणा. जेसे सरकारकी एनके जाणकार चोरो
 करणेवालेका तथा खूनी केदीकी संगत नर वात तक नही करते
 उस मुजब एकका अनर्थ खेल देख डुतरेको बचना चाहिये.
 काम वो करणा जिसमें दोनों जवमें लाज होय. इस इय्यहोलीके
 खेलमें बनीर लम्बाइयां होजाती है. मेरुता सहर हाजीके ख्या-
 लसे पुष्करणे नर जोजकोकी लम्बाइमें तमाम उजारु होगया.
 नर परजवमें अरगैर बोलणेके फल सब धर्मोंमें बुरा लिखा है.
 इस वावत जो जो कठोर लबज लिखा है उसकूं वांच विवेकी मेरे
 पर गुस्ता नही लावेंगे. जो कुठ लिखा है सो पूर्वाचार्योंके वचना-
 नुसार लिखा है. हितोपदेश समजके ठोरणेका प्रयत्न करेंगे. मेरे
 तो नवकारमंत्रके अरुसठ अक्षर शुद्ध गुणनेवाले धर्मबंधु है. जिं-
 समें जी सर्व जीवायोनिसे मित्रता है. कम या ज्यादा जो कुठ
 अपशब्द लिखा होय तो मित्रामिडुकरं ॥१॥ इति फा० ॥ प० ॥

॥ अथ भावहोरी खेलनेके स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग धमाज ॥ दोरी खेलीये नर बहुरन एसो दाव
 ॥ हो० ॥ दयामिगई अति जली रे, तप मेवा पकवान ॥ सील अ-
 धारो अति जलो, वारी संजम नागरपान ॥ हो० १॥ लेस्या मां-
 दल जाव रुफ रे, क्रोध मान दोय ताल ॥ पांच सुमतिकों अरगजो, वारी
 नवतत्व लेहुं गुलाल ॥ हो० २॥ सुमताकेसर घोलिये रे, दमवाको

ठिमकाव ॥ ग्यान पिचरको पकरकै, वारी मुगतिवधू चित लाव ॥
 हो० ३ ॥ एसा साज वणायकै रे, रूपनदेव गुण गाय ॥ श्रीजि-
 नचंद्र इम खेलतां, वारी जव२ पातिक जाय ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत होरी तालयत् ॥ जय बोलो रे पास जिन-
 सरकी, ज० ॥ मस्तक मुगट सोहे मनमोहन, अंगिया सोहे केस-
 रकी ॥ ज० १ ॥ त्रिजुवन ज्योति अखंरित तनकी, स्वामयदा
 जैसी जलधरकी ॥ ज० २ ॥ बालपणे प्रभु अदभुत ज्ञानी, कलशा
 कीधी विषधरकी ॥ ज० ३ ॥ कमठ उमाय वाय ज्युं बादल, जीत
 करी अपणे धरकी ॥ ज० ४ ॥ मातवामा उदरे जिन जाया,
 राणी अश्वसेन नरेशरकी ॥ ज० ५ ॥ अष्ट करमदल सबल खपा-
 ये, श्रेणि चढ्या जे शिवपुरकी ॥ ज० ६ ॥ कहै जिनचंद्र मेरे प्रभु
 पारस, जैसी छाया सुरतरुकी ॥ ज० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ मधुवनमें जाय मची होरी, म० ॥ ग्यात
 गुलाल अवीर उमावो, सुमताकेसर रंग घोरी ॥ म० १ ॥ अमृत
 रूप धरम जिनवरको, शुध कमा कहै करजोरी ॥ म० २ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ यादव मन मेरो हर लियो रे, या० ॥
 संजमदूती कान लगी जव, शिवनारी पर चित दियो रे ॥ या० २ ॥
 मोह बोन गिरनार सिधाए, नव जव नेह अलग कियो रे ॥ या०
 ३ ॥ तुम हो तीन जुवनके साहिव, सुरनर कहै तुमे चिरंजीयो
 रे ॥ या० ॥ ४ ॥ वार१ मेरी वंदना होयज्यो, चंद कहै मन
 हरखियो रे ॥ या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ इक सुण लै नाथ अरज मेरी, इ० ॥
 इह संसार गहर तरु सिंधु, जमर पस्त जिहां जव फेरी ॥ इ० १ ॥
 क्रोधादिक बहु मगरमंछ दे, अहत जंतु न करत देरी ॥ इ० २ ॥
 ऐसे जलधिसे पार करो तो, तारण तरण विरुद तेरी ॥ इ० ३ ॥

धरमजिनेसर जगपरमेसर, दूर करो दुखकी वेर
 क्षमागुण दायक लायक, अनुपमकीरत जग ॥

॥ पुनः होरी ॥ सांवरो सुखदाई, जाकी ठिव

सां० ॥ श्री॥ अश्वसेन वामा नंदकी, कीरत त्रिजुवन गई ।
 तसिखरगिरि मंमथ प्रज्जुको, देख बरस हरखाई—हृदय मेरो
 हुलसाई ॥ सां० १ ॥ आज हमारे सुरतठ प्रगठ्यो, आज आनं
 ई ॥ तीन जुवनको नायक निरख्यो, प्रगटी पूर्व पुन्याई—
 मेरो जनम कहाई ॥ सां० २ ॥ प्रज्जुके बरस सरस विन पां
 वश जटक्यो में जाई ॥ अब प्रज्जु चरण सरण चित चाहत,
 कहै गुण गाई ॥ प्र० सां ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ नेना हरखाई, आज तेरी सूरत
 खी ॥ ने० ॥ जव२ संचित पाप करम सब, देखत दूर पुला
 मति वधारण कुमति विमारण, ज्ञान विमल उजसाई ॥ आ
 ॥ वामानंदन अति ठबि सुंदर, महिमा बरणी न जाई ॥ ई
 याल दयाकर बीजै, आनंद हरख सवाई ॥ आ० २ ॥ इति प

॥ राग काफीमें होरी ॥ एतैं फागुण मस्त मही
 खोरी, देखो स्याम सखी मोपै होरी ॥ एतैं० ॥ ब्रजकी सखी
 बन२ निकसी, खेजत मिल२ होरी ॥ नारे गुलाल अवीरमुञ्जोर,
 ने प्रीतम रंगरोरी ॥ च० ए० १ ॥ फूलत फूल सजी बन
 मधुर२ रस जोरी ॥ कलि कोयल कल करत भरत विन, प्रियत
 गौरी ॥ च० ए० २ ॥ रस अनरस रात रसे रस, सरस द
 प्रज्जु मोरी ॥ प्र० १ तजी सुमता ममता मन, बाल कहै कर जोर
 च० ए० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफी होरी ॥ नेम स्यामसें कहियो मोरी, ने
 नमुञ्जिजै शिवादेवीको नंदन, यादवकुल उदयो री ॥ तेजपूज त

विम्वलो रूमो, कित गयो मो चित चोरी—अरज नहीं लीनी मोरी
 हो ॥ ने० १ ॥ व्याहन आए मेरे मन जाए, लाये बल दल जोरी ॥
 तोरणसें रथ फेर चले हो, चढ गए गिरकी ठरी—मदन महा रिपु
 तोरी ॥ ने० २ ॥ व्याकुल जईहुं बरस विन देखे, रहि है मुख
 कुं मोरी ॥ कमलनयन राजमतीसखियनसें, विनती करै करजाते
 लगी है मुक्तिकी मोरी ॥ ने० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ होरी खेलो रे जविक मन धिर करकै, हो
 ॥ सुमति सुरंग गुलाल मंगावो, अवीर उमावो जोली जरश
 हो ॥ ग्यान ध्यान रुफ ताल बजावो, गुण गावो प्रजु हित
 हो ॥ हो० २ ॥ अनुभव अतर फूलेल मंगावो, वास दिसोदिस म
 हकै ॥ हो० ३ ॥ क्रोध मान रज धूम उमावो, ज्युं तेरा पाप र
 ल थरकै ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ होरीके खेलईया, तूं तो प्रजु नज वि
 ष न कर रे ॥ हो० १ ॥ विजय संजारी जर पिचकारी, हारे
 तो शिवरामा वर वर रे ॥ हो० २ ॥ आगम लाल गुलाल
 जोरी, हारे तूं तो खेल वसंत धर रे ॥ हो० ३ ॥ सीख सु
 आज्ञापण अंगै, हारे तूं तो जावना वाग पहर रे ॥ हो० ४ ॥ न
 रंजन प्रजुना गुण गावो, हारे तूं तो आतम अनुभव वर रे
 हो० ५ ॥ ग्यान विज्ञान फूली फुलवारी, हारे तूं तो गूंजत म
 मधुकर रे ॥ हो० ६ ॥ वामानंदन पास जिनेसर, हारे तूं तो ज
 गनायक जगगुरु रे ॥ हो० ७ ॥ श्रोजिनलाज कहै प्रजु सी
 हारे तूं तो अनुपम जव निसतर रे ॥ हो० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ वाकै ममतानें धूम मचाई, आज सुमतासं
 खेलेंगे होरी ॥ वा० ॥ जिन शासन वतरंग महिलमें, दीपक बोध बताई
 ॥ आ० वा० १ ॥ सरधासखी कमा मृडना मिल, श्रजुता मुक्ति सुहाई ॥

उर अनेक सुमति सखी ब्रजमें, अनुभव रंग रंगाई ॥ आ० वा० १ ॥
 जाव सौच तप दान शील सब, निज गुण बंधु सदाई ॥ जिन गुण
 गान संगीत निरत धुनि, जक्ति जिणंद वढाई ॥ आ० वा० ३ ॥
 खेलत संजम फाग मिलै सब, बाल आणंद बधाई ॥ अब कुमता
 संग रंग करे तो, मेरे चित न सुदाई ॥ आ० वा० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ समकित विन जीव जगत जटक्यो, स० ॥ चररा
 सी जव जमतां२, नरजव पायो सो दित खटक्यो ॥ स० १ ॥ गर
 जावात नव मासे नीकौ, ओऊही संगत तूं लटक्यो ॥ स० २ ॥
 पुन्य संजोग मिढ्यौ कुल आवरु, ग्यान प्रकाश जयो घटको ॥
 स० ३ ॥ विषय विकार रम्यो तरुणी संग, मायासे तेरो मन अट
 क्यो ॥ स० ४ ॥ सुरत संजाल तूं जाग रे मानवी, सूधो शिवपु
 रकुं सटको ॥ स० ५ ॥ रूपचंद कहे प्रभु गुण गावौ, स्वर्गपुरीमें
 नहि अटको ॥ स० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ विसरे मत नाम प्रभूजीको, वि० ॥ प्रभुजीको ना
 म चिंतामणि सरिखो, निरनल नीर सदा निको ॥ वि० १ ॥ ना-
 ज कुमार मरुदेवीको नंदन, तीन जुवन तिर दे टीको ॥ वि० २
 ॥ चतुर कुशल चित खोलसुं राख्यो, कुण लदै रंग पतंग फीको
 वि० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ नेम निरंजन ध्यावो रे, वनमें तप कीनो ॥ ने० ॥
 बहुत इठासुं व्याह रचायो, जीव देख दयाआणी रे ॥ व० ने० १ ॥
 सब यादव मिल व्याह रचायो, पदिर जराव जरीनो रे ॥ व० ने०
 २ ॥ कंकण मुगट हाथसुं तोमे, पसुवन पर चित दीनो रे ॥ व०
 ने० ३ ॥ जनघरभूषण कहे जविजननें, सहु जगमें जस लीनो रे
 व० ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः फाग ॥ गढ गिरनारकी तलहटी, फाग खेले खेले ने-

मकुमार ॥ ग० ॥ इक दिशि सायर जल जर्यौ, दिशि दूजी गिर
 वर गिरनार ॥ विच सहसावन सोजतो, तिण माहे खेले नेमकु
 मार ॥ ग० १ ॥ फूड्या केवमा केतकी, विच फूड्या मरुआमचकुंद
 ॥ वासै सोगरा मालती, तिण माहै खेले नेमजिणंद ॥ ग० २ ॥
 आंवा मोर्या वागमें, तिण ऊपर कोयल करे टहुकार ॥ वाजै
 पवन दक्षिणतणी, स्यामजमरा कर रह्या रे गुंजार ॥ ग० ३ ॥ आं
 व पके नींबू पके, नारंगी पके तूत अनार ॥ काचै नेमकुमार अनं
 नही, नारी ऊपर जसु प्यार ॥ ग० ४ ॥ हरि हलधर गोपि मिर्ल
 विच घेरयो श्रीनेमकुमार ॥ सोवन सीसी जलजरी, मुख ऊपर ठ
 टे चडुनार ॥ ग० ५ ॥ नेम हठी हठ ना तजै, समजायो जोरें प
 डुनाथ ॥ रिद्धहरप वाचक कहै, वात सांजलो शिवादेवी मात ॥ ग० ॥

॥ पुनः होरी ॥ धन राजुल तेरो जाग री, नेमनाथ ॥
 पायो री सजनी ॥ ध० ॥ पहिली में पूजू रूपज्जिणंदा, जिण
 सोहि दियो सुहाग री ॥ ने० १ ॥ सोनेको ठत्र धरयो सिर ऊपर,
 गल सोतियनकी माल री ॥ ने० २ ॥ चंपा चंपेली दोनुं मरुआ,
 फूल चढाव गुलाब री ॥ ने० ३ ॥ धूप दीप नैवद्य आरती, मुख
 बोलो जयकार री ॥ ने० ४ ॥ ग्यानमंदिरकी एहि धीनती, जव
 दीज्यो दीवार री ॥ ने० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ ऐसी होरी तो हो रही चंशानगरमें, फा
 गणके दिन आये ॥ ऐ० ॥ वासुपूजजीके नवल मंरुपमें, होय रही
 हो सुखदाए ॥ ऐ० १ ॥ केसर घोरी जरिय कचोरी, प्रभुजीके श्रं
 गियां रचाए ॥ ऐ० २ ॥ चोवा चंदन अवर अरगजा, लाल गुलाब
 उड़ाए ॥ ऐ० ३ ॥ विविध जांतिकी पूजा रचाए, रत्नसुंदर चित
 लाए ॥ ऐ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ बलिहारी हुं विमलाचल गिरकी, ध० ॥

निशिम् झुरित ज़र शिखर जि झुरकी, ज़वसागर तारण तरकी ॥
 व० १ ॥ तीन जुवन तीरथ तारागण, सोजा लहिय निशाकरकी
 ॥ व० ॥ सुंदर अनुपम अतिसय करिकै, महिमा जीती सुरगिरकी
 ॥ व० २ ॥ परमात्म पद प्रतिविंब तनको, बंठित पूरण सुरतरु-
 की ॥ व० ॥ घर सोरठ मंमल मंमनही, सकल करम रज जल-
 धरकी ॥ व० ॥ बलि बलिहारी वारंवारी, श्रीनाम्नेय जिनैसर-
 की ॥ व० ३ ॥ ए गिरि उदयाचल परि जिनकी, डुनि दीपै जेम
 दिनेसरकी ॥ व० ॥ असरण सरण प्रथम जिनवरकी, अगणित क-
 रुणासागरकी ॥ व० ४ ॥ युंगलापरम निवारण की सह, तीन जु-
 वन जनहितकरकी ॥ व० ॥ सोवन वरण सरीर विराजित, वृषज
 लंघन सोजाधरकी ॥ व० ५ ॥ सुंदर प्रजुकी मोहनमूरति, देखत
 परमानंद जरकी ॥ व० ॥ केवलकमला प्रजुकी निरंतर, पदतल
 नमत सुरासुरकी ॥ व० ॥ वरण सरण होयजो शिवचंदकै, जव
 एहिज जिनवरकी ॥ व० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ ऐतै प्रजु नेमनाथ, भेरे दिल बसिया ॥ ऐ० ॥
 त्रिगढ़में विराजमान, डुंडुजि सुणत कान ॥ अपठर मिल करत
 गान, तान मान रसिया ॥ ऐ० १ ॥ सिंघासन विराजै साम, जीत
 लिए रूप काम ॥ देख्या दिल हर्ष धाम, स्वाम नाम बसिया ॥
 ऐ० २ ॥ तीन ठग चमर सार, पंच वर्ष पुष्प धार ॥ गहिर अ-
 सोक सार, जामंरुल हसिया ॥ ऐ० ३ ॥ दिग्यधुनी मिली चंग,
 द्वादश बसाएँ अंग ॥ अष्ट प्रतीहार संग, कुसल चित्त बसिया ॥ ऐ० ४ ॥
 ॥ रागवसंत ॥ संजवजिन सुखकारी, हो लाला, सं० ॥
 हारे हो रे लाला ॥ सं० ॥ एक अरज अवधारो हमारी हो लाला
 ॥ सं० ॥ बाता तीन जुवनके जगगुरु, दाता विरुद विचारी ॥ साता
 दीजै सादिव मोकूँ, तक आयो सरण तिहारी हो लाला ॥ सं० १ ॥

सेनामात उयर अवतारी, जयवंत तात जितारी ॥ प्रभु पदकज
 लंठन अधिकारी, अश्वरतन अनुहारी हो लाखा ॥ सं० २ ॥ साठ
 भूख लख आयु अवगाहन, बनूप चवारसे धारी ॥ सोवन वरण
 सेवे डुरितारी, सावन्नी नगरी सारी हो लाखा ॥ सं० ३ ॥ समेत
 सिखर पर मुगत सिधाए, सदस साधु परिवारी ॥ इंद्रादिक भिव
 मंगल गावत, नाचत नाग कुमारी हो लाखा ॥ सं० ४ ॥ त्रिकरण
 सुदसें त्रिभुवन पतिकुं, वंदना होण्यो हमारी ॥ चरणकमल सेवा
 चित चाहत, सुगुण सदा हितकारी होलाखा ॥ सं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत होरी ॥ सारे सोरठ देस दिखावो रतिया,
 सा० ॥ सोरठ देसमें नोकै दोय तीरथ, गढगिरनार सैत्रुंजगिरिया ॥
 सा० १ ॥ रेवतगिर पर जडुपति केरा, दिखवा ग्यानकेवल रति
 या ॥ सा० २ ॥ राजुलनारी नेमोसर हाथै, संजम लेइ जवोदधि
 तरिया ॥ सा० ३ ॥ सैत्रुंजगिर पर श्रीरिसदेसर, पूरव निनापुं
 समोसरिया ॥ सा० ४ ॥ इहां अणगार अनंत अपारा, अणसण कर
 सिवपुर वरिया ॥ सा० ५ ॥ नाजनंदनकूं करुं जुहारा,
 सा० ६ ॥ हीण अमारने होत लगारा, ज्ञानविमल प्रभु सिर धरिया
 ॥ सा० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ जिनराज जुहारो, क्या बैठे जय हारो रे ॥
 जि० ॥ रथ पाउधारे चंदाप्रभुजी, नयणे आय निहारो ॥ शुचि त
 न कर हियरा हरख जरे, प्रभु पूजो प्राण पियारो ॥ जि० क्या०
 १ ॥ पूरण पुन्य उदयथी पायो, नरजव सफल जमारो ॥ जवि
 जन मन जमरा रंग जरे, प्रभु चरणकमल चित धारो ॥ जि० २ ॥
 जवडुख जंजन नाथ निरंजन, नाम लीये निसतारो ॥ ममता तज सम
 ता संग जेली, निज आतम काज सुधारो ॥ जि० ३ ॥ आज नगरमें
 वधाई, घरइ मंगलाचारो ॥ रथ मद्दोछव रचना रची हव, मुख

जय२ सबद उचारो ॥ जि० ४ ॥ पतित उधारण विरुद्ध विचारी;
सेवक सुगुण संजारो ॥ प्रभु पंकजकी हिव सरणा ग्रही, जवसा
घर पार उतारो ॥ जि० क्या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मनमोहन गज गतकी गामनी, आज चली
गिरनार कामनी ॥ मन० ॥ सुंदर रूप वणाय सखी सब, शिखर
सैल जेसैं चमके दामनी ॥ आ० १ ॥ नेमप्रभुको व्याह मनायो;
मोसैं प्रीत लगाइ नामनी ॥ आ० ॥ तौरण आय चले मोहि ठोनी,
कोन चूक भोपै काढी जामनी ॥ आ० ॥ २ ॥ में न तजुंगी
नव जव केरी, प्रात वणी जेसी इंडु यामिनी ॥ आ० ॥ रा-
जुल पदली प्रीतमसेती, बाख कहै जई मुमति गामिनी ॥ आ०
म० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ रंग लम्पो गुरु ज्ञान, होरी चेतन खेल ॥
रं० ॥ शील सुरंगी चीर मंगाये, पहिरे आप सुजान ॥ हो० रं० १ ॥
पर मंदिर तज अविचल लीजै, धर्म दया धर ध्यान ॥ हो० रं० २ ॥
दिल मिल आप परम रस चाखै, सुमत सखी पहिचान ॥ हो०
रं० ३ ॥ ज्ञान गुलाल लाल रंग लागै, सोदै अदभुत वान ॥ हो०
रं० ४ ॥ सुमति अधीर उदाय जगतमै, बैठे शिवपुर ध्यान ॥ हो०
रं० ५ ॥ अनुभव राग भगन गुण गावै, तप जप सुंदर ध्यान ॥
हो० रं० ६ ॥ ऐसा खेल जविकजन भारै, बंजित पावैदान ॥ हो०
रं० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिदानंद खेले फाग, हो हो होरी आई ॥
मनमृदंग बजै तन मांदी, गावत आगम राग ॥ हो० १ ॥ ज्ञान
गुलाल सदा रंग लागै, खेलत सुमत सुदाग ॥ हो० ॥ समकित
केसर चीर रंगाऊ, पहिरो मनवैराग ॥ हो० २ ॥ लाख चोरासी रा-
मत वांसी, च्यारु गतिसैं जाग ॥ हो० ॥ अविचल सुख पंचमगति

पावै, योग जतन कर जाग ॥ हो० ३ ॥ ऐसा खेल जविकजंन
धारै, पावै जवजल थाग ॥ हो० ॥ चेतनता सुख होय जगतमें,
समकितके रंग लाग ॥ हो० ४ ॥ इति पदम् ॥

पुनः होरी ॥ होरी खेलो नेमसैं धाय२, डुरजनकी लाज
मेरी करे रे बलाय ॥ हो० ॥ ज्ञानगुलांज अवीर उमावो, कृपा
करो रंग लाय २ ॥ डु० हो० १ ॥ शील संजमव्रत पान मिठाई,
ध्यान धरुंगी में गाय गाय२ ॥ डु० हो० ॥ अष्ट कर्मकी खेद
उमावो, ज्ञान हियामें लाय २ ॥ डु० हो० ३ ॥ जगतचंदकी अ-
रज वीनती, सरण गद्दी में तेरी जाय२ ॥ डु० हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मेरी घटकी गागरिया रंगसे जरी, शिवपुरकी
वात पूवूं कवकी खरी ॥ मे० ॥ परमजोत प्रभु सिद्धशिला पर,
परमात्म निज ध्यान धरी ॥ मे० १ ॥ मोहन रंग जस्यो रंग शी-
वपुर, अजर अमर पद सुख करी ॥ मे० २ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ धावो रूपज वेवै अलवेसर, मारो गुलाब
मुठी जरके ॥ बावो० ॥ मुठी जरके पसली जरके, बावो० ॥ चू-
आ२ चंदन उर अजरजा, केसरका मटका जरके ॥ बावो० १ ॥
रतनजमित शिर उत्र विराजै, अंगी जमाव जमी जरके ॥ बावो०
२ ॥ बाँदै बाजूबंध बहिरखा विराजै, फूलनके गजरे सरके ॥ बा०
३ ॥ नाजिराया मरुदेवीको नंदन, रमिये जवि आदीसरसैं ॥ बा०
४ ॥ आदिखान हे दास तुमारो, तार लीयो अपणे करके ॥ बावो० ५ ॥

॥ पुनः होरी राग टण्डो ॥ गिरिराजकुं हमारी वंदना रे,
जिनराजकुं हमारी वंदना रे ॥ जवःडुख वारण शिवमुख कारण,
देवत जवनही फंदना रे ॥ जि० १ ॥ नाजिराय मरुदेवीको नंद-
न, प्रणमूं रूपज जिनंदना रे ॥ जि० २ ॥ निशि वासर प्रभु ध्यान
तुमारो, जिम घातक दिल चंदना रे ॥ जि० ३ ॥ चतुर कुशल करै

शरण तुमारो, सिद्धगिरि कर्म निकंदना रे ॥ गि० ४॥ इति पदं ॥
 ॥ पुनः होरी ॥ दर्शन कीयो आज शिखरगिरिको, द० ॥
 देख्यो मधुवन शीतानालो, नीर बहे वै अति नीको ॥ द० १ ॥ बी-
 स कोसथा दरसन दीगो, जागो जरम सकल जियको ॥ द० २ ॥
 बीसे टूके बीस गोमटनी, तामे चरण जिनेसरको ॥ द० ३ ॥ अत्र
 जिनवरके शरणे आयो, रसतो पावो मुगतिपदको ॥ द० ४ ॥ ५०
 ॥ पुनः होरी ॥ सिद्धगिरिजीको दरसन करलै, संघयात्रा-सं-
 घयात्रा करणसैं पाष कटत हे, सिद्ध० ॥ कोटि अनंता इण गिरि
 सीधा, ताकूं शीत नमाय ले ॥ संघ० १ ॥ रूपज जिनेश्वरजीको
 दरशन, शुद्ध आतम पावन करलै ॥ संघ० २ ॥ रूपचंद कदै
 नाथ निरंजन, जवश्का डुख हरलै ॥ संघ० ॥ इति पदं ॥
 ॥ पुनः होरी ॥ मोहे अपने रंगमें रंगदे, मेरे साहिब आदि
 जिनंद चंद ॥ मोहे० ॥ रंग तूही रंग रे ज तूही है, संजम रंग
 मोहि रंगदै ॥ मेरे सा० मो० १ ॥ रंग मिछ्यात लग्यो हे अना-
 दिको, सो अब इनकूं खिनदै ॥ मेरे सा० मो० २ ॥ रत्नत्रयी रु-
 खि तेरी में देखी, सो अब मुजकुं सज्जदे ॥ मेरे सा० मो० ३ ॥
 ज्ञान दर्शन चारित्र रंग हे, बा विच केवल धरदे ॥ मेरे० मो० ४ ॥
 नूरवास कहे समकित हे, आप समान मोहि करदे ॥ मेरे० मो० ५ ॥
 ॥ पुनः होरी ॥ मेरे पारसप्रजुजीके रंगमंरुपमें, खेलत संत
 वसंत ॥ ज्ञान गुलाल विवेक अरगजा, विनय अवीर विलसंत ॥
 मे० १ ॥ प्रजुगुण प्रेम पिचरकी बूटत, समता सखिय मिलंत
 आगम लहर फूली फुलवामी, मुनिवर अमर गुंजंत ॥ मे० २
 रंग आज्ञापण पंचेंद्रिय वस, गुरुसेवास लहंत, वार जावना ग-
 हर कसूंवा, पीवत मन हरखंत ॥ मे० ३ ॥ अदभूत पंच माहा
 त वागा, पहिरे तन सोहंत ॥ कदै जिनचंद प्रजुकी रूपासैं, जी-

रखे नवल वसंत ॥ मेरे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ रंग मज्यो जिन द्वार चालो खेलिये होरी
 रे० ॥ पास प्रभु दरवार रे ॥ चा० ॥ फागण के दिन च्यार रे, चा
 कनक कचोरी केसर घोरी, पूजो विविध प्रकार रे ॥ चा० १ ॥
 कृष्णागर की धूप घटत है, परिमल मद के अपार रे ॥ चा० २ ॥
 लाल गुलाल अधीर उमावत, पास जी कै दरवार रे ॥ चा० ३ ॥
 जर पिचकारी गुलाब की ठिंको, वामा देवी कुमार रे ॥ चा० ४ ॥
 ताल मृदंग वीण रुफ बाजै, जेरी जुंगल रणकार रे ॥ चा० ५ ॥
 सब सखियन मिल नाटक करै, गावत मंगल सार रे ॥ चा० ६ ॥
 ॥ रत्न सागर प्रभु जावना जावै, मुख बोलै जयकार रे ॥ चा० ७ ॥

॥ पुनः होरी ॥ नेम जी तें कहियो मोरी, सामरे तें कहियो
 मोरी ॥ तोरण आए किण जर माए, ठोरु चलै अजिमा नी ॥ ६
 रे लाला ठो० ॥ पशुवन के शिर दोष चढायो, तोनी प्रीत पुरानी
 दया दिल में नहि आणी ॥ सा० १ ॥ चूक पत्नी तो मुंह तें कहियो,
 ना करिये सोधाणी ॥ आठ जवो की प्रीत बंधाणी, नवमे चले क्युं
 ज्यानी—इयाम तेरी सूरत पिठाणी ॥ सा० २ ॥ या जोरी जुग में
 नेह लागी, राजुल गुलकी वानी ॥ वीनती सुण कै अमर पद बीजै,
 रंग विजय सुख दानी—आवा जर गमन ठिदानी ॥ सा० ३ ॥ ५०॥

॥ पुनः होरी ॥ महाराजा तोरे मंदिर में वरसै रंग, जिन०
 ॥ श्रीचिंतामणि पास जी, तोरे० ॥ ज्ञान गुलाल अधीर अरगजा,
 सुमता चीर सुचंग ॥ श्रीचिं० तोरे० १ ॥ अनुजव लहर फुली कु
 खवासी, दिन २ बढ़ते रंग ॥ श्रीचिं० तोरे० २ ॥ उपशम वागा
 धंग अनोपम, शुद्ध ध्यान के संग ॥ श्रीचिं० तो० ३ ॥ अमरचंद
 चिंतामणि चित धर, तुझसुं अविहर रंग ॥ श्रीचिं० तो० ४ ॥ ५०॥
 ॥ पुनः होरी ॥ तोरी अंगिया वणी दे सुरंग, श्रीचिंतामणि

पास प्रजूजी, तोरी० ॥ सुविवेकी आवक मिल आये, आणी जाव
 अजंग ॥ श्रीचिं० तोरी० १ ॥ ग्रहबंधीकी जांत जली हे, चुंटिया
 नक्षत्र रंग ॥ श्री० ॥ जरकस जामो खूब बन्यो हे, कोर केवना
 संग ॥ श्रीचिं० २ ॥ मस्तक मुगट काने दोय कुंमल, बाजूबंध
 सुबंध ॥ श्रीचिं० ॥ फूलनकी गल माल सोजत है, सौरंग वास
 सुगंध ॥ श्रीचिं० ३ ॥ त्रिजुवन साहब तखत विराजै, महिरवान मनरंग
 ॥ श्रीचिं० ॥ सुरनर याकी सेवा करत है, रात दिवस घर रंग ॥
 श्रीचिं० ॥ ॥ सुनिजर है साहिबकी सब पर, संघ हे सकल सुरंग
 ॥ श्रीचिं० ॥ जावना जावो जिनगुण गावो, अमर पथै नवरंग
 ॥ श्रीचिं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिंतामणि चित ध्यावो रे, वंजित फल पा-
 वो ॥ चिं० ॥ सकल जविक जन मिल कर आवो, राग फाग गुण
 गावो रे ॥ वंजित० १ ॥ अवीर गुलाल लाल संग लावो, जर२ मु-
 गियां उभावो रे ॥ वंजित० चिं० ॥ कुंकुम केसरकुं विनकावो, जा-
 व शुक्ल जल जावो रे ॥ वंजि० चिं० २ ॥ अंगी चंगी पुद्गल व-
 नावो, दीपक ज्योति दीषावो रे ॥ वंजित० चिं० ॥ दरस सरस
 करके सुख पावो, पुण्य जंगार जरावो रे ॥ वंजित० चिं० ३ ॥ वा-
 जित्र बाजाविविध वजावो, नृत्य संगीत नचावो रे ॥ वंजित० चिं०
 ॥ अमरतिंधुर आनंद बचावो, जिनजीर्ण लयलावो रे ॥ वं० चिं० ४ ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत आरो पिचकारी रे, में तो सगरी जीज
 गई ॥ म० ॥ ताल मृदंग वजत मनमांदि, गायत आगम राग ॥
 लाल में तो स० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागे, खेलत सुमति
 सोहाग ॥ लाल में० २ ॥ समकितकेसर चीर रंगानं, पदिरुं मन
 वैराग ॥ लाल में० ३ ॥ लख चोरासी रामत जोगुं, प्यारों गति
 सोहाग ॥ पिपा में तो० ४ ॥ एसा खेल खेले सब प्यारी, शिव-

सुंदरी वर मांग ॥ लाल में ५ ॥ ज्ञानसागर प्रभु विविध प्रकार,
इष्ट विष खेले फाग ॥ पिया में ६ ॥ इति पद ॥

॥ पुनः होरी ॥ नेम मिले तो वातां कीजिये, हो प्यारे जिन-
जी, नेम ० ॥ मे हूं तुमारी खिजमतगारी, प्रेमका प्याला पीजिये ॥
हो ० ने ० १ ॥ हम हे केतकी तुम हो २ जमरा, फिर वासना लीजिये
॥ हो ० ने ० २ ॥ मैं हूं धरती तुम हो मेहला, कबहु तो मिलना
कीजिये ॥ हो ० ने ० ३ ॥ नेम राजुल मिल मुगति सिधाए, रूपचंद पद
दीजिये ॥ हो ० ने ० ४ ॥ इति पद ॥

॥ पुनः होरी ॥ आत्म तत्त्व विचारो ज्ञानसें, करम कटै ज्युं शुद्ध
ध्यानसें ॥ आ ० ॥ पुदगल जीव स्वरूप पिवाण्यो, ममतां मिट
गई सारी जानसें ॥ कर्म क ० आ ० १ ॥ क्रोधादिक अरि अंधकार
सम, नास्त ज्यो सब ज्ञानज्ञानसें ॥ कर्म क ० आ ० २ ॥ परमात्म
पद पावत सोई, विनय जजत पद अचल थानसें ॥ कर्म ० आ ० ३ ॥

॥ पुनः होरी ॥ लाल तेरे नयनोकी गति न्यारी, एतो उपस-
भरसकी क्यारी ॥ लाल ते ० ॥ काम क्रोधादिक दोष रहित हे,
नयन ज्ये अविकारी ॥ निद्रा सुपनदशा नहिं यामें, दर्शनावरण
निवारी ॥ लाल ते ० १ ॥ और नयनमें काम क्रोध हे, पक्षोत
जरी हे खुमारी ॥ पर धन देख हरणकी इच्छा, यामें हे दुष्टिया-
री ॥ लाल ते ० २ ॥ ऐसा लछन हे नयनोंमें, क्युं पामे जय पारी,
योही विचार करो दिल अपने, होत कर्मसें जारी ॥ लाल ते ० ३ ॥
धर्म विना कोई सरणा नही दें, एतो निभे घारी ॥ विनय कहे
प्रभु जजन करो नित, योही तारनदारी ॥ लाल ते ० ४ ॥ इति पद ॥

॥ पुनः होरी ॥ दर्शन विन जीवसंसार ज्यो, द ० ॥ यो-
रासी लख योनिमें जटकत, सहि मानवजव सुंदी ग्यो ॥ द ०
१ ॥ पुन्य उदय आवक कृष्ण पायो, यटमें ज्ञान उद्योत ज्यो ॥ द ०

३॥ माया ममतामें निश दिन तूं, विषय विकारसुं नहिं विरम्यो ॥
 द० ३ ॥ सार विवेक धार रें चेतन, नटकत जवमें क्युं जरम्यो
 ॥ द० ४ ॥ कहत कृमाकल्याण निरंतर, जज जगवंत तेरो पाप
 शम्यो ॥ द० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत मोनो मोने यूंदी रे, कोइ चूक बतावो
 ॥ म० १ ॥ अवीर गुलाब जावसें रमतां, हमसुं कदिय न खेजो रे
 ॥ कोइ० म० १ ॥ रथ फेरी प्रजुजी घर आये, चढिया गढ गिरनारी
 रे ॥ को० म० २ ॥ बहुत इठासुं व्याह मनायो, जीव देख दया
 आणी रे ॥ को० म० ३ ॥ राजुल ऊनी अरज करत हे, एक बार
 फिर जीवो रे ॥ कोइ० म० ४ ॥ नेमराजुल दोनुं मुगत सिधाए,
 पदली राजुल नारी रे ॥ कोइ० म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरो ॥ अटक्यो चित्त हमारो री, जिन चरण कमलमें
 ॥ अट० ॥ शीतलनाथ जिनेसर साहिब, जिनवर प्राण आधारो
 री ॥ जि० अ० १ ॥ माता नंदादेवीको नंदन, दृढरथ नृपको प्या-
 रो री ॥ जि० अ० २ ॥ श्रीवृद्ध लंछन जनम नदिलपुर, कुल
 इक्ष्वाग उदारो री ॥ जि० अ० ३ ॥ नेत्र धनुष शरीर सुतोन्नित,
 कनक वरण अनुकारो री ॥ जि० अ० ४ ॥ एक लक्ष पूरब आयु
 कदिये, नाम त्रिआं निसतारो री ॥ जि० अ० ५ ॥ दीनदयाल जगत
 प्रतिपालक, अब मोहि पार उतारो री ॥ जि० अ० ६ ॥ हरखचंदके
 साहिब सच्चे, हुं तो दास तुमारो री ॥ जि० अ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ मंगल स्तवनं ॥ मंगल राजे गिरनार, नेमपद मंगल है
 देवा ॥ म० ॥ मंगल राजेमती पद मंगल, मंगल रहनेमि धार ॥
 ने० १ ॥ मंगल गणपति मंगल पाठक, सब तपसी विच सार ॥
 ने० २ ॥ मंगल धन धन्नामुनिनायक, मंगल सब अणगर ॥ ने० ३
 ॥ जय२ खेमकुसल गुरु जंप्पे, आनंदधन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति पदं ॥

सुंदरी वर नांग ॥ लाल में० ५ ॥ ज्ञानसागर प्रजु विविध प्रकौते,
इण विध खेले फाग ॥ पिया में० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ नेम मिले तो वातां कीजिये, हो प्यारे जिन-
जी, नेम० ॥ मे हुं तुमारी खिजमतगारी, प्रेमका प्याला पीजिये ॥
हो० ने० १ ॥ हम हे केतकी तुमहो २ जमरा, फिर वासना लीजिये
॥ हो० ने० २ ॥ में हूं धरती तुम हो मेहला, कबहु तो मिलना
कीजिये ॥ हो० ने० ३ ॥ नेम राजुल मिल मुगति सिधाए, रूपचंद पद
दीजिये ॥ हो० ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ आत्म तत्व विचारो ज्ञानसें, करम कटै ज्युं शुद्ध
ध्यानसें ॥ आ० ॥ पुदगल जीव स्वरूप पिठाएयो, ममतां मिट
गई सारी जानसें ॥ कर्म क० आ० १ ॥ क्रोधादिक अरि अंधकार
सम, नास ज्यो सब ज्ञानजानसें ॥ कर्म क० आ० २ ॥ परमात्म
पद पावत सोई, विनय जजत पद अचल थानसें ॥ कर्म० आ० ३ ॥

॥ पुनः होरी ॥ लाल तेरे नयनोकी गति न्यारी, एतो उपस-
मरसकी क्यारी ॥ लाल ते० ॥ काम क्रोधादिक दोष रहित हे,
नयन जये अविकारी ॥ निहा सुपनदशा नहिं यामें, दर्शनावरण
निवारी ॥ लाल ते० १ ॥ ओर नयनमें काम क्रोध हे, बहोत
जरी हे खुमारी ॥ पर धन देख हरणकी इच्छा, यामें हे दुस्तिरा-
री ॥ लाल ते० २ ॥ ऐसा लछन हे नयनोंमें, क्युं पामे जव पारी,
योही विचार करो दिख अपनै, होत कर्मसें जारी ॥ लाल ते० ३ ॥
धर्म विना कोई सरणा नही हें, एसो निभै घारी ॥ विनय कहे
प्रजु जजन करो नित, योही तारनहारी ॥ लाल ते० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ दर्शन विन जीवसंसार जम्प्यो, द० ॥ चो-
ली लख योनिमें जटकत, लहि मानवजव युंही गम्प्यो ॥ द०
॥ पुन्य उदय आवक कुल पायो, यटमें ज्ञान उद्योत जयो ॥ द०

३॥ माया ममतामें निश दिन तूं, विषय विकारसुं नहिं विरम्यो ॥
 ४० ३ ॥ सार विवेक धार रे' चेतन, जटकत जवमें क्युं जरम्यो
 ॥ ४० ४ ॥ कहत कृमाकल्याण निरंतर, जज जगवंत तेरो पाप
 जाम्यो ॥ ४० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत ठोमो मोने यूंदी रे, कोइ चूक वतावो
 ॥ म० १ ॥ अवीर गुलाब जावसें रमतां, हमसुं कदिय न खेखो रे
 ॥ कोइ० म० १ ॥ रथ फेरी प्रज्जुजी घर आये, चढिया गढ गिरनारी
 रे ॥ को० म० २ ॥ बहुत दगासुं व्याह मनायो, जीव देख दया
 आणी रे ॥ को० म० ३ ॥ राजुल ऊनी अरज करत हे, एक बार
 फिर जोवो रे ॥ कोइ० म० ४ ॥ नेमराजुल दोनुं मुगत सिधाए,
 पहली राजुल नारी रे ॥ कोइ० म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ अटक्यो चित्त हमारो री, जिन चरण कमलमें
 ॥ अट० ॥ शीतलनाथ जिनेसर सादिव, जिनवर प्राण आधारो
 री ॥ जि० अ० १ ॥ माता नंदादेवीको नंदन, दृढरथ नृपको प्या-
 रो री ॥ जि० अ० २ ॥ श्रीवृष्ठ लंछन जनम जदिलपुर, कुल
 इक्ष्वाग उदारो री ॥ जि० अ० ३ ॥ नेत्र धनुष शरीर सुतोन्नित,
 कनक वरण अनुकारो री ॥ जि० अ० ४ ॥ एक लक्ष पूरव आयु
 कहिये, नाम लिआं निसतारो री ॥ जि० अ० ५ ॥ दीनदयाल जगत
 प्रतिपालक, अब मोहे पार उतारो री ॥ जि० अ० ६ ॥ दरखचंदके
 सादिव सचे, हुं तो दास तुमारो री ॥ जि० अ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ मंगल स्तवनं ॥ मंगल राजै गिरनार, नेमपद मंगल है
 देवा ॥ म० ॥ मंगल राजेमती पद मंगल, मंगल रहनेमि धार ॥
 ने० १ ॥ मंगल गणपति मंगल पाठक, सब तपसी विच सार ॥
 ने० २ ॥ मंगल धन धन्नामुनिनायक, मंगल सब अणगार ॥ ने० ३
 ॥ जय२ स्वैमकुसल गुरु जंप्पे, आनंदधन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ इम मास द्वादश तप सुसंग्रह विधिप्रपासैं संयही, अति सुगम जाप प्रकाश करता ज्यजन मन गहगही ॥ निधि बाण नंद सुखंद विक्रम माष सुवि पूनम सही, श्रीवृद्धत्वरतर गह पाठक रामगणि विधि इम कही ॥ १ ॥

अथ पंच कल्याणक टिपनिका स्वरूप मुच्यते ॥

॥ जिस महीनेमें जितने दिन जगवंत के कल्याणक के हे सो सर्व ज्यजीवों के सेवन करणे योग्य है, लेकिन कोण तिथिकूं कोणसा कल्याणक सेवन करणा सो जाणे विगर सेवन कर सकते नही (ओर विशेषमें) पंच कल्याणककी तपस्या करनेवाले ज्यजीवों के अवस्य पंचकल्याणककी टीप गुणें विगर काम चलता नही, इस वास्ते गुणने मुजब विधिप्रपासैं पंच कल्याणककी टीप लि-

॥ अथ पंच कल्याणककी टीप लिख्यते ॥

कार्तिककृष्णपक्षे ॥ ५

कार्तिकशुक्लपक्षे ॥ ५ ॥

५ श्रीसंजवनाथजीसर्वज्ञाय०

३ श्रीसुविधनाथजीसर्वज्ञाय०

११ श्रीपद्मप्रभुजीअर्हतेनमः

१२ श्रीअरनाथजीसर्वज्ञायनमः

१२ श्रीनेमनाथजीपरमेष्ठिनेन०

मार्गशीर्षशुक्लपक्षे ॥ ६ ॥

१३ श्रीपद्मप्रभुजीनाथायनमः

१० श्रीअरनाथजीअर्हतेनमः

३० श्रीवर्द्धमानजीपारंगतायन०

१० श्रीअरनाथजीपारंगताय०

मार्गशीर्षकृष्णपक्षे ॥ ४

११ श्रीअरनाथजीनाथायनमः

५ श्रीसुविधनाथजीअर्हतेनमः

११ श्रीमह्विनाथजीअर्हतेनमः

६ श्रीसुविधनाथजीनाथायन०

११ श्रीमह्विनाथजीनाथायनमः

१० श्रीवर्द्धमानजीनाथायनमः

११ श्रीमह्विनाथजीसर्वज्ञायन०

११ श्रीपद्मप्रभुजीपारंगतायनमः

११ श्रीनमिनाथजीसर्वज्ञायन०

पौषकृष्णपक्षे ॥ ५ ॥

१४ श्रीसंजवनाथजीअर्हतेनमः

१० श्रीपार्थनाथजीअर्हतेनमः

१५ श्रीसंजवनाथजीनाथायन०

१ श्रीपार्श्वनाथजीनाथायनमः

२ श्रीचंद्राप्रभुजीअर्हतेनमः

३ श्रीचंद्राप्रभुजीनाथायनमः

४ श्रीशीतलनाथजीसर्वज्ञाय०

माघकृष्णपक्षे ॥ ५ ॥

६ श्रीपद्मप्रभुजीपरमेष्ठिने०

१ श्रीशीतलनाथजीअर्ह०

२ श्रीशीतलनाथजीमा०नमः

३ श्रीरूपप्रदेवजीपारंगता०

० श्रीश्रेयांसजीसर्वज्ञायम०

फाल्गुनकृष्णपक्षे ॥ १० ॥

६ श्रीसुपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय०

७ श्रीसुपार्श्वनाथजीपारंगता०

८ श्रीचंद्राप्रभुजीसर्वज्ञायन०

९ श्रीसुविधनाथजीपरमेष्ठिने०

१० श्रीरूपप्रदेवजीसर्वज्ञायनमः

११ श्रीश्रेयांसजीअर्हतेनमः

१२ श्रीमुनिसुव्रतसर्वज्ञायनमः

१३ श्रीश्रेयांसजीनाथायनमः

१४ श्रीवासुपूज्यजीअर्हतेनमः

१५ श्रीवासुपूज्यजीनाथायनमः

चैत्रकृष्णपक्षे ॥ ५ ॥

१६ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमेष्ठिने०

१७ श्रीपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय०

१८ श्रीचंद्राप्रभुजीपरमेष्ठिने०

पोषशुक्लपक्षे ॥ ५ ॥

६ श्रीविमलनाथजीसर्वज्ञाय०

७ श्रीशान्तिनाथजीसर्वज्ञाय०

११ श्रीअजितनाथजीसर्व०

१४ श्रीअजितनंदनजीसर्वज्ञाय०

१५ श्रीधर्मनाथजीसर्वज्ञाय०

माघशुक्लपक्षे ॥ ७ ॥

२ श्रीअजितनंदनजीअर्ह०

३ श्रीवासुपूज्यजीसर्वज्ञाय०

४ श्रीविमलनाथजीअर्ह०

५ श्रीधर्मनाथजीअर्हतेनमः

६ श्रीविमलनाथजीना०न०

७ श्रीअजितनाथजीअर्ह०

८ श्रीअजितनाथजीनाथा०

११ श्रीअजितनंदनजीनाथा०

१३ श्रीधर्मनाथजीनाथाय०

फाल्गुणशुक्लपक्षे ॥ ५ ॥

२ श्रीअरमाथजीपरमेष्ठिने०

४ श्रीमहिनाथजीपरमेष्ठि०

७ श्रीतंजवनाथजीपरमेष्ठि०

११ श्रीमहिनाथजीपारंग०

१२ श्रीमुनिसुव्रतजीनाथाय०

चैत्रशुक्लपक्षे ॥ ७ ॥

३ श्रीकुंथुनाथजीसर्वज्ञाय०

५ श्रीअजितनाथजीपारंग०

८ श्रीआदिनाथअर्हतेनमः

८ श्रीआदिनाथजीनाथाय०

वैशाखकृष्णपक्षे ॥ ९

१ श्रीकुंथुनाथपारंगतायनमः

२ श्रीशीतलनाथजीपारंगता०

५ श्रीकुंथुनाथजीनाथायनमः

६ श्रीशीतलनाथजीपरमेष्टि०

१० श्रीनमिनाथजीपारंगताय०

१३ श्रीअनंतनाथजोअर्हतेन०

१४ श्रीअनंतनाथजीनाथायन०

१४ श्रीअनंतनाथजीसर्वज्ञा०

१४ श्री कुंथुनाथजीअर्हतेन०

ज्येष्ठकृष्णपक्षे ॥ ८ ॥

८ श्रीमुनिसुव्रतजीअर्हते०

ए श्रीमुनिसुव्रतजीपारंग०

१३ श्रीशांतिनाथजीअर्ह०

१३ श्रीशांतिनाथजीपारंग०

१४ श्रीशांतिनाथजीनाथा०

आषाढकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥

४ श्रीआदिनाथजीपरमे०

७ श्रीविमलनाथजीपार०

ए श्रीनमिनाथजीनाथा०

श्रावणकृष्णपक्षे । ४

३ श्रीश्रेयांसजीपारंग०

७ श्री अनंतनाथजीपर०

५ श्रीसंजवनाथजीपारंग०

५ श्रीअनंतनाथजीपारंग०

ए श्रीमुमतिनाथजीपारंग०

११ श्रीमुमतिनाथजीसर्व०

१३ श्रीवर्द्धमानजीअर्हतेनमः

१५ श्रीपद्मप्रभूजीसर्वज्ञाय०

वैशाखशुक्लपक्षे ८

४ श्रीअजिनंदनजीपरमे०

७ श्रीधर्मनाथजीपरमे०

८ श्रीअजिनंदनजीपारंग०

८ श्रीमुमतिनाथजीअर्हते०

१० श्रीवर्द्धमानजीसर्वज्ञाय०

१२ श्रीविमलनाथजीपारंग०

ज्येष्ठशुक्लपक्षे ॥ ४ ॥

५ श्रीधर्मनाथजीपारंगता०

ए श्रीवासुपूज्वजीपरमेष्टि०

१२ श्रीसुपार्श्वनाथजीअर्ह०

१३ श्रीसुपार्श्वनाथजीनाथा०

आषाढशुक्लपक्षे १

६ श्रीवर्द्धमानजीपरमेष्टि०

८ श्रीनेमनाथजीपारंगता०

१४ श्रीवासुपूज्यजीपारंग०

श्रावणशुक्लपक्षे ५

२ श्रीमुमतिनाथजीपरमे०

५ श्रीनेमनाथजीअर्हते०

- ८ श्रीनमिनाथजीअर्ह० ६ श्रीनेमिनाथजीनाथाय० :
 ९ श्रीकुंभुनाथजीपरमे० ८ श्रीपार्श्वनाथजीपारंग०
 भाद्रपदकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥ १५ श्रीमुनिसुव्रतपरमेष्टि०
 ७ श्रीचंद्रमन्मूजीपारंग० भाद्रपदशुक्लपक्षे १
 ७ श्रीशान्तिनाथजीपरमे० ९ श्रीसुविधनाथजीपारंग०
 ८ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमे० आश्विनशुक्लपक्षे १
 आश्विनकृष्णपक्षे ॥ २ १५ श्रीसुविधिनाथपरमेष्टि०
 ३ श्रीमहावीरजीगर्भाप०
 ० श्रीनेमनाथजीसर्वज्ञा०
 ते श्रीपंचकड्याणक टीप संपूर्ण। गर्भापहार पष्ठमण्यस्ति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक विधि ॥

॥ प्रथम शुभ दिन शुभ घरों गुरुके पास पंच कड्याणक
 ग्रहण करै, उपवास (वा) आंवील एकासणादिकका पञ्चस्काण
 , तीन टंक देवचंदन करै, पन्क्तिमणा करै, जिस दिन जो मा-
 त्रिका कड्याणक होय उसका २००० गुणना करै, उर पहली
 वा जो पंच कड्याणकका स्तवन सो सुनै या पढ़ै, जहां ज-
 रकी कड्याणक जूमि होय उहां धरे मद्दोछवतें संघ समेत
 ॥ करणों जद्वै, उहां विधी संयुक्त सर्व जगवंतोंके पंच क-
 णकका उछव करै, जो शक्ति नहिं होय तो शासनपति श्रीम-
 रस्वामीके पट्ट कड्याणकका उछव करै ॥ अथ २३ जगवंतकी
 तार्य पांच, श्रीवीरप्रज्ञके अपेक्षापें पट्ट कड्याणक संक्षेप उछव
 ॥ लिखते ॥ च्यवन कड्याणककों (परमेष्टिनेनमः) कहियै, इस
 चवदे स्वप्नादिककी पूजा करावके च्यवन कड्याणादिकका
 करै, हीरा चढावै ॥ १ ॥ जन्म कड्याणककूं (अर्हतेनमः)
 ॥ इस दिन जलजात्रादिकका मद्दोछव करके अष्टो-

जगतगुरु जयजंजण जगवंत, निराकार निरंजन निरूपम अत्र
मर अरिहंत ॥ श्रीजिनचंद विनय शिरोमणि सकलचंद गणि स
वाचक समयसुंदर इम पञ्चणै पुरो मनह जगीस ॥ ११ ॥ इति

॥ अथ पखवासा तप विधि लिख्यते ॥

प्रथम शुद्धदिन गुरुके पास तप ग्रहण करके सुद (१)
निवासे पूर्णमासी तक इकसार १५ उपवास करे. जो शक्ति न
होयतो प्रथम सुदि पक्षकी पक्विया १, दूसरे सुदि पक्षकी दूज,
अनुक्रमसे पनरे सुद पक्षमें तपस्या पूर्ण करे. श्रीमुनिसुवतस्वामी
के पांच कल्याणक जावगर्भित स्तवन पढ़े. गुरुका संयोग
तो गुरुके पास सुणै. (श्रीमुनिसुवतस्वामी सर्वज्ञायनमः)
पदका २००० दो हजार गुणना करे. और तप महेश
तथा देवचंदनादिककी विधि पढ़ले लिखी है उस मुजब
जीव सब तपस्याकी विधि करे. विधि संयुक्त करणसे उत्तम
मिलता है ॥ इति पखवासाविधि ॥

॥ अथ दश पंचस्काण स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सिद्धारय नंदन नमूं, महावीर जगवंत ॥ वि
धैग जिनवर, परपद पार मिलंत ॥ १ ॥ गणधर गौतम
समे, पूछे श्रीजिनराय ॥ दस पंचस्काण किता कहा, कीया
फल पाय ॥ २ ॥ (दात्र १ ॥ सीमंथर करज्यो मया ॥ ए. दे
श्रीजिनवर इम उपदिमें, सांजल गोपम ताम ॥ दस पंचस्का
यकां, सदिये अविचल ताम ॥ श्री० ३ ॥ नयकारनी पीती
२, मादयोरसी पुरिमठ ॥ एकामण नीची कही ६, एकसगज
श्री० ४ ॥ दान ८ आंबित ९ उपवास १० टी, एदिज दम
॥ एदना फल मुज गोपमा, नृत्तया करं गगण ॥
॥ रतनप्रता १ महेंद्रप्रता २, बाबुह नीती ज्ञान ॥ ३

५४ तिम धूमप्रज्ञा ५, तमप्रज्ञा ६ तमतम ७ ताम ॥ श्री० ६ ॥
 नरक सात कही ए सही, करम कठिन कर जोर ॥ जोव करम
 वस ते सही, ऊपजै तिणहीज गोर ॥ श्री० ७ ॥ ठेदन जेदन
 तामना, जूख तृपा बलि त्रास, रोमर पीना कैरै, परमाहम्भो
 तास ॥ श्री० ८ ॥ रात दिवस क्षेत्रदेवता, तिव जर नहीं जिहां
 सुख ॥ किया करम जे जोगवै, पामे जीव बहु दुःख ॥ श्री० ९ ॥
 इक दिनरी नवकारसी, जे कैरै जाव विशुद्ध ॥ सो वरस नरकनो
 आउखो, दूर कैरै ज्ञानबुद्धि ॥ श्री० १० ॥ नित्य कैरै नवकारसी,
 ते नर नरक न जाय ॥ न रहै पाप बलि पावला, निरमल होवे
 जी काय ॥ श्री० ११ ॥ (दाल १ ॥ श्रीविमलाचल सिर तिलो
 ॥ ए चाल) ॥ सुण गोतम पोरसी कियां, महा मोटो फल होय ॥
 जावसुं जे पोरसी कैरै, डुरगति ठेदै सोय ॥ सु० १२ ॥ नरक-मांदि
 जे नारकी, वरसैं एक हज्जार ॥ करम खपावै नरकमें, करता बहु
 त पुकार ॥ सु० १३ ॥ एक दिवसनी पोरसी, जीव कैरै इकतार ॥
 करम हणैं सहस्र एकना, निहचैसुं गणधार ॥ सु० १४ ॥ डुरगति
 मांदि नारकी, दस हज्जार प्रमाण ॥ नरक आयु खिण एकमें, सा-
 दपोरसी कैरै हाण ॥ सु० १५ ॥ पुरिमद कैरै नित जीव जे, नरकें
 ते नविं जाय ॥ लाख वरस करमनें दहै, पुरिमद करम खपाय ॥
 सु० १६ ॥ लाख वरस दस नारकी, पामें दुःख अनंत ॥ इतरा
 करम एकासणें, दूर कैरै मन खंत ॥ सु० १७ ॥ एक कोनि वरसां
 खगै, करम खपावै जीव ॥ नीवीध करतां जावसुं, डुरगति हणै
 सदीव ॥ सु० १८ ॥ दस कोनि जीव नरकमें, जितरो कैरै करम
 दूर ॥ तीतरो एकलगाणही, कैरै सही चकचूर ॥ सु० १९ ॥ दात
 करंता प्राणियो, सो कोनी परिमाण ॥ इतरा वरस डुरगति तणा,
 ठेदै चतुरसुजाण ॥ सु० २० ॥ आंखिनो फल बहु कह्यो, कोनी

एक हजार ॥ करम खपावै इणपरै, जाव आंखिल अधिकार ॥ सु०
 २१ ॥ कोनि सहस दस वरसही, सहे दुःख नरक मजार ॥ उपवास
 करै इक जावसुं, तो पामे मुगति मजार ॥ सु० २२ ॥ (हाल १॥
 केकड़ वर लाधो ॥ ए देशी) ॥ लाख कोनि वरसां लगे, नरके क-
 रता रीव रे ॥ गौतम गणधारी ॥ ठठम तप करतां थकां, सही
 नरक निवारे जीव रे ॥ गो० २३ ॥ नरके वरस कोनि लाखही,
 जीव लहै तिहां डुस्क रे ॥ ते डुख अठम तपहुंती, दूर फरी पामे
 सुक रे ॥ गो० २४ ॥ वेदन जेदन नारकी, कोनाकोनि वरसो
 रे ॥ कुगति कुमतिनै परिहरो, दसमें एतो फल होइ रे ॥ गो०
 २५ ॥ नित फासू जल पीवतां, कोनाकोनि वरसनो पाप रे ॥ दूर
 करै खिण एकमें, निभै होय निःपाप रे ॥ गो० २६ ॥ बलिय वि-
 शेष फल कह्यो, पांचम करै उपवास रे ॥ पामे ग्यान पांचे जला,
 करता त्रिजुन परकास रे ॥ गो० २७ ॥ चवदस तप विधिमुं
 करै, चवदह पूरय होय धार रे ॥ इम अनेक फल तपतणा, कहतां
 बलि नावे पार रे ॥ गो० २८ ॥ मन बचने काया करी, तप करै
 जे नर नार रे ॥ इग्यारे वरस एकादशी, करतां लहै जय पार रे ॥
 गो० २९ ॥ आठम तप आराधतां, जीव न फिरै संसार रे ॥ अर-
 त जवाना पापथी, नूटै जीव निरधार रे ॥ गो० ३० ॥ तपहुंती
 पापी तरया, निसनरियो थरजुनमाल रे ॥ तपहुंती दिन एठमें,
 शिव पाग्यो गजमुकमाल रे ॥ गो० ३१ ॥ तपना फल सूत्रे कहा,
 पञ्चस्त्राणतणा दस जेद रे ॥ अवर जेद पिण ठै घणा, करतां जे
 अथ वेद रे ॥ गो० ३२ ॥ (कलशः) ॥ पञ्चस्त्राण दस विष फल
 परुष्या महावीर जिणदेवण, जे करै जवियग तप अर्थनि तनु
 मेव न ॥ संवत्त निवि गुण अथ दशि बलि योग सुदि-
 न, पदमरंग वाचक शीम गणिवर रामरंग नद निवि

जणे ॥ ३३ ॥ इति दस पञ्चस्काण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ दस पञ्चस्काण तप विधिः ॥

॥ यद् दस पञ्चस्काणके स्तवनमें खुलासा दस पञ्चस्काणके जेद उर बेला तेला पांचम आठम इग्यारस चौदश इत्यादिक तपस्या करणेके फल जगवंत श्रीमहावीरस्वामीके वचन मुजब उत्तम पुरुषोंने रचना करीहै, इस वास्ते धर्मरागी पुरुष इस स्तवनकों पढ़के तपस्या करणें आदरवंत होता है, उर किसीके दश पञ्चस्काण तप करणेकी इच्छा होय तो पहिले दिन नवकारसी, दुसरे दिन पोरसी, इस तरै स्तवन मुजब १० पञ्चस्काण दस दिवसे सेवन करै, सदा स्तवन सुणें पढ़ै, अंतमें पूजा करावै, शक्ति माफक उद्यापन करै, इस तपस्याके प्रज्ञावसे डुरगतिबंध दूर करके अच्छी गती पावे, महा ऐश्वर्यवंत होय, जाग्यवंत होय ॥ इति ॥

॥ अथ वीश स्थानक स्तवन लिख्यते ॥

श्री सिद्धाचल जेठियै ॥ ए देशी ॥ वीस थानक तप सेवि-
यै, धर कर शुज परिणाम लाल रे ॥ तीजै जब सेव्यो थको, बां-
धे तीर्थकर नाम लाल रे ॥ वी० १ ॥ तप रचना अधिकी कही,
ज्ञाताअंग मजार लाल रे ॥ सुणजो जवि तुमे ज्ञावसुं, चित्तसें करिय
उच्चार लाल रे ॥ वी० २ ॥ सुविदित गुरु पासे मदै, वीस थानक
तप एह लाल रे ॥ निरदूषण शुज महुरते, उचरीजै ससनेह लाल
रे ॥ वी० ३ ॥ अरिहंत १ सिद्ध २ प्रवचन नमूं ३, सूरि ४ धिवर ५ उव-
झाय ६ लाल रे ॥ साधु ७ नाण ८ दंतण ९ अरु, विनय १० नमूं
उलसाय लाल रे ॥ वी० ४ ॥ चारित्र ११ बंज १२ क्रियापदे
१३, तप १४ गोयम १५ जिण १६ ईस लाल रे ॥ चारित्र १७
ज्ञातने १८ श्रुत जणी १९, नमूं तीर्थ २० पद वीश लाल रे ॥
वी० ५ ॥ वीस दिवसमें ए कही, पद गुणनो कर मेव लाल रे ॥

अथवा दिन विता लगे, बीसे पद गुण मेव लाल रे ॥ वी० ६ ॥
 एक उली पट मासमें, पूरी जो नवि होय लाल रे ॥ फेर
 नवी करणी पमै, पिठली निष्फल जोय लाल रे ॥ वी० ७ ॥
 ठठ अष्टम उपवाससुं, अथवा देखो शक्ति लाल रे ॥ पोसद कर
 आराधियै, देव वांदै निज शक्ति लाल रे ॥ वी० ८ ॥ संपू-
 रण प्रद सेवतां, पोसदनो नहि जोग लाल रे ॥ तोही सात पद
 सही, पोसद करियै संजोग लाल रे ॥ वी० ९ ॥ सूरी शिवर
 प्राठक पदै, साधु चारित्र सुजाण लाल रे ॥ गौतम तीर्थपदे सही,
 सात आनक मन मान लाल रे ॥ वी० १० ॥ पद २ दीठ करै स-
 दा, दोय २ जाप हजार लाल रे ॥ पम्कमणो दोय टंकही, करियै
 पूजा सार लाल रे ॥ शक्ति मुजय तप कीजियै, एक उलीकधे
 बीस लाल रे ॥ बीसाबीसी च्यारसै, तप संख्या कही एम लाल
 रे ॥ वी० ११ ॥ जिस दिन जो पद तप करै, तिसके गुण चित
 धार लाल रे ॥ काउसगने परदक्षणा, मुख अणियै नवकारलाल
 रे ॥ वी० १२ ॥ जिस पदकी स्तवना सुणे, कीजै जिनपद शक्ति
 लाल रे ॥ पूजन शुद्ध मन साचवै, दिन २ बढ़ती शक्ति लाल रे
 ॥ वी० १३ ॥ मृतक जनम कृतुकालमें, कवि धारयो उपवास लाल
 रे ॥ सो लेखे नहिं लेखयो ॥ निकेवल तप जास लाल रे ॥ वी०
 १४ ॥ सावक त्यागपणो करै, सोक न धारे चित लाल रे ॥ शीत
 आचूपण आदरै, मुखसुं बोलै सत्य लाल रे ॥ वी० १५ ॥ जेउ
 आसाढ वैशाखमें, मिंगसर कागुण मांढ लाल रे ॥ ए पद मांस
 मांदिनै, द्रव मद्दिये वमजाग लाल रे ॥ वी० १६ ॥ तप पूरण
 हुवां अकां, कजमणो निरवार लाल रे ॥ कीजै शक्ति विधारीनै,
 छव्य विविध प्रकार लाल रे ॥ वी० १७ ॥ बीस २ गिणती तणा,
 पुस्तक पूरा आदि लाल रे ॥ ग्यानतणी पूजा करै, मुंकीजै दणवद-

लाल रे ॥ वी० १ए ॥ फलवन्धी नगरनी श्राविका, कौधी विध चित्त
 लाय लाल रे ॥ जनम सफल करवा जणी, उद्दिज मोक्ष उपाय
 लाल रे ॥ वी० १० ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवरतणी आझा धार
 चित्त मजार ए, सहू देख आगमतणी रचना रची तप विध सार
 ए ॥ वसु नंद सिद्धि चंद्र वरसै वैश्र मास सुदंकरू, मुनि केशरी
 शशि गङ्ग खरतर जणी स्तवना मनदरू ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक तप करण विधि लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम शुभ मङ्गुर्त्तके दिन नंदी स्थापनापूर्वक सुवि
 दित गुरुके पास वीस स्थानकतप विधिपूर्वक उच्चरै. एक उली बो
 महीनेसे लेकर ठ महीने पूरी करै. कदात ठ महीनेमें पूरी नही कर
 तके तो वो उली गिणतीमें नही. उर फेर नइ करणी पमती है.
 एक उलीके वीस पद हे (तहां) कोइ वीस दिनमें वीस पद
 बुदाइ गिणते हे, कोइयक वीसों दिनमें एकही पद गिणते हैं, दूसरे
 वीसों दिनमें दूसरा पद, ऐसे वीसों पदकी वीस उली करै. तिहां
 द्वाराथनेके दिन प्रबल शक्तिवन्त अष्टम तप करिके आराधै. वीस
 अष्टमसे एक उली होय (ऐसे) वीस उली ४०० से अष्टमसे आ
 राधै. और उससे कम शक्ति होय तो उससे आराधै. उससे कम
 शक्ति होय तो चोविहार उपवास करिके आराधै. उससे दोन शक्ति
 होय तो तिबिहार उपवास करिके आराधै. उससे हीणशक्ति आंजिल
 तथा) तिबिहार एकाशणा करिके आराधै. उसमें जो शक्तिवान
 होय सो तो सर्व तपस्याके दिन अठ पदरी पोसद करै. हीनशक्ति
 नपोसद करै. वीसों पद पोसदसेती आराधै. जो पोसद शक्ति
 व पदमें नही होय तो आचार्यपदमें १, उपाध्यायपदमें २, शिष्य
 पदमें ३, साधुपदमें ४, चारित्र्यपदमें ५, गौतमपदमें ६, उर तीर्थपद-
 ७, यह सात आनक पद तो पोसद करकेही आराधै. जो इतनी

जो शक्ति नहि होय तो उस दिन देसावगांसी करै, सावध व्यापार
 गोमै, सो शक्ति जो नही होय तो यथाशक्ति तप करै आराध
 अपणी हीणता जावे तथा मृतक जन्म के सूतकमें उपवासादि त
 नही गिणै जावै, स्त्रियां जो रतुसमयका तप नही गिणै, तथा तपके
 दिन पोसह सहित करै तो बहोत श्रेयकारी है, वो अगर नहीं हो
 सके तो तपके दिन उज्जय टंक पम्किमण करै, तीन टंक देववन्दन
 करै, दो हंकार एक पदका जाप करै, ब्रह्मचर्य पालै, जूमि शयन
 करै, तपके दिन अति सावध व्यापार नही करै, असत्य नहि बोले,
 सब दिन तप पदके गुण कीर्तनमें रहै, तथा तपके दिन पोसह करै
 तो पारणिके दिन जिनजक्ति करै पारणा करै, जो तपके दिन पो
 सह नही होय तो उसी दिन श्रीजिनजक्ति करै करावै, जावना
 जावै तथा तपके दिन तप पदके गुण जेव प्रमाण संख्यासँ काउ
 सग करै, इतनाही तजुण स्मरणपूर्वक खमासमण देइ वंदना करै,
 उस पदका गुण याद करै उदात्त स्वरसँ स्तवना करै, हर्षित रहै ॥
 ॥ अथ बीस स्थानक गुणना और काउसगका प्रमाण लिखते हैं ॥

(एमो अरिहंताण) २००० गुणना लोगस्त १२ का काउ
 सग ॥ १ ॥ (एमो सिद्धाण) २००० गुणना लोगस्त १५ का का
 उसग ॥ २ ॥ (एमो पवयणस्त) २००० गुणना लोगस्त ४
 का काउसग ॥ ३ ॥ (एमो आयरिआण) दो हंकार गुणना
 लोगस्त ३६ का काउसग (एमो थेराण) दो हंकार गुणना
 लोगस्त १५ का काउसग ॥ ५ ॥ (एमो उवझायाण) दो ह
 ङ्कार गुणना लोगस्त २५ का काउसग ॥ ६ ॥ (एमो सोए ता
 साहूण) दो हंकार गुणना लोगस्त २७ का काउसग ॥ ७ ॥
 (एमो नाणस्त) दो हंकार गुणना लोगस्त ५ का काउसग ॥
 ॥ ८ ॥ (एमो दंसणस्त) दो हंकार गुणना लोगस्त १७ ॥

काञ्चसग्न ॥ ए ॥ (एमो विषयसंप्रसाहं) दो दङ्कार गुणना
 लोगस्त १० का काञ्चसग्न ॥ १० ॥ (एमो त्वारिचस्त) दो दङ्कार
 गुणना लोगस्त ६ का काञ्चसग्न ॥ ११ ॥ (एमो वंजवय
 घारीणं) दो दङ्कार गुणना लोगस्त ए का काञ्चसग्न ॥ १२ ॥
 (एमो किरिद्राणं) दो दङ्कार गुणना लोगस्त २५ का काञ्चसग्न
 ॥ १३ ॥ (एमो तवस्तीणं) दो दङ्कार गुणना लोगस्त १५ का
 काञ्चसग्न ॥ १४ ॥ (एमो गोयमस्त) दो दङ्कार गुणना लोगस्त
 १७ का काञ्चसग्न ॥ १५ ॥ (एमो जिषाणं) दो दङ्कार गुणना
 लोगस्त १० का काञ्चसग्न ॥ १६ ॥ (एमो चरणस्त) दो दङ्कार
 गुणना लोगस्त १२ का काञ्चसग्न ॥ १७ ॥ (एमो नाशस्त) दो
 दङ्कार गुणना लोगस्त ५ का काञ्चसग्न ॥ १८ ॥ (एमो सुग्रना-
 शस्त) दो दङ्कार गुणना लोगस्त १० का काञ्चसग्न ॥ १९ ॥
 (एमो तिष्ठस्त) दो दङ्कार गुणना लोगस्त ५ का काञ्चसग्न करै
 ॥ २० ॥ इति बीस स्थानक गुणना संपूर्णम् ॥

इत्यादि विधि संयुक्त बीशों जलीमें सर्व पदके उच्चव महो-
 उव प्रज्ञावना कजमणापूर्वक करै, जिनशासनके उन्नतीके वास्ते
 तनी शक्ति नहीं होय तो एक जली तो विशेष उच्चवादिक संयुक्त
 करणी चाहियै, इहां विधिप्रपाक ग्रंथसें बीस स्थानक सेवनविधि
 प्रक्षेप मात्रसें लिखी हे, जो गुरुका संयोग होय तब तो विस्तारसें
 बीशों पदकी जुड़ी २ विधि गुरुके मुखसें समझके करै, जो गुरुका
 संयोग नहि होय तो विवेक संयुक्त इस विधिकों देखके बीस स्था-
 नक तपकों सेवन करै, बीस स्थानकका स्तवन सुणें वा पढ़ै, बीस
 स्थानकजीकी पूजा करावै, अपनी शक्ति भाफक बीस २ ज्ञानोप-
 रण करावै, देवपदका देवखाते लगावै, ज्ञानपदका ज्ञानखाते
 गाने, गुरुपदका गुरुखाते लगावे, सब तीर्थोंकी यात्रा करै,

सादमी वछल कैर, इत्यादिक इन्हे नर जावे विधि संयुक्त शु
जावसें जो जव्यजीव यह बीस स्थानक पदकों सेवन करेंगे त
जिन नाम कर्माकों उपार्जन करके तीसरे जव अनंत सुखकों प्रा
होंगे. इत्यलंविस्तरेण ॥ इति बीस स्थानक तप तंत्री विधि सं० ।

॥ अथ बीस स्थानक मंडल पूजन लिख्यते ॥

एमोऽंतविन्नाणसदंसणाणं, सहाणंदियासेसजंतूगणाणं ॥

जवज्जोविच्छयणेवारणाणं, एमोवोहियाणंवराणंजिणाणं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हज्योनमः ॥ १ ॥ इति प्रथमपदे जिनेन्द्रपूजा ॥ अथ

सिद्धपूजा ॥ लोगगजागोपरिसंठियाणं, बुद्धाणसिद्धाणमंति-

दियाणं ॥ निस्सेसकम्मस्सकयकारणाणं, एमोसयामंगलधारणाणं ॥

॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेज्योनमः ॥ २ ॥ अथ तृतीय पद ॥

अणंतसंसुद्धयुणाकरस्स, दुक्कंथयारुग्गदिवाकरस्स ॥ अणंतजीवा-

णदयागिहस्स, एमो२ संयचउविहस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प्रवचनायनमः

॥ ३ ॥ अथ चतुर्थ पद ॥ कुवादिकेत्तीतरुत्तिंधुराणं, सुरीसराणं

मुत्तिंधुराणं ॥ धीरत्तसंतज्जियमंदराणं, एमोसयामंगलमंदिराणं

॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं आचार्येज्योनमः ॥ ४ ॥ अथ पंचम पद ॥ तम्म

त्तसंयमपतितज्जविजन अतिदधिरकरताज्जला ॥ अवगुणअवधि-

गुणविज्जूपित चंदकिरणसमोक्कजा ॥ अष्टाधिकादससहससीलांगर

रुचिरधाराधरा, जवसिंधुतारणप्रवरकारणनमोधिवरमुनीवरा ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं स्थविरायनमः ॥ अथ षष्ठा पद ॥ सधोदिवोजंकुरुकार-

णाणं, एमोश्वायगावारणाणं ॥ कुवोदिदंतीहरिणोसराणं ॥ विमो-

घसंतावपयोहराणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेज्यो नमः ॥ ६ ॥ अथ

सातमा पद ॥ संतज्जियसेसपरीसहाणं, निस्सेसजीवाणदयागिहा-

णं ॥ सन्नाण पक्कायतरुवणाणं, एमो२दोउतवोधणाणं ॥ ७ ॥ ॐ

ह्रीं श्रीं सम्प्रगूसाधुज्योनमः ॥ ७ ॥ अथ अष्टम पद ॥ उदधपअ

यगुणाकरस्त, सयापयासीकरणोधुरस्त ॥ मिञ्चतत्राणतमोहरस्त;
 णमो२ नाणदिवायरस्त ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥
 ८ ॥ अथ नवम पद ॥ अणंतविन्नाणसुकारणस्त, अणंतसंसारवि
 दारणस्त ॥ अणंतकम्मावल्लिखंणस्त, णमो२निम्मलदंतणस्त ॥
 ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ ९ ॥ अथ दशम विनय-
 पद ॥ आणंदियात्तेसजगज्जणस्त, कुंविंउणादामलताचणस्त ॥ सुध-
 म्मजुत्तस्तदयात्तयस्त, णमो२श्रीविणयालयस्त ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं
 श्रीं सम्यग्विनयै नमः ॥ १० ॥ अथ इग्यारम चारित्र पद ॥ क-
 म्मोघकंतरादवानलस्त, मदोदयानंदलयाजलस्त ॥ विन्नाणपंकेरुह
 कारणस्त, णमोचरित्तस्तगुणापणस्त ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्चा-
 रित्राय नमः ॥ ११ ॥ अथ द्वादशन चारित्र पद ॥ सग्गापवगाग्ग-
 सुदप्पयस्त, सुनिम्मलाणंतगुणालयस्त ॥ सव्वयाज्जपणज्जूपणस्त,
 नमोदिशीलस्तअदूतणस्त ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्ब्रह्मचैयनमः ॥ १२ ॥
 अथ तेरमें क्रिया पद ॥ विशुद्धसद्धानविज्जूपणस्त, सुलद्धितंपत्तिमु
 पोपणस्त ॥ णमोसदाणंतगुणप्पदस्त, नमो२सुद्धक्रियापदस्त ॥
 १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्क्रियायै नमः ॥ अथ चवदमा तप पद ॥
 लद्धीसरोजावलितावणस्त, सुखवसंतलग्गसुपावणस्त ॥ अमंगलानो
 कुद्धड्ढवस्त, नमो२निम्मलसत्तवस्त ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्तव-
 से नमः ॥ १४ ॥ अथ पनरमा गौत्तम पद ॥ अणंतविन्नाणविज्जाकर
 स्त, उवालसंगीकमलाकरस्त ॥ सुलद्धवात्ताजयगोयमस्त, नमो२ग
 णाधीस्तरगोयमस्त ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं गौत्तमाय नमः ॥ अथ
 सोलम पदे जिनपूजा ॥ मणुणसत्तात्तिसयासयाणं, सुरा२धी सर-
 वंदियाणं ॥ रवींउर्विंवा मलसग्गुणालं, दयाचयाणंदिनमोजिणाणं
 ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जिनेज्ज्योनमः ॥ अथ सत्तरमें चारित्तवारीपद
 ॥ तद्धिंदियापारविकारदारी, अकारणात्तेसजणावेगारी ॥ महात्त-

वातंकरणापहारी, जयोसदाशुद्धचरित्रधारी ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्री
 सम्यग्चारित्रधारीभ्यो नमः ॥ १७ ॥ अथ अठारवें ज्ञानपदपूजा
 ॥ शुद्धक्रियामंरुलमंरुणस्त, संदेहसंदोहविवर्णस्त ॥ मुत्तीउपादा
 नसुकारणस्त, नमोहिनाणस्तजसोधणस्त ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्री
 सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ अथ उगणीसमें श्रुतपद ॥ अन्नाणव
 द्धीवनवारणस्त, सुबोहिवीजांकुरकारणस्त ॥ अणंतसंसुद्धगुणा-
 यस्त, नमोदयामंदिरसत्रयस्त ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग्श्रुतये
 नमः ॥ १९ ॥ अथ वीसमें तीर्थपद ॥ तुज्यंनमःसकलविश्ववर्श
 कराय, तुज्यंनमःस्त्रिजगतीजनशंकराय ॥ तुज्यंनमःसुवनमंरुल
 मंरुनाय, तुज्यंनमोस्तुजिनपंकविवर्णनाय ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्री त
 म्यग्तीर्थपदेभ्योनमः ॥ २० ॥ ध्वजासमेत अष्ट इव्य चढावै (पीठे)
 ६४ इन्द्रपूजा अखरोट चढावै ॥ ॐसौधमेंझायनमः १ ॥ ॐ इशायें
 झायनमः २ ॥ ॐसनत्कुमारेंझायनमः ३ ॥ ॐमाहेंझायनमः ४ ॥
 ॐब्रह्मेंझायनमः ५ ॥ ॐलांतकेंझायनमः ६ ॥ ॐशुक्रेंझायनमः ७
 ॥ ॐसहस्रारेंझायनमः ८ ॥ ॐप्राणतेंझायनमः ९ ॥ ॐअ-
 न्युतेंझायनमः १० ॥ ॐचंद्रेंद्रायनमः ११ ॥ ॐसूर्येंद्रायनमः १२ ॥
 ॐचमरेंद्रायनमः १३ ॥ ॐवर्लींद्रायनमः १४ ॥ ॐधरेंद्राय-
 नमः १५ ॥ ॐभूतानेंद्रायनमः १६ ॥ ॐवेणुदेवेंद्रायनमः १७ ॥
 ॐवेणुदालींद्रायनमः १८ ॥ ॐहरिकान्तेंद्रायनमः १९ ॥ ॐहरिस्त
 हेंद्रायनमः २० ॥ ॐअग्निशिलेंद्रायनमः २१ ॥ ॐअग्निमात
 रेंद्रायनमः २२ ॥ ॐपूर्णेंद्रायनमः २३ ॥ ॐविशिष्टेंद्रायनमः
 २४ ॥ ॐजलकान्तेंद्रायनमः २५ ॥ ॐजलप्रजेंद्रायनमः २६
 ॥ ॐअमितगतींद्रायनमः २७ ॥ ॐमितवादनेंद्रायनमः २८ ॥
 ॐवैद्येंद्रायनमः २९ ॥ ॐप्रज्जनेंद्रायनमः ३० ॥ ॐवेदें
 द्रायनमः ३१ ॥ ॐमहाधोपेंद्रायनमः ३२ ॥ ॐकालेंद्रायनमः

॥ ३३ ॥ उमहाकालेद्रायनमः ॥ ३४ ॥ उत्तररूपेद्रायनमः ॥ ३५ ॥
 उत्प्रतिरूपेद्रायनमः ॥ ३६ ॥ उपूर्णजडेद्रायनमः ॥ ३७ ॥ उमाणजडेद्राय
 नमः ॥ ३८ ॥ उज्जोभेद्रायनमः ॥ ३९ ॥ उमहाजीमेद्रायनमः ॥
 ४० ॥ उकिन्नरेद्रायनमः ॥ ४१ ॥ उकिंपुरुषेद्रायनमः ॥ ४२ ॥ उत्तत्पुरुषे
 द्रायनमः ॥ ४३ ॥ उमहापुरुषेद्रायनमः ॥ ४४ ॥ उग्रमितकार्येद्रायनमः ॥
 ४५ ॥ उमहाकार्येद्रायनमः ॥ ४६ ॥ उंगीतरतींद्रायनमः ॥ ४७ ॥ उंगीत-
 यज्ञेद्रायनमः ॥ ४८ ॥ उत्तन्निहितेद्रायनमः ॥ ४९ ॥ उत्तामानि-
 केद्रायनमः ॥ ५० ॥ उंधात्रेद्रायनमः ॥ ५१ ॥ उंधिधात्रेद्रायनमः
 ॥ ५२ ॥ उंरुपिंद्रायनमः ॥ ५३ ॥ उंरुपिपालतेद्रायनमः ॥ ५४ ॥
 उंश्वरेद्रायनमः ॥ ५५ ॥ उंमहेश्वरेद्रायनमः ॥ ५६ ॥ उंवंत्सेद्रा-
 यनमः ॥ ५७ ॥ उंविस्तार्लेद्रायनमः ॥ ५८ ॥ उंदास्येद्रायनमः ॥
 ५९ ॥ उंश्रेयसेद्रायनमः ॥ ६० ॥ उंदास्यस्तेद्रायनमः ॥ ६१ ॥
 उंपदगैद्रायनमः ॥ ६२ ॥ उंपदगपतेद्रायनमः ॥ ६३ ॥ उंमहाश्रे-
 रेद्रायनमः ॥ ६४ ॥ इतिचोसठइंद्रनामपूजा ॥ अथ १६ विद्या-
 देवीपदे १६ सुपारी चढावे ॥ ॥ उंरोदिण्यैनमः ॥ १ ॥ उं-
 म्हासैनमः ॥ २ ॥ उंवज्रभृपलायैनमः ॥ ३ ॥ उंवज्राकुशयैनमः
 ॥ ४ ॥ उंचक्रोश्वयैनमः ॥ ५ ॥ उंपुरुषवज्रायैनमः ॥ ६ ॥ उंका-
 यैनमः ॥ ७ ॥ उंमहाकाट्यैनमः ॥ ८ ॥ उंगौर्ध्वैनमः ॥ ९ ॥ उं
 थायैनमः ॥ १० ॥ उंमहाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ उंमानव्यै-
 नमः ॥ १२ ॥ उंवैरोव्यायैनमः ॥ १३ ॥ उंअनुतायैनमः ॥ १४
 ॥ उंमानस्यैनमः ॥ १५ ॥ उंमहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इति यो-
 श विद्यादेवी नाम पूजाः ॥ ॥ अथ २४ यक्षपदे सो-
 री चढावे ॥ ॥ उंवज्रशांतियैनमः ॥ २४ ॥ उंपा-
 र्येक्षायैनमः ॥ २३ ॥ उंगोमेधायैनमः ॥ २२ ॥ उंनृकुट्यैनमः
 २१ ॥ उंवरुशायैनमः ॥ २० ॥ उंकुवोरायैनमः ॥ १९ ॥ उंय-

कैलायनमः ॥ १८ ॥ उँगंधर्वायनमः ॥ १७ ॥ उँगरुद्रायनमः ॥
 १६ ॥ उँकिन्नरायनमः ॥ १५ ॥ उँपातालायनमः ॥ १४ ॥ उँर-
 एमुखायनमः ॥ १३ ॥ उँरुमारायनमः ॥ १२ ॥ उँपक्षराजाय-
 नमः ॥ ११ ॥ उँत्रह्मण्येनमः ॥ १० ॥ उँअजितायनमः ॥ ९ ॥
 उँविजयायनमः ॥ ८ ॥ उँमातंगायनमः ॥ ७ ॥ उँकुसमायनमः ॥
 ६ ॥ उँतुंगुर्येनमः ॥ ५ ॥ उँरक्षनायकायनमः ॥ ४ ॥ उँत्रिमुखा-
 यनमः ॥ ३ ॥ उँमहायकायनमः ॥ २ ॥ उँगोमुखायनमः ॥ १ ॥
 इति २४ यक्ष नाम पूजा ॥ ॥ अथ २४ यक्षणी नाम लि० ॥
 उँचक्रेश्वर्येनमः ॥ १ ॥ उँअजितबलायैनमः ॥ २ ॥ उँउरितार्येनमः
 ॥ ३ ॥ उँकालिकायैनमः ॥ ४ ॥ उँमहाकाट्यैनमः ॥ ५ ॥ उँइषा-
 मायैनमः ॥ ६ ॥ उँशांतायैनमः ॥ ७ ॥ उँनृकुट्यैनमः ॥ ८ ॥
 उँसुतारकायैनमः ॥ ९ ॥ उँअशोकायनमः ॥ १० ॥ उँमानव्यैनमः
 ॥ ११ ॥ उँचंद्रायनमः ॥ १२ ॥ उँविदितायैनमः ॥ १३ ॥ उँअंरु-
 द्रायैनमः ॥ १४ ॥ उँकंदपार्येनमः ॥ १५ ॥ उँनिर्वाण्यैनमः ॥
 १६ ॥ उँबलायैनमः ॥ १७ ॥ उँधारिण्यैनमः ॥ १८ ॥ उँधरणाप्रियायैनमः
 ॥ १९ ॥ उँनरदत्तायैनमः ॥ २० ॥ उँगांधर्व्यैनमः ॥ २१ ॥ उँअं-
 बिकायैनमः ॥ २२ ॥ उँपदमावत्यैनमः ॥ २३ ॥ उँसिंहायकायै-
 नमः ॥ २४ ॥ इति ॥ अथ नव निधान नाम ॥ उँनैसर्पका-
 यनमः १ ॥ उँपांडुकायनमः २ ॥ उँपिंगलायनमः ३ ॥ उँसर्वरत्नायनमः
 ४ ॥ उँमहापद्मायनमः ५ ॥ उँकालायनमः ६ ॥ उँमहाकालायनमः
 ७ ॥ उँमाणवायनमः ८ ॥ उँशंखायनमः ९ ॥ इति नव
 निधान पदे ए कलश चढावै ॥ अथ दश दिग्पालादि नाम ॥
 उँविजयस्वामिनेनमः ॥ १ ॥ उँक्षेत्रपालायनमः ॥ २ ॥ उँचक्रेश्व-
 र्यैनमः ॥ ३ ॥ उँधरणेंद्रायनमः ॥ ४ ॥ उँपद्मावत्यैनमः ॥ ५ ॥
 उँइंद्रायनमः ॥ ६ ॥ उँअग्नयेनमः ॥ ७ ॥ उँयमायनमः ॥ ८ ॥

नैऋतायनमः ॥ ४ ॥ नैऋत्यायनमः ॥ ५ ॥ नैऋत्यव्यैनमः ॥ ६ ॥
 कुबेरायनमः ॥ ७ ॥ कुबेरानायनमः ॥ ८ ॥ कुबेरायनमः ॥ ९ ॥
 ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ इति दशदिग्पालः ॥ नैऋत्यायनमः ॥ १ ॥
 चंद्रायनमः ॥ २ ॥ चंद्रोमायनमः ॥ ३ ॥ चंद्रुधायनमः ॥ ४ ॥
 वृहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ वृहस्पतायनमः ॥ ६ ॥ वृहस्पतेश्वरायनमः
 ७ ॥ वृहस्पतैवैनमः ॥ ८ ॥ वृहस्पतैवैनमः ॥ ९ ॥ इति नवग्रह
 मः ॥ इहां वीशस्थानक मंत्र पूजनकी विधि विशेष लिखी
 । सो नाममात्र स्थापन पूजनकी हे, इस उपरांत मंत्र प्रतिष्ठा
 वाकुलादिककी संपूर्ण विधि नवपद मंत्र पूजामें लिखिआए
 वस मुजबदी करणी । फेर विशेष विधि करणी होय तो वि-
 त्तन गुरुको पूजके करणी ॥ इति वीशस्थानक मंत्र पूजा वि० सं॥
 ॥ अथ रोहणीतप स्तवन लिख्यते ॥

॥ शाश्वत देवत सामणी ए मुज सानिध कीजै, चुलो
 र जगति जणो समझाई दीजै ॥ मोटो तप रोहण तणो ए
 रा गुण गांठ, जिम सुख सोहण संपदा ए वंछित फल पांठ ॥
 दक्षिण जरते अंगदेस ठै चंपानवरी, मधवा राजा राज्य करै
 नीता वयरी ॥ पाटतणी राणी रूबनी ए लखमी इण नामे,
 पूत्र जाया जिणें ए मनमें सुख पाये ॥ २ ॥ रोहिणी नामे
 का ए सबकुं सुखकारी, आठं पूत्रां ऊपरां ए तिण लागे प्यारी
 वै चंडतणी कला ए जिम पख कजवाले, तिम ते कुमरी धाय
 पांवे प्रतिपालै ॥ ३ ॥ कुमरी रूपे रूबनी ए घर अंगण वैठी,
 राजा खेलती ए तिण चिंता पैठी ॥ तीन जुवन विच एदवी
 री दूजी नारी, रंजना पञ्चमा गवर गंग इण आगल दारी ॥ ४ ॥
 पन दीपै कोइ इतो जिणने परणां, आख्या आगल साज
 नेण चयन न पांठ ॥ देशना राजवी ए ततखिण तेमाया,
 ६७

सधल सजाई सार्थ करी नरपति पिण आया ॥ ५ ॥ वीतशोक
 राजातणो ए ठै कुमर सोजागी, कन्याकैरी आंखनी ए तिणसेत
 लागी ॥ ऊजा देखै सकल लोक चढिया केइ पाला, चित्रसेनरे कं
 ठवी कुमरी वरमाला ॥ ६ ॥ देव अनै देवांगना ए जपै जैजैकार
 रलियायत थयो देखने ए सारो संसार ॥ कर जोमी कहै लोक व
 खत कन्यारो जानो, वीतशोकनो कुमर थयो सिर ऊपर
 लामो ॥ ७ ॥ इम विवाह थयो जलो ए दीया दान अपार ॥
 घर आया परणी करी ए हरखयो परिवार ॥ वीतशोक निज पूत्र
 जणी अपणो पाट दीधो, आपण संजम आदरी ए जगमें जत
 लीधो ॥ ८ ॥ (ढाल-प्रज्जु प्रणमुं रे पास जिणेतरे थंजणो ॥ ए
 देशी) ॥ तिण नगरी रे चित्रसेन राजा थयो, सुख मांही रे
 केतलो काल बढी गयो ॥ इण अवसर रे आठ पूत्र हुवा जला,
 चढते पख रे चंद्र जिसी चढती कला ॥ (उल्लाखो) चढती कला
 हिव राय बैठो पास बैठी रोहणी, सातमी जूमी कंतसेती करै की
 ना अतिधणी ॥ आठमो बालक गोद ऊपर रंगसूं राणी लिपो,
 पूत्रने प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ९ ॥ (चाल)
 इक कामण रे गोख चढी इष्टे पनी, शिर पीटे रे दीन स्वरे रोवै
 खनी ॥ बूढापण रे मन गमतो बालक मूओ, हुं एकज रे तिण
 अधिकरो डुख हुउ ॥ (उल्लाखो) डुख हुवो देखी रोहिणी हिव
 कहै इम प्रीतम जणी, ए नार नाचै अनै कूदै कदो किम मोटा
 धणी ॥ एहवो नाटक आज तांइ में कदे देख्यो नही, मुज्जने त
 मासो अने हासो देखतां आवै सही ॥ १० ॥ (चाल) इण वचने
 रे रीसाणो राजा कहै, तूं पापण रे परतणी पीना नवि लदै ॥ ए
 डुखणी रे पूत्र मुअे तरुपम करै, जब वीतेरे वेदना जाणीजै तरै ॥
 (उल्लाखो) जाणै तरै तूं वात डुखनी गरबगहली कामनी, इम

कही राजा हाथ जाल्यो तेदना बालकजणी ॥ सातमा जूयथी
 तलै नारुयो तिसै दाहारव थयो, रोहणी हसती कहै प्रीतम पूत्र
 नांचै किम गयो ॥ ११ ॥ (चाल) दिव राजा रे पूत्रतणै शोकै
 करी, थयो मुरझित रे रोवै अति आंख्या जरी ॥ पन्तौ सुत रे
 सासणदेवत जालियो, कंचनमयरे सिंहासण बैसारियो ॥ (उल्लाखो)
 बैसारियो कर जोमे आगै करै नाटक देवता, गोदे खिलावै के
 हसावै पायपंकज सेवता ॥ ऊपनो जूपतने अचंचो देख ए कारण
 कितो, जो कोइ ग्यानी गुरु पधारै पूजियै सांसो इसो ॥ १२ ॥
 (चाल) चिंतवतां रे चारनिया आया जिसै, राजा पिण रे पुदत
 वंदणने तिसै ॥ सुण देशना रे पूवे प्रभ सोहामणो, कही स्वाम
 रे पूरवज्जव बालकतणो ॥ (उल्लाखो) बालकतणो जव जूप पू
 कहै इण पर केवली, रोहणी राणीनो जवांतर अने राजानो वल
 ॥ श्रीगुरु पासे पाठवै जव रोहणी तप आदरयो, तपतणो सग
 साधुजगते तुम्ह जवसापर तरयो ॥ १३ ॥ (चाल) कहै राजा
 रोहणितप किम कीजियै, विधि जाखो रे जिम तुम पासे लीजी
 ॥ तब मुनिवर रे विधि रोहणीरा तपतणी, इम जंपे रे चित्रसे
 राजाजणी ॥ (उल्लाखो) राजाजणी विधि एद जंपै चंड रोहणत
 आवियै, उपवास कीजै लाज लीजै जली जावना जावियै ॥ बा
 रमा जिनवरतणी प्रतिमा पूजियै मनरंगसुं, इम सात वरसा ल
 कीजै तजी आलस अंगसुं ॥ १४ ॥ (दाल-बीर सुणो मोरी बीनत
 ॥ ए देशी) ॥ तप करियै रोहणितणो, वलि करिये हो ऊजमण
 एम ॥ तप करतां पातिक टलै, तिण कीजे हो तपसेती प्रेम
 त० १५ ॥ देव जुहारी देहरे, तिण आगे हो कीजै वृद्ध अशोक
 गुणनो वारम जिनतणो, जला नेवज हो धरियै सहु थोक ॥ त
 ॥ १६ ॥ केशर चंदन चरचियै, कीजै आगे हो आठे मंगलीक

विधसुं पुस्तक पूजियै, ते पामे हो शिवपुर तहतिक ॥ त० १३ ॥
 सेवा कीजै साधूनी, बलि दीजे हो मुंह माग्या दान ॥ संतोषी
 सादमी, मनरंगे हो करण पकवान ॥ त० १४ ॥ पाटी पोथी पुं
 वना, भित्त लेखण हो जिलमिल सुजगीस, नवरुवाली बीटणा
 गुरु आगे हो धरो सत्ताईस ॥ त० १५ ॥ चोथो व्रत पिण तिस
 दिने, इम पाले हो मन आण विवेक ॥ इण विध रोहणि आदरै,
 ते पामे हो आनंद अनेक ॥ त० २० ॥ (ढाल-धरम करो जिनव
 तणो ॥ ए देखी) ॥ इम महिमारोहणतणी, श्रीग्यानी गुरु परकाते
 रे ॥ चित्रसेन ने रोहणी, वासुपूज्य तीर्थकर पाते रे ॥ ५० २१ ॥
 इण परि रोहण आदरी, ऊपर ऊजमणो कीधो रे ॥ चित्रसेन ने
 रोहणी, मन सूयै संजम लीधो रे ॥ ५० २२ ॥ आठै पूत्रे आदरी,
 दिख्या बारम जिन आगे रे ॥ बलि नानाविध तप तपै, धरमतणी
 मति जागे रे ॥ ५० २३ ॥ करि अणसण आराधना, लहि केवल
 शिवपद पाया रे ॥ जिन वाणी आणी दियै, प्रजु चरणां चित
 लाया रे ॥ ५० २४ ॥ मनमोहन महिमा नीलो, में तवियो शिव-
 पुरगामी रे ॥ मन मान्या सादिवतणी, दिव पुन्ये सेवा पाम
 ॥ ५० २५ (कलश) ॥ इम गगन डुगमुनि चंद्र वरसे (१३२
 चोथ आवण सुदि जली ॥ में कही रोहणतणी महिमा सुगु
 ख जिम सांजली ॥ वासुपूज्य अमने थया सुप्रज्ञान चित्तनी वि
 दली, श्रीसार जिनगुण गावतां दिव सकल मन आस्या फली
 २७ ॥ इति रोहणीतप स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ रोहणीतप विधिः ॥

॥ शुद्ध दिन गुरुके पास रोहणीतप ग्रहण करै, रोहणी
 दिन उपवास करै, धारमा श्रीवासुपूज्य स्वामीका पूज
 , आगे अष्ट मंगलीक रचना करै, अष्ट द्रव्य चढ़ावै, देव बंदना

दिक करके धर्मोपदेश सुलै (श्रीवासुपूज्य स्वामी सर्वज्ञायनमः)
इसका दो द्वाड़ार गुणना करै. ऐसे सात वरस तप करणेंसें सुख
शोभाय्य वधेगा, पृत्रादिकका शोक संताप न होगा. विशेष अधि-
कार स्तवनसें जाणना ॥ इति रोदण तप विधिः ॥

॥ अथ छम्मासी तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ गौतमस्वामी रे बुध दो निरमली, आपो करिय पताय
॥ महावीरस्वामी जै जै तप किया, तेहनो कहिसुं विचर ॥ बलि १
वांडु वीरजी सुदामणा ॥ १ ॥ जावठ जंजण सेव्यां सुख करै,
गातां नव निधि आय ॥ वारे वरसां वीरजी तप कियो, दूर करै
सहु पाप ॥ व० २ ॥ वे कर जोम्नी ए हूं बीनवूं, श्रीजिनशासन
राय ॥ नाम लियांयी नव निधि संपजै, दरिगण डरित पुजाय ॥
व० ३ ॥ नव चोमासा जिनजीरा जाणियै, एक कीयो उम्माश ॥
पांचे ज्ञासा ठ बलि जाणियै, बारकेकोजीमाश ॥ व० ४ ॥ बहुतर
माशाखमण जग जीपता, ठ दो मासी रे जाण ॥ तीन अढाई दो
दो कीया, दो दोढ माशी वखाण ॥ व० ५ ॥ जइ महाजइं शि
वगति जाणियै, उत्तम एहना प्रकार ॥ विचमें पारणो स्वामी नहि
कियो, नहि कीयो चोत्रो आहार ॥ व० ६ ॥ तिहुं उपवासे प्रति
मा वारमी, कीथा वारे जी माश ॥ दोयसें बेला जिनजीरा जा
णियै, इण गुणतीस बिजास ॥ व० ७ ॥ तीनसे पारणा जिन
जीरा जाणियै, तीन गुणतीस पचास ॥ एदमें स्वामी केवल पा
मिया, पाम्या मुगति आवास ॥ व० ८ ॥ कलश ॥ इम वीर जि
नवर सयल सुखकर अतहि डुकर तप करी, संपमसु पाली कर्म
टाली स्वामी शिव रमणी वरी ॥ सेवक पजणें वीर जिनवर चरण
वंदित तुमतणा, संसार कूप पमंत राखो आपो स्वामी सुख पणा
॥ ७ ॥ इति उम्मासी स्तवन ॥

॥ अथ छम्मासी तप विधिः ॥

॥ शासनके अधिपती श्रीमद्दावीरस्वामी सर्वसैं उत्कृष्ट उ
म्मासी तप किया. इस वास्ते इस बखतमें संघयण बल पराक्रम
के हीनपणोंसैं इकसार उम्मासी तप निर्दि कर सकतेहैं तोनी उम्मा
सीके १०० उपवास करणोंसैं जयन्य उम्मासी तपके फलकों जीव
प्राप्त होता-हे. उर देव वंदनादि क्रिया करै, स्तवन उम्मासीतपका
सुणै, इस स्तवनमें वीरप्रभूके सर्व तपस्याकी संख्या कही है.
(श्रीमद्दावीरस्वामीनाथायनमः) इसका २००० गुणना करै. वीर
प्रभूके नामका तीर्थ होय उहां यात्रा करणोंको जावै, शुद्ध ज्ञानना
जावै, शक्ति मुजब उद्यापन करै. इस तपस्याके प्रज्ञाव लघुकर्मों
जीव होकर अनंतसुखकों प्राप्त होय ॥ इति उम्मासी तप विधि ॥

॥ अथ बारेमाशो तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ दान उत्कृष्ट धरी दीजीयै ॥ ए देशो ॥ त्रिभुवन नाप
क तूं धणी, आदि जिनेसर देव रे ॥ चौसठ इंद्र करै सदा, तुज
पदपंकज सेव रे ॥ त्रिभु० १ ॥ प्रथम जूयाल प्रभु तूं धयो, इस
अवसरपणी काल रे ॥ तुज सम अवर न को प्रभु, तूं प्रभु दीनबखाल
र ॥ त्रि० २ ॥ प्रथम तर्थकर तूं सही, केवलज्ञान दिणंद रे ॥
धर्म प्रज्ञापक प्रथमतूं, तूंही हे प्रथम जिनंद रे ॥ त्रि० ३ ॥ अंतर
अरि जे आत्मतणा, काल अनादि धिति जेह रे ॥ ते तप शक्तियें तें
दणया, आत्म वीरज गुण गेह रे ॥ त्रि० ४ ॥ तादरी शक्ति कुण
कह सकै, जेहनो अंत न पार रे ॥ छद्दश भाशनो तप कर्यो, तेह
अपानक सार रे ॥ त्रि० ५ ॥ एह उत्कृष्ट तप वरणयो,
आगममें जिनराज रे ॥ ते करवूं अति आकरं, तप विना किम
सरे काज रे ॥ त्रि० ६ ॥ तीनसैं साठ उपवास ते, ते इण पंचम
काल रे ॥ अवसर आदरै क्रम विना, ते पिण जवि सुविताल रे ॥

त्रि० ७ ॥ ए तप गुरुमुख आदरै, शास्त्रतणे अनुसार रे ॥ पन्थि
मणादिक ज्ञावथी, शुद्ध क्रिया मन धार रे ॥ त्रि० ८ ॥ चित्त स
माधि शुद्ध ज्ञावथी, धरे ताहरो ध्यान रे ॥ ते नर उत्तम फल लदै,
कवि लदै उत्तम ग्यान रे ॥ त्रि० ९ ॥ काल अनादि संसारमें, ज
न्म मरणतणा दुःख रे ॥ ते लदै धर्म पाया विना, तप विना किम
हुवै सुख रे ॥ त्रि० १० ॥ दिव लह्यो नरजव पुन्यथी, बलि ल
ह्यो श्रीजिन धर्म रे ॥ तत्त्वनी रुचि थइ दे मुऊँ, दिव मिथ्यो म
नतणो जर्म रे ॥ त्रि० ११ ॥ जव२ एक जिनराजनो, सरण हो
ज्यो सुखकार रे ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, में कियो हिवै परिहार
रे ॥ त्रि० १२ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र ए, मोक्षमार्ग सुविशाल रे
॥ जव२ जे मुऊँ संपजै, तो फलै मंगलमाल रे ॥ त्रि० १३ ॥
श्रीजिनशासन तप कह्यो, ते तप सुरतरु कंद रे ॥ धन२ जे नर
आदरै, काटै ते करमनो फंद रे ॥ त्रि० १४ ॥ कलश ॥ इम ना
जिनंदन जगत वंदन सकल जन आनंदनो, में थुण्यो धन दिन
आजनो मुऊँ मात मरुदेवी नंदनो ॥ संवत सुनेत्राकासनिधि शशि
नपर श्रीवालूचरै, श्रीजिनसौजाग्य सुरिंद के सुपशाय विजय वि-
मल वरै ॥ १५ ॥ इति श्री वारे माशी तप स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ वारि माशी तप विधिः ॥

॥ प्रथम तीर्थकर श्रीरूपजदेवस्वामी उत्कृष्ट वारै माशी तप
स्या करी. इस वास्ते जव्यजीव वारैमाशी तपस्याका ज्ञाव लायकै
(३६०) तीनसेसाठ उपवास करै. जिस दिन व्रत होय उस दिन
देववंदनादि क्रिया करै, वारे माशी तपका स्तवन सुनै ॥ (श्री
रूपजदेवस्वामीनाथायनमः ॥) इसका १००० गुणना करै.
तपस्या पूर्ण होनेसे सिद्धगिरी यात्रा करणको जावै, शक्ति माफक
उद्यापन उठव करै. इस तपस्याके प्रसाद जव्यजीवोके कच्ची छुल

दौजाग्यकी प्राप्ति न होय, सदा तपतेज बढ़ता रहे ॥ इति वारैम
शी तपस्या विधिः ॥

॥ अथ अठाईस लब्धि स्तवन लिख्यते ॥

॥ उदा ॥ प्रथमं प्रथमं जिनैसरु, शुद्ध मने सुखका ॥
लब्धि अष्टावीस जिन कही, आगमने अधिकार ॥ १ ॥ प्रथम
रणे प्रगट, जगवतीसूत्र मऊार ॥ पन्नवणा आवस्यके, वारु लब्धि
विचार ॥ २ ॥ आंधिल तप कर ऊपजै, लब्धां अष्टावीस ॥ ए
हिव परगट अरघसुं, सांजलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ (ढाल ॥ सफ
संतारनी ॥) अनुक्रमे देव अधिकार गाथातणे, लब्धिनां नाम
परिणाम सरिपा जणे ॥ रोग सह जाय जसु अंग फरस्यां सही,
प्रथम ते लब्धि ठै नाम आमोसही ॥ ४ ॥ जासु मल मूत्र उरव
समा जाणियै, बीय वप्पोसही लब्धि वखाणियै ॥ श्लेष्म उरव
सारिखो जेहनो, तीजी खेल्होसही नाम ठै तेहनो ॥ ५ ॥ देहना
मैलथी कोठ दूरे हुयै, चोथी जल्होसही नाम तेहनो ठवै ॥ केश
नख रोम सहू अंग फरस्यां सही, रहैनही रोग सव्वोसही ते कही
॥ ६ ॥ एक इंडिय करी पांच इंडियतणा, जेद जाणे तिका नाम
संजिणना ॥ वस्तु रूपी सहू जाणियै जिण करी, सातमी लब्धि
ते अबधिग्याने करी ॥ ७ ॥ (ढाल ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए
चाल ॥) हिव आंगुल अठियै ऊणो मानुषक्षेत्र, संज्ञा पंचेडि तिहां
जे वसय विचित्र ॥ तसु मननो चिंनित जाणे थूल प्रकार, ते रुजू
मति नामे अठम लब्धि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुषक्षेत्रे संज्ञा
वंत, पंचेडिय जे ठै तसु मन वातांतंत ॥ सूखम परजायें जाणे
सहू परिणाम, ए नवमी कहियै विपुलमती सुज नाम ॥ ९ ॥
जिण लब्धि प्रजावें ऊंसी जाय आकाश ॥ ते जंघाविज्ञाचारण
लब्धि प्रकाश ॥ जसु वचन सरापै खिणमें खेहू थाय, ए लब्धि

इग्यारमी आसीविस कहिवाय ॥ १० ॥ सहू सूखम वादर देखै
 लोकालोक, ते केवल लवधो बारमियै सहू थाक ॥ गणधर पद ल
 हियै तेरम लवधि प्रमाण, चवदम लवधे करी चवदै पूरव जाण
 ॥ ११ ॥ तीर्थकर पदवी पामे पनरमी लवधि, सोलम सुखदाई चक्र
 वर्त्तिपद रिद्ध ॥ बलदेवतणो पद लहियै सतरमी सार, अठारमी आखा
 वासुदेव विस्तार ॥ १२ ॥ मिसरी घृतकरी मैढया जेह सवाद, एहवी
 लहै बाणी जगशीशम परसाद ॥ जणियो नवि जूलै सूत्र अरथ सुविचा
 र, ते कुट कयुद्धो बीसम लवधि विचार ॥ १३ ॥ एके पद जणियां आ
 वै पद लख कोन, इकबीसमी लवधो पयाणुसारणी जोन ॥ एके
 अरथे करी ऊपजै अरथ अनेक, बावीसम कहियै बीजयुद्धि सुविवेक
 ॥ १४ ॥ (दाल ॥ कपुर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए चाल ॥) सो
 लह वैशतणी सही रे, वाइक सगति बखाण ॥ तेह लवधि तेवीस-
 मी रे, तेजोलेस्या जाण ॥ चतुर नर सुणज्यो ए सुविचार ॥
 आगमने अधिकार, च० ॥ वारू लवधि विचार ॥ च० ॥ एआंकणी
 ॥ १५ ॥ चवद पूरवधर मुनिवरू रे, उपजंता संदेह ॥ रूप नवो रचि
 मोकले रे, लवध आहारक एह ॥ च० १६ ॥ तेजोलेस्या अगननी
 रे, उपशमवा जलधार ॥ मोटी लवधि पचवीसमी रे, शीतोले
 श्या सार ॥ च० १७ ॥ जेस सगतिसुं विकुरवै रे, विविध प्रकारे
 रूप ॥ सदगुरु कहै ठावीसमी रे, वैक्रिय लवधि अनूप ॥ च० १८
 ॥ एकश पात्रे आदमी रे, जीजौन केइ लाख ॥ तेह अस्कीणम
 हानती रे, सत्तावीसमी साख ॥ च० १९ ॥ चुरै सेन चक्रोसनी
 रे, संघादिकने काम ॥ तेह पुलाक लवधी कही रे, अणवीशमी
 नाम ॥ च० २० ॥ तेज शीत लेस्या त्रिहुं रे, तेम पुलाक विचार
 ॥ जगवतीसूत्रमें जाणियो रे, ए त्रिहुनो अधिकार ॥ च० २१ ॥
 पन्नदणा आहारनी रे, कलपसूत्र गणधार ॥ तीनर इकर मिली रे,

वारुं धाव विचार ॥ घ० २२ ॥ प्रश्रव्याकरणे सही रे, वाकी व
 वधां घीश ॥ साजलतां सुख ऊपजे रे, दोलत हुवै निशदीत ॥
 घ० २३ ॥ (कलश) संवत सत्तरैसे ठवीसे मेरुतेरस दिन जले,
 श्रीनगर सुखकर लूणकरणसर आदिजिन सुपसाजलै ॥ वाचना
 चारज सुगुरु सानिध विजय हरख विलासए, श्रीधर्मवर्द्धन स्तवन
 जणतां प्रगट ग्यान प्रकास ए ॥ २४ ॥ इति २८ लब्धि स्तवन ॥

॥ अथ अष्टाईस लब्धि तप विधिः ॥

॥ शुद्ध दिन गुरुके पास २८ लब्धि तप ग्रहण करै, अन
 क्रमसे २८ उपवास करै, स्तवन सुणे. जिस दिन जो लब्धिका व
 पवास होय उसही नामका गुणना करै. तप पूर्ण होणसे शक्ति
 सुजेव उद्यापन करै. इस तपस्यासे निर्मल बुद्धि उत्पन्न होय, तथा
 आनंद रहै. इति २८ लब्धितप विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ १४ पूर्व स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ वे कर जोमी ताम ॥ ए देशो ॥ जिनवर श्री
 वर्द्धमान, चरम तीर्थकर, प्रह छठी प्रणमं मुदा ए ॥ श्रुतधर श्री
 गणधार, सूरि शिरोमणी, नमतां नव निधि संपदा ए ॥ १ ॥ चवदैष्ट
 व नाम, सूत्रै जूजूवा, वीरजिनंदे जापिया ए ॥ ते दिव सुगुरु पर
 य, वरणविस्थुं इहां, आगममें जिम उपदिस्थाए ॥ २ ॥ पहिला पू
 उत्पाद १, दूजो अत्रायणी २, वीर्यवाद ३ तीजो नमूं ए ॥ अहि
 नास्तिप्रवाद ४, सत्ता जाणियै, नारग रयण पंचम ५ गिणुं ए ॥
 ॥ ३ ॥ ठगो सत्यप्रवाद ६, सत्तम आतम ७, कर्मप्रवाद अठम गिणुं
 ए ८ ॥ प्रत्याख्यानप्रवाद ९, नामे नवम, विद्याप्रवाद दशम
 कह्यो ए १० ॥ ४ ॥ इग्यारम नाम कळ्याण ११, प्राणायु प्रारमो
 क्रियाविशाल तेरम जणो ए १३ ॥ विंडुसार १४ इस नाम
 ए कह्यो, साख थकी में संग्रहा ए ॥ ५ ॥ (ढाल २ ॥ श्री

विमलाचल शिर तिलो ॥ ए देशी ॥) उत्पाद पूर्व सोढामणो,
 कोटी पद परिमाण ॥ पट जाव प्रगट ठै ते जिहां, त्रिपदी जाव
 विनाण ॥ १ ॥ सर्व इत्यपर्ययतणो, जीव विशेष प्रमाण ॥ दूजो
 पूर्व अमायणी, विभुं लख पद जाण ॥ २ ॥ पद लख सत्तर जेदनी,
 संख्या परगट एद ॥ वीर्य प्रव्रता जीवनी, जापी तीजै तेद ॥ ३ ॥
 चोथे पूर्वे जे कह्यो, अस्ति नास्ति प्रवाद ॥ पद संख्या साठ लाख-
 नी, ससजंगी स्यादाद ॥ ४ ॥ ग्यान प्रवाद पद पंचमो, सूत्रे आणयो
 जोरु ॥ मत्यादिक पण जेदसुं, पद संख्या इक कोरु ॥ ५ ॥ सत्य-
 प्रवाद ठो कहुं, जापुं सत्य स्वरूप ॥ संख्या पद इक कोरुनी,
 जापी अगम अनूप ॥ ६ ॥ नित्यानित्यपणो इहां, आतम इव्य
 सुजाव ॥ ठीस पद कोरु जेहना, सूत्रे आण्या जाव ॥ ७ ॥ कर्म
 प्रवादतणो द्विवै, प्रगटणें अधिकार ॥ लाख असी पद जेदना,
 कोरु इग निरधार ॥ ८ ॥ नवमो पूर्व कहुं द्विवै, नामे प्रत्याख्या-
 न ॥ लाख चोरासी जेदना, पद संख्या चित आन ॥ ९ ॥ अति-
 शय गुण संयुत जणी, साधन साध्य निदान ॥ विद्या अनुपम
 सातसै, कोरु वरस लख जान ॥ १० ॥ कढ्याण नाम इयारमो,
 ठीस कोरु प्रमाण ॥ ज्योतिषशास्त्र विचारणा, चोविद देव क-
 ढ्याण ॥ ११ ॥ प्राणायु पद वारमो, वप्पन्न लख इग कोरु, प्राण
 निरोधन जे क्रिया, शास्त्रे आणयो जोरु ॥ १२ ॥ रूपायिक्यादिक
 जे क्रिया, बंद क्रिया सुविशाल ॥ पद संख्या नव कोरुनी, तेरमी
 क्रिया विशाल ॥ १३ ॥ लोकसारविंशु चवदमो, नामे अरथ नि-
 दाल ॥ पद संख्या इग कोरुनी, लाख पचवीस संजाव ॥ १४ ॥
 लोकप्रत्यय देखश जणी, संख्या गज परिमाण ॥ सोले सदस अरु
 तीनसै, नर तयासी जाण ॥ १५ ॥ पूरव संख्या ए कही, गुण-
 मालाची देख ॥ आगे बुधजन सोधज्यो, वाकी देश विशेष ॥ १६ ॥

(ढाल ॥ वीर जिनेसर उपदिसै ॥ ए चाल) सूत्रे गुंघे गणधर
 अरथै अरिदंत ज्ञासै रे ॥ ते श्रुतज्ञान नमूं सदा, पाप तिमर जि
 नासै रे ॥ १ ॥ वाणी रे जिणंदनी, सुणज्यो चित हित आणी रे, त
 रमणता अनुसरै, संपूरण गुण खाणी रे ॥ वा० २ ॥ विषय कपा
 तजी करी, ग्यान जगत उर धारी रे ॥ विधि संयुत जिनमंसि
 प्रभु मुख पाश जुहारी रे ॥ वा० ३ ॥ तप जप संजम आदरी
 श्री श्रुतज्ञान निधानो रे ॥ सदगुरु चरण नमी करी, संवरजो
 प्रधानो रे ॥ वा० ४ ॥ अकृत लेइ ऊजला, गुंहली सुंदर कीजै रे ॥
 नाण दंसण चारित्रनी, दिगली तीन धरीजै रे ॥ वा० ५ ॥ चंव
 पूर्व व्रत इण परै, सुगुरु संजोगे लेई रे ॥ विधिसुं पुस्तक पूजीवै,
 चित अति आदर देई रे ॥ वा० ६ ॥ इम तप संपूरण अयां, ऊज
 मणो दिव कीजै रे ॥ घर सारू धन खरचने, नरजव लादो लीजै
 रे ॥ वा० ७ ॥ पूठा परत विटांगणा, पूरव नाम प्रमाणो रे ॥ नव
 करवाली कोथली, लेखण ठवली जाणो रे ॥ वा० ८ ॥ देहरै देव
 जुहारने, आरती मंगल कीजै रे ॥ सनात्रपूजा बलि साचवी, त
 सुधारस पीजै रे ॥ वा० ९ ॥ इण पर तप आराधतां, डुरगति द
 रण वेदै रे ॥ चवदह रज्जु सिरोमणी, जीव अक्यगति वेदै रे ॥
 ॥ वा० १० ॥ तप आराधन विधि जणी, आगम बचने जोई रे ॥
 जविषण पिण तुमे आदरो, ज्युं जवब्रमण न होई रे ॥ वा० ११ ॥
 (कलश) इम सयल सुखकर गद्य खरतर तपे रधि जिम कान्त
 सौजाग्यसूरि मुणिंद इण पर कह्यो पूर्व वृत्तंत ए ॥ संवत अमी
 वरस विन्नू नयर श्रीबालूचरै, ए स्तवन जणतां श्रवण सुगतां स
 मनवंगित फले ॥ १२ ॥ इति चवद पूर्व स्तवन संपूर्ण ॥

॥ जय १२ पूरव तप विधि लिख्यने ॥

॥ चवदे पूर्वकी तपस्याके १२ उपवास करे, जिम दिन

पूर्वका उपवास होय उत्ती पूर्वका नामसे (२०००) गुणना करै,
तवन सुणे, इस स्तवनमें १४ पूर्वके नाम और विधि सर्व लिखी
इस मुजब विवेकी जीव गुरुते समझके करै. यह तपस्याके कर-
तेसं ज्ञानावरणादि कर्मका हयोपशम होय, शुभ ज्ञानका उदय
होय ॥ इति १४ पूर्व तप विधिः ॥

॥ अथ तिलक तपस्या स्तवन लिख्यते ॥

॥ वृद्धा ॥ सासण देवी सारदा, वाणी सुधारस वेद ॥ बाल-
क हित ज्ञानी बगतिपै, सुबुधि सुरंगी रेख ॥ १ ॥ नवम अंग जिन
पूजतां, मन लहि शुभ परिणाम ॥ तप तिलके फल पामिये,
दवदंती गुणधाम ॥ २ ॥ (टाल ॥ वीर जिणेसर उपदितै ॥
ए देशी) कमला जिम कुंरुणपुरै, जुजवल नरपति जीमो रे ॥
पदमनी पदम सुवासना, श्वेतगज स्वप्ने नीमो रे ॥ पदम०
१ ॥ परतरुय फल ए पुन्यना, प्रसवी सुता पूरै माशै रे ॥ दवदंती
नाम दीपतो, गुणमणि बुद्धि प्रकाशै रे ॥ पद० २ ॥ चौसठ
कला विचक्रणा, रूप गुणे करी रंजना रे ॥ देवगुरु धर्म दीपावती,
व्रतधारी दृढ बंजना रे ॥ प० ३ ॥ प्रतिमा पूजै शांतनी, देवे दीधी
त्रिकालो रे ॥ मात पिता प्रमोदसुं, स्वयंवर वरमालो रे ॥ प० ४ ॥
उज्जयाधिप श्रीनिपदनो, नल लिखियो निलानै रे ॥ आनंदसु
पंथ आवतां, पूरव पुन्य उघानै रे ॥ प० ५ ॥ मझम रयणी तम
जरी, मधुरवकुंत इहां वनमें रे ॥ मणि जाले तेज दिनमणी, जा
धत देखी अदो मनमें रे ॥ प० ६ ॥ ग्यानधारी गुरु कोइ मिलै,
पूठियै एह प्रसन्नो रे ॥ कर्म बलै मुनि आविया, परीसद जीत
मदन्नो रे ॥ प० ७ ॥ पंच जीत पंच पावता, टालता दुस्सद स-
वला रे ॥ संजम शुद्ध संजालतां, उद्यम शिवसुख कमला रे ॥ प०
८ ॥ उद्धा ॥ मणि तेजै मुनि तरुण्ये, रथ अकी स्त्री जरतार ॥

वैवै तीन प्रदक्षणा, विधिसुं चरण जुहार ॥ ए ॥ देशना सुण पा
 वन घया, ज्ञान सुधारस पाय ॥ कों तप परजव तिलक है, कदि
 वै श्रीमुनिराय ॥ १० (दाव-जरत नृप जावसुं ए ॥ ए देशो) ॥
 मधुर स्वरै मुनिवर कहे ए, नाणी गुरु सुपसाय, दीपक सहू लोकना
 ए ॥ कर्म शुजाशुज परजवै ए, इह जव फल निपजाय, कर्म
 गति वंकमी ए ॥ ११ ॥ उद्दिनाण जव प्रागनो ए, नृप सुणे निर
 मल जाव, समकित साहीयो ए ॥ धर्मवती को नृपवधू ए, जा
 एयो हे तत्व प्रस्ताव, साची जिन वाचना ए ॥ १२ ॥ चोथ प्रमुह
 नृप चूंपसूं ए, किरिया शुद्ध करी एह, जलै चित जावसुं ए ॥
 ॥ नवांग पूजै तिलकसुं ए, चाढै जिन चोवीस, रथरा कंवण ब
 ष्या ए ॥ १३ ॥ तिलकरसें पामियो ए, समकित एह सतीस, जनम
 सफलो गिणे ए ॥ जगवन तप विधि जाविये ए, नज कहै बोध
 घरीस, पीहर पट्कायना ए ॥ १४ ॥ आदिनाथ अरिहंतना ए,
 पट् उपवास कहीस, त्री चोवीहारस्युं ए ॥ चोथ दोय जिन वीरना
 ए, अजितादिक वावीस, आशा गुरु शिर वही ए ॥ १५ ॥ पोष
 त्रीस तीने थया ए, पूजन तिलक चढाय, तारक जगदीतने ए ॥
 उद्यापन संघ जक्तिसुं ए, जन्म सफल नरराय, सूधै मन साधिये
 ए ॥ १६ ॥ सुण वाणी समकित ग्रहे ए, पय प्रणामी गुरु वीर, चित
 कमाहीयो ए ॥ इरा पर जे जवि आदरे ए, थावै चरम शरीर, मूज
 सुख शासतो ए ॥ १७ ॥ (कलश) श्रीशांति दाता त्रि जगत्राता जविक
 ध्याता सुखकरा, इम सतीय साध्यो तप आराध्यो सुजस वाघ्यो
 शिवधरां ॥ आगमे आखै सरीय साखै सुगुरु जापै सुण थया, शुद्ध
 ध्यावै जविक जावै विजय विमल जिनवर कया ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ अथ तिलकतपस्या विधि ॥

॥ शुज दित गुरुके पास तिलकतपस्या ग्रहण करकै तीस

उपवास करै. प्रथम श्रीरूपज्ञदेवस्वामीके ४ उपवास करै, जब (श्री रूपज्ञदेवस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस पदका १००० गुणना करै. फेर श्री महावीरस्वामीके २ उपवास करै, तब (श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस पदका १००० गुणना करै. और श्री अजितनाथस्वामीको आद लेकै (२२) बारस जगवंतोंका बारस उपवास करे, जब उन २ जगवंतोंके नामसे दो दो हजार गुणना करे, हर सर्व विधि स्तवन मुजब करे ॥ इति तिलकतपस्या विधिः ॥

॥ अथ शोलिये तपका स्तवन ॥

वीर जिनेसर ज्ञापियो रे लाल, सहु व्रतमें सिरताज, जवि प्राणी रे ॥ कपायगंजन तप आदरो रे लाल, इणथी पातिक जाय ॥ ज० वी० १ ॥ कोन वरष तप आदरे रे लाल, क्रोध गमावै फल तास ॥ ज० ॥ मान करे जे प्राणिया रे लाल, ते जगमें न सुहाय ॥ ज० वी० २ ॥ व्रतमें माया आदरी रे लाल, स्त्रीपणो पायो मखिनाथ ॥ ज० ॥ रूप पराव्रत कीया यणा रे लाल, आपाढजूति गणिका साथ ॥ ज० वी० ३ ॥ च्यार कपाय ठे मूलगा रे लाल, उत्तम सोले जेद ॥ ज० ॥ इम जव २ जमतो थको रे लाल, जीव पामे बहु खेद ॥ ज० वी० ४ ॥ एकासण व्रत जे करे रे लाल, लाख वरस डुख हाण ॥ ज० ॥ नीवी व्रत दूजो कह्यो रे लाल, ए धारो जिनवर बाण ॥ ज० वी० ५ ॥ आंधिलनो फल बहु कह्यो रे लाल, उपजै लवधि अपार ॥ ज० ॥ उपवास करतां जा वसुं रे लाल, पामे जवनो पार ॥ ज० वी० ६ ॥ इम दिन शोले तप करो रे लाल, पूरण व्रत ए थाय ॥ ज० ॥ देव गुरु पूजा करै रे लाल, मन वंछित फल थाय ॥ ज० ॥ नर सुर रिखि पिण जोगवे रे लाल, निश्चै मुगति जाय ॥ ज० वी० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शोलिये तपकी विधि लिख्यते ॥

॥ क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, यह च्यार कपायमें

अनंतानुबंधी १, अग्रत्याख्यानी २, प्रत्याख्यानी ३, संज्वलन ४, इस
मुजब एकेक कपायके च्यार ७ जेद करणेंसे १६ होते है, इनकों दूर कर
णेंको प्रथम एकाशना १, निवि २, आंविज ३, उपवास ४, इस
अनुक्रमसे १६ दिन तप करै, स्तवन सुणे, तप पूर्ण होणेंसे यथा
शक्ति उद्यापन करै ॥ इति शोलिया तप विधिः ॥

अथ पैतालीस आगम तप विधि ॥

गुरुके पास शुद्ध दिन पैतालीस आगमतप ग्रहण करै, १
दूज, ५ पांचम, ११ इग्यारस, इत्यादिक ज्ञानतिथिके दिन अनुक्रम
से उपवास वा एकाशना करै, जिस दिन जो आगमका तप
होय उसी आगमका गुणना करै, सिद्धांत लिखावै, सिद्धांत सुणै,
पढ़नेवालोंको साहाय करै, अपनी शक्ति मुजब सर्व ठिकारो ज्ञान
की वृद्धि करै (प्रणमुं श्रीगुरु पाय) इत्यादि ज्ञानके स्तवन
सुणे, सो आगे लिखा है, एते तपस्याके ४५ दिन पूर्ण होणेंसे
पैतालीस आगमकी पूजा करावै, मंदिर उपाश्रयमें ज्ञानोपगण
चढ़ावै, इस तपस्याके करणेंसे मुख्यपणा दूर हो के शुद्ध आत्मज्ञान
की प्राप्ति होय ॥

अब ४५ आगमका गुणना लिख्यते ॥

॥ प्रथम इग्यारै अंग ॥

- | | |
|-----------------------------|-------------------------------|
| १ श्रीआचारांगजीसूत्रायनमः | २ श्रीसुयगंगांगजीसूत्रायनमः |
| ३ श्रीगणांगजीसूत्रायनमः | ४ श्रीसमवायांगजीसूत्राय० |
| ५ श्रीजगवतीजीसूत्रायनमः | ६ श्रीज्ञाताधर्मकथाजीसूत्रा० |
| ७ श्रीउपासगदशाजीसूत्रा० | ८ श्रीअंतगदशाजीसूत्रा० |
| ९ श्रीअणुत्तरोववाइजीसूत्रा० | १० श्रीप्रश्रव्याकरणजीसूत्रा० |
| ११ श्रीविपाकजीसूत्रायनमः॥ | |

॥ अथ चारै उपांग नाम ॥

- | | |
|-------------------------|---------------------------|
| १ श्रीउववाइजीसूत्रायनमः | २ श्रीरायपसेणीजीसूत्रायन० |
|-------------------------|---------------------------|

- ३ श्रीजीवाग्निगमजीसूत्राय० ४ श्रीपद्मवर्णाजीसूत्रायनमः
 ५ श्रीजंबूद्वीपपन्नतीसूत्राय० ६ श्रीचंदपन्नतीसूत्रायनमः
 ७ श्रीसूरपन्नतीजीसूत्राय० ८ श्रीकप्पियाजीसूत्रायनमः
 ९ श्रीरूपवर्तिसियाजीसूत्राय० १० श्रीपुष्पियाजीसूत्रायनमः
 ११ श्रीपूष्पचूलियाजीसूत्राय० १२ श्रीवन्दिदसाजीसूत्रायनमः

॥ अथ छ छेदका नाम गुणना ॥

- श्रीव्यवहारछेदसूत्रायनमः २ श्रीवृहत्कल्पजीसूत्रायनमः
 श्रीदत्ताश्रुतस्कंधजीसूत्राय० ४ श्रीनिशीथजीसूत्रायनमः
 श्रीमहानिशीथजीसूत्राय० ६ श्रीजीतकल्पजीसूत्रायनमः

॥ अथ दस पयसा नाम गुणनो ॥

- चोत्तरणपयसाजीसूत्रायन० २ संशारपयसाजीसूत्रायनमः
 श्रीतंडुलपयसाजीसूत्रायन० ४ श्रीचंदाविज्जियासूत्रायनमः
 श्रीगणविज्जियासूत्रायनम० ६ श्रीदेवविज्जियासूत्रायनमः
 श्रीवीरघ्नवोजीसूत्रायनमः ८ श्रीगच्छाचारजीसूत्रायनमः
 श्रीज्योतिष्करंजीसूत्राय० १० श्रीमहापञ्चस्काणजीसूत्राय०

॥ मूढ सूत्रके नामका गुणना ॥

- श्रीधावश्यकजीसूत्रायनमः २ श्रीसुतराध्ययनजीसूत्राय०
 श्रीउपनिर्मुक्तीजीसूत्रायन० ४ श्रीदशमीकालिकजीसूत्राय०
 श्रीअनुयोगद्वारजीसूत्राय० ६ श्रीनंदीमूत्रजीसूत्रायनमः

॥ अथ पैतालीस आगम स्तवन लिख्यते ॥

॥ वृद्धा ॥ चोवीसे श्रीतीर्थशक्ति, नमूं देव अरिदंत ॥ अर्थ
 ते गणपपुर, द्वादश अंग मदंत ॥ १ ॥ त्रिपदी लहि गणपति
 सूत्र अर्थ संज्ञेग ॥ अक्षररूपै सारदा, प्रणमूं त्रिकरणा योग ॥
 । टीका कर्ता जगतगुरु, सूत्र करै गणधार ॥ पंचांगी युत वि-
 नय निक्षेप विचार ॥ ३ ॥ दुपम काले दुर्जिकसे, जूले बा-
 ग ॥ कंठ पाठसें लिखत कर, रचना रची अजंग ॥ ४ ॥

खंदिल अरु देवर्दि गणि, आचारज सय पंच ॥ चोरासी आंग
 लिखै, कोटि ग्रंथ तज खंच ॥ ५ ॥ काल दोपसैं अत्र मिलै, आंग
 पैतालीस ॥ ताको मुनि विवरण करै, माने विसवावीस ॥ ६
 (दाल ॥ जगतगुरु त्रिसला नंदनजी ॥ ए देशी) ॥ आचारांग पद
 लो कह्यो जी, मुनि आचार विचार ॥ सुयगमांग दूजोअत्रै जी
 पापंभी निरधार ॥ जगतगुरु ज्ञाखै वीर जिनंद ॥ १ ॥ दस ठाण
 ठाणंगमे जी, समवायांग संख्यात ॥ सहस्र उत्तीस जल प्रश्नो
 जी, जगवई अंग विज्ञात ॥ ज० २ ॥ धर्मकथा ज्ञाता ज्ञानी जी,
 दस आवक व्रतधार ॥ दसाउपासक सातमो जी, अंग कह्यो निर
 धार ॥ ज० ३ ॥ अंतगुरु केवली जे अया जी, वरणन अष्टम
 अंग ॥ पंचानुत्तर जे गया जी, अणुत्तरोवाई चंग ॥ ज० ४ ॥
 अंगुष्ठादिक प्रश्नो जी, प्रश्नव्याकरण नाम ॥ सुख दुःखना फल
 ज्ञापिया जी, सूत्र विपाके ताम ॥ ज० ५ ॥ अठार सहस्र आ
 चारांगमें जी, पद संख्या परिमाण ॥ वर्षा संख्याते पद दुवे जी,
 ठाण डगुण सब जाण ॥ ज० ६ ॥ उववाई उपांगमे जी, कोशिक
 अंबरु रूप ॥ वर्णन नगरी आदि दे जी, सांजले जविजन चूप ॥
 ज० ७ ॥ सूरियांज पूजा करी जी, जिन प्रतिमा नवरंग ॥ इय
 ज्ञाव बिहुं जेदसूं जी, रायप्रश्नी चित चंग ॥ ज० ८ ॥ जीवतपो
 अजिगम सही जी, विजयदेव प्रस्ताव ॥ जीवाजिगम तीजो ज्ञो
 जी, सुर कृत बहु विप्र ज्ञाव ॥ ज० ९ ॥ पन्नवणामें जाणयो
 जी, जीवानीव विचार ॥ जंबूद्वीपनी वर्णना जी, नाम थकी गुण
 धार ॥ ज० १० ॥ सूर चंद्र विग्रह गती जी, पन्नत्त बिहुं जाण ॥ कपिया
 कप्पवर्म्मिसियाजी, पुष्पिया नाम वखाण ॥ ज० ११ ॥ पुष्पचू सिया
 जाणीये जी, वह्निदंशा इण नाम ॥ नामथी अर्थ पिण्णजो
 सांजलता सुख धाम ॥ ज० १२ ॥ (दाल २ ॥ रुपाली साज

३ श्रीवायुर्नगणधराय नमः
४ श्रीशक्रर्नगणधराय नमः
५ श्रीसिधर्मस्वामीगणधराय ०
६ श्रीमहोदधर्नगणधराय नमः
७ श्रीशक्रर्नगणधराय नमः
८ श्रीशिवर्नगणधराय नमः
९ श्रीविवर्नगणधराय नमः

(৯৫৯)

उपधान वदो नर नारी, वेदो नर नारी, वेदो नर नारी ॥ १ ॥
 नर उपधान कदो सिद्धो, नो नर नारी वेदो ॥ २ ॥
 नो अपा सिद्धो, नपदो नर नारी ॥ ३ ॥
 पाद सभा नर नारी, निन उपधान दोष नो ॥ ४ ॥
 आदेश निरदो, काम सरे नरि कोष नो ॥ ५ ॥
 खनि नरियो, अनिषणो मीरो पाप नो ॥ ६ ॥
 नो, धनर न कदिवप नो ॥ ७ ॥ (दोष २) ॥ नरकारनो
 नर पदितो वीसन जाण, दुरियावदो नो नप वीनो वीन
 न आण ॥ ८ ॥ इण सिद्ध उपधाने सिद्ध नो मंनण, पारे उपधान
 गुरु सुख वे वे वाण ॥ ९ ॥ पूजोसन जीनो पामुडिण उपधान,
 जिण वापण उगणो न नप उपधान प्रथम ॥ १० ॥
 धो, वीकन एव, उपवास अठडि वाण एक गुण वेद ॥ ११ ॥
 धो, वीकन एव, उपवास अठडि वाण एक गुण वेद ॥ १२ ॥
 धो, वीकन एव, उपवास अठडि वाण एक गुण वेद ॥ १३ ॥
 धो, वीकन एव, उपवास अठडि वाण एक गुण वेद ॥ १४ ॥
 धो, वीकन एव, उपवास अठडि वाण एक गुण वेद ॥ १५ ॥
 धो, वीकन एव, उपवास अठडि वाण एक गुण वेद ॥ १६ ॥
 धो, वीकन एव, उपवास अठडि वाण एक गुण वेद ॥ १७ ॥
 धो, वीकन एव, उपवास अठडि वाण एक गुण वेद ॥ १८ ॥
 धो, वीकन एव, उपवास अठडि वाण एक गुण वेद ॥ १९ ॥
 धो, वीकन एव, उपवास अठडि वाण एक गुण वेद ॥ २० ॥
 धो, वीकन एव, उपवास अठडि वाण एक गुण वेद ॥ २१ ॥
 धो, वीकन एव, उपवास अठडि वाण एक गुण वेद ॥ २२ ॥
 धो, वीकन एव, उपवास अठडि वाण एक गुण वेद ॥ २३ ॥
 धो, वीकन एव, उपवास अठडि वाण एक गुण वेद ॥ २४ ॥
 धो, वीकन एव, उपवास अठडि वाण एक गुण वेद ॥ २५ ॥
 धो, वीकन एव, उपवास अठडि वाण एक गुण वेद ॥ २६ ॥
 धो, वीकन एव, उपवास अठडि वाण एक गुण वेद ॥ २७ ॥
 धो, वीकन एव, उपवास अठडि वाण एक गुण वेद ॥ २८ ॥
 धो, वीकन एव, उपवास अठडि वाण एक गुण वेद ॥ २९ ॥
 धो, वीकन एव, उपवास अठडि वाण एक गुण वेद ॥ ३० ॥

सुदृष्टकी वृत्त गीतगोविन्द वृत्त सप्त गुरु पास आर्षे,
 श्रीफल रिक इत्येव दायम् लोके पश्येत् त्रैलोक्ये पापना करी
 नां कदीव समोसरणका विग्रह सो बली वृत्त पर मोक्ष
 लपटके आप सो वस नांदके च्यारि लूण पर च्यार साध्या
 र वावलीका करके गोरव रोर रोक मोक्ष वोर रोर करे सो
 यो पर अहो विदामात्र फल चटवै, एते मालाप्रदेक चर
 मुदपती दायम् लोके गुरुके संग रोरपावरी पलिकसे, प
 आवक खमासमण देके आवकमुदपती पलिकेहै, कर खमास
 देके इवकरनागव तुल्य अमं संघपति मालाआरोहण देव
 मणि वासलिकेप करे, तव गुरु वासकेप करे, एते कर लम
 मण देई तुल्य अमं संघपति माला आरोहण देववंशी, तु
 कहे वंदे, आवक इव कदी गुरुके साध देववंन करे ॥
 ॥ अथ देववंन विधिः ॥
 ॥ प्रथम खमासण देके इडांग गगव चैत्यवंन करे, गुरु कहे करे
 एते गुरु चैत्यवंन बोले, आवक एमोहण कहे आरंभ चैत्यवंन
 कहे एक एक नवकारका काजसग कहे, नमोदेवे सदां कहे गुरु खि
 कहे, एता ॥ अर्धतनूतिश्रय, श्रयपद्याननो नरेः । अर्धदीप्तक
 अहो । रंदासदेसोपते ॥ १ ॥ एते लोकास्तज्जो सवर्णा
 वंदे एव, अचरुं कहे ? नवकारकां खिल कहे, उमिमतं
 शासनस्य नतसदृशं च । श्रियते श्रियते । नवोदयिनापति
 ॥ २ ॥ एते गुरुवरं वंदनं कहे ? नवकारकां खिल कहे,
 नवतयुताभिपद्यते । मिश्रतकिचनानुपपन्नमस, वरुणकी
 विविधा । नद्यास्तु जगती ज्ञायते ॥ ३ ॥ एते सिद्धांतवृत्त
 तः श्रीशानिनाथ आराधनाय करि काजसग वंदे एव, अचरुं
 कहे एक लोकास्तज्जो कहे, नमोदेवे ॥ खिल कहे ॥ श्री

(ከከከ)

(ንክክ)

॥ अथ उपपन्न तप विधि लि० ॥ निर्यकत्वेप्यतो भूया ॥
 ॥ निर्यकत्वेप्यतो कृत सो आसौके विद्यते सर्वे कृतएक दे-
 वल्लोभ आर्द्धो जो परंपरा सो विद्यते ॥ उपपन्नवाना श्रावक
 विद्याभूषण एक धीहीन धेनो दे री विरुती नदी धेनो १, उप-
 पन्नसो सो विद्याकी नौवोनीसर्व एकदे नौवोनी धेनो का-
 रणधूषणसं विन बोरे विरुकी जयया २, उत्कट इत्यादि एक नदी
 धेनो ३, धी नैवका वधायो साग नौ नदी धेनो धृगारयाऽर्द्धा
 धेनो ४, इत्यादि नौवोनी नदि धेनो ५, तद्वर्द्धा पापन नौया
 नदी धेनो ६, अन्न पुण्योवादी सागो माधविष करौसं
 को शूद्र दौनी है अन्यथा नदी ७, अन्न पुण्योवादी को फलवत्
 अथवा कोटीवावत् नदि पदे ८, नौवन इत्यादी जग ऊर्ध्व
 बोरे देवोवादी अन्न माधविष है अर्धोन्नत वत्त रत्त नौ शूद्र ९,
 जितने वधादि उपकरण तप प्रवेशके प्रथम दिन पापसं, इसके
 दो सत्र नौगोनीको दोनो वत्त पलितेदया करायो १०, नौगोनी
 ठिकालो जो आली करौसो बोरे रखे है वो सत्र नौवन करे जित
 दिन पापिनपरसं पलितेदयाको वत्तदे पलितेदया करौसो
 वत्त अथवा नदी ११, करौसो देस कुलप, त्रिक पदया अपवे

देस करे ॥ इति संपन्न साधारण विधिः ॥

वरुही, पीछे सर्वे संपत्ति सामने गुरु धर्मोपदेस देवे, साधनी वल्ल-
 वकाया देकर गुरु पास वासकेप पुनन करके मंत्रिजाके ऊपर
 की धजा सो संपन्न धामसं धेके मंत्रिजाके शरितकर नीन म-
 कुणीवाधिकका गुरु पास पवलाण करे, पीछे मंत्रजी पर वरुणी-
 श्रांस करी संपन्नको माता पहिरावे, दोड़ जल ८ दिन तक सजित
 पहिरावाला पयाशिक पदयामया करे, माता पहिरावाला उच्च-
 वधसं लेके ३ नरकर गृह, पीछे जो माता पहिरावे जितको माता

गरीस, उतरके अणु परादिकम रखा दैय नव. बिना उपधान.
 गरी। जो खी अउपरही पोसा बिधा दैय दैय तिसके दायर
 तिसका दिनका नही। वर उपधानवदिके दैव डेर बोदी खी प्रजात
 मय वनके कहे मुखर तिकाने परदेवे ११, उपधानमय सर वस
 मय अथवा मालकणके दायर पलितेही गुह दैय १३, मय
 कय अउधानादिक आदेस तिसैसादिक मालकणके आदेसम गुह
 दैय १४, किय अउधानकी करालेवली मालकण जो दैय वलत
 तिकमण करे गरी। ययअिन करे सात डेर दैव. वरि. नव गुह
 दैय अथवा नही १५, रजतवदिके नोन दिन नपम नही. गिणे
 दैय १६, महत्त्वयय संवधी आसोन सुतिकी. नया वूड सुतिकी
 गतम आतम नयम दिन तीन नपमय नही गिणे. आय १७,
 तिकमणम प्रजात मय नवकारसीकाही पञ्चकाल करे पीड
 कय करती वलत गुहके पास उपगाम १ अथवा आसिउ
 नीदी ३ अथवा एकामणिका म करे १८, पञ्चकाल पोसी
 पन पदवी नवकरनी पार पीड उपवासवि १९ पार १९, पदवे
 उपधान नप महत्त्व कराले बोनी दिन नदीके आदेसम री
 त आनी दे डस वरति अउपरही पोसा वय नदि आता डस
 दिन नीमरे पदकी पलितेय किय वय मयपोसाके पल
 दैके तारके तय पोसा दैय २०, प्रजातमय उपधानादी गुह
 पम अणुके दैयवदी पलितेके पोय वय मयपण करे
 म पलितेयय डेर अण पलितेयय करे, पीड मुदपय पलिते
 के (उदीपलितेययसिखसिउ डीपलितेययकरे) पम मयपोसा
 म दैव पीड वर वरम तिय वय मयपोसा वय री डेर मय
 म पम दे वरुवसिदिसात १ वरुवकरे नैमपोसाके डेरमरी.
 तिसपम ० तिसपम ० पलितेयय ० पलितेयय ०

कठामणोमं कठामणोपनिगदं (एवम् ॥ ११, पीठे वंदन क्रिया
 वाद सुख तप पुत्र २२, सांस्कृती भरी क्रिया करणी वैकिन
 इतना विरोध है ५२ पानिदेवणा जे श्रम पानिदेवणा नो करै पापु
 उपरि पानिदेवण नही करै, पीठे गुठवदन जे विष वाद लामाममण
 वस है (इहं पानिदेवणसंविदसाम् । जेहं पानिदेवणकरं लक्ष्मणसं
 सिद्धाएकं वृत्तलं संविदसाम् वैमणोवाहं) वाकी एवलीकी नै २२,
 श्याम पानिकमणा दोलसं पाकीवदना सुखतपपुंडना एवम क्रिया
 सब करेना १३, माता एवलयं सांस्कृती माता भजपके भयने
 पर गडीजागरण करै भयानसम आवायु पास माता एवली
 लिसके वाद दिन दश तक प्रशोदिका करणी उदा पोसा नही
 विषा दुआ गी है नो गी लिवदा एकासणा करानामया निर-
 रंजी दोकर है २४, सना उपयान उखर विधिसं वदना, उसके
 आनासुं आवक एकांतर उपवास जे सापुआने उपवास आसल
 निदी एकासणा करै उतनेह उपवासकी संख्या पूर वेणी वैकिन
 दिन संख्याका नियम नही है ॥ इति नियमकवचना समपुष्टिरी-
 एवम कन संसकतीपरिग्रहसह कन गण संपूर्ण ॥
 ॥ अथ उपयान तप विधि लिख्यते ॥
 एवं भगव श्रुत नवकर लिसका उपयान वदलेवाता बारे
 उपवाता भयवा चौवीस आंखि ३५ नीवी अनतलीस एकासणा
 करै १ उपवासकी पूर पूर कर पीठे पाव आयपनकी वाचना
 नमी अदिनपास वैके नमी दोएसवसाहण तककी १ वाचना
 एक दिनमें दोबे लिसके वाद नीन आयपनकी वाचना एसांपवनमा-
 कारी १, सवपवपासणी २, भगवणवचनोस ५२मंडवदभगव ॥ एवं
 आयपनकी इहे दिन एक वाचना करै, फेर इस नवकारके आठ
 आयपनकी एकह वाचना एक दिनमें दोबे नो उपवाते आंखि करै,

कर नैवा करे, नैवेक परले आशिव करे, फेर नैवा करे, फेर आशिव
 करे, फेर नैवा करे पराणा करके आठ अक्षयनीकी एकद्वी द्विष
 गनायेव. आठ आशिव ३ नीम नैवा भवलेसे उपवास १२ म्ये.
 २० वीस करे उपवास १२ करे, विधिसुं वदे नौ १६ पोसा
 उपवास १२॥ यद पद्विवा बीसनतय २०॥ अथ दूधम डो.
 पद्वीका उपयानस आठ अक्षयन नीम अंतकी चूना उमस नी.
 गलेकी नरेई ? २ उपवासदिक पीठे डडाकारेणसविस्तरसुं व.
 र जेस बीवाविदिया तक एक वाचना वेणी, एतदियास व.
 र आभिकविमतां तक दूधरी वाचना वेणी, जे एकद्वी वाचना
 पी. देय नौ पद्वी नरे आठ आशिव ३ नैवा करके वेई ॥ ६.
 पावदिया अंतरकंषका तय बीसन नामका आशिवस पोसा २०
 वास १२, विधिसुं वदे नौ पोसा १६ उपवास १२॥ ॥ अ.
 नीमरा जालादिनका नीमरा उपयान जगलीस उपवासकी ५.
 कर वाचना ३ वेई सो दस मुजब. पद्वी १ नैवा करे पीठे
 विधिसुं वेकर भयद्वीय तक पद्वी वाचना वेई, फेर १६
 वल करे, वगुनमाणसे वेकर धामवाचनवकवडवा तक ६.
 वाचना वेई २, पीठे सोले आशिव करके अण्णदिपवराण
 वेकर सवितिवेणद्वीस तक नीमरी वाचना वेई ३, पद्वी नी.
 उपयान नामाजुयका पूनीसन नामका जिनस उपवास
 विधिसुं वदे नौ पोसा ३५, आशिवसुं करता पोसा

॥ अथ चोथा स्थापना आदिन शुनरक्षका
 यान अक्षयन नीम. जिनस पद्वी १ उपवास कर ३ आशिव नीम
 आदिनवेणद्वीस वेकर ववराविषण्ण अमउमसो.
 अण्णवाचिसीस तक १ वाचना वेणी, यद आपनादिनका

धोया उपधान चउकन नामका जिनस पोसा ४ उपवास पो।
भाई ॥ नामादिन चउतीसयेका पदेने नेना कहे, पीडे
लोहसवकीपारे इहांसि लेके चउतीसपिदेवली तक पदेली बावना
लेवे, फेर वारे आधिब करके असनमजिबपववरे इहांसि लेकर पसं-
सद्वदमपाव तक दुसरी बावना देणी, फेर वारे आधिब करके एवम-
एअजियुआस लेकर सिद्धासिदिसमविंसु तक तीसरी बावना
लेवे, ए नामादिन चउतीसयेका अठारोसिननाम तप विविध व-
दना दिन २० पोसा २० उपवास साठपनरे एकांतर करे, अवि-
धि करना दिनअठडेल पोसा २० उपवास साठसिनरे ॥ ५ ॥
सुआधुशिनकय पदेवली १ उपवास पीडे ५ आधिब पीडे पुकर-
वतीवदेन लेकर सुखसनागवडेकरेमिकावसना तक एक बावना
देणी, यह ठरा उपधान शुआधुक नाम उकन पोसा ६ उपवास
साठतीन ॥ ६ ॥ अथ सिद्धाधुकभनकरय सानमा उपधान
पोसदे सनत घोडिएर उपवास १ करे, पीडे सिद्धाधुविकासं ले-
के साठेनसिबगारिवा तक एक बावना देणी, यह सानमा उपधान
आलाका तप ॥ ७ ॥

॥ अब उपधान तप प्रवे निवे लिखते ॥
वदे तप ती संयक नामसे चउमा अठा देवला, संयकी कुनारसि
दे, अगर एक आवक अथवा एकरी आवकया उपधान वदे ती
के पास आयके इतिपावदे पनिकमके समसिमण केकेकहे (अयुक्त
उपधान तप प्रवेवदे) मुक्त कहे (प्रवेसमा), नवकारती करणा अंग
निवेदेवा संविस्सणा) तब उपधानवादे कहे (तदेति) इहां इमा
समय तप प्रवे जोडिएर करे, चउदेपाणी पीडे वा अथवा जोडिये

करी अवस्था नहीं है, अथ किसी भी कारण करके साठके लक्ष-
 मण नहीं दिया होय तो तब पन्द्रकमणके बखानसे पहले प्रजा
 साठके नी लक्षमण देणा काव बखान पन्द्रकमण करणा नरक
 रसीका पञ्चकोण मालकण पास करणा पीछे सुये उदय नय नय
 बाववावाय पास आणा. नही पहले ही उपानय (नवकाके ठी
 द्रिप्यावलीके) नी ग्रामय अवस्थ नदीकी द्वापरा करणी ठी
 उदकेय नी इन दोनों उपानयोका नदीमदी करणा. इन उपान
 बाकी उपानोंमें नदीका नियम नहीं है. जिसके बाद प्रजापति
 पहले उदकेय करणा, जिसके बाद पोसा सोमायक देणा, पीछे
 नी बाववा देके पञ्चकोण करणा, कर सुदपनीपुत्रके सुखनय
 पुष्टा बाववा होय देवे ॥ दस उपान नय प्रवेश विधि ॥
 ॥ अथ उपान नय उती विधि: लिखते ॥
 ॥ पहले द्रिप्यावली पन्द्रकमणके सुदपनी पन्द्रकके ही बा-
 या देवे, लक्षमण देके उपानवादी करे (पहले उपानय नय
 माल उपानय महेश्वरक उपवावलिप नदीपवेसावलिप काठमा
 करीवे, गुरु करे करीवे, पहले उपान नय माल महेश्वरक
 उपवावलिप नदीपवेसावलिप करीमकाठमा अवजवमलिपदे-
 र्यादि काठमाय नदीपवेसावलिप नदीपवेसावलिप नदीपवेसावलिप
 करे, पीछे लक्षमण देके पहले उपान नय माल महेश्वरक उप-
 नय देवे, पीछे बासकेपुत्रके मण्यु वैश्वदेव करे, एते ही
 उपानोंमें उदकेय बाववा. इनमें विधिप दे पहले ही उपानों
 का उदकेय नदीमदी करणा बाकी उपानोंके दिव ही नय नदी
 होय नय तो नदीमें करे तो नदी नदी बाय तो मानस महे

यात्ते सुदृष्यती पलित्वेकं वदन वद देवे (श्री वात्स्या देवे स्मर्त्ते
 वद वदन कदने दे) गुरुके सप्त पलिकमणा कीया देय नी वा-
 द्रिया देयदी देवे, पीडि गुरु कहे पदपुण्यवेद एसा कदके कहे प
 क्युष्ठाविगपपुण्यपुकेदनि, पीडि अण्णा देवादेसा पञ्चक्रान्-
 कहे पीडि गुरुके सामने कहे उपयामने अर्वाक आमाताग की
 दीय नरस मिशामिउकन ॥ दल ॥
 ॥ अय स्यापुण्य विवि लिखते ॥
 ॥ उपयान वदोवाला यमानसस गुरु पास आयके गुरुकी
 अङ्गीति दीयावदी पलिकमके आगमन आलोचकर पोसा सामान्य
 देक देय खमासणपुके पलित्वेद्या भिरे आणपलित्वेद्या की, पीडि
 सुदृष्यती पलित्वेक पलित्वे खमासणस देदीपलित्वेद्यासिदसामणी,
 देसी खमासण देक देदीपलित्वेद्याकहे, पीडि सुदृष्यती पलित्वेक
 कहे वद वदन देवे पीडि गुरु कहे-पदपुण्य पदपुण्य उपयानवादीकहे,
 दल ० अयुक्त उपयान निमित्त निरुद्धवानवकरावेद, गुरु कहे उप-
 भाते आनेले निरुद्धनि एकाग्रणे, एसा कहे, पीडि देवा खमासणने
 अर्वाकमस कहे-वदुवसनिदसामोम १, वदुवसकोमि २, वदसोम
 मनिदसामोम ३, वदसप वापुमि ४, सप्तपुसनिदसामोम ५, एसा
 पकोमि ६, पान्नापुसनिदसामोम ७, पान्नापुमि ८, कदासाणी-
 मनिदसामोम ९, कदासाणीपलिकम १०, पीडि सुदृष्यती पलित्वेक
 पलित्वेक देवे, गुरु कहे सुखनय, उपयानवादी कहे, पुमादे यमा ॥
 दल यमान विवि ॥ अय नीमरे पदकी पलित्वेद्या नीय आ
 द्यागनाके आगे भावतयाकि वृकमस दीयावदी पलिकमके पद
 खमासणस पलित्वेद्या कहे १, देसी खमासणस पोसादेसा
 यमादे २, एसा कदके सुदृष्यती पलित्वेक, एसा नी खमासण दे-
 दल आण पलित्वेद्या भिरे सुदृष्यती पलित्वेक, देसी आण आदे

कतिपय (अर्थात् कल्पवृक्ष ज्ञानानां) एवमपीति कहेते हैं, पीछे
 वसति प्राप्तकर तहाँ जो उसही दिन योगन कीया होय तब
 नो पढ़े वल पढ़ते हैं, वाक्य के अवशेष वल नहीं पढ़ते हैं, जो
 उस दिन उपवास होय तब नो एकता वल नहीं पढ़ते हैं, पीछे
 गुरु पास आयके इतिपाठही पञ्चमके पढ़ते हैं, अंगपरिचय
 होता २, और गुरुके सामने कर, पीछे सिद्धायसिद्धिस्तोत्रम
 धारिण आठ नवकार गुण, पीछे गुरुवा पढ़ते हैंके तब वांछणा
 बूझ, पीछे विविधर अथवा वांछितारका पञ्चस्तोत्र कर इस खाना
 स्या अर्चकमस्तु इस मुख बूझ-सहीपरिचयसिद्धिस्तोत्र १, तहाँ
 पढ़ते हैंकहे २, सिद्धायसिद्धिस्तोत्र ३, सिद्धायकहे ४, वसन्त्या
 सिद्धिस्तोत्र ५, वैद्यस्तोत्र ६, कलामस्तोत्र ७, कलामस्तोत्र
 सिद्धि ८, पारम्योसिद्धिस्तोत्र ९, पारम्योसिद्धि १०, पीछे गुरु
 पढ़ी पढ़ते हैंके दो वांछणा देकर सुखतप पूछे, पीछे सर्वोपर्य
 पढ़ी पढ़ते हैं, मातृका (पारम्य) प्रमुख पढ़ते हैं, तथा जिस दिन
 योगन करे उस दिन पूरा पढ़रकी पढ़ते हैंकहाँ वसत पावो क
 इतिवक्त सवे उपन्यासके पात्राधिक पढ़ते हैं, उपवासके दिन नहीं
 पढ़ते हैं ॥ इति तीसरे अद्वैत क्रिया विधि ॥ तथा पाल्पिकम
 याम् अस्तिमातृका काउसग नहीं करे नो आवती एकता नक सवे
 सिद्धातकी अस्तिमातृका, इतिपाठहीका पाठ नो गुण्य नहीं
 सके, इस बात अस्तिमातृका नो अस्तिमातृका काउसग करणा,
 गुणधारा अस्तिमातृकासुतरी, महामातृका महोपर्यय अस्तिमातृ
 वदनाधिक पूरा तब एसाही, अथवा तथा योगनकी यह विधि
 है ॥ इति वसन्त्यासिद्धि योगनकी महोपकी अस्तिमातृका सुते
 नो नहि देवणा, दिन गुरु देवणा ॥ सुतेविवरकिये ॥ वरनोम
 धारिण ॥ अस्तिमातृकासुतरी ॥ वरनोम ॥ १ ॥ इति

॥ ५५ ॥

॥ ᲙᲚᲗᲚᲙ ᲙᲚ ᲙᲚᲗᲚ ᲙᲚ ॥

[illegible]

॥ अथ कथितव्यं भक्तवत्सलं ॥

[illegible]

(୧୫୩)

इय नवपदमन्द वीस स्थानक मन्त्रपूजा मुख्य होती ॥
 ॥ अथ धार्मिक पूजाविधि पूर्व उपदेश शृंगार्य लिख्यते ॥

॥ शुभ दिन शुभ मुहूर्तमें दिनमंत्रिर्गम समवसरण
 दिनप्रतिभा स्थापन करी, आगे पंचपरमोपदेश स्थापन करे

भागवतके वदिये पास वरा विप्रावपदेश और वीं पासे नव
 का पद स्थापन करे, पीछे एक बना एक बौटा मड़ीआधिकका

ऊपर खनी सवेदमड़ी पानके चार २ केसर कुंकेठा साधिया
 पीछे उंची नीची दीप दिवनी काठकी धारी, नीची दिवनी

मोटा हुंदा धरे, उंची पर बौटा हुंदा धरे, बौटे हुंदाके नीचे एक
 डूँड करे, बौटे मटकाके अंदर साधिया करे, बने मटकाकी डि

नीचे बाजलका साधिया करे, ऊपर गाँवर लीपया बागनाका
 बौटे मटका ऊपर मोलीसुत्र बटके पंचनी खजली एकक

२६ इकीस २ पीकर चारी कोणोंमें ८४ खजली पीके गली
 ध, गाँवरके आकार मोलीसुत्र ही बनी नीचला मोटा हुंदासबलक

रखके ऊपरकी मोली बौटा हुंदाके निचले पीकर ऊपर नी
 खली गली बाँधी है जिसके बीचमें गज रहे, पीछे

सब समुद्रपकी तरफसे धार्मिक पूजा होय तो मंत्रिर्गोका कम
 रहे और एक जलकी तरफसे होय तो गौतिल करालोवालेके पर

नी सधखली जिसका माता पिता सासू मासा चारों माता
 जीता होय, जिस खींकि अवा वख आर्जण पदितपके कलस

भूंदर कुंकेमकेसरका साधिया करके बाजल सुपारी पंचम
 की पोटली परके मुख पर गाँवर डकले माफक खनी धर

ऊपर बाजल कुंकेमव वख मोलीसुत्र बांधे, ऊपर कलशके चारों न
 क चार साधिया कर खींके मरतक पर रखके गीत गानपूजके

विशाल शनैक उठव समेत दिनमंत्रिर्गम होवे, समवसरणके

अपने पराक्रम बड़े, शक्तिशाली मोदी गुरुके पाससे वे
 राजकी शक्ति इससे बहुत अधिक मरी अधिक न
 रोग दीप बड़े बड़े शक्ति दीप, अनेक प्रकारसे ऊँचे दीप
 सौभाग्यकी प्राप्ति दीप, पीछे आया बलवान् पराक्रम रक्षा
 सो बड़े गुरु पूर्वाङ्ग शक्ति दीप दीप दीप दीप दीप
 (विशेष) हे वल्लभ विमर्श कर ॥ इति शक्ति पूर्वाङ्ग दीप

॥ अथ पूज्य आरती लिख्यते ॥

॥ पदवी आरती प्रथम ज्ञानदा, सच्चिदानन्द, सच्चिदानन्द वि
 षदा, जगदात्मन् विराट् कर ॥ १ ॥ दीप्ति आरती वि
 श्वरूप मोहि, रत्नसिंहासना श्वासा प्रसन्न मोहि ॥ ज० ॥ चो
 आरती निरु नई पूजा, देव रूपसे अरु न दूजा ॥ ज० ॥
 पूज्य आरती प्रसन्न मोहि, प्रसन्न मोहि गुण सेवक हम गावे ॥
 ॥ ज० ३ ॥ आरति कीजै प्रसन्न शक्तिशाली, मंगल वनकी म
 जाइ बलिहारी ॥ जप आरति शक्ति गुमारी ॥ विष्णु अवि
 राजकी नई, शक्तिशाली मुख पुनर्वदा ॥ ज० ४ ॥ आरति
 कीजै प्रसन्न शक्तिशाली, शक्ति वनकी म जाइ बलिहारी ॥ आ०
 समुद्रविषय शक्तिशाली नई, शक्तिशाली मुख पुनर्वदा ॥ आ०
 ५ ॥ आरति कीजै प्रसन्न शक्तिशाली, फल वनकी म जाइ
 बलिहारी ॥ आ० ॥ अथ शक्तिशाली नई, पाशविनोद मुख
 पुनर्वदा ॥ आ० ६ ॥ आरति कीजै महावीर शक्तिशाली, निर
 वनकी म जाइ बलिहारी ॥ आ० ॥ शक्तिशाली नई, शक्तिशाली
 दीप्तिशाली मुख पुनर्वदा ॥ आ० ७ ॥ आरति कीजै चोवीश शक्ति
 शाली, चोवीश शक्तिशाली जाइ बलिहारी ॥ आ० ॥ चरण कम
 ल निरु सेवक दई, चोवीश शक्तिशाली मुख पुनर्वदा ॥ आ० ८ ॥

है व०, पृथ्वी भव गार है ॥ दृश लक्ष्मि दृश धर्म है व०, विव
 धर व०, ए सब सीता मार है ॥ अरे ॥ ॥ पन्था अरारि रक्ष
 धारि मार व०, तीर्तुं गृधरी विचार है ॥ नव नव सार विर
 द्यो विरा व०, उच्छ्रित वेश्या आण है ॥ अ० ३ ॥ दूरसल को
 दूध गुं क धर्म तीर्तुं मार व०, पाशा एही जाल है ॥ अवसर कर
 आर दूध दूक बोलम व०, आर्त कर विचार है ॥ अरे ० २ ॥
 अरे ० १ ॥ दान शीत मय मार व०, बौध्द एव पसार है ॥
 है, वनीय विराधन वृत्त जो व० ॥ जहाँ नदी कुम्हिली जाग है ॥
 विष देव है ॥ अशुभ करम मल ऊरुके व० ॥ जाजम कर वृत्त
 ॥ रोग सीरु ॥ अरे मारि आणीया, चरितर, बौध्द दूध

॥ अथ बौध्द वेल्ल विचार स्तवन ॥

दूध दूध मुनि आरति गाव, जय मंगल निज वधाव ॥ अ० १ ॥ इति
 धर धूम पुत्रादिक जाव, मन वीर्य सुख संपद राव ॥ अ० १० ॥
 मानी आरती जगार, रोग सोग नय दूर निवार ॥ अ० ११ ॥ तसु
 दूध अति दीव, नवसरार वरे जग सर्व जीव ॥ अ० १२ ॥ निम
 वृद्धि धर्म, गुण गुण धर न धर्म के ॥ अ० १३ ॥ वृत्त जगसा
 खलक, पायै धर्मरुपा धर्ममयमंके ॥ अ० १४ ॥ वाहन गऊ वरु
 नीलवर्ण सव जगम माव ॥ अ० १५ ॥ सोवनमय निज वृत्त
 ल वीर्य रीव शक्ति जाव ॥ अ० १६ ॥ वाई वरुण वीर्य माव,
 सुख करे ॥ अ० १७ ॥ निववट टीलनी रत्न विराव, काने कुं
 रुपाव ॥ अ० १८ ॥ सुविहित गजनी आसनवेव, सकल संपद
 ॥ अ० १९ ॥ श्रीमद्भाव निर रत्नवाली, नाम वक्करा जग सौ-
 ॥ जय अरती वृत्त गुमरी, निज गजसु है धर्म चरणाव ॥

॥ अथ चक्रधारी वी आरती लिख्यते ॥

करजानी सेवक दम बोव, नहि कोइ मारि मरजी नोव ॥ इति ॥

कर विषु विचार रे ॥ अ० ५ ॥ परे काया उकनी पनी च०, विरे-
दे दया विचार रे ॥ पुन्य उदय पंजनी पनी च०, पंच महान्न धार
रे ॥ अ० ६ ॥ न्यार तीन काणा पछ्या च०, सगिरे विसन निवार
रे ॥ से डुरगति दायक सही च०, बाध अनंत संसार रे ॥ अ०
७ ॥ विरु गति पाजी लग रही च०, डल सहा नरपूर रे ॥
करम कटै सुख ऊपजै च०, रतनसागर कहे सूर रे ॥ अ० ८ ॥ इति

॥ अथ सैवज खेजन विचार स्तवन लिख्यते ॥

॥ सैवज खेव खिलारी, सब समज देख सैवजकी धार,
लख दोउं दल अपणे परायकी जान ॥ कवि विष कर मोहै धार-
दयाकी मान, जब जाणु तोय चहुर खेव खिलार ॥ हे से० १ ॥
आहुं कर्म पिपादे आगे उकनेही आवै, काम कोष गज चलन धन
न नही धन ॥ लोग ऊन चाक खेटकी मरीन चल व्यावै, मान
साया के तुरंग घाल चपल दिखवै ॥ मिथ्यामत सो बजीर वीर
बाके दंग ठानी, बाके मारवैकी दल अपणे संसार ॥ हे से० २ ॥
तेरे ग्यान सो बजीर वीर तेरे दंग ठानी, आठो अंग समिकत
के पिपादे दलकारी ॥ त्याग साहिबा सवार पर साहिबाकी

कारी, सत्य बचन तुंगसु तुंग निवारो ॥ कसमा ओल दोष
फोड़ राखो दलके आगानी, पर दल कर नारी जिनसे संसार ॥
हे से० ३ ॥ जप तप मत मत पाके धेरे विरुं जरे, जब बाके चल-
नेकी काढ़ रहै नही ठोर ॥ जब तेरी दोगी जीत दूजो दोगी
खिलारी, जब सुबहाकी तेरे हार बंधो गो मोन, ठाने डंड धारुद
तेरे दोषों चार, तेरो सजन सजोगो गुण आगार ॥ हे से० ४ ॥

इति सैवज खेजन कान संपूर्ण ॥

॥ अथ गायत्रीन गग गायत्री स्तवन लिख्यते ॥

॥ गग कटपाण ॥ एक निजरे महरी करणा हो, हे० ॥ १ ॥

कथयन्तास पुंश्च आस गुण गच्छेत् ॥ स्तो. ३ ॥ स्तोत्र पदं ॥
 पुनः ॥ मन वीजो हमारो जिनवरणा रे, पान अवधि यवत
 णा रे ॥ म० ॥ आदिं पुरुष जगत्तरण निमुपय, कर्म विवर्त ध
 रणरे ॥ म० ॥ गानि तान मत्तुंवा मात, नदं ऊपन मु
 खकरणा रे ॥ म० २ ॥ सिद्धपादिक यगदन जग तत्पर, कुमाराणि
 वल टरनी रे ॥ म० ३ ॥ सारंग हंग शिशो वदन मनोहर, शी
 कनक सम वरणा रे ॥ म० ४ ॥ श्रीजिनदेव सूरिधर जपे, जिन
 समरण दिव धरणा रे ॥ म० ५ ॥ स्तोत्र पदं ॥

॥ रंग छिन्नाटी ॥ २ ॥ ॥ अजित अजित जिन णा

म, स्वरि मन रे म० ॥ जिनशत्रु विजयाको नंदन रे, वंदन अय युन
 डान ॥ स्वरि० १ ॥ जिह्वा जगत्तरन टरन अधको रे, वांछं तन धन
 वधान ॥ स्तो. म० २ ॥ जिन वचनमृत पान करीजे रे, केवल
 निरमल यान ॥ स्तो. म० ३ ॥ श्रीजिनदेव सूरिधर पाए रे, निर
 नि पुंवर यान ॥ स्तो. म० ४ ॥ स्तोत्र पदं ॥ पुनः ॥ पद
 अरती सोरी सदिधा, सोदे तरलो गहवदिधा ॥ म० ॥ मं गानि
 जार्ण सदिधा, म० ॥ मं तारण तरण सुपयो वै, मं पाने शोषणी ग
 दिधा, डनने उदार वदिधा ॥ म०. म० १ ॥ डन करमनक वशी
 हुंयकै, मं नटययो विहंगल सदिधा ॥ म०. म० २ ॥ दिव करी
 दादा निदारी, करजोनि पानि हं पदया, दिव वेलि मयं न सदिधा

॥ म०. म० ३ ॥ स्तोत्र पदं ॥

॥ रंगकाकी ॥ मुजरी मानी वीजे, दो गोदोराय अरन मु
 पानि, स्वरि म० ॥ किरण काज करी सेवने, विजय दराय
 दो गो. १ ॥ गुणनिप गवनी दससा वीजे, सकल दराय
 ॥ दो गो. २ ॥ करविषयको मोहन पनयो, मंदको म
 ॥ दो गो. ३ ॥ स्तोत्र पदं ॥ पुनः ॥ पुंश्च आस गुण

वसन्तात्, तदा ते गुण सुर गावदा हो ॥ ५० १ ॥ संकेत सागर
 गुणके आगर, जोही व्याव सो पावदा हो ॥ ५० २ ॥ तुमहो न
 स्वङ्गानके दाता, नविजन ताप मिटावदा हो ॥ ५० ३ ॥ कहै जि
 नवह एसे प्रसु भूरे, बरणाकमल विव व्यावदा हो ॥ ५० ४ ॥
 इति पद ॥ पुनः ॥ हम जानाहै विस तारो, हम ॥ न-
 निराप मरदवाको नंदन, मेरी डेर निहरो ॥ हम ॥ १ ॥ आदि
 जिनैसर अंतरजामी, खामी कहु न विचारो ॥ हम २ ॥ जगजीवन
 जगतरक तुमहो, एही निकर संजारो ॥ हम ३ ॥ श्रीजनसोना
 म सुनिदके साहिब, नवजव पार ऊतारो ॥ हम ४ ॥ इति पद ॥
 पुनः ॥ धर्मीना पूष चवंगो, प्रसु नजवै विन वार ॥ ५० ॥ ऊही
 काया ऊही माया, ऊही सब परवार ॥ ५० १ ॥ बालपयोम खल गमाया,
 जीवन मायाजाल ॥ ५० २ ॥ वृंदापण आपो धरम न पायो, पीढे
 करत पुकार ॥ ५० ३ ॥ क्या ते आपो क्या ते जायो, पाप पु
 एव दोष वार ॥ ५० ४ ॥ दया मया कर पास एवही, अब तेरोही
 आधार ॥ ५० ५ ॥ इति पद ॥ पुनः ॥ देवीशोभा जिनराज,
 जोहि धारे कोण जुनो ॥ ते ॥ अवरोन ताल बामदेवी माता,
 ते सारण संसार ॥ जो १ ॥ कमल विनारण नागके सारण, स
 नवापो नवकार ॥ जो २ ॥ विवृद कुशल करजोनीते पीनहै,
 नव २ देव्या दींदर ॥ जो ३ ॥ इति पद ॥

है ॥ मर्दो १ ॥ इंदोली निव मंगल गाव, मोनिपन चौक पुर्व
 है ॥ मर्दो २ ॥ सेवग प्रसिद्धीस आरंभ करे है, चरणोरी सेवा
 प्यारी लागे है ॥ मर्दो ३ ॥ इति पद ॥

॥ राम आला १ ॥ मोनकी माला जिन गव सोई,
 मोनि ॥ मरतक मुगट सोई मनमोहन, कुंदल बागन बाव ॥
 ॥ जि १ ॥ मनोरी मनो विस लोक मरके, मरिय मनो सो
 काला, मालक पर प्रसु मरि करे तो, अपणा विरह मनोवा ॥
 जि २ ॥ इति पद ॥

॥ राम सोरव ॥ रहे गुम आन कसु जीवन डराय, रहे

॥ जीप जीवन सखियन में प्यारी, दारी दार खाय ॥ १० ॥
 अतिरत धुंधल पट उधारी, अजुनव मुख निरखाय ॥ १० २
 ॥ नव परलित परेषाक इति पर, आई धाई माय ॥ १०

३ ॥ अति आयद सब ग्यानसारके, जीवन कव लगाय ॥ १०

४ ॥ इति पद ॥ पुनः है माय बांकनी करमगति आय ग
 कही, विनत और बनत कहु और, दैनदर सो देय रही ॥ है माय

बां १ ॥ सकल सज सजियौ उपादनके, राजिवको नव बादे

मर्द ॥ सुनी नेम निरनर सिधाय, वदन विखल मुखाय रही ॥

है माय बां २ ॥ सीता सती प्यारी पतिमाला, जानन मख

मरी ॥ ऊँचो दोस दिया जव कथयति, पावक कुनस पीन रही ॥

है माय बां ३ ॥ कोषक सुंदरि श्रोकाला, निव सुत कोषक

वय ठई ॥ सुय वृषा निमर गाई नरपतकी, आपणकी अपयत

वरी ॥ है ॥ बां ४ ॥ निमस रंक विनकस गजा, अकस कथा

किम बाण कही ॥ उवट पवट बाजी, नटलीकी, नवल मरत

उपाय रही ॥ है ॥ बां ५ ॥ इति पद ॥ पुनः ॥ मरि प्या

लागे है जी प्यो उपादन, इति ॥ पुन बागवत भुज

मेटल, संशोधन रहे न होत ॥ श्लो १ ॥ मोरे नि

हरे करणके, जगत बढावत हैत ॥ बंद फलै निज एवो बाह,

समिकत सुखको खेत ॥ श्लो २ ॥ दलै पदं ॥ पुनः ॥

मोरे निपा पर संग रमत है, स कैसे मनोकरी ॥ सो ॥ सोनन

संग देन दिन रमत, मोहि न बुझावै टी ॥ सो १ ॥ दोहा करत

सखी पडय परत है, कोइ निपा मित्रावै टी ॥ निरदातल अति

उमर निपा निन, कोन बुझावै टी ॥ सो २ ॥ सुपना संगत अ-

नुनव आयो, सब परत सुजावै टी ॥ यानसर प्यारी बोलै हिल-

मिल, सोरठ गावै टी ॥ सो ३ ॥ दलै पदं ॥

॥ राग सोरठमगर ॥ परतिन बचन जरी, दो सुगुन

मोरे, वं ॥ श्रीभूतकाल गाननकुमटी, यानवतागदरी ॥ दो सुगु-

१ ॥ दयाद्वितय विजुरी समिकत, देखत कुमल करी ॥ दो सुगु-

॥ अरुष विचार गुरुर धुनि गरजित, देखत न एक परी ॥ दो सु-

गुं ॥ २ ॥ अदा नदी चटी अति जोरे, अरु सुजाव परी ॥ सु-

नरनायो सुनारससागर, समिकत जलै करी ॥ दो सुगुं ॥ ॥

आटे फुप अंकेरे विरई दिस, पाप बवास जरी ॥ यानक मोर पप-

डय नविजन, बोलत नकिनरी ॥ दो सुगुं ॥ ॥ दया दान मन

सजम सेवी, नविक कमान करी, देखत बंध सुरार शिवसुखकी,

सहेज सजाव करी ॥ दो सुगुं ॥ ॥ दलै पदं ॥ पुनः ॥ ॥

परीस रंग, वंयो है म्हर ॥ यो ॥ नखारपकी घरवा पाई, सो

धरमीको संग ॥ यो यो ॥ श्रीजिनगीन दयानिध नैरे, देख

जयो अंग अंग ॥ यो यो ॥ एसी विष नवद माई मिलियो,

धर्मसद अंग ॥ यो यो ॥ दलै पदं ॥

॥ रागमगर विरई भर दारिया बारी, अंग पर पर

एन गदवै ॥ सो ॥ नमस्तु निरनर निबाह, देखणके निबा ॥

रसे ॥ वि० १ ॥ बाँडते मोर मोर सुख भवत, नयन नयन भन
 जस ॥ वि० २ ॥ दूँदत दूँद सकल वनभूम, कवई प्रिया न भन
 से ॥ वि० ३ ॥ सो दिन सकल जाणो सजनी, दिवस परा जिन
 फरसे ॥ वि० ४ ॥ दलित पद ॥ पुनः ॥ मोरवा पदपद बोले
 पीउर वनभूम, भोमप्रिया रहे सदेसजनम, सो ॥ निशि अविप्रा
 कारी विजरी नरावे, दूँदी विरह आकुल नई नम ॥ सो ॥ ॥
 निरमिर वरपित गरजन बाँडत, मोर करत रहे नदिया नम ॥
 सो ॥ २ ॥ आणव पद सभ देखण चाहै, राजल नई विरागण वि
 नम ॥ सो ॥ ३ ॥ दलित पद ॥

॥ राग विहाग ॥ समज नर जीवन घोरो, घोरो घोरो घोरो
 ॥ सो ॥ पलट आयुषटन जिनरही, गलत जात जोसे ॥ सो ॥ ॥
 या ननको कहे कोन नरोसो, जिन मासो जिन रोसो ॥ जो कहे
 कहे सो अवही करलै, पुनपरहो जिन रोसो ॥ सो ॥ २ ॥ नन पर
 आदि सकल सभस्यो, गरजट वनघोरो ॥ रूपवद असनको अवि
 जानवुन नयो रोसो ॥ सो ॥ ३ ॥ दलित पद ॥ पुनः ॥ सन कर मा
 न गुमान, योवन धन ठाह ॥ सो ॥ वरुको नीन वसको मोली,
 कोड धनी कोड पलट ॥ सो ॥ १ ॥ नदिया गहरी नान, पुन
 ए, नरपदासो जिनह ॥ रूपवद कहे गाय निरजन, आलत जगल
 पर है ॥ सो ॥ सो ॥ २ ॥ दलित पद ॥
 ॥ राग मारु ॥ निमदिन जाँचि घाटी, घाटनी, पर आवाँनी
 दोला ॥ सो ॥ मुन सरिसा गुन लाव है, भरे रंही अमोला
 ॥ सो ॥ १ ॥ जाँदरी मोल कहे लावनका, भरा लाव अमोला ॥
 जिसके पटनर को नही, उसका क्या मोला ॥ सो ॥ २ ॥ कोन सुने
 किसप कहे, किसप माँह लोला ॥ तेरे मुल बीह टले, भरे मन्हा
 ऊला ॥ सो ॥ ३ ॥ निम विधक कहे दितकर दूँ, सुमनासि न बो

वा॥ आनंदधन प्रप्त्य आसत्, सेवनी, रंगोत्तम ॥ नि० ४॥ इति प्रथमः
 ॥ रंग विवर्त ॥ आज तो हमारे जग, वीरप्रति आह
 है ॥ आ० ॥ वंदना खनी उभार, विवर्त करे विवर्त ॥ देवदत्त दी
 धार दीया, देवल नरोत्तम है ॥ आ० १ ॥ आज भरी आस फली,
 आली भरी देगली ॥ बकसी आनम कली, प्रसन्न पाव पाव है ॥
 आ० २ ॥ धन दिन आज भरी, गय सब कम ऊपर ॥ सुकन बह
 नेरी, जगवान विज जाह है ॥ आ० ३ ॥ सिद्धरथार नंद, सेवित
 सरवर्ध ॥ कहे विनवर्ध विज, आनंद वषाव है ॥ आ० ४ ॥ इति ॥
 ॥ रंग परज ॥ बावरे रे आज मनवी भारी ॥ बा० ॥
 आर रंगीला बाकी रंगीली, जे रंगीली बाकी सांवरी है ॥ आ०
 १ ॥ आर न आवे भारी न विज जेजे, दीन करणके जेवारी है ॥
 आ० २ ॥ आनंदधन प्रप्त्य विज पर आवे, मिट गयो मोह संतवारी
 है ॥ आ० ३ ॥ इति प्रथमः ॥
 ॥ रंग जंगली ॥ ऊपर विवरी, भारी तो जे विज न्यारी है
 ॥ क० ॥ प्रथम तीर्थकर प्रथम विनेसर, प्रथम फली वतवारी है ॥
 क० १ ॥ वरुण पावसे मान मनोहर, काया कवन वाली है
 ॥ क० २ ॥ नानिगय सकसेवीको नंदन, बा पर विज कुरवाना
 है ॥ क० ३ ॥ जंगली परम निवारण स्वामी, प्रसन्न हो पर ऊपरगारी
 है ॥ क० ४ ॥ केवल पाव प्रसन्न सुगति सिधार, आवागमन निवारी
 है ॥ क० ५ ॥ आनंदधन प्रसन्न फली वीरवी, गुम पर आवे वलि
 वारी है ॥ क० ६ ॥ इति प्रथमः ॥ पुनः ॥ सुखा, मन सेनहार
 न टरे है, सु० ॥ विज कहे जे विजाल है नर, जेवरी, जे वने
 है ॥ सु० १ ॥ ऊपर बाज पारधी नीचे, विनिपा केसे वने है ॥
 सु० २ ॥ दीणहार वश नस्था है पारधी, सर सीखाण मरे ॥ सु०
 ३ ॥ दीन परारण भावी नडपा, कर्षण जग बाह पड़े है ॥ सु० ॥

॥ वदय करम गतद्वेष जगतकी, जिनपर क्युन मने रे ॥ सु० ५३॥
 पदं ॥ पुनः ॥ सदिद्योरी निव चालो ग्रस पुनः काज, स०
 ॥ समवसरण विष आय निराज, वीरनाथ महाराज ॥ स० ॥ १
 श्लोक संप्र वेदणाराणी, सकि करन हे आज ॥ स० २॥ निज
 द्रव्य विषु पूर के जन, समग २ गुन. साज ॥ स० ३ ॥ वे ग्रस
 दीन दयाल जगतके, हितकर धर्म निराज ॥ स० ४॥ इति पदं ॥
 ॥ राम कवचो ॥ मनवा जिनद गुण गाय रे, स० ॥ पा
 जिनजीके वरम सरससु, जलदीवंग भट जाय रे ॥ स० १ ॥ सर
 गुरु वचन परतीत मानले, आनमसुं वष जाय रे ॥ स० २ ॥ सर
 ग्रस लोके सुखदाई, आनंद वंदित पाय रे ॥ स० ३ ॥ इति पदं ॥
 पुनः ॥ चलो देखोरी मजुवनकी राव, व० ॥ रामनिंद
 पाठा जिनसर, निर पर रे वाके चमर घुमण ॥ व० १ ॥ रा
 सरण जिनसर ललके, नैटै महुं सवि विन सुख पाय ॥ व० २
 रंगा वरम कमाली लगी, कव फरसुं वाके मन वष काय ॥ व०
 ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ राखुं रे हमारा घटम, जिनसर
 मास बेरा, हो राखुं रे व० ॥ वाके प्रभाव भरा, अडानका अयो
 दागा सपा उजैरा ॥ हो रा० १ ॥ सूरत बेरी रा०, पुरुषाविना
 स्या, अथामरुण जाई ॥ हो २ ॥ मुदा प्रमादकारी, कप
 मजु निदारी, लागत मोहि प्यारी ॥ हो ३ ॥ अवेकपनाथ गु
 दी, हम हे अनाथ गुनदी, करिसे सनाथ हमदी ॥ हो ४ ॥ ४
 सुजी निधारी साखे, जिनदपुं सुखि साखे, विन मान पादी रा०
 ॥ हो ५ ॥ इति पदं ॥
 ॥ राम वैमरी जंगलो ॥ ते परमकी वादे, लयो, मली
 दयावरण दिखवाजा रे ॥ हो ॥ वनस जाय ग्रस दीक्षा बीनी,
 हमके घर लगवा रे ॥ हो १ ॥ जाय चहे ग्रस निराज अग,

अथ कसै विमराज रे ॥ ते० २ ॥ चैनविचै कहै धन२ राजुवै
 प्रभु घरवां चित लाजा रे ॥ ते० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः धरि
 मुखदारी दो बारी राज, प्यारी उवा बरणी न जाय ॥ धा० ॥
 १ ॥ मोहनगारी सुत धरि, देखवा चरौ मननो लोनाय ॥ धा०
 २ ॥ उरऊत जेण जप दैख निरखत, धांसु प्रभु प्रीतनी लगाय ॥
 धा० ३ ॥ जवर पाशोजिनवनी की सेवा, ऐसी चरि विवनेम
 बाव ॥ धा० ४ ॥ बाव कहै विसरी प्रभु मेरे, मेरे विसरी सुहाय
 ॥ धा० ५ ॥ इति पदं ॥

राग काफ़ी कानरी ॥ ऐसी विष तेने पाड रे, कहु कर-
 नी कज्जा ॥ ए० ॥ उषम नरनव जैनधर्म रवि, सुगुह सेवा सु-
 खदाई रे, जसु पालिक ऊरजा ॥ ए० १ ॥ हिसा जैआ जै पर
 निरिया, परियदे मर फल चुरी रे, धर जायगा दरजा ॥ ए० २ ॥
 निधि तरजा ॥ ए० ३ ॥ इति पदं ॥

रागजैवरी ॥ बौर प्रभु तेरी दैखीस, मेरी सुमता सखी
 सूरिने निज घर, दीखै सुख प्रधान ॥ प्र० सो० ४ ॥ इति पदं ॥
 खदाई निवसिख दाना, संनवनाथ कहणी ॥ श्रीजिनसौनाथ
 नाम संनारी, नी दिख किम चित ताणी ॥ प्र० सो० ३ ॥ यकि
 नववाणी रे निववासी, जान सकल जेदानी, विरद बाखीणी
 वामदे माहि अखंड्या, ज्यु मरपान वधानी ॥ प्र० सो० २ ॥ हुं
 ए दिख कसु पन्या मुन केने, किम विष उटै पानी ॥ कुमति क-
 नेर अरु मोहै मरु मरु, वाय्या खोट खजानी ॥ प्र० सो० १ ॥
 सो० ॥ मू मतिदीण मरु देववादी, सो विसरे नहि जानी ॥ राग
 रागकावैगरी ॥ माहि अपणी कर जाणी, प्रजानी

भद्रवान-भई रे ॥ वी० ॥ आप नही आवे बोधा पावै, ते
 सुख कुवान भई रे ॥ वी० १ ॥ साधुजनपक पढ़ी अरज रे,
 ब्रह्म-वत्स वनी वैर भई रे ॥ वी० २ ॥ आप धामकी पूजा
 की, धरण सरण लपटाय रहै रे ॥ वी० ३ ॥ इति पदं ॥

राग विमल ॥ दोर नयो अब आप आवै, सो ॥ को
 पुन न नरनव पायो, क्यूं सुनो अब पाय पावै रे ॥ वी० १ ॥ आप
 बलिता सुन तान बानकी, मोह मयन ए विकल जाव रे ॥ वी०
 २ ॥ कोड न तेरो न नही काको, इह संजोग अनव सुनाव रे ॥
 वी० ३ ॥ अरज देस उत्तम गुरु संगत, पाड़नं बह पुन-अनावै
 ॥ वी० ४ ॥ यानसार जिन मारग पायो, क्यूं दुख अब पाय नव
 रे ॥ वी० ५ ॥ इति पदं ॥

राग लट्ठा ॥ जागरे सब दैन विहाणी, जा० ॥ उदयो उदयान-
 व-विमल, पुनकाव क्यूं सोव पायो ॥ जा० १ ॥ कमलपुन
 वन-विकलानी, अजुअ न तेरी दग उपाणी ॥ जा० २ ॥ वी०
 न धनु अनवि दुमारी, बन संगतसं सुय-विसराणी ॥ जा० ३ ॥
 पुन कुन दीप अवस्था पड़्यै, नीव सुपन ए जग-नीसाणी ॥ जा० ४
 आनन रूप संनार आपणी, कव तुमरे पर कुमलिसराणी ॥ जा० ५
 ॥ सुय दुप नही निरुपम रूपकी, बनि पट वय दोन करणी
 ॥ जा० ६ ॥ निधु रात ररुप दुमारी, यानसार पर निर नव

नी ॥ जा० ७ ॥ इति पदं ॥
 राग रेवाज ॥ सावरी सङ्गणी सली भरे मन नाना,
 रूप रेखाय भरी मन लववापाणी ॥ जा० १ ॥ नोरपासं ए पर
 वे रिपा, ना गाड़ि ए करिको कसावनी ॥ जा० २ ॥ नव नाना
 निजादे नम पुन, पादोनि कवा बरन उदापाणी ॥ जा० ३ ॥
 पाकी दीन करिकी, नयोपीपा पुनसलीको पावनी ॥ जा० ४ ॥

राग धनि ॥ आज केपन पर आहै, देखो माई आ० १५
 रूप मनोहर जगदानंदन, सबहीके मन जाहै ॥ ६० ॥ कोइ सुगत
 फल माल बिसावै, कोइ मालि माणक जाहै ॥ ६० २ ॥ देव गण
 रथ पायक कई कन्या, ते प्रभु बेग ब्याहै ॥ ६० ३ ॥ श्रीश्याम-
 केशर दानेशर, डंकुरस बहिराहै ॥ जगमदान अधिक असुनफल,
 सायिकीरन गुण गाहै ॥ ६० ४ ॥ डल पद ॥
 रागरामकवी ॥ अंगण कवच फटायो हो, हमारे माई
 आ० ॥ कलि बलि सिद्धि सुख संपति दायक, श्रीश्यामनख मिटायो
 हो ॥ ६० आ० १ ॥ केशर चंदन सुगंध घोली, माई बरस
 मिटायो हो ॥ पूजन श्रीश्यामनखकी प्रतिमा, अलग बहेग ट-
 टायो हो ॥ ६० आ० २ ॥ शायो राख कपा कर सादिव, खुं पारे
 वा पटायो हो ॥ समयसुंदर कहै तुमारी कपास, बुरिहिय सुहला हो
 ॥ ६० आ० ३ ॥ डल पद ॥ पुनः ॥ ऊजने मोरो आनमरोम,
 बिनमुख जोवा जडयै, ऊ० ॥ बिनजीनो बरसण डै अति
 बोलौ, ये किस सोहीनो जाणो ॥ ॥ वारे मानवमन एवहो,
 जुनवो मुसकल टाणो ॥ ॥ ऊ० १ ॥ एगरे बिबानो चटको म-
 टको, देखीन मन रोचो ॥ ॥ बिनसी जानी वर न लौ, कापाप-
 ट डै कानो ॥ ॥ ऊ० २ ॥ अनात गुह्ये नहिओ है जिनवर, पूरे
 पुन्य पायो ॥ ॥ एहन देखी दिवस आणव, कर नै सदा सवायो
 ॥ ॥ ऊ० ३ ॥ होरो दाय अमोख पायो, पूटपावो मत गमजो
 ॥ ॥ सहज सर्वथा पाशबिबद्धजोसु, राजी रूप धित समझो ॥ ॥
 ऊ० ४ ॥ मन मानोना मारो चेतन, करजे सुकल कमाई ॥ ॥
 लानऊ है जिनवर वहीन, को नै सिद्ध बधाई ॥ ॥ ऊ० ५ ॥ डल
 राग केवारी ॥ सब मन गानिनंदन देव, न० ॥ एगन
 सुनिजन अलग धारी, सुरंग करत है सेव ॥ न० १ ॥ वकी न०

पति वरं सुपति, वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥ नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥
 मणिपूरं नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥ नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥ नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥
 नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

ताल वृमरी ॥ आर्वा नेम रङ्गवावो सदन, वृमकी न म
 तावो रे ॥ आ० ॥ आर्देन आये सऊके सजन, पशुवनकी सुन धे
 कवन ॥ गिरनरी सुख निज वंकी वन, लकरी वतावो रे ॥

[illegible]

३ ॥ स्वयम्भवा ब्रह्मा भवति प्रथमः सृष्टिं कृतवान् । ततः
उत्पन्नो विष्णुर्लोकान् रक्षति । अन्त्येष्टी शिवस्तथा ।

कहू प्रीतिजि कह वरुण, राजिव मन वरेग वरुण ॥ लख दीन दीन
जननी की वरुण, दिवपर ले वरुण ॥ २ ॥ अ० ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

पुनः कर्तव्यं मन मन मन, मन मन मन ॥
क्री० ॥ अथस्तेन वामाङ्गिके नन्दन, सुखेन कृतं अङ्गिनिर्वाणं

॥ इत्युक्तं नृपतया च, गुरु कर्मकथात् ॥ १ ॥ का. ॥ २ ॥ अ.

पुनः देव हरेण धृतं परमा मुक्तकामम् ॥ कामं च साधना
पुरत आधिक विराज्यै वासिष्ठयका महिमा तत्र ॥ पुन अतिशय

न मकरं जत, पृच्छन् वल्लभा । इ ॥ काठ ३ ॥ सुते पुनि
समस्तं भावै, निरख्य प्रपु सदेव स्वभावै ॥ जीव जनी मा भ-

॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥

कान विद्युत् पतये ॥ ५० २ ॥ द्रवितोऽसि प्रसू गृह्य गार्त्त, मय
 युष्म कस्म सव दृष्टे ॥ ५० १ ॥ मनवस कायवर्गि चरण निव
 को समस्य कतये ॥ ५० ॥ प्रसू समस्य सव पाप कटव दे, म-
 ॥ रोग खलवते ॥ पत्नी ९ पत्र ९ विनय विशीर्ष, प्रसू
 दीनता सुख, पारसनाथ सुपत्ति मेरी ॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥
 व, आन नई विमल नट मेरी ॥ आ० २ ॥ रास कटपाण को
 प्रिया पतनी सव देरी ॥ आ० १ ॥ दोष दूपाव मयोजेजी अ
 शरणागत मेरी ॥ आ० ॥ लोह समान मित्रो नही कोई, दूरे
 ॥ रोग पीले ॥ आया मेरी अत्र जाति करे, शरणागत को
 न० ५० १ ॥ इति पदं ॥
 ५ ॥ गज अजीम सुवसपुर जिनवर, केशव अनी कदम्बर फली
 सुनिबर प्रतिपाव सुखकर, शीघ्र नृपके नंद बली ॥ न० ५०
 बग देरी लगन सुपत्ति कारण, लटक सटक अथ दूर बली ॥ कर
 मुक्त आदा दीनपति मेरी, नर न चाहे देव बली ॥ न० ५० ५॥
 आनिबर मेरी मदिना, आप विमल अतिव बली ॥ न० ५० ३ ॥
 प्रसू आनन, सुख देवन आफन दूर दली ॥ न० ५० ५ ॥ आनन
 व देरी सदेवातिव कली ॥ न० ५० १ ॥ निरमल शानि पदम
 प्रसू विमल मित्रो ॥ ५० ॥ अनुभव रोग ममान मेरी अलिपा, सु
 ॥ विमल ॥ प्रसू मेरी सुनिपा बलि मली, देवादेमारी
 जिन नर दूरे डिलदूर, करो नवपा सुलो मदेवान ॥ गी० २ इति ॥
 सूर, पर दो नव नव सुख नरपा ॥ को कूर करम चकूर, देवता
 निके चरण सेव, शीघ्र सुमताकी तुम देते ॥ देव तप अपम सदी जो
 ॥ नाम जो जिनके दान देते, आहु मदे विमल दूर देते ॥ बार जो
 शिवायुध दूरा अयमान, नरी अत्र देव काल खगवान, नो नि० १
 डिल देते जनम मरणा ॥ वैव नववरम लगीया नही ध्यान, रीति

वंति फल वरुं रे ॥ पं ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राम सोम ॥ सुमनां कथा कर मया रे, जिन सोम
स्वामदेमया ॥ जिं सुं ॥ शोखी दोस नदी सुमनाम है, आली अपन
नेम पुंसा ॥ जिं सुं ॥ सुमना शोकण नई देदमारी, वस किया अप
प्रया रे ॥ जिं सुं ॥ प्रीतकी रीत करी नदी वलम, जो
वले त्रयया रे ॥ जिन सों सुं २ ॥ जादव जात कलिन नि
मोदी, दिल करवतकी धारा रे ॥ जिन सों सुं ३ ॥ पुम तो रे
म नले दो हमक, म न नज पद धारा रे ॥ जिं सुं ४ ॥ प
न देमारी नदी नदी नै, कर बांधी डक नाग रे ॥ जिं सुं ५
सब जग जो पुमसे दो जड्य, तो क्यं चलत संमारा रे ॥ जिं
सुं ६ ॥ कदमर राजेल मयोजीस, पोटवी मुगलि मजारा रे
जिं सुं ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ शिवरामिनि स्तवनं ॥

॥ पुम तो नले त्रयया जी, सखिलया मदेराज
पर नले त्रयया जी ॥ ते पाटे चौकी धारी, आवक
पावे ॥ हुकम किया श्रीप्राजाजनेसर, बांद पकन ले जावे ॥
१ ॥ उवा नीचा परवत सोहे, तले नीवनका वाला ॥ पं २
सोहे वनेके, त्रिदां लीया पुम वाला ॥ पुं २ ॥ देक २ पर
त्रयया, जावर ऊणकारे ॥ जावर ऊणकारे सेली, वाला
व वाला ॥ पुं ३ ॥ दे देवाके जाजी आवे, पूजा थाण रवा
मुनिर वदन आवे, मदा परम सुख पावे ॥ वंद सुमना
सक, दरवर गुण गावे सुं ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ जावर निरिद जुदारी, निज पालिक दे
वावे ॥ त्रयया जिं ॥ देवा सम तीर्थ न कोई, म देवा

वरु-रायक सप्त ॥ नि० ४ ॥ कमल नयन रत्न-राजी, अत्र
 रत्न आनन रत्न ॥ दीप्ति निजपर दासके, पवनक न कीर्ति जे
 ॥ नि० ५ ॥ जगदि अन्तर्गत, कान्तिक सुवि निधि सार ॥
 सुपाय अविपति निजपर, सकल संघ जयकार ॥ नि० ६ ॥
 कुशल निपात निवृत्तपर, कवीअवी निमलीन ॥ अक्षररिजिन
 ध्यानमें, अन्तरंग गुण विन ॥ नि० ७ ॥ दीप्ति पर ॥
 ॥ अथ गीर्षी पार्श्वनाथ स्तवन ॥
 ॥ राम केवले ॥ मं मुख ईश्वरी गोपी पारसकी, मेरी सु
 नम सकल नय आन ॥ मं ॥ अन्य देवके वदत मं यणी, नो
 मं न सरणीकी मेरी कान ॥ आनरे मं ॥ नवर नटकन शायी
 है अणी, अवनत रंजनी मेरी राज ॥ आनरे मं ॥ कमल वर
 शय गोकुल नरय, संजयाया नवकार ॥ आनरे मं ॥ ३ ॥ रूप
 रंज कहे नाथ, निर्जन, नारय-नरय विदास ॥ आनरे मं-४ ॥
 दीप्ति पर ॥ पुनः ॥ कस्या करी रे गोपी पाश जिनमर, प्रेम
 दामी अन्तरजामी ॥ नि० ॥ उदेर गद पर पाश विराड, सारी नरक
 जाली खानी ॥ नि० ॥ नीलवस्त्रनय अंग निराज, वदनीकी जाड
 बलिहरा ॥ नि० २ ॥ बाहे वज्रिय वरदा विराड, कुलवकी वरि
 है-पाटी ॥ नि० ३ ॥ दंडनर मं गरी पाणी, प्रलय पदया अथ पाड ॥
 नि० ४ ॥ नाथ निर्जननाम प्रिया, रूपवर पदवी पाड ॥ नि० ५ ॥
 ॥ सजय सजिब मुजरा सजिब, सजिब मुजरा मेरा रे ॥
 मं ॥ सजिब सुविष जिनमर खामी, चरण पखाल मेरा रे ॥
 मं ॥ केशर चंदन चरचं अंग, फूल चराचं मेरा रे ॥ पद
 रंजित, दास निरंजन मेरा रे ॥ मं ॥ ३ ॥ दीप्ति पर ॥

धृष्ट वाचै धनननन, इंद्रवीक हस्तनयो ॥ जनमे वदमानकृत्, सीर
 वीतराग ननननन ॥ धं १ ॥ मृंगं ताल गुणविमल, ऊवरी
 नाद जनननन ॥ धं २ ॥ रूपवंद रंग रंग, दल धाम
 मगननन ॥ धं ३ ॥ इति पदं ॥ निरजन सांड्यां रे, सांड
 मया दुकसा मुखा वै ॥ गुम तीरुके देवता जी, हम केआश
 बोल ॥ कनकचोली दायम जी, पूजा कर्तं सोल ॥ नि १ ॥
 गुम अवरवा मुखता अग्नि, हम निरवरवा मोर ॥ कमजमर मुखता
 वरसे, वमर नाचै मोर ॥ नि २ ॥ हमगुण काली कोपली जी,
 अग्निगुण आंवा मोर ॥ मांजरके परतपसे कांड, कतरवा लागी मोर
 ॥ नी ३ ॥ गुम हो मोतीपनकी छरी रे, हमगुण ऊंजी मोर ॥
 रूपवंद विवरार मयाकर, गुम विन देव न चर ॥ नि ॥ इति।
 राग कंदयाण ॥ ऐसे सहै विव कोनसा विमान है ॥ पा
 नीके कोट पवनके कागरे, वस दरवाजै मंगन है ॥ ऐसे १ ॥
 पांवइंद्रोके तेवीस नरकर, नगरकुंकरत हेरान है ॥ ऐसे २ ॥ प्रभा
 पुकार सुणी जब जाग्यो, बेतनगोप मुजाल है ॥ ऐसे ३ ॥ इति
 को भाण बचनरस रौंद, दायम बाल कयाण है ॥ ऐसे ४ ॥
 रूपवंद कहे तेने वारी, डरमान मान गुमान है ॥ ऐसे ५ ॥
 इति पदं ॥ आय रदो विव बागम, सुण पारिजनती, आ ॥ वृत्त
 कलिया तीरे सरण चढाई, गुण अनंता तोरा रागम ॥ सु १ ॥
 मकंदवी नंदन आव विनेयर ॥ खेव अनंता तोरा रागम ॥ सु २ ॥
 २ ॥ रूपवंद कहे नाथ निरजन, जाई विकसित वन फागम ॥
 सु ३ ॥ इति पदं ॥ रदो २ रे पादव बोधपानिया, दोष पानिया
 रे अब अपार पानिया ॥ २० ॥ प्रेमका पाला बंदोत ममाल,
 पौवन मयुरी सेवपिया ॥ २० १ ॥ दायमु दाय मियाव पिया
 सांड, फुलजा विजलि सेवपिया ॥ २० २ ॥ सोखे जोनि पव

निरनरी, दीपन मोहन वेदिका ॥ १० ३॥ कृपचंद कहे माध नि-
 रंजन, मुक्तिकय गुण वेदिका ॥ १० ४॥ इति पदं ॥ विराजो
 बंगालम, विराजो मंदिरम, यत् गोपीया पारसनाथ ॥ वि० ॥
 चवा २ चंदन और अरगजा, केसरम गरकाव ॥ बी० १ ॥ और
 सोनेको उज विराजे, सोलियेन तरे र निखान ॥ बी० २ ॥ नव
 सागरम आण पनाई, बांद एकन मुठ नार ॥ बी० ३ ॥ कृपचंद
 कहे नाथ निरंजन, आवागमन निवार ॥ बी० ४ इति पदं ॥
 कण देवा हमार स्वामी, स्वामी अंतरवासी ॥ ॥ कि० ॥
 आठ नवकी प्रीत प्रकाशी, नवम गया निवासी ॥ ॥ कि० १ ॥
 सहस्रजनकी कुंजगलीनम, निवे मोहे अंतरआमी ॥ ॥ कि० २ ॥
 आप चले निरनरेके ऊपर, नारी नारी केवल पामी ॥ ॥ कि० ३॥
 कहे नर्य यत् नेमनगीनो, कहुंद आज निरनामी ॥ ॥ कि० ४ ॥
 रंग आसोवरी ॥ अथ सो जोगी मुठ मोर, उस पदका
 करे र निवेन ॥ अ० ॥ तखर एक मूल निन जया, निन कूने
 फल लाग ॥ आला पत्र नदी कर जनक, अमृत गगन लाग ॥
 अ० १ ॥ तखर एक पंरी देउं देउ, एक मुठ एक वेवा ॥ वेवेने
 जुग चुपार खोपा, मुठ निरंतर खेवा ॥ अ० २ ॥ गगनमंदवम
 अयुविच कूआ, उदां हे अमीका वास ॥ सुगरा दोप सो नर
 पंथी, निगुटा जात निवास ॥ अ० ३ ॥ गगनमंदवम गजआ वि
 आणी, परती देय जमाया ॥ माखण था सो निरन पया, जव
 जगत सरमाया ॥ अ० ४॥ एक निन पत्र पत्र निन देवा, निन जी
 नया गुण गाया ॥ गगनमंदवका रूप न रेखा, मुमुठ सोही वनपा
 ॥ अ० ५ ॥ आनस अजिन निन नदी जाली, अंतर ज्योति जगा
 वे ॥ पट अंतर परले सोही मूरत, आनपन पद पावे ॥ अ० ६ ॥
 इति पदं ॥ पुनः ॥ अथ एसा कोन विचार, बास कोण

एक काल गरी ॥ अ० ॥ ब्रह्मके घर गरी धनी, गरीके
 घर बेनी ॥ कलमा पढ़े ॥ अ० ॥ कलमा पढ़े ॥ अ० ॥
 अ० १ ॥ सुनो हमारी बालनालो, ससु बालकुवारी ॥ एकजी
 हमारी पाँह पालो, मूँह ऊँचवनदारी ॥ अ० २ ॥ नहिं हूँ पर
 णी नही हूँ कुवारी, पून बालबालदारी ॥ कालीबालीको मैं कोइ
 नही जान्या, अग्र हूँ बालकुवारी ॥ अ० ३ ॥ अष्टाष्टोपम खट
 खटली, गान बसिके नखडि ॥ परतीको बेनी आनकी पिनी,
 नीप न सोन नराणी ॥ अ० ४ ॥ गानमनवस गप, विपली,
 वसुधा रूप जमाई ॥ सके सुणी नाई विजोवणा विजोव, काई
 एक अमुन पाई ॥ अ० ५ ॥ नाई जाइ सानरीव नहिं जाइ
 पीडिपि, पीडिपीकी सेज विडि ॥ आनवपन कहे सुणी नाई स
 या, जयाने जयाने मिडि ॥ अ० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥
 सा नै मानसरोवर वाली, बाम नैव रंग विजाली ॥ अ० ७ ॥
 नीरे आगप नार्या आ करम, पररी बेल जारसी ॥ आंकी बाक
 कबहूँ न मीया, सब जगकी हे मासी ॥ अ० ८ ॥ आया व
 काल सूरके घरम, रतन गयो ले मासी ॥ वृष पवनवै पर आग
 एम, नटके गवा जे काशी ॥ अ० ९ ॥ दयाली ऊँच पून म
 बावै, गगो मादोवन जाली, डिनिया चढ़े नीचे गिली, पनवै
 हो नाले काली ॥ अ० १० ॥ बाप आप बेटके प्यारी, पणवै
 इक वाली ॥ कबसर इकके जव बेवै, नखली प्यारी ॥ अ० ११ ॥
 अ० १२ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥
 एक विषम सोच बसत है, गार्के ऊँच न गरी ॥ अ० १३ ॥

आनंदवन मयि चलन पश्ये, समर समर गुण गावे ॥ अ० ५ ॥
 इति पदं ॥ पुनः॥ ये विनयी के पाव लागे, सोने कहिये केने ॥
 ५० ॥ आठिं नाम फिरे मरमाते, सोई निदरियासु जाग रे ॥
 नौरो ५० ॥ प्रजुजी मोरम विन कोइ नही मोरम, प्रजुजीनी
 पुजा पला रे ॥ नौरो ५० ॥ मरका फरा पारी करी नि-
 नवरी, आनंदवन पाव लागे रे ॥ नौरो ५० ॥ इति पदं ॥
 पुनः ॥ विरम पारी रे प्यारे विरम पारी, एही मोल देपारी प्यारे
 विरम पारी ॥ मोरमा जीवन काल अरे नर, काहेके उल परपुष
 करी ॥ एही० १ ॥ केन कपट पर दूह करी गुम, अरे नर परनव-
 पारी न करी ॥ एही० २ ॥ निरनंद जो ए नही मानो नी, जनम
 मरणके दुःखम पारी ॥ एही० ३ ॥ इति पदं ॥ अथ पुं निरे
 पक विरवा कोइ, देखा जाग सब जोइ ॥ अ० ॥ समरम मान मरवा
 विन जाके, आप जग्याप न होइ ॥ अविनाशीके परकी वा
 नी, जावो नर सोइ ॥ अ० १ ॥ राव रेकम रोइ न जावो, कन
 क उपल सम लेवे, गारी नामाकी नहि परियय, नी निरनंदिरे
 वृत्ते ॥ अ० २ ॥ निरा खुति अवणे सुगने, हरे मोक नहि आवो
 ॥ न जगने जोगीसर पुन, निर चट्टे गुजरवो ॥ अ० ३ ॥ पद
 समान सौपना जाकी, सापर ऐम गजीत ॥ अग्रमन मरिद पुरे
 निरा, सुरिगिरे सम श्रुति पारी ॥ अ० ४ ॥ पकन नाम पयाप प
 कति, रूत कमल विम न्यारी, निरनंद एसा जन उपम, सो
 साइका प्यारी ॥ अ० ५ ॥ इति पदं ॥
 राग प्रभाती ॥ चवला अरु जाके तर्क केसा सोचला ॥
 ५० ॥ नया जव यातकाल, साता पयले चाल ॥ अगजन करी,
 सकल सुख पोचला ॥ च० १ ॥ सुनीके रुप हरे, पयन नये
 अथरे ॥ यालगाम भवके, निराने निरविया ॥ च० २ ॥ नय

परमाद जग, तू नी तेरे काज लाग ॥ विद्वानद सग पण, देवा
नदी खोवला ॥ च० ३ ॥ दलित पदं ॥

कुरवा राग ॥ समज परी, माहे समज परी, जगसाया अचली
॥ माहे समज ॥ काव० तू कया को मूरख, नदी गरीस पव
एक परी ॥ ज० स० १ ॥ गाकित विनयर नांदी रही तुम, शिर पर धूम
तेरे काज अरी ॥ ज० स० २ ॥ विद्वानद ए वात देमारी प्यारे, जाली
तुम चित माहे खरी ॥ ज० स० ३ ॥ दलित पदं ॥ पुनः ॥
जलजी मरी नेम चढ्या निरनार, डकेली जानस मरी ने० ॥ रा
जल कनी अरज करे है, जलजी मरी अरज सुणो, महेराज ॥
डके० १ ॥ तोरण आय चले रथ फेरी, जलजी वली पशुवनकी
सुणी है पुकार ॥ ५० २ ॥ सहसावनकी कुंजालनम, जलजी
बाली महेराज धार ॥ ५० ३ ॥ दरखवदं प्रभु राजिव विनव, म
जलजी मरी देवा मुक्तिम वास ॥ ५० ३ ॥ दलित पदं ॥ पुनः
रसवा सकल नई, मनी गुण गये महेराज ॥ रसनग ॥ परम
अनंद प्राप्त मयो मरी, जब देखे जिनराज ॥ ५० १ ॥ अति उ
ज्ज्वल जल सुण जिनजीको, सच्चा सुकन समज ॥ ५० २ ॥ गा
क नमन करती प्रसुजीके, सारा आनमकाज ॥ ५० ३ ॥ पदं
कज प्रभुके फारसतही, रू गई डोल दाऊ ॥ कहेत कामाकन्याए
सुपावक, अम मोहि आविचल राज ॥ ५० ४ ॥ दलित पदं ॥

॥ राग गजव ॥ राजिव पुकारे नेम पिया, एसी कया की
॥ मुँह ठोपके चले दो बँक, देमस कया परी ॥ ५० १ ॥ दुई
आवाकी निराश, उदाशीनता परी ॥ प्यारा वया नदी देमारा, श्री
नम पोरस परी ॥ ५० २ ॥ देमस रही न जाय, भीतम तुम
विना परी, सयम लीजिय देयाव, देयापस आर्यी रा० ३ ॥ नि
शानि तुमारा वास, तेरे जानकी उरी ॥ मुनि चंद निजय चरण

धीनी समस्तणी पर, जिनगुण कमले अटक ॥ रत्नविभक्तमणि
 की राखै, कसो कुल काचवले कटक ॥ हरि हूँ २ ॥ ए जिन
 सां कोषादिक मट्ट, आसपासणी हटक ॥ कवचनणी चढ़ सु
 द्वाणी ॥ कुमलित कुमलित पटक ॥ हरि हूँ ३ ॥ ए जिन
 दिवसां न आण, ते तो सैवा नटक ॥ नाव न किंसु जेवण कत
 वंजित सुखे नटक ॥ हरि हूँ ४ ॥ मूरत संभव जिनपर की,
 जनां विपद् हटक, नखवाज कहे प्रभु ए मोटी, गुण गावै हूँ
 नटक ॥ हरि हूँ ५ ॥ इति पदं ॥
 राग काफ़ी ॥ प्रयोजन लागे मोरे नेह सखीरी, अब कस
 कर बैठे री ॥ ४० ॥ भगवत वाको जोगी, अगण प्रयोजन
 कसे री ॥ ४० ॥ जो कोई प्रयोजन नेह करेगा, विषयुक्त
 ख खटखे री ॥ ४० ॥ सवरास प्रभु गावै रसमकी, जगदीश
 मदी बैठे री ॥ ४० ॥ इति पदं ॥
 पुनः ॥ खनत कु
 कतना, कुं ॥ एक ध्यान प्रयोजन करेगा, खनत कुं ॥ अब
 लग पंथा निमल करेगा, तब लग जिन अणुसरेगा ॥ खनत ॥
 १ ॥ कोष मान मया परिहरना, सुमलित गुणित विन धन ॥
 खनत ॥ २ ॥ सवरे नाव सदा मन धरना, आनस जगति धरना ॥
 खनत ॥ ३ ॥ धन कल कंचनक कया करेगा, आनिर डक दिन मरे
 धन ॥ खनत ॥ ४ ॥ ज्ञानव्याप्त प्रभु पावै धरना, विवर्धित सुन
 धरना ॥ खनत ॥ ५ ॥ इति पदं ॥
 राग रामणी ॥ २ ॥ जीव जिनधर्म कीजिये, धर्मना चर ॥
 कर ॥ दान दीपव तप जावन, जगम ए दान मार ॥ २० ॥
 धर्म दिवसेन पारणे, आदीशर सुखकर ॥ इकतेन दान वदनी
 धा, श्रीधारास कुमार ॥ २० ॥ चंपा चर जगदिन, चवली
 कायरी ॥ इति पदं ॥

(፪፻፱)

मदीयव वाप्यो मोटे माजो रे ॥ ४१० ३ ॥ जिनवाज सुँ
मदीयव मोटे, फलपो वंजित अजुपन राजो रे ॥ ४१० ४
दलित पद ॥ पुनः ॥ यमर ते दिवाले हरे अजानरे, मोते जी
[नरख] जिनराजनी रे ॥ यम ॥ पदरी अंगी अवलोकक जानत
रे, माहे घटी दीसे मातरनी रे ॥ यम ॥ १ ॥ माल दीत मुष्ट
मा जन्मया बहू रे, कोने कुंजवनी शोभा शो कहे रे ॥ यम २ ॥
मुने किरण करी ते कहे कसी रे, मारे वाहेले मुज मासो बांधे
हसी रे ॥ यम ३ ॥ पय्य आंति जिनद हंवे वरपा रे, पडे मू
मोजोनी घटनी दशा रे ॥ यम ४ ॥ दलित पद ॥ पुनः ॥
यमर आंजो विन रविपामणो रे, सुंज सेजानो कपो सो-
दामणो रे ॥ यम ॥ वादण्ये यानो पय्यने वरणे नय रे, जिनराज
ते हरे मन गण्य रे ॥ यम १ ॥ नमस्व समाय यमर हरे मा
जणी रे, यली दशा ते श्री जिनराजनी रे ॥ यम २ ॥ मुख जोता
ते डोल सवे गंध रे, वावाले दयान सदा विजया हरे रे ॥ यम ३ ॥
आपु सेवा ते मुद मनया यरी रे, सुंजोनी करे कळया करी
रे ॥ यम ४ ॥ दलित पद ॥ पुनः ॥ हरे अज अजित ययाम
या रे, हुंनो सेव रे वाहेलाजीना नामण रे ॥ ४१० ॥ मुने दल
यानातो आणियो रे, अजपना वेकाये आणियो रे ॥ ४१० ॥
आपु दशान ते जेवन हेवन रे ॥ मुने कायु ते देवन मातो हेवन
म रे ॥ ४१० २ ॥ एवो दीपा मोसो साया मुद रे, मने
विना जगत मयया महे रे ॥ ४१० ३ ॥ महे करी ते दया म
नमा दया रे, सुंजोनीने जिनराजनी गण्य रे ॥ ४१० ४ ॥
दलित पद ॥ पुनः ॥ मवावाव २ कानो जाव पद पनी, म ॥
० ॥ मवाव जेमा सांजो, पदपण मवाप पद घटी ॥ मातो जेमा
म ॥ यम ५ ॥

जिनसे संसार, जन्ममरण विम आती चली ॥ कहे लीखे मने
 दे जगवतने, सोको जगानी यह बात खरी । म० २ ॥ दलितपद ॥
 पुनः ॥ आलोपनी प्यास नेम आम पर आवे रे, विम जगने
 बहल जगवत नाथ खे नाव रे ॥ मने केदवी यह सकसीर कही
 ने सुणाव रे, इस विम मुनेदे दीनानाथ मुंकी न जाव रे ॥ आ०
 १ ॥ सदी दलधर निरधर पीर चरित कहेवो रे, मासे कही चली
 लो कल कोड तो मनाव रे ॥ आ० २ ॥ कोनी सोनी चुगना हम
 के लंपन रावे रे, सदी आवालाणी जे कहेन, आवलिखे न मावे रे,
 आ० ३ ॥ हूँ तो मोदी गुन दीधर मदी गुन जोने रे, डण जग
 में जोना कल कहे रे थोने रे ॥ आ० ४ ॥ जगमें दीधरिया नि
 न ने दीन निकामी रे, जे रेसम सो गाव ने मावे न खामी रे ॥
 आ० ५ ॥ दीजा आवव केड बाल मनम न जावे रे, जो माहरे
 साजन दोष तो नेम मिलवे रे ॥ आ० ६ ॥ इस करनी बावीदीन
 राजिव मावी रे, जे नेहने नावे डेह डक विम रोवी रे ॥ आ० ७
 ॥ इस कहेसरनी बाण विमसे परवो रे, मने नेम राजिव सी दी
 न सुगति पर वरवो रे ॥ आ० ८ ॥ दलित पद ॥
 ॥ रंग मान ॥ ऊनी अनुनाके नीर ॥ ए बाव ॥ मनमा
 देन परम प्यास रे, विम बाहे रे दीधर ॥ नन मन देवा बागसे
 रे, दीण आनेपम कुल ॥ बचल विम एल विन पनी रे,
 मन मन मनेके जल रे, वि० म० १ ॥ स्वाम परत नन आनना
 रे, हमक दामनी रे ॥ जोगबला डक नै पणी रे, लागी जगन
 आन रे ॥ वि० २ ॥ आवसेन कुल विमपणी रे, पुनवीरम
 जपदेव ॥ वेपरवादी बालमा रे, साके गुमारी सेवे रे ॥ वि० ३ ॥
 श्रीफलवधीपर लिबक जू रे ॥ आप विराजो नाथ ॥ लिगुछ बा
 स पर साहिब रे ॥ हित कर दीखे देव रे ॥ वि० ४ ॥ श्रीज

नवदं शुद्धतामा रे, नंद योग मयुमाग ॥ निधि दंड शिव मयमी
कडिमर सुख राम रे ॥ वि० ५ ॥ इति पदं ॥ मेरे मन न
नकी, ठीक नौकी जी ॥ मरे ॥ बाण कमल विम दिवकर बां
वाणी वगन गुण गावणकी ॥ ७० १ ॥ सांघजी सुख लटक फर
पर, परसे घटा जेस सावणकी ॥ ७० २ ॥ बावपले मरु वर न
हैले, अब तो नद विमरावणकी ॥ ७० ३ ॥ बां कले विम
र प्रीती, वखत वनी है दिव लवणकी ॥ ७० ४ ॥ मोड़े गो
सी है वडुनेरी, आप कहे लववावनकी ॥ ७० ५ ॥ नंदवनी
एक लवरु, दीजे सुख डिल जावनकी ॥ ७० ६ ॥ परस नंद है
जा लोहा, हैले लोक हसलणकी ॥ ७० ७ ॥ राम निवास आ
प्रसन्न, कडिमर पद पावनकी ॥ ७० ८ ॥ इति पदं ॥
✓ ॥ नम निनंदजीस, आलनली ॥ ए बाव ॥ सांघर सुगुण
सुपारसस, मेरी आजव अनोपम प्रीत नंद रे ॥ सां ॥ विम सुख
बां वडिकी निमल, वचल नए वकोरमड रे ॥ सां १ ॥ डर न
कीजे निज वरयानल, सुखलकी बां नंद रे ॥ सां ॥ दिवम
प्रसन्न परस अब, वलिया डिलकी आप कहे रे ॥ सां २ ॥
विक्रमपरी जग वपगरी, मेरी सुख कयु विमर दंड रे ॥ सां ३ ॥
॥ सां ४ ॥ इति पदं ॥

नवदं भुङ्क्षतामा रे, नदं योग मयुमाभा ॥ निषि दंङ्क्षित सभा
 क्रिद्विभार सख रास रे ॥ वि० ५ ॥ इति पदं ॥ भरे भम
 नकी, उल्लि नोकी जी ॥ भरे ॥ बाण कमल विव विवकर
 बाणी लयन गुण गावणकी ॥ उ० १ ॥ सोमवो भूत भटक
 भर, भरसे भटा भेस भवणकी ॥ उ० २ ॥ बाणपणे भूत भम
 भूले, भव भो नद विमरावणकी ॥ उ० ३ ॥ गदं को वि
 रव प्रीती, वखत वनी हे दिव. लावणकी ॥ उ० ४ ॥ मोदे
 सो हे वहुतेरी, आप कदा लववावनकी ॥ उ० ५ ॥ सहजा
 एक लहरू, दीजे सुख छल जावनकी ॥ उ० ६ ॥ पारस नै
 जी लोहा, देवे लोक देसावणकी ॥ उ० ७ ॥ राम निवास भ
 प्रयोजी, कद्वार पद पावनकी ॥ उ० ८ ॥ इति पदं ॥
 ॥ ॥ नम निनदंजीस, आखणकी ॥ ए बाव ॥ सावित्र सु
 सुधारस, भरी आजव अनोपम प्रीत नद रे ॥ सा० ॥ निन सु
 बड बडिका निरमल, वचन नैण वकोरमड रे ॥ सा० १ उ
 कीजे निज चरयानन, सुरतकी वाद गदी रे ॥ सा० ॥ दिवस
 प्रयुक्त अरस परस भव, वलिया डिलकी आण कदी रे ॥ सा० २
 विक्रमपाटी जग वृणारी, भरी सूप क्यु विमर दंड रे ॥ सा०
 ॥ शालि सुधारो, माध दयालिय, कद्वार लय बाग रदी रे

सोम ॥ ज० ५० ॥ इति पर्व ॥

कस्त गुण शान्ता, प्रसू कोटिआप समाना ॥ अथ किमपि श्रुतिषु
 ॥ वितामलि कवच समाना, विन क्व कुशलविधाना ॥ कोटिआप
 ॥ धृता, दीव रत्नमसु विमर्षा, प्रसू सुखसंपत्ति वाताय ॥ ज० ५० ॥
 पर नपर विधाता, प्रसू आनन सुखक कर्ता ॥ विम जगत् जगत्
 क्षान् प्रसू अविना ॥ शोलेसा कण्ठके धारा ॥ ज० ५० ॥ श्रीकर्म
 क्षापी, अक्षानम रत्ना जगत् ॥ प्रसू अक्षान विधायिनी, पर
 वीने, नपा दीन लोक अविना ॥ ज० ५० ॥ कथा धातु विनाय
 धृष सदेव सुखनीने ॥ सपा जपा नव वीने, क्षागम मम अन्तर
 प्रसू मय जगत्स क्षापी ॥ ज० ५० ॥ कवचकमवा मय वीने, वी
 रक्षक विधायिनी ॥ लघुवीन योग आधारी, सुप्रसू नमन नरनारी,
 क्षापी, जगत् दीवगन रत्ननाय ॥ ज० ५० ॥ प्रसू मोहन सुरनिधारी, कर्द
 न प्रसू धारा, जगत्जीवन नाथ देसाय ॥ नवी कर्क पणकनर
 ॥ मोहे लोक वरा विनायक ॥ ए वाव ॥ विम जो कय
 मेधपराधुनाय स्वयं ॥ अथ कथनं देव स्वयं ॥
 रणी, कोटिआप कर्क नरनारी ॥ स० ५० ॥ इति विधायिनी सुम
 ॥ स० ५० ॥ विनवर्जित प्रसू गुण संगी, निध कुशलसु अर्धन
 लघुवासे, सुवि पंचम यजन विनासे, प्रसू माधव माधो कुलसे
 वासानंदा, प्रसू दीवयो परम आनंदा ॥ स० ५० ॥ जगत्जीने जग
 म लघु लोके ॥ स० ५० ॥ अविनव श्रीनवध विनंदा, जगत्जीवन
 म नरनारी वरदान आवे, गुन पूजन युगति रथावे, प्रसूजीने प्र
 वे, जगत्पति आरत विनासे, हरिदेव मति विव गात्रे, स० ५०
 मजा, जिनयवन कलाय काला ॥ स० ५० ॥ विधायिनी सुप्र व
 धारी ॥ स० ५० ॥ सुप्र विम विममया, उपदेश सुमति वि
 धातु रम्यविधारी, प्रसू महिमा आश्रित धारी, श्रीपतिकी विना

॥ अथ लक्ष्मी सांख्ये लिख्यते ॥

धीमन्तः कल्याण पार्श्ववर्त्तकी लक्ष्मी.

॥ आपन्दिदे वात्स्ये चोषण, सवादे नका सादेवका ॥ ७ ॥
 अवाज देता, मदेव वनाया गगनाका ॥ कट्यवाणपरसनन
 सका, निवरे वात्स्ये चोषण ॥ तीन लोकस सवा सादेव,
 नाथ अवतर वना ॥ १ ॥ वणारसीनगरीस तेरा जनम है,
 वासाके नवा ॥ अथशोनके कुलस गोत्रे, जैसा सरव पुनमव
 स्वर्गीलोकस हुवा आनवा, इंदराणी मंगल गावै ॥ तेजीस कोन दे
 मिलकर, अतिव करणुके आवै ॥ २ ॥ कोइ आवताकोइ गावता,
 नाम लेता देवा ॥ वासव इंद अरज करता, वंद सुरज करता
 ॥ कंदसुरनरसादेवके आगे, अरज करताखनखन ॥ जनकेसक
 पार न पावै, जिनका गुण है सवसे वना ॥ ३ ॥ वर देससे अ
 जोगी, वर जोर नपस्या करता, नीचे लगता ज्वाला जोगी, व
 जके खाना, वारे वरसकी जमर प्रचुकी, जोडेवनस वदेत क
 ॥ वरवरीके लिखे सोवनी, नपशोके देखेण चला ॥ ४ ॥ ज्ञान है
 के बोले जोगीस, एसी नपस्या कूं करता, ते जोगी तेरे वर
 केस, वना नाग डक अवजलता ॥ पारसनप, जोगीस कहेत
 जोगी जोगी नहिं छुलता, वकने द्विष फंक जंगलस, लोक स
 सा देखता ॥ ५ ॥ क्या कीया वे जोगी विमने, वना नागके अ
 दिवा, दिवा सर नवकर नागके, परणीपर पदवी पाया ॥ व
 समुद्रस आया सादेव, सवरसरीका दान दिया ॥ मातापताके
 आडो लेकर, मदेराजने योग लिखा ॥ ६ ॥ राज जोनके वदे
 गलस, जोगीस काजसंग किया ॥ वर धीर गंजौर प्रचैते, तीन
 लोकस नाम किया ॥ ज्योकावकी वनी धूपस, नीरंजन निराका
 र राजा, कमजोरने किया कनिका, नमसंजव बोधव चला ॥ ७ ॥

॥ उत्ती द्विती कर्मवृत्तिरसं, प्रवृत्ता यावत् जगत्परा ॥ भूयमावृत्तिः
संज्ञा लोका, जलकं जलदीर्घवर्षा ॥ वना क्रिया पर्वत जौरसं,
पर्वत पर्वता मन्वन्ता ॥ कन्दर्प करं दृष्ट्वा कलाका, समकं वी
वका उज्ज्वला ॥ ८ ॥ मन्वन्तपरा भूय वरमन्ता, गगन गगन्ता
धौमन्ता ॥ सप्त खटकी वनी ऊनीभू, यज्ञं खना दे मन्वन्ता ॥
नाक पर्वतपर आया पर्वता, नाथ निरन्तर पर्वत वनी, पराजय नहि
होय निर्जका, ऐसा प्रवृत्ता ध्यान वता ॥ ९ ॥ संकटसं निहोमन्ता
नीला, दृष्ट्वा धृष्टका आभावा, अवधिज्ञानसं दूर देवा ॥ पाद
धरणीराजा ॥ धरणीपर जलदीर्घ आया, पर्वमावृत्तीकं संग लिया,
पर्वमावृत्ति निधे शीस पर ॥ शीयमानने जग क्रिया ॥ १० ॥
कोन जगत्परा ती क्रिया कर्मवृत्ति, कुजवी दलाज नदी चलाता ॥ नर
लुवाला साधिव जगकं, जलधोवाला दया करता ॥ जीवि श्रीजानताज
होरक, कर्मवृत्ति ही जगत्परा ॥ धरणीपर साधिवक आने, अर्जक
रता जगत्परा ॥ ११ ॥ केवल पार जगत्पर्वकं पर्वदे, पार्वतपार शून्य
मन्वन्ता ॥ वनी जगत्परा द्यावि दीपकी, नय नैवका अजुवाला
॥ वीसन्तपरा पार्वतपर्वका, देवव वनाया नैवता ॥ वन देववर्द्ध
दूर सोई, धृष्ट राजता नैवता ॥ १२ ॥ वनी जगत्परा निहो
मन्ता, कोट वनाया देववका ॥ जगत्परा पर जगत्परा वताया,
वृत्तावा जगत्परा केवलका ॥ जगत्परा के आने आनता, भूय गृन्ता-
रा आनता ॥ १३ ॥ भूयन्तापक के ऊपर सोई, सदैवपर्वता यज्ञ पर
सका ॥ बौध्दिकी पर्वताई, वनी है, वर काम है सासका ॥
अदम्य पर्वत पर्वताई, भूदृष्ट कालाज मास मन्ता ॥ धृष्टी नैवक
नखने वृष्टी, जगत्परा पर नाम पर्वता ॥ १४ ॥ देवा के संग वर
प्रवृत्त, नरे पर्वतक आया ॥ जगत्परा जगत्परा जगत्परा, वनी

३१। अकलमया ॥ पञ्चवद जोनता मयाईने, वना मयाईने वा-
 मय किय ॥ सकल मयकी आडा देकर, वना जोल निजान
 ३२। ॥ १५ ॥ फरमवद ने देववद ने, खमवदने खु किय ॥
 ३३। मरनमयकं नलन वुठकर, जगै २ पर नाम किय ॥ कीर्तिवि-
 मय मुकतावकं मयमं, पाय मुकता राज वना ॥ गुलनवद मयाईने
 ३४। आगे, जिनमामनका काम वना ॥ १६ ॥ नेजा गता वां ग
 ३५। यान ध्यानसे खनय, दास जोनक अरजी करता, परमनय
 ३६। वुई वना ॥ वना काम नेदे है सादिस, मुखसे नहि कहये
 ३७। ॥ शिवमयाई वरी है जिनजी, मविजनकं मुखके
 ३८। ॥ १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अय आखतीजकी भाषणी ॥

३९। मरे मरे सुरतका प्यासा, वनी मादे दरशनकी आसा ॥
 ४०। दइवाकं नयनवा, ममिपति नानाकी नरा ॥ मान मदेवा
 ४१। खकवा, पाट नये जगजन आनवा ॥ (उदा-साखी) रेणु पूज पर
 ४२। एक, गय मिथन अब दून ॥ आसन कर नया मविपतिकी
 ४३। पा निवक पद हैन ॥ नाल नये वसुधर मुखतासा ॥ वं १ ॥
 ४४। नि पर कनक मुगट राज, मादगाल मविपनकी राज ॥ अवण
 ४५। कंदल अति साज, निरख दख कोट मानवाजे ॥ (उदा-साखी)
 ४६। रीर सोभावणी, आय ताप जलकन ॥ युगल अवकन देल
 ४७। रीक, वरण नीर परतन ॥ बिनीता पनदपुरी वासा ॥ वं २ ॥
 ४८। नंद सुभावा राणी, सोमस योग प्रीत रानी ॥ नये शाल पुन
 ४९। गुल खाली, मयने दिपराजवाली ॥ (उदा-साखी) चौसरव बिज
 ५०। रकी, पुन पवनेर यान ॥ जग निवदर खलाया मयने, मज-
 ५१। अतिवत ॥ मुनि दुय नये जगत कामा ॥ वं ३ ॥ वान
 ५२। रस कहै आया ॥ वरमदिन जोजन नहि पाया, नैदमलिकवन

सर्व जगत् ॥ प्रमु निरममनी गतमाया ॥ (उदा-साली) दक्षिण-
 गुर नगरम्, श्रीधराशक्तिमत् ॥ इक्ष्वाकु प्रसिद्धे वशिष्ठाया, देव कर्-
 त्तव्यकार ॥ अक्षयदेविया नई परकासा ॥ व० ४ ॥ कर्म देव-
 केवल विद्वत्साली, नाथ नये अविचलशिवनाथ ॥ शिखर केवलश-
 आप वाशी, नाथ शिव ब्रह्मा विष्णु नाथी ॥ (उदा-साली) ॥
 कुंभका काया सोहिनी, परम परम जिनवर्ध ॥ जनी
 धनी सममहिम सुरति, लज्जनी परत आनन्द ॥ केल देवी
 सीता वज्रियासा ॥ व० ५ ॥ कश्च परस्वाम भूरति नीकी, सज्ज-
 धन धन प्रसिद्धीकी ॥ नयण अतिवृत्त समकीकी, मलिकम कुं-
 ल गुर सीली ॥ (उदा-साली) ॥ उगणीशाय अकनलम्, जानपद
 सीता ॥ कौन कण्ठनव नैट नई जिन, सुन्दर कमलासंग ॥ कुंभ-
 कर्दमर चरण दासा ॥ व० ६ ॥ डोलि पद ॥

॥ अथ दीवाली जगन्नी ॥

प्रमु वीर धीर मणि वीर दूरम वलिद्वारी, प्रमु पावापुर
 निवर्ण संध सुलकारी ॥ प्रमु केवल मान प्रकाश नवल दूरसाय,
 प्रमु वज्र सहस मुनिराज संध सुलवाय ॥ प्रमु चरम सम-
 निज देव पावापुर आय, तव सुन्दर सुलकर समवसरण विरवाय
 ॥ कथा सधन नरनाथ शोक रमण रवि वाय, साधनल पञ्चर
 कुंडलि नाद सुलाय, मणि कनक रत्नका वीर सिंहासण धारी
 ॥ प्रमु पावा ॥ १ ॥ तव दस्तयाल नयनि सुराजिके आयी, प्रमु
 शील पदर धीन अमृत चषम वाय ॥ प्रथम आरके नाथ पाट ग
 त गी ॥ नाथ सिद्धारजनंद सुवाल वसनाग ॥ लिख नयनि सु
 रयनि खगयति सेवा माय, वय २ श्रीजगयति नाथ सरत रस जग
 ॥ गीतमकुं नैज प्रसिद्धीधन उगणी ॥ प्रमु पा० २ ॥ अन्नावश विवरी
 देव मुगलिपव वीर, इन्द्रादिक निवर्त अविक्त मन्त्रोच्चकोन ॥ गी

धन२ दो सदे मुकाम बिदे जिनोई, धन२ दो नर नर सुख-
न पुन साई ॥ जो पर पाउ एक घर मिलके काई ॥ दो आदि
जिन तुम पाश देख डख जाई ॥ ये सुख जिन सेई दखल कूटि
वना जाई, धन मनकर देरी तुल घटा जिन पाई ॥ तुम वचन
मालती फूल नमर मन हीन ॥ धन २० ३ ॥ क्या समवसरण
सोनापद पदम उजाला, नरपति श्यामकिमर सुन सुकमाल ॥
धन आणविपरी ककमलि मोहनमाला, धन सखकी जगनी नीर
मोन विलिखाला ॥ अब दोई केशल निजल सदा सुविशाला, म
घाई संग अनंग प्रेमस प्याला ॥ जिन लिक जनी केशलर

नाथ वगसीजे ॥ २० ४ ॥ दोल पद ॥

॥ अथ श्रीमहाजय रामनाम आरणी ॥

जिनवद करण आनंद हरल धन वरसण, श्रीसविरीया म-
दराज तीहारे वरदान ॥ श्रीकाशी सुर देश बनारस जाई, जह
अवदान वरदान सुदोन राज ॥ वासोदर कंवर धन प्रधान जाई,
धन नदरि दीनदयाल मदन मद जाई ॥ धन कमठ दीन उप
देश दयाके काई, धन धरे जिन तब नोन अवलपव साई ॥ पर
रसके संगत लोह कनक नया करदान ॥ श्री सां १ ॥ क्या वर-
ण सादेव तुम गुण गणकी रासी ॥ जोगी नागजिन सुवर्णसिद्धि
प्रकाशी ॥ श्रीअनपदेव सुरी गण खरार बासी, तुम शानिक जल
स गे अकल सब नाशी ॥ श्रीमवद देवि पर पाउ सराशी,
श्रीपावकैवली जग प्रियाली नाशी ॥ तुम सैत निरखण जग
देई अविगा नरसन ॥ श्री सां २ ॥ श्रीअजीमजय संघ सुधर
सुखवसी, निर आनंद उजव दोन धर्म उजियासी ॥ धन रामनाग
विष श्रुत वपुषे केवसी, क्या अदरित मदिमा वदिकरण
परकासी, निर ध्यान सखी वणी जगन अविनासी, धन उरज

कृत, तोन मोदकी फसी ॥ जिनवद सूर्योद निजप्राजक
सन ॥ श्रीसि० ३ ॥ पठक दिवलेन चैत्य प्रतिष्ठा कीनी,
सय सवा कछवाण नकि वृष दीनी ॥ सन जगणी सय अमन
साय सुद दीनी, सुन वस्तपवमी कुशल जयान नवीनी ॥
दमी वस्तपक श्रीपारस पद चीनी, कदमारे कहे सुखकार नकि
दीनी ॥ नद कषन कला भय चरणनके फसन ॥ श्रीसि० ४३३

॥ अय बाणनी जगपणीकी ॥

नमनय मारी-अरज सुणीजे, मुहु दानी चरवाकी, तोर
आवे कर मन जाद, वृमक सीगन वादवकी ॥ न० १ ॥ जग
वेद वृम आवन आए, घारे सेना माधवकी ॥ अय्य कंक जाद
मिल आए, ए अवसर नदी फिराकी ॥ न० २ ॥ रय करी निर
वकी सिवाए, दमक वादी नव नवकी ॥ भरे सारदयाम सव
ये, म देव नदी अय दखेकी ॥ न० ३ ॥ सुण जिनजी म न
के कदमहि, देव शोना गिरवकी ॥ मातापिता वायव सव उनी ॥
जानि नगी वादवकी ॥ न० ४ ॥ दोष जोरके चीनवे राजव,
बात सुणी पय मुन परकी, दमक वाद चली निरपारी,
अय दे पीनम सराकी ॥ न० ५ ॥ नम कहे वृम सु-
वा दी राजव, सिपयस दे सिप सरा ॥ यह सारा अमन निर-
न, कर काला यह सराकी ॥ न० ६ ॥ प्रियजी पसे सयम
दीयो, जिनस करज सराकी ॥ सयरा करीने अयम कीनी, यह
नव पार उतराकी ॥ न० ७ ॥ प्रियजी पदवा राजव मारी, पार-
देवा सैन परमपदकी ॥ कवव पामी नम सिवाए, देवी शोना
दे जिनकी ॥ न० ८ ॥ चरि कुशल या कदी वाणणी, जिनम
फिराकी ॥ न० ९ ॥ डीन पद ॥

॥ अरे तुम जगो भूष नवकर, जीतोसं उतरोगे नव पारे
 ॥ देखे तेरी कायाको आधार, सफल कर ले अपनो अव-
 सार ॥ खास तुम मनसं धरी नर नार, खाल डोल की ए दे संसार
 ॥ करो प्रभु निहाल अगो निवहाल, रलो प्रभु मुक बरालो के पा
 स ॥ ॥ सरकजा कुमलित नार काली, तेरी संगतसं गई लाली ॥ सोवत
 समालोकी भंडाली, आलसी तपसं गई पाली ॥ अंत नव दीनगया
 खाली, बेदना निगोदकी जाली ॥ अमरपद निवहास मांगि, सदा पद प्र
 दूजीकं लाल ॥ २ ॥ शीश निन नयुं गालिनंदन, सरल पर चढ़ै
 निहार चंदन ॥ करत सब इंदरिक चंदन, कटत है कर्मोकी फंदन
 ॥ साधो ते निवहुरकी साधन, सब जीवतकं सुख कंदन ॥ निनंद
 ॥ निवहास गावै, शीश बरालोसं नमवै ॥ ३ ॥ बोलत है हि
 १ भूरा हलकर, चढ़ावुं चंदन सुआ पसकर ॥ पुरासं धर्मसं ध
 कर, पाप दल हरे गया खसकर, बेतन हुआ खना कपल कसकर,
 श्या कर्मोकी लसकर ॥ ॥ निनारा निहाल खाली, शरल निवहास
 ॥ पर बाली ॥ ४ ॥ समऊ मन भूरा मनगाली, गुनं नहिं कोई दू
 गवाला ॥ बरग नरे हिरे कुमुक काला, निग ते सुगलिकुं न
 ॥ ॥ कर ते समालोकी माया, बाल ते नमवत पर नाला ॥ ५
 ते दे निग नाला, बेखो निवहासका बाला ॥ ५ ॥ कीया भू
 ली ॥ पूर पर खड़े जगना जती ॥ मुक भववत चढ़े शील सती,
 पर भेषवती, मुक बरवाक दे सरसती ॥ करी निवह लिय
 काया संलाली ॥ इनेकी दो हिरे सुगली, जीत कोइ संद

॥ ५५ निवहासली कर १० पद गया जगलाली ॥

धरमधारी ॥ प्रथम प्रमदप्र पाय, अथ जिनदास
 पा ॥ ३ ॥ चूत नर निगोवका वासी, करीई जगसु न देस
 कुमति की फनी गवे फांसी, सुमति सुखी दे उदासी ॥ कुमति
 वसी सेज खासी, मान रडो समताकें मासी ॥ दि
 खल अरिदंतकें परखो, करे जिनदास आप सरखो ॥ ४
 अफल नर नेरी जिदगानी, शीख सुखीकी मादे मानी ॥ कि
 नदी गुरु निमधजानी, कानस वगी कुमति रानी ॥ जगतसु
 र गवा पानी, गती नेरी कुमति की जानी ॥ सेवक नेरी जिन
 दास, सुधारीने गुमदी काहै ॥ ५ ॥ सकल नर नेरी जिदगानी
 शीख सुखीकी नै मानी ॥ किय निज गुरु निमधजानी, कान
 वगी सुमति राणी ॥ जगतसु अधिक चढयो पाणी, गती नै
 सुमति की जानी ॥ सेवक नेरी जिनदास बाहै, सुधारीने गुम
 काहै ॥ १० ॥ दसि ॥
 पुनः वावणी ॥ वल चैन शत्रु उठकर अपणी, जिन सँवर अड्यो
 कीसीकी नैनी ना कहिये रे, किनी० वल० ॥ चरण जिनवरन
 का नैनी रे व०, नवर सँवित पाप करम सब नन मनका भेद
 ॥ सुकन कीजै-महराज सु० ॥ जिनवरका गुण नन दीजै, स
 कित अमरस पीजै ॥ वल जिनकीका बहिये रे-वाज० ॥
 वल० ॥ करे मत मुखसे वनई, करी०, वल नामस नन मनका
 सुमति कर पर रदणी नई ॥ रीतसे बोली-परी जान री० ॥
 आत्म समतासु बोली, मत नरम पावका खोली ॥ मोनकर नन
 मनसु रदिये-मो० ॥ व० २ ॥ जोवन दिन द्यारनया मंगी रे,
 जा० ॥ अत समु चैन उठ चढयो, काय फनी गंगी ॥ गीत स
 री-परी जग० गी० ॥ आनखी परी भरी, चैनस कथा
 री ॥ सुख डःन आप किय सँवर-सुख डः० ॥ व० ॥ १ ॥

विन दयाते ॥ ए दयाप्रेम विनकार, सदा स वाते ॥ स० ॥ ए
 मादे देव विनोदर पाते ॥ वि० ॥ स मा वव काया की सरा
 सदा ॥ अर दती क्रिया करो नरक नदी जाते ॥ अर नर
 वे ॥ अ० ३ ॥ अर विनोदर मुक्त मन जायो सदा मुक्त गाते,
 अकाली नर ॥ अर पर विरिया कर जोन वेन अर नाते ॥
 विनोद नयने देख जगज्जे नर ॥ अ० ॥ तुं सीख मुमुक्षु को मान
 पाप परितर ॥ पा० ॥ अर वार २ कहुं तोय जगज्जे नर ॥ तुं
 अर वाराहीव नय नाप दीयास पर ॥ तुं करमकी माया काट
 अ० २ ॥ अर उद्वेग अवसर वदी तुं सुखत कर ॥ तुं सु० ॥
 कालने खपा ॥ अर परितर सदा परमाव धर्म कर नाते ॥ धर्म
 जोनके कर जोनतो माया, जो० ॥ एव वराये अंन जव आप
 ॥ स उद्वेगो अनारि अकाल विषय जोन जाया ॥ स परमा
 दाय नहिं आया ॥ स कुण्ड अने कुंडेव जगा कर व्यापा, जगा
 का सुख वार अंनती पाया, अंन० ॥ मारे जोव समताका सुख
 एव जनमसुं वेन वदी अर नाते ॥ अ० ॥ अ० १ ॥ स सुनर
 पारका मसुं, एव विनोद जगसुं वेन क्रिया नदी वसुं ॥ अर मसुं
 कविपक रसा जगो मयकी गरम ॥ जव गरव आणकर वीरयो
 जव कसुं ॥ स कविपक वीर क क्रिया नन गरम, नि० ॥ अर
 मादे जेयो स गरम, जेयो ॥ मदेरे उदय अंनो उख वीरया
 अर अवल अवलिन जगति सदा सुखवाते ॥ स उदयो वीरयो ॥
 पुनः ॥ तुम नरो विनोदर देव, मुनिपद पाते-मु० ॥

दे-स० ॥ व० ॥ एति पद ॥

पुनवर्षा, निगदास गुणा वरा ॥ मरे एक जिन दशम वदिह
 गतिकी फाती ॥ नरो सदा धरा-धरी जग० न० ॥ जिनपर मुख
 जगज्जे रदना उदाती ॥ ज०, परमा स विनोदर की मरे ॥

घोसी के भाई केर नही आज्ञा ॥ पूं अरज करे जिनवास, कीमत
एगाईरे ॥ की० अ० ४ ॥ डीत ॥

॥ अथ सुमति कुमतिकी जावणी ॥ दारिद्र्य कुमति कलसल
नार, लगी क्यूं केन, ल० ॥ चल सरक खनी रव रूँ पुँऊं कुल
उर ॥ दारिद्र्य सुमतीको नरमायो, मुँऊं क्यूं ओनी, मुँऊं ॥ मरी नरा
आश्वती ग्रीन विन कम बोनी ॥ गुँऊं विन मनी मरी सेज, कहुं करजोनी,
क० ॥ उठ चली दमारी संग सुखे रही पाही ॥ बुं ऊँर० कुमति
आसुआलले रेन, आ० व० ॥ दारिद्र्य केरी नरक निगदकी सेज, सेल
सूँ कही, सेलि० ॥ एकदया सायो जिनराज, संग तेरो वडो ॥ तेरी
भूरल माने बान, दियाको फटे, दिया० ॥ स सदेज दुबो हुं दूर
नार तेरो वडो ॥ तुम कोर दूरसे बान आव मत नोने, आ० व०
२ ॥ मेरी आनतकालकी ग्रीन पलक नाहि पाही, पल० ॥ सुमती
के लगी संग मुँऊं कया टाही ॥ तुं सुमतीको सिरदार, सुखावे
गाली, सु० ॥ तेरी दम दोनूँ दे नार गेरी उर काली ॥ नूँ दम
कूँ वेले दूर सुमति कुं नोने, सु० व० ॥ ३ ॥ अथ कुमतीको चल
सगियो ॥ चेतन कुमतीकी सेज, दूरसे गलियो, दू० ॥ जिनराज
बचनको रयान, दिये स गलियो ॥ जिनवास कुमति तुं बान खोटी
मत खोने, खो० ॥ व० ४ ॥ डीत पदं ॥

॥ पुनः ॥ तुम नजो जगतका खयाल, दसकका गाना, दस०
मेरी अलम ऊमर खूँट जाय, नरक उठ जाण ॥ नूँ दिना बार
जग वीच लिया दे बासा, लि० ॥ तेरे सिर पर वैरा काल, करे
है दासा ॥ सौं बोलूँ सावली बान, ऊँठ नही मासा, ऊँ० ॥ नूँ सौँल
है कण निर, किसी कर आसा ॥ अथ सेव देव जिनराज खलक
सुं खासा, खल० ॥ तेरे जीवन पतंगका रंग, ऊँठ मत

॥ अथ विदुषो मरी मरी, समस्त रं विमाना, सं. १० ॥
 ॥ अथ वृषी नवो मय वात, मोन को रीति, मो. ॥ ए मुख मो
 ॥ संसार जे नदी दीति ॥ कर वीतरण विमवास, दिव पर लो
 ॥ दिव, दिव ॥ एण नीच नारको संग माई मन दीति ॥ अथ सात
 विमनको संग, दीन मन कीति, श्री. ॥ गोई इत्यादि रं पाहवाप
 नीति मन दीति ॥ तुं सुख डवका सिद्धार, रं कर राना, रं. १०. २
 ॥ तुं विमरगया गुण वीच, नाम विनवरका, ना. ॥ एव रक्षा की
 रंके काल, किया कर घरका ॥ ते दया धाम विन लोपा, जनम
 सब नरका, व. ॥ तेर पछे बहया पाए, कसई सरख, अथ वि
 या नदी ते लान, बलन पर करका, व. ॥ नीरी वीची वात सब वा
 ए जनम युं लरका ॥ अथ सुखो शीख सुनकर रं
 रयाना, सं. १० ॥ ३ ॥ नीरी वरण सेज पर पोछा, आनंद
 दिव आया, आ. ॥ मरी नील सब प्यास सुधारस पाया ॥
 मेरे सिर पर विम सिद्धार, विनसेर राया, वि. ॥ म. वार्ड. वर
 एका सेव सफल कर काया ॥ अथ गो दोलन वसणका, मेरे ए
 दि माया, मो. ॥ युं अरन करे विनवास अवल गुण पाया ॥ अथ
 धुता कीरुठ उपदेश सुखो मन काना, सं. विस. ॥ इति पदं ॥
 ॥ पुनः नेमगणजी की लखणी ॥ रं मया दया विवहार,
 सुखो मेरी माई, सं. ॥ वाग रदी नेम वसनकी, सरस
 असनाद ॥ अथ अवल अलौ गो नेम, मेरे सिर वल ॥
 ॥ मो. ॥ जावकी रंखी ज्वाल, ज्वाल सब वाई ॥ एसी नेम
 नवल डक वार्ड, आनोखो भाई, अ. ॥ सुरत सब गाई नीन, गनन
 म गाई ॥ अथ दोनर सब डनिपा, रंखो आई, रं. ॥ ३०
 ॥ अथ वही नेम नीरखी, आनंद दिव परकर, आ. ॥ सज
 आयु सुखो साज, किलोवा करकर ॥ म. पाया परमानंद, रंखो

दिवा नरकर, दं० ॥ ले गयो पती नेमनाथ, भरी मन देकर ॥
 सखी सुख संपन आणुमं, आज चल आई, आ० दं० २ ॥ अथ
 दण अथसरस सुरत, रघामकी लागी, दया० ॥ पणुअनकी सुणी
 पुकार, दया दिव लागी ॥ जिन ली परवनकी वाट, नेणाई रघा-
 गी, निवरमणीके निर दीव, वणुयो बैरगी ॥ अथ मदेव चरी ग-
 बुलई, खनी लिटकाई, ख० दं० ३ ॥ अथ रेतीके सरसरस, टिके
 मदी पाणी, टि० ॥ जिनगुण गाय मदी जाय, अलप जिदगानी ॥
 अथ कवन जीव दुगतकी, वण्यो भवानी, व० ॥ जिनदंस की
 मय पार, दया दिव आणी ॥ अथ गोरण सतीके चैव लागणी
 गाई ॥ दा० ॥ दं० ४ ॥ दांत पदं ॥

॥ अथ मासी पणुनायकी लागणी ॥

मुलक बीव मासी पारसका बाज रखा नंका, सुगति गढ
 जीत विधा नंका रे, सु० ॥ सु० ॥ करमवल वलई कोय कोय रे,
 क० ॥ सुगतिमदेवस केलि करै, अजुनव अमन पीया ॥ शाशांता
 जीया, मादिराज गा० ॥ कल्याणक कारज कोया, अमरापुर पद-
 वी लीया, कमठ जसका करगव नंका रे, क० ॥ सु० १ ॥ यहु
 पारसमजले जाई रे, मय पा० ॥ नाव नमरकाभेट जात बेरी जगम
 सवाई ॥ टिकई टाली, मदेराज दे० ॥ वंचव विनसेमन चाली, गुमान
 गरवई गाली, गरवसे युन भिली बंका रे, ग० ॥ सु० २ ॥ भै
 शुन नाम उदय आया रे, भैर० ॥ दण पवम आता मादि प्रभु
 मासी पाया, पापसे परता, मदेराज पाप० ॥ गति जीव ध्यान
 दिव परता, आवक निव सरण करता, मरण दुख मर्या भै
 रे, म० ॥ सु० ३ ॥ मदिमा मासीकी अथ जाणी रे,
 ॥ गदि जयनी भरी आज विजोया परव विता पाणी ॥ भै
 ॥ जाया, मदेराज भै ॥ जिनदंस जिनदंस रगया, म-

गरीबराश है साधा, करो मत मनस कोड संका रे ॥ क० म० ॥ ५० ॥
 रे, पुद्गलस मनस सुक कलपना कही रे ॥ सु० ॥ जग माहे
 जैन निज मर संधाने आवै, संधा० ॥ इसकें तजकर क्यु वेतो,
 विपय गुण गावै ॥ अमृतकें अलगा होल, विसन विष खावै, वि० ॥
 सुगतीको मारग मोट, उबटम आवै ॥ घारी तुड जिदगानी माहि, वि० ॥
 ल वृष नई रे ॥ पु० १ ॥ घारे धन दोलत मंदार नरगाहे मोती, म०
 रया० ॥ सव सज्जन सब बने, जगत कृप गोती ॥ कोड मनले बेत
 कुलेल, पावै कोड धोती ॥ सानुख उठ आवै, अवलानेरो मुख
 जाली ॥ एसी संपत जिन माहि सरव क्य नई रे, स० ॥ पु० ॥
 २ ॥ ते लटल खाया खूब, खजाना खोपा, ख० ॥ निमिषन सु-
 वनर चिदरकी, सेजस सोपा ॥ सज्जया गोले सलगर, गारिसै
 गहिया, गा० ॥ ते अंतरघटका सेज रती ना धोपा ॥ या नरक नि-
 गिदकी, वाट, एकन कर लही रे, प० ॥ पु० ३ ॥ मन माने
 गाव सब माहि, गारसै गोले, गा० ॥ मे सुख संपतको माय,
 रे, कुण तोले । कुबल करता पोकर, पलक नही खोले, प० ॥
 ॥ कर, कृप रखा दजरे समर सिर टोले, अब अवसर आ
 रवा, व० ॥ पलनर परवारयो पुनरायो निदा संगी ॥ एकनी
 लवकी वाट, दोष कुण संगी, दो० ॥ तेरे देन पायो आकाश
 पा पदी संगी ॥ जिनदास कहे करमासि ओर तेरा नही रे, ज०
 पु० ५ ॥ इति पद ॥ पुनः ॥ निमिषन लावणी ॥
 तुम तजकर साजेव मार, तजा सब पर रे, तजा० ॥
 नमु नेमके पाय गया निरवर रे ॥ मे प्रीत पिपाकी कर कर
 है लागी, तुम त्याग सबे बनखन नमु बैरागी ॥ अब राजेलस

सप्तवंशी जावसँ ल्याणी, जा० ॥ धारे आंतरघटसँ ज्योत झोतकी
 जाली ॥ घुँ रोती राजुव नार नोण नर२ रे, नो० ॥ घ० १ ॥ सँ आज
 कक करजोत, कती मन परसन, करि० ॥ भेरे सिरपर तुम सिरदार,
 देजो माहि परसन ॥ अब सुख सखियनका बेख, जायो मन नरसन,
 ल० ॥ भेरे आवै नयणसँ नोर लया निव बरसन ॥ भेरे नेम सित-
 नकी आस, भिर्बु क्युं कर रे, मि० ॥ घ० २ ॥ सँ नहि कीजो न
 कसोर, चलै क्युं कहे, व० ॥ भेरे परसँ कुरंग परिवार चार दिन
 बँटे ॥ सँ रई जो परके माहि, जावन जम बँटे, जो० ॥ सँ बर्ज
 प्याकें संग, मोत क्युं गेरे ॥ भेरे नेम बिना नही जेर, जातसँ भो
 रे, जो० ॥ घ० ३ ॥ तुम नारी राजुव नार, सुगतसँ बेबी, घु० ॥
 पीडि नेम गेय निरदाण, करम सब ठेकी ॥ सँ निव जहे परनात,
 नसुं पर-पदेवी, न० ॥ भेरे नेम बिना नहि जेर जातसँ बेबी ॥ घुं
 अरज करे निनदास सुणी जिनवर रे, घु० ॥ घ० ४ ॥ इति पदं ॥
 पुनः ॥ उपदेशकी ॥ आप-समजका पर नहि पाया, दूजेकें पया
 समजवै ॥ वंका फिरे जिनदास जातसँ, दोषो दोषसँ नहि आवै ॥
 इरस-सवाद चहिनकी निवसँ, चानक अगिकी आप लगे, इंदीका
 परवससँ पडिया, गानकला कहे कहे जाँ ॥ दुण्यासँ जग हट
 डिया रे, कपट करी परयनकें जोग ॥ खायर जोही भासि ययाया,
 ल्याणी किस लिय चलै पो ॥ विषय विपनकी करे चूगली, चालासँ
 चन नही जावै ॥ घ० ॥ इ० ॥ १ ॥ अपने अवगुणकें नही देखै,
 जाका अवगुण जावै ॥ दिसादीस दूआ देवरी, दया रे विवसँ
 गावै ॥ गुणवतका गुण जोय भरी मन, अवगुणकें रसकें चावै ॥
 (नंदी) अणसँ रोग परासँ, सरथो जिनवर किस राखै ॥ जग फा-
 लीत चोर लुप्याई, धनकें सिम दनकें द्यावै ॥ घ० ॥ इ० ॥ आ० ॥
 ॥ अगुणकी भरी खान आलस, मजान द्योप लो मोहि पूजे ॥

नदी गामसे देव अंधको, परंतु अंध सरिलो सुई ॥ पारख नदी
 है दीव यानकी, गुण अयगुण के कुण वृद्ध, गानर देव कहै सुई
 परम, कामधेय दाननी वृद्ध ॥ ऐसी भरी आवनीत आनमा, अंध-
 गुण किम गाय जावे ॥ वं ६० आ० ३ ॥ कोष मान मायासे
 भातो, दोन पाई लपटयो रदतो ॥ गरय गुमानो गमको गरजी,
 पीन पारकी नहिं सदतो ॥ नगल नदी गुठ देव घरमकी, कवन
 धवन मुखसे कहतो, अंतर आठ न खूब दिपाकी, पूठ परमपदके
 देतो ॥ खांग सजी जिनवास जैनको, माल मुखको रंग खो ॥
 वं ६० आ० ४ ॥ दल पद ॥
 अथ सुगुठकी वावणी ॥ नमूं २ सु गुठ निमंथके, वे जिन
 सुखापारी है ॥ गुलक ऊपर प्रेम न करतो, मनकी समता मारी है
 ॥ न० १ ॥ गरय गालकर गुणल गोपवे, गल निमंथकी पारी है ॥
 कनक कामनीके नदी नोणी, वे गुंग अक्षवासी है ॥ न० २ ॥ उ
 क्षापक जीव झनपी, मनके वे दितकारी है ॥ करम कटकर के-
 बल पावे, जानगारय गुण नारी है ॥ न० ३ ॥ गुंथ अक्षसे सुम-
 नी सेवी, निज आत्मके मारी है ॥ जिनमके जिनवास दीनवे,
 मनके बाण बलिदारी है ॥ न० ४ ॥ दल पद ॥
 पुनः ॥ कंठ २ सु एसे सवगुठ, निवर कदप जिन पारी है ॥
 सरपा सुंद सदा उपदेशी, नविजनके उपगारी है ॥ कंठ ३
 ॥ १ ॥ अपर निक्षेप सस रंग नय, देश काल आवारी है ॥
 विरताविरती सर्व विरतके, पार परावणदारी है ॥ कंठ २ ॥ २ ॥
 सत्य सनातन कृत अरु गणके, परपाके पारी है ॥ निजव अरु
 पाखंड धुनवे, जैनपुंम अपकारी है ॥ कंठ २ ॥ ३ ॥ सवेगी
 अरु सवेगीपरी, मुनी जती गुणकारी है ॥ गान पानसे निवपद
 सधि, कहे पावक कहेसारी है ॥ कंठ २ ॥ ४ ॥ दल पद ॥

॥ अथ कृत्रिमकी लावणी ॥ तजुं २ मं मन कृत्रिम, कनक
 मनी पारी दे ॥ डोल ध्यानकी बात न जाण, अर कोमल
 दे ॥ तजुं १ ॥ कही कथल बजल लपटी, जोर पर जल व
 री दे ॥ कान फानकर मुखा परदे, असक परम नारी दे ॥ त
 २ ॥ जोल लेड जग जीव विणस, ये मर मांस आदारी दे
 केंटा पय जगतके करत, सुखस कहे आचारी दे ॥ तजुं ३
 कहे वगुण कृत्रिमका कय लग, साथ नदी संसारी दे ॥ अथ
 डोलके डोवा, डोलिका आविकारी दे ॥ तजुं ४ ॥ समक
 अरौ जैनधर्मकी, नदी कृत्रिमके पारी, जिनवरक जिनवास बीन
 है, कृत्रिम संग लुआरी दे ॥ तजुं ५ ॥ डोल ॥

आमलवृत्ता लिख्यते ॥ या जिनवास जेते रे जेते, ये
 लेड लाकनी केते ॥ यो ॥ सुजत सामो पय नदी मरती, यान
 दिवाको खेत ॥ सुधारयो सुधरे नदी पनत, जेसो लकनको जेते
 ॥ यो १ ॥ मलवा गुणवाका गुण नहि आया, कोरेही एक
 कया पूते ॥ गयोना सुधाकर लोक पुजत, ए अलग नालको जेते
 ॥ यो २ ॥ पंजित गुठकी सोमत पाई, बेधो ना दीपाको पूते,
 सावा नरको संग न करत, केन कपट नदी जेते ॥ यो ३ ॥
 जेतेही बोले जेतेही बावु, कपट करे एक मुते ॥ सावो एदे
 सार देखके, जिनवास सबसु खेत ॥ यो ४ ॥ डोल पर ॥

॥ अथ वैराग्य लावणी ॥ यो ॥ जब मन धरती दे डरे
 रती, काया मंगलकी ॥ सासोस्वास समर से सादेव, आठ प
 तनकी ॥ खबर नदी दे जुगम पलकी, सुकत करणा होय सो क
 रवे, कुल जाले कलकी ॥ यो १ ॥ तारासमल रती चंदमा
 मनी चलवतकी ॥ विवस धारका चमत्कारहे, बीजविषा
 खकी ॥ यो ॥ सु ॥ २ ॥ यो जग हे सुपणेकी साया, अस

उक्त रणवकी) मरी अश्वत्थ मरुती कीजिये ॥ जनसमन
एक, मुगली जाणकी (नगरी दीवियु ॥ जिन ॥ छुट चेतन
इ वनादे, आदि कसम मुदवा ॥ दवा रसता मुगल मारत
पुलाव दे जाय टला जी ॥ जिन ॥ तप काणद डण्डम विषा,
लगाए कमा विचारी ॥ सिंहाय धान मज्जन वणक, अर
धान गुजारी जी ॥ जिन ॥ म जाना था मुक्तिमार्गम, कर्म
आये ॥ पुलाव देकर राव गुलावा, बूट विषासव देर जी ॥ जि
॥ बहिन लखत किया कसोने, चौसतीके मारी ॥ उक्त
मता पाया मेने, अत पाव कहु मारी जी ॥ जिन ॥ सब मि
वकील काननी, पंच महेवतपारी ॥ सुन देख मसेवा काना, न
म अरजी मरी जी ॥ जिन ॥ पांचे सुमती तीन गुनि ए, अ
दे गवा गुलावा ॥ शील असेसर बना चौधरी, उक्त पूव मगाव
जी ॥ जिन ॥ अरजी गुजरी चेतन मेरी, दूआ सकीना जारी ॥
द्वार आवा जुआव लिखावा, लवा सावती मरी जी ॥
जिन ॥ आदि मुदा लै दवार आये, माह मुगल
पुलाव ॥ चार कपावक आठ मरुके, साध गवादीम लवे
जी ॥ जिन ॥ (देर मुगलकी) ॥ जिनशासन गो-
पक, ऊठा दवा दे चेतन जीवकी, जिन ॥ हमने मदी ववकाया
उक्त, ए हमरे घर आया ॥ काना देकर हमसे लया, ऐसा फरे
मवाया जी ॥ जिन ॥ विषयगाम रमिया चेतन, घटा न
न बाणा ॥ करजदार जब लरे लया, तब बाणा प्रेताना जी
जिन ॥ दवार लके गवाह हमरे, पुढिये दल जे मारा
जिन विषा काना चेतनसे, कसे करे कितावा जी ॥ जिन ॥
(देर मुगली) ॥ चेतन कहे सतावी मारी, सुण आस
म विचारी ॥ हमानदार दे गवाह मरी, जाले सब ससर जी ॥

५१, तबके ऊँह खाव जाव-सतगुरुन वसाव है ॥ जोनकर सा-
 सवार लटकाव है ॥ १ ॥ वैठके लिखेगा जब जोवकी-सुधानव-
 है ॥ रोसकी रसम जो कमीसन जो कमुनक, मोदेकी माव ५-
 जाव है मोदेसल ताकी, माव जामनीम श्रीविनवरजी लिखए
 वारण सन भावण पर आए है ॥ यान है वपरासी ताकी ज-
 लाव है ॥ गीत है सिरदार और दान है दरोणा जाके, दपारकी
 सादव अदालत पर वैठ, श्रीपारस प्रवीण पुन जवम च-
 ॥ अथ अजिपव पर लिगी ॥

जि० सं० १० ॥ डल ॥
 पाई ॥ फागुण सुदि दशमी दिन मंगल, सन अगणिस अठाई जी,
 सेली लिखा, जि० ॥ सुष संजम जवकरी जमानन, चेतन निगरी
 या जी ॥ जि० सं० १९ ॥ अमल करन जो या कमोका, चेतन
 को समझावा ॥ चेतनकी निगरी कर दीनी, करमुंका करन वना-
 जाव जी ॥ जि० सं० १८ ॥ यान दशन करी सुनसकी, दीनो-
 अशीव होण न पाव ॥ इकरसी चेतनकी होव, जम मरण मिट
 जान केलाया जी ॥ जि० सं० १७ ॥ ऐसा करी दनसाफ प्रजो-
 बलाया, सपराया सेली निगाया, इंदिय सुखसु मान करीन, ऊँचा
 लाकर, ऐसा मुँह सनायाजी, जि० सं० १६ ॥ हिंसा माई पसि
 अयुंस बैठ पढ़ाया, हिंसक एक बलाया ॥ दसके फलस दसों वि-
 हिंसा कहेकर, अठरा जीव फलाया जी ॥ जि० सं० १५ ॥ बैठ
 सब पुन सरकारी सुजम, मन मन अर्थ पसाया ॥ पसि एतस
 जोर पाप करिया, ऐसा करन बढाया जी ॥ जि० सं० १४ ॥ अ-
 १३ ॥ वने २ धीनन दन बैठे, ऐसा दम बढाया ॥ धरम कहे
 जीव अनेह राव अवनक, बेट बोलसीम-पारी जी ॥ जि० सं०
 जि० सं० १२ ॥ मू चेतन अगाध प्रजो, करम फरेवी गरी ॥

ली पायी पकड़ो अरिहंतजीको, अजुनव पर पायवेकी निगरी
 कराय लये है ॥ अजतो परकास भेन करी दे गुमारे पास, सादेव
 जिनराज अरज भरी सुण लीजायै ॥ अष्ट कर्म आहुं जाम कल
 है कर साजो, सादेव बुलाय दसैं पसमान कीजायै ॥ २ ॥
 भूतो हैं गरीब भरी कोला उकीली कोन, पास प्रवीण भरी प्र-
 सव आज कीजायै ॥ दास तो दाजुर देजोरीस रदा कंठ, जाई
 तो लगाय जुगल चरणनम लीजायै ॥ अब तो करियाव नम
 करी दे गुमारे पास, भरी दाद लीजायै तो रावरी वनाई है ॥ सु-
 नसवकी बात और मासलन अखिलनकी, अब तो अफीब मान अ-
 री लगाई है ॥ ऊँठमुंकर साजो करन है पांव नीन, साधे
 मन जैन जाकी भैन अधिकाड़े ॥ भेदे पांख लोक मोदीको ऊँ-
 ठवत है, जाते खादी श्रीजनराजकी लिखाई है ॥ जोनकार सा-
 ली पायी पकड़ो अरिहंतजीको, अजुनव पर पायवेकी निगरी

कराय लये है ॥ ४ ॥ दसि निगरी संपुष्टे ॥

॥ नेमनाथजीकी लावणी ॥

नेमकी जान बणी सारी, बैलनके आवै नर नारी ॥ अत-
 न धोना छे दवाही, निमखकी गिणती नही आती ॥ उठ पर
 बजा जो फरती, धमकसे धरती धरती (उडा-साखी) समुंदरि-
 नपुत्रीका लाजवर, नेम बनोका नाम ॥ राजिवदेके आवा परलवा,
 मयसेन पर राम ॥ मसन नई नारी जब सारी ॥ नेमकी ॥ १ ॥
 छिड़व बगा अति सारी, कान कुंजव उबि है नारी ॥ किलंगी
 रससिखकारी, माल गलमालियनकी नारी ॥ (उडा-साखी) कात्रे
 फल जगमगे, श्रीश मुगट ऊबकार ॥ कोल साविकी कंठ उप-
 मा, शोभा अधक अपार ॥ गोज रदा बजा टंकसारी ॥ नेम-
 ॥ उठ रही जनकी उरगई, आदम आवै बने नई ॥ ऊपेले

नैरा संग वी खरा, नै वसत वी गण प्रीतम पवक नही होत।
 म्यात ॥ कहुं खरावी कय वग नही नैरा वसत उदगारीका ॥
 उग्यात सिं ॥ कहेती कुमारी सुखरी सुमारी संग संग
 खरादीका, वी संग प्रीतम इस्क जगह है, इंदी पांच सवारीका
 ॥ कर सिंगार कसंग सलोक संग संग जगदीका, महुं पावे
 रायक) वलन) वी प्रीतम सहजवरीका ॥ नैरा पाश नही आवेगा
 वातम वी है कहुं खरादीका ॥ उ० २ ॥ सुख है औरन वात है
 मारी नैरा संग उख पावेगा, नैरा महेव पातलवोकसं वही वी
 वास वसवोगा ॥ संगतके फल उमरुं लोपा फिर पीढी पवतवोगा,
 आखिर उहे वैवंगी बैराज कंस प्रीत निरावेगा ॥ मं समझवोगी
 प्रीतम म्या वी मांस विवदारीका ॥ उ० ३ ॥ कुमारी खोली वात
 सुमनस नैरा संग कया होला है, नही वही वलन) सुगा धरि सुख
 उख वीढ खोला है ॥ खोला पीला नही वही पर राग संग नही
 सोला है, नही) कजाला नही) अंगुलि लिखा सहज विवोगा है ॥
 एसा, म्या संगी) जोनके सहे न उख आगारीका ॥ उ० ४ ॥
 कहेती सुमारी सुख भै प्रीतम इनकी संगत नही करणा, हुक
 हुक सोच करी विव जीतर मरी अज विवसं परना ॥ निराव
 इरकी वीर कजिन है समझके उमरुं नहि परना, पहेली सुखसं
 फिर उख उगव वी सुखसं बाहर परना ॥ रान तीनका नै है
 जीगी) सुगीत महेव सिंगारीका ॥ उ० ५ ॥ एसे वीर सुख
 सुमारीके विद्वाने उमरुं वही, भोला) आसु नै रीती प्रीतम न
 एकन्या एसा ॥ मत नो उहे विखारी साजन सोकलकी) सुखके
 सही, मं अखारि दगा करी कंस होल वुमरा मही ॥ महुं
 दासी) जगमरकी) मारी वचन करीका ॥ उ० ६ ॥ तनके संग
 कुमननारीका सुमारी प्रेम जोगा है, संजमसे सिंगार) एकाकर

ल सुगंध लगाया है ॥ प्रीति रीतिसे सदा भगन दुष्ट मुनिम
 त-जब पाया है, सीख सुखी मानो न-जबन अपणा दिव सम
 पा है ॥ कहे रामकृष्णर प्यारसे नजो ख्याल संसारीको ॥
 ०३ ॥ डीन पद ॥ नैमपुन्यकी लावणी ॥ सब शीत
 कसरिया बेल लिटक रखा केश, अजब नखराही, खूबी नी
 ने कसर क्यारी है ॥ गल मोलियनको हार, वणी नी दिवहार
 न जैसी बाही, मयूर मुख वैष्ण उबारी है ॥ (उदावणी) नेण-
 कजरा हरे नीका, सिर सोई रनोका टीका ॥ चंदवदन सा-
 मन परीका, लगी प्यास लान, भगन दिव सवन पटा जैस
 ॥ चलीनो रां ? ॥ करे प्यास अरज गरज मरी सुण-
 म-दिव वाने, गुन विन क्युं लिटकाते है ॥ मू पराणकी-
 न रही भरे पाशो जावन मरमाते, जोन कर शीश नमाते है ॥
 (उदावणी) आठ जवनकी प्रीति हंसरी, आप प्या म प्रीतिम
 री ॥ साजन प्रीति निना डकनरी, तेरे निना नही वैन, नही
 हैन, सनी नी लगे खारी ॥ च० २ ॥ सजके खेव वरान सख
 ॥ राम-ज्वाले झाड़, पहेली नी क्युं लगन लगाई है ॥ अर-
 देवी खोट लगी दिव चोट बला मुजगाई, कहे मुजके सम
 है ॥ (उदावणी) गुमसे प्रीतिम नही कोइ ख्याल, दिवम
 न-हंसरी लाण, सुखसे-रागर चैन-उदाण ॥ नेण प्यार
 लया गुमसे नैह, लिहकी मारी ॥ च० ३ ॥ नैम प्रसि है
 एक पर प्यान सदा निम जाणी, प्रीतका अंत न आवे है ॥
 (उदावणी) वमक दमक जैस, जेस वैष्णका पाणी-अंत मोदी
 आवे है ॥ (उदावणी) ज्योतिरपका भज वे सरण, निर-
 उमीसे करण, जेरे किसीके फल नही पदण, मर वचन वे

सुखावो ॥ १०. ३ ॥ कपटी साजन देखकर बोल मनकी पुनी
 उपशानकी बली, देतूँ बोल सबकी प्यारी देती मुझके कर न
 देतूँ मिठाजी मुज बर मधुरिनिवाली ॥ देतूँ शीव भवणी
 विमाली ॥ (उदावली) देतूँ वपकली सी नार जोवन भववली,
 जो मनमें पतिपारी, मुगलिसद्वेष आसा दे सुंदर सोच फिकरके
 पावो मुगलिसद्वेषके शिष्टागार ॥ कवल ववन पासिम कीनो री-
 नदी वाप देमो शिवनारीसु मन प्यारी, पाव सवो से साथ सि-
 री, एकर पासु मिलवो कारण मुगलीसद्वेष मन मारी ॥ उर नार
 ॥ १०. १ ॥ उलसि मरी बाल मम बोलो राजेव मन प्यारि पा-
 वनवा रे, देतूँ मोदनगारा प्यार देती मुझके साथ निजावो
 ववनन दीक्षर मुझु दिखवा रे ॥ देतूँ दिवकी बुनी खोल वक
 (उदावली) देतूँ मरि नजर कर आव कर रखवा रे, देतूँ
 जूँ सागरम जल विन भवली आण पनी पवन देरी ॥
 परत ॥ म परलकी लाली जो बाली गुम विन मेरे नदी सरी
 आनंद वरी, किस विष जंग बोल निरनरी मरी वया नहि दिव
 बार बार विनती करत ॥ उद्यान बगान उपादन आए परम
 ती मनमें बिना बेलास आसु करत, बोल जेनके राजेव कनी
 जेव कनी अरज करत दे मोनम कव पर आवो ॥ उर नार जा-
 पुनः ॥ वरववनी मुखसे केनी निरनरीके जवाबी, रा-
 करी तो एस प्यार, नाम रहे मरी ॥ बली ॥ डीव पद ॥
 राजेव नेह लगाय, सदा मुगलिस वास वसाया, कहै राम केशव
 निमाल रे ॥ (उदावली) डनका कछा जव दिव समझाय, अविचल
 बाल सब खलक पलकका नदी सोरोसा जाली, करी मुकनकी
 रे दिव रंग समझवे रणाली, जगत जोनी विदगानी रे ॥ बली
 मन, उद्यान धोखेकी समझवे मरी ॥ १०. ४ ॥ गुणवलीका संग

नदि खोले, या कुलिया, सुतलवकी गरमी, दिन सुतलव मुख गहरे
 भोले ॥ सदल श्रीनकी रीत धगणी फिर निमणी, सुतलव बोले,
 धन मानव जो श्रीत निजावे तर अपकी रंगोले ॥ अरज वीरता
 फरक राजुस वचन रसीला अलमोले, जलदी आयजो नमकुमरोले
 मुंगलिसदलस रमजोले ॥ (उतावणी) देवा बंदकपुर अग्रुस
 लयाले बयाले, देवा मरनरी मन रंग रंगसु गहरे ॥ देवा जोक
 नाल रफ दोल मुदंग बजोले, देवा आनंद हर्ष वयाले दे जो मन
 ब्रह्मरूप पाली ॥ रा० ३ ॥ डाल पद ॥ पुनः ॥ कोड
 देखा दे दो लावलिखा सादिव खास धोले १० ॥ अग्रजोन पर
 जलम लिखा अवतारी, वामानवन नीलवरण, सुलकारी, चंद
 बदन मनमोहन भूति धारी ॥ दारे १० मु० कोड १ ॥ अलपण
 अग्र अग्रसन आन सवाडे, कमर सदा शीत मान दरो जलवाडे
 है, मंड दिवा हिलकारी मान सवाडे ॥ दारे १० नारा० को० २ ॥ निरपर
 मुगल अवण केवल दंद गारी, कर श्रीफल सुवधेप जलक लि
 द्यारी, गल साविजनकी दार बयाले सुलकारी ॥ दारे १०
 को० ३ ॥ पलित बयाल नारा लिल वजाडे, पारस २ नाम
 लया बजाडे, चंद कपुर गणम भम बजाडे ॥ दारे १० को० ४ ॥

॥ अथ केशरियानय जयणी ॥
 सुखाजी बाला राव, सदाशिव, मन चंद जाणा धुवा ॥
 गदगलि उतकी वजा अन्गा, मन जेनी विस वन देवा ॥ सु० १ ॥
 सकलपवन बुनवान बोले, दमदी नोकर जनदीका ॥ दंडिपलि बाके
 दण जाली, तीन सुवन शिर दे टीका ॥ सु० २ ॥ रंगी सुख
 पालल सवेदी, सुतर, बाके द्यावत दे ॥ डन वंद मुनि वजीर
 भावे, मनकी सोजा पालत दे ॥ सु० ३ ॥ गवा राव जनदीस
 भावे, निरुपिपकि धन देवे ॥ गोक लिखावे सुतल वनकी, धरा

॥ पुनः ॥ केशरिपुत्राय महात्म्यं नमः ॥
॥ दूतं ॥ आदिं करणं आदिमं जातं, आदिं जितं जित-
राजं ॥ धूर्तवान्मथ आत्मा यथा, वरुणं श्रीमहादेव ॥ १ ॥ (वरु-
णाय) कश्यपगणितं दत्तवर्जं वंशम्, मन्दवैराजन्यं जायते ॥
नामिन् नरेन्द्र वंशं उजावन, आदिं यमुं जलं मण्डलाय ॥ १ ॥
सामिन्तं सुरपालं देव देवां प्रिय, मन्दिरं गिर्यं स्वर्गाय ॥ इति
कश्यपः प्रियं मण्डलं कश्यपक, सुरिन्तं मुनिजनं जितं ध्याय ॥ २ ॥
खलगाद्वंशं नगरं प्रुल्लव, जलं वरुणा वृत्तां दे ॥ जाको मन्दिरं
अपरिप्रा, कविजनं कीलकं कलां दे ॥ ३ ॥ आदौ सुरतं काव-
असुरयुको, देवां सुरिणं असुरिणं ॥ सुरपालं नरपालं वरुणं परं
सुगं, प्रियं देवं सुरं देवं ॥ ४ ॥ जलं देवाय देवाय देवाय,
वरुणं पावसे पवासा ॥ इति वरुणं परं वरुणाय, देविन्तं रावणं
मुनिरासां ॥ ५ ॥ रामचंद्रं श्रीनामं अकं वरुणं, ए मुनिं देवं
सामं ॥ नरपदी अधोत्था जाते अधोत्तव, नरं उज्जगो उज्जगो
॥ ६ ॥ राजापालं नरपालं जलं, सुरिं मण्डलाय परमकी, मण-

एकस्य अने अपकर्मकी, नई लाने मरमकी ॥ ७ ॥ आपक-
 र्मके ऊपर नून कुल वरु परण्ड ॥ मयणा विने कां नाने,
 कर्म लिली सो वन आड ॥ ८ ॥ एक दिन जिनपूजन गुणवत,
 आड अजिनमविरु ॥ वदन पूजन करके एक दिन, ध्यान धरे
 मनकंदरु ॥ ९ ॥ (मोतीदास उवा) नैदि अदिन नैदि
 नानेन, नैदि जिनराज नैदी जग संत ॥ नैदि जगनाथ नैदि
 मलियाल, नैदी मनमोहन नैदी कपाल ॥ १० ॥ नैदि नानेन
 जग सकुप, नैदि अमिजन रंजन नैदि, नैदी अविनासी
 नैदी बीरग, नैदी महाराज नैदी वननाग ॥ ११ ॥ नैदी गुण-
 धाम नैदि विमलम, नैदि नवनिध नैदि वन नाम ॥ नैदी अय-
 नारा नैदि अविनाश, नैदी मलिनन नैदी मलियाल ॥ १२ ॥ नैदी
 गुण केवल रूप अनन, नैदी जगनाथ नाराज संत ॥ नैदी जग धूम
 नैदी जग धाम, नैदी निरुप नैदी जगनाथ ॥ १३ ॥ नैदी मम
 नान नैदी मम मात, नैदी मम जग नैदी मम जग ॥ नैदी
 सखागत सखाधर, नैदी कुल बीरग टावणहर ॥ १४ ॥ (जग
 लावण) ॥ कहे अरज एक नैदि जिनपति, कन कुलन नैदी कन
 ॥ पूर करमके लिलन विल जे, कसके टरे नैदी टरे ॥ १५ ॥
 पण तुन जगिन जगन देवता, जगन देवता जगन दे ॥ आपकर्म
 अने नैधमने, कन पाडें या जगन दे ॥ १६ ॥ या कुल मां
 मला जग नदी, अदिनाथ जग लखण ॥ कनकाकरके रंग
 निवाण, गुण काने जग मलियाल ॥ १७ ॥ एक प्रमद रूप कन
 लीला, दीपनली कन नव दीना ॥ मयणा नव उल्लस नई
 मन, विने मय काने लीला ॥ १८ ॥ या विन नमल नीर नई
 कुटिल मय जगन दे ॥ कानदेव अने अमर सखाक,
 जग मलियाल दे ॥ १९ ॥ या कीरन जग लिली जग,

गण्ड गवत दे जस सेरी ॥ आसुँ नैज माससुँ महिमा, देशदसुँ
 प्रसुँ तेरी ॥ ६ ॥ फिर बगनदश बनीत नगरसुँ, जग पर प्रसुँ क-
 रणा कीनी ॥ कितने वरस लग मदीसुँ महिमा, अविचल सँतव
 कहि दीनी ॥ ७ ॥ दिखी पर पुरकान नयो तब, पातखाइ छ-
 नरा आयो ॥ वँत रँत परखरकी सूरत, जगमुखसिं जखरायो ॥
 ८ ॥ बहूत दीना लग की बिखराइ, आकी पूरा बाबा बोले ॥ देव
 सिंदको बनी जगनी, पूरावत फिर ९ निले ॥ ९ ॥ सुनो बात-
 काही सुनो गुन, एक बातसुँ आसिगा ॥ गी आझाण प्रतिपाल क-
 री, गी वयसुँ पूरासिगा ॥ १० ॥ गी वय करण लग जव निज
 दे, देल सके कयो प्रतिपाल ॥ करण जुद्ध जव नयो मदीवत,
 शख जगजगन बिकराला ॥ ११ ॥ (देवा) मदी युद्ध करयो लग,
 धाव बाराही झग ॥ करी मदीवाल गानदी, आय पुरव सुँग ॥ १२ ॥
 (बाल बावणी ॥) गीव पुरेवा बंशजालस, गीस रहे हूँ प्रसुँ
 धरती ॥ गाय एक कीनी बनिपनकी, आइ बाबा वरही २ ॥ सबे
 सिद्धी पयपाला होर पर, साँज ससुँ फिर नदी हूँ ॥ दीन करी
 सब गीपालन पर, गीपाल धरदर पुरी ॥ हूँ दिन गी बारी आयो,
 लखी नेव कयो बनिपनय ॥ होर आय जव नजरे देखी, बकित
 नयो हूँ नन मनय ॥ ३ ॥ मयरातसुँ सुपनी दीनी, कयननपकी
 सूरत हूँ ॥ बहिर निकाली करी बावणी, नीतर सूरत पूरा हूँ ॥ ४
 ॥ नव दिनसुँ सब धाव निवासी, मस काहें हूँ नव दिनसुँ ॥ कयो
 सेवने हुँकम प्रमाण, आय संध बहूँ दिनसुँ ॥ ५ ॥ कइ जयवासी
 केर बनिपरी, कइ आहुआण पाव बहूँ ॥ कइ लोकके ॥ ६ ॥
 कर बापा, कर प्रसुँको दर्शन मिले ॥ ६ ॥ पूरा सब लोकां दरस
 परसकी, कहे लोक सूरत काहें ॥ बाओ २ मदीवाजकी सूरत,
 संध संधे लीनो आनो ॥ ७ ॥ नगरदखसिं बिस सानसुँ, बापसुँ

धारि नव कीने, अंसर नर गण रदण, संव लोक वृद्धि दीने ॥
 ॥ ८ ॥ फिर सुपनेमें डूब लिखाया, संघे मिल वृत्त कीने ॥
 मध्य विराजे कयन तखतपर, कलियुगमें ये जस दीने ॥ ९ ॥
 (-इहा) संवत अठारि तेसरे, राजसम्राजिब रण ॥ किया ध्यान
 डरन, राज वरण वराण ॥ १ ॥ (सीतीशम वं ॥) सवा-
 शिव राय विन मन एह, वृंटे वरुं धाम जमी पर जेह ॥ निजा
 पति नख धुलव कहेण, बला लग डूब सुगण ॥ २ ॥
 जावां अब वंटेण गाम धुलव, महुं सब माव जहुं तनखेव ॥ आयो
 निज कीज वहुं वल गाम, तोया दोल मख लिवां वहुं साज ॥ ३ ॥
 कयुं दोय लार लिखे फिरगण, उठा नर साय लिवा कोकवाण ॥
 वंवां वहुं लोक कहे माहाराज, नदी डूब कारण कय अकान ॥
 ॥ ३ ॥ एतो वर जाजव वृव कहेण, रहे नदी लज नि
 दोरिय काय ॥ नवां फिर बोले सम्राजिब सौं, गवां सब माव
 अवां वही वर ॥ ४ ॥ इतो कहि आवत डूब ककर, कीये नज
 रणह माख डूबरे ॥ गणयो नदी माख नवे नजरण, नयो मन
 वल वोल सवे ललचाय ॥ वहुं संग आय मुकाम मऊर, किया
 नव केव वहुं सब वार ॥ ६ ॥ करे नव गाम पुकारे, नानारी सब
 ड पुकारे ॥ करी अब गहरे माख दयाव ॥ गयो किरा आज
 गरीब निवान ॥ वही अब वदरे राखण लज ॥ ८ ॥ (इहा)
 उण सम कीज सेवकी, बाहेण नारण काज ॥ गये अधियाक
 नायजी, नके गये वदगाम ॥ १ ॥ सुयो आज, पृथ्वीनायजी
 सहेर धुलव मऊर ॥ किया अकारन डरने, गीम चली जन नार
 ॥ २ ॥ आय गेन महाराजजी, करवा जन संजाव ॥ दो धोने
 होन जेह नके मणिगल ॥ ३ ॥ निज कोय आय किया, ६

॥ १ ॥ सदैव परमेश्वरं देवां विचार्य, किं उच्यते नमस्कृत्य ॥ १ ॥
 नमः श्याम दे, केशराम गङ्गाधर दे, केशराम गङ्गाधर दे
 पञ्च ॥ ५ ॥ (वावली चाल) नमः पुत्रेश्वर कोल मुण्डे, देवदे
 व ॥ देवी गङ्गाधर देवी श्रीगङ्गा, देवी मम पुत्रदेवी गङ्गा
 ॥ ४ ॥ देवि मम पुत्र देवि मम पुत्र, देवी मम सत्य देवी मम
 देवि ॥ देवि मम पुत्र देवी पद्मसुत, देवी मम कुरु भक्त्यार मया
 ॥ ३ ॥ देवि मम श्याम श्याम जल, देवी मम दन्तिन दन्तिक
 देवी दक्षिणावर्त दायक देव, देवी विमलाम देवी एन मेव
 देवी कामकुम्भ देवी कामधुन, देवी सुवर्ण देवी मम शोभ ॥
 देवी सिरदार देवी किरीट, देवी सखामात दीनदयाल ॥ २ ॥
 वन्दे) देवी नवलक्ष देवी अलक्ष, देवी मन्त्रविन दन्तिन कुरु
 दीपविजय कविप्रसङ्ग, सदैव कुरु मन्त्रात् ॥ १ ॥ (मोतीश्वर
 (देवी) या विष कलियुग जग जग, सत्य देवि विमलाम ॥
 देवि नमः पुत्रेश्वर मन्त्रेश्वर, सदा केशरामगङ्गाधर देवि ॥ ५ ॥
 सदाशिवन श्यामली अटक लाली, सदाशिवन एकमयी सून दीदी ॥
 कोप जगती सदा कोन जगती, देवि केशरीनमो दीदी ॥ ४ ॥
 वन्दे श्याम लाली अटली, पुनी नमः नमः देवि सदैव ॥ वन्दे
 या सून माता, किं नमः जगती उच्यते जगती ॥ ३ ॥ सदाशिव
 लक्ष्मी पुत्री, किं दीन दायक पुत्रेश्वर सदा ॥ किं नमः कुरु
 पराका, किं शरदार श्याम देवि लालका ॥ २ ॥ किं सखिदेव
 श्याम लाल, किं मन्त्र कथने मन्त्र जगती ॥ किं दन्तिन सखि देव
 जगती कुरुमा जगती नमस्कृत्य ॥ १ ॥ किं श्याम श्याम
 सदाशिव दीन सदाशिव श्याम ॥ पुत्रेश्वर भक्त्यार देव नमः श्याम,
 ॥ ४ ॥ (पुत्रेश्वर श्याम वन्दे) कुरु कुरु कुरु वन्दे कोकश्याम, सदा-
 शिव दीन देव ॥ मन्त्र दीन सदाशिव, सदाशिव देव ॥

भूषण वन राणा राज, पूरे इति सव मनकी ॥ २ ॥ अथ
 अलवट वाटपाटम, रण रावल डिल रे, रे, इक विन धान वे
 निन समरे, अलव लजाना अमर नरे ॥ ३ ॥ विधिमप विधिमप
 धपमप धपमप, नाल पलवल राजतरे ॥ गन्गा वी गन्गा वी गन्गा
 गन्, धी धी नीवल राजतरे ॥ ४ ॥ दिरेपनि पतवाह कड़ेपु, नीम-
 सिदेके राजनम ॥ एव लवणी खेव वणाई, सकल संघके संगनम
 ॥ ५ ॥ संवत अठार पञ्चातर वरपु, कागुण सुदि तेरा विवसे ॥
 संगलके दिन दीपविजयके, दशान परान दो जलसे ॥ ६ ॥ (क-
 लश-उपप वर) समवशरण जग दोरन, तीन लोक कलिमल
 देरन ॥ धुनि वरमत जलधरन, नरण पाप पावन करन ॥ जगलधम
 नीती देरन, सब करम जेप धनजन ॥ मोहमलि अरि वरन, सु-
 कवि वरन शुद्ध वरन, इंद वर पवजगल सेवन, जगत विरव नर-
 नतरन ॥ दीपविजय कलिराज वहाडि, जपननाथ अमरनराज
 ॥ १ ॥ जपननाथ महाराज, सब डिल दालिद राजन ॥ जपननाथ
 महाराज, सब संप मनरजन ॥ जपननाथ पुष्पनाथ, समथी
 वाहेर धाय, जपननाथ पुष्पनाथ, संगल नाम गावये ॥ दीपविजय
 कलिराज वहाडि ॥ खलक मुलक दोजर रे, कलिजग जया वे व
 सुरनरे सब कीरन कहे ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आरती लवणी ॥

आरति कहे श्रीपादभूषणकी, जम वनराणी हे जिनकी, प-
 नन धनन वल्लि वटधण, एसा ध्यान वरु विनरकी ॥ आ० १ ॥
 जव कमठासुर कोष किया वर, स्थामपटा विजयी चमकी ॥ गिर-
 आ गाव जल भूषणधारा, धरन धरन कानन गुंकी ॥ आ० २ ॥
 धरत आशान कहे सुरकी, नव धरणीधर विन चमकी ॥ कल-
 विरार इजरा किया वर, जमक जाम भूष वर देकी ॥ आ० ३ ॥

सर्व पदमावली सर्व सिद्धागरे, तथैव नाथन वे पिरका ॥ समकष्ट
॥ मादल वाजत, धनन धुधरके परका ॥ आ० ४ ॥ धी धी धी
५८ नौवन बाजे, धी धीकट डुडुनि धौका ॥ या विष गीत संगीत
जान सब, गंधर्व गान करे जिनका ॥ आ० ५ ॥ ननन नरर नन
॥ नव, नफ नौ नौ करत नका, नरेण फेरणके जनकारे,
नागनदी जलरके नका ॥ आ० ६ ॥ सुनत डंड सब नै नै करत,
नीवन सफल नया जिनका ॥ अमृत उदय निज वेर नयो
उल, को विरतर कहै जिनका ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अष्टि जिनरेण पारणी ॥

आदि जिनरेण कियो पारणी, आ रस सेवनी ॥ आ० ॥
यन एकसी आठ जेवनी, रस नरिया नै नौका ॥ उवठनार
अष्टाष्टि वदिरावै, मान दिवजावकर ॥ आ० १ ॥ देव डुडुनी
वाज रही है, होनइयारी परजा ॥ धरि माससुं कियो पारणी,
गई नूप सब निरखा रे ॥ आ० २ ॥ कोइ सिद्धि कारन मनोका-
मना ॥ धर २ मंगलाधार ॥ डिनया देरख वषामणा सिरे, आरवा
धीज निवार रे ॥ आ० ३ ॥ श्रीसेवना सिद्धकेव है, मोटी कहिंय
धाम ॥ श्रीसंपका मनोरथ पूरे, पूरे मोटी स्वामि रे ॥ आ० ४ ॥
संकट काटी विषम निवारि, राखो मेरी राज ॥ वे करजोनी
नाथि कहता, कपनदेव महाराज रे ॥ आ० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अजितनाथजीकी जगणी ॥

श्रीअजीतनाथ महाराज, गरीब निवार, जकर जिनवर
ही ॥ सेवक आनानि, मन उषारि अरजी ॥ कर माफी मारा
बांक, रजविषी रंक, अतना नवम ॥ आ० ॥ आरवा डे नारा
आण, वही डल उदय ॥ कोषाधिक युक्ता चार, खरेखार खार,
लगाय मुन केने ॥ ल० ॥ वही पाणी खिरि नोथ, वेक उठेने

॥ आ मुजरे मुक नगवान, कहे गुणगान, ध्यानमां धरती ॥ १० ॥
 ॥ सेवक १ ॥ स पूँ कयाँ डै पाप, सुखजो आप, कहे
 करजोनी ॥ क० ॥ मुक सैन्यामां नगवान, सैन नदी ओनी ॥ ३ ॥
 यदिसा अपराध, करो किरात, देवे मुं करुं ॥ ६० ॥ ऊँ, उँ
 धोली, सावने मुं दुरुं ॥ मुक खोलासां मुक ओरी, जाण जगदी
 भ, गमे ने करजो ॥ ग० ॥ सेवक २ ॥ स किया बहिन कुकर्म,
 धरी नहि धर्म, पूँ डै पापी ॥ १० ॥ अवलो पडे आरी आप मुं
 न उखापी ॥ स मुँख दिदां घण, मुनि पर नणी, करो दूरलापी
 ॥ क० ॥ परदास देखी लखान, डै ललचापो ॥ निकर कहे केसा
 लाव, आपाँन उहेल, दुःख डै दुरजो ॥ ७० सेवक ३ डोल पद

॥ अथ नमोपजीकी लवणी ॥

विषा मेरा दो निरनार सिधाए, देम संग मोद निवापो

॥ समुद्रविजै सुन नेमजी रे, सब जाव सिरताज ॥ नगक नी

ना लोकके रे, गुलनिध गरीबिनाज ॥ सो १ ॥ परेन हवाँ

आहे मनपा, देवपर कण मुन ॥ परधवासा कुन कोटि

माँ, जाव जनक जार ॥ सो २ ॥ खेव वराव यगाएक रे,

उमड़ोन दरवार ॥ आप यमजी दूरलसे, चहगुन निनार ॥ सो

३ ॥ पर्यून पर कीनी वया रे, मो पर कीनो रोस ॥ विन अत

गुण जोनी मनी रे, कोड नदी डै दोस ॥ सो ४ ॥ साया मुँ

परी विन रे, डे वडे परियार ॥ दीक्षा लीपी गुन मो रे, दस

दिया सह जार ॥ सो ५ ॥ नेव दुताशन नदके रे, चैव गुँ

मुन वार ॥ श्रीजनदेस मरीसर रे, श्रीजतर गणवार ॥ सो

६ ॥ राजेन पहेली नेमसु रे, मुगिसमडेन आप ॥ श्री निजो

जोतसु रे, कदमर गुण गप ॥ सो ७ ॥ डोल पद ॥
 डोल ॥ डक पापी अक पदमनी, नहि दीन पर दस, मो

विगतं धीमत् विना, वा विगतं परं सत् ॥ १ ॥

॥ अथ दिवाली स्तवनं ॥

धन२ भाग एव सकल धन, पुत्रा पुत्रादि दाता ॥
 आज हरे दीवाली अजिताली ॥ १ ॥ गतो गीत वधावो मुक्त,
 मत्तान् दात पुत्रा ॥ चर२ आज चरु सुदामा, वरा कमत
 विना सति ॥ १॥ धन पूज धनोत्तम दिवसे, काले वर
 ददा काली ॥ वाप हरेणने पोसी कीज, कर्म भवो सब टाली ॥
 आ० ३ ॥ अमावसकी परव दिवाली, फरती जाकऊमाली, घर२
 नो दीवलिया जलके, रात दाली अजिताली ॥ १॥ आ० ४ ॥ अमा
 राकी दिवाली राते, अल काम सब टाली, श्रीमद्दीप दिवाली
 पदना, अजरामर सुखकारी ॥ १॥ आ० ५ ॥ पतिवाने दिन जे
 पडेल, ए रत रुनी सती ॥ मुक्त गीतमना वरा पडाली, टीक
 पामी रदियाली ॥ १॥ आ० ६ ॥ दीजे नो वली सावनीजन, वे
 ननली अति दावाली ॥ ए पावे दिन दोषा ॥ पनीना, एवे दे
 रते गडी ॥ १॥ आ० ७ ॥ हरेण विजय धीमत् जम बोले, करो स
 हू सेव सुदाली ॥ कपविजय धीमत् गुण गावे, जय२ बाही नाली
 ॥ १॥ आ० ८ ॥ दति पदं ॥ हरे दीवाली ॥ अडे
 दात, धर्ममुख जवान, सखा२ ॥ सेवका काज, सबडःख ला
 याने ॥ १॥ मद्दीपारिखामी गुनते, पुदला, गीतम कवळान ॥
 धन अमावसका धन दीवाली हरे, दीपम दिवाली ॥ १॥ आ० ९
 २ ॥ चारिष पाठ्या धीमत्वा, टाका ते विजय कया ॥ एवे
 वा धर्म धीमत्वा, जतरे सब परा ॥ १॥ आ० १० ॥ आकृता
 एवेमया दीपजि, गीती वदनवा ॥ १॥ कवच वद धर्म मुक्त वा
 देता, पाया सबो परा ॥ १॥ आ० ११ ॥ एता मुनि धीमत्वा
 ज, धर्म जानने परा ॥ १॥ समसमिण हरे दीवाने ॥ धर्म आ

नरदे नर ॥ जि० ५ ॥ चोलीआमा जिनोसक रे, मुकनिजल
०. नर रे ॥ करलोनी कविपण ऐम जणे, मारी नवनी फरी जल
॥ जिन मु० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ कथमदेव स्तवनं ॥

॥ पाटो२ जी कथन विहारी, निदा वडा नयण विहारे ॥
पा० ॥ प्रभु आलस अंग दुबसाई, पूरे सकरेवा साई ॥ पा० १ ॥
प्रभु नंदा सुमंगला राणी, जन कवर सेव निजणी ॥ पा० २ ॥ प्र
वि नवलसु नेह सनेहा, प्रभु मनवतिन फल देहा ॥ पा० ३ ॥
प्यारे सेवक दिनकर गावे, मनवतिन फल पावे ॥ पा० ४ ॥ अ
नर अमर पद पावे, करलोनी आशा नमावे ॥ पा० ५ ॥ इति ॥
॥ भंगल स्तवन ॥ राग सोमरी ॥

॥ कौज भंगल न्यार, आज परे नाल पधारया ॥ कौजो ॥
महिने भंगल प्रजुजीके पूजे, पसी केसर बनसार ॥ आ० १ ॥
जीजे भंगल आर जखेहु, कहे ठहु फेवदार ॥ आ० २ ॥ बीजे
भंगल आरनी ऊनाके, घट वजाउं रणकार ॥ आ० ३ ॥ चोखे भ
जल प्रजुगुण गावें, नाचू ये धोकार ॥ आ० ४ ॥ कथमदेव कहे गो-
म निरजन, चरण कमल जाउं वार ॥ आ० ५ इति पदं ॥

॥ अथ सिद्धावत स्तवनं ॥

॥ सिद्धावत गिरि नेटो रे, सविजन सुलकार ॥ सि० ॥
प्रथम जिनदे ए गिरिना गुण, साक्षात् विविध प्रकार ॥ इत्य गिरि
गाय अनेता सीध, एदनी हुं बलिदारा रे ॥ न० सि० १ ॥ क
न जिनोपर पूजे निनाणी, समवसरया सुलकार ॥ रायण नव
गला प्रभु जेआ, पाप एक सब दारा रे ॥ न० सि० २ ॥
सुख ह्वै मनोदर अक्षय, रंजण आरौ बधारा ॥ भजन
॥ श्रीआर्जुनोपर, जेन उल सहुं आर रे ॥ न० सि० ३ ॥

मान चक्रेसी गिरर ऊपर, एक बरत निव धार ॥ उद-
 निवारण मुनि वधारण, राजन सव रखवाला रे ॥ न० १० ॥
 ४ ॥ खरतर गव नपक सुख दणक, कोरत जग विस्तारा ॥ गु-
 ल आगर राजत अति सुंदर, दंस सुंद गुणधारा रे ॥ न० १० ॥
 ५ ॥ सवत जगण वसीस कालिक, शुक्र एक मनदारा ॥ पवम ॥ दिन
 मन दूध धरीन, जाय करी जयकारा रे ॥ न० १० ॥ ११ ॥ १२ ॥
 दणकन सेवक, ऊँडाव निधान उदारा ॥ नाल पयाये गिरवना
 गुण, पनले मुनि कलसारा रे ॥ न० १० ॥ १३ ॥ १४ ॥

॥ अथ नवपदवीकी जावणी ॥

जगनसु नवपद जयकारी, पुजना रोग दले गरी ॥ प्रथम
 पद वीरुपती राज, दीप अष्टादशक स्यात ॥ आठ आदीष्टादश
 जात, जगत प्रभु गुण धार स्यात ॥ (शोदा-सावली) अष्ट करम-
 दल जातिके, सकल सिद्ध रे धार ॥ सिद्ध अनांन राजा बीजे पद,
 एक समय शिव जग ॥ अष्ट नवो निव स्वकय गरी ॥ न०
 १ ॥ सुनिपदसु गीतम केरी, उपाय बंद सुख जेरी ॥ जगज्यो-
 राजा परदुशी, एक नव माहे शिव जेरी ॥ (शोदा-सावली)
 चौथे पद पाठक नमू, श्रुतधारी उवझार ॥ सव सौंद पवम पद,
 पन पनले मुनिराग ॥ वज्राण्यो वीरिजण्ड गरी ॥ न० २ ॥ ३
 अ पदकी अष्टा आठ, सप्त सेवेगालिक पद ॥ विना पद राग
 नदी किरिया, अनंदराजनसे सव निरिया ॥ (उदो-सावली) उदा
 न पदराज मानस, पदसु आनमराग ॥ रमता रम्य अथानस,
 निजपद साध काम ॥ देखता वसि जगत सारी ॥ न० ३ ॥ ४
 गकी मादमा वई जाणी, सकय जेरी सव राणी ॥ पती देश प-
 रम करी सोई, मुनि आवक सव मत मोई ॥ (उदो-सावली)
 करम निरालिखत कापवा, सव ऊँडा कर धार ॥ कामा युत नव-

मा पद धरे, कर्म मूल कट जाय ॥ मज्जे तिम नयपद सुखभाते ॥
 ज० R ॥ श्रीसिद्धक मज्जे मज्जे, अगामव तप विधिं याद ॥
 पाप विदुं ज्ञाने पतिदत्ता, ज्ञाप श्रीपाल परे करवा ॥ (इति-
 भाषा) एतत्तु ज्ञानसंनतं मम, ज्ञेयं श्रीजिन पाप ॥ वृत्त
 धवल पुनः त्रित, सफल फली मुक्त आशा ॥ वल कहे नयपद
 वल द्यार ॥ ज० ५ ॥ इति पद ॥ पुनः ॥ वाल इदंमज्जे ॥
 धाम परे नयपदका वृत्त, वृत्त करी मत्त मात ॥ नयपद वृ
 मा जगत्तं तात्त, मिलता नदी असत ॥ १ ॥ इदंमज्जे
 जिनने द्याया, सो पाया निवाय ॥ इति वृत्त रमणी सुत संपत्,
 इतका कौनकभान ॥ २ ॥ कष्ट संपत्तं राजयोग सप, सौत धृत
 वल ताता ॥ नयपद ज्ञाने निरनय द्याया, कर करी द्याया आशा
 ॥ ३ ॥ अथ कमलदल रचना सदि, अद्वै पद अतिदत्त ॥ सिद्धमुर
 चवशास्य मुनीश्वर, दशान काल मदेत ॥ R ॥ चरित्त नप दत्त नय
 पदक विव, सप जगता अवतर ॥ जिन अनंत हो गये फिर
 द्यौः, कोदय न पाया पार ॥ ५ ॥ इतका मदिमा कदा वग अर्थ,
 मज्जे अथम अद्वैत ॥ मदिर नजर कर दीजिय, परमादित्त स्यात्त
 ॥ ६ ॥ वृत्त मादो अश्विन सुदि सारम, आशिव वत उजमात ॥
 सुतर संपत्ति मेव काल है, मदिमा सुख श्रीपाल ॥ ७ ॥ श्रीवि-
 मलधर एक सदाई, परवक्त्रनरि मात ॥ उतव विविध करे मत
 मुदुत्त, ज्ञेयवत होत विदुत्त ॥ ८ ॥ कर्म दत्ततः अथः मिलन
 जिनदत्त, म-पाया आधार ॥ कुरुल निधान कपास आनंद, मय
 श्रीकुरुल ॥ ९ ॥ इति पद ॥ पुनः ॥ (अथ वृत्त अद्वैत
 आनंद है ॥ ९ वाल) ॥ वली आशी जिनमदिरम, जग नयपद
 मदिमा गजवत है ॥ १० ॥ वृत्त अथ अर्थ नितिकालि मत्त, मदेत
 इति वलित है ॥ १० ॥ ॥ सिद्धक वृत्त गीत तात्त, क-

सुधा पीत निरजत है, तीक्ष्णनाथ निहृ पद सूरि, पाठक सुनि
 कर राजत है ॥ व० ३ ॥ अर्ध शुद्ध प्रकाशक विषयन, चरण
 निरजत साजत है ॥ परम करण मन पीतत वायक, अतुल सु-
 लोच जग राजत है ॥ व० ३ ॥ नरवर रसाणाल गुम गुणरसा,
 जालि अकल सब राजत है ॥ ध्यान रंग मन संग एकस, जग
 धानव निरजत है ॥ व० ४ ॥ शान्त सुवन गुरी बलिबर्, शान-
 रंग अरि राजत है ॥ शंकर वृद्धव गुम ध्यावै, गालिवै चरण
 राजत है ॥ व० ५ ॥ शिवर हरख साणक अक नारा, ननं तुलित
 अपम काजत है ॥ मंत्र मणी गुम जगदी नामकी, लखमी लोच-
 पराजत है ॥ व० ६ ॥ दीनै कुशल निधान ललितनर, कदमसर
 सुख राजत है ॥ व० ७ ॥ दल पद ॥

॥ अथ पार्वत्याकी होरी ॥

सावित्री धानि धारी, प्रभु मनमोहनगारी ॥ सां ॥ अथशेन भू-
 गच्छा, आनंद हरख अपारी, दयानिधि नमकुं नारी ॥ सां ॥ १ ॥
 चंद चकोर भ्रमरेश आरि, कसै नाथ निरारी ॥ वगन निहारे
 परेश शारसकी, कसै नाथ निरारी, गुरी प्रभु आल आपारी ॥
 धनर आल विवशकी मदिरा, जवन नाथ जुहारी, चणू रंग
 सरस वजारी ॥ सां ३ ॥ गल अजीम सुखस निर श्रीसय, करन
 सदा जयकारी ॥ रामवान निच दंडमुवन जग, मंदिर सरस निहारी,
 वणू अलि सुख दातारी ॥ सां ४ ॥ अणुसि अनादीश श्रीम
 दिन, वरनपंचमी धारी ॥ पाठक दिववचन बहू विधुस, चैप
 प्रविष्टा सारी, कुशल निधी कहे कदमसारी ॥ सां ५ ॥ दल पद ॥
 पुनः ॥ (हमकुं वग चले ॥ इस चालसुं होरी) ॥ अथ

सुखं धनं परमं हेरी, पारमार्थिकं पाशं ॥ आ० १ ॥ कील
 धाम गगनं जिनमंदि, सजलं पटां सुविभासं ॥ इषामं मोह
 ननं वंशं वसकत, वसकतं वामनीं नासं ॥ आ० १ ॥ अ
 आननं अमृतं धाम, उनीं उनीं उनीं ॥ वाञ्छकं तन
 वचनं मनं मरी, माणं पदं कीं आशं ॥ आ० २ ॥ त्वं कण
 इन्द्रधनुषक, दिवसिधनं नमरं उजासं ॥ अपरं गगनं कल
 सुखं वलितं, कोपलं वचनं उजासं ॥ आ० ३ ॥ निरं निरं
 धाम गुललं कमकुमा, धमं अतिरं सुभासं ॥ ननं मनं श्री
 मरीं निवकां, वरुं पदं करं दासं ॥ आ० ॥ सजलं गु
 वंशं फलं वनं वीर, गुणं मणीं गुणवासं ॥ ऊजासं निवामं धा
 वलितं धनं, ऊजासं धनं ॥ आ० ५ ॥ दासं पदं ॥

॥ अथ कथमर्धकां पारमार्थिकीं लिख्यते ॥

मन्वेवाजी, सोचं करतं हे मनसं, मरीं कथनं गगनं कृं व
 ननं, प्रथमं मदीनां जीं लया आशां वीमाशां, इंदरं वरपणी
 आशां ॥ मन्वेवाजी-मनसं मन्वे उजासं, धमं कथनं गगनं वनवास
 ॥ (ईहा-माली) कथनं धमं वनकं गगं, जगतं सुभासं काजं ॥
 पारमार्थिकं जीं पदं, वाटं विषां नमं राजं ॥ पदं धमं सजलं जीं
 मगनं वीरं हे धनसं ॥ म० १ ॥ सावणं मदीनां जीं निरं
 मदीनां वरुं, मरीं पदं, विनां जीं तरुं ॥ पारमार्थिकं जीं जीं पदं
 नकं करुं, मरीं नंदं निकलं गगनं वरुं ॥ (ईहा-माली) गग
 अर्धकां कृं कृं, गगं कदां मदीनां ॥ हे उजासं नरकं, मरीं
 पदं मदीनां आशं ॥ मदीनां मरीं सुखं विनां जीं माणं निकलं
 जिनसं ॥ म० २ ॥ मदीं मदीनां जीं, नमं धनं वीरं मगनं, वी
 गगनं कथनं धाम ॥ (ईहा-माली) निरं नव गोटकं दासं हे,

कर है नीगिबला ॥ सब साया या कथनकी, जोन गया वन-
 भास ॥ देवी जगन्मया जी उखी दौलगा नम ॥ मं ३॥ आ
 म मदीने जी मूरतकी विव लगी, वो दौलगाया दौलगा ॥ धनके
 सब लोनी जी पून नये नीगानी, कनी खर न वो वनगानी ॥
 (दूदा-साखी) सरत कहे सुख भात जी, मत कर देखा बिबाय
 ॥ दीन लोक नाराय नरय, आवेण पर्य आप ॥ इहे पर सेवे जी
 नदी दे रती विपन ॥ मं ४ ॥ कानो मदिना जी कव वो क-
 पन पर आवे, माहे नेला आण वनावे ॥ नदी कागव जी मुनके
 पून परावे, मरा जीव वदेन उख पावे ॥ (दूदा-साखी) ऊरी
 निगिन पुनकी, रो रो खोड आख ॥ जनकर भिबती कथनसे,
 जी देन विपना पावे ॥ मोर पण्डवा जी मगन ज्यु रवे पुनसे ॥
 मं ५ ॥ भिगसर मदीना जी सरत वाहुवल जाई, आपससे करे
 लनाई ॥ सरत यू कहेता जी मानो मरी देवई, सब सेया वदे-
 कर आई ॥ (दूदा-साखी) बाग वरस वनवे नये, इहे विप सम
 ऊप ॥ चकवति बनता गये, नये वंदयश राय ॥ दे जी नो नप
 कारण जी खने वाहुवल रन ॥ मं ६ ॥ पोसका मदीना जी
 पुन उदका पावा, उन आया कतिन सिपावा ॥ कदा दौला
 जी कथन जगत प्रणिपावा, मरे कथनकी भावा ॥ (दूदा-साखी)
 कोड परवतकी उदय, दौला मरा नरे ॥ उन गोपकी विपन, मदे
 वदेन उख पदे ॥ सरत मेरे सुतकी जी नदी निकर ने मनसे ॥
 मं ७ ॥ सादेका मदीना जी किसे कहे उख मरा, मर पुन विना
 आवेता ॥ पून पर आवे जी देवानी सुख मरा, कोड देवे कथनका
 मरा ॥ (दूदा-साखी) इंदीक जाके नम, रहे सदा कजारे ॥
 राज रमणीकी संधा, वो गया जिनकसे जोन ॥ पुसा निरमाही जी
 परकी विरहे देनसे ॥ मं ८ ॥ कागण मदीना जी नीर नयणसे

धरत, सैने मन परम फरती ॥ धरत यूँ कैला जी सोच फिफ
 क्युं करती, रहे निशादिन मुकसंवरती ॥ (दूँदा-साखी) धरत निव
 सर जालसो, कहला बात वनाप ॥ वनपावक उद्यानक, दीवी वधा
 आय ॥ धन पवधारे जी सेवित हे मुनिजनम ॥ सो ९८ ॥ चैतका
 मदीना जी देय गय रय सब रयारी, सिणगरी सेन्या सरी ॥
 धरत कर जोले जी मकदेवा मजदरी, चल देख पूज सुखकारी ॥
 (दूँदा-साखी) इंदरवज आगे चले, नामफल हे लर ॥ चोस
 धन सुपति करे, डुडनी गान मऊत ॥ एसो सुत तेरो जी
 विपसे सुख सिगणम ॥ सो १० ॥ माया वैशाखी जी, मकदेवा
 मन हरी, जब कपनयन मुख निरखे ॥ नैलापट उज्या जी वीत
 रग पव सरखे, बह युक्त दानक परखे ॥ (दूँदा-साखी) गज ऊपर
 सुगती गई, श्रीमकदेवा मात ॥ पदेवा निव जननी गई, एसो क
 पूज सुजान ॥ गान सुख कारण जी विवरे धन मगनम ॥ सो
 ११ ॥ चैतका मदीना जी कत गरमीकी आई, म कपन वरा
 लई पाई, धरत निव तेरो जी मुकहे हे सुखवाई ॥ निवा धन
 लखा मन जाई ॥ (दूँदा-साखी) धरत शीत आपसस, कुशल
 लखा जानद ॥ कछसार निव नामसे, देर डरित डल धर ॥ हे
 ली ली मन सुख कर जी राखी निव वरणम ॥ सो १२ ॥
 ॥ अथ नेमानपवाजीका वारे मासा ॥
 (मोद लिखा महापराज करी) वो मयुगवाला एवात ॥ सावण
 मदीने नेम लिखा मोदें व्यादेनक आय, उज्योन पर वटन वपाई
 सन मंगल गये ॥ सोच हे राम कल्या जाई, तोरलस रय फेर सि-
 धाए, धरत नवी आई ॥ गानम लोक करे दामो-मोद लिखा
 (धरतमणी) शोकन शीतम अविनाशी ॥ १ ॥ माद मदीने गान
 धीव-धीया इंदर वद आयो, वैरय शीत लीन रदी सोच जोग

गणपति ॥ सदा मोक्षं निरुद्धं संताप्य, मोर पण्डरा बोधं पाप्य,
 मदन मदन जाय ॥ दीज विन प्रीतम मुं जासी ॥ मोह लि० २॥
 आसु मदीन आश पायाको मित्रको बानी, तेव चही मोक्षं नि-
 रुद्धं दया नदी जानी ॥ कंत तुम निरमोदी सानी, विना गुने
 नकशीर कंत मोह, केसं तुम स्यानी ॥ प्रीतकी फारी गले फासी-
 मोह लि० ३ ॥ कानी कंत गयो सदसवन खबर नदी दीनी,
 श्रवण प्रीत रीत नदी साजन ये तुम दया कीनी ॥ पशुनकी दयापु-
 विन दीनी, तेव चले मादाराज गुने विन, अनंत दीनी ॥ द्याम
 मोक्षं मति ये दया जासी-मोह लि० ४ ॥ मिगिर मोहन दीन
 लोक प्रति नर और धारी, शिवरमणीके मित्रले वाचन करी कंत
 द्याही ॥ एवा तुम चलाये निरनारी, अनंत लोग जोगी सो काम-
 रा, बानी तुम्यै द्याही ॥ पाया मुं वारणनकी दासी-मोह लि० ५ ॥ पोश
 पाया चलाया देनी दिव्य नदी धारी, नदी जोरुंगी संग गाय अब चाहे
 सो कर फारी ॥ वचन जो लगे तुम लोरी, एक बेर पर आगण आहो
 कर तज्जं बारी ॥ शाली सब मित्रकर समझारी-मो० ६ ॥ माह
 मदीन कंत सदाकी उर वहीन बाली, सेज लगे गणग सी मु-
 छकी नेम नदी बाली ॥ मदनको कटक कोण जांझी, नदी वजन
 फे ॥ रत किसकी, तुमके परे बांझ ॥ एवा विन करुं मुं गति
 काशी-मो० ७ ॥ फागण फाग परेपर खेले दंपति सुख मायो,
 मुं श्रवण तरुं विन प्रीतम विपकी जिय जाने ॥ कौन संग मुं
 खलुं देरी, एक विना यो सब जग सुगो, नदी बाला जोरी ॥
 कंत मुं दुरंगनकी दासी-मो० ८ ॥ चेत मास फुली वनगई
 प्रीत विन नव नवकी जोरी, राजल तज मिथ्या वर के मदन-
 मान मोदी ॥ नेम विन हो रही छद्मासी-मो० ९ ॥ माश

वैशाख मास पूं चवत् प्रीतमकी मगस, चण्डेन मङ्गराज कुल-
 टी गङ्ग सदसराजम् ॥ वैशाख शिववैवाङ्क नग, इन्द्र चन्द्र शैवि
 पदपङ्कज सुख पुनमवर्ग ॥ आज शिवी प्रीतम पर आसी-मो
 १० ॥ जेव माया गरमी कर पञ्चा भाजे कंस वुरी, नदी शैव सुख
 जेव शिवी शिव रङ्गी भेगुरी ॥ एण कोइ पूरव उरै आण,
 जेन एवै पनस्याम आज म पराण सुख पाण ॥ नवी म नव
 प्रकी फाली-मो ११ ॥ माया असह सखी संग राखि नैम
 बरण जेव्या, पर करणी नव तिरणी दोकर एवं सनी भेव्या ॥
 प्रीत पुन भजत भगवत राखी, कङ्कसर आपार पुनारी भेम शिव
 शिवी ॥ आज नव गुण वेर गाली-मो १२ ॥ इति पर्व ॥

॥ अथ छंदस्वर स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ अथ श्री श्रीवर्जित स्तोत्र ॥

सकल माग कल निवेदिन, सहस्र सहस्र गम देवान ॥ अमि
 नोवम, नकि सुरेश्वर, नमन श्रीनवनाथ निवेश्वर ॥ १ ॥ सह
 सुर सङ्गमसिद्धि, विमल केवल वेष विकार ॥ अति सुव
 सुवर्ण समष्टि, भव वपुर लक्षण संयुत ॥ २ ॥ युग ॥ वरि
 नकिर्नाना नवनवे, नवेन्यापल निवानमजित ॥ सएव नवा
 रम समुद्रा विन, समर्पनीयः खलु श्रीनवः प्रसि ॥ ३ ॥ कमा
 निरधार, नविनः सुश्रीनवान, कर्तुम्युग वाक् सुवया वपापः ॥
 सहस्र देवा नवनवा सहस्रस्य, सविष्ट सिद्ध विनराज श्रीनवः ॥
 ४ ॥ अधिगत शिवशर्मा वीत मोदादि कमा, इदमः त्वं जन्मा
 सधु गम नवादिः श्रीनवः सौमसुतिः ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ श्री श्रीवर्जित स्तोत्र ॥

॥ अथ श्री श्रीवर्जित स्तोत्र ॥

तत्रैव पदकञ्जमाद्रेण, देवादिपाना जनार्दनैश्च ॥ मुक्ता मोदकैः
 नालि वामा यन्त्र विवोके, यत्र विवोकेन समवर्तीयः ॥ ३ ॥
 स्वरानली सन् सम यन्त्रा, सम यन्त्राया यवदीप्य मूर्तिः ॥ वि-
 पकेषा पार्थी विन पादः पादु ॥ त्रयामीपादु सवर्त पादु ॥ १ ॥
 वदमी विवान् गुरु कर्मदानं, सद्धम दानं जगते ददानं ॥
 ॥ अथ विविध पदक यन्त्र श्रीपादु विन स्तोत्रः ॥

कारको यन्त्रा, श्रीमान् शक्तिधरः प्रभुः ॥ ५ ॥ इति
 ॥ ४ ॥ सखितो मधुर शोके, वीन वाज प्रदायकः ॥ कञ्जपा-
 द्म कञ्जद्वयमा आदि ॥ यवर्तपद्मिनी वीके, स शिखे वायुनपाद-
 मकपो धीराः, पादुवर्त पदः प्रभुः ॥ ३ ॥ विनाः सवर्त दानं,
 पद ॥ २ ॥ विद्वत् विपदाशान्ता, संसारिक सुखितान् ॥ सख्यत-
 रपाद्वयमया गुरुः ॥ स्मर्यते येन सत्सया, यवर्त पादवीन वरि-
 ष्ठं तीर्थेशो, विषयः सततं सता ॥ १ ॥ वामा सौन्दर्येशः पुत्रैः,
 पद्वि ज्ञान दानं विद्या, वीर्यं श्रेय से भूतं ॥ सश्रीमान्पा-
 द्म ॥ अथ सत्सयायी शिखर पादु विन स्तोत्रः ॥

वदमी शक्तिमान् विनः ॥ ४ ॥
 पदवी ॥ विकल्पित मुख पदाः सख्युत्तरानन्दे, अथ विना
 कल्पित कति श्रीशो द्याव वायानवादिष, पदरुपापदगुणानन्दक शोका-
 विनाशनाथ, यव विन सखद्वे वायवसे विनिर्दः ॥ ३ ॥
 वद्वि विमल सखद्वेपणोवालि भावः ॥ गुरुतर वर नान्या सक्त
 वायान् कर्म ॥ २ ॥ अविचल मलि विषय सत्सयायी सद्धम,
 कर्मजित कायोरसमी सुदीनवतोली, अनाति वद्विपादिसान् पादु
 मूल मुर्मल पदवी, पदम कत पदाब्जवस्त्र रंगीव पदा ॥ अवि-
 र् विनर्पतिः श्रीपादुवर्तमणोशः ॥ १ ॥ कर्म कर्मजितवर्त
 विषय विषयवर्तः ॥ प्रकट महिमन्तो दुर्धरी नाम पादो, यत्र

पदे पराण, निर्वञ्च वसतिरूप परंपराः ॥ ३ ॥ निःशेष ईश्वर
 दान वारि, धूमामसेत्त विपसे सर्वे ॥ सर्व गज्युक्तम दानवारी,
 प्रोक्षारितोत्तरम पत्राः सर्वैः ॥ ४ ॥ देवादिदेवादि देवैस्त्वमे
 सुकान सुकानिभूद रूपः ॥ सारंग सारंगवितीर्णैः, कञ्चा
 कञ्चण कञ्च गानावा ॥ ५ ॥ धैर्यसेत्त वर वैराज, मनोम
 दैः सुमनोमते ॥ कमानिभू कक्षित नृपनसेत्त, विमरि लोक
 विमरि लोक ॥ ६ ॥ इत्येते विन पुण्यरूप गगन प्रोक्षम पान
 निव, पादपञ्च परमग सर्व विम्वन सुनिस्सुविवनीनरा ॥ ७
 कम् विपके पके दलने नञ्चा सर्व कमाः, कञ्चणाम्भय मुनि
 मासु मनिवनीरवा नवनीनानि ॥ ८ ॥ इति

॥ अथ धैर्यर विन सारंग ॥

शालिनी वः ॥ गीतगम स्वमने चान्द वीथ, जीराव
 द्या पवने वीज्वात्य ॥ वाणारस्या चापि विरयान कीर्ति, श्रीपा
 धैरा नीमि धैर्यधरूप ॥ १ ॥ इष्टार्थाना द्यतेन पारिजात, वामा
 द्यया नवन देव वः ॥ स्वर्ग नैमा नगलोक प्रविष्ट ॥ श्री पा० ॥
 २ ॥ निरवा नैद्य कम् जाल विजात, मायाननं कान रत्न
 विरत्न ॥ वञ्चा मदानंद निर्वीण शैत्य ॥ श्रीपा० ३ ॥ विद्यापी
 ठा विद्यालोक पवित्र, पाणाम्भय लोक वदमा कञ्च ॥ अनीजाल
 सर्वदा सुमनसं ॥ श्रीपा० ४ ॥ सर्व रूप योग दौर्भाग वद, सर्वदे
 मासे माधवे कण्य पके ॥ मासे पुण्यैर्द्वीन यस्य देव, श्रीपा०

५ ॥ इति

॥ अथ धैर्य विन सीत ॥

विराद सद्विण सीत विरचित, वनवना वननंद विरचित
 ॥ १ ॥ सजत गति नरेण रम्यत, जगित पश्य विनेश मन्यत
 ॥ २ ॥ विविध युग विरचित विमराः, विदित इदं सर्वक निमराः ॥

यस्य युगात् मिताः सुकटाकराः, जिनवराः प्रभवन्ति शिवंकराः ॥ निखिल
रुचरावर्ण निवद मणिर्दिव, सुमनसा प्रकट रजिर्वर्धित ॥ निखिल
सद्युज्ज्वलाः खड्गनिर्भर, जिनमव जमतां विवशामृतं ॥ ३ ॥ सकल
सद्य सरोज विकाराशिका, कुमलित संतमसावप माराशिका ॥ जिन-
वरा नम पद्म गतीन्मुखा, प्रवर्तु वाजिनललात युग्माधुव ॥ ४ ॥

अथ श्री गौरीपादं गद्य जिन स्तोत्रः ॥

श्रीमदग्राधुं जिनवरास्य विजयवङ्कानामुत्तमानां निधुः, सदा-
देव परस्वरूप विरते मुक्तपादपदेनैक्युपः ॥ सङ्घित प्रलिविव नस्तु-
मुनरां गौरीपूजाः सिनः, सौख्यसंग्रहापत्य सत्यमनसां तजैव निरुप-
रमरे ॥ १ ॥ पद्मादं विजय वङ्गानोरसुकिधिया मण्डपज्वलान्धविन,
जलवराकौशिकैव जगति, सः श्रीपादविभूतैर्विचरन्त्यमहिमा दृश्य-
नकेयानिवरे ॥ २ ॥ विद्यागतः कल्याणचित्तं कुटिलतां सौख्यविनोदा-
जिता, धुवजानि मूलनावमाव विप्रनायकिकामातिन्वता ॥ पश्यन्ते
नरराज निर्वरवश्रेष्ठा सुखानिकमा, मुक्तिश्रीरिपुसैव शत्रुमनसा ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रुतिवर्ती जिनस्तव ॥

॥ आद्यः श्रीकृष्णस्तनो जितजिनः, श्रीशानवस्तनीश्वर ॥
सुश्रीमान् जिनवन्दनश्च सुमलितः, श्रीसद्यपद्यमः ॥ पृथगीकृतमवसुपा
श्व, जिनपस्तौ श्रुतवन्दनः ॥ सर्वकः सुविप्रार्जुनो मुनिमतः, श्री
श्रीनलसिन्धुदक ॥ १ ॥ श्रुतश्रुतमेव सुप्रवृत्तमलनोदयमर्षवराः,
शानिः कृत्स्नस्तनो जितरिपुर्मुक्तिजितः सुवतः ॥ अद्वैतो नमो नैर्मयि
मुनिपूजितव्यवेविश्वतो, श्रीमदग्राधुं जिनः मणिसम्पदिमा श्रीवन्दमान
प्रभुः ॥ २ ॥ एते श्रीजिनपुङ्गवाः परमश्रद्धेयाश्च विदुः शानि, त्रिःश्रेष्ठा-
वमनं यजन्ति देवपांती जमवो जयताः ॥ वन्दन्ते सुप्रवृत्तव्यविश्वतो ॥

॥ धर्मद्वयविनिर्मुक्तये नमः ॥

॥ प्रवृत्तिमूर्तिमुद्रायां नमः ॥

प्रवचनार्थवत्प्रवृत्तिः ॥ प्रवचनार्थवत्प्रवृत्तिः ॥

समयः, एतत्प्राप्तित्तत्त्वविवरणः ॥ १ ॥ ॥ ॥

ସୂଚକ ସମ୍ପର୍କର ସମସ୍ତ ସମ୍ପର୍କ ସମ୍ପର୍କ, ସୂଚକ ସମ୍ପର୍କର ସମସ୍ତ ସମ୍ପର୍କ

॥ धर्मः सौ कसिवाभवत्पुनरिव ॥ वनवध्या

॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible][illegible]

अथ विष्णुः ॥ १ ॥ अथ ब्रह्मा ॥ २ ॥ अथ शिवः ॥ ३ ॥

॥ अथ शिवस्य शक्तिरूपं ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय ।

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

अथ यत्तु तद्विषयं विज्ञायाः संप्रतिपक्षेति चेन्न तत्रापि नान्यथाविधानात्

धनं कर्तुं प्रयत्नः ॥ ६ ॥ यथा वापि धनं तस्य ॥

॥ पञ्चोक्त्याप्युक्तं ॥

॥ ७ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ८ ॥ ५२

श्रीविनमस्तुतकामिदं कथयन्नाकावेष्टा, पुराणैरप्यहोरात्रवैष्णवं
तत् श्रीसौख्यसंपत्करं ॥ अर्घ्यार्वतिपठितैश्चमनुजैः क्षेमार्थकामा
निवा, लक्ष्मीयाश्च तान्निरायाहितैः कुर्वन्मुमक्ष्व ॥ ७ ॥ इति
भगवत्कं संपूर्णं ॥

नतिष्ठति विरुध्य, त्रिदं दस्ते पथोदकं ॥ २ ॥ दशानं जनसुखं
 दय, समार द्यतिनाशनं ॥ बोधनं विषपथस्त्य, समस्तान् पदरा
 कं ॥ ३ ॥ दशानं जिनवन्द्य, सङ्गमोयुतं वरुण ॥ जन्मशय नि-
 नाशाय, वृद्धं सुखवारिधः ॥ ४ ॥ जिनमक्ति, जिनमक्ति विने
 ॥ सदासुखे, सदासुखे नवे ॥ ५ ॥ नदिजात, नदिश
 त जगदय ॥ चीनराग समोदयो, नमो नमविषयि ॥ ६ ॥
 शययया शरणं गति, स्वमेव शरणं मम ॥ तस्मिन्मनसु, प्रयत्नेन,
 रं २ जनेभ्यः ॥ ७ ॥ चीनराग सुखदण्ड, पथराग सम, प्रमं ॥
 नैकजन्म कृतं पापं, दशानं जिनदय ॥ ८ ॥ श्रुते नमो नमो नि-
 न, सिद्धे जगति मंगलं ॥ मंगलं साधयो मुक्ते, धर्मः सर्व
 मंगलं ॥ ९ ॥ लोकानामा द्योदितः, सिद्धलोकानामाः सर्व ॥ लो-
 कोन्मया पतीशाना, पमोदितोन्मोदित ॥ १० ॥ शरणं सर्वशुद्धि
 तः, शिष्टा शरणं मंगलं ॥ साधवः शरणं लोके, धर्मः शरणं सर्व
 तं ॥ ११ ॥ दशानं नमस्कार स्तोत्रं मंगलं ॥

॥ अथ तपगुण समवाप्ति विधेय विधि संग्रह ॥

॥ १३ पुण्यकाण्ड आशेषाण्ड वृद्ध स्वयं लिखते ॥

॥ दृष्टे ॥ सकल सिद्धिदायक मन्त्र, चोवीशे जिनराय ॥ म

शुभ साधना सरसता, येन यण्डं पाप ॥ १ ॥ त्रिदिवनपति नि

सवातला, नवन युल गतीर ॥ शान्तनयक जगज्जग, वृद्धमान

पद्मवीर ॥ २ ॥ एक दिन वीर जिनदत्त, यण्डं करी पुरिषाम ॥

सर्विक जीवना दिन मणी, पुंते गणपत्यासि ॥ ३ ॥ युगति मा

रा आराधिय, कष्टे किण पर श्रुति ॥ युवा मम मय यथा

रत, माते श्रीमन्मन् ॥ ४ ॥ श्रीवारा आलोड्य, मय परीय गु

क साध ॥ श्रीव खमलो मय मे, योनि चोरासी दाय ॥ ५ ॥

विधिं वलि चोरासिध, पात्र स्थानक श्रुत ॥ अथ शरणं मन्त्र

अमुने, निवे डरित आचार ॥ ६ ॥ शुन करणी अमुनीद्वै, नो
 व नलो मन आलि ॥ अणशण अवसर आदरे, नवपद अपा सु
 जाण ॥ ७ ॥ शुनगति आरतवनला, ए डे दडा अधिकार ॥ नि
 स आणीने आदरे, जिस पामे नव पार ॥ ८ ॥ (टीका ॥ १ ॥
 ए जिनी किदे गली ॥ इस चावस) कोन दर्शिएण चारित्र नप
 वीरज, ए पावे आचार ॥ एदेनला डरे नव पर नवना, आलोडेये
 अतीवतरे ॥ गाली कोन नलो गुणखाली, वीर वदे इस गाली
 रे ॥ ग्रो को १ ॥ गुन जेववि नदी गुन विनये, काले घरी वड्ड
 मान ॥ सुन अर्थ नउमय करी सुधा, नालिये वडी उपधान रे ॥
 ग्रो को २ ॥ कोनीपगारल पाटी पोली, उवणी नोकरवली ॥ एदे
 गली कोली आठानना, कोन नकि न संजाली रे ॥ ग्रो को ३ ॥
 ३ ॥ इत्यधिक विपरीतपणाली, कोन विरायु जेदे ॥ आ नव प
 र नव वलिय नवीनव, मिठाडिकन जेदे ॥ ग्रो समिकित
 जयो शुन जाली ॥ ४ ॥ जिनववने गोक नवि कीजे, नवि परमत
 अजिवाप ॥ सधुगली निवा परदेरजो, फल सदेह स गाली रे ॥
 ग्रो सं ५ ॥ मूदपण जेनी परससा, गुणवने आदरिये ॥ सा
 वसनि पद करि धिरता, नगति प्रभावना करिये रे ॥ ग्रो सं
 ६ ॥ संव वैल्य प्रशासनली जे, अवलंब मन जेखये ॥ इअ दे
 वकी जे विणसज्या, विणसनी जेखये रे ॥ ग्रो सं ७ ॥ इ-
 त्याधिक विपरीतपणाली, समिकित जेनये जेदे ॥ आ नव पं०,
 सि० ॥ ग्रो चारित्र जयो जिन आली ॥ ८ ॥ पांच सुमति जिए
 गुनि विरायी, आठे प्रवचनमप ॥ सधुगली परसे प्रमदि, अमुने
 वचन मन काय रे ॥ ग्रो चो ९ ॥ अवकन पद साभापक, पो
 सदेसा मन गाली ॥ जे अपणपुर्वक जेआठे, प्रवचनमपन पाली
 रे ॥ ग्रो चो १० ॥ इत्याधिक विपरीतपणाली, चारित्र नदीद्वै

जे ॥ अन्तव, मिश्र ॥ ५० च ॥ १ ॥ वरि जे तप नीव
 कीर्ति, ते योगि निज शक्त ॥ धर्म मन वच काया वीर्य, नीव
 कीर्तिव जगते ॥ ५० च ॥ २ ॥ तप वीर्य आचरे देव ।
 विविध निराध्या जे ॥ अन्तव, मिश्र ॥ ५० च ॥ ३
 वलिय विरोध चारित्र्य केस, अनीचर आलोडे ॥ वीरजनेसर
 वन सुणी, पाप भूष सवि धोडे ॥ ५० च ॥ ४ ॥ (अव)
 पुण्ड्री पाणी तेज, वाज वनस्पती, ए पक्षि यावर कछा ॥ क
 करसया आरंभ, तेज जे खेनीया, केस तलव खणविषा ॥ १
 पर आरंभ अनेक, टांका सोया, मुनी माल विष्णविषा ॥
 धीपण गेण काज, देण पर पररे, पुण्ड्रीकाय विराधिया ॥
 २ ॥ धीपण नखण पाणी, ऊलिण अप्पकाय, जोनी धोनी कर
 देण ॥ नाठीगर कुंभार, लोहे सोवनगर, सोन नैज लिखेलाग
 ॥ ३ ॥ नापण सेकण काज, वख निवराण, रंगण रंघण रसवती ॥ ४
 नि पर कर्मदान, परिपरे कवरी, तेज वाज विराधिया ॥ ४ ॥ वादी
 वन आराम, वादी वनस्पती, पान फूल फल चंदीया ॥ पाँदेक
 पापनि आक, सेकया सेकया, उद्या उद्या आधिया ॥ ५ ॥ अल
 शी जे एरं, पाणी पालीजे, पण विनादिक पीलीया ॥ पाली कोव
 मादि, पीली सेवनी, कंद मूल फल वेणीया ॥ ६ ॥ ५० च ॥
 ७ ॥ जिव, देण देण विषा, देण जे अस्मिदेणीया ॥ अन्तव
 परंभव जेदे, वलिय नवोन्नव, ते मुठ मिश्रामिडकन ॥ ८ ॥
 कमी सरसिया कीर्ति, गानर गंधीवा, डझल पूरा अलशीआ ॥
 वाला जलो चंदेव, विचलितरसवणा, वलि आध्यामा मयुलता ॥
 ९ ॥ ५० च ॥ १० ॥ जे म देवता, ते मुठ मिश्र ॥ उदेदी जे
 मांकन मकोना, चांचन कीर्ति कछुआ ॥ १० ॥ गखिया
 , कोनखजुरी, गीदीला पनीया ॥ ५० च ॥ ११ ॥ जेव

જે મં દેહ્યા, તે મુઠ પ્રથામ ॥ ૧૦ ॥ માલી મઠર નામ, મલા
 પતંગિયા, કંસારી કોલિયાવત્ ૫ ॥ દીકણ લિટુ તોડ, નમરા
 નમરીય, કૌતો વગ લનમંકની ૫ ॥ ૧૧ ॥ ડમ ચોરેદી જીવ,
 જે મં દેહ્યા, તે મુઠ ॥ જલમાં તોલી જાલ, જલચર દેહ્યા,
 વનમાં મળ સંતાપીયા ૫ ॥ ૧૨ ॥ પીન્યા પૂલી જીવ, પાન પા-
 સમાં, વાપટ થાજ્યા પાંચરે ૫ ॥ ડમ પૂવેદી જીવ, જે મં દેહ્યો, તે
 મુઠ ॥ ૧૩ ॥ (દાસ ૩ ॥ પ્રાણી વાણી દિતકરી જી ॥ ૫
 વાલ) કૌષ લોન તપ ફાલણી જી, ગોલા વચન પ્રાસણ ॥
 ફેન કરી પત પારકા જી, લીધા જેદ પ્રાસ ૫ ॥ જિનજી
 પ્રથામ ઉકાન પ્રાજ, પિન્દ સાલે મધરાત ૫ ॥ જિનજી પ્રામ ॥
 જેડે સાલે કાજ ૫ ॥ જિનજી પ્રામ ॥ ૧૪ ॥ દેવ મનુજ તિપુવના જી,
 મૈથુન સેચ્યા જેદ ॥ વિપયારસ લંપટપણી જી, ધણું લિટંચો જેદ
 ૫ ॥ જિમ ૨ ॥ પરિશદની મમતા કરી જી, મવર મેલી પ્રાપ્તિ ॥
 જેદ લિટં ને તિટં રદી જી, કોડપ ન પ્રાપ્તે સાધ ૫ ॥ જિમ ૩
 ॥ રવણી મોજાન જે કળી જી, કીધા નકે પ્રનક ॥ રસના ૫
 સતી લાલચ જી, પાપ કળી પરનક ૫ ॥ જિમ ૪ ॥ મત લેડે
 વીસારીયા જી, લલિત નાંખા પચાસણ ॥ કપટ દેહી કિરિયા કરી
 જી, કીધા પ્રાપ્ત પચાસણ ૫ ॥ જિમ ૫ ॥ પ્રિય દાલે પ્રાપ્તે દેહી જી,
 પ્રાપ્તીયા પ્રતીચાર ॥ પ્રિયગતિ પ્રાપ્તપતંગી જી, ૫ ૫ દિલો પ્ર-
 નકાર ૫ ॥ જિમ ૬ ॥ (દાસ ૪ ॥ સાદેહની ની દેહી ॥) ૫
 મદાસત પ્રાપ્તી, સાદેહની ૫ ॥ પ્રપત દેહી મત વાર તો ॥ ૫
 પ્રાપ્ત મત પ્રાપ્તી, સામ ॥ પ્રાપ્તો તિરતીચાર તો ॥ ૧૧ ॥ મત લિટ
 સંસારીય, સામ ॥ દીપકે ધરિય વિચાર તો ॥ પ્રિયગતિ પ્રાપ્તપત-
 તંગી, સામ ॥ ૫ વીજો પ્રિયકાર તો ॥ ૧૨ ॥ જીવ સહે લખાવિય
 સામ ॥ પ્રાપ્તિ ચોસી વાલે તો ॥ મતગુરુ કરી લખણ, સામ ॥

कोट्यु रीय न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व भिन्न करी विनो, सो
 कोट्य न जाणो भुज तो ॥ राग हेव दम परिहरो, सो ॥ क
 ज-म पवित्र तो ॥ ४ ॥ सादमी संय लमविबु, सो ॥ जे
 श्री अर्थात तो ॥ सज्जन कुंडल करी लामणा, सो ॥ ए विनो
 सन रीत तो ॥ ५ ॥ लमिय अन खमविबु, सो ॥ एदेज प
 नो सर तो ॥ शिवागति आराधननलो, सो ॥ ए श्रीजो आ
 कर तो ॥ ६ ॥ गुणवाढ हिंसा मोरी, सो ॥ वन भुजो भुज
 तो ॥ कोय मान माया नैणा, सो ॥ शम हेव धैर्य नो ॥ ७
 निदा कलह न कीजाबु, सो ॥ केना न दीजे आव तो ॥ त
 आरती भिन्ना नजा, सो ॥ माया मोल बुंवाळ तो ॥ ८ ॥ वि
 निधर वीसराविबु, सो ॥ पाप स्थान अठार तो ॥ शिवागति अ
 राधननलो, सो ॥ ए जोयो अधिकार तो ॥ ९ ॥ (शिव प श्री
 ॥ हेव निमुणो डहा आवीया ए ॥ ए वाल ॥) जनम जरा मर
 हो करी ए, ए संसार असार तो ॥ करया कर्म सहुं अविनाश ए,
 कोट्य न राखवहार तो ॥ १ ॥ जारण एक अविनाश ए, जारण
 सिद्धनाश तो ॥ जारण धर्म श्रीवैतनो ए, साधु जारण गुणवंत
 तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरी ए ॥ चार जारण विम धार
 तो ॥ ३ ॥ शिवागति आराधननलो ए, ए पावसो अधिकार तो ॥ ४ ॥
 आनव परमव जे कस्या ए, पाप कर्म केड लाल तो ॥ आन
 साधे निदिय ए, धनकमिभू गुह साख तो ॥ ५ ॥ निवृत्तमान
 वनाविआ ए, जे नाल्या उखेव तो ॥ कुमल कदापदेन वने ए,
 पवि चल्याया सज तो ॥ ५ ॥ पन्या पन्या जे पण ए, पटी
 देव द्रव्यार तो ॥ नवर सेवी भुंकीया ए, कला जोव सदा
 तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पापीया ए, जनमर पविहार तो ॥ ज
 मान पोटो पटी ए, कोट्य न कीजे सातो ॥ ७ ॥ आनव

परमेश्वर के कथन ए, इस अधिकरण अनेक तो ॥ निविष्टः शीतः
 एतिष्ठ ए, अथा त्वं विवेक तो ॥ ८ ॥ कुतश्च नित्यं इमं
 करो ए, यत्तु कथं परिहार तो ॥ शिवगति आराधनतया ए, ए
 उरि अधिकार तो ॥ ९ ॥ (दल उरि ॥ आदि तु ओइने आपणा
 ॥ ए चाल ॥) धनर के दिन मावरी, निवृत्त कीया धर्म ॥ धन
 शीघ्रत तप आदरी, टाढया डल्कर ॥ १० ॥ शीघ्रजिह्वक तीर्थ
 नी, के कीया पात्र ॥ युगत निनवर पूजिया, बलि पोरया पात्र ॥
 १० २ ॥ पुनक ज्ञान विद्याविद्या, जिह्वार विन वैश्य ॥ तप वदु
 विष सावया, ए साहे केज ॥ १० ३ ॥ पदिकमणा सुपरे करया,
 अधिकृता धन ॥ साधु सूरि उवाचार्थ, दीया बहुमान ॥ १० ४ ॥
 धर्मकरज अर्जुनारि, इस वारिवार ॥ शिवगति आराधनतया,
 सातमी अधिकार ॥ १० ५ ॥ जाव यलो मन आणीवे, विन अर
 पो धन ॥ समता जावे जाविष, ए आत्ममग्न ॥ १० ६ ॥ सुख
 कुल करण जीवने, कोइ अवसर न होइ ॥ कर्म आप के आचरया,
 जागविष सोय ॥ १० ७ ॥ समता विष के अचरये, आणी पुन
 काम ॥ वारि ऊपर के लीप्या, ऊपर विजय ॥ १० ८ ॥ जाव
 सती पूरे जाविष, ए धर्मनो सर ॥ शिवगति आराधनतया,
 आठमी अधिकार ॥ १० ९ ॥ (दल उ मी ॥ हेवन गिरि ऊपर
 ॥ ए चाल) हेतु अवसर जाणी करीय संवेक्षण सर, अणसय
 आदरिय पबली श्वा आहार ॥ वर्तता सति भुंकी जानी ममत
 भ्या, ए आत्म खले समता ज्ञान तरंग ॥ गति श्वा के कीया अ
 रार अनेन निःशोक, पण त्वति न पण्यो जीव ललचीन के ॥ उमहे
 ए उरि २ अलशायनी परिणाम, एहेयो पण्यो शिवपद सुरपद धन
 ॥ ११ ॥ धन यथा आदिमद खोयो मेवकृपार, अलशाय आरणी पण्य
 नवनो पार ॥ शिवगति आरि करी एक अवसर, आराधन करो

ए नमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशम अधिकार महे भव नवकार
 मन्थी नील मुकुं शिवसुख फल सहेकार ॥ ए जपनां जपुं दुः
 नि दीप विकार, सुख ए समो चक्र पूरवनां सार ॥ ४ ॥ ज-
 न्माते जात जो पश्य नवकार, तो पालिक गाली पास सुत अव-
 तार ॥ ए नवपद सरलो भव न कोई सार, दुहे नव ने परमव सुख
 संपति दातार ॥ ५ ॥ जुब नील नीलणी राजा राणी भाय, नवपद म
 विमन्थी राजसिंह महाराय ॥ राणी रत्नवती वहुं पाम्या वै सुत
 नोम, डक नवधा लेख लिखवुं सजोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीने ए व-
 दी भव फट्या नतकाल, फलपर फीटीने पाट थडे फलमाव ॥
 शिवकुमरे योगी सौवनपुस्तो कोय, डम एणे भवे काल पणाना
 लिडे ॥ ए दश अधिकार वीर जिनसेर मादण, आराधनको विधि
 जिवे विनमां राखण ॥ जिवे पाप पणाली नवमपुं दे नान्दो
 जिन विनय करत सुमति अमरस साखण ॥ ७ ॥ (दाल ८
 मी ॥ नमो नील नीलवसु ए ॥ ए चाल) सिवसेरपाय कुल लिलो
 ए, विद्यालां माल महार नी ॥ अवती नवै विम अवतरण ए,
 करवा अन्ह उपगार ॥ जयो जिन वीरनी ए ॥ १ ॥ मू
 अपराध करवा घण ए, कहेता न लई पार नी ॥ विन्हे-चरणे आ-
 रण नीली ए, जो नरे नी नार ॥ ज० २ ॥ आश करीने आविणी
 ए, विम चरणे महाराज नी ॥ आण्यने उवलरेण ए, नी किम
 ररेसुं राज ॥ ज० ३ ॥ करम अलकण आकर ए, जमम मण
 जंजाल नी ॥ ईं ईं एदणो जमणो ए, जोनव देवपण ॥ ज०
 ४ ॥ आज मनोरथ मुक्त फट्या ए, नारा डल देवो नी, नो
 जिन वीरानी ए ॥ आठ्या पुन्य कहेव ॥ ज० ५ ॥ नवर
 विनय विद्वरनी ए, नील नगत विन्हे पाय नी ॥ देव दया करी
 कीजी ए, वीरवीर सुधसाय ॥ ज० ६ ॥ (कवशा) २५

॥ अथ भद्रेश्वरी प्रजापति स्तवः ॥
 ॥ १ ॥ भद्रेश्वरी देवि त्वं सर्वलोकेश्वरी ॥
 ॥ २ ॥ भद्रेश्वरी देवि त्वं सर्वलोकेश्वरी ॥
 ॥ ३ ॥ भद्रेश्वरी देवि त्वं सर्वलोकेश्वरी ॥
 ॥ ४ ॥ भद्रेश्वरी देवि त्वं सर्वलोकेश्वरी ॥
 ॥ ५ ॥ भद्रेश्वरी देवि त्वं सर्वलोकेश्वरी ॥
 ॥ ६ ॥ भद्रेश्वरी देवि त्वं सर्वलोकेश्वरी ॥
 ॥ ७ ॥ भद्रेश्वरी देवि त्वं सर्वलोकेश्वरी ॥
 ॥ ८ ॥ भद्रेश्वरी देवि त्वं सर्वलोकेश्वरी ॥
 ॥ ९ ॥ भद्रेश्वरी देवि त्वं सर्वलोकेश्वरी ॥
 ॥ १० ॥ भद्रेश्वरी देवि त्वं सर्वलोकेश्वरी ॥

॥ ८ ॥ धृती ईश्वरी कल्पिता, ईश्वरं किंती शिवा जयतीत्य ॥ ईश्वरं
 ईश्वरं धारणी, कर्मावर्द्धं पुण्यवैजय ॥ १० ॥ उपमावर्द्धं गीरी,
 गंधारी वलमणा सुमतीमाय ॥ बभ्रुवर्द्धं सञ्चरामा, कल्पिता कन्दर
 महेमिनि ॥ ११ ॥ जलमाय जलकिशोरा, शैलानन्द चर शैल
 शाय ॥ शैला येणा रेणा, मञ्जुलीया यूलनन्दस ॥ १२ ॥ इन्द्रावर्द्धं
 महेन्द्रा, जयन्ती अकन्दक शीत कलिआदि ॥ अज्ज विवर्द्धं जालि,
 जल पनदो निरुज्जाल सयत् ॥ १३ ॥ इति सत्तासतीविमो सिञ्चाय

॥ अथ गान्धर्वजिण्णो सिञ्चाय ॥

मन्दजिण्णआला, सिद्धपरिहरपरममत्तं ॥ उद्विष्टाव-
 रमधर्म, उद्विष्टोद्विष्टपयविषमं ॥ १ ॥ पर्वविष्टोद्विष्टवत्, पर्वविष्टोद्विष्ट-
 मवीअनवीअ ॥ सञ्चापनमुक्ता, परीवपुसिअवपुण्ण ॥
 २ ॥ जिण्णपुआजिण्णपुलिण्ण, पुण्णपुआमदिसिञ्चाणपुवत्त ॥
 पवदरिस्समयसुद्धी, रत्तयत्तातिस्सयत्ताय ॥ ३ ॥ उववामविक्कमवत्त,

जामासिमिद्धवक्कीवककणाय ॥ धम्मियज्जालसम्मो, कण्ठावमा-
 ण्णपरिणामो ॥ ४ ॥ संपीवपरिपट्टमणो, पुण्यपुलिद्धपुण्णवत्त
 तिथे ॥ सञ्चाणिकसुसञ्च, निचुसुपुल्लवपुसुत्त ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सक्कल तीर्थवन्दना ॥

सकल तीर्थं वन्दे करजोत्त, जिनवर नाम संगल कोत्त ॥ पर्वदे
 इत्यो जाल वतीस, जिनवर चैत्य नमुं निगदीआ ॥ १ ॥ वीज जाल
 अडवलीआ कड्ढा, वीज वार जाल सरदहो ॥ चोथ स्वर्ग अत्त जल
 धार, पवित्रं वन्दे जालज चार ॥ २ ॥ उद स्वर्ग सद्धस पवास,
 सातुं चालिस्स सद्धस गायार ॥ आराम स्वर्ग उद्विष्ट, नव ३
 शीर्षं वन्दे शीत चार ॥ ३ ॥ आणव वारसुं जलस सार, नव शी
 युक्ते जलस अट्टार ॥ पवित्र अजुत्तर सर्व मवी, जाल चोरासी आदि
 को वती ॥ ४ ॥ सद्धस सत्ताण्ण जेवीस सार, जिनपरमेवमत्तणा

विष्णुः ॥ यथा सो योजन विस्तार, पञ्चास उच्यते तदा धर ॥ ५ ॥
 कर्मा अस्ति विष्णुपरिमाण, सन्ना सदैव एकैवैव जाय ॥ सो कोन
 धन कोन रंजाय, तदा योमायुं सहस्र योजाय ॥ ६ ॥ सानसे उपर
 त विराज, सदा विष्णु प्रणम्य विष्णु काय ॥ सान कोनये वदो-
 र जाय, योजनपतीमा देवत जाय ॥ ७ ॥ एकतो अतो विष्णु
 माय, इकैवैवै संप्रदा जाय ॥ तेरसे कोन विष्णुपती कोन,
 तदा योजन वद करजो ॥ ८ ॥ यदीतो ने अगणसत, तदो-
 र कोमा वैद्यनी पात ॥ अणु ताल एकानुं देवाय, अणुतो दीश ने
 वद जुहवा ॥ ९ ॥ अंत योजनपतीमा वलि वैद, आश्रयता जिनपर
 वैद ॥ योजन वदमान यारिषेण, वदमान नाम गुण-
 य ॥ १० ॥ समनदीयार वद जिन दीश, अष्टाष्ट वद योदीश ॥
 वमलायत ने गदगिरनार, आह ऊपर जिनपर जुहवा ॥ ११ ॥
 गिरनार केरातिरो सार, तारेयो श्रीअजित जुहवा ॥ अंतरीक वर-
 कायो पाता, जीरवर्षो ने धनगणपाता ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर
 माय विद, जिनपर वैद्य नम्य गुणोद ॥ विदरमान वद जिन
 दीश, सिक अनंत नम्य निशदीश ॥ १३ ॥ अदी दीपमा जे अण-
 गार, अठार सहस्र श्रीवागता धार ॥ वर महामन सुमती सार,
 माय पलावै पंचाधार ॥ १४ ॥ बाह अन्धंतर तप उजमाल, ते
 सुनि वद गुणमणि माय ॥ जित २ कला कोनै करे, योव कदे नव-
 सापर वर ॥ १५ ॥ दलि ॥

॥ अथ सकलादेव स्तोत्र ॥

सकलादेवपरिपाल, मविष्णुनंदिवरिष्यः ॥ नम्यतेः स्वयंपती-
 द्याम, मादेयप्रविदमदे ॥ १ ॥ मायाकलितव्यामायुः, पुनतः खिन्न-
 गच्छत ॥ केकेकालवसवैस्मिन्, नदेतः समुपस्थिते ॥ २ ॥ आदि-
 मपुष्पतीनाय, मादिमनिःपयिद ॥ मादिमनिःपुनपुष, कयनस्व-

(मन्त्रः ॥ ३ ॥ अद्वैतमजितं विप्र, कमलाकरनाम्नि ॥ अक्षय
 कवलावर्ध, संकलजगतस्त्रि ॥ ४ ॥ विप्रमन्त्रजगत्प्रम, कुट्टया
 पुट्याजपुतः ॥ देवानाममपराज, श्रीशंभुवजगत्प्रः ॥ ५ ॥
 अनेकानामनन्तविप्र, समुद्रावतन्त्रप्रः ॥ दृष्टादमन्त्रप्र, मयव
 जितप्रः ॥ ६ ॥ दृष्टावकीटशालाप्र, चैतनजितवज्रविः ॥
 जगत्प्रमन्त्रप्र, ननेत्रजितप्रः ॥ ७ ॥ पद्मजगत्प्र, देव
 नासः पुट्यावः विप्र ॥ अनेकानाममपराज, कौण्डिन्याविक्रमाः ॥ ८ ॥
 श्रीसुपावजितप्र, मन्त्रमन्त्रावः ॥ नमश्चतुर्वर्णप्र, गगना
 ननाम्नि ॥ ९ ॥ चन्द्रजगत्प्र, मरीचिचित्रवज्रविः ॥ सुवि
 मुक्तिं जितप्र, विप्रिनेव श्रवस्त्रिः ॥ १० ॥ कर्ममन्त्रप्र, कर्म
 यनकेवलप्र ॥ अनेकानाममपराज, सुविप्रवर्णप्रस्त्रिः ॥ ११ ॥
 संवत्प्रमन्त्रप्र, कर्मावतन्त्रप्रः ॥ दृष्टावतन्त्रप्र, श्रीवत्प्रः
 पावित्रि ॥ १२ ॥ नरोपावतन्त्रप्र, मन्त्रावतन्त्रप्रः ॥ नि
 श्रवन्तप्रमन्त्रप्र, श्रवन्तः ॥ १३ ॥ विप्रमन्त्रावतन्त्रप्र, श्रवन्तः
 नृप्रमन्त्रप्रमन्त्रप्रः ॥ १४ ॥ स्वर्गप्रमन्त्रप्र, कल्याणप्रमन्त्रप्र ॥
 अनेकानाममपराज, मन्त्रावतन्त्रप्र ॥ १५ ॥ कल्याणप्रमन्त्रप्र
 विप्रमन्त्रप्रमन्त्रप्र, कल्याणप्रमन्त्रप्रः ॥ १६ ॥ विप्रमन्त्रप्रमन्त्रप्र
 नृप्रमन्त्रप्रमन्त्रप्र, कल्याणप्रमन्त्रप्रः ॥ १७ ॥ विप्रमन्त्रप्रमन्त्रप्र
 अनेकानाममपराज, मन्त्रावतन्त्रप्र ॥ १८ ॥ विप्रमन्त्रप्रमन्त्रप्र
 अनेकानाममपराज, मन्त्रावतन्त्रप्र ॥ १९ ॥ विप्रमन्त्रप्रमन्त्रप्र
 अनेकानाममपराज, मन्त्रावतन्त्रप्र ॥ २० ॥ विप्रमन्त्रप्रमन्त्रप्र
 अनेकानाममपराज, मन्त्रावतन्त्रप्र ॥ २१ ॥ विप्रमन्त्रप्रमन्त्रप्र
 अनेकानाममपराज, मन्त्रावतन्त्रप्र ॥ २२ ॥ विप्रमन्त्रप्रमन्त्रप्र
 अनेकानाममपराज, मन्त्रावतन्त्रप्र ॥ २३ ॥ विप्रमन्त्रप्रमन्त्रप्र
 अनेकानाममपराज, मन्त्रावतन्त्रप्र ॥ २४ ॥ विप्रमन्त्रप्रमन्त्रप्र
 अनेकानाममपराज, मन्त्रावतन्त्रप्र ॥ २५ ॥ विप्रमन्त्रप्रमन्त्रप्र
 अनेकानाममपराज, मन्त्रावतन्त्रप्र ॥ २६ ॥ विप्रमन्त्रप्रमन्त्रप्र
 अनेकानाममपराज, मन्त्रावतन्त्रप्र ॥ २७ ॥ विप्रमन्त्रप्रमन्त्रप्र
 अनेकानाममपराज, मन्त्रावतन्त्रप्र ॥ २८ ॥ विप्रमन्त्रप्रमन्त्रप्र
 अनेकानाममपराज, मन्त्रावतन्त्रप्र ॥ २९ ॥ विप्रमन्त्रप्रमन्त्रप्र
 अनेकानाममपराज, मन्त्रावतन्त्रप्र ॥ ३० ॥ विप्रमन्त्रप्रमन्त्रप्र

गीतावर्तनसुखः ॥ २५ ॥ पुठनीनमनागुह्य, निर्वलीकरकभिरु ॥
 निवृत्तवर्तनसुखः, पाठिपावनललापः ॥ २६ ॥ यद्वर्तनसुखमुद्वे-
 र्मुककद्विगताः ॥ अष्टिर्नोमनागवत्, अग्राष्टिर्नोमनागवत् ॥
 २७ ॥ कर्मवर्तनसुखं, स्वर्गवर्तनकर्मकुर्वित ॥ यद्वर्तनसुखमुद्वे-
 र्मुककद्विगताः ॥ २८ ॥ श्रीमतेवोरागवत्, सनाथा-
 लि, पाठिगवत् ॥ २९ ॥ श्रीमतेवोरागवत्, सनाथा-
 लि ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

सिद्धये, दीर्घे दुर्गति वरे ॥ नाव धर्मात्ते वरे, तेन नव पर
वसु विनक्त ॥ ८ ॥ इति पद ॥ पुनः ॥ श्रीशिवाय

परम पर स्थित वक्त ॥ गिरिवर सेवा करण तद्वत्, पद्मि-

नाम्, परम शान्तिपाद ॥ ७ ॥ नाव मोह कोह विरोह निरा,

विगत भङ्गा, दुःख विद्वन्मृदु ॥ नाव शुद्ध सदा भाव-

अधिक तीक्ष्ण तीक्ष्ण कहे, नमो ॥ ६ ॥ इम विमलगिरि

॥ ५ ॥ पतावतर सुरलोक मादे, विमलगिरि ते पर ॥ नहि

मुनिवत्, कीर्तिन ए गिरिवर ॥ मुक्तिमणी वरा दी, नमो ॥

गिरिवर शृंग सीमा, नमो ॥ ४ ॥ निज साय सायन सुदि

दीक गणपति सिद्धि साध, कीर्ति पूज मुनि मतरे ॥ श्रीविमल

मण्डल मतरे ॥ निर्वृत्तवति नम श्रद्धाभि, नमो ॥ ३ ॥ पुन-

कीर्ति सेवित, नमो ॥ २ ॥ करवी नाटक किमरीण, गण वि-

गिरिवर शृंग भङ्गा, पर गणगण नम ॥ गुर श्रुत किनर

गिरिवर सन्निव वरण पञ्च, नमो आदि निनयरे ॥ १ ॥ विमल

विमल भवत काम कमल, कलित निरुपन विनक्त ॥

॥ अथ सिद्धिगिरी चैत्यवदन लिखते ॥

पदेव ॥ इतिप्रका है दीनव, अवधारी मुक्त सेव ॥ ४ ॥ इति ॥

गिरिवर वरिष्ठ ॥ ३ ॥ ए अवजो मुक्त वरा ए, पुन सीमा-

सपल संग वदी करी ए, चारित्र वदय ॥ पाप पुमल सेविने,

अम नाथ ॥ नवानव है है नावरी, नदी मूर्ध देव साय ॥ २ ॥

करी, अमने वदवा ॥ १ ॥ सकल नम पुन धरा ए, जो दोव

॥ अ.स.मधुर जगधरा, आ नरते आवा ॥ कल्यावन करण

गणपति, शुभ वदित फव लीप ॥ १० ॥ इति चैत्यवदन ॥ पुनः

पदं पदाल निनाते ए, पादो निनय सिद्ध ॥ वशीविजय मुक्त

गिरिवर ॥ एक समय गण कालना, जालो सव विवरे ॥ ८ ॥

ऊतरे ॥ १ ॥ अन्तं सिद्धो एव ताम, सफल नीरमो राय ॥
 पूं नारुं कयनदेव, व्वां वविषा प्रभु पाय ॥ २ ॥ सुवर्क
 सिद्धिमयो, कयनयक अमिराम ॥ गोमिरया कयनमयो, निम-
 पर कं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति द्वितीय चैत्यवर्दन ॥

॥ अथ श्रीपरमहन्सा चैत्यवर्दन लिख्यते ॥

परमेसर परमात्मामा, पावन परमिव ॥ अथ जगुर्देवार्थि
 देव, नयते स विव ॥ १ ॥ अथव अकल अधिकार सार, कठला
 र्था सिधु ॥ जगती जन आधार एक, निःकारण वृत् ॥ २ ॥ गुण
 अनंत प्रभु नन्दरा ए, किमदी कलया न जाय ॥ राम प्रभु निम
 व्यामयी, विद्वानंद सुख आय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसोमपर निम स्तवन ॥

सुखो वंशजी, सोमपर परमात्म पासे जावजो ॥ मुक्त
 चीननन्, प्रेम परनि दण पर प्रेम संनवावजो ॥ जे अणय प्रेम
 ना नायक है, जस घोसव इंदर पायक है, नाण दरगहा जेना
 कायक है ॥ सुखो ॥ १ ॥ जेनी कवनवरणी काया है, जगो पारी
 खवन पाया है, पुंदरीगणी नारीनो राया है ॥ सुखो ॥ २ ॥
 बार-पर्वत माहि विराजै है, जगो घोडीया अनिराय जाजै है,
 गुण प्रजोस बाणीवै गाजै है ॥ सुखो ॥ ३ ॥ नविजनने नै पानिबोहै
 है, प्रेम अधिक श्रीनवगुण सोहै है, रूप देखी नविजन मोहै है ॥
 सुखो ॥ ४ ॥ प्रेम सेवा करवा रसिया वं, पण नरनमां हरे वसि
 आ वं, भव मोहराय कर फसिया वं ॥ सुखो ॥ ५ ॥ पण
 सादेव विनमां धरिया है, प्रेम आणा खनन कर ग्रहिया है, नव
 कांसक मुक्तयी नरिया है ॥ सुखो ॥ ६ ॥ निम उतम पूव देव
 पूरे, कहे पञ्चविजय भाऊ और, नो वधि मुक्त मन अलि नो ॥
 सु० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धिगो स्तवन लिख्यते ॥

शिवद्विष्टं च मम आज मेजुंजो दीजो रे, तवावधि टकानो
 दानो रे, जग मुनं मीजो रे ॥ सकल अथो ह्यो मनो कमा
 र्, बालामा, नरनो संगम जगो रे ॥ नरक निर्वृष गति ह
 वारो, वरुण यज्ञवीनं वारो रे ॥ शैव १ ॥ मानवमनो
 दौ लीयो, बालो देवदो पावन कीयो रे ॥ सोनो ह्योन क
 न वधारी, यम प्रकला दीयो रे ॥ शैव २ ॥ देवद पञ्चालीन
 वार वीजो, वां श्रीआदीश्वर पूज्य रे ॥ श्रीसिद्धिचल नपु
 लो, पापमेवारी पुज्य रे ॥ शैव ३ ॥ स्वयमुल सुयमा सु
 पति आगे, वां वीरजिनं दम जोले रे ॥ अण विवनमा तीर्य
 र्, नहि कोड सेजुंजो तोले रे ॥ शैव ४ ॥ इन्द्र सरीखा ए
 र्, वां वाकरी विवमां वादे रे ॥ कायानी नो कामल
 र्, सूरजकुन्दमां नहि रे ॥ शैव ५ ॥ कांकरे श्रीसिद्धिदेव,
 १० सगु अवता सीध रे ॥ ते पादे ए तीर्य सार्, उद्धर अ
 नो कीध रे ॥ शैव ६ ॥ मानिनाया सुत नपुण जोना, वां
 पूर अमीरवा वृज्य रे ॥ उदयरान कहे आज ह्यो पोले, श्री
 यदीश्वर नैज्य रे ॥ शैव ७ ॥ दक्षि ॥

पुनः ॥ विमलावल निव वीर्य, कीन एवनी सेवा ॥ मान
 र्, एवमारी, शिवनर कल देवा ॥ शैव ८ ॥ उच्छ्रित विन गृहमन्त्री,
 नदी दीप उर्वगा, मानु दिमगिरि विवम ॥ आड अवर गंगा ॥ शै
 ९ ॥ कोड अनेकं जग नदी, ए तीर्य तोले ॥ दम श्रीमुख ररि
 पाले, श्रीसीधपर जोले ॥ शैव १० ॥ ज सगला तीर्य कला,
 मायाफल पद्वि, नैज्यो ए गिरि जेता, शोभायु फल वद्वि ॥
 १० ॥ वरम सकल देव जेता, ज ए गिरि वदे ॥ सुवश
 वज्र संपद वदे, ते नर विरवे ॥ शैव ५ ॥ दक्षि पदे ॥

॥ अथ श्रीपञ्चवीं स्रवण ॥

शोक ॥ श्रीगुरुजगन्मूर्त्योर्ध्वनिवत् श्रीगान्धारीजगज्ज
 वरवशात्प्रसन्नमुक्ता श्रीनिम्नोपपन्ना ॥ तान्श्रीशिवजिनं मु
 क्तु श्रीसुवन्दस्वामि, श्रीप्राध्वण्यमामिसन्त्यमगरे श्रीवन्दमाननिध
 ॥ १ ॥ वरुणनरकदण्डवलय शिवनयनप्रकाशानरे, वरुणितकामरुमरु
 दिवसतो रतीर्षुकानादरात् ॥ वरुणकथयानकीपुत्रवक्त्रे नदीधरे
 कुन्दले, वरुण्यपिजानामामिसनतं तानवतविमार्कविमान् ॥ २ ॥
 श्रीमद्वीरजिनस्वपुत्रद्वन्द्वो निगन्धनेगीतम, गंगावन्दनमस्त्यपामि
 सवे मध्याह्नवन्दनद्वयक ॥ उदयसि स्थितिसद्वलित विपयगा क्षान्ति
 मुद्रावलिङ्गा, समकर्ममण्डलदत्तवत्कलं श्रीद्विदशानिनी ॥ ३ ॥ शोक
 श्वरविमर्दभयपरा धर्मदशान्तिविक्र, विपयवत्तः सकपटिनी सुल
 गण शक्यरीजानती ॥ वरुणक्षान्तनपक्रियानतविधिः श्रीनीध्वयान
 विष्णु, श्रीसंख्यपुत्रावर्णितध्वसुत रत्नसंयुक्तकरः ॥ इति श्रीपञ्च

मीय स्रवण ॥

॥ अथ नम गजुल सिद्धाय ॥

(नदी) वसुनक्त नील वन्दे द्यौष पञ्चोपा ॥ ए देवी (पञ्चवीं)
 पञ्चवीं दे नम जगु दिन गतिपा, पञ्चवीं वरुण पुरदशा नय श्री
 दी गतिपा, ॥ पणपण जोती वरुण गतिपर कव मिते, नीर जलो
 द्या भीत के ते तुं टववते ॥ १ ॥ सुंदर भक्ति सेन साक्षि प
 नवि गये, जिह्वा दे गतिपर नेम जिह्वा मारुं मन यम ॥ जो दे
 सज्जन रू गोदी पास वसे, कितां सागर कितां वंद देवी मन ॥ २ ॥
 एते ॥ २ ॥ निस्तेदीर्घ भीत म कर्तव्य को सही, पनाग जलो
 द्दे दीपक मनम नदी ॥ मणिसनयो विजोग म दोबो करुं,
 साधे दे साध समान दिव्यामा नंदने ॥ ३ ॥ निरद्वे अग्रतो पीर
 गोपनवप भक्ति रहे, उदयो निर पुरदशा ते साधन उल सहे ॥

ऊँ २ वंश कीय काया कमला त्रिणी, दृष्टि न आये नेम मि
दी नयन दसी ॥ ४ ॥ अहने अहने रंग टाटो ने नवि टले,
चकटा रणालि विजोग ने नो नयण मिसे ॥ आवा केसे खल निरे
ने नवि करे, ने गहग गंगा नीर ने डोकर कम-ने ॥ ५ ॥ ने रण
मालतीकुल धरे कम रमे, अहने धीरे ने ने केव कम-ने ॥
अहने धुरसु ने ने अवरने मु करे, नवजीवन नवी नेम बैरणी
वे फरे ॥ ६ ॥ राजुव रेपनिषान के पादनी सहस्राने, जड वां
आ मुने नेम संजम लेई एक मने ॥ पाया केवलज्ञान के पादनी
मालती, कपविषय मुने नेम लेई आया फल ॥ ७ ॥ डले ॥
॥ अथ आरुण विनाय लिखये ॥
आठवले मुंडाने संधी को नदी रे, निण करण म करे
जीव प्रसाद रे ॥ वा आया ने गार्ज को नदी रे, दिख डोनादि
दया पाव रे ॥ आ० १ ॥ ऊँदेव कजला गार कोर रे, भूख
संन्या वहुला पाव रे ॥ चोरतणी पर डेनी ऊँसे रे, सदीसे डदे
लोक परलोक संताप रे ॥ आ० २ ॥ डेवा विद्याया मरि मालि
आ रे, वे रे परतीम ऊँदा नीव रे ॥ एक दिन आणवाणु ऊँदी
बाव रे रे, सुख दुःख सहसे आपणी जाव रे ॥ आ० ३ ॥ वक
गार्ज हर वल गणी केशव रे, गोती वनी-डंड मुगनी गण रे ॥
ऊँदीने उवदी आणवा रे, गोती कोड अवरजवली वाव रे ॥
आ० ४ ॥ अणर संसार नवी मुनि नीसरा रे, करवा मुनि
नववा नेद विद्वार रे ॥ गार्जपुलीनी दीपी जपमा रे, न परे मम-
नो नेद वगार रे ॥ आ० ५ ॥ चारि पावे कदी दीगरे रे, वे
मुनि अणली उपदेश रे, लिको मुनिवर सिधाली मोकने रे, जडा
लेई इहलोक परलोक रे ॥ आ० ६ ॥ आन रे रे रे रे रे रे रे रे
धरे रे, म करी मुनि गणुनि अविमान रे, कोरी शेषमव. पूरे

बेजिन रे, जोन करी जालेर मऊर रे ॥ आउ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचवीर्षी चैत्यवर्दन लिख्यते ॥

आविर्वय आरिंदत नमू, समरुं नरुं नाम ॥ वृषां वृषां यति
मा जिनतणी, ल्यां ल्यां कर्क यणाम ॥ १ ॥ ओज्जवय श्रीआदिंदत,
मेम नमू निरनर ॥ नरिंय श्रीअजितनाथ ॥ आरुं कयम जेवोर
॥ २ ॥ अणपवलीरि ऊपर, जिन चोवीजी जेय ॥ मणिमय
परुति मानसु, नरिंय नरवां सोय ॥ ३ ॥ समेतजालर बीरय
वडुं, वृषां वीजी जिन पाय ॥ वैभारकनिरि ऊपर, श्रीवीर, जिन
अरराय ॥ ४ ॥ मानवगहनो रानिजयो, नमो वेव सुपाश ॥ कयम
कहै जिन समरता, पीदेव समती आश ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ इज निधीकी चैत्यवर्दन ॥

इ विष धरुं जिन उपदिष्टो, चोणा अजिनवदन ॥ वीर
जन्मपा ते प्रसू, नवडुख निकंदन ॥ १ ॥ इ विष ध्यान पुदे
परिहरी, आरुंरी वीर ध्यान ॥ एम प्रकषयुं सुमतिजिन, ते वीरपा
वीज जिन ॥ २ ॥ वीर ध्यान राग देव, तेदेन नति नसिये
सुऊ परे शीतल जिन कहै, वीज जिन शिव नसिये ॥ ३ ॥ इ
वाजाव पदधुति, करी नाल सुजाल ॥ वीज जिन वासुदेव परे
बहो केवलनाथ ॥ ४ ॥ निषय नय उपदेर वीर, एकीर
अदिपू ॥ अरिजन वीज जिन ववी, एम जिन आगति कदिपू ।
॥ ५ ॥ वरुमल चोवीजीये, एम जिनकल्याण ॥ वीज जिन के
परिमय, प्रसू नाल निवोण ॥ ६ ॥ एम अतल चोवीजीये, इआ
वडुत कल्याण ॥ जिन उतम परे पयाने, नमतां दोष सुत

खाल ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गगनपंचमीकी चैत्यवर्दन ॥

जिगदे वैरा वीरजिन, नमो नमोजन आने ॥ निकलासुं नि

१ ॥ अथ अष्टमी चैत्यवर्दन लिख्यते ॥
 मन्त्रं स्तुतिं आठमने दिने, विजया सुत जाया, तेन फलित
 वरिष्ठ आठम, संचर चर आया ॥ १ ॥ चंद्रर वरनी आठम,
 अठमया कथनजिह्व ॥ वीर्या पिप ए दिने लक्ष्मी, दुष्टा प्रथम
 मुनिवर्ध ॥ २ ॥ मणव स्तुति आठम दिने, आठ कर्म कथ्या ॥ ३ ॥
 अठमने दन चोया प्रय, पाया सुत नरपूर ॥ ३ ॥ एतेन आठम
 कजरी, अठम सुमतिजिह्व ॥ आठ जाति कवचो करी, नर-
 त्रिष्टुत ॥ ४ ॥ अठम चैत्र वरिष्ठ आठम, मुनिमोचन ॥
 अठम आयाद स्तुति आठम, पंचमी गति पायी ॥ ५ ॥ आठम
 वरिष्ठ आठम, वरिष्ठ आठम ॥ ६ ॥ आठम वरिष्ठ आठम, वरिष्ठ
 आठम ॥ ७ ॥ आठम वरिष्ठ आठम, वरिष्ठ आठम ॥ ८ ॥
 आठम वरिष्ठ आठम, वरिष्ठ आठम ॥ ९ ॥ आठम वरिष्ठ आठम,
 वरिष्ठ आठम ॥ १० ॥ आठम वरिष्ठ आठम, वरिष्ठ आठम ॥ ११ ॥
 आठम वरिष्ठ आठम, वरिष्ठ आठम ॥ १२ ॥ आठम वरिष्ठ आठम,
 वरिष्ठ आठम ॥ १३ ॥ आठम वरिष्ठ आठम, वरिष्ठ आठम ॥ १४ ॥
 आठम वरिष्ठ आठम, वरिष्ठ आठम ॥ १५ ॥ आठम वरिष्ठ आठम,
 वरिष्ठ आठम ॥ १६ ॥ आठम वरिष्ठ आठम, वरिष्ठ आठम ॥ १७ ॥
 आठम वरिष्ठ आठम, वरिष्ठ आठम ॥ १८ ॥ आठम वरिष्ठ आठम,
 वरिष्ठ आठम ॥ १९ ॥ आठम वरिष्ठ आठम, वरिष्ठ आठम ॥ २० ॥
 आठम वरिष्ठ आठम, वरिष्ठ आठम ॥ २१ ॥ आठम वरिष्ठ आठम,
 वरिष्ठ आठम ॥ २२ ॥ आठम वरिष्ठ आठम, वरिष्ठ आठम ॥ २३ ॥
 आठम वरिष्ठ आठम, वरिष्ठ आठम ॥ २४ ॥ आठम वरिष्ठ आठम,
 वरिष्ठ आठम ॥ २५ ॥ आठम वरिष्ठ आठम, वरिष्ठ आठम ॥ २६ ॥
 आठम वरिष्ठ आठम, वरिष्ठ आठम ॥ २७ ॥ आठम वरिष्ठ आठम,
 वरिष्ठ आठम ॥ २८ ॥ आठम वरिष्ठ आठम, वरिष्ठ आठम ॥ २९ ॥
 आठम वरिष्ठ आठम, वरिष्ठ आठम ॥ ३० ॥

स्वामी सुप्राप्त ॥ जिन उद्यम पर पश्यते, सेवयाद्यी शिवत्वं ॥ ३ ॥

॥ अथ एकादशीवि धृत्यवदन्ति लिख्यते ॥

आसननामकं वीरवा, मयिकेवल पापे, सर्व वर्तुष्वप्यव

मदसेन वनं आया ॥ १ ॥ माधव सित एकादशी, सोमवर्षे

युक्ता ॥ इन्द्रयति आर्षे मन्त्रा, एकादशी विष्णु ॥ २ ॥ एकादशी

सर्व शुभा, वैदिके परिचर ॥ वेद अथु अवलोक्य कौ, मन अंशमप

अथार ॥ ३ ॥ वीरविक्रमं संसृष्ट वीर्य ए, एकादशी गणपतः ॥ ४ ॥

प्राच्या वृद्धि, जिनशान्त नयकार ॥ ४ ॥ मङ्गि जन्म अ

मङ्गि प्राप्त, वर वरुण विजय ॥ कृपय अजित सुमती ममी, मङ्गि

पुनर्प्राप्ति-विजय ॥ ५ ॥ पञ्चमय शिव वाञ्छा प्राप्त, सर्वसर्व

वीर्य ॥ एकादशी विन आया, कलि संगती वीर्य ॥ ६ ॥ वी

कैश्वेन्द्र कालना, वैदिक कल्याण ॥ वरुण इन्द्रा एकादशी, आर्षा

वर नाथ ॥ ७ ॥ अथार अंग ललाविष्य, एकादशी प्राप्त ॥ पुनर्प्रा

वर्तुष्वी विदुषी ॥ ममी काल काल ॥ ८ ॥ अथार अवत वंशवा ए,

वर्षे पतिमा अथार ॥ विषाविषय जिनशान्त, सकल करे अ

तार ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमधुर जिन स्थिति लिख्यते ॥

॥ श्रीमधुर जिनवर सुखकर साद्विष देव, अविद्वन् सकल

ज्ञान परी-कर्तृ सेव ॥ सकलपुत्र परम गणपत आप्त वाणी,

वर्तुष्वी आया ज्ञानविभव गुणसाधनी ॥ १ ॥ (पर धृष्ट आ

वर्तुष्वी पर कदाचन दे)

॥ श्रीमधुर देव सुदंकर, मुनि-मन एकजं देसाजी ॥ कृ

अजित अंतर जनन्या, विदुष्य अश परसंसा जी ॥ सुवत नो

अंतर पर वीर्य, विष्णु जगती-सर्व जी ॥ उद्यम पुनर्प्राप्ति

॥ मयि, आसे शिवदे पासे जी ॥ १ ॥ वरुण वरुण

प्रकारी पूजा करीते, मानवजन फल लीजे जी ॥ सिद्धदेव
 जिनवर सेवी, अष्ट महासिद्ध दीजैजी ॥ आठमते नम करीसंजीजे,
 निमेष कवलङ्गाय जी ॥ धीरविमल कलि सेवक नम कहे, नमणी,
 कान कलयाण जी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

एकादशी अलि कवनी, गीतिव पूरे नम ॥ कोण कारण

ए पर्व मीटि, कही मुकसि नम ॥ १ ॥ जिनवर कलयाणक अलि-

यणी, एकाशी न पश्चास ॥ नेण कारण ए पर्व मोहोद्वि, करो मोन

उपवासा ॥ १ ॥ अलिआर आवकनणी प्रतिमा, कहे ते जिनवर

देव ॥ एकादशी एम अधिक सेवी, वनगजा जिन देव ॥ धौरी

जिनवर सयल सुखकर, जेसा सुरतक संग ॥ जेम गंग निम

नीर जेहवुं, करो जिनसु संग ॥ २ ॥ अलिआर अंग लखीवपुं,

अलिआर पठा-सर ॥ अलिआर कवली विठणा, उवणी पूजणी

सर ॥ बावली चंगी विविध रंगी, आखनणे अजसर ॥ एकादशी

इम उजवा, जेम पालिपु नव पार ॥ ३ ॥ वर कमल नयणी

कमल वयली, कमल मुकीमल काय ॥ सुवन्दन चंद आनंद

जेहवुं, समरता सुख पाय ॥ एकादशी एम मन वशी, गलि

कई पालिग गीता, आसनदेव ॥ विपन निवारी, संपन्नता नि

दीश ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ चवदशीनी स्तुति ॥

स्नातस्यायनिमत्पयसेतिवरे, आद्याविनोः शैशवे ॥ १ ॥

लोकाविरमया, देवरसशरणा प्रमथयिष्या ॥ उभयद्वन्द्वमनना

पवतिनं, कीरीदकाशोकया ॥ वक्रपत्सपुनःपुनःसञ्चरति, श्रीवर्दे-

मानोजितः ॥ १ ॥ इमांसद्वन्द्वयुक्कपिषा, कीराणिवानोर्गैः ॥

कुम्भैरपरासपुण्यपराजित, प्रप्राप्तिनिःकांशोः ॥ वृषामद्वन्द्वैरुजैव-

विष्णुः सर्वसुरसुरेश्वरगणैः, स्वर्गनाम्नां
 कामान् ॥ २ ॥ अहंकारसुखगणधररचितं, पादशोभाविशालं ॥
 विष्णुवन्द्यं युक्तं मुनिगणवर्धनैः, धारितं वृद्धिमलिनैः ॥ मोक्षप्रदाम्भ-
 रं वनचरणफलं, क्लृप्तनाभपद्मिण ॥ नक्त्यानि संप्रपश्ये शून्यमहं मलिनं,
 सर्वलोकैकमसि ॥ ३ ॥ निरपेक्षयोगनीलवर्णितमवसरदशं, बाल-
 दानवदंष्ट्रं ॥ सर्वपापहरवेद्यप्रसूतमदञ्जलं, पूरयंतं समन्तान् ॥ आकृष्ट-
 विषयनागविचरति गन्धे, कामदः कामकपी ॥ एकः सर्ववैजयंति विंश-
 तैर्ममसदा, सर्वकार्यवृत्तिभिः ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ कल्याणकंदं सर्वार्थिनं स्तुति ॥

कल्याणकंदं पदमं विष्णवं, संलितं चैवमजिणं मुनिदं ॥ प्राप्तं
 पद्मासं सुगुणिककटाणं, नवीकृतं सिरिवद्धमणं ॥ १ ॥ अपरं
 संसारं समुद्वेष्टारं, पलाशोवद्विष्टं सुदृक्कसारं ॥ सर्वं विष्णवं सुर-
 त्रिं विष्टं, कल्याणवर्द्धिणं विमलकंदं ॥ २ ॥ निबोधमन्त्रं वरुणा-
 णं कल्पं, पद्मासिं यत्सिं कृतवदं ॥ सर्वविष्णुगणं सर्वं वृद्धं
 ॥ नमामि निवर्तिजगत्पदं ॥ ३ ॥ कुर्वेच्च गोपीरं वृत्तरवशां
 सर्वेजं देवां कमलेनिमग्नं ॥ बाणसिंही पुत्रपद्मं देवां ॥ सुखा-
 धरां आनन्दं स्वर्गापसज्जां ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ राज्ञेयं स्तुति ॥

॥ श्रीराज्ञेयगिरि तीर्थे सर, निरवरमाहं विमं मेरु उदरं,
 उक्तरं राम अपरं ॥ मंत्रमाहं नवकारजं बाणं, तारामाहं विमं
 षडं वल्लभं, अवधरं माहं जलं बाणं ॥ पंखीमाहं विमं उज्जम
 देवां, कुलमाहं विमं कपयन्तो वंशं, गानितवणो वे वंशं ॥ केषां
 वंशमाहं विमं अरिदंतां, तपस्युरं मुनिवरं मन्दंतां, राज्ञेयगिरिं पु-
 षावतां ॥ १ ॥ केषां अजितं संभव अजितं, सुमतिनाथं शुभ-
 ॥ २ ॥ पद्ममम सखकं ॥ श्रीसुपाशु चंद्रमन सुविधी, श्रीनर

श्रयस सेवो वर्तु जेहूँ, वासिष्ठस्य मति श्रुति ॥ विमल अमल
 जिन वसु ण आनी, कुंभु अर मखि नयुं एकानि, मुनिपुत्रन मुद
 प्यु ॥ नदी पास ने दीर चौबीश, नेम विना ण जिन नेवीश,
 सिद्धगिरि आद्या डंका ॥ २ ॥ नरनरस जिन साधु बोलै, स्वाधी
 श्रुतिजयगिरि तोरे, जिनयुं वचन अमोले ॥ कथन कहे सुणी नर
 मरुष, उदरी पावता ने नर बाप, पालिक रौको आप ॥ १३ ॥
 खी ने डण गिरि आवै, नवदीजे ने सिद्ध ज यावै, अजरामर
 पद पावै ॥ जिनमनस सेवेको बखान्ता, ने म आगम विमलहि
 आधारी, सुलता सुल उर आधारी ॥ ३ ॥ संपदलि नरन नरेसर
 आवै, सीवननला आसप करावै, मणिमय भूरिन आवै, गानिना-
 व मकवै ॥ माना, आही सुंदर बहिन विखाना, मति नवाणु
 आता ॥ गेमुख ने वकिलरीदेवी, श्रुतिजय सर कहे निरपेक्षवै,
 नपगत छपर देवी ॥ श्रीविजयभजन सूरिभारताप, श्रीविजयदेव
 सूरि प्रणामी पाप, कथनदास गुण गाथा ॥ ४ डालि ॥

॥ अथ सीमापरजिन स्तुतिः ॥
 महाविदेह केव सीमापरजामी, सीमाना सिद्धसिद्ध जी,
 कथाना कोशीला विराजै रत्नना दीवा दीवै जी ॥ कुंकुमवर्णा
 गदंदा विराजै मोतीना अकन सार जी, स्वां वीरा सीमापरजामी
 बोलै मयुती बाली जी ॥ १ ॥ केशरवदन नरी रे कबोली क
 स्त्री पराश जी, पदवी रे पूजा अमरी रे दीवाने कथामने परमान जी ॥

॥ अथ पूर्ववर्तिन संताना ॥
 पूर्ववर्तिन संताना, तद नव विदे वंमतेर गुतिपय ॥ ४

॥ अथ पूर्ववर्तिन संताना ॥

॥ अथ सामासिक पारवर्त्तनी गण ॥

॥ सामास्यवयवयुक्ता, जयमण्डोदनिधमसंज्ञिता ॥ विजय
सुदकम्, सामास्यवयवयुक्ता ॥ १ ॥ सामास्यमिजकम्, समण
दयसवज्जदजडा ॥ एणकारणं, वहुसामास्यवयुक्ता ॥ २ ॥
सामास्यक विषुं लोषुं पारिजं विषि करतां जे अविषि दूश
दोड ते सवि दू मन वचन कायाय करी मिश्रामि डुकन ॥ दश म
नना दश वचनना वरै कायाया एव वलीस दूणामाहे जे कोड
दूण लोको दोष ते सव मन वचन कायाय करी मिश्रामि डुकन ॥

॥ अथ पौसद पारवर्त्तनी गण ॥

॥ सप्तवर्षकामा, वर्द्वार्लोसिदसणोवर्त्तनी ॥ जेनिपोसद
पुनिमा, अर्धनिआजिवअनेव ॥ १ ॥ धवासलद्विजा, सुवसा
आणदकामदेवाय ॥ जेनिपसंसदमयव, दूषवपुनमदावीरो ॥ २ ॥
पौसद विषुं लोषुं पारिजं विषि करतां जे कोड अविषि दू
दोष ते सवि दू मन वचन कायाय करी मिश्रामि डुकन ॥

॥ अथ जगिर्विनामणि चैत्यवदन ॥

॥ दृष्टाकारण संक्षिप्तद्वे जगपद चैत्यवदन करे, दूव ॥ ज
विनामणि जगनद्वे जगगुठ जगरकय ॥ जगवपव जगसत्यव
जगनाय विषयक ॥ अलवय संवित्अलव, कम्मठ विणासल
चउवोसं वि जलवर अयुं, आयुनिदय आयाण ॥ १ ॥ कम्म
मिद्वे २ पदम संययण ॥ उक्तासव सवसिज, जलवराण वि
ते लयुद ॥ नवकोनिद्वि केवलण, कोनि सदेस म
साह गामद ॥ संपद जलवर वीस मुनि, विद्वं कोनिद्वि वनल
॥ २ ॥ जयवसामो २ सिमदसंजिज डाऊन पद्वं नेमजिण ॥ जय
वीर सव अरमण, नकेअवहि ॥ मणिमुषय ॥ महुंरिपमा

इहं त्रिर्य खंनण, अवर विदेहिं तित्थयस ॥ चिट्ठं विमि विविमि
 चंकेवि, तीआणाय संपडअं, वंडं जिण सवेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवड
 सदेस्सा, लस्सा उपस अठ कोनवि, पत्तीसय पासोआड, तिप
 लेण चेट्ठे वडे ॥ ४ ॥ पत्तास कोनि सपाडं, कोनी पायाल लस्के
 अणवत्ता ॥ उत्तीस सदेस असिपाडं, सासय विवड पणमा-
 मि ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ अतीवारी ८ गाथा ॥

नाणमि वंसणमिअ, चरणांम तथेअ तदेव विरिपमि ॥
 आपरणं आपारी, इअ एसा पवदा मणिव ॥ १ ॥ कोले विणए
 वट्टमाण, अवहेण तदेव नन्देय ॥ वंजण अस्स नउत्तय,
 अठविदे नण मायारी ॥ २ ॥ निस्संकिअ निक्खिअ, निवि नि

णिआ अमंठ दिदीअ ॥ उपवदे निरी करे, वज्जल पत्तावे अठ
 चरिसा पारी, अठविदे कोडमायारी ॥ ३ ॥ पणिसमईहिं तिदि गुत्तीहिं ॥ एम
 वरिसा पारी, अठविदे कोडमायारी ॥ ४ ॥ पारसविदेमिनिव नवे, अ

विंनर गादिरे कुंजल दिहे ॥ अणिआड अणाजीवी, मायया सो न
 वायारी ॥ ५ ॥ अणसण सुणी पतिआ, विती सत्तेवण रसवाव
 काय किलेसा संली ए याय, पत्ता नरो देड ॥ ६ ॥ पायडिव वि

णवि, वेपावड तदेव सदाव ॥ ऊण उस्सणीविण, अयिनर जे न
 वा देड ॥ ७ ॥ अणोदिअ वल विआ, पतिकमड जो वड्डेन मा
 ठवी ॥ वुंजइअ जदेपासं, नायवो वीरियायारी ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ विआल्लोचन ॥

॥ विआल्लोचनदव, ओयदेनोकेयरे ॥ आनवुरिजनदस्स,
 सुवपुंयुनाविः ॥ १ ॥ येणमनिपेककम् उल्ल, मया वपुंनरीत्ते

पुं सुदेवः ॥ उल्लमणि गणपति नैव नाकं, ग्रातः संवे विाव ते
 मज्जेः ॥ २ ॥ कंसं कंनिमुकममुकपुल्लं, ऊनकोटि मंसं सदेद्वय ॥

संज्ञा उपर आणीने इहं सवस्समि देवसिधं कहेवुं, पवी ऊना क
कोसिपने इहोमिमाकजसमं जोमेदेवसिधं तस्सउत्तरीं कहे। न
अनीचारेनी आउ गायनी काउसम करवो, आउ गाय न आव
नो आउ नवकारनी काउसम करवो, न काउसम पारीने वोगस
कहेवुं, पवी वीसने जीवा आवयकनी मुदेपवी पनवेदीने वंदव
व देवा, पछी ऊना थडे इहाकरेणं देवसिधं आलोउ इहं आउ
पम जोमेदेवसिधं कहेने सातलाव कहेवा. पवी अटार प
स्थानक आलोउये, सवस्समिदेवसिध कहेने वेसवुं, वेसने एक न
कार गणी कोसिपने इहोमिमापनकमिउ कहेने वंदवुं कहेवुं
पवी वंदवणा व देवा, पवी अहुंविमिआधुन देवसिधं खोमीने
वंदवणा व देवा, पवी ऊना थडे आयसिधवखाण कहेने कोसि
पने इहोमिमापम जोमेदेवसिधं तस्सउत्तरीं कहे। व
वोगस अथवा आउ नवकारनी काउसम करवो, न पारीने वोगस
कहे। सवलोए अरितवेदयाणं वंदवणविं कहे। एक वोगस
अथवा चार नवकारनी काउसम पारीने पुकरवदीं सुअस्सम
अथवा चार नवकारनी काउसम करवो, न पारीने सिद्धावुद्धाणं कहे। सु
गवउ करेमिमाकजसमं वंदवणं कहेने एक वोगस अथवा चार
नवकारनी काउसम करवो, न पारीने सिद्धावुद्धाणं कहे। सु
देवयाणं कोसिमकाउसमं अनइं कहे। एक नवकारनी काउसम
करवो, न पारी नमोउदेकहे। पुठय सुयदेवयानी पहेवी थडे कहेवी
अने सिध कसवदवनी पहेवी थडे कहेवी. पवी वेउदेवतने
वानी थडे सिध तथा पुठय वनेए एकज कहेवी. पवी नवका
पगट गुणी वीसने उवा आवयकनी मुदेपवी पनवेदीने
वंदवणा दीजे, पवी सामायक वउवोसो वंदनक पनिकमणं काउ
सम अने पवकाण कहेवुं। एम ए उए आवयक संनारवा. पवी
इहोमि अणसहि नमोयसमणणं कहे। नमोदेव कहे। पुठय

मय दंडे जगत्समाधौ चैव यवत्तं यवत्पराय स्यात् कहेतु, प
 नवकराने काजसग करी पारी भाट लोगस कहेतु, पव। लोस
 करी कुसमिपणाने कुसमिपणाने चार लोससने अथवा शीत
 प्रथम पवरी हीने सामायक लुं पव। डहा।मं डहा।क।
 ॥ अथ हीने प्रतिकरण विधिः ॥

कमण विधिः ॥
 कहेतु, पारी अंतराविष मोहटण। समकरी ॥ हीने डहा। शीने
 पव। डहा। एक नवकर गणी चरे, ए डहा। प्रतिकरण विधि
 एक नवकर गणीने सामादयवत्तं कहेतु, पव। यवत्तं पार
 सामायकपायि नंदन कहे। पव। जमणी दोय उपेय कर। यव।
 डहा।मं डहा।क। सामायकपायि यथाशीक डहा।मं डहा।क।
 वे कहे।ने डहा।मं डहा।क। यवत्तं पव। डहा।क। पव।
 भाट लोसस कहेतु, पव। डहा।मं डहा।क। कहे। जवत्तं
 पारी कहे। एक लोसस अथवा चार नवकराने काजसग करी
 लवत्तं कहे।ने भाट लोसस कहे, पव। डहा।मं डहा।क।
 नवकराने करी, वे एक वरने अथवा पार पारीने नमोऽर्पकहे।
 डहा।मं डहा।क। काजसग चार लोससने संपूर्ण अथवा शीत
 लोसस कहेतु, पव। एक नवकर गणी लोससमय दंडे डहा।क।
 डहा।मं डहा।क। एम लोससने अर्धश भा। एक नवकर गणी
 लोससमय दंडे डहा।मं डहा।क। लोससमय दंडे डहा।क।
 लोससमय दंडे डहा।मं डहा।क। काजसग पारी भाट लोसस कहे। वम।ने
 डहा।मं डहा।क। लोससमय चार लोसस अथवा
 डहा।मं डहा।क। लोससमय चार लोसस अथवा डहा।मं डहा।क।
 पव। नमोऽर्पकहे। लवत्तं कहे, पव। डहा।मं डहा।क।
 नमोऽर्पकहे। लोससमय चार लोसस अथवा डहा।मं डहा।क।

चार खमसमणपूर्वक मागवान आचार्य उपपाय्य अने सर्वसाधू
 त्यांचे वाढवा, पवी खमसमण वे देई सखायाने आदेश मागि
 नवकार मागिने मरहेसनी सखाय करीने फी ? नवकार मा
 वा, पवी इवकारसुदेसाईने पाठ कहेवा, पवी इवकां राईप
 कमणोवाइ करीने जमणो दण ऊपवी ऊपर आपाने पवी इ
 सवस्विराईय डिबितियं करी नमोदियुं नया करेमिनने कहे
 इवामिडासिकावसां नस्मजवरीं करी एक लोगस अथ
 चार नवकारनी कावसमा पारीने पाठ लोगस करी सबलोअ
 रिहनें करी एक लोगस अथ चार नवकारनी कावसमा करी
 पवी पुकारवरीं मीअसं वंदणवं करी अनीवारनी आठ मा
 आनी अथवा न आवर नी आठ नवकारनी कावसमा पारी नि
 कावडिऊण करीने जीवा आवडयकनी मुंदपवी पलिदेही वाडण
 वे देवा निदंणी लेन अड्डिजिमलमा वाडणा वे दीजे निवे सुधी
 देवजीनी रीने जाणुं, पण वे ठिकाणे देवसिध आवे ने ठिकाणे
 राईय कहेवु, पवी आपरिपउरसाणं करेमिनने इवामिडासि
 नस्मजवरी करी नपवितामणी करनी न आवर नी चार लोगस
 अथवा जीव नवकारनी कावसमा करी, ने पवी पाठ लोगस
 करी उठा आवडयकनी मुंदपवी पलिदेही वाडणा वे देवा, पवी स
 कल तीर्थवदन करीने पयाजीकियं पवसाण करी, पवी इव
 करिण सविस्मद मागव नमोअकउवरीमर्या वंदनक पलिफम
 कावसमा पवसाण करी देवा, एम उ आवडयक सनारवा, प
 पवसाण करी देवानी करी देवा अने पारु देवानी पारु देवा
 एम कहेवु, पवी इवामिडासि नस्मजवरीं नमोअसमणो नमोदेव
 करीने विद्यावलावनं नमोदियुं अरिदेवउपाणं करी एक
 नवकारनी कावसमा पारी नमोदेवकी कल्याणकरनी प्रथम श्री

॥ अथ परकी प्रतिभामण विधिः ॥

॥ प्रकृति विज्ञान ॥

[illegible]

पचाश गुञ्जित जणनीव चारएकाश्या आठेआसणा वेदका
 सजाय करी यथाशक्ति तप प्रवेश कथो देवता पडो कदीए,
 करवा देवता नदति कदीए, न करवा देवता अणवोदया देव
 पठो वावणा वे दीजे, पठो डडाकां पठेयवामणेण अणुदिवे
 अणुनर पत्तिअं वासव डडं वासिमपत्तिअं पठेयवामणेण अणुदिवे
 पठेयवामणेण वाकिअपत्तिअं पठो वावणा वे दीजे पठो देव-
 तिमआलोडपत्तिअं डडाकां जगवन् पत्तिअपत्तिअं समपत्ति
 कमासि डडं एम कदी करिमनतेसामाडवं कदी डडासिपत्तिअ
 मिडं वासिमपत्तिअं कदेवा पठो वासिमपत्तिअं डडं डडाकां प
 क्तीसुड पठे, एम कदी जण नवकार गणी सधु न दोयतो जण
 नवकार गणीने आवक वंदिपु कदी, पठो सुपदेवयानो योप कदेवा
 पठो देवा देवी जमणेदीवण ऊमो राखी एक नवकार गणी क
 देमनते डडासिपत्तिअं कदी वंदिपु कदेवुं, पठो करिमनते ड
 डासिमपत्तिअं जमपत्तिअं तस्मज्जरीं अथव कदेने
 (१२) अर जगदेसना कठिसण करवा, हे जोगेस्स वंदिपुनिमज
 पठा सुणी कदेवा अथवा अणवसि नवकारना कठिसण करी
 पठा, पठोने अण जोगेस्स कदी मुंदेयवा पठिदेहीने वावणा
 वे दीजे, पठो डडाकां समसिखमणेण अणुदिवे अणुनर
 पत्तिअं वासव डडं वासिमपत्तिअं पठेयवामणेण अणुदिवे
 सण डडं डडाकां कदी पत्तिअमणवाणं एम कदी वासमणा
 डडं वासिमपत्तिअं पठेयवामणेण अणुदिवे अणुनर
 सुपदेवयानो मुंदेने विक्कणे डामादि योप कदेवा
 स्तवन अजितशालिनु कदेवुं, सजायने विक्कणे जवसागदे, तथा
 सुपदेवयानो मुंदे चार कदेवा अने वयुजालिने विक्कणे मोदेटी

शानि कदेवी ॥ इति परकी प्रतिक्रमण विधि ॥

॥ अथ चउमासी प्रतिक्रमण विधि ॥

य ऊपरना कदा प्रमाण सर्व विधि करवी पण एतवी वि
शेष, वार वोगरसनो काउसगने निकाले वीस वोगरसनो काउ
सग करवी अने परकीना आगारने निकाले चउमासीना कदेवा,
सुधानपने डेकाले उठेण वें उपवास वार शनिउ उनीवी आठ ए-
काश्या शनि वेंआसण आठवेंकारसआप, ए रीते कदेवी ॥ इति ॥

॥ अथ संवत्सी प्रतिक्रमण विधि ॥

ए पण ऊपर लखा मुजब एतवी विशेष पण परकीना
शो शानि नवकारनी काउसग करवी, अने तपने डेकाले अठमनने
एतले अठपववाश उशनिव नवनीवी वारएकववाश चौवीश वेंआ-
सण अने उठेकार निशाप ए रीते कदेव अने परकीना आगारने
डेकाले संवत्सीना आगार कदेवा ॥ इति पंचप्रतिक्रमण विधिः सं०

॥ अथ पण्डितेष्टण करवानी विधि ॥

नवकार पंडितिय कदे इतिथावदे पण्डिकमवी. आपना दे-
व नी नवकार पंडितिय न कदेव, पवी उस्सउवरी कदे. एक वी
गस्त अथवा वार नवकारनी काउसग करी मग उ वोगरसन कदे
उने पण वीस मुंडवली वारवो कटसण उस्सउवली वीस कदेवी
आदि पण्डितेष्टण करव, पवी कावो कावो जीव कलेवर सवित्र
आदि जीव, पवी कावो कडनार आपनावी संमेल उनी. इदे
इतिथावदे पण्डिकम पवी कावो पठववा जया सवी अणवार
अणिनाण्डवसिणी कदे कावो पठवे, पवी अण वार वीस
कदे ॥ इति पण्डितेष्टण करवानी विधि ॥

॥ ११ ॥ आरुह्य कं दूष धार, पल्लवेदुष दूष धीर्वा जे ॥ ११ ॥
 मासनी जे ॥ वीरुह उपवास, पालि धीव वसुधासनी जे
 क्रिया जे ॥ १० ॥ धीव करे धावना मास, उल्लेख धावना
 सुख धीर्वा जे ॥ धीव सम दूष धार, धीवने संतोष रस
 धारि कल जे ॥ ९ ॥ धीव सुधार धार, धार करी
 धार, समिकन एक फल जे ॥ साधर धुनवदूष, उल्लेख
 धार धार, धारकाल धार धीर्वा जे ॥ ८ ॥ धीव कर्म धी
 उपशम धीव धीव, समिकन धीव धीव धीव ॥ धीव कर्म
 जे ॥ धीव धीव धीव धीव, धीव समिकन धीव धीव धीव
 धीव ॥ ७ ॥ धीव धीव धीव धीव, धीव समिकन धीव धीव
 धीव धीव धीव धीव ॥ ६ ॥ धीव धीव धीव धीव, धीव समिकन
 धीव धीव धीव धीव ॥ ५ ॥ धीव धीव धीव धीव, धीव समिकन
 धीव धीव धीव धीव ॥ ४ ॥ धीव धीव धीव धीव, धीव समिकन
 धीव धीव धीव धीव ॥ ३ ॥ धीव धीव धीव धीव, धीव समिकन
 धीव धीव धीव धीव ॥ २ ॥ धीव धीव धीव धीव, धीव समिकन
 धीव धीव धीव धीव ॥ १ ॥ धीव धीव धीव धीव, धीव समिकन
 धीव धीव धीव धीव ॥ ० ॥ धीव धीव धीव धीव, धीव समिकन
 धीव धीव धीव धीव ॥ ११ ॥

॥ अथ धीवने संवत् ॥

राग न द्वे द्वे करे जी ॥ कवलपदं ललितं तस्य, परं मुक्तिं उच्यते ॥ १४ ॥ निमग्नता मुक्तमक्ति, निमग्न कर्ता सेवां सेवां करोति ॥ १५ ॥ पद्मविजयनां विष्णु, नक्ति पद्मं सुखं संपदां जी ॥ १६ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

(॥ टीका २ ॥ कथं दृष्टं अति कठिनं ॥ ५ ॥)

वृद्धिपना नरनामा, नपर पदमपर नाम ॥ अति-
 मन राजा निहते, राजा यशोमती नाम ॥ १ ॥ अतो आ-
 राधो पर कोन, एहिज मुक्ति निदान ॥ ५० ॥ ५
 आकला ॥ परदस किर नैवनी ॥ निनयाकि गुणवत ॥ निने
 नालवा मुक्ति ॥ आठ परस जव हुने ॥ ५० ॥ २ ॥ पंक्ति
 परन करे पला ॥ राज नालाव देन ॥ अकर एक न आवने ॥
 मयनली की नेन ॥ ५० ॥ ३ ॥ कोटि व्याप्य देवनी ॥ राजा
 राजा सन्निव ॥ अष्टी नैदीज नपरमा ॥ निहतास पनवन ॥
 ॥ ५० ॥ R ॥ कथं निवका गदनी ॥ शीले शीतिन अंग ॥ गुण
 मंजरी तस वेदनी ॥ मुगी रोग अंग ॥ ५० ॥ ४ ॥ शीले
 वरना सा पद ॥ पामा यौवनवेश ॥ दुर्गम पण पाले मदी ॥
 मान निना परे विद ॥ ५० ॥ ५ ॥ नेले अवसर उद्यानमा ॥
 निजपदोन गणपार ॥ कोनपरण रणपणक ॥ वरण करण मन-
 धार ॥ ५० ॥ ६ ॥ वनपालक जोगवन ॥ दीप वधाड आम ॥
 अष्टीनी सेना मजी ॥ वंदन आदि नाम ॥ ५० ॥ ७ ॥ पम्प-
 देशना सन्निव ॥ पुरवन सदिन नैरा ॥ निकशान नपन पदन
 मुवा ॥ नहि यमाद प्रवेश ॥ ५० ॥ ८ ॥ कोन विराधन परमवे ॥
 मयल पर आधीन ॥ रोगी पीड्या दववले ॥ दीसि दुःखीया दीन
 ॥ ५० ॥ ९ ॥ कोन सार संसारमे ॥ कोन परम सुख देन ॥
 कोन विना जगतीवनी ॥ न लहे तल संकेत ॥ ५० ॥ १० ॥
 अष्टी पुरे सुविधन ॥ नामो कठणावत ॥ गुणमंजरी मुन अंग-
 वा ॥ कवल कम्प विनवत ॥ ५० ॥ १२ ॥ इति ॥

(टीका ३ ॥ सुखी महिनी देवीमा)

धनकीर्तना नरनामा, खेटक नपर सुवाम ॥ उपवदारी

निन्देव है, घरणी सुंदरी नाम ॥ १ ॥ अंगज एवं सौंदर्य
 पुत्री चरुत चर ॥ पंक्तिपासे सीखवा, तारे मुक्या कुमार ॥ २ ॥
 बालसनाव रामने, करती वंदना जाय ॥ पंक्ति मारे जादे
 मा आगत कहे आय ॥ ३ ॥ सुंदरी सुखिणी सीखवै, सपन
 नदी काम ॥ पंक्तियो आवे नका, तो नस देखावो नाम ॥ ४ ॥
 पट्टी खनिया खेखला, बाली कीया राख ॥ अठने बिद्या नहि
 कहे, बेम करहेन खेख ॥ ५ ॥ पाता परे मोहेटि अया, कल्प
 न दीप कोय ॥ सेव कहे सुख सुंदरी, ए वृत्त करणी कोय ॥ ६ ॥
 अठकी नाले गोमिनी, बेटा बापना दीप ॥ पुत्री दीपे सान्नी,
 जाणे है सह कोय ॥ ७ ॥ २ ॥ पापणि साधणी, सामा बोव म
 बोव ॥ रीसाली कहे तादरे, पापी बाप निटोव ॥ ८ ॥ श्रोत्र
 मारी सुंदरी, काल करी ननखेव ॥ ए वृत्त बेटी उपनी, झान
 विराधन देव ॥ ९ ॥ सुठंगल गुणमंजरी, जातीसमरप पास ॥
 झान विवाकर साची, मुकने कहे शिर नासि ॥ १० ॥ श्रोत्र कहे
 सुणी स्वामी, केम जाय ए रोग, मुक कहे झान आराधो, साधो
 वंजित योग ॥ ११ ॥ उज्जव पंचमी सेवो, पंच वरस पंच मास
 नमो नारायण गणेश गुणो, चोविहर उपवास ॥ १२ ॥ पू
 जतर सत्यल, जपिय दीप देवार ॥ पुस्तक आगत श्रोत्रे, पाल
 कजात्रि उदार ॥ १३ ॥ दीवो पंच दीवतल्लो, साधियो मंगल श्रेष्ठ
 पोसदमान करी सके, नेण विधि पाएण एव ॥ १४ ॥ अथ
 सौभाग्यपंचमी, उज्जव कानिक मास ॥ जयजोय एते शिवे,
 कजमण विधि खास ॥ १५ ॥ ॥

(॥ राज बोधि ॥ एतजोसानी देशीमां ॥)

पांच पोथी २, उज्जली पाता लिखण ॥ चारली शीत २,
 पाट्टी पाट्टा पर नया ॥ मसी कागज २, काली खनिया खेखणी ॥

कवली पावली रे, चढ़िआ ऊरमा पुंजली ॥ १ ॥ (श्रुतक) श-
 साद मलिया नास भौणल, केसर चंदन पावली ॥ वासकैली बाला
 कैली, आगर्द्धेया जावली ॥ कलश पाली भगवदीवा, आरली न
 भूपला ॥ चारवला मुंदेपली सादेसी वज्रव, नौकरवाली आपना ॥
 ॥ २ ॥ (टाल) डोल वलिसल रे, सरलना साधन जे कछा, तप
 संयुत रे, गुणभंजरीष सहसा ॥ हृष पुंज रे, परदेन कुंवरनं अंग
 रे ॥ रंग उपनी रे, कवल करमना रंग रे ॥ ३ ॥ (श्रुतक) सु
 निराज नास जंजुली, नरन सिंदूर गाम ए ॥ उपवदली वसु
 नास नंदन, वसुसार वसुदेव नाम ए ॥ वन मादे रमनां शेष
 भूप, पुण पुन गुंठ मळया ॥ वैराग्य पापी नोण बाली, धूम
 धामी संवरया ॥ ४ ॥ (टाल) लघु बांधव रे, गुणवंत गुंठ पदवी
 लई, पणसप मुनिन रे, सारल वारल निरु विरे ॥ कर्म पोले रे,
 अशुन वरप भयी अन्धश, संधारे रे, पोस्ली नणी पोळी पदा
 ॥ ५ ॥ (श्रुतक) संध्याति निंद व्यापी, साधु माले बाधला ॥
 कंधमा अंतराय बाली, सूरि देआ देमला ॥ डोल ऊपर देव जा-
 रा, लागी मिळया मोरनी ॥ पुण अमृत दोली नाली, नरली
 पापला पली ॥ ६ (टाल) मन चितवे रे, कां मुंठ लानु पाप रे ॥
 श्रुत अन्धसा रे, ती एवनी संताप रे ॥ मुंठ बांधव रे, नोण
 लापण सुख करे ॥ मूरजना रे, आठ गुला मुख उखरे ॥ ७ ॥
 (श्रुतक) वार वासर कोड मुनिन, बाधला दीपी नदी ॥ अशुन
 रंधाने आयु पुरी, सौप गुंठ चंदन सदी ॥ डोल विराधन-मंड वन
 पण, कोटनी वेदन लदी ॥ वृंठ बांधव मानसरवर, दंसगति पाप्पी
 सदी ॥ ८ (टाल) वरवचन रे, वासिसल ऊपनी ॥ नव दीजे रे,
 गुंठ पापी कदे अशुन मनी ॥ पण गुंठली रे, डोल जगजप दी
 पली ॥ गुण अवगुण रे, मोसन जे जग परवनी ॥ ९ ॥ (श्रुतक)

कोन पावन सिद्धि साधन, कोन कहे किम जावन ॥ मुक कहे
 नेवली पाप नासि, टाट बेम धन नावने ॥ जेप पयजे पुजेन प्रभु,
 नपनी शक्ति न पवती ॥ मुक कहे पंचमी नप आराध्या, संपदा
 द्या वेवती ॥ १० ॥ इति ॥

(टाळ पांचमी ॥ मूर्ती पूजा लग्नी ॥ पृ ३२६ ॥)

सज्जक वयल सुधारस रे, नेदीसावे घात ॥ नपसु रंग लागी,
 गुणमंजरी वरेवतनी रे, नाजो रंग सिद्धाच ॥ न० १ ॥ पंचमी नप
 सविमा घणो रे, पसरयो सविजल सांदी ॥ न० ॥ कऱ्या सदेम
 संपवती रे, वरेम परणयो द्याही ॥ न० ॥ २ ॥ जेप कोणो एटा
 वी रे, आप आयो मुनि जेप ॥ न० ॥ नोम कांन गुण करो रे, वर
 दस रवि शिरोधार्य ॥ न० ॥ ३ ॥ राज रमा रमणीनणा रे, नोमवे
 नोम अवलन ॥ न० ॥ वरसपे ऊजवे रे, पंचमी नेज प्रवदन ॥ न०
 ॥ ४ ॥ शुकनोनी आयो संजमा रे, पावे वन खडकाय ॥ न० ॥
 गुणमंजरी जिनवदने रे, परणाले निज नाप ॥ न० ॥ ५ ॥ सुल
 विवसी धडं साधवी रे, वेजपने वीप देव ॥ न० ॥ वरेव एण
 ऊपनी रे, जिह्वा सीमधर देव ॥ न० ॥ ६ ॥ अमरसेन राजा परे
 रे, गुणवत नरी एटा ॥ न० ॥ लकटा लकीन रापने रे, एणुप
 कपोत नेट ॥ न० ॥ ७ ॥ अरसेन राजा आयो रे, सो कऱ्या न
 रतार ॥ न० ॥ सीमधर सासी कने रे, सुलि पंचमी अघिकार ॥
 न० ॥ ८ ॥ लिहो एण ने नप आयो रे, लोक सविन जेणाल ॥
 न० ॥ दया देजार वरसां लो रे, एलो राव ऊजार ॥ न० ॥ ९ ॥
 चार सदासन जेपसु रे, श्रीजिनवरनी पास ॥ न० ॥ केवल धरि
 मुक गयो रे, साविजनन निवास ॥ न० ॥ १० ॥ रमणी निजप ॥
 नापुति रे, जेजिवेद मऊर ॥ न० ॥ अमरसिद्धि सदापावन रे,
 अमरवती परमार ॥ न० ॥ ११ ॥ वेजपन यही घरो रे, गुणमं

गरीजे जीव ॥ तं ॥ मानससर वैम दंसरो रे, नाम धर्युं सु
 शीव ॥ तं ॥ १२ ॥ बीस वरसे राजवी रे, सहस्र योगीनी पूज ॥
 तं ॥ जाल पूज समता धरे रे, कवचकीन पवित्र ॥ तं ॥ १३ ॥
 पंचमी तप महिमा विधे रे, गौरी निज अधिका ॥ तं ॥ जेणे
 जेदगी निवपव लह्य रे, वेदो नम उपकार ॥ तं ॥ १४ ॥ दंड ॥
 (दंड छे ॥ करकंडने करं वंदना ॥ पं देगी)
 चौबीश वंनक बारवा, दू बार ॥ चौबीशमा निमवंद रे,
 दू बार ॥ गाल्या गालनसंगी, दू ॥ निमल उर
 सुलकंद रे ॥ दू ॥ १ ॥ मादवीरन करं वंदना, दू ॥ पं अं-
 कणी ॥ पंचमी गतिन साधवा, दू ॥ पंचम गाल निजला रे,
 दू ॥ माद्विगरीय निजतामा, दू ॥ पंचमी तप प्रकाश रे,
 दू ॥ मां १ ॥ अग्रणी पण उपरा, दू ॥ वंनकसिपा साप रे,
 दू ॥ पञ्ज करंता वंनला, दू ॥ सरला कीधा आपरे दू ॥ मां
 ३ ॥ दू वानंदा बाझणी, दू ॥ विनदव वली विधरे, दू ॥
 द्यासी विरा संभली, दू ॥ कामत पूरा किम रे ॥ दू ॥
 मां ४ ॥ कर्मोने टाववा, दू ॥ सति शोपना जाल रे,
 दू ॥ आदर्या स आता परी, दू ॥ मुन ऊपर हिन आलि रे,
 ५ ॥ मा ५ ॥ श्रीविजयानंद सुतीसरी, दू ॥ सत्यविजय पन्नास
 रे, दू ॥ ॥ शिष्य कर्पविजय कलि, दू ॥ ॥ वंद किरण जस जाम
 रे, ५ ॥ मां ६ ॥ पास पंचासता साजि, दू ॥ विमाविजय
 मुन नाम रे, दू ॥ ॥ विनविजय करे मुन देवी, दू ॥ पंचमी
 तप परिणाम रे ॥ दू ॥ मां ७ ॥ (कवच) दप बीर लयक
 शिष्य नाथक सिद्धिपक संस्तवा, पंचमी तप संस्तवन टोप
 शिषी निज करे उवा ॥ पुन पाटल खिच माहे सगरभाणु संवसरे,
 श्रीपर्व नामकटपाणु विषे सकल पात्र भण करे ॥ ८ ॥ दंड

॥ अथ अष्टमीं स्तवन लिख्यते ॥

॥ हरि मरे राम परमना सदापचवीया देवा जो, वीर दे
 त्या देस माग्य सहसां भिरे दे जो ॥ हरि मरे नगरी वेदमां राज-
 गृही मुखोप जो, राजे रे त्यां श्लोक गाजे गज परे दे जो ॥ ११ ॥
 हरि मरे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो, निवर्तना नि-
 आवी वीर समीपया दे जो ॥ १२ ॥ चवद सहस मुनिवरना सोपेसा
 जो, स्या रे तप संयम शिष्य अवंकथा दे जो ॥ १३ ॥ १४ ॥
 रसना उज्या अब कंदव जो, जाणु रे गुण गोविंदन दे
 रोमविषा दे जो ॥ १५ ॥ वाघ वाघ सुवाय निहां अविचव जो
 वासे रे परिसल विहं पासे संविषा दे जो ॥ १६ ॥ १७ ॥
 विष आवे कोलकोल जो, जिगुं रे मणि हेम राजाजुं ने रे
 जो ॥ १८ ॥ चोतर सुरपति सेव होलहोल जो, आगे रे रस वा
 डंजाणी नवे रे जो ॥ १९ ॥ मणिमय हेम सिंदूरसाय देवा
 आप जो, ठाले रे सुर चामर मणिरत्नं जग्या रे जो ॥ २० ॥
 सुखतां डंडनि नाद टले सवि नाथ जो, वरसे रे सुर फल सार
 ज्ञान अन्ध्या रे जो ॥ २१ ॥ २२ ॥ तांसे तेजे गाजे पन जेम वंज
 जो, राजे रे निरराज समाजे धर्मने रे जो ॥ २३ ॥ निरा
 हरली आवे जन मन वंज जो, घोरे रे रस न पदे धीरे समसां
 दे जो ॥ २४ ॥ २५ ॥ आगम जाली, निरनो श्लोक राय जो,
 आगो रे पराविषा देय मय रय पायां रे जो ॥ २६ ॥ २७ ॥
 क्रिया वंदी वेदी ठाय जो, सुखा रे निववाणी मोरे माया रे
 जो ॥ २८ ॥ निर्वननाथक बापक तव सागत जो, आणी
 रजन करणा धर्मकथा कहे रे जो ॥ २९ ॥ सदेव विरोध निमो
 जगना जंत जो, सुखतां रे निववाणी मनमा भवगहे रे जो ॥ ३० ॥
 रति ॥ (॥ दाळ वीजी ॥ गोलम वहेळा रे आनवो ॥ पुर देशी ॥)

तकीर्तु, पञ्चम विंश दृष्टिकारणी ॥ नरपति ॥ विजय पाटण ॥
 काय पतिव, चरित सुख सुखतल ॥ ६ ॥ नरपति वीरिण ॥
 ति मोनपण उपवास, दौडो अपमल गण ॥ नरपति मन वर
 नरपति वरमान वीवीशी, माहे कल्याणक आयली ॥ ७ ॥ नर
 ॥ ६ ॥ नरपति अर वीकी नमि गण, मज्जी जन्म मन केवली ॥
 वी ॥ नरपति नेव जिनना कल्याण, विवरी कहे आगति वली ॥
 उडेली ॥ ५ ॥ नरपति दश केव निण काव, वीवीशी वीवी म
 आराधी एकदशी ॥ नरपति एकशी ने पञ्चाश, कल्याणक निण
 जेम करे शिववर्ष कतली ॥ ४ ॥ नरपति उज्जव मणिशि, मास,
 मास, मास गावे गुणनिवा ॥ जगपति कोव उपाय वताय,
 कारण पुम विन कोण कहे ॥ ३ ॥ जगपति पुम सखि सुक
 धर्म अशक, रक आरंभ पुरिपडे ॥ जगपति सुक आत्म उदर,
 पुढे कल्या, काधिक समिकत शिव कीव ॥ २ ॥ जगपति शक्ति
 पति वीगुण कुल अमृत, शक्तिगुण माला रवी ॥ जगपति पुढी
 जगपति वंदवा कल्यानरिंद, वादव कोनिष पुरिबरा ॥ १ ॥ जग
 ॥ जगपति नायक नमजिनंद, दारिकानारी समोसरा ॥
 ॥ अथ एकदशी स्तवन लिख्यते ॥

वली ॥ १ ॥ इति अष्टमी वंद स्तवन संपूर्ण ॥
 स्तवन ए आठमनली, ते शक्ति नावे सुखे गावे कालि सुख पावे
 पसाय पायी संध्याया अवसेर ॥ जिन गण मनो मणो ले
 जिनग नासन अवल आसन वंदमान जिनवर, गुण देम गुरु सु-
 देमनी, कहे कालि कर जोन रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ (कवरी) एम
 एदशी संध्या सति सदै, टले कटनी कोन रे ॥ सेवजी शिप उय
 मुखे उचरी आलिपा, पामसे नवतली पर रे ॥ वि० ॥ १६ ॥
 शिखी वीरे आठमनली, शक्ति देव एव अधिकार रे ॥ जिन

निधन, साचो रुप शबाणवणी ॥ ७ ॥ नरपति नरी चंडावंती
 ताम, चंडमुखी गजगामिनी ॥ नरपति श्रेणी शूर विदधान, शीघ्र
 सतीता कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्राधिक परवर, सार संपण
 चीर परी ॥ नरपति जावे निरु जिनोद, नमन रतवन पुंता
 करै ॥ ११ ॥ नरपति दोहे पाव सुपाव, सामायक पाव करै ॥
 नरपति देवदत्त आवडपक, काल वेलावे अलिमे ॥ १२ ॥ इति
 'दात वीही' एक दिन प्रणमी पाप, सुवत सधुनणा री ॥ वि
 ली चीनवे सेत, मुनिवर करि कळारि ॥ १ ॥ वाखो मुन दिन
 कि, दोही पुण किया री ॥ वावे जिन वनवीज, शून अविबधी
 ली री ॥ २ ॥ मुनि नावे मदाजान, पावन पूर्व धला री ॥ ए
 नवडी सुविशेष, वेदमां सुल सेमना री ॥ ३ ॥ दिन एकावडा
 व, मास डायर लो री ॥ अथा वरस डायर, वजवी नव शू
 ने री ॥ ४ ॥ सानलि सजिरे वेण, आनंद अति जखेया री ॥
 प सेवी वजवीय, आराख्खणी वर्या री ॥ ५ ॥ एकवीडा, सगरे
 ल, पावी पुणवसे री ॥ सानल केओवरपा, आगलि वेद घसे
 ॥ ६ ॥ सोरीपुरमां सेत, समुदरेष वरी री ॥ प्रीतिमती प्रिया
 स, पुणवे जोग वंज्या री ॥ ७ ॥ तस केले अवतर, सेवित
 न स्वये री ॥ जन्म्या पुंज पवित्र, जलम मदे शिकने री ॥ ८ ॥
 न निक्षेप निधान, सौमधी गगट वरी री ॥ गने दोहरे अवि
 व, सुवत नाम ठग्यो री ॥ ९ ॥ वरि उद्यम मुक जोग, जोग
 कि नग्या री ॥ पावन वय अगिपार, कपवती परग्या री ॥
 १० ॥ जिनपुवन मुनिदान, सुवत पवकिला परे री ॥ अगिपार
 न कोर, नायक पुण परे री ॥ ११ ॥ धर्मपाप अणगार,
 ध अधिकार करै री ॥ सानलि सुवतसेव, जाती समण लदे
 ॥ १२ ॥ जिन प्रत्यय मुनि साध, नाक तप उचरे री ॥ एक

प्रती विन आठ, पहिली पोसा घरे ही ॥ १३ ॥ इति ॥ (टीका)
 ज्ञाणी तस्कर आख्या, परमां धन वृद्धे तदा जी ॥ १ ॥ शोसनन
 क वेदीशक्त, धनाणा ते वापका जी ॥ कोलादित सुवि कोटवाल
 आख्या, नैप आण्ड धर्या रिकना जी ॥ ३ ॥ पोसद पारी देव जेदरी,
 दयावत लंड नेटणा जी ॥ रायने प्रणमी चोर मुंकावी, शोठे की
 भा पाणना जी ॥ ३ ॥ अन्य दिवडा विधानल जाली, सोरीप्रत्य
 आकरी जी ॥ सेठजी पोसद समस्त देवा ॥ लोक कहे देव कां
 करी जी ॥ इत्ये सेठजी तप ऊजमण, प्रमदा साधे आर्जे जी ॥
 ॥ ५ ॥ पुत्रने परतो नार मलावी, संवणी शिर सेदरी जी ॥ च-
 च नाणी विजय शौर सर, पासे तपवान आर्जे जी ॥ ६ ॥ एक
 खटमासी चार चौमाशी, दोसप उठ सो अठम करे जी ॥ चौजा तप
 पिण-वड्डुश्रित सुवत, मौनएकाशी धन घरे जी ॥ ७ ॥ एक अथ-
 म सुत निष्पादित, देवता सुवतसुविने जी ॥ पूर्वोपनिजन कर्म उदरी,
 शो-वपारि आधिने जी ॥ ८ ॥ कर्म नकिरो पावे जलियो, घुर क-
 हू जाठ औपयनणी जी ॥ साधु न जावे सोप नराचे, पाट्ट पहाटे
 हणयो सुनि जी ॥ ९ ॥ सुनि धन वचन काय विप्रागे, ध्यान अनल
 वदे कर्मने जी ॥ केवल पामी- विनपदामी, सुवत नेम कहे
 देवामने जी ॥ १० ॥ (टीका) कोन पणुपै नेमने ए, धन्य
 आदव वडा, जिहा प्रसु अवतरया ए ॥ सुत धन मानस देस, व
 पो-जिन नेमने ए ॥ १ ॥ धन्य शिवादेवी मावकी ए, समुदेवित
 य-धन्य तान, सुजात-जगतगुरु ए ॥ रत्नजयी अवतार ॥
 वं २ ॥ चरण विरायी ऊपनी ए, हू नवमी वासुदेव ॥ जयो ॥
 निवे मन नवि उजवे ए, चरण परमनी सेव ॥ जयो ॥ ३ ॥

जना, ते विम संयत्किं आनंदं अंग - न माय ॥ ४० ॥ ४ ॥ ४० ॥
 वसु चास्य वसु धराय ॥ ए सहु वक्ष्य, मुक्तं नंदन सादरा ते
 ॥ ३ ॥ मुक्तं कीदृशो उपन्या वे वसु गवश्चक्राणीय, सिद्धांशप पर
 सप दीप्यती वाज, दृष्टो पुण्यपनोति इदंशो पदं आन ॥ ४० ॥
 माटी कहे आठवा अण्य सुवन सितलाज ॥ माटी कहे आठवा
 दीपमा जितराज ॥ माटी कहे आठवा अण्य सतरा जितराज,
 जितराजी पास प्रसन्न श्रीकृष्ण गणपत, तेदने वचनं जाणया चो-
 दिते चकी के जितराज, दीना वार चकी नहि दृष्टे चकीराज ॥
 साची साची दंड ते मारे अमुनवाण ॥ ४० ॥ २ ॥ चौदे दंड
 तीक्ष्णर जिन परमाण ॥ केशीरवाजी मुखवी एवी बाणी सांजली,
 ॥ १ ॥ जिनजी पाशुपदयुधि वरस आदीशे अनर, दोसे चौबीशमा
 धुपटी वणि वृमवृम टीत ॥ दालो दालो दालो माता नंदने
 कवाना मीन, सोना कपान वली रत्न जलिय पावली, रत्नम बोली
 माता विद्याला जेवावे पुत्र पावली, गावे दालो दालो दाल
 अथ पाहिलीस्वामीनि दालिनि, गाय ॥

यत्सिरी वरी ॥ १ दल ॥

मुक्त अमुनरी, कपूरविजय कवि कामाविजय गणि, जिनविजय ज
 जगारे संशुभो ॥ संशुभ रंग नंदन जलनिवि सत्यविजय
 पुंरर, रेवतावत मंगलो, बाण नंद मुनि चंद्र वरसे री
 चौबीशीये वप ॥ जयो ६ ॥ (कवजा) इय नेम जिनवर निम
 समयिकत युन आगव ॥ जं ॥ आदिस जिनवर वारमा ए, जावी
 वी ए, बाह, मद्यानी वाज ॥ जयो ५ ॥ नेम कडे एकादशी ए,
 वलिपानाये ए, कीडे सीक काल ॥ जं ॥ एदेवा वचनने सारं
 हुं न करी सकु ए, उर कर्माता नेप ॥ जं ॥ ४ ॥ एण सरणी
 दाली नेम कावव गळ्या ए, जाणुं जपादिय देप ॥ जं ॥ तीपण

तव पणतव वक्ता एक द्वात्र न आत्त ते, तेदग्री निश्रय आण
 तिनव श्री जगदीश ॥ नंदन जमण। जों वंजन सिद्ध विराजता,
 मू पहेले सुपनं दीडो विखवावीश ॥ द्वा० ॥ ५ ॥ नंदन नवरा
 वधुव नंदीवदनना तम, नंदन योजाड्योना देवर ओ सुकमल, द
 ससं योजाड्या कदी देवर सादस लाकका, देसशे रमशे न वली
 वुंटी। लणशे गाल ॥ देसशे रमशे न वली वुंसा देसे गाल ॥ द्वा०
 ॥ ६ ॥ नंदन नवरा येनराजाना जालेज ओ, नंदन नवरा पं-
 वसें मामीना जालेज ओ, नंदन मामलिआना जालेजा सुकमल ॥
 देशशे दाय उडाली कदीने नदना जालेजा, आंखुं आंजोने
 वली टवर्क करसे गाल ॥ द्वा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लवशे
 टीपी आंगला, रतेने जाल्या ऊलर मोली कशोदीकर ॥ नंदन
 पीला न वलि राला सरवे जालेना, पहेलवशे मामी मार नवर्क
 शोर ॥ द्वा० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सुखलव। सह लवशे
 नंदन गजुवे नरसे लार मोलीचेर ॥ नंदन सुखला जोडने लेशे
 मामी जामणा, नंदन मामी कदेशे जीवो सुख नरपूर ॥ द्वा० ॥
 ॥ ९ ॥ नंदन नवरा येना मामानी सासे सती, मारी योजीने
 वैन तमारी नंद ॥ ते पण शेंके नरवा लखलसाई लवशे, वुमने
 जोड जोड देशो अधिको परमानंद ॥ द्वा० ॥ १० ॥ रमवा काडे
 लवशे लखटकानी पुरी, वली शूना मूना पोपट न गजराज ॥
 सारस देस कोपल तीतर न वलि मोरजी, मामी लवशे रमवा
 नंद तमारे काज ॥ द्वा० ॥ ११ ॥ जपन कुमरी असरी जलकलशे
 नयरावीआ, नंदन वुमने अपन केली पानी माहि ॥ कुवनी
 वुंदि कापी योजन एकने मन्वे, वहु विजेजीवो आशीप
 वुमने माहि ॥ द्वा० ॥ १२ ॥ तमने भक्तिलिख सुपलिय नव-
 विरली देरली सुकल वान कमप ॥ सुखला ऊपर बाह

कोटी कोटी चंद्रमा, वही तम पर वाकें अदृष्टानो समुद्राय ॥
 ६० १३ ॥ नंदन नवल नलय नोशाले पण मूक्यो, गज पर
 श्रवाणी वृषाणी मोदोटे साज ॥ पसवो नर्यो श्रीकव कोकव
 नगरववर्जो, सुखनवो वर्यो नोशालेअने काज ॥ ६० १४ ॥
 नंदन नवल मोदोटा याशाले परलवर्जो, वहु वर सरलो जोने
 लवर्जो राजकुमार ॥ सरला वेवाडो वेवाणें पसरवर्जो, वर वहु
 पावो, वर्यो जोड जोडने दीवार ॥ ६० १५ ॥ वीपर लातर मा-
 रा वर एक कजवा, मादरी केलें आठवा ताव पनोता नंद, मा-
 दरे आंगण वरा अमृत कुंभ मज्जा ॥ मादरे आंगण फलिया
 सुतरक सुखना कंठ ॥ ६० १६ ॥ दलपरे गावु माता विद्याला
 सुतर पावर्जो, ते कोड गावो वेवो पुनवणा साजाल ॥ बिलोमोरा
 नारें परावर्जो वीरुं दालक, जय२ मंगल दोवो दीपविजय
 कविराज ॥ ६० १७ ॥ दंडि पर ॥

निदा म करवो कोडनी परकी रे, निदाना वीज्या मदा
 पाप रे ॥ वपर त्रिप पाप वणो रे, निदा करतां न गण
 मायपाप रे ॥ नि १ ॥ जे ववती कां देखो गुहरे रे, पगमां व
 लती देखो सह कोप रे ॥ परना मनास पापा वृणना रे, कदो कम
 कजवा दोप रे ॥ नि० ॥ २ ॥ आप सजालो सहको आपणो रे,
 नोदानो मूको परी देव रे, ॥ पापे वणे अवगुणे सह मर्या रे, के-
 दना नलिया वरुं कंदना नेव रे ॥ नि० ॥ ३ ॥ निदा को ने
 पापे नरकी रे, तप जप कीयुं सह जाप रे ॥ निदा करी नो कर-
 जो आपणो रे, जेम उठकवारो पाप रे ॥ नि० ॥ ४ ॥ गुण महे-
 जो सहको नलो रे, जेदमां देखो एक विषय रे ॥ कल्या परे सख
 पापको रे, समपुत्रे मुखको रे ॥ नि० ॥ ५ ॥ दंडि ॥

देवीश उदार, एक नैम विना सवि समवसरा नरधर ॥ नि
 कल आषा पोटला गट निरनार, वैजोपुनम दिन ते वट अकक
 ॥ २ ॥ इलाधमकधो अतगन सूत्र मऊर, सिद्धावले सोष
 बाळ्या वट अणगर ॥ ते माटे ए निरि सवि तोर्य निरवार
 जिन मटे आवे सुख संपनि विस्तार ॥ ३ ॥ गोसुख चक्रेसी शो
 सननी रखवाल, ए तोर्य केरी सानिष करे संजाल ॥ निकजो
 जस मदिमा संपनि कावे जास ॥ श्री इमानविमल मुरी नाम
 लीव विवास ॥ ४ ॥ इति ॥ इहां नमोऽस्तुते जावंती व कही
 नमोऽस्तुते इति स्तवन पारंप ॥ छलनाची देयी ॥

॥ अथ आदिनिन स्तवन पारंप ॥ छलनाची देयी ॥
 आदिकरन अरिदंत जी, वजगनी अवधर लवना ॥ प्रथम
 विनेसर प्रलमारी, वंजित फल इतर लवना ॥ आदि करण अं
 ॥ १ ॥ उपासी अवसीतले, गुण अनंत जगवान लवना ॥ द्वि-
 नाशी अकप कल, वरते अतिशय धाम लवना ॥ २ ॥
 भुववासे पण जेवने, अमृतफजनी आहार लवना ॥ ते अमृतफलने
 लई, ए जगु निरधर लवना ॥ आं ॥ ३ ॥ वंश इकोन डे जे
 इनी, चढती रश सुविशेष लवना ॥ नरनादिक अया केवली, अं
 उन्नव फल रस रेल लवना ॥ ४ ॥ ॥ नातिरय किलमनया,
 मरुंदी सर देस लवना ॥ कपनदेव निर वंदिये, इमानविमल
 अवतंस लवना ॥ आं ॥ ५ ॥ इति श्री केशवनिन स्तवन ॥
 पठा जयवीअरय अर्धा कहेवु, एक लमामण देडे इडां श्री
 अजितनाथजी आराधनायु पूरवदंत कहे ॥

॥ अथ श्री अजितनाथ पूरवदंत ॥
 भुति वैजालनी तेरु, वंजिया विजयंत ॥ माद सुदि आ-
 रम जंनिय, श्रीजा श्री अजित ॥ माद भुति नयेस सुनि अया,

पापी दण्डमस ॥ उज्ज्वल उज्ज्वल केवली, धृष्ट अक्षय उग्रमस ॥
 वैद्याल शुक पंचमी द्विने ए, पंचम गति लब्धा जेह ॥ धीर विमल
 कविरायनी, नय प्रणम धरी नेह ॥ २ ॥ इति ॥ पवी नमोऽस्तुते
 अरिहंसवे ॥ कहे एक नवकारकी काजिसग करके धुईनी गाय
 कहे, इसी नरे सर्वत्र विधि करवी ॥ ॥ अथ श्रौत श्रम
 ने ॥ अजित जिनपतीने, देह कंचन बरीने ॥ शक्ति
 मानीने, जेहली मोह लीने ॥ इं पुन पद लीने, जम जल
 दे मीने ॥ नवि होय ने दीने, लहेर ध्यान पीने ॥ १ ॥
 अजित श्रौत ॥ ॥ अथ श्री शंभवनाराय वैभववंत ॥
 सतम शैवक भकी, बलिपा श्री शंभव ॥ काण्ड सुवि अर
 द्विने, श्रुति चवईनी अजितव ॥ १ ॥ गुणशिरमसे जमनी
 लणी पुनम संजम ॥ कालिक वरी पंचमी द्विने, लहे केवल नि
 पम ॥ २ ॥ पंचमी चैत्रनी जजली ए, शिव पादेना जिनराज
 इति विमल मय प्रणमने, सीते मगल काज ॥ ३ ॥ इति वै
 वंश ॥ ॥ अथ श्रौतश्रम ॥ ॥ जिन शंभव वाह,
 वने अथ धात ॥ नवजलनिधि वाह, कामगद तीव्र वाह ॥ इ
 नकपरी वाह, उत्तमाकाश माह ॥ शिवसुखिकरवाह, नेहन
 ध्यात माह ॥ १ ॥ इति श्रौत श्रमस ॥ ॥ अथ श्री अरि
 नंदन वैभववंत ॥ ॥ जयनविमानभकी चवथा, अजितनंदनराय
 ॥ ॥ वैद्याल सुवि चोखे माध, सुवि चोखे ज्ञाना ॥ मादा श्रुति धारने
 अद्विष्ट विरक्त, पाप सुवि चवईनी ॥ केवल श्रुति वैद्यालनी, अराम
 शिवसुख वा ॥ चवथा जिनवरने नमी ए, चवगति भयम निवार
 ॥ इति विमल गणपति कहे, जिनगुणनी नदी पर ॥ २ ॥
 ॥ अथ इति श्रमस ॥ ॥ अजितनंदन वंदे, सान्ध्यामांके
 कहे ॥ अथ सर्वनंदे, पार्थिवशेष कहे ॥ समविमिरविषादे, लंबे

वानरिणः ॥ जस आगल मंथे, सगुण गुण सारिदं ॥ ? ॥ इति
 श्लो ॥ ॥ अथ श्रीसुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥
 सिद्धिं धीजै चण्डा, मंदवीं जयंत ॥ पंचमीगतिं दायकं नमः, ॥
 पंचमं जिनं सुमतिं ॥ शुद्धिं वैशाखिनीं आठमं, जनायां जिनं संच-
 मं ॥ शुद्धिं नवमीं वैशाखिनीं, निरुपमं जसं आठमं ॥ चैत्रं दश-
 मं कहे करो नमः सेव ॥ ? ॥ इति चैत्यवंदन ॥ ॥ अथ
 धूप प्रारब्धते ॥ सुमतिं सुमतिं आये, डःखनीं कोनिं कल्प-
 ॥ सुमतिं सुजन आये, धोविजुं धीज आये ॥ अविचलपदं आये,
 जगत्प्रीत प्रताप ॥ कुमतिं कइदो नारें, जो प्रसिद्धान् जगत्प ॥
 ? ॥ इति श्लो ॥ ॥ अथ श्रीपद्मार्जुन चैत्यवंदन ॥
 नवमं वैद्यकथां चण्डा, मंदारं वरिं जगद्विजुं ॥ कालीं,
 वरिं धारसे जनाम, सुरेन सविं इरुहै ॥ वरिं सेसं संच-
 मं मं मं, पद्मार्जुन केवलीं ॥ वैजयंती केवलीं, वरिं शिवगतिं पामी
 ॥ सुगंधित वरिं दशार्जुन, रत्नकमल संच वान ॥ नयविमल जिन
 रज्जुं, धरिं निरुपम जगत् ॥ ? ॥ ॥ अथ धूप प्रारब्ध
 ॥ ॥ पद्मार्जुन सौंदर्यं, विजयं निरुपम आये ॥ सुगतिं वरुं म-
 नारें, रत्न ननुं कालिं पारें ॥ डःखं निकटं नारें, संचलीं सौंदर्य
 पारें ॥ प्रसिद्धान् जगत्पारें, अष्टमं मंदारिणं पारें ॥ ? ॥ ॥ अथ श्री
 गुणार्जुन चैत्यवंदन ॥ जगत्प्रेमकथां चरीं, जिनराज सुधान ॥
 मंदारं वरिं आठमं, अवतरिणं जस ॥ जेठ शुक्र वारस ॥ जगत्प,
 स तेरहे संचम ॥ फागुण वरिं जेठ केवलीं, शिव जहे नमः स
 म ॥ संचमं जिनवरं नामधारीं, सारें इति संचम ॥ इति निरुपम
 प्रारब्धते ॥ ॥ फले कालिं आये, नामधारीं डःखं नारें ॥ म

दिम मदि प्रकाशे, सातमा श्रीसुप्राते ॥ सुतार जस दास, र
 दातो निवासे ॥ गाय मदि गुणरास, वेदेना परी उल्लास ॥ १
 दति ॥ ॥ अथ श्रीवन्द्यनजिनचैत्यवन्दन ॥ वन्द्यन जिन
 रमा, वन्द्यन राम देव ॥ अवतरीया विजयवन्धी, वदि वन्दनी
 देव ॥ पोप वदि वारस जन्मिया, तस तेरसे साध ॥ कागुण
 दिनी सलस, केवल निराधाय ॥ सादव सातम शिव ललाप, पू
 पूरण ध्यान ॥ अठ मदासिद्धि संपन्न, नय कहै जिनअनिधान ॥
 ॥ अथ शीघ्र प्रारब्धते ॥ ॥ शून्य नरगति पामी, उवा
 धुन पामी ॥ जिन नमो निरगामी, वन्द्यन नाम रवामी ॥ सु
 अतरजामी, वेदेमा नदिय लामी ॥ शिवगति, वन्द्यन, देव
 पुण्य पामी ॥ १ ॥ दति ॥ ॥ अथ सुविषयनपदैरवन्दन ।
 गीत सुविषि जिखे नाम, दीखे पुण्यवन्दन ॥ कागुण वदि
 वसु चम्पा, महेली सुर आनन ॥ पुनोपार वदि वन्दस जेण, तन
 उठे विष्णो ॥ कानो श्रुति शीख केवली, दिव वदे परे शिखो ॥ शु
 दि नवमी सादवा नली ॥ अजर अमर पद शीघ्र ॥ धीर विमल
 सेवक कहे, ए नमना सुख होय ॥ १ ॥ दति ॥ ॥ अथ धी
 य प्रारब्धते ॥ ॥ सुविषि जिन महेत, नाम वलि पुण्य
 वन ॥ सुमति नरलि कन, सनगो वेदे सन ॥ कीयो कर्म
 उरन, लखि लीला वन ॥ नय जलधि तरन, ते नवीने
 महेत ॥ दति ॥ ॥ अथ श्रीशिवनाराय चैत्यवन्दन ॥
 प्राणतकटपकाली चण्डा, शीतल जिन वन्द्या ॥ वदि वैशाखनी र
 दि, शालि दाध जवर प्रशम्भा ॥ सादा वदि वारस जन्म विष्णु,
 तस वारस शीघ्र ॥ वदि पोप चवन्दा दिने, केवली परमदे ॥ व
 दि शीख वैशाखनी ॥ मोको गाय निरगन ॥ कानविमल जिन
 राजनी, शीख सगला कोन ॥ १ ॥ दति ॥ ॥ अथ शीघ्र

प्राप्नुते ॥ सुख शीतल देवा, वायवी पुंश सेवा ॥ जे
 गज मन देवा, तूही देवापुदेवा ॥ पर आणव देवा, राम ते नि
 म्मा ॥ सुख सुगति लदेवा देहु डिःक लवेवा १ ॥ इति ॥ १ ॥
 ॥ अथ श्रीश्रृंगज निनचैप्यवदन ॥
 चण्डा, श्रृंगज निनद ॥ जे श्रृंगारी दिवस ठह, करत वहु अ
 नंद ॥ फागुण वरि वारस, जनम दीक्षा तस तेरस ॥ केवली माहे
 अमावसि, देवान चंदनरस ॥ वरि आवण जीही लया ए, जिवसु
 ख अक्यअनन ॥ सकल समीहित पूरणो, नय कहे ए नगावन ॥ १ ॥
 इति ॥ ॥ अथ शोष प्राप्नुते ॥
 जाल इकानावडा ॥ विजितमदन कडा, शुद्धचारिज देडा ॥ कननय
 विवडा, तीर्थनाथ श्रृंगज ॥ लेपन कर्कव अडा, ते नसुं पुन्य वडा
 १ ॥ ॥ अथ श्रीवासुदेव चैप्यवदन ॥
 जगन्नाथी इहे आविवा, ॥ आणनथी इहे आविवा,
 जेव सुदी नवम ॥ जनया फागुण चौदशी, अमावसी संजम ॥
 माहे श्रुति बीजे केवली, चौदशी आपाही ॥ श्रुति शिव पान्या क
 सु कप, लवि देरे काही ॥ वासुदेव जिन वारमा ए, विद्वंसने
 काय ॥ श्रीनयविमल कहे इंसु, जिन नमतां सुख आप ॥ ३ ॥
 ॥ अथ शोष प्राप्नुते ॥
 वासिदेव दूध लाल, श्रीज
 यथा अवदात, शीत जाणे निवात ॥ दोष निव सुख जात, व्याव
 तां दिवस रात १ ॥ इति ॥ ॥ अथ विमलनाथ चैप्यव
 दन ॥ ॥ अठम कळपयकी चण्डा, माधव सुदि वारस ॥ शु
 द महे जीजे जाणया, तस चोखे वत रस, श्रुति पोप ठह लया,
 र निमल केवल ॥ वरि सातसि आपाठनी, पान्या पद अविचल
 विमल जियेस, वीर्य ए, शीतविमल कही दिव ॥ तेरसमा
 नन निवु दिव, पुण्य परिषल दिव ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ

ध्येयं प्रारब्धते ॥ विमलं सति, वंदनं तुल्यं सति ॥ न
 निधु पर आहु, विद्ययां सान् ध्याते ॥ सुखं धनं कष्टं, योगि
 नस्तु वंद्यते ॥ सन् विमलं जगत्, स्वामिन् ध्याते ॥ ११ ॥
 ॥ अथ श्रीअनंतशाल वैद्यवन्दन ॥
 अणुतपकी चविद्या ददा
 आवण्ण वदि सतिम ॥ वैशाल वदि तेरसी, जनन्या चवदसं अत
 वदि वैशालि चवदसि, केवल पुण्य पाया ॥ वैज श्रीं पवम
 दिने, शिवविना काया ॥ अनंत विनेयर चवदमण, कीया
 समन अंत ॥ ज्ञानविमल कहे नामया, तेज प्रताप अनंत ॥ १२ ॥
 ॥ अथ ध्येय प्रारब्धते ॥ अनंत जिन नमोजि, कर्मजी कोटि वीज ॥
 शिवसुख फल वीज, सिद्धि वीज कर्ज ॥ योगिजीव मोद वीज,
 एतदुं काज कीज ॥ मुक्त मन अति रीज, स्वामिन् कायं सीज ॥
 ॥ १३ ॥
 ॥ अथ धर्मशाल जिनवैद्यवन्दन ॥ वैशाल सुदि
 सतिम, चविद्या श्रीधर्म ॥ विजयपकी सादसावती, शक्ति श्रीज
 जतम ॥ तेरसमादि ऊजती, दिव्य संजमया ॥ योगिपुत्रमं के
 वली, दुष्टना नंगर ॥ तेजी पांचम ऊजलीए, शिवपद पाया
 जेह ॥ नय कहे ए जिन प्रणमती, वसु धर्म सनेह ॥ १४ ॥
 ॥ अथ ध्येय प्रारब्धते ॥ धर्म जिनपतीने, आनंदसमाहि
 नीने ॥ वरप्रमण सवनीने, जेदने वसु वीने ॥ विप्रपन सुख
 कीने, वंदनं वज वीने, नवि दोष न वीने, जेदने नै वसीने ॥
 ॥ १५ ॥
 ॥ अथ श्री आतिशाल वैद्यवन्दन ॥
 वदि सतिम दिने, सखली चविद्या ॥ वदि तेरस जेह जाण, ऊ
 खदीह्म श्रामीया ॥ जेहि चवदस वदि दिने, वीधे संजम येम ॥
 केवल उज्जयिनी, नवनी दिन येम ॥ पवम न की पवम ए
 शालिमा श्री जिनमज ॥ जेह तेरसी शिव वदसं सति
 वान ॥ १६ ॥
 ॥ अथ श्री आतिशाल वैद्यवन्दन ॥
 वदि सतिम दिने, सखली चविद्या ॥ वदि तेरस जेह जाण, ऊ
 खदीह्म श्रामीया ॥ जेहि चवदस वदि दिने, वीधे संजम येम ॥
 केवल उज्जयिनी, नवनी दिन येम ॥ पवम न की पवम ए
 शालिमा श्री जिनमज ॥ जेह तेरसी शिव वदसं सति
 वान ॥ १७ ॥

जयकारी, पंचमो चक्रधारी ॥ विजयन सुखकारी, सप्त नम ईति
 वारी ॥ सदेस चउसहि नारी, चउद रत्नविहारी ॥ विन शोभि
 जीवारी, मोहे दसि गुणारी ॥ १ ॥ शून केसर पोली, मोहे क-
 रुर पोली ॥ पेहरी शीत पटोली, बसिय गुण पोली ॥ नरी गुण
 पटोली, टावीयु डःख होली ॥ सवि विनवर टोली, पूजिय नम
 होली ॥ २ ॥ शून अंग डगार, तेम अणन वार ॥ बलि मूल
 सैव वार, नंदी अवयवाहार ॥ दश पयन अंगार, वेद खट वृत्ति
 सार ॥ प्रवचन विस्तार, नाथ निरुक्ति सार ॥ ३ ॥ जय जय
 जय नंद, जैन दही सुरिदा ॥ करै परमानंद, टालना डःख धंद ॥
 नथी निम नंद ॥ ४ ॥ दति ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥
 मोरीदानी देवी ॥ सकल समोदित सुरतकर, शोभिकरण
 श्री शोभिजयदा ॥ सादेवा विनरज हमारा, मोहन विनरज
 हमारा ॥ १ ॥ निकरण शिख वरण गुन विवगा, पलक मान
 रंहु विव अलगा ॥ २ ॥ विवगा ते अलगा कम जाओ,
 नथी पण गुह्य नवि वटाओ ॥ ३ ॥ प्रभु गुह्य कोइओ नह न
 जाओ, दीनराज कही सवि समजाओ ॥ ४ ॥ दीजा अवर
 हो एम समऊ, पण वीर दीधारी रीऊ ॥ ५ ॥ बालकना
 वरी नवि चालै, ते मागे ते माविअ आवै ॥ ६ ॥ नकि
 हो एक प्रतिज्ञा सारी, सदेव स्तनाव पण मं जाण्यो ॥ ७ ॥
 ४ ॥ कवने आया हो वटीवे, जेह मुह मागे तेहिन दीजे ॥
 १० ॥ अनेदपणे जो मनमां मवयो, कवज्या प्रभु तो नोकिव-
 ॥ ११ ॥ सां ॥ ५ ॥ अकपनाव निधी विम पाओ, आपी दस-
 ॥ १२ ॥ आश ॥ कोनविमव समकित प्रसिदाई, दीधी मोहन एह व

अविश्व सुखजीवा, दीक्षित सुख रंजीता ॥ १७ ॥ इति मन्त्रि
 स्तुति ॥ अथ मुनिस्त्वित जिनवैल्यवदन ॥
 जितया आविया, आवण सुदि पुनम ॥ आवम जेठ अंधारनी,
 धपे सुवत जनम ॥ फण्डि सुदि वारसु वत, वदि वारसु डोन ॥
 फण्डिपनी वेम जेठ नवमी, कण्ठे निवण ॥ वरुं इयाम गुण उ-
 जवत, निहुण कसे अकाश ॥ डोनविमव जिनरजना, सुनरन-
 एक दास ॥ २ ॥ अथ धोप प्रारुपसे ॥
 सखासी हुं नमूं श्रीश नामी, मुठ अंतरजामी कामवता अका-
 सी ॥ डःखदेहग वामी पुण्यधी शोव पामी, शम्पल सवदरामी
 राखता पूर्ण पामी ॥ १ ॥ इति ॥ अथ श्रीनमिनाथवै-
 रववदन ॥ आशी सुदि पुनम दिने, प्राणतया आया ॥ आ-
 वण वदि आवम दिने, नमोजिनवर जाया ॥ वदि नवमी आयाड
 नी, धपा सिद्धे अणगर ॥ मुगिडा सुदि इयारसु, वर केवल
 धार ॥ वदि इयामी वृथाखन ॥ अकस्य अन्तता सुक ॥ नय कदे
 श्रीजिन नामधी, नारी वदेग डःख ॥ १ ॥ अथ धोप प्र-
 र्नुपसे ॥ नमी जिनवर मानी, जेठ नदी विजवाली ॥ सुत वया मानी,
 पुण्यकरी खजानी ॥ कनकमव वानी, कुंम डे डे कपानी ॥ स
 वि योवन ममानो, वेदसु एक तानी ॥ २ ॥ अथ श्रीने-
 मीनाथ वैल्यवदन ॥ अपराजितया आविया, काली वदि
 धारस ॥ आवण सुदि पुवामी जाया, पादव अवतस ॥ आवण
 सुदि जेठ संजमी, आसोअ अपावस नाण ॥ सुदि आपादनी आ-
 मूं, शिवसुख लदे प्रमाण ॥ अरिठनेम अणपण्णिया ए, राजी
 तानी कत ॥ डोनविमव गुण एदेना, लोकोतर वृत्त ॥ २ ॥ इति
 ॥ अथ धोप प्रारुपसे ॥ गण अखणारे, शोव
 नव दाय धारे ॥ कियो शोव प्रवार, निम कप्यो विचार ॥ इति

[illegible][illegible]

62) 0 [1] 1/10 [1] 1/10 [1] 1/10 [1] 1/10 [1] 1/10

THE CHURCH OF THE HOLY TRINITY, NEW YORK

(Faint, illegible text)

የገንዘብ ስጦታ በጥቅም ላይ የዋለችበት ምክር ቤት

[illegible]

פועל על חג המולד "ואם ל"א אב עשירי אל תעשה

הַיְּהוּדִים הָיוּ בְּיָמֵינוּ כְּשֶׁהָיוּ בְּיָמֵי הַמֶּלֶךְ הַגָּדוֹל

[illegible]

וְהָיָה כִּי יֵרָאֶה הַבְּנֵי יִשְׂרָאֵל אֶת-עֲמֹנִית וְאֶת-מוֹאָבִית
וְאֶת-בְּנֵי מִצְרָיִם וְאֶת-כָּל-בְּנֵי-חַטָּאת וְאֶת-כָּל-בְּנֵי-פִגְמוֹת

11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846.

[illegible][illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible][illegible][illegible]

સુદાસન મહામય ॥ આઠ પુસ્તકાવલિ, રાજા વલ્લભજી ॥

१ ॥ १ ॥ धरि चतुर्दश, ब्रह्मराज। जगदेव ॥ अथ धातुविधि

[illegible]

म, विरुद्ध मेल पाया ॥ पौष वरि द्वापरसि, वरु मिनर पय ॥
 कमासिर उपसन्ना, टाढ्या पलीसय ॥ वृत्र कण्य बोधव दिने
 र, कान्तविभव गुण नरे ॥ आबण शुद्ध आरम्भ वरु, अविचल
 अकुरे, पुणवज्जी वपार ॥ कन सुकन संवार, विवने जे विनर
 रे ॥ नवीनवि आगरे, कठनी कोरि वारे ॥ मुक शालाधारे, मात
 वाभा मळारे ॥ १ ॥ अर जनम सुहावे, वीर चारित्र पावे ॥ अ
 नुनय लय लावे, केवलकान पावे ॥ पदे जे कटपाण, संप्रति जे
 यमाणे ॥ सवि विनर जाल, श्रीनिवासहि ठाल ॥ २ ॥ दशवि
 लि आचार, कानना जिवे विवर ॥ दश सप्त प्रकार, पञ्चको
 णवि विवर ॥ मुनि दश गुणधार, जे नया जिवे उदार ॥ ते
 प्रवचन सार, कानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश विप्री विप्रीपाल,
 जे सदा लोणपाल ॥ सुनर मदिमाला, शुद्धदेही कपाल, नयवि
 मल विगाला, कान लकी मणाला ॥ जय संप्रतिमाला, पास मासे
 सुखाला ॥ ४ ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ॥ पारे मा
 ये पुरानी गण सोनानी ठेगाले माकाला ॥ प्रभ पास विनेसर
 सुवन विनेसर संकरे, सादिवज्जी ॥ लीला अवधुनर श्रीराममहिंर
 संधरे ॥ सादिवज्जी ॥ तु आगम आगिर कन अलि सुंर संधरे,
 सा ॥ ॥ पद नमिष प्रेरुंर ननुंरि विरमव जलधरे ॥ सा ॥ ॥
 ते अक्य अकपी वडा सुरुपी व्यानमा, सा ॥ ॥ व्यावे जे जोगी
 पुम गुण जोगी कानमा ॥ सा ॥ ॥ अवधुनर पकापी निशय वसि
 विजयते, सा ॥ ॥ विन आरम दरेसी अमव अवेसी नयमते ॥
 सा ॥ ॥ पद दशैव जाले अलि अलि निरुंर सासने, सा ॥ ॥ एतद-
 वार विगाले सहेव समावे जावने ॥ सा ॥ ॥ ते कानने कान
 आरमपयले आरमा, सा ॥ ॥ परमागम वरुं जे अनेव नरे ॥ न-

(312)

अथानिम्न गुणान् ॥ १ ॥ (सदी ए नमो निगण्) २ (ए
 आकणी) विदुर्मे लक सगकोनि नवणवड, ससय जिग
 डर माण ॥ तेरु नयाणी कोनी, सगस ड विडर परिमाण ॥
 सदी ॥ ३ ॥ मेक वैराज्य वरुमा कवन, एमक कुंन डर जाण् ॥
 निजल डकणी सदेस चारनी, ड्यानी अधिक विव जाण् ॥ कव
 क कुंनल नदीसर प्रमुल, सुंदर अणी डेडयाण् ॥ स० ॥ ५ ॥ अन्
 शत सय सदेस चालिसा, विवराण् परिमाण ॥ सरवाले वनीसस
 गुणसही, निपुकेलोके डेडयाण् ॥ स० ॥ ६ ॥ प्रतिमा अण लल
 सदेस एकाण्, चउ सय तेवीस परिमाण ॥ साठ चौवारा अवर
 विवरा, कवक कुंन नदी ठाण् ॥ स० ॥ ७ ॥ वार वैवलोके नव
 भुवकुं, अउवर पव निमाण ॥ वाल चोराणी सदेस सचाण्, ड
 वीश डेड जाण् ॥ स० ॥ ८ ॥ एकलो वावन कोनि लल चोराण्,
 सदेस चमालीस आण् ॥ सानरी साठ ऊपर उडेलोके, निन प
 निमा मन आण् ॥ स० ॥ ९ ॥ निरुवनमाहे ससय निनवर,
 सगवड लक वसे आनी ॥ आठ कोनि अण प्रतिमा सदेया, सु
 णाडी समिकनवासी ॥ स० ॥ १० ॥ पयरी कोनी वैराज्या
 कोनी, मेस अठवड लका ॥ उडीश सदेस अणी वलि साधिक,
 ससयविवन सदेया ॥ स० ॥ ११ ॥ एकसे वीश विवरे प्रति
 मा, चौमुल शत चौवीश ॥ पाव सना लिदा साठ वयासे, एका
 न अणी जगीश ॥ स० ॥ १२ ॥ केपन वंजान न वंजमान, वा
 दिवण चउ नास ॥ अंतर ज्योतिषी माहे असंखया, निनवर एनि
 मा मासे ॥ स० ॥ १३ ॥ सकल सुगुप्तर नावना जावे, समिक
 तगुण वीपावे ॥ परित संसार करी शिव जावे ॥ कुंमलि ने मय
 जावे ॥ स० ॥ १४ ॥ पाताल ने निपुकेलोके, पणसय पण् पावे

ज्ञान ॥ सं ॥ १५ ॥ तीर्थ विरोध बली आसय विष्णु, सेजुवादि
 क वदुता ॥ ते सविर्वैत विविध नमनां, एतक जय सगता ॥
 सं ॥ १६ ॥ कानविमल धर्म नाम जपना, वदिय कोन कल्या
 ण ॥ मनदे मनोरथ सगता सीऊ, जनम सफल सुविद्या ॥ सं
 ॥ १७ ॥ सपदे मनावनाण जयति, नमो जिजाण सही ए ॥
 नमो अविचल आदिगण, सही ए नमो आदिदेताण ॥ सही ॥
 ॥ १८ ॥ दल श्री सर्व जिन नमस्कारः ॥ देहा एक लोग
 स्मको काउसग चंदेसिन्मवधरा सुधी एक जण करे, ते काउस
 ग पाटी पही चार घोषा कहेवी ते वसिये जिये ॥
 ॥ अथ घोष आरभ्यते ॥
 मांहे जम जेली सीतोपला ॥ विमल श्रीवतला सिणार है,
 सब सुजने विष कहे ॥ १ ॥ जेह अनंत थाया जिन केवली,
 जेह दसे विवर्ता जे बली ॥ जेह असमय सोमय विहु जगे,
 जिन पतिमा प्रणमुं जित ऊगमो ॥ २ ॥ सरस आगम कोर
 मदेवधी, विपदी गंग नरंग करी वधी ॥ नविक देह सदा पावन
 करे, डरित नापर जोमल अपदे ॥ ३ ॥ जिनप्रशान्त ज्ञान
 कारिका, सुर सुरी जिनआणा पारिका ॥ कानविमल प्रभुताप
 वीपता, डरित डरतला नय जीपता ॥ ४ ॥ दल कोपत अयो-
 ध्यत जिनरहित ॥ ॥ अथ विधिः ॥
 देहा एक जण
 मोटा शीति कहे (अने) बीजा सर्व काउसगमां सजिते ॥
 पही सर्व जणा काउसग पारोने प्राट एक लोगस पूरा कहे ॥
 पही वृत्तीन एकवीथी नवकार प्राटपू सर्व जण भणे, पही सर्व
 जण मुखधकी आवा रीति कहे-श्रीशेजुवापनमः १ श्री पुनरीका
 पनमः २ श्रीसिद्धेश्वरपनमः ३ श्रीविमलवज्रपनमः ४ श्री
 सुरासिधेयनमः ५ श्रीमहागिरयेनमः ६ श्रीपुण्यराशयेनमः ७ श्री

॥ ८ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीआर्याभिरुचिस्तवतः ॥

॥ आर्यो आर्यो राज आर्युर्द गिरिषर वदतु ॥ श्रीजगन्मनो
रजि करीत, आत्म निर्मल वदतु ॥ आर्यो ॥ निमज्जमानो
अथ जिनेश्वर, सुख निरुद्ध सुख पदतु ॥ अथ कृतक प्रपन्न
कुलमय, कंठ टोकर वदतु ॥ आर्यो ॥ ? ॥ निमज्ज पाने मूलम
वसदु, श्रीनेमोत्तर ममिय ॥ राजा मनोवत् नयति निरुद्ध, दुःख दू
दग मति गमिय ॥ आर्यो ॥ २ ॥ सिद्धवत् श्रीकृष्ण जिनेश्वर, वैभवं
नेम ममरिय ॥ अथ वसन्तो यागा कर्तव्य, निर्दोशिय निमयतु ॥
आर्यो ॥ ३ ॥ मन्दप मन्दप विविध कोरणी, निरुद्ध विपद वदतु ॥
श्रीजगन्मनो विव निरुद्ध, नरनर सफल करिय ॥ आर्यो ॥ ४ ॥
अविचल्यगद आदीश्वर प्रणमी, अशुभकर्म सब दूरिय ॥ पद्मा शो
नि निरुद्ध जय नयति, मन मोहो नृपारिय ॥ आर्यो ॥ ५ ॥ पद्मे
वदन्तो जगम वायु, नेम घोडे पावरीय ॥ सकल जिनेश्वर पूजा के
शर, पापपन्न सब दूरिय ॥ आर्यो ॥ ६ ॥ एकल ध्यानं प्रवृत्त द्या
नं, मनमोहे नवि नरिय, कोनविमल कहे प्रत्य सुप्रशस्य, सकल
संय सुख करिय ॥ आर्यो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीआर्याभिरुचिस्तवतः ॥

॥ अथपदगिरि यागा कर्तव्य, रावण प्रनिदुष्टी आर्यो ॥ ८ ॥
एक नाम विमान वैशी, मंदोदरी सुदया ॥ १ ॥ श्रीजगन्मनो
वदतु, समिकत निर्मल कीर्ति ॥ नयति निरुद्ध दूरे वात, नरनर
सफल कीर्ति ॥ दीपन दूरति वात, समान संग करीत ॥ आर्यो
कर्ण ॥ वज्रसुख वज्रगति दूरति प्रशस्य, वज्रकीर्ति निम वदतु ॥ २ ॥
वदति विद्वान् सम मोहा, पूर्य विद्वान् दूरे वात ॥ आर्यो ॥ ३ ॥

॥ सञ्ज आदे दीक्षण चरे, एक्ष्म आठ सुपामा ॥ धर्म आदि उ
 चरदिशि जाला, एवं विन चववीशा ॥ श्री० ३ ॥ वैवा सिद्धनणे
 आकारे, विनदर मरने कीध ॥ स्थण्विच मूरत यापनि, जग ज
 शवादे गिमदा ॥ श्री० ४ ॥ कर म्हादेही राणी नाटक, राजण
 सति वडादे ॥ सारव दीणा साल बजरे, एगल उमठमकाने ॥
 श्री० ५ ॥ नाकिनाले एम नाटक कराना, मूदे तन विवाले ॥
 साधा आप मला निजकरनी, बघुक्कवालि नमकावे ॥ श्री० ६ ॥
 दया नावशु म्क न खनी, ना अकउपद साखु ॥ समकिन सुर-
 नक फल एमनि, नाश्चिकर पद लाखु ॥ श्री० ७ ॥ डोल पर म
 विजन वे विन आनि, वरुपर नावनासावे ॥ कोनविमल गुण वे
 देना अदेनिश, सुरमर नायक गावे ॥ श्री० ८ ॥ डोल पद ॥

॥ अथ श्रीसमेतसिखर स्तवन ॥

॥ समेतसिखरिणिरे जेटीय रे, मूढवा मवना एस ॥ आन
 मसुख वरवा मणी रे, ए नीरख गुण निवास रे ॥ जविपा
 सेवा नीरख एव, समेतसिखर गुणगदे रे ॥ नाव० से० १ ॥ (आंक
 णी) समेतसिखर कवण कछो रे, बीजा टेंक अधिकर ॥ बीजा मी
 श्चिकर शिव वरवा रे, वरु सुनिने एविचार रे ॥ न० से० २ ॥ सि
 द्धकन मादे वरवा रे, नाखे नय आवदर ॥ निश्चय निज स्वकप-
 मादे रे, वीध नय प्रज्जिनीना सार रे ॥ न० से० ३ ॥ आगमवचन वि
 चारना रे, अति दुर्गम नय वाद ॥ वरु नरत निणे जालिय रे, ने
 आगम स्थादर रे ॥ न० से० ४ ॥ वयरमरायनणी परे, जाला
 करे मरना ॥ मरउःखने दंड अवाले रे, पाव सिद्धमरना संग रे
 ॥ न० से० ५ ॥ समकिनयन याजा करे रे, नी निव देवु याव
 ॥ न० से० ६ ॥ जेदे सप्त समिकन याव रे, वेद समय देण नाण ॥ कोन

विमल मुक्त सावित्री रे, आवरणकलापनी बाण रे ॥ १० ॥
 ॥ ११ ॥ इति चौमासी देववन्दन विधि ॥

॥ अथ श्रीपुरुषोत्तम स्तुति ॥

॥ सत्सन्दी जिन पूजा स्वीन, छात्र महोदय कीजै जो

॥ दीव दमामा जेरी नफेरी, ऊर्ध्वरि नाद सुणीजै ॥ वीरविज

आगल सावना सावी, मानवन्त फल दीजै जो ॥ परव परमेश

प्रेम पुन्य, आद्या हम जाणीजै जो ॥ १ ॥ मास पास वज्र द-

शम उवाचश, सचारी अह कीजै जो ॥ ऊपर वल्लि दश दीव क

रीन, जिन चौबीश पूजाजै जो ॥ वनाकटरनी उठ करीन, वीर-

वखण सुणीजै जो ॥ पनवान विन जन्म महोदय, धवल माग

वरनीजै जो ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमार पलावी, अहमर्षि

नय कीजै जो ॥ नगकवनी परे केवल बलिहू, जो शुभ सावै

रहेवै जो ॥ नेलापर विन अण कलपणक, गणपरावा वरीजै

जो ॥ पास नेमासर अंतर कीजै, कपन चरित्र सुणीजै ॥ ३ ॥

वगशे सुन न समाचारी, संवसरी १०८कीसुवै जो ॥ वैद्यम-

वादी विधिषु कीजै, सफल जगुन जाणीजै जो ॥ परमाण विन

साधीउडल, कीजै अधिक वनाडि जो ॥ मानवजय कहे सकल

मनोरथ, पूरे देवी सिद्धां जो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजीकी पारिभाषा ॥

॥ सीपाल खार्द मली रे वाव ॥ ए वाव ॥ ॥ तारे

लायी रय फरीया रे वाव, नीवत नेमकुमार ॥ हम विजयी पर-

मणी रे वाव, बीनवै राजवन्तर ॥ दो सोला भम सुण मादरी

अरदावा ॥ १ ॥ सदीवसि राजव कहे दो वाव, मगसि माया

पीउ ॥ नीतम विन दिव मादरी दो वाव, वीरन न धरे जीन ॥

दो २ ॥ पास मदीनी सावित्री दो वाव, आपो मो उल देव ॥

॥ अथ आर्तिजन आरती ॥

अपरा करती आरती जिन आर्य, हरि जिन आगे र जिन
 आर्य, हरि ए तो अविवल सुखदा भगि, हरि गोपीनंदन पद्म ॥
 ॥ अ० ॥ १ ॥ गोपद गोटक गोपनी एष उभयै, हरि दीप च-
 रण ऊर्ध्व ऊर्ध्व ॥ हरि गोपनना धूपरी धूमक, हरि लेनी ऊर्ध्व-
 दा बाल ॥ अ० ॥ २ ॥ ताल मुद्रंग नै बांझाला रुफ वीणा, हरि
 रुता गावनी स्वर ऊर्ध्व ॥ हरि मयूर सुरासुर नयण, हरि जो-
 नी मुखट्टि निहाल ॥ अ० ॥ ३ ॥ धन्य मकरंदी मालिन प्रसू जो-
 धा, हरि तोरी कंचनवरणी कया ॥ हरि से तो पूरव पुन्य पाया,
 हरि तोरी इंदुया दीवार ॥ अ० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन परमेश्वर प्रसू
 ध्याते, हरि प्रसू सेवक हूँ ते धार, हरि गोपनवना डलना
 धार, हरि तुम दीनदयाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ सेवक जाली आपणी
 विन धरजो, हरि मोरी आपदा सवली हरजो ॥ हरि सुनि म-
 एक सुखद करजो, हरि जाली पालन बाल ॥ अ० ॥ ६ ॥ डल ॥
 ॥ अथ नेम राजीमती सिद्धाय ॥ देवी उमादे मटीपाणी ॥
 पदवी तो समष्टि हो सिद्ध वृद्धी दाता सारदा, लालु गुरु
 दे पाय ॥ प्रसूगुण गारदा हो नेमीसर साक्षि जिननला, सुखमत
 आपा मोरी माय ॥ १ ॥ सरापुरद्वंद्व हो नेमीसर साक्षि धे
 चर्या, जान करी पाडाय ॥ दसता तो सिद्धाय हो नेमीसर
 साक्षि धे सता, धोतवारी जिलानी न काय ॥ २ ॥ बाजा तो अ-
 धिका हो नेमीसर साक्षि दाजना, आपा तोरण वार ॥ सक्षि
 चर्या हो राजल जोह हरलसु, मनमहि हरल अपार ॥ ३ ॥
 अथ फटक हो सक्षि मारी जीमणी, फिताड दीसे हो सता-
 र ॥ बाजा तो सरोय हो नेमीसर साक्षि जीवनी, पञ्चजाली
 र पुकार ॥ ४ ॥ ऊना तो रान हो नेमीसर साक्षि राली-

या, ए पणु वंश्या है किय काव ॥ गीते नी दोहा ॥ दो नेमीसर
 साहिब गुमनाम, सराया कहे है महराज ॥ ५ ॥ थोका नी
 सुखन हो इण राजुव गरीर काल, दोहा ॥ दो जीवानो महरा ॥
 जीव वंश्याने हो नेमीसर साहिब जोनिया, जीव सबे लिय वार
 ॥ ६ ॥ अणपरण ॥ राजुव हो नेमीसर साहिब ओन्ने, जप
 बढया गिरनार ॥ आठे नी करमासु हो नेमीसर साहिब जीववा,
 लीखे संजमनार ॥ ७ ॥ राजुव नी ऊरे हो नेमीसर साहिब
 एकल, जल विन मजली जेम ॥ नव नवारी हो नेमीसर साहि-
 ब ओन्ने, नेम विन जीवु केम ॥ ८ ॥ सदिया नी समऊवै हो
 राजुव डोल मन करी, एही कालो है नरनार ॥ पालो नी राजुव
 नाल हो महेली मारी थ सुणी, इण नव ए नरनार ॥ ९ ॥ रा-
 जुव नी वाला हो नेमीसर साहिब बंदवा, सावे नी धरु है परि-
 वार ॥ गिरनार चढवा हो सब आगे पावै नीकडवा, एकली रही
 है राजुव नार ॥ १० ॥ भट्टा नी वरस्या हो नेमीसर साहिब अ-
 लियार, नाल्या है सवि सिजगार ॥ गुफा नी देली हो राजुव
 नाली अलि नली, वीर निचोवै राजुव नार ॥ ११ ॥ गदण नी
 बाड्या हो राजुवनारी अंगना, पुरना ऊणकार ॥ ऊणका नी
 सुलिया हो रदनेही वैरे व्यानम, खोला है पवक लियवार ॥ १२ ॥
 कव नी मोखी हो रदनेही वैरे व्यानम, कहे सुपर करी मोसु
 पार ॥ वीली नी सुणकर हो राजुव अंग टोकिपा, मांनै वीली है
 नेमनार ॥ १३ ॥ नीजन नी वील्या हो रदनेही खीरखाना,
 उठली करी नालि नेम ॥ बंद नी माणस हो रदनेम पावो नली
 नाल, नालनी काल कुवा जेम ॥ १४ ॥ है नी माता हो रदनेम
 पार सातली, है बनी साईनी नार ॥ पाप नी परस्या हो रदनेम
 माहरे ऊपर, नी परस्या थ नरक मऊर ॥ १५ ॥ एठया नी व-

चने हो रतेम राजेव पाए, नया, पाए खमावे बांवार ॥ कपरा
 नो पहरा हो राजेवमार ॥ आपणा, पुढी हो यम दंडार ॥ १६ ॥
 राजेव नो वरख हो नेमीसर सल्लेव बांदिवा, बांदिन वीयो स-
 जमनार ॥ केवल नो पाली हो नेमीसर सल्लेव निरमले, पुढी
 हो मुगल मऊर ॥ १७ ॥ केवल पाली हो नेमीसर सल्लेव आप-
 ने, मिलिवा हो मुगल मऊर ॥ मालिकय हो हो नेमीसर सल्लेव
 गाईयो, खोरा आवागमण निवार ॥ १८ ॥ दल सल्लाय संपुष्ट ॥
 ॥ अथ सिद्धपद वर्णन सिंहाय ॥
 अगौनमस्वामि पुडा करे, विनय करी शीस नमय प्रसूजी ॥
 अलिखल आनक मुं सिएथी, कपा करी मोय वलाय प्रसूजी ॥ शिव-
 पुनमगर सल्लामण ॥ १ ॥ आठ करम अलग करी, साखा
 आनम काज प्रसूजी ॥ ठैरा संसागना डिव थकी, खेवाने
 किरिं, राम प्रसूजी ॥ शिव ॥ २ ॥ वीर कहे उठे लोकमा,
 सिद्धजिजनलो राम हो गौतम ॥ स्वरगपुत्रीन उपरे,
 नेदना वारे नाम हो गौतम ॥ शिव ॥ ३ ॥ वार पस्सल्लेस
 जोजना, वंशी पादेव जाल हो गौतम ॥ आठ जोजन जाली
 विव, वने मालिपुख माण हो गौतम ॥ शिव ॥ ४ ॥ ऊठेव वार
 मालिबला, गोडिय-सख प्रमाण हो गौतम ॥ त थकी ऊठेव
 आ.पणी, उठेव उठ सहाण हो गौतम ॥ शिव ॥ ५ ॥ अरुन-
 रवण राम दंपती, पठरी मठरी जाल हो गौतम, फटकरन
 थकी निरमले, सुआली अरुन वखण हो गौतम ॥ शिव ॥ ६ ॥
 सिद्धिजाल उठेव, गथा, अथर रत्ना सिद्धाज हो गौतम ॥
 अवोकसु जाई अन्ध, साखा आतकाज हो गौतम ॥ शिव ॥
 ॥ ७ ॥ अरुन नदी मरणा नदी, नदी अरा नदी रोग हो गौतम ॥
 पुढी नदी मित्रो नदी, नदी सजोग विजोग हो गौतम ॥ शिव ॥

॥ ८ ॥ यत्न नदी निराला नदी, दरस नदी नदी सोक हो गो-
 तम ॥ करम नदी काया नदी, विषयस नदी योग हो गोनम ॥
 श्रि० ७ ॥ शब्द रूप रस गंध नदी, फरस नदी नदी वेद हो
 गोनम ॥ शब्द नदी चाले नदी, मोनपूर्ण नदी खेद हो गोनम ॥
 श्रि० १० ॥ गम नगर ए को नदी, वसती नदी ऊजाग हो गोनम ॥
 काल निवत वरन नदी, नदी रान विवस निप्रवार हो गोनम ॥ श्रि०
 ११ ॥ राजा नदी परजा नदी, नदी ठाकुर नदी दास हो गोनम
 ॥ मुक्तिम मुक्त वेवो नदी, नदी लघु बन्डि दास हो गोनम ॥
 श्रि० १२ ॥ अनन्ता सुखम ऊलरहा, अरुण रघोत प्रकाश हो
 गोनम ॥ सदुकोटम सुख सारिहा, सगवान अविवल राज हो
 गोनम ॥ श्रि० १३ ॥ अनन्ता सिद्ध मुगत गण, वही अनन्ता जाण
 हो गोनम ॥ अवर जाया रूप नदी, जेतमा जेत समान हो गो
 तम ॥ श्रि० १४ ॥ केवलकाने सहित है, केवलवशीम खास हो
 गोनम, कोयकसमिकन दीपना, कदप न होई करारा हो गोनम ॥
 श्रि० १५ ॥ सिद्धवदप ज उजाले, आणी मन वैराग हो गोनम ॥
 श्रि० १६ ॥ दल सिद्धिपद वखन सिखाण संपूर्ण ॥
 ॥ अथ नेमनपजोरो सिजेको ॥
 समरं सारदं गुणपत राणी, विषम टालो यो अविश
 राणी ॥ कहुं सिजेको नेमनपजोरो, बाणवस सहि वेरने ॥ १ ॥
 गरी सरीपुर पृथ्वीम दीप, सिद्धि सधुई अलकान जीव ॥ राजा समुद्र
 बल शिवादे राणी ॥ सीवै रूप कर अधिको बखाला ॥ २ ॥
 दिनेजी अंगन नेमनपजोरो, मुगतसमसुं धाले वेवायो ॥ आणदं
 पुण वसन आयो, कुली उवांस फग जगयो ॥ ३ ॥ रमबाज
 सारु वलिया गोपाला ॥ एक वंग वाला रे गुलाला ॥ कलनग

राणी राधा सतनामा, बीजादी गोपी प्रियर रामा ॥ ४ ॥ नेम-
 राजाति परजा अति सुख पाया ॥ ५ ॥ उग्रसेनराजा पर वयाई,
 जादवरामरी जानज आई ॥ शिवन वरपु सखरी सरणाई, सुगजन
 डेरी सखरी सखाई ॥ ६ ॥ ताव कंसाल कुदेक करगाल, गीरी
 जी गाई गीत रसाला ॥ रघु वदेव बाई धुरमाला, मधकरना
 मंगल जाकजमाला ॥ ७ ॥ इण विषसु कुंवर परान आया, ला
 नी राजीमती वेस वणायो ॥ मसनक मोती मणि मारि ॥ सीस
 फेरांरी उपात सवाई ॥ ८ ॥ सुविमाल जाले टीकोजा सोई, अ
 सर मोती जलक जालेरा ॥ ९ ॥ शीरमकुलिया वीन वजासे, वदनी
 बोलै सर उवासे ॥ कुलनीलिननी गल मोलारी माला, कुंज ऊपर
 कसिया कुंज रसाला ॥ १० ॥ वने न गदलु जाड न वखाली, रु
 धुकर गीरी जीपु डेवाली ॥ जाकरनेनेवर धुर धमकनी, देसा नी जीपे
 सुंदर दालनी ॥ ११ ॥ दालनी पनी पोलीजी दीधी, सुधामदेदी ग
 काव ५ ॥ पावने कपन सलिया वणाय, राजेव राली नर न
 काई ॥ १२ ॥ सुगनीली सोई जौवनवाला, सरीवा सलिया नि
 ए लवाला ॥ इण विषसु परमण परान आया, मदीसरी रुप
 मदन दरायो ॥ १३ ॥ मदमाला राला करल गदगाटी, कोनजी
 राधा जदव आटी ॥ एण मराला मदा अजिमाजी ॥ कंसरियेवरी
 मिलिया है जानी ॥ १४ ॥ उदर कुंवर दुरिवास कोरा, वीजादी
 जानी रूपात जालेरा ॥ एकी मारे नी मरु धुवाक, जाला कालन
 काल पव नै ॥ १५ ॥ लिहो माहे नेमजी महलववनी ॥ अनो
 सुरपासि उर अनो ॥ रागाणमाहे गोसे जु वदे, लिण नि
 माहे नेमजिवादी ॥ १६ ॥ लिण वेला देला पसुअ उदगा, अण-

परमार्थ नेमजी पाठाजी आया ॥ ध्येय संसार मायाजंजाली,
जामला ने मरण महा निकाला ॥ १७ ॥ इण अतिक्रम नेमजी
चारन दीया, आपसी नाम अविचल कीया ॥ नेमजी राजिव बाल
उदधार, जिएसी शिवको गावै नरनारी ॥ १८ ॥ इति श्रीनेम
नाथजीरि सिलोको संपूर्ण ॥

॥ अथ चोटीलिखा ग्रंथ ॥

॥ विनयसेव विनयसेवालीका चोटीलिखा लिखयने ॥
प्रह कलरै पंच परमादि सदा नम्र, मनसुखे रे नेहने चरण निज
नम्र ॥ घुरै नेहने रे अरिदेव सिद्ध बखानिये, आचारन रे उपा-
खाय मन आनिये ॥ (उल्लास) आनिये निज मन जग सुखे,
उपाखाय नम्र बली ॥ जे पनरवै करमसोममहि, साधु प्रणमि ने
बली ॥ निज कल्याणक नै भुजि एक बलि शीव पाछाय ने
सुखी, नरनरने खा निहने नेहने चरित मानसु जग ॥ १ ॥
(दाल) नरनरने रे समुद्र तीर वीकणविस, कउदेने रे विजय-
देव श्रावक बस, शीलवन रे अथगाणकनो विद्या, बखानिये रे ए-
दवा निहने मन किया ॥ (उल्लास) मन किया एदवा नेण निहने
एक अथरे पाखसु, हुं शीव निहने एव लिखे विषय शीव दाल-
सु ॥ इकअथ सुंदर रूप विजया नाम कन्या ने बली, एण भुज
एकनो शीव दीया सुगुन जोगे मनबली ॥ २ ॥ (दाल) कन-
जोगे रे मर्दोमहि लिखेनेण, भुन निहने रे नैव निवार सुदाम-
ण ॥ तब विजया रे सोखे भोगारमवाकरी, प्रमसरै पोदेनी मन
उलट धरी ॥ (उल्लास) मन धरी उलट अधिक पढ़ता एण
पास सुंदरी, ने देखि करले सेव बोले शीव निहने सनारी ॥ भुज
शीव निहने एणअथरे नेहना दिन तीन ठे, ने नेम पाला भुज
एक हुं सोम सोमविषु पूरे ॥ ३ ॥ (वाच) इ - नमिन रे वि-

वया मन विवर्त्तनी भर्त्तु, प्रिय पुरै रे किम विना तुलने नर्त्त ।
 तव विजया रे कहे शुक्रेपक भवम विद्या, भव चोष रे बावपण
 निश्या क्रिया ॥ (उल्लास) बावपणम क्रिया निश्या शुक्रेपक भव
 पावत्यु, तो वनय पके विव शील पावो निवम दूषण टावत्यु ।
 तुल्य अवत नारी पणने विव शुक्रेपक मुख योग्या, कल्याण
 निव निमय पावो अजिभद्रे दम योग्या ॥ ४ ॥ (टीका) न
 ववना रे नय नरनार कहे दसा, विषयारस रे कालकुटविष
 है निती ॥ हे वन्दी रे शीलवत वीरि पावत्या, एव वान्दीरे मात
 प्रता न जणवत्या ॥ (उल्लास) मातप्रता जव बाणस्य नय
 विषय लेस्या पर दया, दम अजिभद्रे लेदने ते माववारविषय
 अया ॥ एकव सत्तया सयन करनी लक्ष्मणया भव परे, मन वचन
 काया करी स्या शील वच आचरे ॥ ५ ॥ (टीका २) विम
 कवली एक, च्या नयरीए, नतखिण आवी समोसरया ए ॥
 आणी अधिक विवक, आवक जणदस, कहे विनयगुण परि
 वरयो ए ॥ ६ ॥ सहेस चोमाही सयु, मुक पर पारणी, कहे मनो
 दय तो फल्ये ए ॥ कवल कोन आगय, कहे आवक सुणी, एव
 वान तो नवि निव्यु ए ॥ ७ ॥ कहे एतला अणगार, कहे ववि
 सऊती, मातपाणी नहि एतलो ए ॥ तो विव नेह विचार, को
 विव निम निम, फल आद्व दूव नेतलो ए ॥ ८ ॥ अठ विव कय
 द्या, सेठ विवय वली, विजया नारी नय पुरै ए ॥ मावपणी
 मदेवास, नेदने योग्यन, वीधा फल दूव नेतलो ए ॥ ९ ॥ वि
 दस कहे मावव, ते माहि एतला, कुल गुण कुल मत ते पण
 ए ॥ कवली कहे अनंत, गुण नय शीलना, कल्याणिक भव
 ला ए ॥ १० ॥ ॥ टीका ३ ॥ दान कहे जग है वन्दी ए ॥ वी
 कवलीय मुख सोमली, आवक ते निवदस रे ॥ नवनेस ॥

आदिषु, पूरे निज मन आस रे ॥ ११ ॥ वन२ शील सुहोमणो,
 शील आसो नही कोय रे ॥ शील देव सोनिष कहै, शीलष) शिव
 सुख होई रे ॥ १२ ॥ सेव विजय विजयानला, नगनसु नो-
 जन दंड रे ॥ सहस चोराली सधुन, पारणो दीप कोइ नाय रे ॥
 १४ ॥ सहस शूराली सधुन, पारणो दीप कोइ नाय रे ॥
 १५ ॥ कल शूकपक दंपती, नोवननो कल आय रे ॥ १५ ॥
 मासपना जव जालियो, भट हँसै संध रे ॥ सेव विजय विज-
 या लिखो, बारिअ अग्रलिखो रे ॥ १६ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १६ ॥
 केवलिन पास, बारिअ लेइ उदार ॥ मनमनो मूनी, पाले निर-
 लीखार ॥ १७ ॥ आठ करम खपावी, पारणो केवल कोन ॥ ने सु
 गले पड़ता, दंपती सुगुण भुजाए ॥ १८ ॥ नेहना गुण गावै,
 नहि के नर नार ॥ ने बलिन सुख बहै, पड़ैसै नवन पर ॥ १९ ॥
 ॥ कवरा ॥ इस कलपक ने शूकपक शील पालयो निरमल,
 ने दंपतीना जाव ओइ सदा शुभगुण सोनव ॥ निम डरिष दू-
 णा हूँ जहि सुख गावै बहै पर, बलि सहस संगल मनह दंजन
 कुशल निज पर आवत रे ॥ २० ॥ दल शील चोदलिषा सधुन ॥
 ॥ अथ इच्छासिद्धि चोदलिषा लिखत रे ॥
 महिबस बेरो राणी कमलवती, जाली नो उर सारग
 खेद ॥ जहि समालो इच्छाकर नगरस, केवक उदरो मनस पूरे ॥
 सजल रे रासी आल नगरस वदतै किम पणो ॥ १ ॥ कांतो
 परधान सखी दंपतीया, कां देइ लंछा राजा गाव ॥ कां कोइ ना-
 न्यो धन नीलखो, गाना रखा रे रामो राम ॥ सो ॥ २ ॥
 ॥ २ ॥ गानो परधान चोदती, दंपतीया, ना कोइ राजा नंदया

गीत ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 वास ॥ संजय हे राणी दुःख कहे तो कोइ भागो इहां धरौ ॥
 ३ ॥ वहां तो निरुप संजय लिखे, बरजो पण्डित ॥ पतामात ॥
 ते निरुप चरित लेवा ऊपर्या, नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 संजय हे रां ॥ ४ ॥ इम सुख कमलवत ॥ राणी इम कहै, इहां
 तो कमी नहौ काय ॥ संजयन राणी माया धुलाये, राजा म
 मता नहौ राय ॥ सां दसौ राजा ए वाता जुगती नहौ ॥ ५
 ॥ महिबासु राणी कमलवती, आई है राजा इहौ ॥ वचन कहै
 राजा न अकत, जाल पोरस चहिये बोले सूर ॥ सां हो राजा
 बाझा जेनी कछि क्युं आये ॥ ६ ॥ करजोनी कमल कहै, सां
 नल कंत सुजान ॥ बाझा जे कछि पहरि, ते तो पर माहें म
 न आण ॥ संजय हो राजा ७ ॥ ए कछि अण कछि पण्डित,
 राजा मोटा है जग ॥ वसिष्ठ आहारे पोजे नर माहै,
 कै काग ॥ संजय हो रां ८ ॥ वसिष्ठ आहारे पोजे नर माहै,
 नहौ परससवा जग ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 जग ॥ असी इहौ जग ॥ सां राजा ॥ ९ ॥ संक-
 वपुषोनी पावे किम लिखै, संजय हो महराज ॥ दान दि-
 या ये पदिका इहौ, ते पुत्रो जेना नहौ पावे ॥ संजय
 रां १० ॥ निरुप तो मरणा राजा इहौ, जेनी काम विजय
 ॥ राजा तो जग मरणा को नहौ, नहौ विजयी धरौ एक ॥
 संजय हो रां ११ ॥ मरणा जगती धन जेना करी, ये पावे
 मरणा मरि ॥ निरुप असवा राजा पाण, निरुप न मरना
 आय ॥ संजय हो राजा १२ ॥ संजयन इहौ कछि मरणा
 ते मरणा वचन संजय ॥ का नहौ राणी ऊंचे वासिष्ठ, हा
 कोपी मरणा ॥ संजय हो राणी राजा करना वचन

१ गौरी ॥ १३ ॥ गौरी राजाजी ऊँचो राजीयो, न कोइ
 नीयो मनवाव ॥ अगुणयो वसियो मन थै आदरो, वरजण
 भाई हो गौण ॥ साजल हो री १४ ॥ वल्लो राजा राजीने
 झूठो हो पर साँव ॥ साँव हो राजी १५ ॥ वरवालो नो वीस
 नही, इसकी आँई हो मनवाव ॥ हुँनो पर राजीने नीसरी, थै
 निण राजी हो गौण ॥ साँव हो राजा आया देवो नो संजम
 आदर ॥ १६ ॥ राजा जन्मो राजा निजो, निणम सुवटियो पंथो
 फर ॥ इण रीने हँ आरे राजम, रीने पाम आणद ॥ साँव
 हो राजा आया १७ ॥ सवेरुणीया साँव राजी, आरिज
 पमरु रहरा १८ ॥ बिरकन थई साँवण रहरा, थै निण होपवो
 सूर ॥ साँ १० आ १० ॥ देव नो राजी हो राजा मन सूर,
 निण सग वले साँव ॥ निरपवलो ज्यु आनिप देवने, मनमा-
 है वरविन याव ॥ साँ १० री १० हो राजा मन रहरा १९ ॥
 साँमाहि खोईसको, दया याव रीने कीयो काव ॥ उत्तम
 नो मनम रहर पमरो पयो, जायो नो साँवो साँटयो साव ॥
 साँ १० री १० ॥ इण रहरा लोनी सख पका, पुर
 रहरा राजमाहि ॥ पहराजे डिवियो देवो देव नही, राजी री
 देवरी याव ॥ साँव हो राजा १० २१ ॥ साँवो बोटी
 पवरी बाँवम, न पसै पवली पंथो आ ॥ आनिप सय
 राजी बाँवम, बरिज लेखा निव याव ॥ साँव र राजी सय
 मशी सुख पामि २२ ॥ महरा पवणीक अगिरे, न पामावे
 आपण दाय ॥ कामनीम रकन होप रहरा, न वरवोप साँव ॥
 साँव हो २३ ॥ पवो डोयीया राजी राजी, दया याव
 देवक याव ॥ महरा वय पवली २४ ॥

सञ्जव रे ग्र० २४ ॥ निरपयखि ज्युं नोग जाणज्या, ए काम
 वयरी संसार ॥ साय ज्युं मारे यकी फरो हरे, ज्युं पापसुं संक-
 र्यां डण बार ॥ सञ्जव रे ग्र० २५ ॥ शोक तवी संतोषसुं, वर्या
 संप्रमनार ॥ ममता तवी सपता ग्रही, कर्याउय विहर ॥ सञ्जव
 रे ग्र० २६ ॥ मन धन जीवन करमा, चवव वीज समान ॥ निण २
 खूटे आउलो, मूख करे रे गुमान ॥ सञ्जव रे ग्र० २७ ॥
 हेरवी ज्युं वधवा तोळनें, आप वन सुख जाय ॥ कामचंद्र तेहे संयम
 लिवा, सुखो कहें रे महेराय ॥ सञ्जव हो गे० सं० २८ ॥ डम
 सुखनें दुखिकारसजा चेतवा, जोळीन मोटकी राज ॥ कापरनें हो
 ए तजनां वीहिवा, विष सहेत सास्यां काज ॥ सञ्जव हो गणा
 सं० ॥ २९ ॥ मोह न राखये परिग्रह जोळके, पायो जिनय-
 रम सुजाण ॥ नपस्या सगवहि आदरी, उल्हाटे पराक्रम आण ॥
 ॥ सां० ग्र० सं० ॥ ३० ॥ सुव संयम पावै सदा, सुमति गुणति
 दयाल ॥ समराजी परे करे गोवरी, निवि टावै दाय बयाल ॥ सां०
 ग्र० सं० ॥ ३१ ॥ तरण तरण जिहवा वरे, नववजीवन जेवरे
 पादे ॥ केवलकोन उपायनें, सुख पास्या श्रीकार ॥ सां० ग्र० सं०
 ॥ ३२ ॥ मोह निवारी पाणी समजनें, निरमल सावना जाय ॥
 उपायवा जोटा कालसुं, सुगति निरादवा जाय ॥ सां० ग्र० सं० ॥
 ॥ ३३ ॥ राजा सहित राणी कमलावती, मृगपुरहित जसा वार ॥
 मृगपुरहितना दीव दीकार, शिवसुख पाया सर ॥ सां० ग्र० सं०
 ॥ ३४ ॥ दलित दुखिकार राजा मृगपुरहित अधिकार संपुर्ण ॥

॥ ३५ ॥ अय दान शील संपाव चोटीज्या लिखते ॥
 ॥ ३६ ॥ अयम जिनसर पाय नमी, पामी सुगुं अशाद ॥ दान
 शील नय सावना, बोलिस वडुं सदाद ॥ १ ॥ वीरजिनदं समोसिया
 लिखते उद्यान ॥ समवसरण देव देवा, वैठा मृगवर्धमान ॥ २ ॥

धैर्ये धैर्य परमदा, सुखदा निराकर बाण, दान कहे प्रभु है वन्द्य, मुक्तने प्रथम वखाण ॥ ३ ॥ साजवला सड़को पुष्प, कुण है मुक्त
 समान ॥ अरिदेन दीक्षा अवसर, आपे पहिचु दान ॥ ४ ॥ प्रथम पहर दानरानी, वे सई कोड़े नाम ॥ दीधारी बेबल चढ़ी,
 सीधे वंजित काम ॥ ५ ॥ तीक्ष्णकरन पाखी, कुण करस्य मुक्त होत ॥ बूँटि करे सोनातणी, सादीपार कोटि ॥ ६ ॥ हुँ जग
 सगला वस कर, मुक्त मोटी है बान ॥ ऊँच २ दानपकी निरप, ने सुखदा अवदात ॥ ७ ॥ दात ॥ १ ॥ लजनाकी देशी ॥
 वनसरपवाह साधुन, दीधु पुनो दान लवना ॥ तीक्ष्णकर पर स विप, निछे मुक्त अजिमान लवना ॥ १ ॥ दान कहे-जग है
 वन्द्य, मुक्त सखि नरे कोष लवना ॥ अहि सखि सुख संपदा, दान दीवत दीष लवना ॥ २ ॥ सुमुख नाम गणपती,
 पनिलापा अणगर लवना ॥ ऊँच सुबाई सुख लहे, ने तो मुक्त उपागर लवना ॥ ३ ॥ मानखमण पाखी, पनिलापा
 कपराय लवना ॥ आनिनड सुख जोग, दाननो सुपसाय व- लना ॥ ४ ॥ पावसे सविन पाखी, ने तो बोदी अण
 लवना ॥ नरत प्या चकवई नलो, ने पण मुक्त कव जण व- लना ॥ ५ ॥ आपा उददना बाकला, उवम पाव विरोध
 लवना ॥ मुँदरे राजा प्या, दाननया कव देल लवना ॥ ६ ॥ प्रथम जिनोवर पाखी, श्रीधराशक्तिमार लवना ॥ सैवनी-
 रस वदराविप, पाखा नवनी पार लवना ॥ ७ ॥ च- नवाला बाकला, पनिलापा सदावीर लवना ॥ पृथिव्य पण्ड
 मया, सुंदर, ऊँच आनीर लवना ॥ ८ ॥ ८ ॥ पुरे नव पारेवई, शारव ॥ सूर लवना ॥ तीक्ष्णकर चकव
 निपण, गण्डापो पुन्य पहर लवना ॥ ९ ॥ ९ ॥ गजनाव शिशो ॥

राखीया, कल्या. कीया सार लवना ॥ श्लोक न पर अ
 वरया, अंगज भयकभार लवना ॥ श्लोक १० ॥ इस अनेक म
 ऊपरया, कदना नावे पर लवना ॥ समप्रसूत प्रभु वीरजी, मुक्त
 पद्विनी अधिकार लवना ॥ ॥ श्लोक ॥ शीव कहे सुख शं-
 म तु, किष्ण कहे अदकार ॥ आनंद आठे पट्टर, पावकसु निव-
 हार ॥ १ ॥ अंतराय बलि नाहे, योगकरम संसार ॥ जिन
 कर नीचा कहे, गुहन पत्नी धकार ॥ २ ॥ गवै म कर रे व
 है, मुक्त प्रभु सज कोय ॥ वाकर बाले आनंद, नो रंघु रा-
 दाय ॥ ३ ॥ जिनमंदिर सोबाना, नवा निपावे कोय ॥ सोवन को
 वानदिय, शीघ्र सवा नाहे कोय ॥ ४ ॥ शीव संकट सज शं-
 शीव जग शोभा ॥ शीवसुर सोनिय कहे, शीव वनी वेरग ॥
 शीव सधु न आनंद, शीव शीवल आग ॥ शीव अरिकी कस
 मय बाले सव जग ॥ ६ ॥ जनम मरणना मय भकी, म शो
 रण अनेक ॥ नाम कहे दिव वेदना, सोनवनी सुविनेक ॥ ७
 ॥ श्लोक ॥ पामजिनंद जुहरिय ॥ ए देशी ॥ शीव क
 जग है वनी, मुक्त बाल सुखा अ. न. मीठी रे ॥ जालव जाले व
 कने, म. दानना ॥ बाल दीठी रे ॥ श्लोक १ ॥ कलह कारण ज
 जाणीये, बलि बरनी नही पण कडि रे ॥ ते नारद म सीऊया
 मुक्त, जुह प अधिकडे रे ॥ श्लोक २ ॥ बाले पद्विना बोलि, व
 लराजा देण दीया रे ॥ काया दण कलवनी, ते म नपयले
 कीया रे ॥ श्लोक ३ ॥ रावणपर शीव रही, नो रामचंद्र पर आण
 रे ॥ शीवाना कलक उबारिण, म पावक कीय पाण रे ॥ श्लो-
 क ॥ वपाद उपादिया, बली बलिय कडियु नीते रे ॥ सतीय
 सुनराज नाम भय, म तख कीया नीते रे ॥ श्लोक ४ ॥ राजा म-
 रण भाजीया, राणी अनाय देण दाहय रे ॥ श्लोक ५ ॥ शिवसि

मं किम्, मं शीत सुशोभन रत्नम् ॥ शी० ६ ॥ शीत सदाह
 मंजीमर्, अ वतां अरिदल धन्वो ॥ निहं पिण सानिध मं करो,
 वल परम काव आरन्धो ॥ शी० ७ ॥ पदिरग चोर गण्ड
 क्रिय, मं अश्वरसो वासो ॥ पाण्डवगोरो दीपदी, मं राखो मा-
 म शरीरो ॥ शी० ८ ॥ आशो वरनवलिक, वल शीलवनी
 दवदंभी ॥ वनानी सावे सुत, रत्नोमनी सुंदर कुंभी ॥ शी०
 ९ ॥ इत्यादि मं ऊवरा, मर नारीना वंशो ॥ समपुर्वर म
 मं वीरजी, पदिते मुज आनंदो ॥ शी० १० ॥
 मप. वोट्या अटकी करो, धानने नू अवदील, पिण मुज आगल पुं
 क्रिय, सानिल रे मं शील ॥ १ ॥ सरसा जोवन नं नरपा, जगम
 मीठ नाव ॥ वृद्धनणी शोभा नवी, पुजमां क्रिया सवाव ॥ २ ॥
 नारी धकी नरलो रहे, कापर क्रियु वलण, कंन कण्ट वट्ट के
 लवी, निम राखे पाण ॥ ३ ॥ को विरलो पुज आदरे, वंती
 महुं संसार ॥ आप एक नं जाली, वोजा माले वार ॥ ४ ॥ क
 रम निकालित नोनवा, नाजु नवनप नीम ॥ अरिदंन मुजने
 आदरे, वरस वनमासी नीम ॥ ५ ॥ कवक नरोसर ऊपरे, मुज
 लवधे मुनि जग ॥ वैद्य जेदरे शोभनी, आनंद आग न माप ॥
 ६ ॥ मोटा जोषण लखना, लवु कुंठु आकार ॥ देव गप रण पा
 पकनणा, ऊप करे अणगार ॥ ७ ॥ मुज कर फरसे उपशान्, कुं
 पालिकता रोग ॥ लक्ष्य अठवोस ऊपले, उवम नप सजोण ॥ ८ ॥
 जे मं नाखा नं कहे, सुणवो मन उज्जस ॥ वमकार निव पाप
 सो, देशो मुज सवाव ॥ ९ ॥ ॥ शील ३ ॥ नखदली ३
 शी० ॥ इत्यदेर अति पाणीयो, इत्या काणी वार दो सुंदर ॥ १० ॥
 मप सरलो जग को नही, मप करे कपुंन सुंद दो सुंदर ॥ मप

करतुं अति शीघ्रं, नयमा नदी को फेन हो सुंदर ॥ न० २ ॥
सात माणस निम मारतो, करतो पाप अघोर हो सुंदर ॥ अर्जुन
मातो म ऊपर्या, देवा कर्म कठोर हो सुंदर ॥ न० ३ ॥ गीत
एत म कियो, श्रीवज्रवसुदेव हो सुंदर ॥ बहुर मरुत मरुत अनेवरी,
सुख गोपाव नयमव हो सुंदर ॥ न० ४ ॥ रूप कुरु काल, प
रा, दुरिकेगी बंगल हो सुंदर ॥ सुनर कोनी सेवा करे, ते म
कीवी बाल हो सुंदर ॥ न० ५ ॥ विष्णुकुमार वषट् कियुं, ला
ख योजनना रूप हो सुंदर ॥ श्रीसुव करे कारण, ए मुक्त शक्ति
अनूप हो सुंदर ॥ न० ६ ॥ अष्टाष्ट गौतम घट्या, बोधा जिन
बावीस हो सुंदर ॥ तापस एव प्रतिवृज्या, निरा मुक्त अधिक
जगीस हो सुंदर ॥ न० ७ ॥ चौद सहस अणगारमा, श्रीधनो अ
णगर हो सुंदर ॥ वीर जिहव वलाणीयो, ए एव मुक्त अधिकार
हो सुंदर ॥ न० ८ ॥ कण्ठ नरेनर आगळे, उकरकारक एव हो सु
ंदर ॥ देवता नेम प्रसमीयो, मुक्त मरिमा सविनेव हो सुंदर ॥ न०
९ ॥ नरिपुण विदरग्याग्या, गणिकाकीती दास हो सुंदर ॥ वीर करी साव
नतणी, म नसि पुटी आस हो सुंदर ॥ न० १० ॥ दस वलनदप्रसव
वहू, नरग्या नयमी जीव हो सुंदर ॥ समयसुंदर प्रम वीरजी,
परिवर्तो मुक्त प्रसव हो सुंदर ॥ न० ११ ॥ देव ॥ नाव कहे
नय ते कियुं, वेनयुं करे कपाय ॥ पुर्वकोनी जो नय नय, कलमा
सुख पाय ॥ १ ॥ खंयक आचरन प्रम, ते वाट्या सवि देय ॥
अर्जुन निपाणी ते करे, कामा नदी लवलेगी ॥ २ ॥ दीपायन
कपि देव्या, सज प्रसिध सनाद ॥ ते नव कोष करी निदा, कियो
बारिका दार ॥ ३ ॥ दान शील नय सांजलो, म करो ऊंच गुमान ॥
लोक सर्वको साज है, यम नाव प्रथम ॥ ४ ॥ आप नयसक जो
निपदे, ये व्याकरणी साज ॥ काम सहे नदि कोटि, नाव नये म

पाव ॥५॥ रस विन कनक न नीपवै, जल विन गहधार पुँव ॥ रस-
 वनि रस नदी लवण लवण, निम मुञ्ज विण नदी सिद्ध ॥६॥ मंजु ध्वज
 मणि आधर, देवधर्मिक सेव ॥ नाव विना ते सवि रथा, नाव फलै
 निमेष ॥७॥ दान शिव नपत्रे पुँम, विधकल्या पुँज ॥ निदा जो
 नाव न हुँनरी, कोई सिद्धी नव हुँन ॥ ८ ॥ नाव कहे मं एकले,
 सारवा बहु नर नार ॥ सावधान अटल सज्जन, नाम कर्ह निरधर ॥९॥
 (दास चौपी ॥ कपूर हुँवै आनि जवाँ ॥ एवेरी) ॥ काननस का
 जसग रखी ॥ प्रसवद कलिय ॥ ते मं कीपी केवली ॥ तन-
 विण करम लपाय ॥ १ ॥ सीताजी सुंदर, नाव बने मंसार ॥
 एते बीजो मुकु परिवार, सौं ॥ दानाविक विण एकले ॥
 पाहवाई नवपार ॥ सौं २ ॥ वंश ऊपर चढ खिलते ॥ एला-
 पुन अपार ॥ केवलकानी मं कियो ॥ यतिबीयो परिवार ॥ सौं
 ३ ॥ सौल देवा लस अपिपणी ॥ करतो कर आहार ॥ केवल
 सहसा सुर कहे ॥ कोगई अणार ॥ सौं ४ ॥ लालपी लोचन
 वायु धरो ॥ आधो मन बैराग ॥ कलिय धरो मुनि केवली ॥
 ते मुकुन सीताग ॥ सौं ५ ॥ आधुकासित गवनो धरो ॥
 खीलावंधा वलि जाण, कीपी अनागन केवली ॥ गंगाजल गुण
 लाण ॥ सौं ६ ॥ पनसै लपसजणी ॥ बीपी नानस विरक ॥
 तनविण कीपी केवली ॥ जो मुकु दानी सीख ॥ सौं ७ ॥
 पावक पापीये पीलीया ॥ खवकसुरीना शिव ॥ जनममरणी
 जोन्या ॥ आवे मुकु आशीय ॥ सौं ८ ॥ चंकरुने चालनरी
 बीपी दूक प्रहर ॥ नवदीक्षित धरो केवली ॥ ते मुकु पिप नैणी
 वार ॥ सौं ९ ॥ धनसकलक सधुन ॥ पलिवानो जवास ॥
 मुगलो मायना नावरी ॥ पादनी स्वर्ग आवास ॥ सौं १० ॥
 निव अपराध लमावली ॥ मुँकपो मनयो मान ॥ मुँगावनीन

मं हिंयुं रे, निमल केवलज्ञान ॥ सो ११ ॥ मर्दनी गज ऊपर
 रे, देवी पुजनी करु ॥ मुक्त मनमहि पर्युहि, ततविष्णु पद्मी
 सिद्ध ॥ सो १२ ॥ वीर वंदन वाङ्मय मारु रे, वाङ्मय वपुष
 वृत्ति ॥ दंडित नाम देवता रे, वेद भयो मुक्त संग ॥ सो १३ ॥
 मयि पाप पूजन नीसरी रे, दुष्टता नाम नर ॥ कालयुधि विजय
 करी रे, पादनी स्वर्ग मकर ॥ सो १४ ॥ कायानी शोभा
 कारणी रे, रूप किमु अभिमान ॥ नरत आरि सन्निवर्तन रे ॥
 पाप्मो केवलज्ञान ॥ सो १५ ॥ आषाढर्जित कलानिधि रे, म
 गज्या नरतलक्ष ॥ नाटक करता पाप्मो रे, केवल ज्ञान अनप
 ॥ सो १६ ॥ वीरकिंदन आउसग रजो रे, गजसुकमाल म-
 साध ॥ सोमल शोभ प्रजालीयो रे, सिद्धि गयो शुभ जाण ॥ सो
 १७ ॥ गुणसगर भयो केवली रे, सोमल पुष्पीवर्ध ॥ पति
 केवल पाप्मो रे, सेव करै सुर देव ॥ सो १८ ॥ दम अनेक
 मं ऊपर्य रे, मंका शिवपुरवास ॥ समयसिद्ध मयि वीरजी रे
 मुक्त प्रथम प्रकाश ॥ सो १९ ॥ ॥ देव ॥ ॥ वीर
 कहे वृत्त सोमल, वान शील नप नर ॥ निधु है अति पाप्मो,
 धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ परनिष्ठ करता भुक्ता, पाप हिंन नरा
 य ॥ वट रान बाधु पणी, दुर्लभ पणी जाय ॥ २ ॥ निर्वक स-
 रिता पापीयो, रौद्र कोदय न दिव ॥ बलि चरान समी कलौ,
 निर्वक वदन अदिष्ट ॥ ३ ॥ आदि प्रशंसा आपणी, करता देव
 नरिष्ट ॥ लघुता पाप लोकमं, नाहि निजगुण बंध ॥ ४ ॥ को
 कंदनी म करो गुह्ये, निधान अदंकर ॥ आप आपणो वाम रजो,
 सहको नलो संभार ॥ ५ ॥ तोषण अघको नाव है, एकाकी
 समस्त ॥ दान शील नप छिद्र, नला, पण नाव विना अकपठ
 ॥ ६ ॥ भजन अलि अजिता, अधिका आणो रेल ॥ रजमहि

सज काठना, अथको नाव विजोय ॥ ३ ॥ नगवत देव नंजण
 नणी, चरे समान गणत ॥ चार करी मुख आपणा, चव विप
 धर्म नणत ॥ ८ ॥ ॥ दाव ५ मी ॥ ॥ वीर जिलेसर
 डम नणे रे, वीरी परखदा वार, धर्म करी विस माणिप रे, जिम
 पाया नव पार रे ॥ धर्म दीये परे ॥ १ ॥ धर्मना चार प्रकार रे,
 नविपण संजना ॥ धर्म मुक्ति सुखकार रे ॥ धर्म ॥ धर्मपकी
 वन संपदे रे, धर्मपकी सुख दीप, धर्मपकी आरति दले रे, धर्म
 समी नदि कोय रे ॥ ५० ॥ २ ॥ जालि पन्ना आणिया रे, राले
 अजिनपम ॥ कुंठव सहको करमा रे, नलि नलो नलि नम रे ॥
 ॥ ५० ॥ ३ ॥ जीव जिने सुविधा देआ रे, बलि दीसे डे जेदे ॥
 ते जिनवरना धर्मणी रे, धन कोई करी सदेह रे ॥ धर्म ॥ ४ ॥
 सोलेसे जसल सम रे, सांगातेर मज्जार, धराधर्म सुपसवले रे,
 एहे नपणी अथकार रे ॥ ५० ॥ ५ ॥ सोदेससामी परंपरा रे,
 सारतरे गड कुलचंद ॥ युगध्यान जग परमा रे, श्रीजिनचंद मं-
 नीद रे ॥ ५० ॥ ६ ॥ नास जिय अति दीपना रे, जिनपवन ज-
 संवत ॥ आचारज चढी कवा रे, जिनसिंदे सुरि मदेन रे ॥ ५० ॥
 ॥ ७ ॥ प्रथम जिय श्रीगुरुपना रे, सकलचंद नस जीस ॥ स-
 मयसिंदर वचक नणे रे, संघ समी सुजोस रे ॥ ५० ॥ ८ ॥
 दान श्रीपव नप नावना रे, सरस रेवो संवाद ॥ नणना गुणना
 नावसि रे, कोदे समुद्वि सुमसाद रे ॥ ५० ॥ ९ ॥ ॥ इति दान शील
 नप नाव जोडालिया संपूर्ण ॥ ॥ अथ महावीरस्वामीको छंद लिख्यते ॥
 सरो वीरसुं विजया निम धरत, अरि कोधन ममयी रे-
 वारो ॥ संतोषवती परी विजमाही, गण देपया रे पाव उवादी ॥
 ॥ १ ॥ ॥ एता मोदना पासमा जेदे पाणी, मुदतलना वास लेवे- स

(R R E)

हे टाव ॥ संजाला श्रीनवकार स्वयंमुख इन्द्रियन अवतार ॥
 सो ७ ॥ मनशुद्धि जपता मय्यासिद्धि रामी प्रिय संजो, इण
 याने कूट टळ्यु जेवने रगतपवना रोग ॥ निश्चय जपता नव-
 निध बाध धर्माना आधार ॥ सो १० ॥ घटमाहे कल्याणजाम
 पाट्या परणी करवा पात, परमादि प्रजावे दरफेजना, वसुधा-
 माहि विफला ॥ कमलावलिपु पाल कीर्ण पापनाणी परिहार ॥
 सो ११ ॥ गणगणाल जाली राखी निहणी पानी बाण प्रहार,
 पद पद सुजाला पण्णिवनपर ते अड कंठा नार ॥ ए मय अमोलल
 महिमा मरिच नवडल नवखहार ॥ सो १२ ॥ कंबल ते संवत
 कादव काट्या सकट पावस माल, दीध नवकार गया देवलेके
 विजसे अमरविमान ॥ ए मयपकी संपति वसुधामा वदी विजसे
 जैनविहार, सो १३ ॥ आण चौबीसी हुड अनंती दोसे वार
 अनन, नवकारनली काडि आव न जाणै, डम जाले जगवत ॥
 पुर्वविंसि चारि आदि प्रपंच समरया संपति सार ॥ सो १४ ॥
 प्रमदी सुरपद ते निण पास ते कत कस कठोर, पुनर्गिरि ऊपर
 प्रसक्त पण्ण मणिपर ते डक सार ॥ सहयुक्त समुल विधिपु
 समरता सकल जनम संसार ॥ सो १५ ॥ सर्व आराधण नस्कार
 कीर्ण जेवखरी परसिद्ध, निहा सेवे नवकार सुखाल्या पाण्या अ-
 सतनी कळि ॥ सेवन पर आदी प्रिय निवास्या सुर करी मज्जहार
 ॥ सो १६ ॥ पद परमदी कोनज पदवे पद दान चारिज, पद
 सिद्धाय महावत पदवे पदसमति समकित, पदप्रसाद विपय नजो
 पदवे पाली पदाचार ॥ सो १७ ॥ (कलश ॥ अण ॥ निम
 जपि नवकार सार संपति सुखदायक ॥ सिद्ध मय ए आश्रितो
 एम जप जगनायक ॥ श्रीअरिदेव सुनिद्ध सुख आचार्य जाली,
 श्रीवज्राय सुसाधु पद परमादि गुणीजे ॥ नवकार सार संसार ॥

दे कुशल जान बाबक कहै, एक बिबै आगधारा कहि सिद्धि बोलि
बहै ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ एषा गीता लिख्यते ॥

सुख संपत्ति दायक भिरनरायक, परलोक प्राप्तिकर ॥
जाकी जल कालि अनोपम दीपत, दीपत जाण दिवरा ॥ सुखः
व्याप्ति जगतिम जगमग, पूरण पुनरावरा ॥ सब रूप संकष
बखणादि संपत्त, देही निरुवन नरा ॥ १ ॥ ककणासिग
लोक सब मिल, जाका जलम बुला ॥ २ ॥ विजयन करे
इकविषयु नो सेवक परादि ॥ नो जवना आपनिकादया गी,
क्रिया बननाम सुदि ॥ नो चरणा आप रया वपटप, कला
अति कलि कर ॥ ३ ॥ इक दिश महा रन वन पुषागिन,
नाप सनाप नपरा ॥ फल फल आदारी उदाधारी, अक्षय अक्षर
लिख ॥ सब दीप सन्ध्या ॥ ४ ॥ अविनासी एव धरा, अविनासी एव धरा
दे ॥ दिनि व्याप्त दिदी बल अंगीठी, सुख नरा नरा ॥ ५ ॥
सहिमा बहारी सब नरा नरी, जाके आप नपरा ॥ ६ ॥ एसी सुख
वरा परिष उकता, पुवा पास निरा ॥ ७ ॥ वापरा अकि कुल नो
परा, मरा हंस पुरा ॥ ८ ॥ निरा बला पुवा निरा अयुवा, नो
गिरन जादा ॥ ९ ॥ अननी मन आसा पूरण, पासा, अपासि
सदा ॥ गल एषासाला जाण देसाला, देसाला विरा ॥
वर वीर पुटाला मर मनबाला, कीबाला ऊबका ॥ १० ॥
पुवारी परकर सदा सरकर, दालासिद्ध कर ॥ धनकर पुना मरा
अकुस, मावन गीस विरा ॥ गीतत आवे खने रंदा, मरु
कानी आकर ॥ ११ ॥ दे ॥ अविमाना मर अकोन, पावक
जीव जवरा ॥ निरा फान डफान दिखल लकन, वन फापर
नारा ॥ नयकर सुलाया सुपर गीरा, नारा मर मरा ॥

निरा किया निराणा तप खजाणा, कोनी सड़े वेदिदा है ॥ ७ ॥
 दुपके कोषान्तर आन्तर सी कमठासुर धूर उपदा है ॥ अपसेन
 सुतन महाराज विपय डोल, जाणत आप तजदा है ॥ पंचमुही
 लोच किया आलोच, मनसु सोच अकदा है ॥ प्रभु अपनिचय नि-
 हार किया तब, रनवन रास वसदा है ॥ ८ ॥ उपशम अण्णारि
 काउसमा मऊरि, कमठासुर दाय लहदा है ॥ वना असुराणा वली
 हेराणा, प्रजाण विनोक धुलदा है ॥ करि आनस कोष विचार
 विरोध, मदा अस्मिमान धरदा है ॥ बाजल मनवाली नीली फाली,
 वायु मही बाजिदा है ॥ ९ ॥ रीव किरणा कोट रही रन ओट,
 विवाकर नेज विधदा है ॥ कर धोर पटा चिकटा उमटी, अरु बालू
 गाजदा है ॥ गरनटा वादा सुलिया आटा, ऐरापति लाजदा है ॥
 हुआ अकाला धूर वरसला, बीजलिया पीवदा है ॥ १० ॥ मोटी
 धारासि आराबासु, धीं अंध वरसदा है ॥ बजै जल : खला नदिया
 नाला, हेमाला होलादा है ॥ दरियाव जलडा को फेडा, पाणी नहि
 सावदा है ॥ विपणल वडहो धरिय अरुणो, खोलीपति विनिग
 दे ॥ ११ ॥ वने पाहना कोनी ऊना, मऊना होदा है ॥ सम
 दाहदा रेल वददा, जालक जग रंदा है ॥ बहे वातर वूहा जाल
 किल, ऊँठा मन असुरिदा है ॥ नेवीगम राधा वनसपाया, काउ
 सगा कदा करदा है ॥ १२ ॥ उवसगाहदी केल करदा, पाठा
 नाहि मुनदा है ॥ धरि मयम, खाना कोष न माना, निखल ध्यान
 धरदा है ॥ प्रभु नासा नाइ नदी आइ, तोही नाहि लुनदा है ॥
 वरज जेसा धीर पणसा, पावस पीर सदा है ॥ १३ ॥ निरा
 अवसर वरदा धरणी धरदा, आसण बेग चलादा है ॥ निरा अवधि
 पयुजी दीउ मयुजी, तन मन अति उलसदा है ॥ निदा पदमा-
 वली देव सकली, सु निव बेग वददा है ॥ दुपके देराना देव नि

भाग, पावां आय लांदा है ॥ १४ ॥ फलदाग देवां कर जिस
 नाम, जगत् ज्यं जवांदा है ॥ जे आपण खेय भेय निबेय, पूरेय
 जिन सुखंदा है ॥ इंद्राणीनार) सब सिद्धाणी, जोगन अंग जिन
 कंदा है ॥ १५ ॥ साकाशा बयणी) मिगानयणी, सुंदर रूप सो
 देता है ॥ अणिगाल कऊत ऊतके बऊत, खेय बणाय बयंदा
 है ॥ नकबतरनर्यां बाल सुकल्या, निब सोनी ऊतकंदा है ॥ इंदरा
 पांडुर जाली) अंगर, आर्जुण ऊतकंदा है ॥ १६ ॥ जे कंयु क
 सिपा नन उदसिपा, कामधटा गदरंदा है ॥ पहिरण नन खंदा
 हरिपा देवा, सोबेदी सोदंदा है ॥ कटिमेखल कल्पा सोने जाल
 या, दीरा बीच देवकंदा है ॥ १७ ॥ यमके पुंयिपा पाए परिपा,
 यम नेवर रणकंदा है ॥ जे ऊतक नाला नाल कमला, परकावज
 बाजंदा है ॥ ऊदेके कानाला बीच रसाला, जंगी दीव पुंदा है ॥
 बाजे सरण्ड सखी) धाई, नगास रोदंदा है ॥ १८ ॥ पवमा वे
 कष्ट आण जवडा, नाटक मिल जांदा है ॥ नवाधेद नान न
 कंदा, रस नेर रमंदा है ॥ दिन नोन बिनीना गोहि न बीना, पा
 वल जल पसरंदा है ॥ १९ ॥ परणीपर आणया यान पिआण,
 कमठसिर कोपंदा है ॥ नालादी पवा) आदिया रवा), किली, रीस
 आवंदा है ॥ रे मुठा पिठा निब विण्डा, कयुं नोदि) समऊंदा है ॥
 सादिव बलवंता जेर अवंता, नें सो नहि जाणंदा है ॥ २० ॥ ए
 कामासागर गुण के आगर, नीनं लोक नमंदा है ॥ असमान लयाई
 दीस नराई, दिआइ बजंदा है ॥ किली बहू गजो पनै, बरुजा,
 धनहन देव पुंदा है ॥ धरुण्ड नराया नन जे आपा, पावां आय
 लांदा है ॥ २१ ॥ कर जालि खमाया सीस नमाया, जगनपक
 निनवंदा है ॥ नें सादिव सवा नो गुण रवा, भरा दिव खवंदा
 है ॥ नें सीस न परिपां निणदा) विरिया, नेंहे) अचर निरंदा है ॥

कर्मवसि किती वहु, विमती, निज अपराध खमदा है ॥ ११ ॥
 सुरपती सिपाव निजपर आप, अरुके गुण समदा है ॥ सुध स
 जम पावे दोष निहावे, तब केवल उपदा है ॥ समवेदावर पर
 मठके ऊपर, सिद्धपुरी पावेदा है ॥ नेरी कोरती जग ऊजली, पर
 न को पावेदा है ॥ १३ ॥ तू सखा रके नेर परसे, गुमानो मो
 कदा है ॥ तू अतरजामो तू वहुनमी, सुरतर सेव कदा है ॥ तू
 दीवाणा तू खमाणा, तू मोती मकरदा है ॥ तू अखि पोर फकीर
 सुवाफ, तू जोगी तू खिदा है ॥ २४ ॥ तू कोजी सुखी मरु अ
 टखी, तूही शेष फरीदा है ॥ तूही ऊपाया पदे बापा, मायासु सु
 लकदा है ॥ तू उदा वाला मरु मरवाला, तू पका बाजदा है ॥ तू
 कखा कवला सवत सवला, सखा मऊ रूदा है ॥ २५ ॥ बाबानी
 साई नेर न पाई, नीर पख्या आवदा है ॥ तू नारीपण बोगपण
 गुण, मायव तूही मुकदा है ॥ तू कवलापारी तू अवनारी, तू देवा
 देवदा है ॥ तू एका अणु एक अणु, खलि निज सुध बादा है
 ॥ २६ ॥ तू देवल मखा लोकनि संखा, सीरेलिया पादा है
 दो ॥ गुण नील पयासे कीरत मोसे, कोले सुर गावेदा है
 ॥ कालमाक अगसु मरवाणा, पुवना बुलदा है ॥ कुकर्म कर्मवी
 केसर पुरी, बदनसु बरदा है ॥ २७ ॥ मरुआ मरुकुदा कुआ
 रुदा, टोकर कंठ उवादा है ॥ चपा गुवावां नारीपा जगा, परमव
 निदा बासदा है ॥ कमावेडिं बंगी रीधे आंगी, कुआं बीव फाड़
 दा है ॥ आनूपण परियां तम ऊजिया, कुलम कान ऊजादा है ॥
 २८ ॥ सुत सोहदा मरुत रुदा, दीजा नौण उदा है ॥ नोरी शरि
 जाइ मोजा पाव, बीनती नैह सुखदा है ॥ २९ ॥ मया कस्य म
 जो हुकम अरुखी, समकन मनउवदा है ॥ निहादा बाग निदा
 रदामा, गुन सेवक निवसदा है ॥ मया नोसिणी पाम नगाली

युष्मिन् विनश्यत् कहेदा हे ॥ ३० ॥ इति श्रीभगवद्गीतायां संपूर्णं ॥
 ॥ अथ द्वादशोऽध्यायः स्तवनाश्रयः ॥

॥ विप्रश्नो कश्चिन्मया विप्रो, शून्यं धर्मं पुण्यदत्तं सकलं
 ॥ जितं कुशलं मेरे, युक्तं अविजयं, मनवन्ति आर्षे द्वादशं
 सत्यं ॥ १ ॥ भगवन् वीर्यं मेरे विपुलं, नवनवमं महोदयं योजितं ॥ सु-
 सत्यं युक्तं वदन्ती कला, सुकलायां पुत्रवती मदिता ॥ २ ॥ सवर्द्धा
 दिनं यावत् सवला, सदा वासकपूरनला कुसला ॥ इव गन्धं यथा
 वायुः कश्चिन्मया विप्रो, कश्चिन्मया विप्रो ॥ ३ ॥ वीर्यं मेरे नि-
 साणं युते, नरं वेदं वारं यत्नं युते ॥ अथ २ करजोन्नी उच्यते, सा
 निद्रा युक्तं सव काव मेरे ॥ ४ ॥ सारसा योजनं यानं सदा, कुल-
 रोगं कुशलं न दोष कदा ॥ अविचलं कलहं आगं युते, युक्तं कौस-
 ह्यं प्रशस्तं सदा ॥ ५ ॥ धर्मधर्मं माह्वं नरा वृद्धं, वशीते नाटक-
 वृद्धं मेरे ॥ प्रजायां पुण्यं प्रतापं दम्, सवला अरिपणं न आप नम-
 ॥ ६ ॥ ननसिखं मनसिखं वीरनला, एहिरे वेलावलं दोषनं ॥ ७ ॥
 वि कुशलं युक्तं एकं मनं, जैनकं मेरे वीरं नरे युते ॥ ८ ॥ नन-
 सदा यथा खंचयो आवे, करि स्थानवता मेरे वरसाव ॥ निशिपा-
 नोयं विरतं पावे, जलद्वारा विजयं सुवशा गावे ॥ ९ ॥ लक्ष्मि-
 जलं कश्चिन्मया कहे, प्रवहणं नवनवमं सदा नरे ॥ वृद्धं नरा वाहणं न-
 समरे, न आपदं निश्चयं उच्यते ॥ १० ॥ खलवन्तं खलनं प्रहारं वहे,
 सो धामनि जितं समवेतं सहे ॥ कुशलं २ युक्तं नाम कहे, न ख-
 मकुशलं रिणं सदा वहे ॥ १० ॥ युनं सकलं परवा युते, योजनं
 युते सकलं चरे ॥ भगवन् अविक्ते नरे, देवा नरा यथावत् ॥ ११ ॥
 वीरमयं वानं सुधरे, खनयनयनं विक्रमयते ॥ निजवन्दं मेरे पा-
 दे पवरे, जयं करिनि महोदयं पवरे ॥ १२ ॥ युतं पवित्रं द-
 क्षेण भावे, उच्यते युक्तं वीर्यं शोभाय ॥ वदन्ति जयं मेरे ॥ सग-

॥ १५ ॥ इति पदं ॥

॥ ५५ ॥

॥ एतत् प्रमाणं दृष्ट्वा पुनः प्रत्यक्षं ॥ . . .

॥ वरं तारं विनाशं सुखाय भवतु, शुभं नामं मनसि आशु
फलं ॥ शीघ्रं उत्तमं देवं दत्तं, सर्वसा वरं संपत्तिं आशु फलं ॥ १

॥ जप २ विनश्यत् सौमित्रं यती, श्रुतधर ऊपायक शोचयती ॥ ज-
सु नास न रई पाप रती, वेदनी महिमा जगमाहि जती ॥ २ ॥

॥ इति मंगल लीला, विलासा सदा, उल्लसित उकाल न होय कदा ॥
आराध्या आवै मुक्ति मुनि, संप्रदान दाला होय जदा ॥ ३ ॥

विष्णु जीर्णी, वीरसठ जोगविष्णु, वरा वासन, खेतवरीर, किय ॥
 वसु, नाम न पके वीरविष्णु, वीर वन न कर, मके वलवविष्णु

॥ ४ ॥ जित्वा जित्वा सदा जित्वा जित्वा, एव एव नदी नदी जित्वा
 जित्वा जित्वा जित्वा जित्वा, एव एव नदी नदी जित्वा

॥ ५ ॥ सुत सुत किं सतीत वत्, एवं तस्मा
सुत वत् ॥ ५ ॥ सुत सुत किं सतीत वत्, एवं तस्मा

॥ ६ ॥ वरनगरं द्वाद्याहं वरं धरं, भूत गाव लक्षं त्रिधा
वृत्त धरं ॥ गुरु भूतवत्तं जीवत जगती, विप्रवत्तं भूतं गुरु गाव

॥ ३ ॥ वज्रमय मन्त्रा दीप ज्वलन् । कथा, पाठा, पूजाद ५५॥
 ॥ ४ ॥ विद्या विभवमयं सत्तुभ्यं, वरं नमः । प्रकृतिं पुनश्च ।

वयम् ॥ ८ ॥ गुरुं श्रुत्वा वयम् वीरदत्तम्, भगवन् वीरदत्तम् ॥
वयम् ॥ ९ ॥ वीरदत्तं कुरु वयम् भगवन्, ते वयम् वीरदत्तम् ॥

[illegible]

(RHE)

॥ १० ॥ हे देव सेवक वाह्ये, ये आपा धन कुरु दे ॥ कनककीरत
सुपसाउल, वानजवय सुख सिद्ध दे ॥ दो० ११ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ दादा चिरंजीवो, सेवकजन सुखदाई, दंष्ट्राण सदा देवो ॥
दादा दीनवयाव सदा दाता, दादो समरथा आप सुखदाता, दादो
जावधव जगदुक्त आता ॥ दो० ॥ ११ ॥ दादो परचा जगसावध धूरे,
दादो सेवकना संकट चूरे, दादो डरित हरे सर्वना हरे ॥ दो० ॥ १२ ॥

दादो अलगावो जावो आवो, दादो देवीन ते सुख पावो, स्वरा
दादाजीनो जोन कोइ नावो ॥ दो० ॥ ३ ॥ दादो राजनगरमहि
राज, जिहो सुजयानगरा नित बाहो, दादो जगसाव सेवक राजो,
दा० ॥ ४ ॥ दादा वस केसर सुकन धोवो, दादो देव सोवन क
बावो, पुजो दादाजीन सिद्ध टोवो ॥ दो० ॥ ५ ॥ दादो आरति
पा आरति टावो, दादो सेवकजन प्रसिदावो, दादो जिन

सामन नित उजवावो ॥ दो० ॥ ६ ॥ दादो मदिसावन
माहाराजा, दादो राजे खरतर गव राजा, दादो समरथा सफ
कर काजा ॥ दो० ७ ॥ दादो कुशलसुखि वहु गुणधरा
दादो परलख सुनक अवतारी, जावो दादाजीनो हे वलिदावो
दा० ॥ ८ ॥ दादो श्रीजिनवधसुखि पावो, दादो गावो गुणियन

दगावो, वसु धान सोहे जग धिरपावो ॥ दो० ॥ ९ ॥ दादो मदि
नितर मुन पर करिये, दादा आरति पोजा उख दिये, दादा जि
जग जयकमला वरिये ॥ दो० १० ॥ दादो सेवकनो सावित्र व
वयो, दादा कुसमणन हरे हरयो, जिनवधना मनधरित कवयो
दा० ॥ ११ ॥ इति पदं ॥ पुनः गावो जिनकेसव गगावो

सेवकना सिता चूरे दे ॥ गा० ॥ १२ ॥ वरतीनरी उव राजे
सेवकना संकट टावो दे ॥ गा० ॥ १३ ॥ परलख मुन परचा धूरे
विषम प्रपुन विराजो दे ॥ गा० ॥ १४ ॥ ऊँचरे पावो सिद्ध

आह, द्वात्रिंशद् दीर्घां सुख पाव दौ ॥ ग० ॥ ७ ॥ केशरं धम
 पग नीरं पलायते, गायत्री गुण गीतं रसालं दौ ॥ ग० ॥ ६ ॥
 द्वात्रिंशद् दीर्घां सुख देवै, निरयनिपां नित धम देव दौ ॥ ग०
 ॥ ५ ॥ दय दायी रयपतिं वदुवा, गुरु नाम पाव कमला दौ ॥
 ग० ॥ ४ ॥ सकला सुत सुंदर मारी, पावै परिकरं सुखकारी
 दौ ॥ ग० ॥ ३ ॥ अवगच्छी रोग गमयै, गुरु पुण्यां वंजित पावै
 दौ ॥ ग० ॥ २ ॥ पावै गुरु निमित्तां पाणी, निष
 वेला जलधर आणी दौ ॥ ग० ॥ १ ॥ भव गोधर धार
 वंजयते, पीता दुवै आनेमाले दौ ॥ ग० ॥ १० ॥ ११ ॥ बाह्य
 जग वज्राता वाजा, राजै खरतर गड रोजा दौ ॥ ग० ॥ १२ ॥
 जसु वीरसिरी वर माता, निहटा गरमज निरुपाता दौ ॥
 ग० ॥ १३ ॥ संवत सनरेषं वृषपाली, कान्तापुनम परकासी दौ ॥
 ग० ॥ १४ ॥ सवृ संव सवित सुविवासे, अधिकै दर देत वज्रसि
 दौ ॥ ग० ॥ १५ ॥ दम पाजा करी आणवै, विनयनि जतीसर
 वृद्धे दौ ॥ ग० ॥ १६ ॥ दति पदं ॥ पुनः सहाइ मेरे श्रीजि-
 नकुशल गुरु ॥ कुशल करण कलिमहै गोटयो, खरतर गड वर
 ॥ ग० ॥ वज्रावृद्धन सुगमदं मेली, पुर्वी धम सत ॥ ग० ॥ १७ ॥
 सिता धूरय विष विनारण, दालिद दूरेक ॥ ग० ॥ १८ ॥ विनये
 सादिव चढते वाने, ध्यावै यमानपके ॥ ग० ॥ १९ ॥ बाह्ये खरतर
 जजाना वाजा, जाली वामे वर ॥ ग० ॥ २० ॥ संवत अष्टासप्त
 अरुणहै, निगसरमाया विर ॥ ग० ॥ २१ ॥ संव सवित श्रीसदगुरु नेह
 श्रीजिनदेव सत ॥ ग० ॥ २२ ॥ गम गमाले, वरण नमता, नेह
 कटपतक ॥ ग० ॥ २३ ॥ पतक श्रीविद्याहेम गणिनि, उदयरत्न कक ॥
 स० ॥ २४ ॥ दति पदं ॥ पुनः आया आया जौ, समरता द्वात्रिंशद्

सूरि आने ॥ आ० ॥ आ आडी बेला में उ आली दाव, डण
 मरंग, दिवसिभ भावो साजन संग ॥ आ० ॥ धूप दीप करो नै
 वध सर, फुलवारीनो नदी बिहो पर ॥ आ० ॥ २ ॥ अकत
 आफल दीवो बेद, पुत्र कवच पास संपदा बेद ॥ आ० ॥ ३ ॥
 सुत नर नारी कमा कजोनि, कोण कोरे महेरा दासदाजी दोन
 आ० ॥ ४ ॥ श्रीरत्नर गणपति सिरदार, राजा राणा सेवो डकनार
 ॥ आ० ५ ॥ मदिर निजर कसो श्रीगुरुज, कुशालसूरि गुरु
 गरीबनिवाज ॥ आ० ६ ॥ श्रीजिनदेव को उठरा, सरवरन मन
 रमान उभंग ॥ आ० ७ ॥ दलित पद ॥ ॥ राग भंगालावाटी ॥ मे
 निरुपग गुरु साहेराज, उलिया देवजी ॥ म० ॥ अमल अनंत
 गुण आगरे, समनारमनो धाम ॥ परम परम परमानमा रे, क
 लित दापक दाम ॥ ७० १ ॥ कछालिभ गुरु दीवनी रे, सेवक जन
 प्रसिदाज ॥ जनिजन नके नावसु रे, जयावे नरे दाव ॥ ७० २ ॥
 केदारचंदन कमकुमार, नरिप कबोली दाव ॥ पदमल आवे मलपनी
 रे, पूजे सदियर साथ ॥ ७० ३ ॥ कमल सूरिसर साहिबारे, श्रीजिन
 चंद सूरि पाट ॥ बलिदेरी जिनकेशवनी रे, गावै पणु भदगाट ॥
 ७० ४ ॥ अष्टसिद्ध सांनिध करे, सुख संपुल सर ॥ श्रीजिन
 देव सूरिसर रे, सरवरन सुखकार ॥ ७० ५ ॥ दलित पद ॥
 ॥ राग मयाजी ॥ सरलकी सरलकी सरलकी, गारी जावे गुरु
 य सरलकी ॥ आ० ॥ श्रीजिनदेव सूरिसर सदागुरु, सकल पनी
 सेवा सरलकी ॥ आ० १ ॥ प्रथम भागव गुरुपकी सेवा, अष्टम
 करम सब देलकी ॥ आ० २ ॥ दालिदजन आरे सब भजल ॥ प-
 मर सांनिध करलकी ॥ आ० ३ ॥ मोदे नदी परवाहे अनेरी, सर
 ल भवो डन सरलकी ॥ आ० ४ ॥ श्रीजिनदेव गुरु सरलकी म

आ, आया पूरे सुख करणकी ॥ वा० ५ ॥ इति पर्व ॥ पुनः ॥
 अब मोहि बरसण दीजे, कुशलगुरु आ० ॥ एसी जात क
 री मे सद्यक, रूई मन भई पनीजे ॥ आ० १ ॥
 जलदातर निकट अमरस, अबल अजलनर पीजे ॥ सुरतके
 राम दर्शनल निन देखी, कही नयण किम हीजे ॥ कं०
 ॥ २ ॥ परमदयाल ऊयाल कथानिधि, इतनी अरज सुणीजे ॥
 परममगत जिनगल गुमारी, अपणी धर जाणीजे ॥ कं० ॥ ३ ॥
 इति पर्व ॥ पुनः कुशलगुरु कुशल करी मारुई, सेवकजन मन
 बहिन पूरा, समरणी होल बहुरे ॥ कं० ॥ १ ॥ परम दयाल मे
 मरल पूरा, अमुन दयाल नये रू ॥ सब उदीकर सद्यक मेरा,
 दीनये श्री जिनबद सुर ॥ कं० ॥ २ ॥ इति पर्व ॥ वा०
 बरगुठ पुत्रल आवरणी, खीली कुशल सूरिब गुण
 गवरणी दे माय ॥ स० ॥ श्रीकल नैट वदयणी, खीली वरणी
 पुन रवावरणी दे माय ॥ स० ॥ १ ॥ मरुदेयम सीजना, नगरणी
 काण गजे दे माय ॥ गाम गजलि दीपना, उपांति मरिपव मरि
 मा गजे दे माय ॥ स० ॥ २ ॥ समरणी संकट बुरा, कुशल करण
 अवगणी दे माय ॥ सुखदयक श्रीसुवन, खरतर गण अधिकांसी
 दे माय ॥ स० ३ ॥ रूई इगारिणी वणा, दिवसिपन वादी शिव दे
 माय ॥ वृषदे शीत नमरावा, सब सुमना मित्र गजे दे माय ॥
 स० ४ ॥ सऊ विरागार मजीङ्क, उमर पाव उमरवा दे माय ॥
 मन मन गण जोगावरी, गीरी भगव गजे दे माय ॥ स० ॥ ५ ॥
 विरजो सीजन मजे, अनम पाव नमजि दे माय ॥ मनर मजे
 लव पूरे, गरुड बलनी इगारि दे माय ॥ स० ६ ॥ निरणी र
 म वाटरे, समरणी सावित्र शिव दे माय ॥ श्री सीजन मजे,
 नमिणी नीर निवावे दे माय ॥ स० ७ ॥ पाणी शिव निर मजे,

आन आगल निर आट हे माय ॥ सीरणीयां निर सामरी, गावै
 शिण गदगाट हे माय ॥ सं ॥ ७ ॥ कुशलसोदं गुरु आगले,
 नाव निर नावना नाव हे माय ॥ वंद फव मुनि निर नम, पर
 मानंद सुख पाव हे माय ॥ सं ॥ ८ ॥ डल पद ॥ पुनः ॥
 श्रीमदंगुजनीस बीनरी हे, आया सरण गुमरी ॥ दादासाहेब अ
 रज सुणीवया मरी ॥ दीनवयाव विरव सुण आया, नन मन सु-
 धकर ध्यान लगाया ॥ मरि निर अत्र कीजाये जी, चरणक
 मल वलिहरी ॥ दादां ॥ १ ॥ आधि व्याधि सकट डल भरी,
 सोमवार पुनम दिन येरी ॥ आन घन लक्ष्मी योगिणी हे, वयनी
 संपद सारी ॥ दादां ॥ २ ॥ नर नारी अपार मिल आवै, अतर
 शुलभ केवरी जयावै ॥ पुढे मुगमद, पुणस हे, खिल रही केसर
 कपारी ॥ दादां ॥ ३ ॥ कलकुलाम परवा दे पूरे, निरा दोला ड
 रुमन बूरे ॥ धनद सवगुरु आगया हे, सहस करण अवतारी ॥
 दां ॥ ४ ॥ जगणीस अठवन वरस, कावीरुनम दिन नवस ॥
 गजपति कालि सीसिकर हे, वही वार दगारी ॥ दां ॥ ५ ॥ अरस
 परस दंदाज अत्र दंडि, अणणी दस मुक समक्रीव ॥ जगम सु
 रसक सारलो हे, कीरति वारदी मारी ॥ दां ॥ ६ ॥ गगदया व
 रवाना देवरी, आज सकल दिन म कर लेखरी ॥ श्रीजनकुशल
 सुरः ॥ ७ ॥ बाव नरतीकी ॥ सवगुरु दीनवयाव, गजपति
 दिनकर गुम पया ॥ सेवकनम प्रतिपाव, डलनमदेरण दिनम
 णी ॥ १ ॥ गट सवयाव जी देश, राजक कुन उदयाव ॥
 जवामसि प्रवेश, वीनरी अत्र नवै ॥ २ ॥ गजपति वंदसु
 णी, पाट निरक करिगाव ॥ सरनर कमल आलंद, नेन म
 काशन नरती ॥ ३ ॥ पुन पतन सत्र देश, निगमिण जयावी श्री

जिगिगी, पुनपुन सोमवार ॥ नर गरी गुरु विजय ॥ ४ ॥ असे
 अत फलेव, परमव फेरी जी मावती ॥ महके वपक वेव, सु
 र आवन मवपति ॥ ५ ॥ गुन निर गुन वीकाण, वावरे म
 हिमा घणी ॥ कीरतवण प्रधान, उल्लसजन विनामणी ॥ ६ ॥
 पूरे वंजित आडा, वंजा विसुनिजतली ॥ वंजा सुख कैलाश,
 वरा अरण विकर जणी ॥ ७ ॥ पूरे पद गोविंद, वंदेविमर
 वर राशम ॥ काटिक गण कुलवंद, कुशवसुवंद परकाशम ॥
 ८ ॥ जगणीसे अकनाल, मंगलर वंदे दशमी करी ॥ दशोण
 अनदि विशाल, कुशवनिधान देवल घरी ॥ ९ ॥ गुरुगुण शोभा
 नीर, मीन मगन दुवराशम ॥ वलमी लीव समीर, कडिसार जल
 वलम ॥ १० ॥ दल पद ॥ ॥ पुनः ॥ ॥ राम, सो जोगी
 गुरु मर ॥ वंदे चाल ॥ सुगुरु मरी वीरपा पर उवासे, नै वण
 अव मांजी वमरी ॥ ११ ॥ मरिता सावव नीर जलवि वृ, यी
 मंगल अघरी ॥ ना नट पांवार अमरपद, ताकी वण वंजारी ॥
 १२ ॥ ॥ राम दंग डक बीरण चौका, निरही नर मज घारी ॥
 म वरी परमारय जातर, मोहे मंगन उवासे ॥ १३ ॥
 नक अघरण श्रीमवगुरुजी, जवरी कण निवारी ॥ जण वल म
 वपति कलणानिव, पाविपनिवस वारी ॥ १४ ॥ उदकापात
 गन नू विपयरा, दीही अनदि करारी ॥ निरहे अयाधिक
 नशि अधिवारी, कोण करे निजारी ॥ १५ ॥ वंजा निरय
 डे कोड डंभा, अजा वमया प्यारी ॥ १६ ॥ सुख अनि
 उवावगुरु, अरिगण गजवहारी ॥ १७ ॥ सुख अरजी
 पाव गज नमदर, वृत्तही विपन निजारी ॥ रामयण पर नंज
 वीम, कुशवनिधान वंदारी ॥ १८ ॥ ॥ कंदपक मुक्त वलमी
 गजव, डकम वंदे वसुधारी ॥ १९ ॥ डक भवा वरणकमवरी, मंग

गुरु दत्तारि ॥ सु० ३ ॥ संवत् जगन्मोहि अन्तर्गतः, मुक्त्यर्थ-
द्वारे ॥ सु० ८ ॥ इति पदं ॥ राग धाटो ॥ मेरो मन वस
कर लीनो ॥ ए चाल ॥ देखा मे दशा निदरा, दं० ॥ ओसद
गुरु महाराज ॥ दं० ॥ सफली फली मेरी आशा, पाया सुखक
आज ॥ दं० ॥ १ ॥ सुमहो विनामणी जैसा, दायक सब सुख
जाय ॥ दं० ॥ गंगा आणामु मगरी, मुक मन निरमल काल ॥ दं०
१ ॥ गुण कछि संपन काजु, कामधुन गुरुता ॥ दं० ॥ सब
बलि, लीला मगरी, उख दोहन गये आज ॥ दं० ३ ॥ गुरु
धाम गुरु सहे, सुखक वोकाण राज ॥ दं० ४ ॥ पर गज खरतर
रोजा रे, ख० ॥ धूमशील रहे आज ॥ दं० ५ ॥ विम नाम राजको
साल वैमरी ॥ सदा महो कुशल सूरि गुरु, यो दीवान गुरु
रायजी ॥ सदा० ॥ खड्डे न खड्डे खरवी न गुरे, विमरे वधु
सवायजी ॥ सदा० १ ॥ सकजा सुत अर सुंदर नारी, सुन
परिकर सुखदाय जी ॥ सदा० ॥ निव समागम सुजडा वधा
रा, निरपलि हरेल उछाह जी ॥ सदा० २ ॥ राजा परजा पावन मुसुह
गुरु समराय सुसपायजी ॥ सदा० ३ ॥ विराम विरिया सकट पनिय
सदगुरु करय सदायजी ॥ सदा० ४ ॥ विराम विरिया सकट पनिय
समराय आबु पायजी ॥ सदा० ५ ॥ मेरो जीवन निमिया पाया,
नरपनिपा धन दायजी ॥ सदा० ६ ॥ सुव सकलन यो सुखसाता,
जम कील जग पाय जी ॥ सदा० ७ ॥ यामक निरामा पणल सोवन,
गुरु कुशल सदाय जी ॥ सदा० ८ ॥ अन्व मदी सुखदाई संदुकर,
वलिप, वलिज आपजी ॥ सदा० ९ ॥ सुमनि सवाह निव पर सपद

जिगिगी, पुनपुन सोमवार ॥ नर नारी गुरु देव ॥ ४ ॥ अरु
 अरु फूल, परिमल फूलो जी मायली ॥ महक चुपक देव, मुं
 देर आवत मलपति ॥ ५ ॥ गुन निर गुन वीकाण, बावचर म
 हिमा वणी ॥ कीरतवण प्रधान, कुलनवन विनामणी ॥ ६ ॥
 पुते वलित आश, उपा गुम सुनिजतली ॥ दाता सुख कैलाश,
 वरु अरु विकर मणी ॥ ७ ॥ पुते पद गोविंद, चंदोशवर
 वरु राशम ॥ कौटिक गण कुलवंद, कुशवसुदेव परकाशम ॥
 ८ ॥ जगणीस अकाल, निगसर वरि देवामी कटी ॥ वरुण
 अनदि विनाल, कुशवनिधान दरल वरी ॥ ९ ॥ गुरुगुण शोभा
 नीर, मीन मगन दुवाशम ॥ वलमी लीव समीर, कडिमार जम
 वलम ॥ १० ॥ दलित पद ॥ पुनः ॥ ॥ राम, सो कोणी
 गुरु मरा ॥ पद बाल ॥ सुगुरु मरी वीरपा पर उवासी, ते वण
 अब मांजी वमारी ॥ ११ ॥ मरिता सादेव नीर जलधि वृक्ष, यो
 सुमार अवासी ॥ ना नट पादपाद अमरपद, नाको वण दातासी ॥
 १२ ॥ ॥ राम रंग दक बीरु नाका, निरदो नर मऊ वारी ॥
 मुं वरी परमारुख खानर, मोह मगरुन उवासी ॥ १३ ॥
 नक उपाण श्रीमदगुरुजी, जवरी कष्ट निवारी ॥ जग दात म
 लपति कलुषानिध, पाविपतिनल वारी ॥ १४ ॥ उदकापात
 गगन लू विपयरा, दीडो अनदि कारो ॥ निरद अयाधिक
 निश अविपारी, कोण करे निशानारी ॥ १५ ॥ वजा निरु
 दे काड डोला, अजा उमरा वारी ॥ मुं यवां विनय
 कुशवगुरु, अगण गजवहासी ॥ १६ ॥ सुख अरुजी
 आव गज नमहर, निरदही विपन निजारी ॥ रामगण पु. न. न.
 अरुम, कुशवनिधान उवासी ॥ १७ ॥ सु. ३ ॥ कडयक गुरुन वलमी
 पावन, देकम पूरे वसुधारी ॥ मुं दक रेवा वरुणकमलकी, मरी

गुरु दानात् ॥ सु० ३ ॥ संवत् जगतीसे अकालाक्षि, भक्तवत्-
 दत्तो सार ॥ नयणा भक्त किं गुरु दत्तात्, हे ऋद्धसा नि
 दत्तो ॥ सु० ४ ॥ दत्ति पदं ॥ राग घाटी ॥ भरो मन वस
 कर लीनो ॥ ए वाल ॥ हेला मं वर्या निदरा, द० ॥ श्रीसद
 गुरु मदराज ॥ द० ॥ भक्तो कवी भरो ॥ आशा, पाप सुतरक
 आज ॥ द० १ ॥ तुमही विनामणी बैसा, वायक सब सुख
 साज ॥ द० ॥ गंगा आणामुं गायी, सुक मन निरमल काज ॥ द०
 २ ॥ गुण कवि संपन कावै, कामधुन गुरुतरा ॥ द० ॥ संव
 सिद्धि लीला गायी, जल दीक्षा गव साज ॥ द० ३ ॥ गुरु
 विष परपगाही रे, प० ॥ सुपद शिवपद पाज ॥ द० ॥ सुन
 धान पुं रे सोहि, सुलक बोकाल राज ॥ द० ४ ॥ पर गव लोतर
 राज रे, ल० ॥ धर्मगाल रे गाज ॥ द० ॥ तुम नाम रामक
 सारी, रा० ॥ जय पाठक सिराज ॥ द० ५ ॥ दत्ति पदं ॥
 बाल वैसरी ॥ सदा महाई कुशल सोई गुरु, या दीनत गुरु
 रायजी ॥ सदा० ॥ लाई न लुई खरवी न लुई, दिन रे व
 सवायजी ॥ सदा० १ ॥ भक्तो सुत अक सुंदर नारी, सुन
 परिकर सुखदाय जी ॥ सदा० ॥ निव समागम सुजग वया
 रण, निवगति हरल उठाई जी ॥ स० २ ॥ राजा परजा पाप नमूं सई,
 गुरु समरण सुसवायजी ॥ स० ॥ दीखी जलपन रूप नय पदिप,
 सदगुरु करय सदायजी ॥ स० ३ ॥ विरमा विरिया भक्त पदिप,
 समया आबुं वायजी ॥ स० ॥ सैवा जीवन निमिया पाणी,
 निरपनिया धन दायजी ॥ स० ४ ॥ संव भक्तन या सुखसाता,
 जिम कील जग थाप जी ॥ स० ॥ धानक निरमा परणव जीवन,
 पग रे कुशल सदाय जी ॥ स० ५ ॥ अन्य सदा सुखदाई सदगुरु,
 मरनिप दानि थापजी ॥ स० ॥ सुमनि सवाई निव पर सपदं

दान विनाश लक्ष्यती ॥ सं ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ निजकुश
 लस्यैव गुण सदा नमो ॥ सुख संपन्न सिद्धिं सिद्धिं सदा
 ह्वित, देवा देवान् कण्ड नामो ॥ श्री १ ॥ वाट वाट अर
 विनामी विविध, विपन वृष्टि ई गमा ॥ श्री २ ॥ अहनिना
 नाम संय ज्ञ पयो, सुगुण वरुण विन रमा ॥ श्री ३ ॥
 दक मन व्याप्य वीरिन पायो, विपन व्याप्य सदा देवादेमा
 ॥ श्री ४ ॥ अन्ध सदा सुख संपन्न पायो, सुख संपन्न विन
 लमाजमा ॥ श्री ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ उज्ज्वली आरे पाप
 नमो श्री, सुरनर सदा सदा ॥ व्याप्य आरी जग जगती श्री, इति
 पदं परविन देव ॥ १ ॥ इति मोहि रमा श्री, आरा सदा दारे
 दरेवार ॥ केनर अंश केवली श्री कर्तरी कर्तरी ॥ वयो वंन राय
 वंन, नलि कर्त नरपूर ॥ श्री २ ॥ पार्श्वविपन्न पाव समीप,
 अंधविपन्न अंध ॥ कर्तरीपाव देव देव दारा, पावदेवापान पाव
 ॥ श्री ३ ॥ वंद पाटीपर साहिवा श्री, श्रीजगन्नाथ सौंद ॥
 आल पदर पाव वंन श्री, सग पद सौंद ॥ श्री ४ ॥ इति पदं ॥
 पुनः सदादेवली सुपा मोही अरती, सं ॥ पदली काम सि
 वदेनरे, अण्णा विद्व विवारी ॥ पद २ वंद, पद १ सदादेवली, श्री
 सुतलवका मारती ॥ सं १ ॥ व्याप्य विमारी कर्तरी न व्याप्य,
 पूजा करी नदी ॥ मोही सवक वंन पायो, आरी आरी
 मारती ॥ सं २ ॥ निश्चिती विमयुज गद्दे, पुन कटत डल
 वती ॥ नक उपार कदावन जगन्, मोहि कटत ई आरी ॥
 सं ३ ॥ और देवर्क स नदी व्याप्य, आरण्य मदी स नदी, देवका
 स नदी आरी, विपनव्याप्य सदा नदी ॥ सं ४ ॥ कदावन गुणका
 स ई सवक, एवक बाण सवकाई ॥ कामावली वीरती
 सदा, सदाए विवा सदाए सदाए ॥ सं ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ दोरीकी चाल ॥ सत्यदेके चरु विन
 लाप२, विनय सुदि सुके कते रे पसाय ॥ स२० ॥ अ-
 वन दोर अने वलि चौसठ, जोगल वन दोरी दूरे लाय ॥ विद्या
 पुनक सोवनअकर, धानी वन विनय लाय ॥ स२० ॥
 सुवननसं वृष पोर महेसव, पवनरी सोपी विनः लाय ॥
 इत्यादिक वृष परवा पूरक, गुरु समया सब डल लाय ॥ स२० ॥
 गुरुके नामसं अकसिद्ध मवलिक, गुरुगुण गावी सवरी पाय ॥
 श्रीजनमौजाय सूरि सुगुरु पर, मरिद कते गुरु सुखदेव
 ॥ स२० ॥ ३ ॥ इति पर ॥ पुनः ॥ दोरी खेला मलिक मयगुरुके
 संग, निन अमर उडव होत संग ॥ दो० ॥ मरत महीना कागुण
 आया, श्रीपुनसं विजयक संग ॥ दो० ॥ कोणव सवृ करत
 इत ऊँला, अली कलीक संग संग ॥ १ ॥ कत वसंत
 आनंद विरा संग, गीरी गावन वजन संग ॥ दो० ॥ एसे सज
 समज नकिसे, गुण गुणव विरु गुरुके अमंग ॥ दो० ॥ २ ॥
 निरमल मन मरुद सुधाकर, अत पुणसं वरचो अंग ॥ दो० ॥
 ध्यान प्रवकारी अमर सुधारी, विरको महेकत सुदिनांग
 ॥ दो० ॥ ३ ॥ कत वृन वरमलसे नैल, रामकरीसंग के विन
 अंग ॥ दो० ४ ॥ इति पर ॥ पुनः ॥ मयपुनसं कविता सोरी ॥
 इत सावस ॥ गुरु पून रचो रे सुझानी, नवी दिवः मक मरणी
 ॥ ग० ॥ श्रीजनकुसल, सूरिसर सादिव, खरमलजत आनी ॥
 देयदेवसं आनक गुरुका, सोना वन पविचानी, सवा रवि नेज
 समानी ॥ ग० ॥ १ ॥ केशव वंदन मंगद, नवी चारणी पून
 रचानी ॥ वृष दोरीपः वलिआल, दोरी, वरु विर पुष वरानी,
 नला कत होत, पवानी ॥ ग० ॥ २ ॥ वरु पाउस परवा पूरक,
 वामर होत सवानी ॥ श्रीजनमौजाय सूरिके, सादिव, ३ ॥

काज करानी, सदा गुरु मन्दिर ललानी ॥ गी० ॥ ३ ॥ द्वावि पदं ॥
 पुनः ॥ दोरी ॥ सद्युक्तजीक हार मची होरी ॥ स० ॥ अये
 श्रीसंघ सभः दिवसिभक्त, संग लिये वालाजोरी ॥ स० ॥ दोमद
 पालकसमसुख ठाकी, पवत मयूरपुन गुण गीरी ॥ स० ॥ ११ ॥ केशर
 घोली सरी रे कचोली, पूजात है बारीजोरी ॥ स० ॥ रंग गुलाब
 मन्थी सद्युक्ते, अवीर उजावत सरजोरी ॥ स० ॥ ११ ॥ धनप
 नाथ देमारे पगड, सद्युक्तेन एककी नोरी ॥ स० ॥ अनी मन्थी
 जण दुसमान गजन, बलिहारी चरणो नोरी ॥ स० ॥ ३ ॥ कासि
 तदाता जाके आता, अरबी देण सुनले सोरी ॥ स० ॥ कदत
 रामकविसर सुपाठक, वंदन है डण करजोरी ॥ स० ॥ ४ ॥
 द्वावि पदं ॥ राम प्रजानी ॥ केसे२ अवतारस गुरु रस्की लाज
 देवारी ॥ के० ॥ मार्के सवल नोसा नोरा, वंद सूर
 पटवारी ॥ के० ॥ गुम विन आवर न कोडि सूर, पा
 जगमः दितकारी ॥ सदा जीवन देण गुमारे, देखा आप विचारी
 ॥ के० १ ॥ आगे तो केई बेर देमारी, बिना रूँ निवारी ॥
 अक्की विरिया रूँल मत जावो, सद्युक्ते परजपवारी ॥ के० ३ ॥
 अक्की आप लाज गुजरकी, रलिये गुरु उवावारी ॥ सूर कुशल
 सूरि गुरु तेरा, बना नोसा सारी ॥ के० ४ ॥ द्वावि पदं ॥
 पुनः ॥ श्रीजनकपाल सूरिसर सादिव, गुम दो परजपवारी ॥ श्री० ॥
 खरतर गज मयक गुणवापक, जिनबंध सूरि पटवारी ॥ श्री०
 १ ॥ सत उपारण सुजया वधारण, मोहनबण अति सारी ॥
 नाम गुमारी कुशल करण जग, बारीजानि बार देवारी ॥ श्री० १ ॥
 जगवड गुमारी हो जगगुरु, कल्याणित करवारी ॥ के० १ ॥ जिन
 सूर दो सद्युक्त, देम है सरण लिखारी ॥ श्री० ३ ॥ द्वावि
 पुनः ॥ श्रीगणेश गुरु केशव सूरिके, बरलकमल पर

वारी ॥ श्री० ॥ केदार चंदन अक्षत किंजुस, जलधर कंचनजरी ॥
 देवके आगे मंगलदीपक, फूल धरं फूलवारी ॥ श्री० १ ॥ पंशी
 नाति करं विष पूजा, आणके चित डकनारी ॥ राज कंदन मेरे
 परमयुक्तकी, बेरर बलिदारी ॥ श्री० २ ॥ डल पदं ॥ रोग रेलवत ॥
 कुशलयुक्त देखके बरझाण, भरा दिव होत है परधान ॥
 जगमग या रामो कोई, न देखया नपण मर, जोई
 ॥ १ ॥ विरह नमंदले गावै, फरझाव पाव नव नावै ॥
 पुनवां संपदा पावै, आविनी लख पर आवै ॥ २ ॥ डके मुख
 गुण कहै केत, मुख हिय रमान नदी एता ॥ लालचंदकी आन
 सुख लखै, चरणकी सेव सोहि दीज ॥ ३ ॥ डल पदं ॥
 रोग कंदरावै ॥ कुशलयुक्त दरझाण दीजै दो ॥ कुं ॥ खरनर
 गजपति कुशल सुरिख गै, मुज पर मलिर परीज दो ॥ कुं १ ॥
 पतिन उपराण विरह विझारी, डकनी आन सुणीजै दो ॥ कुं २ ॥
 आधि व्याधी अक दोखी डकमन, ए सव ररे दरीजै दो ॥ कुं ३ ॥
 लेमरनन सेवगकं निगदिन, सवयुक्त सोनिय कीजै दो ॥ कुं ४ ॥
 डल पदं ॥ पुनः ॥ पुजो नवा रे नाई, युक्त मदिमा
 उवात सवाई ॥ कुं ॥ १ ॥ मंगमद केदार चंदन आरवा, सुंदर
 पुष्प चटाई ॥ कुं ॥ २ ॥ नविक जीव निव गेकण गावै, बाके
 सवयुक्त होत सहाई ॥ ३ ॥ श्रीजमसोनाय सरि सुयुक्त मेरे, नि
 बादिन दूध चवाई ॥ कुं ॥ ४ ॥ डल पदं ॥ पुनः ॥ पुनः ॥
 आन करं करजोनीजी, खारी आन सुणी गेकण ॥ सवयुक्त ॥
 विरह पण ठै रावता जी कहां, सरि सकल निराना ॥ स० ॥
 सुनिअर जोषवो सादिवा ॥ १ ॥ आरे रावल राण राजनीजी
 आरा पुनम पुन, पण ॥ स० ॥ केदार आर न केमकुमा जी,
 काई मंगमद खै मदेकप ॥ स० सुं २ ॥ आरे पुनवा रे आणव

शरत्तर राजवंश पटवारी, सेवकजन आधार ॥ विषमवाटमें से
 कट काटे, सब सकल सुखकार हो ॥ सं ॥ २ ॥ जगमाहि परंपरा
 अधिकाई, जाये सब संसार ॥ नरहरियांस ज्ञान जगारी, जिन गु-
 रुकी बलिदार हो ॥ सं ॥ ३ ॥ गुंठे चरणविजय वरगोणविनी, पा-
 रतिमर बट जाय ॥ गुंठे परमानम सुगुण शोभागी, गुरुगुण केम
 कदाप हो ॥ सं ॥ ४ ॥ सुगोष्ठा नेत्र उष्णकाली, लिखे आली
 बहू वार ॥ नरप नालिक गुंठे अन्न विचकण, मुंड समीर ऊष्णकार
 हो ॥ सं ॥ ५ ॥ मरुमाली हरेनी वर राजन, श्रीमदगुरु वरवरा-
 र ॥ इंद नरिंद नम परवृक्कज, हरलिन जिन प्रहार हो ॥ सं ॥
 ६ ॥ ऊड़ निवृक्क आगर सरगुरु, जो द्यावे सो पावे ॥ जाओ
 भाई जाओ कण्ठके, कथार रंग मचावे हो ॥ सं ॥ ७ ॥ वम पीन
 अर्धन सगुठकी, पुनम पुन सोमवार ॥ बाधनि नाव ते पुन ऊ-
 रित, कौ सुविष सुविचार हो ॥ सं ॥ ८ ॥ कर अक्षि वर सवन
 सुखकर, नर वंद शोभा वार ॥ रंभीप माया प्रतिपद दिन नैजा,
 शुक्ल पक्ष शुभ वार हो ॥ सं ॥ ९ ॥ सुरगिरम नंदनवन सोई,
 नारकन विनकार ॥ शरद्वंद जिन देस सुनीसर, खरतर इंद उ-
 वार हो सं ॥ १० ॥ सङ्गुठ समशील परमावे, कुशल होत जिन
 सव ॥ कलिसरप मरिद करीन, अविचल लील बलाय हो ॥ सं
 ॥ ११ ॥ इति ॥ पुनः ॥ मोरी सगली सदेवता आज
 शालिनी गुंठे वंदवा ॥ सं ॥ श्रीजिनवद पाट अधिकारी, श्रीनि-
 नकुशल सुरेव ॥ परवा जगम निरमलासर, वीपन पुनमवद हो
 ॥ सं ॥ १ ॥ खरतरगुहा राजवीसर, सेवकजन प्रतिपाव ॥
 उठ कर नय दूर करीन, देवो सुख विद्याव हो ॥ सं ॥ २ ॥
 पुनमर नालिक परीन, भावे सब आधार ॥ कथार वंदन सुगमर
 धाली, पुन विविध प्रकार हो ॥ सं ॥ ३ ॥ सुरेव सदेवके आगले

, सऊ शीले सिधुगार ॥ गोटक करती वर गुणवती, पण नेऊ
 गकार हे ॥ ४ ॥ हेर हेर्याही संघ वृद्धिप, आठे विर
 ङाप ॥ श्रीसंयुक्ता देरीणसेनी, आनंद आग न माय हे ।
 ० ॥ ५ ॥ रमना एके किम कदेवाय, गुह्यिण अधिक अपार ।
 वदेनी गुठनामनीसरे, बाणीबाजें वार देवार हे ॥ ६ ॥
 न उगाव वतीसे कालिक, पुनम विन सुखकार ॥ सद्युक्त गाम
 विनासि, जात्र करी जयकार हे ॥ ७ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥
 कर सीजाली, कीरन जग विरार ॥ गुण आगार दीपन शोभा
 ननव, देसमुरि गणधार हे ॥ ८ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥
 क, केशव सदा सुखकार ॥ ऊकसार गुह्य गुणगण ऊपर, निर
 हे वलिवार हे ॥ ९ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥
 मन कामगती, सुगुह्ये मुरे कामिन कामगती ॥ मनसुख साहे
 वर दीनी, गुणपयन पदवी ॥ १ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥
 न सम सरी, दीपन वदन उची ॥ २ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥
 मदिमा जाकी, विनयति नवी नवी ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥
 प सरी पण उदयगिरि, श्रीजिनचंद्र रवी ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥
 दी वरविन सदा मन मुरे, रत्ननिधान कवी ॥ ५ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥
 पद ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥
 गवयति हे, खरतर गड सुखकार ॥ सावित्री ॥ ६ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥
 दीपन, गुह्य गवयति हे, वात कामचंद्र सार ॥ ७ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥
 मदिमा केशव, गुं गुणनिधु विद्या अवतार ॥ ८ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥
 र बासि, गुं ज्ञान समय वर वार ॥ ९ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥
 , गुं पद सदावन जाल ॥ १० ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥
 पद यमाकर गाल ॥ ११ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥
 करत जग उदयार ॥ १२ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥

देता नाई पार ॥ सां ॥ ४ ॥ श्रीजिनदेव पंडितके, गुं. दीपत
 गुणमणी खण ॥ सां ॥ अणुजि सनरे समुं, गुं. पाणी देववि
 मान ॥ सां ॥ ५ ॥ वेदं बलिं निधि उटिपती, गुं. मायमांश
 सुखदाय ॥ सां ॥ खन पकं तैयुं निधि, गुं. इम पण देवविप
 ॥ सां ॥ ६ ॥ श्रीजिनदेव सूरिसक, गुं. वेदं बांवर ॥ सां ॥
 केशल कला निन नेहसं, गुं. प्रणमं दम ऊळसर ॥ सां ॥ ७ ॥
 इति सौनामपसुरी स्तवनं ॥

॥ अथ देयना वधावा संग्रह ॥
 वीरजी दिव दे देयना रे, अजिवन जन दिनकारज ॥ पर
 खर धरने आगले रे, जगजीवन दिन काम ॥ वीं ॥ १ ॥ प्रसु
 सुख पय मनोहर रे, जिहवा वाणी सकरे ॥ नय मयु-
 र नो नावणी रे, पान करे आनंद ॥ वीं ॥ २ ॥ अज
 रणुं जग संपजे रे, अर्पन ध्यान पसाय ॥ प्रसुं वचनामन पान
 पी रे, अजर अमर पर धाय ॥ वीं ॥ ३ ॥ मयुरपुं मनमोहनी
 रे, अजुपम बालि उदार ॥ सानेव नय लहे सहरे रे, जिन पर
 नाव निवार ॥ वीं ॥ ४ ॥ जिहं पर दय विचारणारे, नय निकेप
 अनां ॥ बोलिह पसुपकणारे रे, सननीं अति वंग ॥ वीं ॥ ५ ॥
 आसननायक जिनवर रे, अजुपम अमनपार ॥ जलपानी पर
 वासनारे, नलि चानिक दिनकार ॥ वीं ॥ ६ ॥ श्रीजिनजान पसा
 पथ रे, जिन आनय दिन जाल ॥ वाचक अमनपमनी रे, श्रीवा
 नय कदवाण ॥ वीं ॥ ७ ॥ इति देयना ॥ पुनः पुनः पुनः पुनः
 श्रीजिनवदं मुनिदा, मुख सोहे पुनमवदा ॥ मोहा सज सुनर
 बुंद, सुगुं न्हंरा देयना दिव दीजे ॥ धोरी देयना सुख मन
 दीजे ॥ सुं ॥ १ ॥ दिनकर परकाश सवाणी, समनल ऊपर
 वंणी ॥ कमलादि सकल मन मोषी, सुं ॥ २ ॥ वेलाजव देव-

विप्रा, वलि शिर रंग मकर ॥ गायन गावे सुखका, सुं ॥ ३॥
 इव सवद गहिर खलि गावे, जिनवर पर कालर वाजे ॥ सई
 तऊ भया धनु काजे, सुं ॥ ४ ॥ हिव वडिवा पाट पयागे,
 श्रीसपना करज मारी ॥ मयूरे स्वर ववन उआगे, सुं ॥ ५ ॥
 उवा जिनरी वचनविओप, गिक आपे धम उपांश ॥ टावो मरव
 लोन कवेओ, सुं ॥ ६ ॥ सदगुठना मीठी बाणी, उपांशे सुवा
 मविआणी ॥ सुलाता मन आनहि सुवाणी, सुं ॥ ७ ॥ गिक धन
 न च्छु शोभा सूर, दिनरगल ववन मरे ॥ देसो सब सकल डेल
 रे, सुं ८ ॥ गौरी भिव संगल गावे, मरे भोनिभा थाल वपावे ॥
 गवपकमल सुख पावे, सुं ॥ ९ ॥ डोत परं ॥

॥ अथ वपावे ॥

सुगायन गावे रमन जनाव दे ॥ ए वाव ॥ श्रीजनव
 रीसक, सुगुल खरा श्रीखरतर गजराय दे ॥ श्रीजनवला प
 रक, सुगुर खरा दिनर मारी सवाय दे ॥ खरा सडिव सी
 गी, खरा भुन गुल गी, खरा दिनरक ॥ १ ॥ सुगुर खरा
 राना या मनन दे ॥ सब सई उठक भया, सुं ॥ भुवाव भुम-
 बाण दे ॥ वडिवा वडिव पर दे ॥ सुं ॥ ये वो अवसर बाण
 ॥ खरा २ ॥ मरे किरण पर सवरा, सुं ॥ विकरया कमल
 बाण दे ॥ रंग जिनस भुखतला, सुं ॥ दोप रंग आवाप
 ॥ खरा ३ ॥ पवसव कालरतला, सुं ॥ मंगल नाव उवा
 ॥ रम वई विष मँमनवे, सुं ॥ वरया अपरकार दे ॥ खरा
 ॥ सब सकल मन करी, सुं ॥ जोवे धारी वाट दे ॥ गावे
 धारी गवना, सुं ॥ या दसिण गदगाट दे ॥ खरा ४ ॥ निग
 वर विवासाव, सुं ॥ पववा उवसव दे ॥ जवपर च्छु गदे
 सुं ॥ वचु मंगल विवा दे ॥ खरा ५ ॥

वृद्धै, सुं वयस्य सुधारस्य योगो हो ॥ उत्तम धरम प्रकाशना, सुं
 दास्ये नयजस्य योगो हो ॥ नृ० ३ ॥ नेत्र नरणा निम विनमणा,
 सुं गुण उचीस निवास हो ॥ मोहन मुदा पुननली, सुं निर
 दया मन उज्जस हो ॥ नृ० ४ ॥ ये विप्रजीवो गवपनी, सुं
 राज करो एक आण हो, इम बोलै मुनि सुष सदा, सुं बाणी
 कामाकटपाण हो ॥ नृ० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ पाशा
 निनाणुं करियु ॥ ए चाव ॥ एववा सद्युक्त वारियु, मलिकजन
 ॥ एववा ॥ आप. नरै जनकै नरै, अरण. निहारी गहियु ॥
 न० १ ॥ निम सायणपति साणीजनकै, वलिन वेशै वहियु ॥
 न० ॥ निम सद्युक्त अमृतवपदंशो, नरै मलिक सुख कवियु ॥ न०
 २ ॥ गीप समी मुक्त गुण निन धारै, राखै गोवन महियु ॥ न० ॥
 वलि निवामक उपमा धारै, निम नायिक नौ नरियु ॥ न० ३ ॥
 एक अमृतजन दाय विवि वधन, निविष दंन एवियु ॥ न० ४ ॥
 चार कपाय निवारक नारक, पव मदावन धरियु ॥ न० ५ ॥ पद
 काय रक्त मदाजय जीपक, अशरण शरण कर्तवियु ॥ न० ॥
 एववा सद्युक्तो वलिहारी, अरण घटै निशानरियु ॥ न० ॥
 गीतमस्वामि समी मुनि उत्तम, सर्व जीव योग धरियु ॥ न० ॥
 विषकमल निशानि राखीजे, आनंद निशपद वरियु ॥ न०
 ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः मव पुन वेशै ए गीतव निगपनी ॥
 ॥ चाव ॥ सुलकर स्वामि श्री तीर्थकर, वरधमान निगप
 ॥ वरदाण जेदो रे दरपण ज्यु दिप रे, गोनिव नेत्र समान ॥
 मविजन वेशै रे मावै गवपनी रे ॥ १ ॥ नरु पद गेशै रे सुष-
 सम गणपक रे, इनात दादो आम ॥ वरुस्वामी रे निप सदा
 मणी रे, वयव पुनधर वग ॥ न० २ ॥ नरव सधनव जोग
 पगना रे श्रीपरीनाद सुखिद ॥ श्रीनरैव विजय मव वृजो रे

पुनः ॥ आद्य पावस ऊलस्य ॥ ए वाव ॥ मोक्षये मे
 वरसीये, सखि आज तेज आल ॥ पुन पयस्य विदता, नम
 कं दे ॥ मुख सोहे पुनमवर्दे, सखी मोती ॥ १ ॥ कोतिगुणे
 करी शोभता, सखि पूव महोवधर ॥ वर वसीस गुणे सखा,
 विवरे जे निरसीवार दे ॥ रसिया जे पर उपगार दे, उपशमरशोभा
 नकर दे ॥ पाले पंचवार दे, सखी ॥ २ ॥ मेघतणी पर गजना,
 सखि मोती जेदनी बाण ॥ आप नरे पर नरना, गुण रनारी
 खण दे ॥ सर्व आगमना जे जाण दे, प्रत्ये जिय नलहेल नाल
 दे ॥ जेदनी अविशेष विधाण दे, सखि ॥ ३ ॥ परनिख सुतरक
 सारिख, सखि दण पूवम काव ॥ सखी जेदनी शोभता, सुनिवर
 जिय मोतीमाव दे ॥ कोटि धर जे कोटि बाव दे, वरीजे तेह जि
 काव दे, सखि ॥ ४ ॥ सुनि सकल सिर सेदरी, सखि खतर गव
 सिखागार ॥ जैनपरम दीपावता, महिमा जेदनी अणपार दे ॥ स
 र्ग संपत्तिया सिरदार दे, सखि सुमतिनया नरनार दे ॥ जेदनी प्र
 ग्ने नरनार दे, सखि ॥ ५ ॥ सुन आस्य निमगता, सखि जे
 ना पयस्यदेता ॥ दीन शीघ्र नर नाना, वारे नाना सुविशेष
 दे ॥ प्रयाधिक अर्थ निशेष दे, गुण अरु पयस्य प्रदेता दे ॥ सखि ॥
 ६ ॥ सुखतां भोजनराजना, सखि अर्धनवधन विवशा ॥ कण
 सु कसु समुदना, सखि निखे दोहे नारा दे ॥ आप निज कोन प्र
 काश दे ॥ कहे बाव सुगर सहवास दे, करत निज रूप सुनाय
 दे ॥ सखि ॥ ७ ॥ इति प्रथमो ॥

॥ अथ मुदरी निरुपते ॥

॥ नरादव विदती दे ॥ ए वाव ॥ विनशोभन जयकारी,
 जगगुरु गोतम गणपती दे ॥ सखियां मुदरी करो ॥ मुदरी करो

[illegible]

॥ अथ श्रीपरात् परब्रह्मकी सिद्धांत श्रुति
सामान्यी लिखते ॥

तो एकमलिख ? कम होय तो प्रतिपदाका पश्चकण मत
[प्रती] अमावास्या ३० लिखको करे, ८ अष्टमी कम होय तो
अष्टमीका मत समझीको करे, छे तो चतुर्थ कम होय तो १४
को उपवास आमावस या पुनमीको करे, इसका कारण यह है की
यह दोनो लिख परात् पर है, चौदश परादिन है तेसरे आमावस
पुनम की चिह्नन पक्षीका दिन है, यह दोनो दिन प्रबुक्त क
रुणिक है, परणु चतुष्पादो परमीका उद्यान करे ॥ इस बखत
जैन पक्षीकी प्रती नदी, अन्य प्रतिपक्षिके पक्ष परसे लिखा
गिणनेम आता है, जैन पक्षीम संवत्सी आदिक पक्षीका रूप
वृद्ध नहि होता, ब्रह्मपक्षीम पक्ष संवत्सर कहे हैं, उनमें
से अजि ब्रह्म संवत्सर मियादिपानी प्रचलित कर एका है, छेकि
न सुबुसंवत्सर दोनसे सवापुसठ दिनका होता है, इस बातसे जै
नागमसे यह पक्ष पक्षा नदी एकांत नपवाद हेतु है, इस बातसे
जो चौदश कम हो तो उपवास तथा परकी प्रतिकमण निरुद्ध
पुनम तथा आमावसके दिन करे, छेकि नैस तथा चौदस को
लिखके चित्तयेकी न करे, छे जो वेला करे तोहरीजोनी हो
दिन रणपक्षीम आता है ॥ अब कोर बखत संवत्सीकी या
कम हो तो पंचमके दिन संवत्सी प्रतिकमण करे, छेकि नौच
दिन कदापि काले की नहि करे, छे जो चौथ हो होय तो पर
चौथकी संवत्सी करे, और कोर की लिख हो होयतो पर
लिख माननीय है, दूसरी चोदलिख है, इसमें यह प्रमाण
सात पक्षीकी लिख जोनके उत्तरी पक्षी अपक्षीकी लिख मान

॥ अथ श्रीधरतर परद्वारकी सिद्धांत श्रुत

सामान्यो लिख्यते ॥

नो एकमलिख ? कम होय तो प्रतिपत्तिका पञ्चकण्ड ॥
 प्रवर्त्त अमावास्या ३० लिखको करे, ८ अष्टमी कम होय
 अष्टमीका मन सममीको करे, छे जो चवदस कम होय तो १
 का उपवास अमावस या पुनमको करे, इसका कारण यह है
 यह दोनो लिख परावर पूर्व है, चौदश परावन है तेसरे अमाव
 पुनम नी लिखन पत्तिका दिन है, यह दोनो दिन पूर्वकल्प
 शोक है, पारणे अमराणणे धर्मका उद्यान करे ॥ इस वर
 जैन प्रयोगको प्रवर्त्त नही, अन्य धर्मियोंके प्रचार परसे लिख
 मिश्रणसे आती है, जैन प्रचारमें संवत्सरी आदिक पर्वोका क
 र्त्तव्य नहि होता, जेहूदीप्रणवदीय पंच संवत्सर कहे है, जस
 स आनि वहुन संवत्सर लिखासिवाये प्रवर्त्तन करे सो है, ते
 म सुपूर्वसंवत्सर तीनसँ सवापुसव दिनका होता है, इस वास्ते
 नामसे यह पञ्च पण्डित नही एकांत नपवाद हेतुसे, इस वास्ते
 ॥ चौदश कम हो तो उपवास नया पत्तिका प्रतिकमण्ड लिखन
 पुनम नया अमावसके दिन करे, लेकिन तेस नया चौदस कर
 लिखके लिखेको न करे, छे जो वेला करे सोहरीजोतेनो दोनो
 दिन द्यागपक्षमें ग्राह्य है ॥ अब कोइ वलन संवत्सरीको चोइ
 कम हो तो पांचमके दिन संवत्सरी प्रतिकमण्ड करे, लेकिन तीनके
 दिन करायि काले नी नहि करे, छे जो चोइ हो होय तो पञ्च

लिख मानाय है, दूसरी लिख पत्तिका लिख जेनके

॥ १ ॥
 ॥ २ ॥
 ॥ ३ ॥
 ॥ ४ ॥
 ॥ ५ ॥
 ॥ ६ ॥
 ॥ ७ ॥
 ॥ ८ ॥
 ॥ ९ ॥
 ॥ १० ॥
 ॥ ११ ॥
 ॥ १२ ॥
 ॥ १३ ॥
 ॥ १४ ॥
 ॥ १५ ॥
 ॥ १६ ॥
 ॥ १७ ॥
 ॥ १८ ॥
 ॥ १९ ॥
 ॥ २० ॥
 ॥ २१ ॥
 ॥ २२ ॥
 ॥ २३ ॥
 ॥ २४ ॥
 ॥ २५ ॥
 ॥ २६ ॥
 ॥ २७ ॥
 ॥ २८ ॥
 ॥ २९ ॥
 ॥ ३० ॥
 ॥ ३१ ॥
 ॥ ३२ ॥
 ॥ ३३ ॥
 ॥ ३४ ॥
 ॥ ३५ ॥
 ॥ ३६ ॥
 ॥ ३७ ॥
 ॥ ३८ ॥
 ॥ ३९ ॥
 ॥ ४० ॥
 ॥ ४१ ॥
 ॥ ४२ ॥
 ॥ ४३ ॥
 ॥ ४४ ॥
 ॥ ४५ ॥
 ॥ ४६ ॥
 ॥ ४७ ॥
 ॥ ४८ ॥
 ॥ ४९ ॥
 ॥ ५० ॥
 ॥ ५१ ॥
 ॥ ५२ ॥
 ॥ ५३ ॥
 ॥ ५४ ॥
 ॥ ५५ ॥
 ॥ ५६ ॥
 ॥ ५७ ॥
 ॥ ५८ ॥
 ॥ ५९ ॥
 ॥ ६० ॥
 ॥ ६१ ॥
 ॥ ६२ ॥
 ॥ ६३ ॥
 ॥ ६४ ॥
 ॥ ६५ ॥
 ॥ ६६ ॥
 ॥ ६७ ॥
 ॥ ६८ ॥
 ॥ ६९ ॥
 ॥ ७० ॥
 ॥ ७१ ॥
 ॥ ७२ ॥
 ॥ ७३ ॥
 ॥ ७४ ॥
 ॥ ७५ ॥
 ॥ ७६ ॥
 ॥ ७७ ॥
 ॥ ७८ ॥
 ॥ ७९ ॥
 ॥ ८० ॥
 ॥ ८१ ॥
 ॥ ८२ ॥
 ॥ ८३ ॥
 ॥ ८४ ॥
 ॥ ८५ ॥
 ॥ ८६ ॥
 ॥ ८७ ॥
 ॥ ८८ ॥
 ॥ ८९ ॥
 ॥ ९० ॥
 ॥ ९१ ॥
 ॥ ९२ ॥
 ॥ ९३ ॥
 ॥ ९४ ॥
 ॥ ९५ ॥
 ॥ ९६ ॥
 ॥ ९७ ॥
 ॥ ९८ ॥
 ॥ ९९ ॥
 ॥ १०० ॥

नि प्रसिद्ध नई, उस शाला में जगत्पुत्र श्रीगणेशजी विराजमान
 बसवायेगिः परमेश्वर नये, जिनके शिष्य पंडित श्रीकृष्ण
 धामसुनिः नये, उन परमपुरुषसाधुजी सादरावका चरणजि
 चरीक उ० श्रीरामबलगिः ने शिष्यमंडली पं । केमचंद्रसुनिः वि ।
 प्रमचंद्र अमरचंद्रदि शिष्यके तथा पाठ्याया श्रीवीकानरे वास्तव्य
 अनेक विद्याविद्योके शिष्य एवं प्रतिक्रमणादि नित्यकर्मव्य सर्व जी
 बोके उपासार्थ उपायके प्रसिद्ध कर है ।
 ठिकाण पुस्तक मिलने का वीकानरे बना उपासना विद्या-
 शाखा उ । श्री । परमोपासी धुकिवादिधः । रामबलवत । गिः ॥

